THE
NEW TESTAMENT
IN HINDI

धर्म्मपुस्तक का अन्त भाग ।

अर्थात्

मत्ती औ मार्क औ लूक औ योहन रचित

प्रभु यीशु ख्रीष्ट का सुसमाचार ।

और

प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त । और धर्म्मोपदेश और भविष्यद्वाक्य की पत्रियां । जो यूनानी भाषा से हिन्दी में किये गये हैं ।

BRITISH AND FOREIGN BIBLE SOCIETY,
(NORTH INDIA AUXILIARY)
ALLAHABAD

4,500 Copies.] 1919

सूचीपत्र ।

मत्ती रचित सुसमाचार ।

[यीशु ख्रीष्टकी वंशावली ।]

लूक ३ : २३—३८ ।

१ इब्राहीमके सन्तान दाऊदके सन्तान यीशु ख्रीष्टकी वंशावली । (२) इब्राहीमका पुत्र इसहाक इसहाकका पुत्र याकूब याकूबके पुत्र यिहूदा और उसके भाई हुए । (३) तामरसे यिहूदाके पुत्र पेरस और जेरह हुए पेरसका पुत्र हिस्रोन हिस्रोनका पुत्र अराम । (४) अरामका पुत्र अम्मीनादब अम्मीनादबका पुत्र नहशोन नहशोनका पुत्र सलमोन । (५) राहबसे सलमोनका पुत्र बोअस हुआ रूतसे बोअसका पुत्र ओबेद हुआ ओबेदका पुत्र यिशी । (६) यिशीका पुत्र दाऊद राजा ऊरियाहकी बिधवासे दाऊद राजाका पुत्र सुलेमान हुआ । (७) सुलेमानका पुत्र रिहबुआम रिहबुआमका पुत्र अबियाह अबियाहका पुत्र आसा । (८) आसाका पुत्र यिहोशाफट यिहोशाफटका पुत्र यिहोरम यिहोरमका सन्तान उज्जियाह । (९) उज्जियाहका पुत्र योथम योथमका पुत्र आहस आहसका पुत्र हिजकियाह । (१०) हिजकियाहका पुत्र मनस्सी मनस्सीका पुत्र आमोन आमोनका पुत्र योशियाह । (११) बाबुल नगरको जानेके समयमें योशियाहके सन्तान यिखनियाह और उसके भाई हुए । (१२) बाबुलको जानेके पीछे यिखनियाहका पुत्र शलतियेल शलतियेलका पुत्र जिरुब्बाबुल । (१३) जिरुब्बाबुलका पुत्र अबीहूद अबीहूदका पुत्र इलियाकीम इलियाकीमका पुत्र असोर । (१४) असोरका पुत्र सादोक सादोकका पुत्र आखीम आखीमका पुत्र इलीहूद । (१५) इलीहूदका पुत्र इलियाजर इलियाजरका पुत्र मत्तान मत्तानका पुत्र याकूब । (१६) याकूबका पुत्र यूसफ जो मरियमका स्वामी था जिससे यीशु जो ख्रीष्ट कहावता है उत्पन्न हुआ । (१७) सो सब पीढ़ियां

इब्राहीमसे दाऊदलों चौदह पीढ़ी और दाऊदसे बाबुलको जानेलों चौदह पीढ़ी और बाबुलको जानेके समयसे ख्रीष्ट लों चौदह पीढ़ी थीं ।

[यीशुका जन्म ।]

(१८) यीशु ख्रीष्टका जन्म इस रीतिसे हुआ . उसकी माता मरियमकी यूसफसे मंगनी हुई थी पर उनके एकट्ठे होनेके पहिले वह देख पड़ी कि पवित्र आत्मासे गर्भवती है। (१९) तब उसके स्वामी यूसफने जो धर्म्मी मनुष्य था और उसपर प्रगट में कलंक लगाने नहीं चाहता है उसे चुपकेसे त्यागनेकी इच्छा किई। (२०) जब वह इन बातोंकी चिन्ता करता था देखो परमेश्वरके एक दूतने स्वप्नमें उसे दर्शन दे कहा हे दाऊदके सन्तान यूसफ तू अपनी स्त्री मरियमको अपने यहां लानेसे मत डर क्योंकि उसको जो गर्भ रहा है सो पवित्र आत्मासे है । (२१) वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगोंको उनके पापोंसे बचावेगा। (२२) यह सब इसलिये हुआ कि जो बचन परमेश्वरने भविष्यद्वक्ताके द्वारासे कहा था सो पूरा होवे. (२३) कि देखो कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे जिसका अर्थ यह है ईश्वर हमारे संग । (२४) तब यूसफने नींदसे उठके जैसा परमेश्वरके दूतने उसे आज्ञा दिई थी वैसा किया और अपनी स्त्रीको अपने यहां लाया । (२५) परन्तु जबलों वह अपना पहिलौठा पुत्र न जनी तबलों उसको न जाना और उसने उसका नाम यीशु रखा ।

[ज्योतिषियोंका यीशुको भेंट करना ।]

२ हेरोद राजाके दिनों मेंजब यिहूदिया देशके बैतलहम नगरमें यीशुका जन्म हुआ तब देखो पूर्व्वसे कितने ज्योतिषी यिरूशलीम नगरमें आये । (२) और बोले यिहूदियोंका राजा

जिसका जन्म हुआ है कहां है क्योंकि हमने पूर्व्वमें उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आये हैं। (३) यह सुनके हेरोद राजा और उसके साथ सारे यिरूशलीमके निवासी घबरा गये। (४) और उसने लोगोंके सब प्रधान याजकों और अध्यापकोंको एकट्ठे कर उनसे पूछा खीष्ट कहां जन्मेगा। (५) उन्होंने उससे कहा यिहूदियाके बैतलहम नगरमें क्योंकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा यूं लिखा गया है . (६) कि हे यिहूदा देशके बैतलहम तू किसी रीतिसे यिहूदाकी राजधानियोंमें सबसे छोटी नहीं है क्योंकि तुझमेंसे एक अधिपति निकलेगा जो मेरे इस्रायेली लोगका चरवाहा होगा। (७) तब हेरोदने ज्योतिषियोंको चुपके से बुलाके उन्हें यत्नसे पूछा कि तारा किस समय दिखाई दिया। (८) और उसने यह कहके उन्हें बैतलहम भेजा कि जाके उस बालकके विषयमें यत्नसे बूझो-और जब उसे पावो तब मुझे सन्देश देओ कि मैं भी जाके उसको प्रणाम करूं। (९) वे राजा की सुनके चले गये और देखो जो तारा उन्होंने पूर्व्वमें देखा था सो उनके आगे आगे चला यहांलों कि जहां बालक था उस स्थानके ऊपर पहुंचके ठहर गया। (१०) वे उस तारेको देखके अत्यन्त आनन्दित हुए। (११) और घरमें पहुंचके उन्होंने बालकको उसकी माता मरियमके संग देखा और दंडवत कर उसे प्रणाम किया और अपनी सम्पत्ति खोलके उसको सोना और लोबान और गन्धरस भेंट चढ़ाई। (१२) और स्वप्नमें ईश्वर से यह आज्ञा पाके कि हेरोदके पास मत फिर जाओ वे दूसरे मार्गसे अपने देशको चले गये।

[यूसफका बालक और उसकी माताको लेकर मिसरको भागना।]

(१३) उनके जानेके पीछे देखो परमेश्वरके एक दूतने स्वप्नमें यूसफको दर्शन दे कहा उठ बालक और उसकी माताको लेके मिसर देशको भाग जा और जबलों मैं तुझे न कहूं तबलों

वहां रह क्योंकि हेरोद नाश करनेके लिये बालकको ढूंढ़ेगा। (१४) वह उठ रातहीको बालक और उसकी माताको लेके मिसर को चला गया. (१५) और हेरोदके मरनेलों वहीं रहा कि जो बचन परमेश्वरने भविष्यद्वक्ताके द्वारासे कहा था कि मैंने अपने पुत्रको मिसरमेंसे बुलाया सो पूरा होवे।

(१६) जब हेरोदने देखा कि ज्योतिषियोंने मुझसे ठट्ठा किया है तब अति क्रोधित हुआ और लोगोंको भेजके जिस समय को उसने ज्योतिषियोंसे यत्नसे पूछा था उस समयके अनुसार बैतलहममें और उसके सारे सिवानोंमेंके सब बालकोंको जो दो बरसके और दो बरससे छोटे थे मरवा डाला। (१७) तब जो बचन यिरमियाह भविष्यद्वक्ताने कहा था सो पूरा हुआ. (१८) कि रामा नगरमें एक शब्द अर्थात हाहाकार और रोना और बड़ा विलाप सुना गया राहेल अपने बालकोंके लिये रोती थी और शान्त होने न चाहती थी क्योंकि वे नहीं हैं।

[उनका मिसरसे लौटना और नासरतमें बसना।]

(१९) हेरोदके मरनेके पीछे देखो परमेश्वरके एक दूतने मिसर में यूसफको स्वप्नमें दर्शन दे कहा. (२०) उठ बालक और उस की माताको लेके इस्रायेल देशको जा क्योंकि जो लोग बालक का प्राण लेने चाहते थे सो मर गये हैं। (२१) तब वह उठ बालक और उसकी माताको लेके इस्रायेल देशमें आया। (२२) परन्तु जब उसने सुना कि अर्खिलाव अपने पिता हेरोदके स्थानमें यिहूदियाका राजा हुआ है तब वहां जानेसे डरा और स्वप्नमें ईश्वरसे आज्ञा पाके गालीलके सिवानोंमें गया. (२३) और नासरत नाम एक नगरमें आके बास किया कि जो बचन भविष्यद्वक्ताओंसे कहा गया था कि वह नासरी कहावेगा सो पूरा होवे।

[योहन बपतिसमा देनेहारेका वृत्तान्त ।]

मार्क १ : १—८ । लूक ३ : १—१८ । योहन १ : ६—८, १९—३६ ; ३ : २३—३२ ।

३ उन दिनोंमें योहन बपतिसमा देनेहारा आके यिहूदिया के जंगलमें उपदेश करने लगा . (२) और कहने लगा कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्गका राज्य निकट आया है । (३) यह वही है जिसके विषयमें यिशैयाह भविष्यद्वक्ताने कहा किसीका शब्द हुआ जो जंगलमें पुकारता है कि परमेश्वरका पन्थ बनाओ उसके राजमार्ग सीधे करो । (४) इस योहनका वस्त्र ऊंटके रोम का था और उसकी कटिमें चमड़ेका पटुका बंधा था और उस का भोजन टिड्डियां और वन मधु था । (५) तब यिरूशलीमके और सारे यिहूदियाके और यर्दन नदीके आसपास सारे देशके रहनेहारे उस पास निकल आये . (६) और अपने अपने पापोंको मानके यर्दनमें उससे बपतिसमा लिया ।

(७) जब उसने बहुतेरे फरीशियों और सदूकियोंको उससे बपतिसमा लेनेको आते देखा तब उनसे कहा हे सांपोंके बंश किसने तुम्हें आनेवाले क्रोधसे भागनेको चिताया है । (८) पश्चात्तापके योग्य फल लाओ । (९) और अपने अपने मनमें यह चिन्ता मत करो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर इन पत्थरोंसे इब्राहीमके लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है । (१०) और अब भी कुल्हाड़ी पेड़ोंकी जड़ पर लगी है इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और आगमें डाला जाता है । (११) मैं तो तुम्हें पश्चात्तापके लिये जलसे बपतिसमा देता हूं परन्तु जो मेरे पीछे आता है सो मुझसे अधिक शक्तिमान है मैं उसकी जूतियां उठानेके योग्य नहीं वह तुम्हें पवित्र आत्मासे और आगसे बपतिसमा देगा । (१२) उसका सूप उसके हाथमें है और वह अपना सारा खलिहान शुद्ध करेगा और अपने गेहूंको खत्तेमें

एकट्ठा करेगा परन्तु भूसीको उस आगसे जो नहीं बुझती है जलावेगा ।

[यीशुका बपतिसमा ।]

(१३) तब यीशु योहनसे बपतिसमा लेनेको उस पास गालील से यर्दनके तीरपर आया । (१४) परन्तु योहन यह कहके उसे बर्जने लगा कि मुझे आपके हाथसे बपतिसमा लेना अवश्य है और क्या आप मेरे पास आते हैं । (१५) यीशुने उस को उत्तर दिया कि अब ऐसा होने दे क्योंकि इसी रीतिसे सब धर्म्मको पूरा करना हमें चाहिये . तब उसने होने दिया । (१६) यीशु बपतिसमा लेके तुरन्त जलसे ऊपर आया और देखो उसके लिये स्वर्ग खुल गया और उसने ईश्वरके आत्माको कपोतकी नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा । (१७) और देखो यह आकाशबाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं ।

[यीशुकी परीक्षा ।]

मार्क १ । १२, १३ । लूक ४ । १—१३ ।

४ तब आत्मा यीशुको जंगलमें ले गया कि शैतानसे उस की परीक्षा किई जाय । (२) वह चालीस दिन और चालीस रात उपवास करके पीछे भूखा हुआ । (३) तब परीक्षा करनेहारेने उस पास आ कहा जो तू ईश्वरका पुत्र है तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जावें । (४) उसने उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटीसे नहीं परन्तु हर एक बातसे जो ईश्वरके मुखसे निकलती है जीयेगा । (५) तब शैतानने उसको पवित्र नगरमें ले जाके मन्दिरके कलशपर खड़ा किया . (६) और उससे कहा जो तू ईश्वरका पुत्र है तो अपनेको नीचे गिरा क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषयमें अपने दूतोंको आज्ञा देगा और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि तेरे पांवमें पत्थरपर

चोट लगे। (७) यीशुने उससे कहा फिर भी लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वरकी परीक्षा मत कर। (८) फिर शैतानने उसे एक अति ऊंचे पर्ब्बतपर ले जाके उसको जगतके सब राज्य और उनका बिभव दिखाये . (९) और उससे कहा जो तू दंडवत कर मुझे प्रणाम करे तो मैं यह सब तुझे देऊंगा। (१०) तब यीशुने उससे कहा हे शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वरको प्रणाम कर और केवल उसीको सेवा कर। (११) तब शैतानने उसको छोड़ा और देखो स्वर्ग दूतोंने आ उसकी सेवा किई।

[यीशुका गालील देशमें रहना यो उपदेश करना और कई मनुष्योंको शिष्य होनेके लिये बुलाना।]

मार्क १ . १४। लूक ४ : १४ ; ५ । १—११।

(१२) जब यीशुने सुना कि योहन बन्दीगृहमें डाला गया तब गालीलको चला गया। (१३) और नासरत नगरको छोड़के उसने कफर्नाहूम नगरमें जो समुद्रके तीरपर जिबुलून और नप्तालीके बंशोंके सिवानोंमें है आके बास किया . (१४) कि जो बचन यिशैयाह भविष्यद्वक्तासे कहा गया था सो पूरा होवे . (१५) कि जिबुलूनका देश और नप्तालीका देश समुद्रकी ओर यर्दनके उस पार अन्यदेशियोंका गालील . (१६) जो लोग अंधकारमें बैठे थे उन्होंने बड़ी ज्योति देखी और जो मृत्युके देश और छायामें बैठे थे उनपर ज्योति उदय हुई।

(१७) उस समयसे यीशु उपदेश करने और यह कहने लगा कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्गका राज्य निकट आया है। (१८) यीशुने गालीलके समुद्रके तीरपर फिरते हुए दो भाइयोंको अर्थात शिमोनको जो पितर कहावता है और उसके भाई अन्द्रियको समुद्रमें जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे। (१९) उसने उनसे कहा मेरे पीछे आओ मैं तुमको मनुष्योंके

मछुवे बनाऊंगा। (२०) वे तुरन्त जालोंको छोड़के उसके पीछे हो लिये। (२१) वहांसे आगे बढ़के उसने और दो भाइयोंको अर्थात जबदीके पुत्र याकूब और उसके भाई योहनको अपने पिता जबदीके संग नावपर अपने जाल सुधारते देखा और उन्हें बुलाया। (२२) और वे तुरन्त नावको और अपने पिताको छोड़के उसके पीछे हो लिये।

(२३) तब यीशु सारे गालील देशमें उनकी सभाओंमें उपदेश करता हुआ और राज्यका सुसमाचार प्रचार करता हुआ और लोगोंमें हर एक रोग और हर एक व्याधिको चंगा करता हुआ फिरा किया। (२४) उस की कीर्त्ति सब सुरिया देशमें भी फैल गई और लोग सब रोगियोंको जो नाना प्रकारके रोगों औ पीडाओंसे दुःखी थे और भूतग्रस्तों और मिर्गीहों और अर्द्धांगियोंको उस पास लाये और उसने उन्हें चंगा किया। (२५) और गालील और दिकापलि और यिरूशलीम और यिहूदियासे और यर्दनके उस पारसे बड़ी बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिई।

[पर्ब्बतपर यीशुके उपदेशका आरंभ. धन्य कौन हैं।]

लूक ६ : २०—४९।

५ यीशु भीड़को देखके पर्ब्बतपर चढ़ गया और जब वह बैठा तब उसके शिष्य उस पास आये। (२) और वह अपना मुंह खोलके उन्हें उपदेश देने लगा।

(३) धन्य वे जो मनमें दीन हैं क्योंकि स्वर्गका राज्य उन्हींका है। (४) धन्य वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पावेंगे। (५) धन्य वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथिवीके अधिकारी होंगे। (६) धन्य वे जो धर्म्मके भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे। (७) धन्य वे जो दयावन्त हैं क्योंकि उनपर दया किई जायगी। (८) धन्य वे जिनके मन शुद्ध हैं क्योंकि वे ईश्वरको देखेंगे। (९) धन्य वे जो मेल करवैये हैं क्योंकि वे ईश्वरके

सन्तान कहावेंगे। (१०) धन्य वे जो धर्म्मके कारण सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्गका राज्य उन्हींका है। (११) धन्य तुम हो जब मनुष्य मेरे लिये तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हें सतावें और झूठ बोलते हुए तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकारकी बुरी बात कहें। (१२) आनन्दित और आह्लादित होओ क्योंकि तुम स्वर्गमें बहुत फल पाओगे. उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओंको जो तुमसे आगे थे इसी रीतिसे सताया।

[लोण और ज्योतिके दृष्टान्तसे शिष्योंका बखान।]

(१३) तुम पृथिवीके लोण हो परन्तु यदि लोणका स्वाद बिगड़ जाय तो वह किससे लोणा किया जायगा. वह तबसे किसी कामका नहीं केवल बाहर फेंके जाने और मनुष्योंके पांवोंसे रौंदे जानेके योग्य है। (१४) तुम जगतके प्रकाश हो. जो नगर पहाड़पर बसा है सो छिप नहीं सकता। (१५) और लोग दीपकको बारके बर्त्तनके नीचे नहीं परन्तु दीवटपर रखते हैं और वह सभोंको जो घरमें हैं ज्योति देता है। (१६) वैसेही तुम्हारा प्रकाश मनुष्योंके आगे चमके इसलिये कि वे तुम्हारे भले कामोंको देखके तुम्हारे स्वर्गवासी पिताका गुणानुवाद करें।

[यीशु व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओंका पुस्तक पूरा करनेको आया।]

(१७) मत समझो कि मैं व्यवस्था अथवा भविष्यद्वक्ताओंका पुस्तक लोप करनेको आया हूं मैं लोप करनेको नहीं परन्तु पूरा करनेको आया हूं। (१८) क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि जबलों आकाश औ पृथिवी टल न जायें तबलों व्यवस्थासे एक मात्रा अथवा एक बिन्दु बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। (१९) इसलिये जो कोई इन अति छोटी आज्ञाओंमेंसे एकको लोप करे और लोगोंको वैसेही सिखावे वह स्वर्गके राज्यमें सबसे छोटा कहावेगा परन्तु जो कोई उन्हें पालन करे और सिखावे वह स्वर्गके राज्यमें बड़ा कहावेगा। (२०) मैं तुम

से कहता हूं यदि तुम्हारा धर्म्म अध्यापकों और फ़रीशियोंके धर्म्मसे अधिक न होवे तो तुम स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करने न पाओगे।

(२१) तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे कहा गया था कि नरहिंसा मत कर और जो कोई नरहिंसा करे सो बिचार-स्थानमें दंडके योग्य होगा। (२२) परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई अपने भाईसे अकारण क्रोध करे सो बिचार-स्थानमें दंडके योग्य होगा और जो कोई अपने भाईसे कहे कि रे तुच्छ सो न्याइयोंकी सभामें दंडके योग्य होगा और जो कोई कहे कि रे मूर्ख सो नरककी आगके दंडके योग्य होगा। (२३) सो यदि तू अपना चढ़ावा बेदीपर लावे और वहां स्मरण करे कि तेरे भाईके मनमें तेरी ओर कुछ है तो अपना चढ़ावा वहां बेदीके साम्ने छोड़के चला जा. (२४) पहिले अपने भाईसे मिलाप कर तब आके अपना चढ़ावा चढ़ा। (२५) जबलों तू अपने मुद्दईके संग मार्गमें है उससे बेग मिलाप कर ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे न्यायीको सोंपे और न्यायी तुझे प्यादेको सोंपे और तू बन्दीगृहमें डाला जाय। (२६) मैं तुझसे सच कहता हूं कि जबलों तू कौड़ी कौड़ी भर न देवे तबलों वहांसे छूटने न पावेगा।

(२७) तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे कहा गया था कि परस्त्रीगमन मत कर। (२८) परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्रीपर कुइच्छासे दृष्टि करे वह अपने मनमें उससे व्यभिचार कर चुका है। (२९) जो तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगोंमेंसे एक अंग नाश होवे और तेरा सकल शरीर नरकमें न डाला जाय। (३०) और जो तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काटके फेंक दे

क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगोंमेंसे एक अंग नाश होवे और तेरा सकल शरीर नरकमें न डाला जाय ।

(३१) यह भी कहा गया कि जो कोई अपनी स्त्रीको त्यागे सो उसको त्यागपत्र देवे । (३२) परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई व्यभिचारको छोड़ और किसी हेतुसे अपनी स्त्रीको त्यागे सो उससे व्यभिचार करवाता है और जो कोई उस त्यागी हुईसे विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है ।

(३३) फिर तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे कहा गया था कि झूठी किरिया मत खा परन्तु परमेश्वरके लिये अपनी किरियाओंको पूरी कर । (३४) परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कोई किरिया मत खाओ न स्वर्गकी क्योंकि वह ईश्वरका सिंहासन है . (३५) न धरतीकी क्योंकि वह उसके चरणोंकी पीढ़ी है न यिरूशलीमकी क्योंकि वह महा राजाका नगर है । (३६) अपने सिरकी भी किरिया मत खा क्योंकि तू एक बालको उजला अथवा काला नहीं कर सकता है । (३७) परन्तु तुम्हारी बातचीत हां हां नहीं नहीं होवे . जो कुछ इनसे अधिक है सो उस दुष्टसे होता है ।

(३८) तुमने सुना है कि कहा गया था कि आंखके बदले आंख और दांतके बदले दांत । (३९) पर मैं तुमसे कहता हूं बुरेका साम्ना मत करो परन्तु जो कोई तेरे दहिने गालपर थपेड़ा मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे । (४०) जो तुझपर नालिश करके तेरा अंगा लेने चाहे उसको दोहर भी लेने दे । (४१) जो कोई तुझे आध कोश बेगारी ले जाय उसके संग कोश भर चला जा । (४२) जो तुझसे मांगे उसको दे और जो तुझसे ऋण लेने चाहे उससे मुंह मत मोड़ ।

(४३) तुमने सुना है कि कहा गया था कि अपने पड़ोसीको प्यार कर और अपने बैरीसे बैर कर । (४४) परन्तु मैं तुमसे

कहता हूं कि अपने बैरियोंको प्यार करो . जो तुम्हें स्राप देवें उनको आशीस देओ जो तुमसे बैर करें उनसे भलाई करो और जो तुम्हारा अपमान करें और तुम्हें सतावें उनके लिये प्रार्थना करो . (४५) जिस्तें तुम अपने स्वर्गबासी पिताके सन्तान होओ क्योंकि वह बुरे औ भले लोगोंपर अपना सूर्य्य उदय करता है और धर्म्मियों और अधर्म्मियों पर मेंह बरसाता है। (४६) जो तुम उनसे प्रेम करो जो तुमसे प्रेम करते हैं तो क्या फल पाओगे . क्या कर उगाहनेहारे भी ऐसा नहीं करते हैं। (४७) और जो तुम केवल अपने भाइयोंको नमस्कार करो तो कौनसा बड़ा काम करते हो . क्या कर उगाहनेहारे भी ऐसा नहीं करते हैं। (४८) सो जैसा तुम्हारा स्वर्गबासी पिता सिद्ध है तैसे तुम भी सिद्ध होओ।

[दान देने और प्रार्थना और उपवास करनेका उपदेश।]

६ सचेत रहो कि तुम मनुष्योंको दिखानेके लिये उनके आगे अपने धर्म्मके कार्य्य न करो नहीं तो अपने स्वर्गबासी पितासे कुछ फल न पाओगे।

(२) इसलिये जब तू दान करे तब अपने आगे तुरही मत बजवा जैसा कपटी लोग सभाके घरों और मार्गोंमें करते हैं कि मनुष्य उनकी बड़ाई करें . मैं तुमसे सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके हैं। (३) परन्तु जब तू दान करे तब तेरा दहिना हाथ जो कुछ करे सो तेरा बायां हाथ न जाने . (४) कि तेरा दान गुप्तमें होय और तेरा पिता जो गुप्तमें देखता है आपही तुझे प्रगटमें फल देगा।

(५) जब तू प्रार्थना करे तब कपटियोंके समान मत हो क्योंकि मनुष्योंको दिखानेके लिये सभाके घरोंमें और सड़कोंके कोनोंमें खड़े होके प्रार्थना करना उनको प्रिय लगता है . मैं तुमसे सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके हैं। (६) परन्तु

जब तू प्रार्थना करे तब अपनी कोठरीमें जा और द्वार मून्दके अपने पितासे जो गुप्तमें है प्रार्थना कर और तेरा पिता जो गुप्तमें देखता है तुझे प्रगटमें फल देगा । (७) प्रार्थना करनेमें देवपूजकोंकी नाईं वहुत व्यर्थ बातें मत बोला करो क्योंकि वे समझते हैं कि हमारे वहुत बोलनेसे हमारी सुनी जायगी। (८) सो तुम उनके समान मत होओ क्योंकि तुम्हारे मांगनेके पहिले तुम्हारा पिता जानता है तुम्हें क्या क्या आवश्यक है । (९) तुम इस रीतिसे प्रार्थना करो . हे हमारे स्वर्गबासी पिता तेरा नाम पवित्र किया जाय . (१०) तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसे स्वर्गमें वैसे पृथिवीपर पूरी होय . (११) हमारी दिनभरकी रोटी आज हमें दे . (१२) और जैसे हम अपने ऋणियोंको क्षमा करते हैं तैसे हमारे ऋणोंको क्षमा कर . (१३) और हमें परीक्षामें मत डाल परन्तु दुष्टसे बचा [क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे हैं . आमीन] ।

(१४) जो तुम मनुष्योंके अपराध क्षमा करो तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हें भी क्षमा करेगा । (१५) परन्तु जो तम मनुष्योंके अपराध क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा ।

(१६) जब तुम उपवास करो तब कपटियोंके समान उदास रूप मत होओ क्योंकि वे अपने मुंह मलीन करते हैं कि मनुष्योंको उपवासी दिखाई देवें . मैं तुमसे सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके हैं । (१७) परन्तु जब तू उपवास करे तब अपने सिरपर तेल मल और अपना मुंह धो . (१८) कि तू मनुष्योंको नहीं परन्तु अपने पिताको जो गुप्तमें है उपवासी दिखाई देवे और तेरा पिता जो गुप्तमें देखता है तुझे प्रगटमें फल देगा ।

स्वर्गमें धन संचय करने और आंखके निर्मल रखने और दो स्वामियों
की सेवा और जीवनकी चिन्ता न करनेका उपदेश ।]

(१९) अपने लिये पृथिवीपर धनका संचय मत करो जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर सेंध देते और चुराते हैं । (२०) परन्तु अपने लिये स्वर्गमें धनका संचय करो जहां न कीड़ा न काई बिगाड़ता है और जहां चोर न सेंध देते न चुराते हैं । (२१) क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा । (२२) शरीरका दीपक आंख है इसलिये यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सकल शरीर उजियाला होगा । (२३) परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो तो तेरा सकल शरीर अंधियारा होगा . जो ज्योति तुझमें है सो यदि अंधकार है तो वह अंधकार कैसा बड़ा है । (२४) कोई मनुष्य दो स्वामियोंकी सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एकसे बैर करेगा और दूसरेको प्यार करेगा अथवा एकसे लगा रहेगा और दूसरेको तुच्छ जानेगा . तुम ईश्वर और धन दोनोंकी सेवा नहीं कर सकते हो । (२५) इसलिये मैं तुमसे कहता हूं अपने प्राणके लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे और क्या पीयेंगे और न अपने शरीरके लिये कि क्या पहिरेंगे . क्या भोजनसे प्राण और बस्त्रसे शरीर बड़ा नहीं है । (२६) आकाशके पंछियोंको देखो . वे न बोते हैं न लवते हैं न खत्तोंमें बटोरते हैं तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको पालता है . क्या तुम उनसे बड़े नहीं हो । (२७) तुममेंसे कौन मनुष्य चिन्ता करनेसे अपनी आयुको दौड़को एक हाथ भी बढ़ा सकता है । (२८) और तुम बस्त्रके लिये क्यों चिन्ता करते हो . खेतके सोसन फूलोंको देख लो वे कैसे बढ़ते हैं . वे न परिश्रम करते हैं न कातते हैं । (२९) परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे

बिभवमें उनमेंसे एकके तुल्य बिभूषित न था । (३०) यदि ईश्वर खेतकी घासको जो आज है और कल चूल्हेमें झोंकी जायगी ऐसो बिभूषित करता है तो हे अल्प विश्वासियो क्या वह बहुत अधिक करके तुम्हें नहीं पहिरावेगा । (३१) सो तुम यह चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे अथवा क्या पहिरेंगे । (३२) देवपूजक लोग इन सब बस्तुओंका खोज करते हैं और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओंका प्रयोजन है । (३३) पहिले ईश्वरके राज्य और उसके धर्म्मका खोज करो तब यह सब बस्तु भी तुम्हें दिई जायेंगीं । (३४) सो कलके लिये चिन्ता मत करो क्योंकि कल अपनी बस्तुओंके लिये आपही चिन्ता करेगा . हर एक दिनके लिये उसी दिनका दुःख बहुत है ।

[दूसरोंपर दोष लगाने-पवित्र बस्तु कुत्तोंको न देने-प्रार्थनामें लगे रहने-सकेत फाटकसे प्रवेश करने-झूठे प्रचारकोंसे चैाकस रहनेका उपदेश और घरको नेव डालनेके दृष्टान्तसे पहाड़ी उपदेशकी समाप्ति ।]

७ दूसरोंका विचार मत करो कि तुम्हारा बिचार न किया जाय । (२) क्योंकि जिस बिचारसे तुम बिचार करते हो उसीसे तुम्हारा बिचार किया जायगा और जिस नापसे तुम नापते हो उसीसे तुम्हारे लिये नापा जायगा । (३) जो तिनका तेरे भाईके नेत्रमें है उसे तू क्यों देखता है और तेरेही नेत्रमेंका लट्ठा तुझे नहीं सूझता । (४) अथवा तू अपने भाईसे क्योंकर कहेगा रहिये मैं तेरे नेत्रसे यह तिनका निकालूं और देख तेरेही नेत्रमें लट्ठा है । (५) हे कपटी पहिले अपने नेत्रसे लट्ठा निकाल दे तब तू अपने भाईके नेत्रसे तिनका निकालनेको अच्छी रीतिसे देखेगा । (६) पवित्र बस्तु कुत्तोंको मत देओ और अपने मोतियोंको सूअरोंके आगे मत फेंको ऐसा न हो कि वे उन्हें अपने पांवोंसे रौंदें और फिरके तुमको फाड़ डालें ।

(७) मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। (८) क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है सो पाता है और जो खटखटाता है उसके लिये खोला जायगा। (९) तुममेंसे कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे तो उसको पत्थर देगा। (१०) और जो वह मछली मांगे तो क्या वह उसको सांप देगा। (११) सो यदि तुम बुरे होके अपने लड़कोंको अच्छे दान देने जानते हो तो कितना अधिक करके तुम्हारा स्वर्गबासी पिता उन्होंको जो उससे मांगते हैं उत्तम बस्तु देगा। (१२) जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुमसे करें तुमभी उनसे वैसाही करो क्योंकि यही व्यवस्था औ भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकका सार है।

(१३) सकेत फाटकसे प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकर है वह मार्ग जो बिनाशको पहुंचाता है और बहुत हैं जो उससे पैठते हैं। (१४) वह फाटक कैसा सकेत और वह मार्ग कैसा सकरा है जो जीवनको पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।

(१५) झूठे भविष्यद्वक्ताओंसे चौकस रहो जो भेड़ोंके भेषमें तुम्हारे पास आते हैं परन्तु अन्तरमें लुटेरू हुंड़ार हैं। (१६) तुम उनके फलोंसे उन्हें पहचानोगे. क्या मनुष्य कांटोंके पेड़से दाख अथवा ऊंटकटारेसे गूलर तोड़ते हैं। (१७) इसी रीतिसे हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल फलता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल फलता है। (१८) अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं फल सकता है और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल फल सकता है। (१९) जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और आगमें डाला जाता है। (२०) सो तुम उनके फलोंसे उन्हें पहचानोगे।

(२१) हर एक जो मुझसे हे प्रभु हे प्रभु कहता है स्वर्गके राज्यमें प्रवेश नहीं करेगा परन्तु वही जो मेरे स्वर्गबासी पिताकी इच्छापर चलता है। (२२) उस दिनमें बहुतेरे मुझसे कहेंगे हे प्रभु हे प्रभु क्या हमने आपके नामसे भविष्यद्वाक्य नहीं कहा और आपके नामसे भूत नहीं निकाले और आपके नामसे बहुत आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किये। (२३) तब मैं उनसे खोलके कहूंगा मैंने तुमको कभी नहीं जाना हे कुकर्म्म करनेहारो मुझसे दूर होओ।

(२४) इसलिये जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हे पालन करे मैं उसको उपमा एक बुद्धिमान मनुष्यसे देऊंगा जिसने अपना घर पत्थरपर बनाया। (२५) और मेंह बरसा औ बाढ आई औ आंधी चली और उस घरपर लगी पर वह नहीं गिरा क्योंकि उसकी नेव पत्थरपर डाली गई थी। (२६) परन्तु जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हे पालन न करे उसको उपमा एक निर्बुद्धि मनुष्यसे दिई जायगी जिसने अपना घर बालूपर बनाया। (२७) और मेंह बरसा औ बाढ आई औ आंधी चली और उस घरपर लगी और वह गिरा और उसका बडा पतन हुआ।

(२८) जब यीशु यह बातें कह चुका तब लोग उसके उपदेश से अचंभित हुए। (२९) क्योंकि उसने अध्यापकोंकी रीतिसे नहीं परन्तु अधिकारीकी रीतिसे उन्हें उपदेश दिया।

[यीशुका एक कोढ़ीको चंगा करना।]

मार्क १ : ४०—४४। लूक ५ : १२—१४।

८ जब यीशु उस पर्व्वतसे उतरा तब बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिई। (२) और देखो एक कोढ़ीने आ उसको प्रणाम कर कहा हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं। (३) यीशुने हाथ बढ़ा उसे छूके कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा. और उसका कोढ तुरन्त शुद्ध हो गया। (४) तब

योशुने उससे कहा देख किसीसे मत कह परन्तु जा अपने तईं याजकको दिखा और जो चढ़ावा मूसाने ठहराया उसे लोगोंपर साची होनेके लिये चढ़ा।

[योशुका कफर्नाहुमके शतपतिकी बिन्ती सुनकर उसके दासका चंगा करना।]

लूक ७ । १—१०।

(५) जब योशुने कफर्नाहुममें प्रवेश किया तब एक शतपतिने उस पास आ उससे बिन्ती किई . (६) कि हे प्रभु मेरा सेवक घरमे अर्द्धांग रोगसे अति पीड़ित पड़ा है। (७) योशुने उससे कहा मैं आके उसे चंगा करूंगा। (८) शतपतिने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घरमें आवें पर बचन मात्र भी कहिये तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा। (९) क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और योद्धा मेरे बशमें हैं और मैं एकको कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरेको आ तो वह आता है और अपने दासको यह कर तो वह करता है। (१०) यह सुनके योशुने अचंभा किया और जो लोग उसके पीछेसे आते थे उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैंने इस्रायेली लोगोंमें भी ऐसा बड़ा बिश्वास नहीं पाया है। (११) और मैं तुमसे कहता हूं कि बहुतेरे लोग पूर्व्व और पश्चिमसे आके इब्राहीम और इसहाक और याकूबके साथ स्वर्गके राज्यमें बैठेंगे। (१२) परन्तु राज्यके सन्तान बाहरके अंधकारमें डाले जायेंगे जहां रोना और दांत पीसना होगा। (१३) तब योशुने शतपतिसे कहा जाइये जैसा तूने बिश्वास किया है वैसाही तुझे होवे और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया।

[योशुका पितरकी सासको चंगा करना।]

मार्क १ : २९—३४। लूक ४ : ३८—४१।

(१४) योशुने पितरके घरमें आके उसकी सासको पड़ी हुई

और ज्वरसे पीड़ित देखा। (१५) उसने उसका हाथ छूआ और ज्वरने उसको छोड़ा और वह उठके उनकी सेवा करने लगी।

(१६) सांझको लोग बहुतसे भूतग्रस्तोंको उस पास लाये और उसने बचनहीसे भूतोंको निकाला और सब रोगियोंको चंगा किया. (१७) कि जो बचन यिशैयाह भविष्यद्वक्तासे कहा गया था कि उसने हमारी दुर्ब्बलताओंको ग्रहण किया और रोगोंको उठा लिया सो पूरा होवे।

[शिष्य होनेके विषय यीशुका उपदेश ।]

लूक ९ । ५७—६० ।

(१८) यीशुने अपने आसपास बड़ी भीड़ देखके उस पार जानेकी आज्ञा किई। (१९) और एक अध्यापकने आ उससे कहा हे गुरु जहां जहां आप जायें तहां मैं आपके पीछे चलूंगा। (२०) यीशुने उससे कहा लोमड़ियोंको मांदें और आकाशके पंछियोंको बसेरे हैं परन्तु मनुष्यके पुत्रको सिर रखनेका स्थान नहीं है। (२१) उसके शिष्योंमेंसे दूसरेने उससे कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिताको गाड़ने दीजिये। (२२) यीशुने उससे कहा तू मेरे पीछे हो ले और मृतकोंको अपने मृतकोंको गाड़ने दे।

[यीशुका आंधीको शान्त करना ।]

मार्क ४ । ३६—४१ । लूक ८ । २२—२५ ।

(२३) जब वह नावपर चढ़ा तब उसके शिष्य उसके पीछे हो लिये। (२४) और देखो समुद्रमें ऐसे बड़े हिलकोरे उठे कि नाव लहरोंसे ढंप जाती थी परन्तु वह सोता था। (२५) तब उसके शिष्योंने उस पास आके उसे जगाके कहा हे प्रभु हमें बचाइये हम नष्ट होते हैं। (२६) उसने उनसे कहा हे अल्प बिश्वासियो क्यों डरते हो. तब उसने उठके बयार और समुद्रको डांटा और बड़ा नीवा हो गया। (२७) और वे लोग

अचंभा करके बोले यह कैसा मनुष्य है कि बयार और समुद्र भी उसकी आज्ञा मानते हैं ।

[यीशु का गिर्गाशियोंके देशमें जाकर दो भूतग्रस्त मनुष्यांसे भूत निकालना ।]
मार्क ५ : १—२० । लूक ८ : २६—३९ ।

(२८) जब यीशु उस पार गिर्गाशियोंके देशमें पहुंचा तब दो भूतग्रस्त मनुष्य कबरस्थानमेंसे निकलते हुए उससे आ मिले जो यहांलों अति प्रचण्ड थे कि उस मार्गसे कोई नहीं जा सकता था । (२९) और देखो उन्होंने चिल्लाके कहा हे यीशु ईश्वरके पुत्र आपको हमसे क्या काम . क्या आप समयके आगे हमें पीड़ा देनेको यहां आये हैं। (३०) बहुतसे सूअरोंका एक झुंड उनसे कुछ दूर चरता था। (३१) सो भूतोंने उससे बिन्ती कर कहा जो आप हमें निकालते हैं तो सूअरोंके झुंडमें पैठने दीजिये । (३२) उसने उनसे कहा जाओ और वे निकलके सूअरोंके झुंडमें पैठे और देखो सूअरोंका सारा झुंड कड़ाड़ेपरसे समुद्रमें दौड़ गया और पानीमें डूब मरा । (३३) पर चरवाहे भागे और नगरमें जाके सब बातें और भूतग्रस्तोंकी कथा भी सुनाईं । (३४) और देखो सारे नगरके लोग यीशुसे भेंट करनेको निकले और उसको देखकर बिन्ती किई कि हमारे सिवानोंसे निकल जाइये ।

[यीशुका एक अर्द्धांगीको चंगा करना और उसका पाप क्षमा करना ।]
मार्क २ : १—१२ । लूक ५ : १८- २६ ।

९ यीशु नावपर चढ़के उस पार जाके अपने नगरमें पहुंचा । (२) देखो लोग एक अर्द्धांगीको खाटपर पड़े हुए उस पास लाये और यीशुने उन्होंका बिश्वास देखके उस अर्द्धांगीसे कहा हे पुत्र ढाढ़स कर तेरे पाप क्षमा किये गये हैं । (३) तब देखो कितने अध्यापकोंने अपने अपने मनमें कहा यह तो ईश्वरकी निन्दा करता है । (४) यीशुने उनके मनकी बातें

जानके कहा तुम लोग अपने अपने मनमें क्यों बुरी चिन्ता करते हो । (५) कौन बात सहज है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ और चल । (६) परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्यके पुत्रको पृथिवीपर पाप क्षमा करनेका अधिकार है (तब उसने उस अर्द्धांगीसे कहा) उठ अपनी खाट उठाके अपने घरको जा । (७) वह उठके अपने घरको चला गया । (८) लोगोंने यह देखके अचंभा किया और ईश्वरकी स्तुति किई जिसने मनुष्योंको ऐसा अधिकार दिया ।

[यीशुका मत्तीको बुलाना और पापियोंके संग भोजन करना ।]

मार्क २ : १४—१७ । लूक ५ : २७—३२ ।

(९) वहांसे आगे बढ़के यीशुने एक मनुष्यको कर उगाहनेके स्थानमें बैठे देखा जिसका नाम मत्ती था और उससे कहा मेरे पीछे आ . तब वह उठके उसके पीछे हो लिया । (१०) जब यीशु घरमें भोजनपर बैठा तब देखो बहुत कर उगाहनेहारे और पापी लोग आ उसके और उसके शिष्योंके संग बैठ गये । (११) यह देखके फरीशियोंने उसके शिष्योंसे कहा तुम्हारा गुरु कर उगाहनेहारों और पापियोंके संग क्यों खाता है । (१२) यीशुने यह सुनके उनसे कहा निरोगियोंको वैद्यका प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियोंको । (१३) तुम जाके इसका अर्थ सीखो कि मैं दयाको चाहता हूं बलिदानको नहीं . क्योंकि मैं धर्म्मियोंको नहीं परन्तु पापियोंको पश्चात्तापके लिये बुलाने आया हूं ।

[उपवास करनेकी विधि ।]

मार्क २ : १८—२२ । लूक ५ : ३३—३८ ।

(१४) तब योहनके शिष्योंने उस पास आ कहा हम लोग और फरीशी लोग क्यों बार बार उपवास करते हैं परन्तु

आपके शिष्य उपवास नहीं करते। (१५) यीशुने उनसे कहा जबलों दूल्हा सखाओंके संग रहे तबलों क्या वे शोक कर सकते हैं. परन्तु वे दिन आवेंगे जिनमें दूल्हा उनसे अलग किया जायगा तब वे उपवास करेंगे। (१६) कोई मनुष्य कोरे कपड़ेका टुकड़ा पुराने बस्त्रमें नहीं लगाता है क्योंकि वह टुकड़ा बस्त्रसे कुछ और भी फाड लेता है और उसका फटा बढ़ जाता है। (१७) और लोग नया दाख रस पुराने कुप्पोंमें नहीं भरते नहीं तो कुप्पे फट जाते हैं और दाख रस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं. परन्तु नया दाख रस नये कुप्पोंमें भरते हैं और दोनोंकी रक्षा होती है।

एक कन्याको जिलाना और एक स्त्रीको चंगा करना।]

मार्क ५ : २२—४३।

(१८) यीशु उनसे यह बातें कहताही था कि देखो एक अध्यक्षने आके उसको प्रणाम कर कहा मेरी बेटी अभी मर गई है परन्तु आप आके अपना हाथ उसपर रखिये तो वह जीयेगी। (१९) तब यीशु उठके अपने शिष्यों समेत उसके पीछे हो लिया।

(२०) और देखो एक स्त्रीने जिसका बारह बरससे लोहू बहता था पीछेसे आ उसके बस्त्रके आंचलको छूआ। (२१) क्योंकि उसने अपने मनमें कहा यदि मैं केवल उसके बस्त्रको छूओं तो चंगी हो जाऊंगी। (२२) यीशुने पीछे फिरके उसे देखके कहा हे पुत्री ढाढ़स कर तेरे बिश्वासने तुझे चंगा किया है सो वह स्त्री उसी घड़ीसे चंगी हुई।

(२३) यीशुने उस अध्यक्षके घरपर पहुंचके बजनियोंको और बहुत लोगोंको धूम मचाते देखा (२४) और उनसे कहा अलग आओ कन्या मरी नहीं पर सोती है. और वे उसका उपहास करने लगे। (२५) परन्तु जब लोग बाहर किये गये तब उसने

भीतर जा कन्याका हाथ पकड़ा और वह उठी। (२६) यह कीर्त्ति उस सारे देश में फैल गई ।

[यीशुका दो अंधोंके नेत्र खोलना और एक भूतग्रस्त गूंगीको चंगा करना ।]

(२७) जब यीशु वहांसे आगे बढ़ा तब दो अंधे पुकारते और यह कहते हुए उसके पीछे हो लिये कि हे दाऊदके सन्तान हमपर दया कीजिये । (२८) जब वह घरमें पहुंचा तब वे अंधे उस पास आये और यीशुने उनसे कहा क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं यह काम कर सकता हूं. वे उससे बोले हां प्रभु। (२९) तब उसने उनकी आंखें छूके कहा तुम्हारे विश्वासके समान तुमको होवे । (३०) इसपर उनकी आंखें खुल गईं और यीशुने उन्हें चिताके कहा देखो कोई इसको न जाने । (३१) तौभी उन्होंने बाहर जाके उस सारे देशमें उसकी कीर्त्ति फैलाई ।

(३२) जब वे बाहर जाते थे देखो लोग एक भूतग्रस्त गूंगे मनुष्यको यीशु पास लाये । (३३) जब भूत निकाला गया तब गूंगा बोलने लगा और लोगोंने अचंभा कर कहा इस्रायेलमें ऐसा कभी न देखा गया । (३४) परन्तु फरीशियोंने कहा वह भूतोंके प्रधानकी सहायतासे भूतोंको निकालता है ।

[कटनी और बनिहारोंका दृष्टान्त ।]

(३५) तब यीशु सब नगरों और गांवोंमें उनकी सभाओं में उपदेश करता हुआ और राज्यका सुसमाचार प्रचार करता हुआ और लोगोंमें हर एक रोग और हर एक व्याधिको चंगा करता हुआ फिरा किया । (३६) जब उसने बहुत लोगोंको देखा तब उसको उनपर दया आई क्योंकि वे बिन रखवालेकी भेड़ोंकी नाईं व्याकुल और छिन्नभिन्न किये हुए थे । (३७) तब उसने अपने शिष्योंसे कहा कटनी

बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े हैं । (३८) इसलिये कटनोके स्वामीसे बिन्ती करो कि वह अपनी कटनीमें बनिहारोंको भेजे।

[यीशुका बारह प्रेरितोंको ठहराके भेजना ।]

१० यीशुने अपने बारह शिष्योंको अपने पास बुलाके उन्हें अशुद्ध भूतोंपर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और हर एक रोग और हर एक व्याधिको चंगा करें । (२) बारह प्रेरितोंके नाम ये हैं पहिला शिमोन जो पितर कहावता है और उसका भाई अन्द्रिय. जबदीका पुत्र याकूब और उसका भाई योहन . फिलिप और बर्थलमई . (३) थोमा और मत्ती कर उगाहनेहारा . अलफईका पुत्र याकूब और लिब्बई जो थद्दई कहावता है . (४) शिमोन कानानी और यिहूदा इस्करियोती जिसने उसे पकड़वाया । (५) इन बारहों को यीशुने यह आज्ञा देके भेजा कि अन्यदेशियोंकी ओर मत जाओ और शोमिरोनियोंके किसी नगरमें मत पैठो। (६) परन्तु इस्रायेलके घरानेकी खोई हुई भेड़ोंके पास जाओ। (७) और जाते हुए प्रचार कर कहो कि स्वर्गका राज्य निकट आया है। (८) रोगियोंको चंगा करो कोढ़ियोंको शुद्ध करो मृतकोंको जिलाओ भूतोंको निकालो . तुमने सेंतमेत पाया है सेंतमेत देओ । (९) अपने पटुकोंमें न सोना न रूपा न ताम्बा रखो। (१०) मार्गके लिये न झोली न दो अंगे न जूते न लाठी लेओ क्योंकि बनिहार अपने भोजनके योग्य है। (११) जिस किसी नगर अथवा गांवमें तुम प्रवेश करो बूझो उसमें कौन योग्य है और जबलों वहांसे न निकलो तब लों उसके यहां रहो । (१२) घरमें प्रवेश करते हुए उसको आशीष देओ । (१३) जो वह घर योग्य होय तो तुम्हारा कल्याण उसपर पहुंचे परन्तु जो वह योग्य न होय तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास फिर आवे । (१४) और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी

बातें न सुने उसके घरसे अथवा उस नगरसे निकलते हुए अपने पांवोंकी धूल झाड़ डालो। (१५) मैं तुमसे सच कहता हूं कि बिचारके दिन में उस नगरकी दशासे सदोम और अमोराके देशकी दशा सहने योग्य होगी।

(१६) देखो मैं तुम्हें भेड़ोंके समान हुंड़ारोंके बीचमें भेजता हूं सो सांपोंकी नाईं बुद्धिमान और कपोतोंकी नाईं सूधे होओ। (१७) परन्तु मनुष्योंसे चौकस रहो क्योंकि वे तुम्हें पंचायतोंमें सोंपेंगे और अपनी सभाओंमें तुम्हें कोड़े मारेंगे। (१८) तुम मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओंके आगे उनपर और अन्यदेशियोंपर साक्षी होनेके लिये पहुंचाये जाओगे। (१९) परन्तु जब वे तुम्हें सोंपें तब किस रीतिसे अथवा क्या कहोगे इसकी चिन्ता मत करो क्योंकि जो कुछ तुमको कहना होगा सो उसी घड़ी तुम्हें दिया जायगा। (२०) बोलनेहारे तो तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिताका आत्मा तुममें बोलता है। (२१) भाई भाईको और पिता पुत्रको बध किये जानेको सोंपेंगे और लड़के माता पिताके बिरुद्ध उठके उन्हें घात करवावेंगे। (२२) मेरे नामके कारण सब लोग तुमसे बैर करेंगे पर जो अन्तलों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा। (२३) जब वे तुम्हें एक नगरमें सतावें तब दूसरेमें भाग जाओ. मैं तुमसे सत्य कहता हूं तुम इस्रायेलके सब नगरोंमें नहीं फिर चुकोगे कि उतनेमें मनुष्यका पुत्र आवेगा। (२४) शिष्य गुरुसे बड़ा नहीं है और न दास अपने स्वामीसे। (२५) यही बहुत है कि शिष्य अपने गुरुके तुल्य और दास अपने स्वामीके तुल्य होवे. जो उन्होंने घरके स्वामीका नाम बालजिबूल रखा है तो वे कितना अधिक करके उसके घरवालोंका वैसा नाम रखेंगे। (२६) सो तुम उनसे मत डरो क्योंकि कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा। (२७) जो मैं तुमसे

अंधियारेमें कहता हूं उसे उजियालेमें कहो और जो तुम कानोंमें सुनते हो उसे कोठोंपरसे प्रचार करो। (२८) उनसे मत डरो जो शरीरको मार डालते हैं पर आत्माको मार डालने नहीं सकते हैं परन्तु उसीसे डरो जो आत्मा और शरीर दोनोंको नरकमें नाश कर सकता है। (२९) क्या एक पैसेमें दो गौरैया नहीं बिकतीं तौभी तुम्हारे पिता बिना उनमेंसे एकभी भूमिपर नहीं गिरेगी। (३०) तुम्हारे सिरके बाल भी सब गिने हुए हैं। (३१) इसलिये मत डरो तुम बहुत गौरैयाओंसे अधिक मोलके हो। (३२) जो कोई मनुष्योंके आगे मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गबासी पिताके आगे मान लेऊंगा। (३३) परन्तु जो कोई मनुष्योंके आगे मुझसे मुकरे उससे मैं भी अपने स्वर्गबासी पिताके आगे मुकरूंगा। (३४) मत समझो कि मैं पृथिवीपर मिलाप करवानेको आया हूं मैं मिलाप करवानेको नहीं परन्तु खड्ग चलवानेको आया हूं। (३५) मैं मनुष्यको उसके पितासे और बेटीको उसकी मांसे और पतोहूको उसकी साससे अलग करने आया हूं। (३६) मनुष्यके घरहीके लोग उसके बैरी होंगे। (३७) जो माता अथवा पिताको मुझसे अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं और जो पुत्र अथवा पुत्रीको मुझसे अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं। (३८) और जो अपना क्रूश लेके मेरे पीछे नहीं आता है सो मेरे योग्य नहीं। (३९) जो अपना प्राण पावे सो उसे खोवेगा और जो मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो उसे पावेगा। (४०) जो तुम्हें ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारेको ग्रहण करता है। (४१) जो भविष्यद्वक्ताके नामसे भविष्यद्वक्ताको ग्रहण करे सो भविष्यद्वक्ता का फल पावेगा और जो धर्म्मीके नामसे धर्म्मीको ग्रहण करे सो धर्म्मीका फल पावेगा। (४२) जो कोई इन छोटोंमेंसे एक

को शिष्यके नामसे केवल एक कटोरा ठंढा पानी पिलावे मैं तुमसे सच कहता हूं वह किसी रीतिसे अपना फल न खोवेगा ।

[यीशुका योहनके शिष्योंको उत्तर देना ।]

लूक ७ · १८—३५ ।

११ जब यीशु अपने बारह शिष्योंको आज्ञा दे चुका तब उनके नगरोंमें शिक्षा और उपदेश करनेको वहांसे चला । (२) योहनने बन्दीगृहमें ख्रीष्टके कार्य्योंका समाचार सुनके अपने शिष्योंमेंसे दो जनोंको उससे यह कहनेको भेजा . (३) कि जो आनेवाला था सो क्या आपही हैं अथवा हम दूसरेकी बाट जोहें । (४) यीशुने उन्हें उत्तर दिया कि जो कुछ तुम सुनते और देखते हो सो जाके योहनसे कहो . (५) कि अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं और बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालोंको सुसमाचार सुनाया जाता है . (६) और जो कोई मेरे विषयमें ठोकर न खावे सो धन्य है ।

(७) जब वे चले जाते थे तब यीशु योहनके विषयमें लोगोंसे कहने लगा तुम जंगलमें क्या देखनेको निकले क्या पवनसे हिलते हुए नरकटको । (८) फिर तुम क्या देखनेको निकले क्या सूक्ष्म बस्त्र पहिने हुए मनुष्यको . देखो जो सूक्ष्म बस्त्र पहिनते हैं सो राजाओंके घरोंमें हैं। (९) फिर तुम क्या देखनेको निकले क्या भविष्यद्वक्ताको हां मैं तुमसे कहता हूं एक मनुष्यको जो भविष्यद्वक्तासे भी अधिक है। (१०) क्योंकि यह वही है जिसके विषयमें लिखा है कि देख मैं अपने दूतको तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ बनावेगा । (११) मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो स्त्रियोंसे जन्मे हैं उनमेंसे योहन बपतिसमा देनेहारेसे बड़ा कोई प्रगट नहीं हुआ है परन्तु जो स्वर्गके राज्यमें अति छोटा है सो उससे बड़ा है।

(१२) योहन बपतिसमा देनेहारेके दिनोंसे अबलों स्वर्गके राज्यके लिये बरियाई किई जाती है और बरियार लोग उसे ले लेते हैं। (१३) क्योंकि योहनलों सारे भविष्यद्वक्ताओंने और व्यवस्थाने भविष्यद्वाणी कही। (१४) और जो तुम इस बातको ग्रहण करोगे तो जानो कि एलियाह जो आनेवाला था सो यही है। (१५) जिसको सुननेके कान हों सो सुने।

(१६) मैं इस समयके लोगोंकी उपमा किससे देऊंगा. वे बालकोंके समान हैं जो बाजारोंमें बैठके अपने संगियोंको पुकारते. (१७) और कहते हैं हमने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे हमने तुम्हारे लिये बिलाप किया और तुमने छाती न पीटी। (१८) क्योंकि योहन न खाता न पीता आया और वे कहते हैं उसे भूत लगा है। (१९) मनुष्यका पुत्र खाता और पीता आया है और वे कहते हैं देखो पेटू और मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और पापियोंका मित्र. परन्तु ज्ञान अपने सन्तानोंसे निर्दोष ठहराया गया है।

[उन नगरोंकी बुरी दशा जिन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया।]

लूक १० : १२—१५ ।

(२०) तब वह उन नगरोंको जिन्होंमें उसके अधिक आश्चर्य्य कर्म्म किये गये उलहना देने लगा क्योंकि उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया। (२१) हाय तू कोराजीन. हाय तू बैतसैदा. जो आश्चर्य्य कर्म्म तुम्होंमें किये गये हैं सो यदि सोर और सीदोनमें किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट पहिनके और राखमें बैठके पश्चात्ताप करते। (२२) परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि बिचारके दिनमें तुम्हारी दशासे सोर और सीदोनकी दशा सहनेयोग्य होगी। (२३) और हे कफर्नाहुम जो स्वर्गलों ऊंचा किया गया है तू नरकलों नीचा किया जायगा. जो आश्चर्य्य कर्म्म तुझमें किये गये हैं सो यदि

सदोममें किये जाते तो आज लों बना रहता । (२४) परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि बिचारके दिनमें तेरी दशासे सदोमके देशकी दशा सहने योग्य होगी ।

[यीशुका लोगोंको विश्राम देनेके लिये अपने पास बुलाना ।]

लूक १० : २१, २२ ।

(२५) इसपर उस समयमें यीशुने कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवीके प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तूने इन बातोंको ज्ञानवानों और बुद्धिमानोंसे गुप्त रखा है और उन्हें बालकोंपर प्रगट किया है । (२६) हां हे पिता क्योंकि तेरी दृष्टिमें यही अच्छा लगा । (२७) मेरे पिताने मुझे सब कुछ सौंपा है और पुत्रको कोई नहीं जानता है केवल पिता और पिताको कोई नहीं जानता है केवल पुत्र और वही जिसपर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे ।

(२८) हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझसे दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा । (२९) मेरा जूआ अपने ऊपर लेओ और मुझसे सीखो क्योंकि मैं नम्र और मनमें दीन हूं और तुम अपने मनोंमें विश्राम पाओगे । (३०) क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है ।

[यीशुका विश्रामके दिनका प्रभु होना ।]

मार्क २ : २३—२८ । लूक ६ : १—५ ।

१२ उस समयमें यीशु बिश्रामके दिन खेतोंमें होके गया और उसके शिष्य भूखे हो बालें तोड़ने और खाने लगे । (२) फरीशियोंने यह देखके उससे कहा देखिये जो काम बिश्रामके दिनमें करना उचित नहीं है सो आपके शिष्य करते हैं । (३) उसने उनसे कहा क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि दाऊदने जब वह और उसके संगी लोग भूखे हुए तब क्या किया । (४) उसने क्योंकर ईश्वरके घरमें जाके भेंटकी रोटियां

खाईं जिन्हें खाना न उसको न उसके संगियोंको परन्तु केवल याजकोंको उचित था। (५) अथवा क्या तुमने व्यवस्थामें नहीं पढ़ा है कि मन्दिरमें याजक लोग विश्रामके दिनोंमें विश्रामवारकी विधिको लंघन करते हैं और निर्दोष हैं। (६) परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि यहां एक है जो मन्दिरसे भी बडा है। (७) जो तुम इसका अर्थ जानते कि मैं दयाको चाहता हूं बलिदानको नहीं तो तुम निर्दोषोंको दोषी न ठहराते। (८) मनुष्यका पुत्र विश्रामवारका भी प्रभु है।

[उसका सूखे हाथवाले को चंगा करना।]

मार्क ३:१—६। लूक ६:६—११।

(९) वहांसे जाके वह उनकी सभाके घरमें आया। (१०) और देखो एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था और उन्होंने उसपर दोष लगानेके लिये उससे पूछा क्या विश्रामके दिनोंमें चंगा करना उचित है। (११) उसने उनसे कहा तुममेंसे कौन मनुष्य होगा कि उसका एक भेड हो और जो वह विश्रामके दिन गढ़ेमें गिरे तो उसे पकड़के न निकालेगा। (१२) फिर मनुष्य भेड़से कितना बडा है. इसलिये विश्रामके दिनोंमें भलाई करना उचित है। (१३) तब उसने उस मनुष्यसे कहा अपना हाथ बढ़ा. उसने उसको बढ़ाया और वह फिर दूसरे हाथकी नाईं भला चंगा हो गया।

(१४) तब फरीशियोंने बाहर जाके यीशुके विरुद्ध आपसमें बिचार किया इसलिये कि उसे नाश करें। (१५) यह जानके यीशु वहांसे चला गया और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिई और उसने उन सभोंको चंगा किया. (१६) और उन्हें दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो. (१७) कि जो वचन यिशैयाह भविष्यद्वक्तासे कहा गया था सो पूरा होवे. (१८) कि देखो मेरा सेवक जिसे मैंने चुना है और मेरा प्रिय जिससे

मेरा मन अति प्रसन्न है. मैं अपना आत्मा उसपर रखूंगा और वह अन्यदेशियोंको सत्य व्यवस्था बतावेगा। (१९) वह न झगड़ेगा न धूम मचावेगा न सड़कोंमें कोई उसका शब्द सुनेगा। (२०) वह जबलों सत्य व्यवस्थाको प्रबल न करे तबलों कुचले हुए नरकटको न तोड़ेगा और धूआं देनेहारी बत्तीको न बुझावेगा। (२१) और अन्यदेशी लोग उसके नामपर आशा रखेंगे।

[फरीशियोंके अपवादका खण्डन।]

लूक ११ : १४—२३

(२२) तब लोग एक भूतग्रस्त अंधे और गूंगे मनुष्यको उस पास लाये और उसने उसे चंगा किया यहांलों कि वह जो अंधा औ गूंगा था देखने औ बोलने लगा। (२३) इसपर सब लोग विस्मित होके बोले यह क्या दाऊदका सन्तान है। (२४) परन्तु फरीशियोंने यह सुनके कहा यह तो बालजिबूल नाम भूतोंके प्रधानकी सहायता बिना भूतोंको नहीं निकालता है। (२५) यीशुने उनके मनकी बातें जानके उनसे कहा जिस जिस राज्यमें फूट पड़ी है वह राज्य उजड़ जाता है और कोई नगर अथवा घराना जिसमें फूट पड़ी है नहीं ठहरेगा। (२६) और यदि शैतान शैतानको निकालता है तो उसमें फूट पड़ी है फिर उसका राज्य क्योंकर ठहरेगा। (२७) और जो मैं बालजिबूलकी सहायतासे भूतोंको निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किसकी सहायतासे निकालते हैं. इसलिये वे तुम्हारे न्याय करनेहारे होंगे। (२८) परन्तु जो मैं ईश्वरके आत्माकी सहायतासे भूतोंको निकालता हूं तो निस्सन्देह ईश्वरका राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है। (२९) यदि बलवन्तको कोई पहिले न बांधे तो क्योंकर उस बलवन्तके घरमें पैठके उसकी सामग्री लूट सके. परन्तु उसे बांधके उसके घरको लूटेगा।

(३०) जो मेरे संग नहीं है सो मेरे बिरुद्ध है और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो बिथराता है। (३१) इसलिये मैं तुमसे कहता हूं कि सब प्रकारका पाप और निन्दा मनुष्योंके लिये क्षमा किया जायगा परन्तु पवित्र आत्माकी निन्दा मनुष्योंके लिये नहीं क्षमा किई जायगी। (३२) जो कोई मनुष्यके पुत्रके बिरोधमें बात कहे वह उसके लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो कोई पवित्र आत्माके बिरोधमें कुछ कहे वह उसके लिये न इस लोकमें न परलोकमें क्षमा किया जायगा।

[पेड़ और उसके फलका दृष्टान्त।]

लूक ६। ४३—४५।

(३३) यदि पेड़को अच्छा कहो तो उसके फलको भी अच्छा कहो अथवा पेड़को निकम्मा कहो तो उसके फलको भी निकम्मा कहो क्योंकि फलहीसे पेड़ पहचाना जाता है। (३४) हे सांपोंके बंश तुम बुरे होके अच्छी बातें क्योंकर कह सकते हो क्योंकि जो मनमें भरा है उसीको मुंह बोलता है। (३५) भला मनुष्य मनके भले भंडारसे भली बातें निकालता है और बुरा मनुष्य बुरे भंडारसे बुरी बातें निकालता है। (३६) मैं तुमसे कहता हूं कि मनुष्य जो जो अनर्थ बातें कहें बिचार के दिनमें हर एक बातका लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातोंसे निर्दोष अथवा अपनी बातोंसे दोषी ठहराया जायगा।

[अध्यापकों और फरीशियोंका यीशुसे एक चिन्ह मांगना।]

लूक ११। २९—३२ और २४—२६।

(३८) इसपर कितने अध्यापकों और फरीशियोंने कहा हे गुरु हम आपसे एक चिन्ह देखने चाहते हैं। (३९) उसने उन्हें उत्तर दिया कि इस समयके दुष्ट और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उनको नहीं दिया जायगा

केवल यूनस भविष्यद्वक्ताका चिन्ह । (४०) जिस रीतिसे यूनस तीन दिन और तीन रात मछलीके पेटमें था उसी रीतिसे मनुष्यका पुत्र तीन दिन और तीन रात पृथिवीके भीतर रहेगा । (४१) निनिवीय लोग बिचारके दिनमें इस समयके लोगोंके संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्होंने यूनसका उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया और देखो यहां एक है जो यूनससे भी बड़ा है । (४२) दक्षिणकी राणी बिचारके दिनमें इस समयके लोगोंके संग उठके उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमानका ज्ञान सुननेको पृथिवीके अन्तसे आई और देखो यहां एक है जो सुलेमानसे भी बड़ा है ।

(४३) जब अशुद्ध भूत मनुष्यसे निकल जाता है तब सूखे स्थानोंमें बिस्राम ढूंढ़ता फिरता पर नहीं पाता है । (४४) तब वह कहता है कि मैं अपने घरमें जहांसे निकला फिर जाऊंगा और आके उसे सूना भाड़ा बुहारा सुथरा पाता है । (४५) तब वह जाके अपनेसे अधिक दुष्ट सात और भूतोंको अपने संग ले आता है और वे भीतर पैठके वहां बास करते हैं और उस मनुष्यकी पिछली दशा पहिलीसे बुरी होती है. इस समयके दुष्ट लोगोंकी दशा ऐसी होगी ।

[यीशु कैसे लोगोंको अपना कुटुम्ब ठहराता है ।]

मार्क ३ । ३१—३५ । लूक ८ । १९—२१ ।

(४६) यीशु लोगोंसे बात करताही था कि देखो उसकी माता और उसके भाई बाहर खड़े हुए उससे बोलने चाहते थे । (४७) तब किसीने उससे कहा देखिये आपकी माता और आपके भाई बाहर खड़े हुए आपसे बोलने चाहते हैं । (४८) उसने कहनेहारेको उत्तर दिया कि मेरी माता कौन है और मेरे भाई कौन हैं । (४९) और अपने शिष्योंकी ओर अपना हाथ बढ़ाके उसने कहा देखो मेरी माता और मेरे भाई ।

(५०) क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गबासी पिताकी इच्छापर चले वही मेरा भाई और बहिन और माता है।

[बीज बोनेहारेका दृष्टान्त और उसका अर्थ।]

मार्क ४ : १—२०। लूक ८ : ४—११।

१३ उस दिन यीशु घरसे निकलके समुद्रके तीरपर बैठा। (२) और ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नावपर चढ़के बैठा और सब लोग तीरपर खड़े रहे। (३) तब उसने उनसे दृष्टान्तोंमें बहुतसी बातें कहीं कि देखो एक बोनेहारा बीज बोनेको निकला। (४) बोनेमें कितने बीज मार्गकी ओर गिरे और पंछियोंने आके उन्हें चुग लिया। (५) कितने पत्थरैली भूमिपर गिरे जहां उनको बहुत मिट्टी न मिली और बहुत मिट्टी न मिलनेसे वे बेग उगे। (६) परन्तु सूर्य्य उदय होने पर वे झुलस गये और जड़ न पकड़नेसे सूख गये। (७) कितने कांटोंके बीचमें गिरे और कांटोंने बढ़के उनको दबा डाला। (८) परन्तु कितने अच्छी भूमिपर गिरे और फल फले कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई तीस गुणे। (९) जिसको सुननेके कान हों सो सुने।

(१०) तब शिष्योंने उस पास आ उससे कहा आप उनसे दृष्टान्तोंमें क्यों बोलते हैं। (११) उसने उनको उत्तर दिया कि तुमको स्वर्गके राज्यके भेद जाननेका अधिकार दिया गया है परन्तु उनको नहीं दिया गया है। (१२) क्योंकि जो कोई रखता है उसको और दिया जायगा और उसको बहुत होगा परन्तु जो कोई नहीं रखता है उससे जो कुछ उसके पास है सो भी ले लिया जायगा। (१३) इसलिये मैं उनसे दृष्टान्तोंमें बोलता हूं क्योंकि वे देखते हुए नहीं देखते हैं और सुनते हुए नहीं सुनते और न बूझते हैं। (१४) और यिशैयाहकी यह भविष्यद्वाणी उनमें पूरी होती है कि तुम सुनते हुए

सुनोगे परन्तु नहीं बूझोगे और देखते हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा । (१५) क्योंकि इन लोगोंका मन मोटा हो गया है और वे कानोंसे ऊंचा सुनते हैं और अपने नेत्र मूंद लिये हैं ऐसा न हो कि वे कभी नेत्रोंसे देखें और कानोंसे सुनें और मनसे समझें और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं । (१६) परन्तु धन्य तुम्हारे नेत्र कि वे देखते हैं और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं । (१७) क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो तुम देखते हो उसको बहुतेरे भविष्यद्वक्ताओं और धर्म्मियोंने देखने चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो उसको सुनने चाहा पर न सुना ।

(१८) सो तुम बोनेहारेके दृष्टान्तका अर्थ सुनो । (१९) जो कोई राज्यका बचन सुनके नहीं बूझता है उसके मनमें जो कुछ बोया गया था सो वह दुष्ट आके छीन लेता है. यह वही है जिसमें बीज मार्गकी ओर बोया गया । (२०) जिसमें बीज पत्थरैलो भूमिपर बोया गया सो वही है जो बचनको सुनके तुरंत आनन्दसे ग्रहण करता है । (२१) परन्तु उसमें जड़ न बंधनेसे वह थोड़ी बेर ठहरता है और बचनके कारण क्लेश अथवा उपद्रव होनेपर तुरन्त ठोकर खाता है । (२२) जिसमें बीज कांटोंके बीचमें बोया गया सो वही है जो बचन सुनता है पर इस संसारकी चिन्ता और धनकी माया बचनको दबाती है और वह निष्फल होता है । (२३) पर जिसमें बीज अच्छी भूमिपर बोया गया सो वही है जो बचन सुनके बूझता है और वह तो फल देता है और कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई तीस गुणे फलता है ।

[कड़ुवे दानेका दृष्टान्त ।]

(२४) उसने उन्हें दूसरा दृष्टान्त दिया कि स्वर्गके राज्यकी उपमा एक मनुष्यसे दिई जाती है जिसने अपने खेतमें अच्छा

बीज बोया । (२५) परन्तु जब लोग सोये थे तब उसका बैरी आके गेहूंके बीचमें जंगली बीज बोके चला गया । (२६) जब अंकूर निकले और बालें लगीं तब जंगली दाने भी दिखाई दिये । (२७) इसपर गृहस्थके दासोंने आ उससे कहा हे स्वामी क्या आपने अपने खेतमें अच्छा बीज न बोया. फिर जंगली दाने उसमें कहांसे आये। (२८) उसने उनसे कहा किसी बैरीने यह किया है. दासोंने उससे कहा आपकी इच्छा होय तो हम जाके उनको बटोर लेवें । (२९) उसने कहा सो नहीं न हो कि जंगली दाने बटोरनेमें उनके संग गेहूं भी उखाड लेओ। (३०) कटनीलों दोनोंको एक संग बढ़ने देओ और कटनीके समयमें मैं काटनेहारोंसे कहूंगा पहिले जंगली दाने बटोरके जलानेके लिये उनके गट्ठे बांधो परन्तु गेहूंको मेरे खत्तेमें एकट्ठा करो ।

[राईके दाने और खमीरका दृष्टान्त ।]

मार्क ४ : ३०—३२ । लूक १३ : १८, १९ ।

(३१) उसने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्गका राज्य राईके एक दानेकी नाईं है जिसे किसी मनुष्यने लेके अपने खेतमें बोया । (३२) वह तो सब बीजोंसे छोटा है परन्तु जब बढ़ जाता तब साग पातसे बडा होता है और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाशके पंछी आके उसकी डालियोंपर बसेरा करते हैं। (३३) उसने एक और दृष्टान्त उनसे कहा कि स्वर्गका राज्य खमीरकी नाईं है जिसको किसी स्त्रीने लेके तीन पसेरी आटेमें छिपा रखा यहांलों कि सब खमीर हो गया ।

(३४) यह सब बातें यीशुने दृष्टान्तोंमें लोगोंसे कहीं और बिना दृष्टान्तसे उनको कुछ न कहा. (३५) कि जो बचन भविष्यद्वक्तासे कहा गया था कि मैं दृष्टान्तोंमें अपना मुंह खोलूंगा जो बातें जगतकी उत्पत्तिसे गुप्त रहीं उन्हें बर्णन करूंगा सो पूरा होवे ।

[कड़ुवे दानेके दृष्टान्तका अर्थ ।]

(३६) तब यीशु लोगोंको बिदा कर घरमें आया और उस के शिष्योंने उस पास आ कहा खेतके जंगली दानेके दृष्टान्त का अर्थ हमें समझाइये । (३७) उसने उनको उत्तर दिया कि जो अच्छा बीज बोता है सो मनुष्यका पुत्र है। (३८) खेत तो संसार है अच्छा बीज राज्यके सन्तान हैं और जंगली बीज दुष्टके सन्तान हैं। (३९) जिस बैरीने उनको बोया सो शैतान है कटनी जगतका अन्त है और काटनेहारे स्वर्गदूत हैं। (४०) सो जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और आगसे जलाये जाते हैं वैसाही इस जगतके अन्तमें होगा । (४१) मनुष्यका पुत्र अपने दूतोंको भेजेगा और वे उसके राज्यमेंसे सब ठोकरके कारणोंको और कुकर्म्म करनेहारोंको बटोर लेंगे. (४२) और उन्हें आगके कुंडमें डालेंगे जहां रोना औ दांत पीसना होगा। (४३) तब धर्म्मी लोग अपने पिताके राज्यमे सूर्य्यकी नाईं चमकेंगे . जिसको सुननेके कान हों सो सुने ।

[गुप्त धन और अन्मोल मोती और महाजालका दृष्टान्त ।]

(४४) फिर स्वर्गका राज्य खेतमें छिपाये हुए धनके समान है जिसे किसी मनुष्यने पाके गुप्त रखा और वह उसके आनन्दके कारण जाके अपना सब कुछ बेचके उस खेतको मोल लेता है । (४५) फिर स्वर्गका राज्य एक ब्योपारीके समान है जो अच्छे मोतियोंको ढूंढ़ता था । (४६) उसने जब एक बड़े मोलका मोती पाया तब जाके अपना सब कुछ बेचके उसे मोल लिया ।

(४७) फिर स्वर्गका राज्य महाजालके समान है जो समुद्रमें डाला गया और हर प्रकारकी मछलियोंको घेर लिया । (४८) जब वह भर गया तब लोग उसको तीरपर खींच लाये और बैठके अच्छी अच्छीको पात्रोंमें बटोरा और निकम्मी निकम्मीको फेंक दिया । (४९) जगतके अन्तमें वैसाही होगा . स्वर्गदूत आके

दुष्टोंको धर्म्मियोंके बीचमेंसे अलग करेंगे . (५०) और उन्हें आगके कुंडमें डालेंगे जहां रोना औ दांत पीसना होगा।

(५१) यीशुने उनसे कहा क्या तुमने यह सब बातें समझीं . वे उससे बोले हां प्रभु। (५२) उसने उनसे कहा इसलिये हर एक अध्यापक जिसने स्वर्गके राज्यकी शिक्षा पाई है गृहस्थके समान है जो अपने भंडारसे नई और पुरानी बस्तु निकालता है।

[यीशुका अपने देशके लोगोंसे अपमानित होना।]

मार्क ६ : १—६।

(५३) जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका तब वहांसे चला गया। (५४) और उसने अपने देशमें आ उनकी सभाके घरमें उन्हें ऐसा उपदेश दिया कि वे अचंभित हो बोले इसको यह ज्ञान और ये आश्चर्य्य कर्म्म कहांसे हुए। (५५) यह क्या बढ़ईका पुत्र नहीं है . क्या उसकी माताका नाम मरियम और उसके भाइयोंके नाम याकूब और योशी और शिमोन और यहूदा नहीं हैं। (५६) और क्या उसकी सब बहिनें हमारे यहां नहीं हैं . फिर उसको यह सब कहांसे हुआ। (५७) सो उन्होंने उसके विषयमें ठोकर खाई परन्तु यीशुने उनसे कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और अपना घर छोड़के और कहीं निरादर नहीं होता है। (५८) और उसने वहां उनके अविश्वासके कारण बहुत आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किये।

[योहन बपतिसमा देनेहारेकी मृत्यु।]

मार्क ६ : १४—२९। लूक ९ : ७—९।

४ उस समयमें चौथाईके राजा हेरोदने यीशुकी कीर्त्ति सुनी . (२) और अपने सेवकोंसे कहा यह तो योहन बपतिसमा देनेहारा है वह मृतकोंमेंसे जो उठा है इसलिये आश्चर्य्य कर्म्म उससे प्रगट होते हैं। (३) क्योंकि हेरोदने अपने भाई फिलिपकी स्त्री हेरोदियाके कारण योहनको पकड़के उसे

बांधा था और बन्दीगृहमें डाला था । (४) क्योंकि योहनने उससे कहा था कि इस स्त्रीको रखना तुझको उचित नहीं है । (५) और वह उसे मार डालने चाहता था पर लोगोंसे डरा क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे । (६) परन्तु हेरोदके जन्म दिनकी सभामें हेरोदियाकी पुत्रीने सभामें नाचकर हेरोदको प्रसन्न किया । (७) इसलिये उसने किरिया खाके अंगीकार किया कि जो कुछ तू मांगे मैं तुझे देऊंगा । (८) वह अपनी माताको उस्काई हुई बोली योहन बपतिसमा देनेहारेका सिर यहां थालमें मुझे दीजिये । (९) तब राजा उदास हुआ परन्तु उस किरियाके और अपने संग बैठनेहारोंके कारण उसने देनेकी आज्ञा किई । (१०) और उसने भेजकर बन्दीगृहमें योहनका सिर कटवाया । (११) और उसका सिर थालमें कन्याको पहुंचा दिया गया और वह उसको अपनी मांके पास ले गई । (१२) तब उसके शिष्योंने आके उसकी लोथको उठाके गाड़ा और आके यीशुसे इसका समाचार कहा ।

[यीशुका पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना ।]

मार्क ६ । ३२—४४ । लूक ९ । १०—१७ । योहन ६ : १—१३ ।

(१३) जब यीशुने यह सुना तब नावपर चढ़के वहांसे किसी जंगली स्थानमें एकान्तमें गया और लोग यह सुनके नगरोंमेंसे पैदल उसके पीछे हो लिये । (१४) यीशुने निकलके बहुत लोगोंको देखा और उनपर दया कर उनके रोगियोंको चंगा किया ।

(१५) जब सांझ हुई तब उसके शिष्योंने उस पास आ कहा यह तो जंगली स्थान है और बेला अब बीत गई है लोगोंको बिदा कीजिये कि वे बस्तियोंमें जाके अपने लिये भोजन मोल लेवें । (१६) यीशुने उनसे कहा उन्हें जानेका प्रयोजन नहीं तुम उन्हें खानेको देओ । (१७) उन्होंने उससे कहा यहां हमारे पास केवल पांच रोटी और दो मछली हैं । (१८) उसने

कहा उनको यहां मेरे पास लाओ । (१९) तब उसने लोगोंको घासपर बैठनेकी आज्ञा दिई और उन पांच रोटियों और दो मछलियोंको ले स्वर्गकी ओर देखके धन्यबाद किया और रोटियां तोड़के शिष्योंको दिईं और शिष्योंने लोगोंको दिईं । (२०) सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्होंने उनकी बारह टोकरी भरी उठाईं । (२१) जिन्होंने खाया सो स्त्रियों और बालकोंको छोड़ पांच सहस्र पुरुषोंके अटकल थे ।

[योशुका समुद्रपर चलना ।]

मार्क ६ : ४५—५१ । योहन ६ : १५—२१ .

(२२) तब योशुने तुरन्त अपने शिष्योंको दृढ़ आज्ञा दिई कि जब लों मैं लोगोंको बिदा करूं तुम नावपर चढ़के मेरे आगे उस पार जाओ । (२३) वह लोगोंको बिदा कर प्रार्थना करनेको एकान्तमें पर्ब्बतपर चढ़ गया और सांझको वहां अकेला था । (२४) उस समय नाव समुद्रके बोचमें लहरोंसे उछल रही थी क्योंकि बयार सन्मुखकी थी । (२५) रातके चैाथे पहरमें योशु समुद्रपर चलते हुए उनके पास गया । (२६) शिष्य लोग उसको समुद्रपर चलते देखके घबरा गये और बोले यह प्रेत है और डरके मारे चिल्लाये । (२७) योशु तुरन्त उनसे बात करने लगा और कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो मत । (२८) तब पितरने उसको उत्तर दिया कि हे प्रभु यदि आपही हैं तो मुझे अपने पास जलपर आनेकी आज्ञा दोजिये । (२९) उसने कहा आ. तब पितर नावपरसे उतरके योशु पास जानेको जलपर चलने लगा । (३०) परन्तु बयारको प्रचंड देखके वह डर गया और जब डूबने लगा तब चिल्लाके बोला हे प्रभु मुझे बचाइये । (३१) योशुने तुरन्त हाथ बढ़ाके उसको थांभ लिया और उससे कहा हे अल्पबिश्वासी क्यों सन्देह किया । (३२) जब वे नावपर चढ़े तब बयार थम गई । (३३) इसपर जो लोग नावपर थे

सो आके यीशुको प्रणाम करके बोले सचमुच आप ईश्वरके पुत्र हैं ।

(३४) वे पार उतरके गिनेसरत देशमें पहुंचे । (३५) और वहांके लोगोंने यीशुको चीन्हके आसपासके सारे देशमें कहला भेजा और सब रोगियोंको उस पास लाये . (३६) और उससे बिन्ती किई कि वे केवल उसके वस्त्रके आंचलको छूवें और जितनोंने छूआ सब चंगे किये गये ।

[प्राचीनोंके व्यवहारोंके कारण ईश्वरकी आज्ञाको उठा न देना ।]

मार्क ७ । १—२३ ।

१५ तब यिरूशलीमके कितने अध्यापकों और फरीशियों ने यीशु पास आ कहा . (२) आपके शिष्य लोग क्यों प्राचीनोंके व्यवहार लंघन करते हैं क्योंकि जब वे रोटी खाते तब अपने हाथ नहीं धोते हैं । (३) उसने उनको उत्तर दिया कि तुम भी क्यों अपने व्यवहारोंके कारण ईश्वरकी आज्ञाको लंघन करते हो । (४) क्योंकि ईश्वरने आज्ञा किई कि अपने माता पिताका आदर कर और जो कोई माता अथवा पिताकी निन्दा करे सो मार डाला जाय । (५) परन्तु तुम कहते हो यदि कोई अपने माता अथवा पितासे कहे कि जो कुछ तुझको मुझसे लाभ होता सो संकल्प किया गया है तो उसको अपनी माता अथवा अपने पिताका आदर करनेका और कुछ प्रयोजन नहीं । (६) सो तुमने अपने व्यवहारोंके कारण ईश्वरकी आज्ञाको उठा दिया है । (७) हे कपटिये। यिशैयाहने तुम्हारे विषयमें यह भविष्यद्वाणी अच्छी कही . (८) कि ये लोग अपने मुंह से मेरे निकट आते हैं और होंठोंसे मेरा आदर करते हैं परन्तु उनका मन मुझसे दूर रहता है । (९) पर वे वृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्योंकी आज्ञाओंको धर्म्मोपदेश ठहराके सिखाते हैं ।

(१०) और उसने लोगोंको अपने पास बुलाके उनसे कहा सुनो और बूझो । (११) जो मुंहमें समाता है सो मनुष्यको अपवित्र नहीं करता है परन्तु जो मुंहसे निकलता है सोई मनुष्यको अपवित्र करता है । (१२) तब उसके शिष्योंने आ उस से कहा क्या आप जानते हैं कि फरीशियोंने यह बचन सुनके ठोकर खाई । (१३) उसने उत्तर दिया कि हर एक गाछ जो मेरे स्वर्गीय पिताने नहीं लगाया है उखाड़ा जायगा । (१४) उनको रहने दो . वे अंधोंके अंधे अगुवे हैं और अंधा यदि अंधेको मार्ग बतावे तो दोनों गढ़ेमें गिर पड़ेंगे । (१५) तब पितरने उसको उत्तर दिया कि इस दृष्टान्तका अर्थ हमें समझाइये । (१६) यीशुने कहा तुम भी क्या अबलों निर्बुद्धि हो । (१७) क्या तुम अबलों नहीं बूझते हो कि जो कुछ मुंहमें समाता सो पेटमें जाता है और संडासमें फेंका जाता है । (१८) परन्तु जो कुछ मुंहसे निकलता है सो मनसे बाहर आता है और वही मनुष्यको अपवित्र करता है । (१९) क्योंकि मनसे नाना भांतिकी कुचिन्ता नरहिंसा परस्त्रीगमन व्यभिचार चोरी झूठो साक्षी और ईश्वरकी निन्दा निकलती हैं । (२०) येही हैं जो मनुष्यको अपवित्र करती हैं परन्तु बिन धोये हाथोंसे भोजन करना मनुष्यको अपवित्र नहीं करता है ।

[यीशुका एक अन्यदेशी स्त्रीकी बेटीको चंगा करना ।]

मार्क ७ : २४—३० ।

(२१) यीशु वहांसे निकलके सोर और सीदोनके सिवानोंमें गया । (२२) और देखो उन सिवानोंमेंकी एक कनानी स्त्रीने निकलकर पुकारके उससे कहा हे प्रभु दाऊदके सन्तान मुझ पर दया कीजिये मेरी बेटी भूतसे अति पीड़ित है । (२३) परन्तु उसने उसको कुछ उत्तर न दिया और उसके शिष्योंने आ उससे बिन्ती कर कहा इसको बिदा कीजिये क्योंकि वह

हमारे पीछे पीछे पुकारती है । (२४) उसने उत्तर दिया कि इस्रायेलके घरानेकी खोई हुई भेड़ोंको छोड़ मैं किसीके पास नहीं भेजा गया हूं । (२५) तब स्त्रीने आ उसको प्रणाम कर कहा हे प्रभु मेरा उपकार कीजिये । (२६) उसने उत्तर दिया कि लड़कोंको रोटी लेके कुत्तोंके आगे फेंकना अच्छा नहीं है । (२७) स्त्रीने कहा सच है प्रभु तौभी कुत्ते जो चूरचार उनके स्वामियोंकी मेजसे गिरते हैं सो खाते हैं । (२८) तब यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे नारी तेरा विश्वास बड़ा है जैसा तू चाहती है वैसाही तुझे होय . और उसकी बेटी उसी घड़ीसे चंगी हुई ।

[यीशुका चार सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना ।
मार्क ८ । १—१० ।

(२९) यीशु वहांसे जाके गालीलके समुद्रके निकट आया और पर्व्वतपर चढ़के वहां बैठा । (३०) और बड़ी बड़ी भीड़ अपने संग लंगड़ों अंधों गूंगों टुंडों और बहुतसे औरोंको लेके यीशु पास आईं और उन्हें उसके चरणोंपर डाला और उसने उन्हें चंगा किया . (३१) यहांलों कि जब लोगोंने देखा कि गूंगे बोलते हैं टुंडे चंगे होते हैं लंगड़े चलते हैं और अंधे देखते हैं तब अचंभा करके इस्रायेलके ईश्वरकी स्तुति किई ।

(३२) तब यीशुने अपने शिष्योंको अपने पास बुलाके कहा मुझे इन लोगोंपर दया आती है क्योंकि वे तीन दिनसे मेरे संग रहे हैं और उनके पास कुछ खानेको नहीं है और मैं उनको भोजन बिना बिदा करने नहीं चाहता हूं न हो कि मार्ग में उनका बल घट जाय । (३३) उसके शिष्योंने उससे कहा हमें इस जंगलमें कहांसे इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें । (३४) यीशुने उनसे कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं . उन्होंने कहा सात और थोड़ीसी छोटी

मछलियां। (३५) तब उसने लोगोंको भूमिपर बैठनेकी आज्ञा दिई। (३६) और उसने उन सात रोटियोंको और मछलियोंको लेके धन्य मानके तोड़ा और अपने शिष्योंको दिया और शिष्योंने लोगोंको दिया। (३७) सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्होंने उनके सात टोकरे भरे उठाये। (३८) जिन्होंने खाया सो स्त्रियों और बालकोंको छोड़ चार सहस्र पुरुष थे। (३९) तब यीशु लोगोंको बिदा कर नावपर चढ़के मगदला नगरके सिवानोंमें आया।

[यीशुका अपने शिष्योंको फरीशियों और सदूकियोंके खमीरसे चिताना।]

मार्क ८ : १३—२१।

१६ तब फरीशियों और सदूकियोंने यीशु पास आ उस की परीक्षा करनेको उससे चाहा कि हमें आकाशका एक चिन्ह दिखाइये। (२) उसने उनको उत्तर दिया सांझको तुम कहते हो कि फरछा होगा क्योंकि आकाश लाल है और भोरको कहते हो कि आज आंधी आवेगी क्योंकि आकाश लाल और धूमला है। (३) हे कपटियो तुम आकाश का रूप बूझ सकते हो क्या तुम समयोंके चिन्ह नहीं बूझ सकते हो। (४) इस समयके दुष्ट और ब्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उनको नहीं दिया जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ताका चिन्ह. तब वह उन्हें छोड़के चला गया।

(५) उसके शिष्य लोग उस पार पहुंचके रोटी लेना भूल गये। (६) और यीशुने उनसे कहा देखो फरीशियों और सदूकियोंके खमीरसे चौकस रहो। (७) वे आपसमें बिचार करने लगे यह इस लिये है कि हमने रोटी न लिई। (८) यह जानके यीशु ने उनसे कहा हे अल्पबिश्वासियो तुम रोटी न लेनेके कारण क्यों आपसमें बिचार करते हो। (९) क्या तुम अबलों नहीं

बूझते हो और उन पांच सहस्रकी पांच रोटी नहीं स्मरण करते हो और कितनी टोकरियां तुमने उठाईं । (१०) और न उन चार सहस्रकी सात रोटी और कितने टोकरे तुमने उठाये । (११) तुम क्यों नहीं बूझते हो कि मैंने तुमको फरीशियों और सदूकियोंके खमीरसे चौकस रहनेको जो कहा सो रोटीके विषयमें नहीं कहा । (१२) तब उन्होंने बूझा कि उसने रोटीके खमीरसे नहीं परन्तु फरीशियों और सदूकियों की शिक्षासे चौकस रहनेको कहा ।

[पितरका स्वीकार ।]

मार्क ८ । २७—२९ । लूक ९ : १८—२० । योहन ६ : ६६—६९ ।

(१३) यीशुने कैसरिया फिलिपीके सिवानोंमें आके अपने शिष्योंसे पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं मनुष्यका पुत्र कौन हूं । (१४) उन्होंने कहा कितने तो आपको योहन बपतिसमा देनेहारा कहते हैं कितने एलियाह कहते हैं और कितने यिरमियाह अथवा भविष्यद्वक्ताओंमेंसे एक कहते हैं । (१५) उसने उनसे कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं । (१६) शिमोन पितरने उत्तर दिया कि आप जीवते ईश्वरके पुत्र ख्रीष्ट हैं । (१७) यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे यूनसके पुत्र शिमोन तू धन्य है क्योंकि मांस औ लोहूने नहीं परन्तु मेरे स्वर्गवासी पिताने यह बात तुझ पर प्रगट किई । (१८) और मैं भी तुझसे कहता हूं कि तू पितर है और मैं इसी पत्थरपर अपनी मंडली बनाऊंगा और परलोकके फाटक उस पर प्रबल न होंगे । (१९) मैं तुझे स्वर्गके राज्यकी कुंजियां देऊंगा और जो कुछ तू पृथिवीपर बांधेगा सो स्वर्गमें बंधा हुआ होगा और जो कुछ तू पृथिवीपर खोलेगा सो स्वर्गमें खुला हुआ होगा । (२०) तब उसने अपने शिष्योंको चिताया कि किसीसे मत कहो कि मैं यीशु जो हूं सो ख्रीष्ट हूं ।

[यीशुका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना और शिष्य होनेकी विधिको बताना ।]

मार्क ८ : ३४ ; ९ : १ । लूक ९ : २२—२७ ।

(२१) उस समयसे यीशु अपने शिष्योंको बताने लगा कि मुझे अवश्य है कि यिरूशलीममें जाऊं और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकोंसे बहुत दुःख उठाऊं और मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जी उठूं । (२२) तब पितर उसे लेके उसको डांटके कहने लगा कि हे प्रभु आप पर दया रहे यह तो आपको कभी न होगा । (२३) उसने मुंह फेरके पितर से कहा हे शैतान मेरे साम्हनेसे दूर हो तू मेरे लिये ठोकर है क्योंकि तुझे ईश्वरकी बातोंका नहीं परन्तु मनुष्योंकी बातों का सोच रहता है ।

(२४) तब यीशुने अपने शिष्योंसे कहा यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे तो अपनी इच्छाको मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे । (२५) क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो उसे पावेगा । (२६) यदि मनुष्य सारे जगतको प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उसको क्या लाभ होगा . अथवा मनुष्य अपने प्राणको सन्ती क्या देगा । (२७) मनुष्य का पुत्र अपने दूतोंके संग अपने पिताके ऐश्वर्य्यमें आवेगा और तब वह हर एक मनुष्यको उसके कार्य्यके अनुसार फल देगा । (२८) मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उनमेंसे कोई कोई हैं कि जबलों मनुष्यके पुत्रको उसके राज्य में आते न देखें तबलों मृत्युका स्वाद न चीखेंगे ।

[यीशुका एक पर्ब्बतपर शिष्योंके आगे तेजस्वी दिखाई देना ।]

मार्क ९ : २—८ । लूक ९ : २८—३६ ।

१७ छः दिनके पीछे यीशु पितर और याकूब और उसके भाई योहनको लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्ब्बतपर एकान्तमें

ले गया। (२) और उनके आगे उसका रूप बदल गया और उसका मुंह सूर्य्यके तुल्य चमका और उसका वस्त्र ज्योतिकी नाईं उजला हुआ। (३) और देखो मूसा और एलियाह उसके संग बात करते हुए उनको दिखाई दिये। (४) इसपर पितरने योशुसे कहा हे प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा है. यदि आपकी इच्छा होय तो हम तीन डेरे यहां बनावें एक आपके लिये एक मूसाके लिये और एक एलियाहके लिये। (५) वह बोलताही था कि देखो एक ज्योतिमय मेघने उन्हें छा लिया और देखो उस मेघसे यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं उसकी सुनो। (६) शिष्य लोग यह सुनके औंधे मुंह गिरे और निपट डर गये। (७) योशुने उन पास आके उन्हें छूके कहा उठो डरो मत। (८) तब उन्होंने अपनी आंखें उठाके योशुको छोड़के और किसीको न देखा। (९) जब वे उस पर्व्वतसे उतरते थे तब योशुने उनको आज्ञा दिई कि जबलों मनुष्यका पुत्र मृतकोंमेंसे नहीं जी उठे तबलों इस दर्शनका समाचार किसीसे मत कहो।

(१०) और उसके शिष्योंने उससे पूछा फिर अध्यापक लोग क्यों कहते हैं कि एलियाहको पहिले आना होगा। (११) योशु ने उनको उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले आके सब कुछ सुधारेगा। (१२) परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि एलियाह आ चुका है और उन्होंने उसको नहीं चीन्हा परन्तु उससे जो कुछ चाहा सो किया. इस रीतिसे मनुष्यका पुत्र भी उनसे दुःख पावेगा। (१३) तब शिष्योंने बूझा कि वह योहन बपतिसमा देनेहारेके विषयमें हमसे कहता है।

[योशुका एक भूतग्रस्त लड़केको चंगा करना।]

मार्क ९। १४—२८। लूक ९। ३७—४२।

(१४) जब वे लोगोंके निकट पहुंचे तब किसी मनुष्यने योशु

पास आ घुटने टेकके उससे कहा. (१५) हे प्रभु मेरे पुत्रपर दया कीजिये वह मिर्गीके रोगसे अति पीड़ित है कि बारबार आगमें और बारबार पानीमें गिर पड़ता है। (१६) और मैं उसको आपके शिष्योंके पास लाया परन्तु वे उसे चंगा नहीं कर सके। (१७) यीशुने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी और हठीले लोगो मैं कबलों तुम्हारे संग रहूंगा और कबलों तुम्हारी सहूंगा. उसको यहां मेरे पास लाओ। (१८) तब यीशुने भूतको डांटा और वह उसमेंसे निकला और लड़का उसी घड़ीसे चंगा हुआ। (१९) तब शिष्योंने निरालेमें यीशु पास आ कहा हम उस भूतको क्यों नहीं निकाल सके। (२०) यीशुने उनसे कहा तुम्हारे अबिश्वासके कारण क्योंकि मैं तुमसे सत्य कहता हूं यदि तुमको राईके एक दानेके तुल्य बिश्वास होय तो तुम इस पहाड़से जो कहोगे कि यहांसे वहां चला जा वह जायगा और कोई काम तुमसे असाध्य नहीं होगा। (२१) तौभी जो इस प्रकारके हैं सो प्रार्थना और उपवास बिना और किसी उपायसे निकाले नहीं जाते हैं।

(२२) जब वे गालीलमें फिरते थे तब यीशुने उनसे कहा मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके हाथमें पकड़वाया जायगा। (२३) वे उसको मार डालेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा. इसपर वे बहुत उदास हुए।

[यीशुका मन्दिरका कर देना।]

(२४) जब वे कफर्नाहूममें पहुंचे तब मन्दिरका कर लेनेहारे पितरके पास आके बोले क्या तुम्हारा गुरु मन्दिरका कर नहीं देता है. उसने कहा हां देता है। (२५) जब पितर घरमें आया तब यीशुने उसके बोलनेके पहिले उससे कहा हे शिमोन तू क्या समझता है. पृथिवीके राजा लोग कर अथवा खिराज किनसे लेते हैं अपने सन्तानोंसे अथवा परायोंसे। (२६) पितरने

उससे कहा परायोंसे . योशुने उससे कहा तब तो सन्तान बचे हुए हैं । (२७) तौभी जिस्तें हम उनको ठोकर न खिलावें इसलिये तू समुद्रके तोरपर जाके बंसी डाल और जो मछली पहिले निकले उसको ले . तू उसका मुंह खोलनेसे एक रुपैया पावेगा उसीको लेके मेरे और अपने लिये उन्हें दे ।

[योशुका बतलाना कि स्वर्गके राज्यमें बड़ा कौन है ।]

मार्क ९ : ३३—३७ । लूक ९ : ४६—४८ ।

१८ उसी घड़ी शिष्योंने योशु पास आ कहा स्वर्गके राज्य में बड़ा कौन है । (२) योशुने एक बालकको अपने पास बुलाके उनके बोचमें खड़ा किया . (३) और कहा मैं तुम्हें सच कहता हूं जो तुम मन न फिरावो और बालकोंके समान न हो जावो तो स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करने न पाओगे । (४) जो कोई अपनेको इस बालकके समान दोन करे सोई स्वर्गके राज्यमें बड़ा है । (५) और जो कोई मेरे नामसे एक ऐसे बालकको ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है । (६) परन्तु जो कोई इन छोटोंमेंसे जो मुझपर बिश्वास करते हैं एकको ठोकर खिलावे उसके लिये भला होता कि चक्कोका पाट उसके गलेमें लटकाया जाता और वह समुद्रके गहिरावमें डुबाया जाता ।

(७) ठोकरोंके कारण हाय संसार . ठोकरें अवश्य लगेंगीं परन्तु हाय वह मनुष्य जिसके द्वारासे ठोकर लगती है । (८) जो तेरा हाथ अथवा तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काटके फेंक दे . लंगड़ा अथवा टुंडा होके जोवनमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो हाथ अथवा दो पांव रहते हुए तू अनन्त आगमें डाला जाय । (९) और जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे . काना होके जीवनमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो

आंखें रहते हुए तू नरककी आगमें डाला जाय । (१०) देखो कि तुम इन छोटोंमेंसे एकको तुच्छ न जानो क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि स्वर्गमें उनके दूत मेरे स्वर्गवासी पिताका मुंह नित्य देखते हैं ।

(११) मनुष्यका पुत्र खोये हुएको बचाने आया है । (१२) तुम क्या समझते हो . जो किसी मनुष्यको सौ भेड़ होवें और उन मेंसे एक भटक जाय तो क्या वह निन्नानवेको पहाड़ोंपर छोडके उस भटकी हुईको नहीं जाके ढूंढ़ता है । (१३) और मैं तुमसे सत्य कहता हूं यदि ऐसा हो कि वह उसको पावे तो जो निन्नानवे नहीं भटक गई थीं उनसे अधिक वह उस भेड़के लिये आनन्द करता है । (१४) ऐसाही तुम्हारे स्वर्गवासी पिताकी इच्छा नहीं है कि इन छोटोंमेंसे एक भी नाश होवे ।

[क्षमा करनेका उपदेश और निर्दय दासका दृष्टान्त ।]

(१५) यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जाके उसके संग एकान्तमें उसको समझा दे . जो वह तेरी सुने तो तूने अपने भाईको पाया है । (१६) परन्तु जो वह न सुने तो एक अथवा दो जनको अपने संग ले जा कि दो अथवा तीन साक्षियोंके मुंहसे हर एक बात ठहराई जाय । (१७) जो वह उनकी न माने तो मंडलीसे कह दे परन्तु जो वह मंडलीकी भी न माने तो तेरे लेखे देवपूजक और कर उगाहनेहारासा होय । (१८) मैं तुमसे सच कहता हूं जो कुछ तुम पृथिवीपर बांधोगे सो स्वर्गमें बंधा हुआ होगा और जो कुछ तुम पृथिवीपर खोलोगे सो स्वर्गमें खुला हुआ होगा । (१९) फिर मैं तुमसे कहता हूं यदि पृथिवीपर तुममेंसे दो मनुष्य जो कुछ मांगें उस बातके विषयमें एक मन होवें तो वह उनके लिये मेरे स्वर्गवासी पिताकी ओरसे हो जायगी । (२०) क्योंकि जहां दो अथवा तीन मेरे नामपर एकट्ठे होवें तहां मैं उनके बीचमें हूं ।

(२१) तब पितरने उस पास आ कहा हे प्रभु मेरा भाई कै बेर मेरा अपराध करे और मैं उसको क्षमा करूं . क्या सात बेरलों । (२२) यीशुने उससे कहा मैं तुझसे नहीं कहता हूं कि सात बेरलों परन्तु सत्तर गुणे सात बेरलों । (२३) इस लिये स्वर्गके राज्यकी उपमा एक राजासे दिई जाती है जिसने अपने दासोंसे लेखा लेने चाहा । (२४) जब वह लेखा लेने लगा तब एक जन जो दस सहस्र तोड़े धारता था उसके पास पहुंचाया गया । (२५) जब कि भर देनेको उस पास कुछ न था उसके स्वामीने आज्ञा किई कि वह और उसकी स्त्री और लड़के बाले और जो कुछ उसका था सब बेचा जाय और वह ऋण भर दिया जाय । (२६) इसपर उस दासने दंडवत कर उसे प्रणाम किया और कहा हे प्रभु मेरे विषयमें धीरज धरिये मैं आपको सब भर देऊंगा । (२७) तब उस दासके स्वामीने दया कर उसे छोड़ दिया और उसका ऋण क्षमा किया । (२८) परन्तु उसी दासने बाहर निकलके अपने संगी दासोंमेंसे एकको पाया जो उसकी एक सौ सूकी धारता था और उसको पकड़के उसका गला दाबके कहा जो कुछ तू धारता है मुझे दे । (२९) इसपर उसके संगी दासने उसके पांवों पड़के उससे बिन्ती कर कहा मेरे बिषयमें धीरज धरिये मैं आपको सब भर देऊंगा । (३०) उसने न माना परन्तु जाके उसे बन्दीगृहमें डाला कि जबलों ऋणको भर न देवे तबलों वहीं रहे । (३१) उसके संगी दास लोग जो हुआ था सो देखके बहुत उदास हुए और जाके सब कुछ जो हुआ था अपने स्वामीको बताया । (३२) तब उस दासके स्वामीने उसको अपने पास बुलाके उससे कहा हे दुष्ट दास तूने जो मुझसे बिन्ती किई तो मैंने तुझे वह सब ऋण क्षमा किया । (३३) सो जैसा मैंने तुझपर दया किई वैसा क्या तुझे भी अपने संगी दासपर दया करना उचित न था ।

(३४) और उसके स्वामीने क्रोध कर उसे दंडकारकोंके हाथ सोंप दिया कि जबलों वह उसका सब ऋण भर न देवे तबलों उनके हाथमें रहे । (३५) यूंहो यदि तुममेंसे हर एक अपने अपने मनसे अपने भाईके अपराध क्षमा न करे तो मेरा स्वर्गबासी पिता भी तुमसे वैसा करेगा ।

[पत्नीको त्यागनेका निषेध ।]

मार्क १० : १—१२ ।

१९ जब यीशु यह बातें कह चुका तब गालीलसे जाके यर्दनके उसपार यिहूदियाके सिवानोंमें आया । (२) और बड़ी बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिईं और उसने उन्हें वहां चंगा किया । (३) तब फरीशियोंने उस पास आ उसकी परीक्षा करनेको उससे कहा क्या किसी कारणसे अपनी स्त्रीको त्यागना मनुष्यको उचित है । (४) उसने उनको उत्तर दिया क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि सृजनहारने आरंभसे नर और नारी करके मनुष्योंको उत्पन्न किया . (५) और कहा इस हेतुसे मनुष्य अपने माता पिताको छोड़के अपनी स्त्रीसे मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे । (६) सो वे आगे दो नहीं पर एक तन हैं इसलिये जो कुछ ईश्वरने जोड़ा है उसको मनुष्य अलग न करे । (७) उन्होंने उससे कहा फिर मूसाने क्यों त्यागपत्र देने और स्त्रीको त्यागनेकी आज्ञा किई । (८) उसने उनसे कहा मूसाने तुम्हारे मनकी कठोरताके कारण तुमको अपनी अपनी स्त्रियां त्यागने दिया परन्तु आरंभसे ऐसा नहीं था । (९) और मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई ब्यभिचारको छोड़ और किसी हेतुसे अपनी स्त्रीको त्यागके दूसरीसे बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है और जो उस त्यागी हुईसे बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है । (१०) उसके शिष्योंने उससे कहा यदि पुरुषको स्त्रीके संग इस प्रकारका सम्बंध है

तो बिवाह करना अच्छा नहीं है । (११) उसने उनसे कहा सब लोग यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते हैं केवल वे जिनको दिया गया है । (१२) क्योंकि कोई कोई नपुंसक हैं जो माताके गर्भसे ऐसेही जन्मे और कोई कोई नपुंसक हैं जो मनुष्योंसे नपुंसक किये गये हैं और कोई कोई नपुंसक हैं जिन्होंने स्वर्गके राज्यके लिये अपनेको नपुंसक किये हैं. जो इसको ग्रहण कर सके सो ग्रहण करे ।

[यीशुका बालकोंको आशीस देना ।]

मार्क १० : १३—१६ । लूक १८ : १५—१७ ।

(१३) तब लोग कितने बालकोंको यीशु पास लाये कि वह उनपर हाथ रखके प्रार्थना करे परन्तु शिष्योंने उन्हें डांटा । (१४) यीशुने कहा बालकोंको मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि स्वर्गका राज्य ऐसोंका है । (१५) और वह उनपर हाथ रखके वहांसे चला गया ।

[एक धनवान जवानसे यीशुकी बातचीत ।]

मार्क १० : १७—३१ । लूक १८ : १८—३० ।

(१६) और देखो एक मनुष्यने उस पास आ उससे कहा हे उत्तम गुरु अनन्त जीवन पानेको मैं कौनसा उत्तम काम करूं । (१७) उसने उससे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है . कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर . परन्तु जो तू जीवनमें प्रवेश किया चाहता है तो आज्ञाओंको पालन कर । (१८) उसने उससे कहा कौन कौन आज्ञा . यीशुने कहा यह कि नरहिंसा मत कर परस्त्रीगमन मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे . (१९) अपने माता पिताका आदर कर और अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर । (२०) उस जवानने उससे कहा इन सभोंको मैंने अपने लड़कपनसे पालन किया है मुझे अब क्या घटी है । (२१) यीशुने उससे कहा जो तू सिद्ध हुआ चाहता है

तो जा अपनी सम्पत्ति बेचके कंगालोंको दे और तू स्वर्गमें धन पावेगा और आ मेरे पीछे हो ले । (२२) वह जवान यह बात सुनके उदास चला गया क्योंकि उसको बहुत धन था ।

(२३) तब यीशुने अपने शिष्योंसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि धनवानको स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करना कठिन होगा। (२४) फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि ईश्वरके राज्यमें धनवानके प्रवेश करनेसे ऊंटका सूईके नाकेमेंसे जाना सहज है। (२५) यह सुनके उसके शिष्योंने निपट अचंभित हो कहा तब तो किसका त्राण हो सकता है । (२६) यीशुने उन पर दृष्टि कर उनसे कहा मनुष्योंसे यह अन्होना है परन्तु ईश्वरसे सब कुछ हो सकता है।

(२७) तब पितरने उसको उत्तर दिया कि देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आपके पीछे हो लिये हैं सो हमें क्या मिलेगा। (२८) यीशु ने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि नई सृष्टिमें जब मनुष्यका पुत्र अपने ऐश्वर्य्यके सिंहासनपर बैठेगा तब तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो बारह सिंहासनोंपर बैठके इस्रायेलके बारह कुलोंका न्याय करोगे। (२९) और जिस किसीने मेरे नामके लिये घरों वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा लड़कों वा भूमिको त्यागा है सो सौ गुणा पावेगा और अनन्तजीवनका अधिकारी होगा। (३०) परन्तु बहुतेरे जो अगले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं अगले होंगे।

[गृहस्थके बनिहारोंका दृष्टान्त ।]

२० स्वर्गका राज्य किसी गृहस्थके समान है जो भोरको निकला कि अपने दाखकी बारीमें बनिहारोंको लगावे। (२) और उसने बनिहारोंके साथ दिनभरकी एक एक सूकी मजूरी ठहराके उन्हें अपने दाखकी बारीमें भेजा । (३) जब पहर एक दिन चढ़ा तब उसने बाहर जाके औरोंको चौकमें बेकार खड़े देखा । (४) और उनसे कहा तुम भी दाखकी बारी में

जाओ और जो कुछ उचित होय मैं तुम्हें देऊंगा . सो वे भी गये । (५) फिर उसने दूसरे और तीसरे पहरके निकट बाहर जाके वैसाही किया । (६) घड़ी एक दिन रहते उसने बाहर जाके औरोंको बेकार खड़े पाया और उनसे कहा तुम क्यों यहां दिनभर बेकार खड़े हो . (७) उन्होंने उससे कहा किसीने हमको काममें नहीं लगाया है . उसने उन्हें कहा तुम भी दाखकी बारीमें जाओ और जो कुछ उचित होय सो पाओगे। (८) जब सांझ हुई तब दाखकी बारीके स्वामीने अपने भंडारीसे कहा बनिहारोंको बुलाके पिछलोंसे आरंभ कर अगलोंतक उन्हें मजूरी दे। (९) सो जो लोग घड़ी एक दिन रहते कामपर आये थे उन्होंने आके एक एक सूकी पाई । (१०) तब अगले आये और समझा कि हम अधिक पावेंगे परन्तु उन्होंने भी एक एक सूकी पाई । (११) इसको लेके वे उस गृहस्थपर कुड़कुड़ाके बोले . (१२) इन पिछलोंने एकही घड़ी काम किया और आपने उनको हमारे तुल्य किया है जिन्होंने दिनभरका भार और घाम सहा । (१३) उसने उनमेंसे एकको उत्तर दिया कि हे मित्र मैं तुझसे कुछ अनीति नहीं करता हूं . क्या तूने मुझसे एक सूकी लेनेको न ठहराया। (१४) अपना ले और चला जा . मेरी इच्छा है कि जितना तुझको उतना इस पिछलेको भी देऊं । (१५) क्या मुझे उचित नहीं कि अपने धनसे जो चाहूं सो करूं . क्या तू मेरे भले होनेके कारण बुरी दृष्टिसे देखता है । (१६) इस रीतिसे जो पिछले हैं सो अगले होंगे और जो अगले हैं सो पिछले होंगे क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं ।

[जब्दीके पुत्रोंकी बिन्ती ।]

मार्क १० : ३२—४५　लूक १८ : ३१—३४

(१७) यीशुने यिरूशलीमको जाते हुए मार्गमें बारह शिष्योंको

एकांतमें ले जाके उनसे कहा. (१८) देखो हम यिरूशलीमको जाते हैं और मनुष्यका पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकोंके हाथ पकड़वाया जायगा और वे उसको बधके योग्य ठहरावेंगे. (१९) और उसको अन्यदेशियोंके हाथ सौंपेंगे कि वे उससे ठट्ठा करें और कोड़े मारें और क्रूशपर घात करें. परन्तु वह तीसरे दिन जी उठेगा।

(२०) तब जबदीके पुत्रोंकी माताने अपने पुत्रोंके संग यीशु पास आ प्रणाम कर उससे कुछ मांगा। (२१) उसने उससे कहा तू क्या चाहती है. वह उससे बोली आप यह कहिये कि आपके राज्यमें मेरे इन दो पुत्रोंमेंसे एक आपकी दहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर बैठे। (२२) यीशुने उत्तर दिया तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो. जिस कटोरेसे मैं पीनेपर हूं क्या तुम उससे पी सकते हो और जो बपतिसमा मैं लेता हूं क्या तुम उसे ले सकते हो. उन्होंने उससे कहा हम सकते हैं। (२३) उसने उनसे कहा तुम मेरे कटोरेसे तो पीओगे और जो बपतिसमा मैं लेता हूं उसे लेओगे परन्तु जिन्होंके लिये मेरे पितासे तैयार किया गया है उन्हे छोड और किसीको अपनी दहिनी ओर अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है।

(२४) यह सुनके दसों शिष्य उन दोनों भाइयोंपर रिसिआये। (२५) यीशुने उनको अपने पास बुलाके कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशियोंके अध्यक्ष लोग उन्होंपर प्रभुता करते हैं और जो बड़े हैं सो उन्होंपर अधिकार रखते हैं। (२६) परन्तु तुम्होंमें ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्होंमें बड़ा हुआ चाहे सो तुम्हारा सेवक होवे। (२७) और जो कोई तुम्होंमें प्रधान हुआ चाहे सो तुम्हारा दास होवे। (२८) इसी रीतिसे मनुष्यका पुत्र सेवा करवानेको नहीं परन्तु सेवा करनेको और बहुतोंके उद्धारके दाममें अपना प्राण देनेको आया है।

[यीशुका यिरीहो नगरके दो अंधोंके नेत्र खोलना ।]

मार्क १० । ४६—५२ । लूक १८ । ३५—४३ ।

(२९) जब वे यिरीहो नगरसे निकलते थे तब बहुत लोग यीशुके पीछे हो लिये । (३०) और देखो दो अंधे जो मार्गकी ओर बैठे थे यह सुनके कि यीशु जाता है पुकारके बोले हे प्रभु दाऊदके सन्तान हमपर दया कीजिये । (३१) लोगोंने उन्हें डांटा कि वे चुप रहें परन्तु उन्होंने अधिक पुकारा हे प्रभु दाऊदके सन्तान हमपर दया कीजिये । (३२) तब यीशु खडा रहा और उनको बुलाके कहा तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं । (३३) उन्होंने उससे कहा हे प्रभु हमारी आंखें खुल जायें । (३४) यीशुने दया कर उनकी आंखें छूईं और वे तुरन्त आंखोंसे देखने लगे और उसके पीछे हो लिये ।

[यीशुका यिरूशलीममें राजाकी नाईं प्रवेश करना ।]

मार्क ११ । १—१० । लूक १९ । २९—३८ । योहन १२ । १२—१९ ।

२१ जब वे यिरूशलीमके निकट आये और जैतून पर्ब्बतके समीप बैतफगी गांव पास पहुंचे तब यीशुने दो शिष्योंको यह कहके भेजा . (२) कि जो गाव तुम्हारे सन्मुख है उसमें जाओ और तुम तुरन्त एक गदहीको बंधी हुई और उसके साथ बच्चेको पाओगे उन्हे खोलके मेरे पास लाओ । (३) जो तुमसे कोइ कुछ कहे तो कहो कि प्रभुको इनका प्रयोजन है तब वह तुरन्त उनको भेजेगा । (४) यह सब इसलिये हुआ कि जो वचन भविष्यद्वक्तासे कहा गया था सो पूरा होवे . (५) कि सियोनकी पुत्रीसे कहो देख तेरा राजा नम्र और गदहेपर हां लादूके बच्चेपर बैठा हुआ तेरे पास आता है । (६) सो शिष्योंने जाके जैसा यीशुने उन्हें आज्ञा दिई वैसा किया । (७) और वे उस गदहीको और बच्चेको लाये और उनपर अपने कपड़े रखके यीशुको उनपर बैठाया । (८) और

बहुतेरे लोगोंने अपने अपने कपड़े मार्गमें बिछाये और औरोंने वृक्षोंसे डालियां काटके मार्गमें बिछाईं । (९) और जो लोग आगे पीछे चलते थे उन्होंने पुकारके कहा दाऊदके सन्तानकी जय . धन्य वह जो परमेश्वरके नामसे आता है . सबसे ऊंचे स्थानमें जयजयकार होवे । (१०) जब उसने यिरूशलीममें प्रवेश किया तब सारे नगरके निवासी घबराके बोले यह कौन है । (११) लोगोंने कहा यह गालीलके नासरत नगरका भविष्यद्वक्ता यीशु है ।

[व्योपारियोंको मन्दिरसे निकालना और आश्चर्य्य कर्म्म वहां करना ।]

मार्क ११ : १५—१८ । लूक १९ : ४५—४७ । योहन २ : १३—१७ ।

(१२) यीशुने ईश्वरके मन्दिरमें जाके जो लोग मन्दिरमें बेचते औ मोल लेते थे उन सभोंको निकाल दिया और सर्राफोंके पीढ़ोंको और कपोतोंके बेचनेहारोंकी चौकियोंको उलट दिया . (१३) और उनसे कहा लिखा है कि मेरा घर प्रार्थनाका घर कहावेगा . परन्तु तुमने उसे डाकूओंका खोह बनाया है । (१४) तब अन्धे और लंगड़े उस पास मन्दिरमें आये और उसने उन्हे चंगा किया । (१५) जब प्रधान याजकों और अध्यापकोंने इन आश्चर्य्य कर्म्मोंको जो उसने किये और लड़कोंको जो मन्दिरमें दाऊदके सन्तानकी जय पुकारते थे देखा तब उन्होंने रिसियाके उससे कहा क्या तू सुनता कि ये क्या कहते हैं । (१६) यीशुने उनसे कहा हां . क्या तुमने कभी यह बचन नहीं पढ़ा कि बालकों और दूध पीनेहारे लड़कोंके मुंहसे तूने स्तुति करवाई है । (१७) तब वह उन्हें छोड़के नगरके बाहर बैथनियाको गया और वहां टिका ।

[गूलरके वृक्षका वर्णन ।]

मार्क ११ : १२—१४ और २०—२४ ।

(१८) भोरको जब वह नगरको फिर जाता था तब उसको

भूख लगी । (१९) और मार्गमें एक गूलरका वृक्ष देखके वह उस पास आया परन्तु उसमें और कुछ न पाया केवल पत्ते और उसको कहा तुझमें फिर कभी फल न लगे . इसपर गूलरका वृक्ष तुरन्त सूख गया । (२०) यह देखके शिष्यांने अचंभा कर कहा गूलरका वृक्ष क्यांही शीघ्र सूख गया । (२१) यीशुने उनको उत्तर दिया कि मैं तुमसे सच कहता हूं जो तुम विश्वास करो और सन्देह न रखो तो जो इस गूलरके वृक्षसे किया गया है केवल इतना न करोगे परन्तु यदि इस पहाड़से कहो कि उठ समुद्रमें गिर पड़ तो वैसाही होगा । (२२) और जो कुछ तुम विश्वास करके प्रार्थनामें मांगोगे सो पाओगे ।

[यीशुका प्रधान याजकोंको निरुत्तर करना ।]

मार्क ११ । २७—३३ । लूक २० । १—८ ।

(२३) जब वह मन्दिरमें गया और उपदेश करता था तब लोगोंके प्रधान याजकों और प्राचीनोंने उस पास आ कहा तुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है और यह अधिकार किसने तुझको दिया । (२४) यीशुने उनको उत्तर दिया कि मैं भी तुमसे एक बात पूछूंगा जो तुम मुझे उसका उत्तर देओ तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करनेका कैसा अधिकार है । (२५) योहनका बपतिसमा देना कहांसे हुआ स्वर्गकी अथवा मनुष्योंकी ओरसे . तब वे आपसमें बिचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्गकी ओरसे तो वह हमसे कहेगा फिर तुमने उसका बिश्वास क्यों नहीं किया । (२६) और जो हम कहें मनुष्योंकी ओरसे तो हमें लोगोंका डर है क्योंकि सब लोग योहनको भविष्यद्वक्ता जानते हैं । (२७) सो उन्होंने यीशुको उत्तर दिया कि हम नहीं जानते . तब उसने उनसे कहा तो मैं भी तुमको नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करनेका कैसा अधिकार है ।

[दो पुत्रोंका दृष्टान्त ।]

(२८) तुम क्या समझते हो . किसी मनुष्यके दो पुत्र थे और उसने पहिलेके पास आ कहा हे पुत्र आज मेरी दाखकी बारीमे जाके काम कर । (२९) उसने उत्तर दिया मैं नहीं जाऊंगा परन्तु पीछे पछताके गया । (३०) फिर उसने दूसरेके पास आके वैसाही कहा . उसने उत्तर दिया हे प्रभु मैं जाता हूं परन्तु गया नहीं । (३१) इन दोनोंमेंसे किसने पिताकी इच्छा पूरी किई . वे उससे बोले पहिलेने . यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि कर उगाहनेहारे और बेश्या तुमसे आगे ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करते है । (३२) क्योंकि योहन धर्म्मके मार्गसे तुम्हारे पास आया और तुमने उसका बिश्वास न किया परन्तु कर उगाहनेहारों और बेश्याओंने उसका बिश्वास किया और तुम लोग यह देखके पीछेसे भी नहीं पछताये कि उसका बिश्वास करते ।

[दुष्ट मालियोंका दृष्टान्त ।]

मार्क १२ । १—१२ । लूक २० । ९—१९ ।

(३३) एक और दृष्टान्त सुनो . एक गृहस्थ था जिसने दाखकी बारी लगाई और उसको चहुं ओर बेड़ दिया और उसमे रसका कुंड खोदा और गढ़ बनाया और मालियोंको उसका ठीका दे परदेशको चला गया । (३४) जब फलका समय निकट आया तब उसने अपने दासोंको उसका फल लेनेको मालियोंके पास भेजा । (३५) परन्तु मालियोंने उसके दासोंको लेके एकको मारा दूसरेको घात किया और तीसरेको पत्थरवाह किया । (३६) फिर उसने पहिले दासोंसे अधिक दूसरे दासोंको भेजा और उन्होंने उनसे भी वैसाही किया । (३७) सबके पीछे उसने यह कहके अपने पुत्रको उनके पास भेजा कि वे मेरे पुत्रका आदर करेंगे । (३८) परन्तु मालियोंने उसके पुत्रको

देखके आपसमें कहा यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें और उसका अधिकार ले लेवें । (३९) और उन्होंने उसे लेके दाखकी बारीसे बाहर निकालके मार डाला । (४०) इसलिये जब दाखकी बारीका स्वामी आवेगा तब उन मालियोंसे क्या करेगा। (४१) उन्होंने उससे कहा वह उन बुरे लोगोंको बुरी रीतिसे नाश करेगा और दाखकी बारीका ठीका दूसरे मालियों को देगा जो फलोंको उनके समयोंमे उसे दिया करेंगे । (४२) यीशुने उनसे कहा क्या तुमने कभी धर्म्मपुस्तकमें यह बचन नहीं पढा कि जिस पत्थरको थवइयोंने निकम्मा जाना वही कोनेका सिरा हुआ है . यह परमेश्वरका कार्य्य है और हमारी दृष्टिमें अद्भुत है । (४३) इसलिये मैं तुमसे कहता हूं कि ईश्वरका राज्य तुमसे ले लिया जायगा और और लोगोंको दिया जायगा जो उसके फल दिया करेंगे । (४४) जो इस पत्थरपर गिरेगा सो चूर हो जायगा और जिस किसी पर वह गिरेगा उसको पीस डालेगा । (४५) प्रधान याजकों और फरीशियोंने उसके दृष्टान्तोंको सुनके जाना कि वह हमारे विषयमें बोलता है । (४६) और उन्होंने उसे पकडने चाहा परन्तु लोगोंसे डरे क्योंकि वे उसको भविष्यद्वक्ता जानते थे ।

[विवाहके भोजका दृष्टान्त ।]

लूक १४ । १०—२४ ।

२२ इसपर यीशुने फिर उनसे दृष्टान्तोंमें कहा . (२) स्वर्गके राज्यकी उपमा एक राजासे दिई जाती है जो अपने पुत्रका विवाह करता था । (३) और उसने अपने दासोंको भेजा कि नेवतहरियोंको विवाहके भोजमें बुलावें परन्तु उन्होंने आने न चाहा । (४) फिर उसने दूसरे दासोंको यह कहके भेजा कि नेवतहरियोंसे कहो देखो मैंने अपना भोज तैयार किया है और मेरे बैल और मोटे पशु मारे गये हैं और सब

कुछ तैयार है बिवाहके भोजमें आओ। (५) परन्तु नेवतहरियोंने इसका कुछ सोच न किया पर कोई अपने खेतको और कोई अपने ब्योपारको चले गये। (६) औरोंने उसके दासोंको पकड़के दुर्दशा करके मार डाला। (७) यह सुनके राजाने क्रोध किया और अपनी सेना भेजके उन हत्यारोंको नाश किया और उनके नगरको फूंक दिया। (८) तब उसने अपने दासोंसे कहा बिवाहका भोज तो तैयार है परन्तु नेवतहरी योग्य नहीं ठहरे। (९) इसलिये चौराहोंमें जाके जितने लोग तुम्हें मिलें सभोंको बिवाहके भोजमें बुलाओ। (१०) सो उन दासोंने मार्गोंमें जाके क्या बुरे क्या भले जितने उन्हें मिले सभोंको एकट्ठे किया और बिवाहका स्थान जेवनहरियोंसे भर गया। (११) जब राजा जेवनहरियोंको देखनेको भीतर आया तब उसने वहां एक मनुष्यको देखा जो बिवाहीय बस्त्र नहीं पहिने हुए था। (१२) उसने उससे कहा हे मित्र तू यहां बिना बिवाहीय बस्त्र पहिने क्योंकर भीतर आया. वह निरुत्तर हुआ। (१३) तब राजाने सेवकोंसे कहा इसके हाथ पांव बांधो और उसको ले जाके बाहरके अंधकारमें डाल देओ जहां रोना औ दांत पीसना होगा। (१४) क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।

[यीशुका कर देनेके विषयमें फरीशियोंको निरुत्तर करना।]

मार्क १२ : १३—१७। लूक २० : २०—२६।

(१५) तब फरीशियोंने जाके आपसमें बिचार किया इसलिये कि यीशुको बातमें फंसावें। (१६) सो उन्होंने अपने शिष्योंको हेरोदियोंके संग उस पास यह कहनेको भेजा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और ईश्वरका मार्ग सत्यतासे बताते हैं और किसीका खटका नहीं रखते हैं क्योंकि आप मनुष्योंका मुंह देखके बात नहीं करते हैं। (१७) सो हमसे

कहिये आप क्या समझते हैं . कैसरको कर देना उचित है अथवा नहीं । (१८) यीशुने उनकी दुष्टता जानके कहा हे कपटियो मेरी परीक्षा क्यों करते हो । (१९) करका मुद्रा मुझे दिखाओ . तब वे उस पास एक सूकी लाये । (२०) उसने उनसे कहा यह मूर्त्ति और छाप किसकी है । (२१) वे उससे बोले कैसरकी . तब उसने उनसे कहा तो जो कैसरका है सो कैसरको देओ और जो ईश्वरका है सो ईश्वरको देओ । (२२) यह सुनके वे अचंभित हुए और उसको छोड़के चले गये ।

[यीशुका मृतकोंके जी उठनेके विषयमें सदूकियोंको निरुत्तर करना ।]

मार्क १२ : १८—२७ । लूक २० : २७—४० ।

(२३) उसी दिन सदूकी लोग जो कहते हैं कि मृतकोंका जी उठना नहीं होगा उस पास आये और उससे पूछा . (२४) कि हे गुरु मूसाने कहा यदि कोई मनुष्य निःसन्तान मर जाय तो उसका भाई उसकी स्त्रीसे बिवाह करे और अपने भाईके लिये वंश खड़ा करे । (२५) सो हमारे यहां सात भाई थे . पहिले भाईने बिवाह किया और निःसन्तान मर जानेसे अपनी स्त्रीको अपने भाईके लिये छोड़ा । (२६) दूसरे और तीसरे भाईने भी सातवें भाईतक वैसाही किया । (२७) सबके पीछे स्त्री भी मर गई । (२८) सो मृतकोंके जी उठनेपर वह इन सातोंमेंसे किसकी स्त्री होगी क्योंकि सभोंने उससे बिवाह किया । (२९) यीशुने उनको उत्तर दिया कि तुम धर्म्मपुस्तक और ईश्वरकी शक्ति न बूझके भूलमें पड़े हो । (३०) क्योंकि मृतकोंके जी उठनेपर वे न बिवाह करते न बिवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्गमें ईश्वरके दूतोंके समान हैं । (३१) मृतकोंके जी उठनेके विषयमें क्या तुमने यह बचन जो ईश्वरने तुमसे कहा नहीं पढ़ा है . (३२) कि मैं इब्राहीमका ईश्वर और

इसहाकका ईश्वर और याकूबका ईश्वर हूं . ईश्वर मृतकोंका नहीं परन्तु जीवतोंका ईश्वर है । (३३) यह सुनकर लोग उसके उपदेशसे अचंभित हुए ।

[यीशुका श्रेष्ठ आज्ञाके विषयमें व्यवस्थापकको उत्तर देना ।]

मार्क १२ : २८—३४ । लूक १० : २५—२७ ।

(३४) जब फरीशियोंने सुना कि यीशुने सदूकियोंको निरुत्तर किया तब वे एकट्ठे हुए । (३५) और उनमेंसे एकने जो व्यवस्थापक था उसको परीक्षा करनेको उससे पूछा . (३६) हे गुरु व्यवस्थामें बड़ी आज्ञा कौन है । (३७) यीशुने उससे कहा तू परमेश्वर अपने ईश्वरको अपने सारे मनसे और अपने सारे प्राणसे और अपनी सारी बुद्धिसे प्रेम कर । (३८) यही पहिली औ बड़ी आज्ञा है । (३९) और दूसरी उसके समान है अर्थात तू अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर । (४०) इन दो आज्ञाओंसे सारी व्यवस्था औ भविष्यद्वक्ताओंका पुस्तक सम्बन्ध रखते हैं ।

[यीशुका अपनी पदवीके विषयमें फरीशियोंको निरुत्तर करना ।]

मार्क १२ : ३५—३७ । लूक २० : ४१—४४ ।

(४१) फरीशियोंके एकट्ठे होते हुए यीशुने उनसे पूछा . (४२) ख्रीष्टके विषयमें तुम क्या समझते हो वह किसका पुत्र है . वे उससे बोले दाऊदका । (४३) उसने उनसे कहा तो दाऊद क्योंकर आत्माकी शिक्षासे उसको प्रभु कहता है . (४४) कि परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा जबलों मैं तेरे शत्रुओंको तेरे चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी दहिनी ओर बैठ । (४५) यदि दाऊद उसे प्रभु कहता है तो वह उसका पुत्र क्योंकर है । (४६) इसके उत्तरमें कोई उससे एक बात नहीं बोल सका और उस दिनसे किसीको फिर उससे कुछ पूछने का साहस न हुआ ।

[अध्यापकों और फरीशियोंके विरुद्ध यीशुका उपदेश ।]

२३ तब यीशुने लोगोंसे और अपने शिष्योंसे कहा. (२) अध्यापक और फरीशी लोग मूसाके आसनपर बैठे हैं। (३) इसलिये जो कुछ वे तुम्हें माननेको कहें सो मानो और पालन करो परन्तु उनके कर्म्मोंके अनुसार मत करो क्योंकि वे कहते हैं और करते नहीं। (४) वे भारी बोझ बांधते हैं जिनको उठाना कठिन है और उन्हें मनुष्योंके कांधोंपर धर देते हैं परन्तु उन्हें अपनी उंगलीसे भी सरकाने नहीं चाहते हैं। (५) वे मनुष्योंको दिखानेके लिये अपने सब कर्म्म करते हैं। (६) वे अपने यन्त्रोंको चौड़े करते हैं और अपने वस्त्रोंके आंचल बढ़ाते हैं। (७) जेवनारोंमें ऊंचे स्थान और सभाके घरोंमें ऊंचे आसन और बाजारोंमें नमस्कार और मनुष्योंसे गुरु गुरु कहलाना उनको प्रिय लगते हैं। (८) परन्तु तुम गुरु मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा एक गुरु है अर्थात् ख्रीष्ट और तुम सब भाई हो। (९) और पृथिवीपर किसीको अपना पिता मत कहो क्योंकि तुम्हारा एक पिता है अर्थात् वही जो स्वर्गमें है। (१०) और गुरु भी मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा एक गुरु है अर्थात् ख्रीष्ट। (११) जो तुम्हेंमें बड़ा हो सो तुम्हारा सेवक होगा। (१२) जो कोई अपनेको ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो कोई अपनेको नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा।

(१३) हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम मनुष्योंपर स्वर्गके राज्यका द्वार मून्दते हो. न आपही उसमें प्रवेश करते हो और न प्रवेश करनेहारोंको प्रवेश करने देते हो। (१४) हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम बिधवाओंके घर खा जाते हो और बहानाके लिये बड़ी बेरलों प्रार्थना करते हो इसलिये तुम अधिक दंड पाओगे। (१५) हाय

तुम कपटो अध्यापको और फरोशियो तुम एक जनको अपने मतमें लानेको सारे जल औ थलमें फिरा करते हो और जब वह मतमें आया है तब उसको अपनेसे दूना नरकके योग्य बनाते हो। (१६) हाय तुम अन्धे अगुवो जो कहते हो यदि कोई मन्दिरकी किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु यदि कोई मन्दिरके सोनेकी किरिया खाय तो ऋणी है। (१७) हे मूर्खो और अन्धो कौन बड़ा है वह सोना अथवा वह मन्दिर जो सोनेको पवित्र करता है। (१८) फिर कहते हो यदि कोई बेदीकी किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु जो चढ़ावा बेदीपर है यदि कोई उसकी किरिया खाय तो ऋणी है। (१९) हे मूर्खो और अन्धो कौन बड़ा है वह चढ़ावा अथवा वह बेदी जो चढ़ावेको पवित्र करती है। (२०) इसलिये जो बेदीकी किरिया खाता है सो उसकी किरिया और जो कुछ उस पर है उसकी भी किरिया खाता है। (२१) और जो मन्दिरकी किरिया खाता है सो उसकी किरिया और जो उसमें बास करता है उसकी भी किरिया खाता है। (२२) और जो स्वर्गकी किरिया खाता है सो ईश्वरके सिंहासनकी किरिया और जो उसपर बैठा है उसकी भी किरिया खाता है। (२३) हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम पोदीने और सोए और जीरेका दसवां अंश देते हो परन्तु तुमने व्यवस्थाकी भारी बातोंको अर्थात् न्याय और दया और बिश्वासको छोड़ दिया है. इन्हें करना और उन्हें न छोड़ना उचित था। (२४) हे अन्धे अगुवो जो मच्छरको छान डालते हो और ऊंटको निगलते हो। (२५) हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम कटोरे और थालको बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर और अन्यायसे भरे हैं। (२६) हे अन्धे फरीशी पहिले कटोरे और थालके भीतर शुद्ध कर कि वे बाहर भी

शुद्ध होवें । (२७) हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम चूना फेरी हुई कबरोंके समान हो जो बाहरसे सुन्दर दिखाई देती हैं परन्तु भीतर मृतकोंकी हड्डियोंसे और सब प्रकारकी मलिनतासे भरी हैं । (२८) इसी रीतिसे तुमभी बाहरसे मनुष्योंको धर्म्मी दिखाई देते हो परन्तु भीतर कपट और अधर्म्मसे भरे हो । (२९) हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम भविष्यद्वक्ताओंकी कबरें बनाते हो और धर्म्मियोंकी कबरें संवारते हो . (३०) और कहते हो यदि हम अपने पितरोंके दिनोंमें होते तो भविष्यद्वक्ताओंका लोहू बहानेमें उनके संगी न होते । (३१) इससे तुम अपनेपर साक्षी देते हो कि तुम भविष्यद्वक्ताओंके घातकोंके सन्तान हो । (३२) सो तुम अपने पितरोंका नपुआ भरो । (३३) हे सांपो हे सर्प्पोंके वंश तुम नरकके दंडसे क्योंकर बचोगे ।

(३४) इसलिये देखो मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और अध्यापकोंको भेजता हूं और तुम उनमेंसे कितनोंको मार डालोगे और क्रूशपर चढ़ाओगे और कितनोंको अपनी सभाओंमें कोड़े मारोगे और नगर नगर सताओगे. (३५) कि धर्म्मी हाबिलके लोहूसे लेके बरखियाहके पुत्र जिखरियाहके लोहूतक जिसे तुमने मन्दिर और बेदीके बीचमें मार डाला जितने धर्म्मियोंका लोहू पृथिवीपर बहाया जाता है सब तुमपर पड़े । (३६) मैं तुमसे सच कहता हूं यह सब बातें इसी समयके लोगोंपर पड़ेंगीं । (३७) हे यिरूशलीम यिरूशलीम जो भविष्यद्वक्ताओंको मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरवाह करती है जैसे मुर्गी अपने बच्चोंको पंखोंके नीचे एकट्ठे करती है वैसेही मैंने कितनी बेर तेरे बालकोंको एकट्ठे करनेकी इच्छा किई परन्तु तुमने न चाहा । (३८) देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा

जाता है। (३९) क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं जबलों तुम न कहोगे धन्य वह जो परमेश्वरके नामसे आता है तबलों तुम मुझे अबसे फिर न देखोगे।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. १—दुःखोंका आरंभ।]

मार्क १३ पर्व्व। लूक २१ : ५—३६।

२४ जब यीशु मन्दिरसे निकलके जाता था तब उसके शिष्य लोग उसको मन्दिरकी रचना दिखानेको उस पास आये। (२) यीशुने उनसे कहा क्या तुम यह सब नहीं देखते हो. मैं तुमसे सच कहता हूं यहां पत्थरपर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जायगा।

(३) जब वह जैतून पर्व्वतपर बैठा था तब शिष्योंने निराले में उस पास आ कहा हमोंसे कहिये यह कब होगा और आपके आनेका और जगत के अन्तका क्या चिन्ह होगा। (४) यीशुने उनको उत्तर दिया चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमावे। (५) क्योंकि बहुत लोग मेरे नामसे आके कहेंगे मैं खीष्ट हूं और बहुतोंको भरमावेंगे। (६) तुम लड़ाइयां और लड़ाइयोंकी चर्चा सुनोगे. देखो मत घबराओ क्योंकि इन सभोंका होना अवश्य है परन्तु अन्त उस समयमें नहीं होगा। (७) क्योंकि देश देशके और राज्य राज्यके विरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानोंमें अकाल और मरियां और भुईंडोल होंगे। (८) यह सब दुःखोंका आरंभ होगा।

(९) तब वे तुम्हें पकड़वायेंगे कि क्लेश पावो और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नामके कारण सब देशोंके लोग तुमसे बैर करेंगे। (१०) तब बहुतेरे ठोकर खायेंगे और एक दूसरेको पकड़वायगा और एक दूसरेसे बैर करेगा। (११) और बहुतसे झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके बहुतोंको भरमावेंगे। (१२) और अधर्म्मके बढ़नेसे बहुतोंका प्रेम ठंडा हो जायगा। (१३) पर

जो अन्तलों स्थिर रहे सोई चाण पावेगा । (१४) और राज्यका यह सुसमाचार सब देशोंके लोगोंपर साक्षी होनेके लिये समस्त संसारमें सुनाया जायगा . तब अन्त होगा ।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. २—महा क्लेश ।]

(१५) सो जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित बस्तुको जिस की बात दानियेल भविष्यद्वक्तासे कही गई पवित्र स्थानमें खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे) . (१६) तब जो यिहूदियामें हों सो पहाड़ोंपर भागें । (१७) जो कोठेपर हो सो अपने घरमें से कुछ लेनेको न उतरे । (१८) और जो खेतमें हो सो अपना वस्त्र लेनेको पीछे न फिरे । (१९) उन दिनोंमें हाय हाय गर्भ-वतियां और दूध पिलानेवालियां । (२०) परन्तु प्रार्थना करो कि तुमको जाड़ेमें अथवा बिश्रामवारमें भागना न होवे । (२१) क्योंकि उस समयमें ऐसा महा क्लेश होगा जैसा जगतके आरंभसे अब तक न हुआ और कभी न होगा । (२२) जो वे दिन घटाये न जाते तो कोई प्राणी न बचता परन्तु चुने हुए लोगोंके कारण वे दिन घटाये जायेंगे ।

(२३) तब यदि कोई तुमसे कहे देखो ख्रीष्ट यहां है अथवा वहां है तो प्रतीति मत करो । (२४) क्योंकि झूठे ख्रीष्ट और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके ऐसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखावेंगे कि जो हो सकता तो चुने हुए लोगोंको भी भरमाते । (२५) देखो मैंने आगेसे तुम्हें कह दिया है । (२६) इसलिये जो वे तुमसे कहें देखो जंगलमें है तो बाहर मत जाओ अथवा देखो कोठरियोंमें है तो प्रतीति मत करो । (२७) क्योंकि जैसे बिजली पूर्ब्बसे निकलती और पश्चिमलों चमकती है वैसाही मनुष्यके पुत्रका आना भी होगा । (२८) जहां कहीं लोथ होय तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे ।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. ३—मनुष्यके पुत्रका फिर आना ।]

(२९) उन दिनोंके क्लेशके पीछे तुरन्त सूर्य्य अंधियारा हो

जायगा और चांद अपनी ज्योति न देगा तारे आकाशसे गिर पड़ेंगे और आकाशकी सेना डिग जायगी । (३०) तब मनुष्यके पुत्रका चिन्ह आकाशमें दिखाई देगा और तब पृथिवीके सब कुलोंके लोग छाती पीटेंगे और मनुष्यके पुत्रको पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्यसे आकाशके मेघोंपर आते देखेंगे । (३१) और वह अपने दूतोंको तुरहीके महा शब्द सहित भेजेगा और वे आकाशके इस सिवानेसे उस सिवानेतक चहुं दिशासे उसके चुने हुए लोगोंको एकट्ठे करेंगे ।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. ४—सचेत रहनेका उपदेश ।]

(३२) गूलरके वृक्षसे दृष्टान्त सीखो . जब उसकी डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम जानते हो कि धूपकाला निकट है । (३३) इस रीतिसे जब तुम इन सब बातोंको देखो तब जाना कि वह निकट है हां द्वारपर है । (३४) मैं तुमसे सच कहता हूं कि जबलों यह सब बातें पूरी न हो जायें तबलों इस समयके लोग नहीं जाते रहेंगे । (३५) आकाश औ पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी ।

(३६) उस दिन और उस घड़ीके विषयमें न कोई मनुष्य जानता है न स्वर्गके दूत परन्तु केवल मेरा पिता । (३७) जैसे नूहके दिन हुए वैसाही मनुष्यके पुत्रका आना भी होगा । (३८) जैसे जलप्रलयके आगेके दिनोंमें लोग जिस दिनलों नूह जहाजपर न चढ़ा उसी दिनलों खाते औ पीते बिवाह करते औ बिवाह देते थे . (३९) और जबलों जलप्रलय आके उन सभोंको ले न गया तबलों उन्हें चेत न हुआ वैसाही मनुष्यके पुत्रका आना भी होगा । ४०) तब दो जन खेतमें होंगे एक लिया जायगा और दूसरा छोड़ा जायगा । (४१) दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी एक लिई जायगी और दूसरी छोड़ी जायगी ।

(४२) इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो

तुम्हारा प्रभु किस घड़ी आवेगा । (४३) पर यही जानते हो कि यदि घरका स्वामी जानता चोर किस पहरमें आवेगा तो वह जागता रहता और अपने घरमें सेंध पड़ने न देता । (४४) इसलिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ीका अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्यका पुत्र आवेगा । (४५) वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है जिसे उसके स्वामी ने अपने परिवारपर प्रधान किया हो कि समयमें उन्हें भोजन देवे ।

[बुद्धिमान और दुष्ट दासोंका दृष्टान्त ।]

लूक १२ : ४२—४८ ।

(४६) वह दास धन्य है जिसे उसका स्वामी आके ऐसा करते पावे । (४७) मैं तुमसे सत्य कहता हूं वह उसे अपनी सब सम्पत्तिपर प्रधान करेगा । (४८) परन्तु जो वह दुष्ट दास अपने मनमें कहे मेरा स्वामी आनेमें विलम्ब करता है . (४९) और अपने संगी दासोंको मारने और मतवाले लोगोंके संग खाने पीने लगे . (५०) तो जिस दिन वह बाट जोहता न रहे और जिस घड़ीका वह अनुमान न करे उसीमें उस दासका स्वामी आवेगा . (५१) और उसको बड़ी ताड़ना देके कपटियोंके संग उसका अंश देगा जहां रोना और दांत पीसना होगा ।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. १—दस कुंवारियोंका दृष्टान्त ।]

२५ तब स्वर्गके राज्यकी उपमा दस कुंवारियोंसे दिई जायगी जो अपनी मशालें लेके दूल्हेसे मिलनेको निकलीं । (२) उन्होंमेंसे पांच सुबुद्धि और पांच निर्बुद्धि थीं । (३) जो निर्बुद्धि थीं उन्होंने अपनी मशालोंको ले अपने संग तेल न लिया । (४) परन्तु सुबुद्धियोंने अपनी मशालोंके संग अपने पात्रोंमें तेल लिया । (५) दूल्हेके विलम्ब करनेसे वे सब ऊंघीं और सो गईं । (६) आधी रातको धूम मची कि देखो दूल्हा आता है उससे मिलनेको निकलो । (७) तब वे सब

कुंवारियां उठके अपनी मशालोंको सजने लगीं। (८) और निर्बुद्धियोंने सुबुद्धियोंसे कहा अपने तेलमेंसे कुछ हमको दीजिये क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं। (९) परन्तु सुबुद्धियोंने उत्तर दिया क्या जानें हमारे और तुम्हारे लिये बस न होय सो अच्छा है कि तुम बेचनेहारोंके पास जाके अपने लिये मोल लेओ। (१०) ज्यों वे मोल लेनेको जाती थीं त्योंही दूल्हा आ पहुंचा और जो तैयार थीं सो उसके संग बिवाहके घरमें गईं और द्वार मून्दा गया। (११) पीछे दूसरी कुंवारियां भी आके बोलीं हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये। (१२) उसने उत्तर दिया कि मैं तुमसे सच कहता हूं मैं तुमको नहीं जानता हूं। (१३) इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम न वह दिन न घड़ी जानते हो जिसमें मनुष्यका पुत्र आवेगा।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. ६—तोड़ोंका दृष्टान्त।]

लूक १९ : ११—२७।

(१४) क्योंकि वह एक मनुष्यके समान है जिसने परदेशको जाते हुए अपनेही दासोंको बुलाके उनको अपना धन सौंपा। (१५) उसने एकको पांच तोड़े दूसरेको दो तीसरेको एक हर एकको उसके सामर्थ्यके अनुसार दिया और तुरन्त परदेशको चला। (१६) तब जिसने पांच तोड़े पाये उसने जाके उनसे ब्योपार कर पांच तोड़े और कमाये। (१७) इसी रीतिसे जिसने दो पाये उसने भी दो तोड़े और कमाये। (१८) परन्तु जिसने एक तोड़ा पाया उसने जाके मिट्टीमें खोदके अपने स्वामीके रुपैये छिपा रखे। (१९) बहुत दिनोंके पीछे उन दासोंका स्वामी आया और उनसे लेखा लेने लगा। (२०) तब जिसने पांच तोड़े पाये थे उसने पांच तोड़े और लाके कहा हे प्रभु आपने मुझे पांच तोड़े सौंपे देखिये मैंने उनसे पांच तोड़े और कमाये हैं। (२१) उसके स्वामीने उससे कहा धन्य हे उत्तम

और विश्वासयोग्य दास तू थोड़ेमें विश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुतपर प्रधान करूंगा . अपने प्रभुके आनन्दमें प्रवेश कर । (२२) जिसने दो तोड़े पाये थे उसने भी आके कहा हे प्रभु आपने मुझे दो तोड़े सोंपे देखिये मैं ने उनसे दो तोड़े और कमाये हैं । (२३) उसके स्वामीने उससे कहा धन्य हे उत्तम और विश्वासयोग्य दास तू थोड़ेमें विश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुतपर प्रधान करूंगा . अपने प्रभुके आनन्दमें प्रवेश कर । (२४) तब जिसने एक तोड़ा पाया था उसने आके कहा हे प्रभु मैं आपको जानता था कि आप कठोर मनुष्य हैं जहां आपने नहीं बोया वहां लवते हैं और जहां आपने नहीं छींटा वहांसे एकट्ठा करते हैं । (२५) सो मैं डरा और जाके आपका तोडा मिट्टीमें छिपाया . देखिये अपना ले लीजिये । (२६) उसके स्वामीने उसे उत्तर दिया कि हे दुष्ट और आलसी दास तू जानता था कि जहां मैंने नहीं बोया वहां लवता हूं और जहां मैंने नहीं छींटा वहांसे एकट्ठा करता हूं । (२७) तो तुझे उचित था कि मेरे रुपैये महाजनोंके हाथ सोंपता तब मैं आके अपना धन व्याज समेत पाता । (२८) इसलिये वह तोड़ा उससे लेओ और जिस पास दस तोड़े हैं उसे देओ । (२९) क्योंकि जो कोई रखता है उसको और दिया जायगा और उसको बहुत होगा परन्तु जो नहीं रखता है उससे जो कुछ उस पास है सो भी ले लिया जायगा । (३०) और उस निकम्मे दासको बाहरके अंधकारमें डाल देओ जहां रोना और दांत पीसना होगा ।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. ७—जातिगणोंका महाविचार ।]

(३१) जब मनुष्यका पुत्र अपने ऐश्वर्य्य सहित आवेगा और सब पवित्र दूत उसके साथ तब वह अपने ऐश्वर्य्यके सिंहासन पर बैठेगा । (३२) और सब देशोंके लोग उसके आगे एकट्ठे

जहां कहीं यह सुसमाचार सुनाया जाय तहां यह भी जो इसने किया है उसके स्मरणके लिये कहा जायगा ।

[यिहूदाका प्रधान याजकोंसे योशुको पकड़वानेका मोल ठहराना ।]

मार्क १४ : १०, ११ । लूक २२ : ३—६ ।

(१४) तब बारह शिष्योंमेंसे यिहूदा इस्करियोती नाम एक शिष्य प्रधान याजकोंके पास गया . (१५) और कहा जो मैं योशुको आप लोगोंके हाथ पकड़वाऊं तो आप लोग मुझे क्या देंगे . उन्होंने उसको तीस रुपैये देनेको ठहराया । (१६) सो वह उसी समयसे उसको पकड़वानेका अवसर ढूंढ़ने लगा ।

[योशुका निस्तार पर्व्वका भोजन खाना और प्रभुभोज स्थापन करना ।]

मार्क १४ : १२—२६ । लूक २२ : ७—२० । १ कर० ११ : २३—२६ ।

(१७) अखमीरी रोटीके पर्व्वके पहिले दिन शिष्य लोग योशु पास आ उससे बोले आप कहां चाहते हैं कि हम आपके लिये निस्तार पर्व्वका भोजन खानेकी तैयारी करें । (१८) उसने कहा नगरमें अमुक मनुष्यके पास जाके उससे कहो गुरु कहता है कि मेरा समय निकट है मैं अपने शिष्योंके संग तेरे यहां निस्तार पर्व्वका भोजन करूंगा । (१९) सो शिष्योंने जैसा योशुने उन्हें आज्ञा दिई वैसा किया और निस्तार पर्व्वका भोजन बनाया ।

(२०) सांझको योशु बारह शिष्योंके संग भोजनपर बैठा । (२१) जब वे खाते थे तब उसने कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुममेंसे एक मुझे पकड़वायगा । (२२) इसपर वे बहुत उदास हुए और हर एक उससे कहने लगा हे प्रभु वह क्या मैं हूं । (२३) उसने उत्तर दिया कि जो मेरे संग थालीमें हाथ डालता है सोई मुझे पकड़वायगा । (२४) मनुष्यका पुत्र जैसा उसके विषयमें लिखा है वैसाही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिससे मनुष्यका पुत्र पकड़वाया जाता है . जो उस मनुष्यका जन्म न होता तो उसके लिये भला होता । (२५) तब

उसके पकड़वानेहारे यिहूदाने उत्तर दिया कि हे गुरु वह क्या मैं हूं . यीशु उससे बोला तू तो कह चुका ।

(२६) जब वे खाते थे तब यीशुने रोटी लेके धन्यबाद किया और उसे तोड़के शिष्योंको दिया और कहा लेओ खाओ यह मेरा देह है । (२७) और उसने कटोरा लेके धन्य माना और उनको देके कहा तुम सब इससे पीओ । (२८) क्योंकि यह मेरा लोहू अर्थात नये नियमका लोहू है जो बहुतोंके लिये पाप-मोचनके निमित्त बहाया जाता है । (२९) मैं तुमसे कहता हूं कि जिस दिनलों मैं तुम्हारे संग अपने पिताके राज्यमें उसे नया न पीऊं उस दिनलों मैं अबसे यह दाख रस कभी न पीऊंगा । (३०) और वे भजन गाके जैतून पर्ब्बतपर गये ।

[यीशुका पितरको चिताना ।]

मार्क १४ । २७—३१ । लूक । २२ । ३१—३४ । योहन १३ : ३६—३८ ।

(३१) तब यीशुने उनसे कहा तुम सब इसी रात मेरे विषयमें ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरियेको मारूंगा और झुंडकी भेड़ें तितर बितर हो जायेंगीं । (३२) परन्तु मैं अपने जी उठनेके पीछे तुम्हारे आगे गालीलको जाऊंगा । (३३) पितरने उसको उत्तर दिया यदि सब आपके विषयमें ठोकर खावें तौभी मैं कभी ठोकर न खाऊंगा । (३४) यीशुने उससे कहा मैं तुझे सत्य कहता हूं कि इसी रात मुर्गके बोलनेसे आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा । (३५) पितरने उससे कहा जो आपके संग मुझे मरना हो तौभी मैं आपसे कभी न मुकरूंगा . सब शिष्योंने भी वैसाही कहा ।

[गेतशिमनीकी वारीमें यीशुका महा शोक ।]

मार्क १४ । ३२—४२ । लूक २२ ४०—४६ । योहन १८ : १

(३६) तब यीशुने शिष्योंके संग गेतशिमनी नाम स्थानमें आके उनसे कहा जबलों मैं वहां जाके प्रार्थना करूं तबलों तुम

किये जायेंगे और जैसा गड़ेरिया भेड़ोंको बकरियोंसे अलग करता है तैसा वह उन्हें एक दूसरेसे अलग करेगा। (३३) और वह भेड़ोंको अपनी दहिनी ओर और बकरियोंको बाईं ओर खड़ा करेगा। (३४) तब राजा उनसे जो उसकी दहिनी ओर हैं कहेगा हे मेरे पिताके धन्य लोगो आओ जो राज्य जगतकी उत्पत्तिसे तुम्हारे लिये तैयार किया गया है उसके अधिकारी होओ. (३५) क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खानेको दिया मैं प्यासा था और तुमने मुझे पिलाया मैं परदेशी था और तुम मुझे अपने घरमें लाये. (३६) मैं नंगा था और तुमने मुझे पहिराया मैं रोगी था और तुमने मेरी सुध लिई मैं बन्दीगृहमें था और तुम मेरे पास आये। (३७) तब धर्म्मी लोग उसको उत्तर देंगे कि हे प्रभु हमने कब आपको भूखा देखा और खिलाया अथवा प्यासा और पिलाया। (३८) हमने कब आपको परदेशी देखा और अपने घरमें लाये अथवा नंगा और पहिराया। (३९) और हमने कब आपको रोगी अथवा बन्दीगृहमें देखा और आपके पास गये। (४०) तब राजा उन्हें उत्तर देगा मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुमने मेरे इन अति छोटे भाइयोंमेंसे एकसे जोई भर किया सो मुझसे किया। (४१) तब वह उनसे जो बाईं ओर हैं कहेगा हे स्रापित लोगो मेरे पाससे उस अनन्त आगमें जाओ जो शैतान और उसके दूतोंके लिये तैयार किई गई है. (४२) क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खानेको नहीं दिया मैं प्यासा था और तुमने मुझे नहीं पिलाया. (४३) मैं परदेशी था और तुम मुझे अपने घरमें नहीं लाये मैं नंगा था और तुमने मुझे नहीं पहिराया मैं रोगी और बन्दीगृहमें था और तुमने मेरी सुध न लिई। (४४) तब वे भी उत्तर देंगे कि हे प्रभु हमने कब आपको भूखा वा प्यासा वा परदेशी वा नंगा वा रोगी वा बन्दीगृहमें देखा

और आपको सेवा न किई । (४५) तब वह उन्हें उत्तर देगा मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुमने इन अति छोटोंमेंसे एकसे जोई भर नहीं किया सो मुझसे नहीं किया । (४६) सो ये लोग अनन्त दंडमें परन्तु धर्म्मी लोग अनन्त जीवनमें जा रहेंगे ।

[यीशुके विषय प्रधान याजकोंका विचार ।]

मार्क १४ : १, २ । लूक २२ : १, २ । योहन ११ : ४७ ।

२६ जब यीशु यह सब बातें कह चुका तब अपने शिष्योंसे कहा . (२) तुम जानते हो कि दो दिनके पीछे निस्तार पर्व्व होगा और मनुष्यका पुत्र क्रूशपर चढ़ाये जानेको पकड़वाया जायगा । (३) तब लोगोंके प्रधान याजक और अध्यापक और प्राचीन लोग कियाफा नाम महायाजकके घरमें एकट्ठे हुए . (४) और आपसमें बिचार किया कि यीशुको छलसे पकड़के मार डालें । (५) परन्तु उन्होंने कहा पर्व्वमें नहीं न हो कि लोगोंमें हुल्लड़ होवे ।

[बैथनियामें एक स्त्रीका यीशुसे सत्कार करना ।]

मार्क १४ : ३—९ । योहन १२ : १—८ ।

(६) जब यीशु बैथनियामें शिमोन कोढ़ीके घरमें था . (७) तब एक स्त्री उजले पत्थरके पात्रमें बहुत मोलका सुगंध तेल लेके उस पास आई और जब वह भोजनपर बैठा था तब उसके सिरपर ढाला । (८) यह देखके उसके शिष्य रिसियाके बोले यह नाश क्यों हुआ । (९) क्योंकि यह सुगंध तेल बहुत दाममें बिक सकता और कंगालोंको दिया जा सकता । (१०) यीशु ने यह जानके उनसे कहा क्यों स्त्रीको दुःख देते हो . उसने अच्छा काम मुझसे किया है । (११) कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा । (१२) उसने मेरे देहपर यह सुगंध तेल जो ढाला है सो मेरे गाड़े जानेके लिये किया है । (१३) मैं तुमसे सत्य कहता हूं सारे जगतमें

यहां बैठो। (३७) और वह पितरको और जबदीके दोनों पुत्रों को अपने संग ले गया और शोक करने और बहुत उदास होने लगा। (३८) तब उसने उनसे कहा मेरा मन यहांलों अति उदास है कि मैं मरनेपर हूं. तुम यहां ठहरके मेरे संग जागते रहो। (३९) और थोड़ा आगे बढ़के वह मुंहके बल गिरा और प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता जो हो सके तो यह कटोरा मेरे पाससे टल जाय तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा न होय पर जैसा तू चाहता है। (४०) तब उसने शिष्योंके पास आ उन्हें सोते पाया और पितरसे कहा सो तुम मेरे संग एक घड़ी नहीं जाग सके। (४१) जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें न पड़ो: मन तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है। (४२) फिर उसने दूसरी बेर जाके प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता जो बिना पीनेसे यह कटोरा मेरे पाससे नहीं टल सकता है तो तेरी इच्छा पूरी होय। (४३) तब उसने आके उन्हें फिर सोते पाया क्योंकि उनकी आंखें नींदसे भरी थीं। (४४) उनको छोड़के उसने फिर जाके तीसरी बेर वही बात कहके प्रार्थना किई। (४५) तब उसने अपने शिष्योंके पास आ उनसे कहा सो तुम सोते रहते और बिश्राम करते हो. देखो घड़ी आ पहुंची है और मनुष्यका पुत्र पापियोंके हाथमें पकड़वाया जाता है। (४६) उठो चलें देखो जो मुझे पकड़-वाता है सो निकट आया है।

[यीशुका पकड़वाया जाना।]

मार्क १४ : ४३—५० । लूक २२ ४७—५३ । योहन १८ : ३—११ ।

(४७) वह बोलताही था कि देखो यिहूदा जो बारह शिष्यों मेंसे एक था आ पहुंचा और लोगोंके प्रधान याजकों और प्राचीनोंकी ओरसे बहुत लोग खड्ग और लाठियां लिये हुए उसके संग। (४८) यीशुके पकड़वानेहारेने उन्हें यह पता दिया

था कि जिसको मैं चूमूं वही है उसको पकड़ो । (४९) और वह तुरन्त यीशु पास आके बोला हे गुरु प्रणाम और उसको चूमा । (५० यीशुने उससे कहा हे मित्र तू किस लिये आया है . तब उन्होंने आके यीशुपर हाथ डालके उसे पकड़ा । (५१) इस पर देखो यीशुके संगियोंमेंसे एकने हाथ बढ़ाके अपना खड्ग खींचके महायाजकके दासको मारा और उसका कान उड़ा दिया । (५२) तब यीशुने उससे कहा अपना खड्ग फिर काठीमें रख क्योंकि जो लोग खड्ग खींचते हैं सो सब खड्गसे नाश किये जायेंगे । (५३) क्या तू समझता है कि मैं अभी अपने पितासे बिन्ती नहीं कर सकता हूं और वह मेरे पास स्वर्गदूतोंकी बारह सेनाओंसे अधिक पहुंचा न देगा । (५४) परन्तु तब धर्म्मपुस्तकमें जो लिखा है कि ऐसा होना अवश्य है सो क्योंकर पूरा होय । (५५) उसी घड़ी यीशुने लोगोंसे कहा क्या तुम मुझे पकड़नेको जैसे डाकूपर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो . मैं मन्दिरमें उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे संग बैठता था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा । (५६) परन्तु यह सब इसलिये हुआ कि भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तक की बातें पूरी होवें . तब सब शिष्य उसे छोड़के भागे ।

[यहूदी प्रधान याजकों और प्राचीनोंके आगे यीशुका
वधके योग्य ठहराया जाना ।]

मार्क १४ । ५३—६५ । लूक २२ । ५४—७१ । योहन १८ । १२—२७ ।

(५७) जिन्होंने यीशुको पकड़ा सो उसको कियाफा महायाजकके पास ले गये जहां अध्यापक और प्राचीन लोग एकट्ठे हुए । (५८) पितर दूर दूर उसके पीछे महायाजकके अंगनेलों चला गया और भीतर जाके इसका अन्त देखनेको प्यादोंके संग बैठा । (५९) प्रधान याजकों और प्राचीनोंने और न्याइयोंकी सारी सभाने यीशुको घात करवानेके लिये उसपर

झूठी साक्षी ढूंढ़ी परन्तु न पाई । (६०) बहुतेरे झूठे साक्षी तो आये तौभी उन्होंने नहीं पाई । (६१) अन्तमें दो झूठे साक्षी आके बोले इसने कहा कि मैं ईश्वरका मन्दिर ढा सकता और उसे तीन दिनमें फिर बना सकता हूं । (६२) तब महा-याजकने खड़ा हो योशुसे कहा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता है . ये लोग तेरे बिरुद्ध क्या साक्षी देते हैं । (६३) परन्तु योशु चुप रहा इसपर महायाजकने उससे कहा मैं तुझे जीवते ईश्वरकी किरिया देता हूं हमोंसे कह तू ईश्वरका पुत्र खीष्ट है कि नहीं । (६४) योशु उससे बोला तू तो कह चुका और मैं यह भी तुम्होंसे कहता हूं कि इसके पीछे तुम मनुष्यके पुत्रको सर्व्वशक्तिमानकी दहिनी ओर बैठे और आकाशके मेघोंपर आते देखोगे । (६५) तब महायाजकने अपने बस्त्र फाड़के कहा यह ईश्वरकी निन्दा कर चुका है अब हमें साक्षियोंका और क्या प्रयोजन . देखो तुमने अभी उसके मुखसे ईश्वरकी निन्दा सुनी है । (६६) तुम क्या बिचार करते हो . उन्होंने उत्तर दिया वह बधके योग्य है । (६७) तब उन्होंने उसके मुहपर थूका और उसे घूसे मारे । (६८) औरोंने थपेड़े मारके कहा हे खीष्ट हमसे भविष्यद्वाणी बोल किसने तुझे मारा ।

[पितरका योशुसे मुकरना ।]

मार्क १४ : ६६—७२ । लूक २२ : ५४—६२ । योहन १८ : १५—१८, २५-२७ ।

(६९) पितर बाहर अंगनेमें बैठा था और एक दासी उस पास आके बोली तू भी योशु गालीलीके संग था । (७०) उसने सभोंके साम्हने मुकरके कहा मैं नहीं जानता तू क्या कहती है । (७१) जब वह बाहर डेवढ़ीमें गया तब दूसरी दासीने उसे देखके जो लोग वहां थे उनसे कहा यह भी योशु नासरीके संग था । (७२) उसने किरिया खाके फिर मुकरा कि मैं उस मनुष्यको नहीं जानता हूं । (७३) थोड़ी बेर पीछे जो लोग

वहां खड़े थे उन्होंने पितरके पास आके उससे कहा तू भी सचमुच उनमेंसे एक है क्योंकि तेरी बोली भी तुझे प्रगट करती है। (७४) तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्यको नहीं जानता हूं. और तुरन्त मुर्ग बोला। (७५) तब पितरने यीशुका वचन जिसने उससे कहा था कि मुर्गके बोलनेसे आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा स्मरण किया और बाहर निकलके बिलक बिलक रोया।

[यीशुका पिलातके हाथ सैंपा जाना।]

२७ जब भोर हुआ तब लोगोंके सब प्रधान याजकों और प्राचीनोंने आपसमें यीशुके बिरुद्ध बिचार किया कि उसे घात करवावें। (२) और उन्होंने उसे बांधा और ले जाके पन्तिय पिलात अध्यक्षको सौंप दिया।

[यिहूदाका लोहूके मोलको फेंकना और अपनेको फांसी देना।]

प्रेरितों की क्रिया १ : १६—१९।

(३) जब उसके पकड़वानेहारे यिहूदाने देखा कि वह दंडके योग्य ठहराया गया तब वह पछताके उन तीस रुपैयोंको प्रधान याजकों और प्राचीनोंके पास फेर लाया. (४) और कहा मैंने निर्दोषी लोहू पकड़वानेमें पाप किया है. वे बोले हमें क्या तूही जान। (५) तब वह उन रुपैयोंको मन्दिरमें फेंकके चला गया और जाके अपनेको फांसी दिई। (६) प्रधान याजकोंने रुपैये लेके कहा इन्हें मन्दिरके भंडारमें डालना उचित नहीं है क्योंकि यह लोहूका दाम है। (७) सो उन्होंने आपसमें बिचार कर उन रुपैयोंसे परदेशियोंको गाड़नेके लिये कुम्हारका खेत मोल लिया। (८) इससे वह खेत आजतक लोहूका खेत कहावता है। (९) तब जो बचन यिरमियाह भविष्यद्वक्तासे कहा गया था सो पूरा हुआ कि उन्होंने वे तीस रुपैये हां इस्रायेलके सन्तानोंसे उस मुलाये हुएका दाम जिसे

उन्होंने मुलाया ले लिया . (१०) और जैसे परमेश्वरने मुझको आज्ञा दिई तैसे उन्हें कुम्हारके खेतके दाममें दिया।

[यीशुका पिलातके विचारस्थानमें खड़ा होना।]

मार्क १५ : १—२० । लूक २३ : १—२५ । योहन १८ : २८ ; १९ : १६

(११) यीशु अध्यक्षके आगे खड़ा हुआ और अध्यक्षने उससे पूछा क्या तू यिहूदियोंका राजा है. यीशुने उससे कहा आपही तो कहते हैं। (१२) जब प्रधान याजक और प्राचीन लोग उसपर दोष लगाते थे तब उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। (१३) तब पिलातने उससे कहा क्या तू नहीं सुनता कि ये लोग तेरे बिरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं। (१४) परन्तु उसने एक-बात भी उसको उत्तर न दिया यहांलों कि अध्यक्षने बहुत अचंभा किया। (१५) उस पर्ब्बमें अध्यक्षकी यह रीति थी कि एक बन्धुवेको जिसे लोग चाहते थे उन्होंके लिये छोड़ देता था। (१६) उस समयमें उन्होंका एक प्रसिद्ध बन्धुवा था जिसका नाम बरब्बा था। (१७) सो जब वे एकट्ठे हुए तब पिलातने उनसे कहा तुम किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊं बरब्बाको अथवा यीशुको जो ख्रीष्ट कहावता है। (१८) क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने उसको डाहसे पकड़वाया था। (१९) जब वह बिचार आसनपर बैठा था तब उसकी स्त्रीने उसे कहला भेजा कि आप उस धर्म्मी मनुष्यसे कुछ काम न रखिये क्योंकि मैंने आज स्वप्नमें उसके कारण बहुत दुःख पाया है। (२०) प्रधान याजकों और प्राचीनोंने लोगोंको समझाया कि वे बरब्बाको मांग लेवें और यीशुको नाश करवावें। (२१) अध्यक्षने उनको उत्तर दिया कि इन दोनोंमेंसे तुम किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊं. वे बोले बरब्बाको। (२२) पिलातने उनसे कहा तो मैं यीशुसे जो ख्रीष्ट कहावता है क्या करूं. सभोंने उससे

कहा वह क्रूशपर चढ़ाया जाय । (२३) अध्यक्षने कहा क्यों उसने कौनसी बुराई किई है . परन्तु उन्होंने अधिक पुकारके कहा वह क्रूशपर चढ़ाया जाय ।

(२४) जब पिलातने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता पर और भी हुल्लड़ होता है तब उसने जल लेके लोगोंके साम्हने हाथ धोके कहा मैं इस धर्म्मी मनुष्यके लोहूसे निर्दोष हूं तुमही जानो । (२५) सब लोगोंने उत्तर दिया कि उसका लोहू हमपर और हमारे सन्तानोंपर होवे ।

(२६) तब उसने बरब्बाको उन्होंके लिये छोड़ दिया और यीशु को कोड़े मारके क्रूशपर चढ़ाये जानेको सोंप दिया । (२७) तब अध्यक्षके योद्धाओंने यीशुको अध्यक्षभवनमेंले जाके सारी पलटन उस पास एकट्ठी किई । (२८) और उन्होंने उसका बस्त्र उतारके उसे लाल बागा पहिराया . (२९) और कांटोंका मुकुट गून्थके उसके सिरपर रखा और उसके दहिने हाथमें नरकट दिया और उसके आगे घुटने टेकके यह कहके उससे ठट्ठा किया कि हे यिहूदियोंके राजा प्रणाम । (३०) और उन्होंने उसपर थूका और उस नरकटको ले उसके सिरपर मारा । (३१) जब वे उससे ठट्ठा कर चुके तब उससे वह बागा उतारके और उसीका बस्त्र उसको पहिराके उसे क्रूशपर चढ़ानेको ले गये । (३२) बाहर आते हुए उन्होंने शिमोन नाम कुरीनी देशके एक मनुष्यको पाया और उसे बेगार पकड़ा कि उसका क्रूश ले चले ।

[यीशुका क्रूशपर प्राण देना ।]

मार्क १५ : २१—४१ । लूक २३ : २६—४९ । योहन १९ : १७—३० ।

(३३) जब वे एक स्थानपर जो गलगथा अर्थात खोपड़ीका स्थान कहावता है पहुंचे . (३४) तब उन्होंने सिरकेमें पित्त मिलाके उसे पीनेको दिया परन्तु उसने चीखके पीने न चाहा । (३५) तब उन्होंने उसको क्रूशपर चढ़ाया और चिट्ठियां डालके

उसके बस्त्र बांट लिये कि जो बचन भविष्यद्वक्ताने कहा था सो पूरा होवे कि उन्होंने मेरे कपड़े आपसमें बांट लिये और मेरे बस्त्रपर चिट्ठियां डालीं। (३६) तब उन्होंने वहां बैठके उसका पहरा दिया। (३७) और उन्होंने उसका दोषपत्र उसके सिरसे ऊपर लगाया कि यह यिहूदियोंका राजा यीशु है। (३८) तब दो डाकू एक दहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर उसके संग क्रूशोंपर चढ़ाये गये।

(३९) जो लोग उधरसे आते जाते थे उन्होंने अपने सिर हिलाके और यह कहके उसकी निन्दा किई. (४०) कि हे मन्दिरके ढानेहारे और तीन दिनमें बनानेहारे अपनेको बचा. जो तू ईश्वरका पुत्र है तो क्रूशपरसे उतर आ। (४१) इसी रीतिसे प्रधान याजकोंने भी अध्यापकों और प्राचीनोंके संग ठट्ठा कर कहा. (४२) उसने औरोंको बचाया अपनेको बचा नहीं सकता है. जो वह इस्रायेलका राजा है तो क्रूशपरसे अब उतर आवे और हम उसका बिश्वास करेंगे। (४३) वह ईश्वरपर भरोसा रखता है. यदि ईश्वर उसे चाहता है तो उसको अब बचावे क्योंकि उसने कहा मैं ईश्वरका पुत्र हूं। (४४) जो डाकू उसके संग क्रूशोंपर चढ़ाये गये उन्होंने भी इसी रीतिसे उसकी निन्दा किई।

(४५) दो पहरसे तीसरे पहरलों सारे देशमें अंधकार हो गया। (४६) तीसरे पहरके निकट यीशुने बड़े शब्दसे पुकारके कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तूने क्यों मुझे त्यागा है। (४७) जो लोग वहां खड़े थे उनमेंसे कितनोंने यह सुनके कहा वह एलियाहको बुलाता है। (४८) उनमेंसे एकने तुरन्त दौड़के स्पंज लेके सिरकेमें भिंगाया और नलपर रखके उसे पीनेको दिया। (४९) औरोंने कहा रहने दे हम देखें कि एलियाह उसे बचानेको आता है कि नहीं।

(५०) तब यीशुने फिर बड़े शब्दसे पुकारके प्राण त्यागा। (५१) और देखो मन्दिरका परदा ऊपरसे नीचेलों फटके दो भाग हो गया और धरती डोली और पर्ब्बत तड़क गये। (५२) और कबरें खुलीं और सोये हुए पवित्र लोगोंकी बहुत लोथें उठीं। (५३) और यीशुके जी उठनेके पीछे वे कबरोंमेंसे निकलके पवित्र नगरमें गये और बहुतेरोंको दिखाई दिये। (५४) तब शतपति और वे लोग जो उसके संग यीशुका पहरा देते थे भुईंडोल और जो कुछ हुआ था सो देखके निपट डर गये और बोले सचमुच यह ईश्वरका पुत्र था।

(५५) वहां बहुतसी स्त्रियां जो यीशुकी सेवा करती हुईं गालीलसे उसके पीछे आई थीं दूरसे देखती रहीं। (५६) उन्होंमें मरियम मगदलीनी और याकूबकी औ योशीकी माता मरियम और जबदीके पुत्रोंकी माता थीं।

[यूसफका यीशुकी लोथको अपनी नई कबरमें रखना और कबरके मुंहपर एक भारी पत्थरको लुढ़काना।]

मार्क १५ : ४२—४७। लूक २३ : ५०—५६। योहन १९ : ३८—४२।

(५७) जब सांझ हुई तब यूसफ नाम अरिमथिया नगरका एक धनवान मनुष्य जो आप भी यीशुका शिष्य था आया। (५८) उसने पिलातके पास जाके यीशुकी लोथ मांगी. तब पिलातने आज्ञा किई कि लोथ दिई जाय। (५९) यूसफने लोथको ले उसे उजली चद्दरमें लपेटा. (६०) और उसे अपनी नई कबरमें रखा जो उसने पत्थरमें खुदवाई थी और कबरके द्वारपर बड़ा पत्थर लुढ़काके चला गया। (६१) और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां कबरके साम्हने बैठी थीं।

[यिहूदियोंका कबरपर पहरुओंको बैठाना।]

(६२) तैयारीके दिनके पीछे प्रधान याजक और फरीशी लोग अगले दिन पिलातके पास एकट्ठे हुए. (६३) और बोले हे

प्रभु हमें चेत है कि उस भरमानेहारेने अपने जीतेजी कहा कि तीन दिनके पीछे मैं जी उठूंगा। (६४) सो आज्ञा कीजिये कि तीसरे दिनलों कबरकी रखवाली किई जाय न हो कि उसके शिष्य रातको आके उसे चुरा ले जावें और लोगोंसे कहें कि वह मृतकोंमेंसे जी उठा है . तब पिछली भूल पहिलीसे बुरी होगी। (६५) पिलातने उनसे कहा तुम्हारे पास पहरुए हैं जाओ अपने जानते भर रखवाली करो। (६६) सो उन्होंने जाके पत्थरपर छाप देके पहरुए बैठाके कबरकी रखवाली किई॥

[यीशुके जी उठनेका वर्णन।]

मार्क १६ : १—८। लूक २४ : १—१२। योहन २० : १—१८।

२८ बिश्रामवारके पीछे अठवारेके पहिले दिन पह फटते मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कबरको देखने आईं। (२) और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ कि परमेश्वरका एक दूत स्वर्गसे उतरा और आके कबरके द्वारपरसे पत्थर लुढ़काके उसपर बैठा। (३) उसका रूप बिजलीसा और उसका बस्त्र पालेकी नाईं उजला था। (४) उसके डरके मारे पहरुए कांप गये और मृतकोंके समान हुए। (५) दूतने स्त्रियोंको उत्तर दिया कि तुम मत डरो मैं जानता हूं कि तुम यीशुको जो क्रूशपर घात किया गया ढूंढ़ती हो। (६) वह यहां नहीं है जैसे उसने कहा वैसे जी उठा है . आओ यह स्थान देखो जहां प्रभु पड़ा था। (७) और शीघ्र जाके उसके शिष्योंसे कहो कि वह मृतकोंमेंसे जी उठा है और देखो वह तुम्हारे आगे गालीलको जाता है वहां उसे देखोगे . देखो मैंने तुमसे कहा है। (८) वे शीघ्र निकलके भय और बड़े आनन्दसे उसके शिष्योंको सन्देश देनेको कबरसे दौड़ीं।

(९) जब वे उसके शिष्योंको सन्देश देनेको जाती थीं देखो यीशु उनसे आ मिला और कहा कल्याण हो और उन्होंने

निकट आ उसके पांव पकड़के उसको प्रणाम किया। (१०) तब योशुने उनसे कहा मत डरो जाके मेरे भाइयोंसे कह दो कि वे गालीलको जावें और वहां वे मुझे देखेंगे।

[प्रधान याजकोंका पहरुओंसे झूठ बुलवाना।]

(११) ज्यों स्त्रियां जाती थीं त्योंही देखो पहरुओंमेंसे कोई कोई नगरमें आये और सब कुछ जो हुआ था प्रधान याजकोंसे कह दिया। (१२) तब उन्होंने प्राचीनोंके संग एकट्ठे हो आपसमें बिचार कर योद्धाओंको बहुत रुपैये देके कहा. (१३) तुम यह कहो कि रातको जब हम सोये थे तब उसके शिष्य आके उसे चुरा ले गये। (१४) जो यह बात अध्यक्षके सुननेमें आवे तो हम उसको समझाके तुमको बचा लेंगे। (१५) सो उन्होंने रुपैये लेके जैसे सिखाये गये थे वैसाही किया और यह बात यिहूदियोंमें आजलों चलित है।

[योशुका गालीलमें एग्यारह शिष्योंसे भेंट करना और सब देशके लोगोंको शिष्य करनेकी आज्ञा देना।]

(१६) एग्यारह शिष्य गालीलमें उस पर्ब्बतपर गये जो योशुने उनको बताया था। (१७) और उन्होंने उसे देखके उसको प्रणाम किया पर कितनोंको सन्देह हुआ। (१८) योशुने उन पास आ उनसे कहा स्वर्गमें और पृथिवीपर समस्त अधिकार मुझको दिया गया है। (१९) इसलिये तुम जाके सब देशोंके लोगोंको शिष्य करो और उन्हें पिता औ पुत्र औ पवित्र आत्माके नामसे बपतिसमा देओ. (२०) और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा किई हैं पालन करनेको सिखाओ और देखो मैं जगतके अन्तलों सब दिन तुम्हारे संग हूं। आमीन॥

मार्क रचित सुसमाचार ।

[योहन बपतिसमा देनेहारेका वृत्तान्त ।]

मत्ती ३ : १—१२ ।

१ ईश्वरके पुत्र यीशु ख्रीष्टके सुसमाचारका आरंभ । (२) जैसे भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकमें लिखा है कि देख मैं अपने दूतको तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ बनावेगा । (३) किसीका शब्द हुआ जो जंगलमें पुकारता है कि परमेश्वरका पन्थ बनाओ उसके राजमार्ग सीधे करो । (४) योहनने जंगलमें बपतिसमा दिया और पापमोचनके लिये पश्चात्तापके बपतिसमाका उपदेश किया । (५) और सारे यिहूदिया देशके और यिरूशलीम नगरके रहनेहारे उस पास निकल आये और सभोंने अपने अपने पापोंको मानके यर्दन नदीमें उससे बपतिसमा लिया । (६) योहन ऊंटके रोमका वस्त्र और अपनी कटिमें चमड़ेका पटुका पहिनता था और टिड्डियां औ बन मधु खाया करता था । (७) उसने प्रचार कर कहा मेरे पीछे वह आता है जो मुझसे अधिक शक्तिमान है मैं उसके जूतोंका बन्ध झुकके खोलनेके योग्य नहीं हूं । (८) मैंने तुम्हें जलसे बपतिसमा दिया है परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मासे बपतिसमा देगा ।

[यीशुका बपतिसमा लेना और उसकी परीक्षा ।]

मत्ती ३ : १३ और ४ : ११ ।

(९) उन दिनोंमें यीशुने गालील देशके नासरत नगरसे आके योहनसे यर्दनमें बपतिसमा लिया । (१०) और तुरन्त जलसे ऊपर आते हुए उसने स्वर्गको खुले और आत्माको कपोतकी नाईं अपने ऊपर उतरते देखा । (११) और यह आकाशवाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं ।

(१२) तब आत्मा तुरन्त उसको जंगलमें ले गया। (१३) वहां जंगलमें चालीस दिन शैतानसे उसकी परीक्षा किई गई और वह बन पशुओंके संग था और स्वर्गदूतोंने उसकी सेवा किई।

[यीशुका उपदेश करना और कई एक शिष्योंको बुलाना।]

मत्ती ४ : १२—११।

(१४) योहनके बन्दीगृहमें डाले जानेके पीछे यीशुने गालीलमें आके ईश्वरके राज्यका सुसमाचार प्रचार किया. (१५) और कहा समय पूरा हुआ है और ईश्वरका राज्य निकट आया है पश्चात्ताप करो और सुसमाचारपर बिश्वास करो। (१६) गालील के समुद्रके तीरपर फिरते हुए उसने शिमोनको और उसके भाई अन्द्रियको समुद्रमें जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे। (१७) यीशुने उनसे कहा मेरे पीछे आओ मैं तुमको मनुष्योंके मछुवे बनाऊंगा। (१८) वे तुरन्त अपने जाल छोड़के उसके पीछे हो लिये। (१९) वहांसे थोड़ा आगे बढ़के उसने जबदीके पुत्र याकूब और उसके भाई योहनको देखा कि वे नावपर जालोंको सुधारते थे। (२०) उसने तुरन्त उन्हें बुलाया और वे अपने पिता जबदीको मजूरोंके संग नावपर छोड़के उसके पीछे हो लिये।

[यीशुका एक भूतग्रस्त मनुष्यको चंगा करना।]

लूक ४ : ३१—३७।

(२१) वे कफर्नाहुम नगरमें आये और यीशुने तुरन्त बिश्रामके दिन सभाके घरमें जाके उपदेश किया। (२२) लोग उसके उपदेशसे अचंभित हुए क्योंकि उसने अध्यापकोंकी रीतिसे नहीं परन्तु अधिकारीकी रीतिसे उन्हें उपदेश दिया। (२३) उनकी सभाके घरमें एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूत लगा था। (२४) उसने चिल्लाके कहा हे यीशु नासरी रहने दीजिये आपको हमसे क्या काम. क्या आप हमें नाश करने आये हैं. मैं आपको जानता हूं आप कौन हैं ईश्वरका पवित्र जन।

(२५) यीशुने उसको डांटके कहा चुप रह और उसमेंसे निकल आ। (२६) तब अशुद्ध भूत उस मनुष्यको मरोड़के और बड़े शब्दसे चिल्लाके उसमेंसे निकल आया। (२७) इसपर सब लोग ऐसे अचंभित हुए कि आपसमें बिचार करके बोले यह क्या है. यह कौनसा नया उपदेश है कि वह अधिकारीकी रीतिसे अशुद्ध भूतोंको भी आज्ञा देता है और वे उसकी आज्ञा मानते हैं। (२८) सो उसकी कीर्त्ति तुरन्त गालीलके आसपासके सारे देशमें फैल गई।

[यीशुका पितरकी सासको और बहुत और रोगियोंको चंगा करना।]

मत्ती ८ : १४—१७।

(२९) सभाके घरसे निकलके वे तुरन्त याकूब और योहनके संग शिमोन और अन्द्रियके घरमें आये। (३०) और शिमोनकी सास ज्वरसे पीड़ित पड़ी थी और उन्होंने तुरन्त उसके विषयमें उससे कहा। (३१) तब उसने उस पास आ उसका हाथ पकड़के उसे उठाया और ज्वरने तुरन्त उसको छोड़ा और वह उनकी सेवा करने लगी।

(३२) सांझको जब सूर्य्य डूबा तब लोग सब रोगियोंको और भूतग्रस्तोंको उस पास लाये। (३३) सारे नगरके लोग भी द्वार पर एकट्ठे हुए। (३४) और उसने बहुतोंको जो नाना प्रकारके रोगोंसे दुःखी थे चंगा किया और बहुत भूतोंको निकाला परन्तु भूतोंको बोलने न दिया क्योंकि वे उसे जानते थे।

(३५) भोरको कुछ रात रहते वह उठके निकला और जंगली स्थानमें जाके वहां प्रार्थना किई। (३६) तब शिमोन और जो उसके संग थे सो उसके पीछे हो लिये. (३७) और उसे पाके उससे बोले सब लोग आपको ढूंढ़ते हैं। (३८) उसने उनसे कहा आओ हम आसपासके नगरोंमें जायें कि मैं वहां भी उपदेश करूं क्योंकि मैं इसीलिये बाहर आया हूं। (३९) सो

उसने सारे गालीलमें उनकी सभाओंमें उपदेश किया और भूतोंको निकाला ।

[यीशुका एक कोढ़ीको चंगा करना ।]

मत्ती ८ । १—४ ।

(४०) एक कोढ़ीने उस पास आ उससे बिन्ती किई और उसके आगे घुटने टेकके उससे कहा जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं । (४१) यीशुको दया आई और उसने हाथ बढ़ा उसे छूके उससे कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा । (४२) उसके कहनेपर उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा और वह शुद्ध हुआ । (४३) तब उसने उसे चिताके तुरन्त बिदा किया । (४४) और उससे कहा देख किसीसे कुछ मत कह परन्तु जा अपने तईं याजकको दिखा और अपने शुद्ध होनेके विषयमें जो कुछ मूसाने ठहराया उसे लोगोंपर साक्षी होनेके लिये चढ़ा । (४५) परन्तु वह बाहर जाके इस बातको बहुत सुनाने और प्रचार करने लगा यहांलों कि यीशु फिर प्रगट होके नगरमें नहीं जा सका परन्तु बाहर जंगली स्थानोंमें रहा और लोग चहुं ओरसे उस पास आये ।

[यीशुका एक अर्द्धांगीको चंगा करना और उसका पाप क्षमा करना ।]

मत्ती ९ : १—८ ।

२ कई एक दिनके पीछे यीशुने फिर कफर्नाहूममें प्रवेश किया और सुना गया कि वह घरमें है । (२) तुरन्त इतने बहुत लोग एकट्ठे हुए कि वे न घरमें न द्वारके आसपास समा सके और उसने उन्हें बचन सुनाया । (३) और लोग एक अर्द्धांगीको चार मनुष्योंसे उठवाके उस पास ले आये । (४) परन्तु जब वे भीड़के कारण उसके निकट पहुंच न सके तब जहां वह था वहां उन्होंने छत उधेड़के और कुछ खोलके उस खाटको जिसपर अर्द्धांगी पड़ा था लटका दिया । (५) यीशुने

उन्होंका बिश्वास देखके उस अर्द्धांगीसे कहा हे पुत्र तेरे पाप क्षमा किये गये हैं । (६) और कितने अध्यापक वहां बैठे थे और अपने अपने मनमें बिचार करते थे . (७) कि यह मनुष्य क्यों इस रीतिसे ईश्वरकी निन्दा करता है . ईश्वरको छोड़ कौन पापोंको क्षमा कर सकता है । (८) यीशुने तुरन्त अपने आत्मासे जाना कि वे अपने अपने मनमें ऐसा बिचार करते हैं और उनसे कहा तुम लोग अपने अपने मनमें यह बिचार क्यों करते हो । (९) कौन बात सहज है अर्द्धांगीसे यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ अपनी खाट उठाके चल । (१०) परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्यके पुत्रको पृथिवीपर पाप क्षमा करनेका अधिकार है . (११) (उसने उस अर्द्धांगीसे कहा) मैं तुझसे कहता हूं उठ अपनी खाट उठाके अपने घरको जा । (१२) वह तुरन्त उठके खाट उठाके सभोंके साम्ने चला गया यहांलों कि वे सब बिस्मित हुए और ईश्वरकी स्तुति करके बोले हमने ऐसा कभी नहीं देखा ।

[यीशुका लेवीको बुलाना और पापियोंके संग भोजन करना ।]

भूतम् मत्ती ९ । ९—१३ ।

पर ग(१३) यीशु फिर बाहर समुद्रके तीरपर गया और सब लोग रोग पास आये और उसने उन्हें उपदेश दिया । (१४) जाते हुए उसने अलफईके पुत्र लेवीको कर उगाहनेके स्थानमें बैठे देखा और उससे कहा मेरे पीछे आ . तब वह उठके उसके पीछे हो लिया । (१५) जब यीशु उसके घरमें भोजनपर बैठा तब बहुत कर उगाहनेहारे और पापी लोग उसके और उसके शिष्योंके संग बैठ गये क्योंकि बहुत थे और वे उसके पीछे हो लिये । (१६) अध्यापकों और फरोशियोंने उसको कर उगाहनेहारों और पापियोंके संग खाते देखके उसके शिष्योंसे कहा यह क्या

है कि वह कर उगाहनेहारों और पापियोंके संग खाता और पीता है । (१७) यीशुने यह सुनके उनसे कहा निरोगियोंको वैद्यका प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियोंको . मैं धर्म्मियोंको नहीं परन्तु पापियोंको पश्चात्तापके लिये बुलाने आया हूं।

[यीशुका उपवास करनेका ब्योरा बताना ।]

मत्ती ९ : १४—१७ ।

(१८) योहनके और फरीशियोंके शिष्य उपवास करते थे और उन्होंने आ उससे कहा योहनके और फरीशियोंके शिष्य क्यों उपवास करते हैं परन्तु आपके शिष्य उपवास नहीं करते । (१९) यीशुने उनसे कहा जब दूल्हा सखाओंके संग है तब क्या वे उपवास कर सकते हैं. जबलों दूल्हा उनके संग रहे तबलों वे उपवास नहीं कर सकते हैं । (२०) परन्तु वे दिन आवेंगे जिनमें दूल्हा उनसे अलग किया जायगा तब वे उन दिनोंमें उपवास करेंगे । (२१) कोई मनुष्य कोरे कपड़ेका टुकड़ा पुराने बस्त्रमें नहीं टांकता है नहीं तो वह नया टुकड़ा पुराने कपड़ेसे कुछ और भी फाड़ लेता है और उसका फटा बढ़ जाता है । (२२) और कोई मनुष्य नया दाख रस पुराने कुप्पोंमें नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुप्पोंको फाड़ता है और दाख रस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं परन्तु नया दाख रस नये कुप्पोंमें भरा चाहिये ।

[यीशुका बिश्रामवारके विषयमें निर्णय करना ।]

मत्ती १२ : १—८ ।

(२३) बिश्रामके दिन यीशु खेतोंमें होके जाता था और उसके शिष्य जाते हुए बालें तोड़ने लगे । (२४) तब फरीशियोंने उससे कहा देखिये बिश्रामके दिनमें जो काम उचित नहीं है सो ये लोग क्यों करते हैं । (२५) उसने उनसे कहा क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि जब दाऊदको प्रयोजन था और वह और

उसके संगी लोग भूखे हुए तब उसने क्या किया। (२६) उसने क्योंकर अबियाथर महायाजकके समयमें ईश्वरके घरमें जाके भेंटकी रोटियां खाईं जिन्हें खाना और किसीको नहीं केवल याजकोंको उचित है और अपने संगियोंको भी दिईं। (२७) और उसने उनसे कहा बिस्रामवार मनुष्यके लिये हुआ पर मनुष्य बिस्रामवारके लिये नहीं। (२८) इसलिये मनुष्यका पुत्र बिस्रामवारका भी प्रभु है।

[यीशुका बिश्रामवारमें एक मनुष्यको जिसका हाथ सूख गया था चंगा करना।]

मत्ती १२ : ९—२१।

३ यीशु फिर सभाके घरमें गया और वहां एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था। (२) और लोग उसपर दोष लगानेके लिये उसे ताकते थे कि वह बिस्रामके दिनमें इसको चंगा करेगा कि नहीं। (३) उसने सूखे हाथवाले मनुष्यसे कहा बीचमें खड़ा हो। (४) तब उसने उन्होंसे कहा क्या बिस्रामके दिनोंमें भला करना अथवा बुरा करना प्राणको बचाना अथवा घात करना उचित है. परन्तु वे चुप रहे। (५) और उसने उनके मनकी कठोरतासे उदास हो उन्होंपर क्रोधसे चारों ओर दृष्टि किई और उस मनुष्यसे कहा अपना हाथ बढ़ा. उसने उसको बढ़ाया और उसका हाथ फिर दूसरेकी नाईं भला चंगा हो गया।

(६) तब फरीशियोंने बाहर जाके तुरन्त हेरोदियोंके संग यीशुके बिरुद्ध आपसमें बिचार किया इसलिये कि उसे नाश करें। (७) यीशु अपने शिष्योंके संग समुद्रके निकट गया और गालील और यिहूदिया और यिरूशलीम और इदोमसे और यर्दनके उस पारसे बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिई। (८) सोर और सीदोनके आसपासके लोगोंने भी जब सुना वह कैसे बड़े काम करता है तब उनमेंकी एक बड़ी भीड़ उस पास

आई । (९) उसने अपने शिष्योंसे कहा भीड़के कारण एक नाव मेरे लिये लगी रहे न हो कि वे मुझे दबावें । (१०) क्योंकि उसने बहुतोंको चंगा किया यहांलों कि जितने रोगी थे उसे छूनेको उसपर गिरे पड़ते थे । (११) अशुद्ध भूतोंने भी जब उसे देखा तब उसको दंडवत किई और पुकारके बोले आप ईश्वरके पुत्र हैं । (१२) और उसने उनको बहुत दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो ।

[यीशुका बारह प्रेरितोंको ठहराना ।]

मत्ती १० : १—४ ।

(१३) फिर उसने पर्व्वतपर चढ़के जिन्हें चाहा उन्हें अपने पास बुलाया और वे उस पास गये । (१४) तब उसने बारह जनोंको ठहराया कि वे उसके संग रहें . (१५) और कि वह उन्हें उपदेश करनेको और रोगोंको चंगा करने और भूतोंको निकालनेका अधिकार रखनेको भेजे . (१६) अर्थात् शिमोनको जिसका नाम उसने पितर रखा . (१७) और जबदीके पुत्र याकूब और याकूबके भाई योहनको जिनका नाम उसने बनेरगश अर्थात् गर्जनके पुत्र रखा . (१८) और अन्द्रिय और फिलिप और बर्थलमई और मत्ती और थोमाको और अलफईके पुत्र याकूबको और थद्दईको और शिमोन काननीको . (१९) और यिहूदा इस्करियोतीको जिसने उसे पकड़वाया . और वे घरमें आये ।

[यीशुका अध्यापकोंके अपवादका खंडन करना ।]

लूक ११ : १४—२३ ।

(२०) तब बहुत लोग फिर एकट्ठे हुए यहांलों कि वे रोटी खाने भी न सके । (२१) और उसके कुटुम्ब यह सुनके उसे पकड़नेको निकल आये क्योंकि उन्होंने कहा उसका चित्त ठिकाने नहीं है । (२२) तब अध्यापक लोग जो यिरूशलीमसे आये थे बोले कि उसे बालजिबूल लगा है और कि वह भूतोंके

प्रधानकी सहायता से भूतोंको निकालता है। (२३) उसने उन्हें अपने पास बुलाके दृष्टान्तोंमें उनसे कहा शैतान क्योंकर शैतानको निकाल सकता है। (२४) यदि किसी राज्यमें फूट पड़ी होय तो वह राज्य नहीं ठहर सकता है। (२५) और यदि किसी घरानेमें फूट पड़ी होय तो वह घराना नहीं ठहर सकता है। (२६) और यदि शैतान अपने विरोधमें उठके अलग बिलग हुआ है तो वह नहीं ठहर सकता है पर उसका अन्त होता है। (२७) यदि बलवन्तको कोई पहिले न बांधे तो उस बलवन्तके घरमें पैठके उसकी सामग्री लूट नहीं सकता है. परन्तु उसे बांधके उसके घरको लूटेगा। (२८) मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि मनुष्योंके सन्तानोंके सब पाप और सब निन्दा जिससे वे निन्दा करें क्षमा किई जायगी। (२९) परन्तु जो कोई पवित्र आत्माकी निन्दा करे सो कभी नहीं क्षमा किया जायगा पर अनन्त दंडके योग्य है। (३०) वे जो बोले कि उसे अशुद्ध भूत लगा है इसीलिये यीशुने यह बात कही।

[यीशुके कुटुम्बका वर्णन।]

मत्ती १२ : ४६—५०।

(३१) सो उसके भाई और उसकी माता आये और बाहर खड़े हो उसको बुलवा भेजा। (३२) बहुत लोग उसके आसपास बैठे थे और उन्होंने उससे कहा देखिये आपकी माता और आपके भाई बाहर आपको ढूंढ़ते हैं। (३३) उसने उनको उत्तर दिया कि मेरी माता अथवा मेरे भाई कौन हैं। (३४) और जो लोग उसके आसपास बैठे थे उनपर चारों ओर दृष्टि कर उसने कहा देखो मेरी माता और मेरे भाई। (३५) क्योंकि जो कोई ईश्वरकी इच्छापर चले वही मेरा भाई और मेरी बहिन और माता है।

[बीज बोनेहारे का दृष्टान्त ।]

मत्ती १३ : १—२३ ।

४ यीशु फिर समुद्रके तीरपर उपदेश करने लगा और ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नावपर चढ़के समुद्रपर बैठा और सब लोग समुद्रके निकट भूमिपर रहे। (२) तब उसने उन्हें दृष्टान्तोंमें बहुतसी बातें सिखाईं और अपने उपदेशमे उनसे कहा . (३) सुनो देखो एक बोनेहारा बीज बोनेको निकला। (४) बीज बोनेमें कुछ मार्गकी ओर गिरा और आकाशके पंछियोंने आके उसे चुग लिया। (५) कुछ पत्थरैली भूमिपर गिरा जहां उसको बहुत मिट्टी न मिली और बहुत मिट्टी न मिलनेसे वह बेग उगा। (६) परन्तु सूर्य्य उदय होनेपर वह झुलस गया और जड़ न पकड़नेसे सूख गया। (७) कुछ कांटोंके बीचमें गिरा और कांटोंने बढ़के उसको दबा डाला और उसने फल न दिया। (८) परन्तु कुछ अच्छी भूमिपर गिरा और फल दिया जो उत्पन्न होके बढ़ता गया और कोई तीस गुणे कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे फल फला। (९) और उसने उनसे कहा जिसको सुननेके कान हों सो सुने।

(१०) जब वह एकान्तमें था तब जो लोग उसके समीप थे उन्होंने बारह शिष्योंके साथ इस दृष्टान्तका अर्थ उससे पूछा। (११) उसने उनसे कहा तुमको ईश्वरके राज्यका भेद जाननेका अधिकार दिया गया है परन्तु जो बाहर हैं उन्होंसे सब बातें दृष्टान्तोंमें होती हैं . (१२) इसलिये कि वे देखते हुए देखें और उन्हें न सूझे और सुनते हुए सुनें और न बूझें ऐसा न हो कि वे कभी फिर जावें और उनके पाप क्षमा किये जायें।

(१३) फिर उसने उनसे कहा क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते हो तो सब दृष्टान्त क्योंकर समझोगे। (१४) बोनेहारा वह है जो वचनको बोता है। (१५) मार्गकी ओरके जहां वचन

बोया जाता है वे हैं कि जब वे सुनते हैं तब शैतान तुरन्त आके जो बचन उनके मनमें बोया गया था उसे छीन लेता है। (१६) वैसेही जिनमें बीज पत्थरैली भूमिपर बोया जाता है सो वे हैं कि जब बचन सुनते हैं तब तुरन्त आनन्दसे उसको ग्रहण करते हैं। (१७) परन्तु उनमें जड़ न बंधनेसे वे थोड़ी बेर ठहरते हैं तब बचनके कारण क्लेश अथवा उपद्रव होनेपर तुरन्त ठोकर खाते हैं। (१८) जिनमें बीज कांटोंके बीचमें बोया जाता है सो वे हैं जो बचन सुनते हैं। (१९) पर इस संसारकी चिन्ता और धनकी माया और और बस्तुओंका लोभ उनमें समाके बचनको दबाते हैं और वह निष्फल होता है। (२०) पर जिनमें बीज अच्छी भूमिपर बोया गया सो वे हैं जो बचन सुनके ग्रहण करते हैं और फल फलते हैं कोई तीस गुणे कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे।

[दीपकका दृष्टान्त और बचन सुननेका उपदेश।].

लूक ८। १६—१८।

(२१) और उसने उनसे कहा क्या दीपकको लाते हैं कि बर्त्तनके नीचे अथवा खाटके नीचे रखा जाय. क्या इसलिये नहीं कि दीवटपर रखा जाय। (२२) कुछ गुप्त नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ छिपा था परन्तु इसलिये कि प्रसिद्ध हो जावे। (२३) यदि किसीको सुननेके कान हों तो सुने। (२४) फिर उसने उनसे कहा सचेत रहो तुम क्या सुनते हो. जिस नापसे तुम नापते हो उसीसे तुम्हारे लिये नापा जायगा और तुमको जो सुनते हो अधिक दिया जायगा। (२५) क्योंकि जो कोई रखता है उसको और दिया जायगा परन्तु जो नहीं रखता है उससे जो कुछ उसके पास है सो भी ले लिया जायगा।

बीज बढ़नेका दृष्टान्त।]

(२६) फिर उसने कहा ईश्वरका राज्य ऐसा है जैसा कि

मनुष्य भूमिमें बीज बोय । (२७) और रात दिन सोय और उठे और वह बीज जन्मे और बढ़े पर किस रीतिसे वह नहीं जानता है । (२८) क्योंकि पृथिवी आपसे आप फल फलती है पहिले अंकुर तब बाल तब बालमें पक्का दाना । (२९) परन्तु जब दाना पक चुका है तब वह तुरन्त हंसुआ लगाता है क्योंकि कटनी आ पहुंची है ।

[राईके दानेका दृष्टान्त ।]

मत्ती १३ : ३१, ३२ ।

(३०) फिर उसने कहा हम ईश्वरके राज्यकी उपमा किससे दें और किस दृष्टान्तसे उसे वर्णन करें । (३१) वह राईके एक दानेकी नाईं है कि जब भूमिमें बोया जाता तब भूमिमेंके सब बीजोंसे छोटा है । (३२) परन्तु जब बोया जाता तब बढ़ता और सब साग पातसे बड़ा हो जाता है और उसकी ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं कि आकाशके पंछी उसकी छायामें बसेरा कर सकते हैं ।'

(३३) ऐसे ऐसे बहुत दृष्टान्तोंमें यीशुने लोगोंको जैसा वे सुन सकते थे वैसा वचन सुनाया । (३४) परन्तु बिना दृष्टान्तसे उसने उनको कुछ न कहा और एकान्तमें उसने अपने शिष्योंको सब बातोंका अर्थ बताया ।

[यीशुका आंधीको थांभना ।]

मत्ती ८ : २३—२७ ।

(३५) उसी दिन सांझको उसने उनसे कहा कि आओ हम उस पार चलें । (३६) सो उन्होंने लोगोंको बिदा कर उसे नावपर जैसा था वैसा चढ़ा लिया और कितनी और नावें भी उसके संग थीं । (३७) और बड़ी आंधी उठी और लहरें नावपर ऐसी लगीं कि वह अब भर जाने लगी । (३८) परन्तु यीशु नावकी पिछली ओर तकिया दिये हुए सोता था और

उन्होंने उसे जगाके उससे कहा हे गुरु क्या आपको सोच नहीं कि हम नष्ट होते हैं । (३९) तब उसने उठके बयारको डांटा और समुद्रसे कहा चुप रह और थम जा और बयार थम गई और बड़ा नीवा हो गया । (४०) और उसने उनसे कहा तुम क्यों ऐसे डरते हो तुम्हें बिश्वास क्यों नहीं है । (४१) परन्तु वे बहुतही डर गये और आपसमें बोले यह कौन है कि बयार और समुद्र भी उसकी आज्ञा मानते हैं ।

[यीशुका एक मनुष्यमेंसे बहुत भूतोंको निकालना ।]

मत्ती ८ । २८—३४ ।

५ वे समुद्रके उस पार गदेरियोंके देशमें पहुंचे । (२) जब यीशु नावपरसे उतरा तब एक मनुष्य जिसे अशुद्ध भूत लगा था कबरस्थानमेंसे तुरन्त उससे आ मिला । (३) उस मनुष्यका बासा कबरस्थानमें था और कोई उसे जंजीरोंसे भी बांध नहीं सकता था । (४) क्योंकि वह बहुत बार बेड़ियों और जंजीरोंसे बांधा गया था और उसने जंजीरें तोड़ डालीं और बेड़ियां टुकड़े टुकड़े किईं और कोई उसे बशमें नहीं कर सकता था । (५) वह सदा रात दिन पहाड़ों और कबरोंमें रहता था और चिल्लाता और अपनेको पत्थरोंसे काटता था । (६) वह यीशुको दूरसे देखके दौड़ा और उसको प्रणाम किया . (७) और बड़े शब्दसे चिल्लाके कहा हे यीशु सर्ब्बप्रधान ईश्वरके पुत्र आपको मुझसे क्या काम . मैं आपको ईश्वरकी किरिया देता हूं कि मुझे पीड़ा न दीजिये । (८) क्योंकि यीशुने उससे कहा हे अशुद्ध भूत इस मनुष्यसे निकल आ । (९) और उसने उससे पूछा तेरा नाम क्या है . उसने उत्तर दिया कि मेरा नाम सेना है क्योंकि हम बहुत हैं । (१०) और उसने यीशुसे बहुत बिन्ती किई कि हमें इस देशसे बाहर न भेजिये । (११) वहां पहाड़ोंके निकट सूअरोंका बड़ा झुंड चरता था ।

(१२) सो सब भूतोंने उससे बिन्ती कर कहा हमें सूअरोंमें भेजिये कि हम उनमें पैठें। (१३) योशुने तुरन्त उन्हें जाने दिया और अशुद्ध भूत निकलके सूअरोंमें पैठे और झुंड जो दो सहस्रके अटकल थे कड़ाड़ेपरसे समुद्रमें दौड़ गये और समुद्रमें डूब मरे। (१४) पर सूअरोंके चरवाहे भागे और नगरमें और गांवोंमें इसका समाचार कहा और लोग बाहर निकले कि देखें क्या हुआ है। (१५) और योशु पास आके वे उस भूतग्रस्तको जिसे भूतोंकी सेना लगी थी बैठे और बस्त्र पहिने और सुबुद्धि देखके डर गये। (१६) जिन लोगोंने देखा था उन्होंने उनसे कह दिया कि भूतग्रस्त मनुष्यको और सूअरोंके विषयमें कैसा हुआ था। (१७) तब वे योशुसे बिन्ती करने लगे कि हमारे सिवानोंसे निकल जाइये। (१८) जब वह नावपर चढ़ा तब जो मनुष्य आगे भूतग्रस्त था उसने उससे बिन्ती किई कि मैं आपके संग रहूं। (१९) पर योशुने उसे नहीं रहने दिया परन्तु उससे कहा अपने घरको अपने कुटुम्बोंके पास जाके उन्होंसे कह दे कि परमेश्वरने तुझपर दया करके तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं। (२०) वह जाके दिकापलि देशमें प्रचार करने लगा कि योशुने उसके लिये कैसे बड़े काम किये थे और सभोंने अचंभा किया।

[योशुका एक कन्याको जिलाना और एक स्त्रीको चंगा करना।]

मत्ती ९ : १८—२६। लूक ८ : ४१—४६।

(२१) जब योशु नावपर फिर पार उतरा तब बहुत लोग उस पास एकट्ठे हुए और वह समुद्रके तीरपर था। (२२) और देखो सभाके अध्यक्षोंमेंसे याईर नाम एक अध्यक्ष आया और उसे देखके उसके पांवों पड़ा। (२३) और उससे बहुत बिन्ती कर कहा मेरी बेटी मरनेपर है आप आके उसपर हाथ रखिये कि वह चंगी हो जाय तो वह जीयेगी। (२४) तब

यीशु उसके संग गया और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिई और उसे दबाती थी।

(२५) और एक स्त्री जिसे बारह बरससे लोहू बहनेका रोग था. (२६) जो बहुत वैद्योंसे बड़ा दुःख पाके अपना सब धन उठा चुकी थी और कुछ लाभ नहीं पाया परन्तु अधिक रोगी हुई. (२७) तिसने यीशुका चर्चा सुनके उस भीड़में पीछेसे आ उसके बस्त्रको छूआ। (२८) क्योंकि उसने कहा यदि मैं केवल उसके बस्त्रको छूओं तो चंगी हो जाऊंगी। (२९) और उसके लोहूका सोता तुरन्त सूख गया और उसने अपने देहमें जान लिया कि मैं उस रोगसे चंगी हुई हूं। (३०) यीशुने तुरन्त अपनेमें जाना कि मुझमेंसे शक्ति निकली है और भीड़में पीछे फिरके कहा किसने मेरे बस्त्रको छूआ। (३१) उसके शिष्योंने उससे कहा आप देखते हैं कि भीड़ आपको दबा रही है और आप कहते हैं किसने मुझे छूआ। (३२) तब जिसने यह काम किया था उसे देखनेको यीशुने चारों ओर दृष्टि किई। (३३) तब वह स्त्री जो उसपर हुआ था सो जानके डरती और कांपती हुई आई और उसे दंडवत कर उससे सच सच सब कुछ कह दिया। (३४) उसने उससे कहा हे पुत्री तेरे बिश्वासने तुझे चंगा किया है कुशलसे जा और अपने रोगसे चंगी रह।

(३५) वह बोलताही था कि लोगोंने सभाके अध्यक्षके घरसे आ कहा आपकी बेटी मर गई है आप गुरुको और दुःख क्यो देते हैं। (३६) जो बचन कहा जाता था उसको सुनके यीशुने तुरन्त सभाके अध्यक्षसे कहा मत डर केवल बिश्वास कर। (३७) और उसने पितर और याकूब और याकूबके भाई योहनको छोड़ और किसीको अपने संग जाने नहीं दिया। (३८) सभाके अध्यक्षके घरपर पहुंचके उसने धूमधाम अर्थात लोगोंको बहुत रोते और चिल्लाते देखा। (३९) उसने भीतर

जाके उनसे कहा क्यों धूम मचाते और रोते हो . कन्या मरी नहीं पर सोती है। (४०) वे उसका उपहास करने लगे परन्तु उसने सभोंको बाहर किया और कन्याके माता पिताको और अपने संगियोंको लेके जहां कन्या पड़ी थी वहां पैठा। (४१) और उसने कन्याका हाथ पकड़के उससे कहा तालिथा कूमी अर्थात हे कन्या मैं तुझसे कहता हूं उठ। (४२) और कन्या तुरन्त उठी और फिरने लगी क्योंकि वह बारह बरसकी थी . और वे अत्यन्त बिस्मित हुए। (४३) पर उसने उनको दृढ़ आज्ञा दिई कि यह बात कोई न जाने और कहा कि कन्याको कुछ खानेको दिया जाय।

[यीशुका अपने देशके लोगोंमें अपमान होना।]

मत्ती १३ : ५३—५८।

६ यीशु वहांसे जाके अपने देशमें आया और उसके शिष्य उसके पीछे हो लिये। (२) बिश्रामके दिन वह सभाके घरमें उपदेश करने लगा और बहुत लोग सुनके अचंभित हो बोले इसको यह बातें कहांसे हुई और यह कौनसा ज्ञान है जो उसको दिया गया है कि ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म भी उसके हाथोंसे किये जाते हैं। (३) यह क्या बढ़ई नहीं है मरियमका पुत्र और याकूब और योशी और यिहूदा और शिमोनका भाई और क्या उसकी वहिनें यहां हमारे पास नहीं हैं . सो उन्हों ने उसके विषयमें ठोकर खाई। (४) यीशुने उनसे कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और अपने कुटुम्ब और अपना घर छोड़के और कहीं निरादर नहीं होता है (५) और वह वहां कोई आश्चर्य्य कर्म्म नहीं कर सका केवल थोड़े रोगियों पर हाथ रखके उन्हें चंगा किया। (६) और उसने उनके अविश्वाससे अचंभा किया और चहुं ओरके गांवोंमें उपदेश करता फिरा।

[यीशुका बारह प्रेरितोंको भेजना।]

मत्ती १०: ५।

(७) और वह बारह शिष्योंको अपने पास बुलाके उन्हें दो दो करके भेजने लगा और उनको अशुद्ध भूतोंपर अधिकार दिया। (८) और उसने उन्हें आज्ञा दिई कि मार्गके लिये लाठी छोड़के और कुछ मत लेओ न झोली न रोटी न पटुकेमें पैसे। (९) परन्तु जूते पहिनो और दो अंगे मत पहिनो। (१०) और उसने उनसे कहा जहां कहीं तुम किसी घरमें प्रवेश करो जबलों वहांसे न निकलो तबलों उसी घरमें रहो। (११) जो कोई तुम्हें ग्रहण न करें और तुम्हारी न सुनें वहांसे निकलते हुए उनपर साक्षी होनेके लिये अपने पांवोंके नीचेकी धूल झाड़ डालो. मैं तुमसे सच कहता हूं कि बिचारके दिनमें उस नगरकी दशासे सदोम अथवा अमोराकी दशा सहने योग्य होगी। (१२) सो उन्होंने निकलके पश्चात्ताप करनेका उपदेश किया. (१३) और बहुतेरे भूतोंको निकाला और बहुत रोगियों पर तेल मलके उन्हें चंगा किया।

[योहन बपतिसमा देनेहारेकी मृत्यु।]

मत्ती १४: १—१२।

(१४) हेरोद राजाने यीशुकी कीर्त्ति सुनी क्योंकि उसका नाम प्रसिद्ध हुआ और उसने कहा योहन बपतिसमा देनेहारा मृतकोंमेंसे जी उठा है इसलिये आश्चर्य्य कर्म्म उससे प्रगट होते हैं। (१५) औरोंने कहा यह एलियाह है औरोंने कहा भविष्यद्वक्ता है अथवा भविष्यद्वक्ताओंमेंसे एकके समान है। (१६) परन्तु हेरोदने सुनके कहा जिस योहनका मैंने सिर कटवाया सोई है वह मृतकोंमेंसे जी उठा है। (१७) क्योंकि हेरोदने आप अपने भाई फिलिपकी स्त्री हेरोदियाके कारण जिससे उसने बिवाह किया था लोगोंको भेजके योहनको

पकड़ा था और उसे बन्दीगृहमें बांधा था। (१८) क्योंकि योहनने हेरोदसे कहा था कि अपने भाईकी स्त्रीको रखना तुझको उचित नहीं है। (१९) हेरोदिया भी उससे बैर रखती थी और उसे मार डालने चाहती थी पर नहीं सकती थी। (२०) क्योंकि हेरोद योहनको धर्म्मी और पवित्र पुरुष जानके उससे डरता था और उसकी रक्षा करता था और उसकी सुनके बहुत बातोंपर चलता था और प्रसन्नतासे उसकी सुनता था। (२१) परन्तु जब अवकाशका दिन हुआ कि हेरोदने अपने जन्म दिनमें अपने प्रधानों और सहस्रपतिओं और गालीलके बड़े लोगोंके लिये बियारी बनाई . (२२) और जब हेरोदियाकी पुत्रीने भीतर आ नाच कर हेरोदको और उसके संग बैठनेहारोंको प्रसन्न किया तब राजाने कन्यासे कहा जो कुछ तेरी इच्छा होय सो मुझसे मांग और मैं तुझे देऊंगा। (२३) और उसने उससे किरिया खाई कि मेरे आधे राज्यलों जो कुछ तू मुझसे मांगे मैं तुझे देऊंगा। (२४) उसने बाहर जा अपनी मातासे कहा मैं क्या मांगूंगी . वह बोली योहन बपतिसमा देनेहारेका सिर। (२५) उसने तुरन्त उतावलीसे राजाके पास भीतर आ बिन्ती कर कहा मैं चाहती हूं कि आप योहन बपतिसमा देनेहारेका सिर थालमें अभी मुझे दीजिये। (२६) तब राजा अति उदास हुआ परन्तु उस किरियाके और अपने संग बैठनेहारोंके कारण उसे टालने नहीं चाहा। (२७) और राजाने तुरन्त पहरुएको भेजकर योहनका सिर लानेकी आज्ञा किई। (२८) उसने जाके बन्दीगृहमें उसका सिर काटा और उसका सिर थालमें लाके कन्याको दिया और कन्याने उसे अपनी मांको दिया। (२९) उसके शिष्य यह सुनके आये और उसकी लोथको उठाके कबरमें रखा।

[यीशुका पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना ।]

मत्ती १४ । १३—२१ ।

(३०) प्रेरितोंने यीशु पास एकट्ठे हो उससे सब कुछ कह दिया उन्होंने क्या क्या किया और क्या क्या सिखाया था । (३१) उसने उनसे कहा तुम आप एकान्तमें किसी जंगली स्थानमें आके थोड़ा बिश्राम करो . क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे और उन्हें खानेका भी अवकाश न मिला । (३२) सो वे नावपर चढ़के जंगली स्थानमें एकान्तमें गये । (३३) और लोगोंने उनको जाते देखा और बहुतोंने उसे चीन्हा और पैदल सब नगरोंमेंसे उधर दौड़े और उनके आगे बढ़के उस पास एकट्ठे हुए । (३४) यीशुने निकलके बड़ी भीड़को देखा और उसको उनपर दया आई क्योंकि वे बिन रखवालेकी भेड़ोंकी नाईं थे और वह उन्हें बहुतसा उपदेश देने लगा ।

(३५) जब अबेर हो गई तब उसके शिष्योंने उस पास आ कहा यह तो जंगली स्थान है और अबेर हुई है । (३६) लोगोंको बिदा कीजिये कि वे चारों ओरके गांवों और बस्तियोंमें जाके अपने लिये रोटी मोल लेवें क्योंकि उनके पास कुछ खानेको नहीं है । (३७) उसने उनको उत्तर दिया कि तुम उन्हें खानेको देओ . उन्होंने उससे कहा क्या हम जाके दो सौ सूकियोंकी रोटी मोल लेवें और उन्हें खानेको देवें । (३८) उसने उनसे कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं जाके देखो . उन्होंने बूझके कहा पांच और दो मछली । (३९) तब उसने सब लोगोंको हरी घासपर पांति पांति बैठानेकी आज्ञा उन्हें दिई । (४०) वे सौ सौ और पचास पचास करके पांति पांति बैठ गये । (४१) और उसने उन पांच रोटियों और दो मछलियोंको ले स्वर्गकी ओर देखके धन्यबाद किया और रोटियां तोड़के अपने शिष्योंको दिईं कि लोगोंके आगे रखें और उन दो मछलियोंको

भी सभोंमें बांट दिया। (४२) सो सब खाके तृप्त हुए। (४३) और उन्होंने रोटियोंके टुकड़ोंको और मछलियोंको बारह टोकरी भरी उठाईं। (४४) जिन्होंने रोटी खाई सो पांच सहस्र पुरुषोंके अटकल थे।

[योशुका समुद्रपर चलना।]

मत्ती १४ : २२—३६ ।

(४५) तब योशुने तुरन्त अपने शिष्योंको दृढ़ आज्ञा दिई कि जबलों मैं लोगोंको बिदा करूं तुम नावपर चढ़के मेरे आगे उस पार बैतसैदा नगरको जाओ। (४६) वह उन्हें बिदा कर प्रार्थना करनेको पर्ब्बतपर गया। (४७) सांझको नाव समुद्रके बीच में थी और योशु भूमिपर अकेला था। (४८) और उसने शिष्योंको खेवनेमें व्याकुल देखा क्योंकि बयार उनके सन्मुखको थी और रातके चौथे पहरके निकट वह समुद्रपर चलते हुए उनके पास आया और उनके पाससे होके निकला चाहता था। (४९) पर उन्होंने उसे समुद्रपर चलते देखके समझा कि प्रेत है और चिल्लाये क्योंकि वे सब उसे देखके घबरा गये। (५०) वह तुरन्त उनसे बात करने लगा और उनसे कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो मत। (५१) तब वह उन पास नावपर चढ़ा और बयार थम गई और वे अपने अपने मनमें अत्यन्त बिस्मित और अचंभित हुए। (५२) क्योंकि उन्होंका मन कठोर था इस लिये उन रोटियोंके आश्चर्य्य कर्म्मसे उन्हें ज्ञान न हुआ।

(५३) वे पार उतरके गिनेसरत देशमें पहुंचे और लगान किया। (५४) जब वे नावपरसे उतरे तब लोगोंने तुरन्त योशुको चीन्हा। (५५) और आसपासके सारे देशमें दौड़के जहां सुना कि वह वहां है तहां रोगियोंको खाटोंपर ले जाने लगे। (५६) और जहां जहां उसने बस्तियों अथवा नगरों अथवा गांवोंमें प्रवेश किया तहां उन्होंने रोगियोंको बाजारोंमें रखके

उससे बिन्ती किई कि वे उसके बस्त्रके आंचलको भी छूवें और जितनोंने उसे छूआ सब चंगे हुए।

[प्राचीनोंके विषयमें यीशुका फरीशियोंको डपटना।]

मत्ती १५ : १—२०।

७ तब फरीशी लोग और कितने अध्यापक जो यिरूशलीमसे आये थे यीशु पास एकट्ठे हुए। (२) उन्होंने उसके कितने शिष्योंको अशुद्ध अर्थात बिन धोये हाथोंसे रोटी खाते देखके दोष दिया। (३) क्योंकि फरीशी और सब यिहूदी लोग प्राचीनोंके ब्यवहार धारण कर जबलों यत्नसे हाथ न धोवें तबलों नहीं खाते हैं। (४) और बाजारसे आके जबलों स्नान न करें तबलों नहीं खाते हैं और बहुत और बातें हैं जो उन्होंने माननेको ग्रहण किई हैं जैसे कटोरों और बर्त्तनों और थालियों और खाटोंको धोना। (५) सो उन फरीशियों और अध्यापकोंने उससे पूछा कि आपके शिष्य लोग क्यों प्राचीनोंके ब्यवहारोंपर नहीं चलते परन्तु बिन धोये हाथोंसे रोटी खाते हैं। (६) उसने उनको उत्तर दिया कि यिशैयाहने तुम कपटियोंके विषयमें भविष्यद्वाणी अच्छी कही जैसा लिखा है कि ये लोग होंठोंसे मेरा आदर करते हैं परन्तु उनका मन मुझसे दूर रहता है। (७) पर वे बृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्योंकी आज्ञाओंको धर्म्मोपदेश ठहराके सिखाते हैं। (८) क्योंकि तुम ईश्वरकी आज्ञाको छोड़के मनुष्योंके ब्यवहार धारण करते हो जैसे बर्त्तनों और कटोरोंको धोना. और ऐसे ऐसे बहुत और काम भी करते हो। (९) और उसने उनसे कहा तुम अपने ब्यवहार पालन करनेको ईश्वरकी आज्ञा भली रीतिसे टाल देते हो। (१०) क्योंकि मूसाने कहा अपनी माता और अपने पिताका आदर कर और जो कोई माता अथवा पिताकी निन्दा करे सो मार डाला जाय। (११) परन्तु

तुम कहते हो यदि मनुष्य अपने माता अथवा पितासे कहे कि जो कुछ तुझको मुझसे लाभ होता सो कुर्बान अर्थात् संकल्प किया गया है तो बस । (१२) और तुम उसको उसकी माता अथवा उसके पिताके लिये और कुछ करने नहीं देते हो । (१३) सो तुम अपने व्यवहारोंसे जिन्हें तुमने ठहराया है ईश्वरके बचनको उठा देते हो और ऐसे ऐसे बहुत काम करते हो ।

(१४) और उसने सब लोगोंको अपने पास बुलाके उनसे कहा तुम सब मेरी सुनो और बूझो । (१५) मनुष्यके बाहरसे जो उसमें समावे ऐसा कुछ नहीं है जो उसको अपवित्र कर सकता है परन्तु जो कुछ उसमेंसे निकलता है सोई है जो मनुष्यको अपवित्र करता है । (१६) यदि किसीको सुननेके कान हों तो सुने । (१७) जब वह लोगोंके पाससे घरमें आया तब उसके शिष्योंने इस दृष्टान्तके विषयमें उससे पूछा । (१८) उसने उनसे कहा तुम भी क्या ऐसे निर्बुद्धि हो . क्या तुम नहीं बूझते हो कि जो कुछ बाहरसे मनुष्यमें समाता है सो उसको अपवित्र नहीं कर सकता है । (१९) क्योंकि वह उसके मनमें नहीं परन्तु पेटमें समाता है और संडासमें गिरता है जिससे सब भोजन शुद्ध होता है । (२०) फिर उसने कहा जो मनुष्यमेंसे निकलता है सोई मनुष्यको अपवित्र करता है । (२१) क्योंकि भीतरसे मनुष्योंके मनसे नाना भांतिकी बुरी चिन्ता परस्त्रीगमन व्यभिचार नरहिंसा . (२२) चोरी लोभ औ दुष्टता और छल लुचपन कुदृष्टि ईश्वरकी निन्दा अभिमान और अज्ञानता निकलती हैं । (२३) यह सब बुरी बातें भीतरसे निकलती हैं और मनुष्यको अपवित्र करती हैं ।

[यीशुका एक अन्यदेशी स्त्रीकी बेटीको चंगा करना ।]

मत्ती १५ : २१—२८ ।

(२४) यीशु वहांसे उठके सोर और सीदोनके सिवानों में

गया और किसी घरमें प्रवेश करके चाहा कि कोई न जाने परन्तु वह छिप न सका। (२५) क्योंकि सुरोफैनीकिया देशकी एक यूनानीय मत माननेवाली स्त्री जिसकी बेटीको अशुद्ध भूत लगा था उसका चर्चा सुनके आई और उसके पांवों पड़ी . (२६) और उससे बिन्ती किई कि आप मेरी बेटीसे भूत निकालिये। (२७) यीशुने उससे कहा लड़कोंको पहिले तृप्त होने दे क्योंकि लड़कोंकी रोटी लेके कुत्तोंके आगे फेंकना अच्छा नहीं है। (२८) स्त्रीने उसको उत्तर दिया कि सच है प्रभु तौभी कुत्ते मेजके नीचे बालकोंके चूरचार खाते हैं। (२९) उसने उससे कहा इस बातके कारण चली जा भूत तेरी बेटी से निकल गया है। (३०) सो उसने अपने घर जाके भूतको निकले हुए और अपनी बेटीको खाटपर लेटी हुई पाई।

[यीशुका एक बहिरे और तोतलेको चंगा करना।]

(३१) फिर वह सोर और सीदोनके सिवानोंसे निकलके दिकापलिके सिवानोंके बीचमें होके गालीलके समुद्रके निकट आया। (३२) और लोगोंने एक बहिरे तोतले मनुष्यको उस पास लाके उससे बिन्ती किई कि आप इसपर हाथ रखिये। (३३) उसने उसको भीड़मेंसे एकान्त ले जाके अपनी उंगलियां उसके कानोंमें डालीं और थूकके उसकी जीभ छूई . (३४) और स्वर्गकी ओर देखके लंबी सांस भरके उससे कहा इप्फातह अर्थात् खुल जा। (३५) और तुरन्त उसके कान खुल गये और उसकी जीभका बंधन भी खुल गया और वह शुद्ध रीतिसे बोलने लगा। (३६) तब यीशुने उन्हें चिताया कि किसीसे मत कहो परन्तु जितना उसने उन्हें चिताया उतना उन्होंने बहुत अधिक प्रचार किया। (३७) और वे अत्यन्त अचंभित हो बोले उसने सब कुछ अच्छा किया है वह बहिरोंको सुनने और गूंगोंको बोलनेकी शक्ति देता है।

[यीशुका चार सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना ।]

मत्ती १५ : ३२—३९ ।

८ उन दिनोंमें जब बड़ी भीड़ हुई और उनके पास कुछ खानेको नहीं था तब यीशुने अपने शिष्योंको अपने पास बुलाके उनसे कहा . (२) मुझे इन लोगोंपर दया आती है क्योंकि वे तीन दिनसे मेरे संग रहे हैं और उनके पास कुछ खानेको नहीं है । (३) जो मैं उन्हे भोजन बिना अपने अपने घर जानेको बिदा करूं तो मार्गमें उनका बल घट जायगा क्योंकि उनमेंसे कोई कोई दूरसे आये हैं । (४) उसके शिष्योंने उसको उत्तर दिया कि यहां जंगलमें कहांसे कोई इन लोगोंको रोटीसे तृप्त कर सके । (५) उसने उनसे पूछा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं . उन्होंने कहा सात । (६) तब उसने लोगोंको भूमिपर बैठनेकी आज्ञा दिई और उन सात रोटियोंको लेके धन्य मानके तोड़ा और अपने शिष्योंको दिया कि उनके आगे रखें और शिष्योंने लोगोंके आगे रखा । (७) उनके पास थोड़ीसी छोटी मछलियां भी थीं और उसने धन्यबाद कर उन्हें भी लोगोंके आगे रखनेकी आज्ञा दिई । (८) सो वे खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्होंने उनके सात टोकरे उठाये । (९) जिन्होंने खाया सो चार सहस्र पुरुषोंके अटकल थे और उसने उनको बिदा किया ।

[यीशुका चिन्ह मांगनेहारोंको डांटना और उसका अपने शिष्योंको फरीशियोंके खमीरसे चिताना ।]

मत्ती १६ : १—१२ ।

(१०) तब वह तुरन्त अपने शिष्योंके संग नावपर चढ़के दलमनूथा नगरके सिवानोंमें आया । (११) और फरीशी लोग निकल आये और उससे विवाद करने लगे और उसकी परीक्षा करनेको उससे आकाशका एक चिन्ह मांगा । (१२) उसने अपने आत्मामें हाय मारके कहा इस समयके लोग क्यों चिन्ह ढूंढ़ते

हैं . मैं तुमसे सच कहता हूं कि इस समयके लोगोंको कोई चिन्ह नहीं दिया जायगा। (१३) और वह उन्हें छोड़के नावपर फिर चढ़के उस पार चला गया।

(१४) शिष्य लोग रोटी लेना भूल गये और नावपर उनके साथ एक रोटीसे अधिक न थी। (१५) और उसने उन्हें चिताया कि देखो फरीशियोंके खमीरसे और हेरोदके खमीरसे चौकस रहो। (१६) वे आपसमें बिचार करने लगे यह इसलिये है कि हमारे पास रोटी नहीं है। (१७) यह जानके यीशुने उनसे कहा तुम्हारे पास रोटी न होनेके कारण तुम क्यों आपसमें बिचार करते हो . क्या तुम अबलों नहीं बूझते और नहीं समझते हो . क्या तुम्हारा मन अबलों कठोर है। (१८) आंखें रहते हुए क्या नहीं देखते हो और कान रहते हुए क्या नहीं सुनते हो और क्या स्मरण नहीं करते हो। (१९) जब मैंने पांच सहस्रके लिये पांच रोटी तोड़ीं तब तुमने टुकड़ोंकी कितनी टोकरियां भरी उठाईं . उन्होंने उससे कहा बारह। (२०) और जब चार सहस्रके लिये सात रोटी तब तुमने टुकड़ोंके कितने टोकरे भरे उठाये . वे बोले सात। (२१) उसने उनसे कहा तुम क्यों नहीं समझते हो।

[यीशुका एक अन्धेके नेत्र खोलना।]

(२२) तब वह बैतसैदामें आया और लोगोंने एक अन्धेको उस पास ला उससे बिन्ती किई कि उसको छूवे। (२३) वह उस अन्धेका हाथ पकड़के उसे नगरके बाहर ले गया और उसके नेत्रोंपर थूकके उसपर हाथ रखके उससे पूछा क्या तू कुछ देखता है। (२४) उसने नेत्र उठाके कहा मैं वृक्षोंकी नाईं मनुष्योंको फिरते देखता हूं। (२५) तब उसने फिर उसके नेत्रोंपर हाथ रखके उससे नेत्र उठवाये और वह चंगा हो गया और सभोंको फरछाईसे देखने लगा। (२६) और

उसने उसे यह कहके घर भेजा कि नगरमें मत जा और नगरमें किसीसे मत कह ।

[यीशुके विषयमें पितरका स्वीकार और शिष्य होनेकी विधि ।]

मत्ती १६ : १३—२३ ।

(२७) यीशु और उसके शिष्य कैसरिया फिलिपीके गांवोंमें निकल गये और मार्गमें उसने अपने शिष्योंसे पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं । (२८) उन्होंने उत्तर दिया कि वे आपको योहन बपतिसमा देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने एलियाह कहते हैं और कितने भविष्यद्वक्ताओंमेंसे एक कहते हैं । (२९) उसने उनसे कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं. पितरने उसको उत्तर दिया कि आप ख्रीष्ट हैं । (३०) तब उसने उन्हें दृढ़ आज्ञा दिई कि मेरे विषयमें किसीसे मत कहो ।

(३१) और वह उन्हें बताने लगा कि मनुष्यके पुत्रको अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकोंसे तुच्छ किया जाय और मार डाला जाय और तीन दिनके पीछे जी उठे । (३२) उसने यह बात खोलके कही और पितर उसे लेके उसको डांटने लगा । (३३) उसने मुंह फेरके और अपने शिष्योंपर दृष्टि करके पितरको डांटा कि हे शैतान मेरे साम्हनेसे दूर हो क्योंकि तुझे ईश्वरकी बातोंका नहीं परन्तु मनुष्योंकी बातोंका सोच रहता है ।

(३४) उसने अपने शिष्योंके संग लोगोंको अपने पास बुलाके उनसे कहा जो कोई मेरे पीछे आने चाहे सो अपनी इच्छाको मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे । (३५) क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे और सुसमाचारके लिये अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा । (३६) यदि मनुष्य सारे जगतको प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उसको क्या लाभ होगा । (३७) अथवा

मनुष्य अपने प्राणको सन्ती क्या देगा। (३८) जो कोई इस समयके व्यभिचारी और पापी लोगोंके बीचमें मुझसे और मेरी बातोंसे लजावे मनुष्यका पुत्र भी जब वह पवित्र दूतोंके संग अपने पिताके ऐश्वर्य्यमें आवेगा तब उससे लजावेगा।

[यीशुका शिष्योंके आगे तेजस्वी दिखाई देना।]

मत्ती १७ : १—१३।

९ यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उनमेंसे कोई कोई हैं कि जबलों ईश्वरका राज्य पराक्रमसे आया हुआ न देखें तबलों मृत्युका स्वाद न चीखेंगे। (२) छः दिनके पीछे यीशु पितर और याकूब और योहनको लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्व्वतपर एकान्तमें ले गया और उनके आगे उसका रूप बदल गया। (३) और उसका बस्त्र चमकने लगा और पालेकी नाईं अति उजला हुआ जैसा कोई धोबी धरतीपर उजला नहीं कर सकता है। (४) और मूसाके संग एलियाह उनको दिखाई दिया और वे यीशुके संग बात करते थे। (५) इसपर पितरने यीशुसे कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है. हम तीन डेरे बनावें एक आपके लिये एक मूसाके लिये और एक एलियाहके लिये। (६) वह नहीं जानता था कि क्या कहे क्योंकि वे बहुत डरते थे। (७) तब एक मेघने उन्हें छा लिया और उस मेघसे यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उसकी सुनो। (८) और उन्होंने अचानक चारों ओर दृष्टि कर यीशुको छोड़के अपने संग और किसीको न देखा। (९) जब वे उस पर्व्वतसे उतरते थे तब उसने उनको आज्ञा दिई कि जबलों मनुष्यका पुत्र मृतकोंमेंसे नहीं जी उठे तबलों जो तुमने देखा है सो किसीसे मत कहो। (१०) उन्होंने यह बात अपनेहीमें रखके आपसमें बिचार किया कि मृतकोंमेंसे जी उठनेका

(११) और उन्होंने उससे पूछा अध्यापक लोग क्यों कहते हैं कि एलियाहको पहिले आना होगा। (१२) उसने उनको उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले आके सब कुछ सुधारेगा. और मनुष्यके पुत्रके विषयमें क्योंकर लिखा है कि वह बहुत दुःख उठावेगा और तुच्छ किया जायगा। (१३) परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि एलियाह भी आ चुका है और जैसा उसके विषयमें लिखा है तैसा उन्होंने उससे जो कुछ चाहा सो किया है।

[यीशुका एक भूतग्रस्त लड़केको चंगा करना।]

मत्ती १७ : १४—२१ ।

(१४) उसने शिष्योंके पास आ बहुत लोगोंको उनकी चारों ओर और अध्यापकोंको उनसे बिबाद करते हुए देखा। (१५) सब लोग उसे देखतेही बिस्मित हुए और उसकी ओर दौड़के उसे प्रणाम किया। (१६) उसने अध्यापकोंसे पूछा तुम इनसे किस बातका बिबाद करते हो। (१७) भीड़मेंसे एकने उत्तर दिया कि हे गुरु मैं अपने पुत्रको जिसे गूंगा भूत लगा है आपके पास लाया हूं। (१८) भूत उसे जहां पकड़ता है तहां पटकता है और वह मुंहसे फेन बहाता और अपने दांत पीसता है और सूख जाता है और मैंने आपके शिष्योंसे कहा कि उसे निकालें परन्तु वे नहीं सके। (१९) यीशुने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी लोगो मैं कबलों तुम्हारे संग रहूंगा और कबलों तुम्हारी सहूंगा. उसको मेरे पास लाओ। (२०) वे उसको उस पास लाये और जब उसने उसे देखा तब भूतने तुरन्त उसको मरोड़ा और वह भूमिपर गिरा और मुंहसे फेन बहाते हुए लोटने लगा। (२१) यीशुने उसके पितासे पूछा यह उसको कितने दिनोंसे हुआ. उसने कहा बालकपनसे। (२२) भूतने उसे नाश करनेको बारबार आगमें और पानीमें भी गिराया है परन्तु जो आप कुछ कर सकें तो हमपर दया करके हमारा

उपकार कीजिये। (२३) यीशुने उससे कहा जो तू बिश्वास कर सके तो बिश्वास करनेहारेके लिये सब कुछ हो सकता है। (२४) तब बालकके पिताने तुरन्त पुकारके रो रोके कहा हे प्रभु मैं बिश्वास करता हूं मेरे अबिश्वासका उपकार कीजिये। (२५) जब यीशुने देखा कि बहुत लोग एकट्ठे दौड़े आते हैं तब उसने अशुद्ध भूतको डांटके उससे कहा हे गूंगे बहिरे भूत मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि उसमेंसे निकल आ और उसमें फिर कभी मत पैठ। (२६) तब भूत चिल्लाके और बालकको बहुत मरोड़के निकल आया और बालक मृतकके समान हो गया यहांलों कि बहुतोंने कहा वह तो मर गया है। (२७) परन्तु यीशुने उसका हाथ पकड़के उसे उठाया और वह खड़ा हुआ। (२८) जब यीशु घरमें आया तब उसके शिष्योंने निरालेमें उससे पूछा हम उस भूतको क्यों नहीं निकाल सके। (२९) उसने उनसे कहा कि जो इस प्रकारके हैं सो प्रार्थना और उपवास बिना और किसी उपायसे निकाले नहीं जा सकते हैं।

[यीशुका इस बातकी चर्चा करना कि स्वर्गके राज्यमें प्रधान कौन है।]

मत्ती १८। १—१४।

(३०) वे वहांसे निकलके गालीलमें होके गये और वह नहीं चाहता था कि कोई जाने। (३१) क्योंकि उसने अपने शिष्योंको उपदेश दे उनसे कहा मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके हाथमें पकड़वाया जायगा और वे उसको मार डालेंगे और वह मरके तीसरे दिन जी उठेगा। (३२) परन्तु उन्होंने यह बात नहीं समझी और उससे पूछनेको डरते थे।

(३३) वह कफर्नाहूममें आया और घरमें पहुंचके शिष्योंसे पूछा मार्गमें तुम आपसमें किस बातका बिचार करते थे। (३४) वे चुप रहे क्योंकि मार्गमें उन्होंने आपसमें इसीका बिचार

किया था कि हममेंसे बड़ा कौन है । (३५) तब उसने बैठके बारह शिष्योंको बुलाके उनसे कहा यदि कोई प्रधान हुआ चाहे तो सभोंसे छोटा और सभोंका सेवक होगा। (३६) और उसने एक बालकको लेके उनके बीचमें खड़ा किया और उसे गोदीमें ले उनसे कहा . (३७) जो कोई मेरे नामसे ऐसे बालकोंमेंसे एकको ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करे वह मुझे नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारेको ग्रहण करता है ।

[दूसरे उपदेशकको बर्जनेका और ठोकर खानेका निषेध ।]

लूक ९ । ४९, ५० ।

(३८) तब योहनने उसको उत्तर दिया कि हे गुरु हमने किसी मनुष्यको जो हमारे पीछे नहीं आता है आपके नामसे भूतोंको निकालते देखा और हमने उसे बर्जा क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं आता है । (३९) यीशुने कहा उसको मत बर्जो क्योंकि कोई नहीं है जो मेरे नामसे आश्चर्य्य कर्म्म करेगा और शीघ्र मेरी निन्दा कर सकेगा। (४०) जो हमारे विरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है । (४१) जो कोई मेरे नामसे एक कटोरा पानी तुमको इसलिये पिलावे कि ख्रीष्टके हो मैं तुमसे सच कहता हूं वह किसी रीतिसे अपना फल न खोवेगा । (४२) परन्तु जो कोई उन छोटोंमेंसे जो मुझपर विश्वास करते हैं एकको ठोकर खिलावे उसके लिये भला होता कि चक्कीका पाट उसके गलेमें बांधा जाता और वह समुद्रमें डाला जाता। (४३) जो तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल . टुंडा होके जीवनमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए तू नरकमें अर्थात न बुझनेहारी आगमें जाय . (४४) जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती । (४५) और जो तेरा पांव तुझे

ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल . लंगड़ा होके जीवनमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो पांव रहते हुए तू नरकमें अर्थात न बुझनेहारी आगमें डाला जाय . (४६) जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। (४७) और जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकाल डाल . काना होके ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरककी आगमें डाला जाय . (४८) जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझता । (४९) क्योंकि हर एक जन आगसे लोणा किया जायगा और हर एक बलि लोणसे लोणा किया जायगा । (५०) लोण अच्छा है परन्तु यदि लोण अलोणा हो जाय तो किससे उसको स्वादित करोगे . अपनेमें लोण रखो और आपसमें मिले रहो।

[पत्नीको त्यागनेका निषेध ।

मत्ती १९ । १—१२ ।

१० यीशु वहांसे उठके यर्दनके उस पारसे देके यिहूदिया के सिवानोंमें आया और बहुत लोग फिर उस पास एकट्ठे आये और उसने अपनी रीतिपर उन्होंको फिर उपदेश दिया। (२) तब फरीशियोंने उस पास आ उसकी परीक्षा करनेको उससे पूछा क्या अपनी स्त्रीको त्यागना मनुष्यको उचित है कि नहीं। (३) उसने उनको उत्तर दिया कि मूसाने तुमको क्या आज्ञा दिई । (४) उन्होंने कहा मूसाने त्यागपत्र लिखने और स्त्रीको त्यागने दिया। (५) यीशुने उन्हें उत्तर दिया कि तुम्हारे मनकी कठोरताके कारण उसने यह आज्ञा तुमको लिख दिई। (६) परन्तु सृष्टिके आरंभसे ईश्वरने नर और नारी करके मनुष्योंको उत्पन्न किया । (७) इस हेतुसे मनुष्य अपने माता पिताको छोड़के अपनी स्त्रीसे मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे । (८) सो वे आगे दो नहीं पर एक तन हैं । (९) इस

लिये जो कुछ ईश्वरने जोड़ा है उसको मनुष्य अलग न करे। (१०) घरमें उसके शिष्योंने फिर इस बातके विषयमें उससे पूछा। (११) उसने उनसे कहा जो कोई अपनी स्त्रीको त्याग के दूसरीसे बिवाह करे सो उसके बिरुद्ध परस्त्रीगमन करता है। (१२) और यदि स्त्री अपने स्वामीको त्यागके दूसरेसे बिवाह करे तो वह व्यभिचार करती है।

[यीशुका बालकोंको आशीष देना।]

मत्ती १९ : १३—१५।

(१३) तब लोग कितने बालकोंको यीशु पास लाये कि वह उन्हें छूवे परन्तु शिष्योंने लानेहारोंको डांटा। (१४) यीशुने यह देखके अप्रसन्न हो उनसे कहा बालकोंको मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि ईश्वरका राज्य ऐसोंका है। (१५) मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वरके राज्यको बालककी नाईं ग्रहण न करे वह उसमें प्रवेश करने न पावेगा। (१६) तब उसने उन्हें गोदीमें लेके उनपर हाथ रखके उन्हें आशीस दिई।

[एक धनवान जवानसे यीशुकी बातचीत।]

मत्ती १९ : १६—३०।

(१७) जब वह मार्गमें जाता था तब एक मनुष्य उसकी ओर दौड़ा और उसके आगे घुटने टेकके उससे पूछा हे उत्तम गुरु अनन्त जीवनका अधिकारी होनेको मैं क्या करूं। (१८) यीशुने उससे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है . कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर। (१९) तू आज्ञाओंको जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे ठगाई मत कर अपने माता पिताका आदर कर। (२०) उसने उसको उत्तर दिया कि हे गुरु इन सभोंको मैंने अपने लड़कपनसे पालन किया है। (२१) यीशुने उसपर

दृष्टि कर उसे प्यार किया और उससे कहा तुझे एक बातकी घटी है. जा जो कुछ तेरा है सो बेचके कंगालोंको दे और तू स्वर्गमें धन पावेगा और आ क्रूश उठाके मेरे पीछे हो ले। (२२) वह इस बातसे अप्रसन्न हो उदास चला गया क्योंकि उसको बहुत धन था।

(२३) यीशुने चारों ओर दृष्टि कर अपने शिष्योंसे कहा धनवानोंको ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसा कठिन होगा। (२४) शिष्य लोग उसकी बातोंसे अचंभित हुए परन्तु यीशुने फिर उनको उत्तर दिया कि हे बालको जो धनपर भरोसा रखते हैं उन्होंको ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसा कठिन है। (२५) ईश्वरके राज्यमें धनवानके प्रवेश करनेसे ऊंटका सूईके नाकेमेंसे जाना सहज है। (२६) वे अत्यन्त अचंभित हो आपसमें बोले तब तो किसका त्राण हो सकता है। (२७) यीशुने उनपर दृष्टि कर कहा मनुष्योंसे यह अनहोना है परन्तु ईश्वरसे नहीं क्योंकि ईश्वरसे सब कुछ हो सकता है।

(२८) पितर उससे कहने लगा कि देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आपके पीछे हो लिये हैं। (२९) यीशुने उत्तर दिया मैं तुमसे सच कहता हूं कि जिसने मेरे और सुसमाचारके लिये घर वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा लड़कों वा भूमिको त्यागा हो. (३०) ऐसा कोई नहीं है जो अब इस समयमें उपद्रव सहित सौ गुणे घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़कों और भूमिको और परलोकमें अनन्त जीवन न पावेगा। (३१) परन्तु बहुतेरे जो अगले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं अगले होंगे।

[यीशुका दो शिष्योंकी बिन्तीका उत्तर देना।]

मत्ती २०। १७—२८।

(३२) वे यिरूशलीमको जाते हुए मार्गमें थे और यीशु उन

के आगे आगे चलता था और वे अचंभित हुए और उसके पीछे चलते हुए डरते थे और वह फिर बारह शिष्योंको लेके जो कुछ उसपर होन्हार था सो उनसे कहने लगा. (३३) कि देखो हम यिरूशलीमको जाते हैं और मनुष्यका पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकोंके हाथ पकड़वाया जायगा और वे उसको बधके योग्य ठहराके अन्यदेशियोंके हाथ सोंपेंगे। (३४) और वे उससे ठट्ठा करेंगे और कोड़े मारेंगे और उसपर थूकेंगे और उसे घात करेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा।

(३५) तब जबदीके पुत्र याकूब और योहनने योशु पास आ कहा हे गुरु हम चाहते हैं कि जो कुछ हम मांगें सो आप हमारे लिये करें। (३६) उसने उनसे कहा तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं। (३७) वे उससे बोले हमें यह दीजिये कि आपके ऐश्वर्य्यमें हममेंसे एक आपकी दहिनी ओर और दूसरा आपकी बाईं ओर बैठे। (३८) योशुने उनसे कहा तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो. जिस कटोरेसे मैं पीता हूं क्या तुम उससे पी सकते हो और जो बपतिसमा मैं लेता हूं क्या तुम उसे ले सकते हो। (३९) उन्होंने उससे कहा हम सकते हैं. योशुने उनसे कहा जिस कटोरेसे मैं पीता हूं उससे तुम तो पीओगे और जो बपतिसमा मैं लेता हूं उसे लेओगे। (४०) परन्तु जिन्होंके लिये तैयार किया गया है उन्हें छोड़ और किसीको अपनी दहिनी और अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है।

(४१) यह सुनके दसों शिष्य याकूब और योहनपर रिसियाने लगे। (४२) योशुने उनको अपने पास बुलाके उनसे कहा तुम जानते हो कि जो अन्यदेशियोंके अध्यक्ष समझे जाते सो उन्होंपर प्रभुता करते हैं और उनमेंके बड़े लोग उन्होंपर अधिकार रखते हैं। (४३) परन्तु तुम्होंमें ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्होंमें

बड़ा हुआ चाहे सो तुम्हारा सेवक होगा। (४४) और जो कोई तुम्हारा प्रधान हुआ चाहे सो सभोंका दास होगा। (४५) क्योंकि मनुष्यका पुत्र भी सेवा करवानेको नहीं परन्तु सेवा करनेको और बहुतोंके उद्धारके दाममें अपना प्राण देनेको आया है।

[यीशुका एक अन्धेके नेत्र खोलना।]

मत्ती २० : २९—३४।

(४६) वे यिरीहो नगरमें आये और जब वह और उसके शिष्य और बहुत लोग यिरीहोसे निकलते थे तब तीमईका पुत्र बर्तीमई एक अंधा मनुष्य मार्गकी ओर बैठा भीख मांगता था। (४७) वह यह सुनके कि यीशु नासरी है पुकारने और कहने लगा कि हे दाऊदके सन्तान यीशु मुझपर दया कीजिये। (४८) बहुत लोगोंने उसे डांटा कि वह चुप रहे परन्तु उसने बहुत अधिक पुकारा हे दाऊद के सन्तान मुझपर दया कीजिये। (४९) तब यीशु खड़ा रहा और उसे बुलानेको कहा और लोगोंने उस अंधेको बुलाके उससे कहा ढाढ़स कर उठ वह तुझे बुलाता है। (५०) वह अपना कपड़ा फेंकके उठा और यीशु पास आया। (५१) इसपर यीशुने उससे कहा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं. अंधा उससे बोला हे गुरु मैं अपनी दृष्टि पाऊं। (५२) यीशुने उससे कहा चला जा तेरे बिश्वासने तुझे चंगा किया है. और वह तुरन्त देखने लगा और मार्गमें यीशुके पीछे हो लिया।

[यीशुका यिरूशलीममें जाना।]

मत्ती २१ : १—११।

११ जब वे यिरूशलीमके निकट अर्थात जैतून पर्ब्बतके समीप बैतफगी और बैथनिया गांवों पास पहुंचे तब उसने अपने शिष्योंमेंसे दोको यह कहके भेजा. (२) कि जो

गांव तुम्हारे सन्मुख है उसमें जाओ और उसमें प्रवेश करतेहो तुम एक गदहोके बच्चेको जिसपर कभी कोई मनुष्य नहीं चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खोलके लाओ। (३) जो तुमसे कोई कहे तुम यह क्यों करते हो तो कहो कि प्रभुको इसका प्रयोजन है तब वह उसे तुरन्त यहां भेजेगा। (४) उन्होंने जाके उस बच्चेको दो बाटोंके सिरेपर द्वारके पास बाहर बंधे हुए पाया और उसको खोलने लगे। (५) तब जो लोग वहां खड़े थे उनमेंसे कितनोंने उनसे कहा तुम क्या करते हो कि बच्चे को खोलते हो। (६) उन्होंने जैसा यीशुने आज्ञा किई वैसा उन से कहा तब उन्होंने उन्हे जाने दिया। (७) और उन्होंने बच्चे को यीशु पास लाके उसपर अपने कपड़े डाले और वह उसपर बैठा। (८) और बहुत लोगोंने अपने अपने कपड़े मार्गमें बिछाये और औरोंने वृक्षोंसे डालियां काटके मार्गमें बिछाईं। (९) और जो लोग आगे पीछे चलते थे उन्होंने पुकारके कहा जय जय धन्य वह जो परमेश्वरके नामसे आता है। (१०) धन्य हमारे पिता दाऊदका राज्य जो परमेश्वरके नामसे आता है. सबसे ऊंचे स्थानमें जयजयकार होवे। (११) यीशुने यिरूशलीममें आ मन्दिरमें प्रवेश किया और जब उसने चारों ओर सब वस्तुओंपर दृष्टि किई और संध्याकाल आ चुका तब वह बारह शिष्योंके संग बैथनियाको निकल गया।

[यीशुका गूलरके वृक्षको स्राप देना और व्यापारियोंको मन्दिरसे निकालना।]

मत्ती २१। १२—२२।

(१२) दूसरे दिन जब वे बैथनियासे निकलते थे तब उसको भूख लगी। (१३) और वह पत्ते लगे हुए एक गूलरका वृक्ष दूरसे देखके आया कि क्या जाने उसमें कुछ पावे परन्तु उस पास आके और कुछ न पाया केवल पत्ते. गूलरके पकनेका समय न नहीं था। (१४) इसपर यीशुने उस वृक्षको कहा कोई

मनुष्य फिर कभी तुझसे फल न खावे . और उसके शिष्योंने यह बात सुनी ।

(१५) वे यिरूशलोममें आये और योशु मन्दिरमें जाके जो लोग मन्दिरमें बेचते औ मोल लेते थे उन्हें निकालने लगा और सर्राफोंके पीढ़ोंको और कपोतोंके बेचनेहारोंकी चौकियोंको उलट दिया . (१६) और किसीको मन्दिरके बीचसे कोई पात्र ले जाने न दिया । (१७) और उसने उपदेश कर उनसे कहा क्या नहीं लिखा है कि मेरा घर सब देशोंके लोगोंके लिये प्रार्थनाका घर कहावेगा . परन्तु तुमने उसे डाकूओंका खोह बनाया है । (१८) यह सुनके अध्यापकों और प्रधान याजकों ने खोज किया कि उसे किस रीतिसे नाश करें क्योंकि वे उससे डरते थे इसलिये कि सब लोग उसके उपदेशसे अचंभित होते थे । (१९) जब सांझ हुई तब वह नगरसे बाहर निकला ।

(२०) भोरको जब वे उधरसे जाते थे तब उन्होंने वह गूलरका वृक्ष जड़से सूखा हुआ देखा । (२१) पितरने स्मरण कर योशुसे कहा हे गुरु देखिये यह गूलरका वृक्ष जिसे आपने स्राप दिया सूख गया है । (२२) योशुने उनको उत्तर दिया कि ईश्वरपर बिश्वास रखो । (२३) क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं जो कोई इस पहाड़से कहे कि उठ समुद्रमें गिर पड़ और अपने मनमें सन्देह न रखे परन्तु बिश्वास करे कि जो मैं कहता हूं सो हो जायगा उसके लिये जो कुछ वह कहेगा सो हो जायगा । (२४) इस लिये मैं तुमसे कहता हूं जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो बिश्वास करो कि हम पावेंगे तो तुम्हें मिलेगा । (२५) और जब तुम प्रार्थना करनेको खड़े हो तब यदि तुम्हारे मनमें किसीको ओर कुछ होय तो क्षमा करो इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गबासी पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे । (२६) परन्तु जो तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा स्वर्गबासी पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा ।

[यीशुका प्रधान याजकोंको निरुत्तर करना ।]

मत्ती २१ । २३—२७ ।

(२७) वे फिर यिरूशलीममें आये और जब यीशु मन्दिरमें फिरता था तब प्रधान याजक और अध्यापक और प्राचीन लोग उस पास आये . (२८) और उससे बोले तुझे ये काम करनेका कैसा अधिकार है और ये काम करनेको किसने तुझको यह अधिकार दिया । (२९) यीशुने उनको उत्तर दिया कि मैं भी तुमसे एक बात पूछूंगा . तुम मुझे उत्तर देओ तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करनेका कैसा अधिकार है । (३०) योहन का बपतिसमा देना क्या स्वर्गकी अथवा मनुष्योंकी ओरसे हुआ मुझे उत्तर देओ । (३१) तब वे आपसमें विचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्गकी ओरसे तो वह कहेगा फिर तुमने उसका विश्वास क्यों नहीं किया । (३२) परन्तु जो हम कहें मनुष्यों की ओरसे . तब उन्हें लोगोंका डर लगा क्योंकि सब लोग योहनको जानते थे कि निश्चय वह भविष्यद्वक्ता था । (३३) सो उन्होंने यीशुको उत्तर दिया कि हम नहीं जानते . यीशुने उन्हें उत्तर दिया तो मैं भी तुमको नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है ।

[दुष्ट मालियोंका दृष्टान्त ।]

मत्ती २१ । ३३—४६ ।

१२ यीशु दृष्टान्तोंमें उनसे कहने लगा कि किसी मनुष्यने दाखकी बारी लगाई और चहुं ओर बेड़ दिया और रसका कुंड खोदा और गढ़ बनाया और मालियोंको उसका ठीका दे परदेशको चला गया । (२) समयमें उसने मालियोंके पास एक दासको भेजा कि मालियोंसे दाखकी बारीका कुछ फल लेवे । (३) परन्तु उन्होंने उसे लेके मारा और छूछे हाथ फेर दिया । (४) फिर उसने दूसरे दासको उनके पास भेजा

और उन्होंने उसी पत्थरवाह कर उसका सिर फोड़ा और उसे अपमान करके फेर दिया। (५) फिर उसने तीसरेको भेजा और उन्होंने उसे मार डाला और बहुत औरोंसे उन्होंने वैसाही किया कितनोंको मारा और कितनोंको घात किया। (६) फिर उसको एकही पुत्र था जो उसका प्रिय था सो सबके पीछे उसने यह कहके उसे भी उनके पास भेजा कि वे मेरे पुत्रका आदर करेंगे। (७) परन्तु उन मालियोंने आपसमें कहा. यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें तब अधिकार हमारा होगा। (८) और उन्होंने उसे लेके मार डाला और दाखकी बारीके बाहर फेंक दिया। (९) इसलिये दाखकी बारीका स्वामी क्या करेगा. वह आके उन मालियोंको नाश करेगा और दाखकी बारी दूसरोंके हाथ देगा। (१०) क्या तुमने धर्म्मपुस्तकका यह बचन नहीं पढ़ा है कि जिस पत्थरको थवइयोंने निकम्मा जाना वही कोनेका सिरा हुआ है. (११) यह परमेश्वरका कार्य्य है और हमारी दृष्टिमें अद्भुत है। (१२) तब उन्होंने उसे पकड़ने चाहा क्योंकि जानते थे कि उसने हमारे बिरुद्ध यह दृष्टान्त कहा परन्तु वे लोगोंसे डरे और उसे छोड़के चले गये।

[यीशुका कर देनेके विषयमें फरीशियोंको निरुत्तर करना।]

मत्ती २२ : १५—२२।

(१३) तब उन्होंने उसे बातमें फंसानेको कई एक फरीशियों और हेरोदियोंको उस पास भेजा। (१४) वे आके उससे बोले हे गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और किसीका खटका नहीं रखते हैं क्योंकि आप मनुष्योंका मुंह देखके बात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वरका मार्ग सत्यतासे बताते हैं. क्या कैसरको कर देना उचित है अथवा नहीं. हम देवें अथवा न देवें। (१५) उसने उनका कपट जानके उनसे कहा मेरी

परीक्षा क्यों करते हो . एक सूकी मेरे पास लाओ कि मैं देखूं । (१६) वे लाये और उसने उनसे कहा यह मूर्त्ति और छाप किसकी है . वे उससे बोले कैसरकी । (१७) यीशुने उनको उत्तर दिया कि जो कैसरका है सो कैसरको देओ और जो ईश्वरका है सो ईश्वरको देओ . तब वे उससे अचंभित हुए ।

[यीशुका जी उठनेके विषयमें सदूकियोंको निरुत्तर करना ।]

मत्ती २२ । २३—३३ ।

(१८) सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकोंका जी उठना नहीं होगा उस पास आये और उससे पूछा . (१९) कि हे गुरु मूसाने हमारे लिये लिखा कि यदि किसीका भाई मर जाय और स्त्रीको छोड़े और उसको सन्तान न हो तो उसका भाई उसकी स्त्रीसे बिवाह करे और अपने भाईके लिये वंश खड़ा करे । (२०) सो सात भाई थे . पहिला भाई बिवाह कर निःसन्तान मर गया । (२१) तब दूसरे भाईने उस स्त्रीसे विवाह किया और मर गया और उसको भी सन्तान न हुआ . और वैसेही तीसरेने भी । (२२) सातोंने उससे बिवाह किया पर किसीको सन्तान न हुआ . सबके पीछे स्त्री भी मर गई । (२३) सो मृतकोंके जी उठनेपर जब वे सब उठेंगे तब वह उनमेंसे किसकी स्त्री होगी क्योंकि सातोंने उससे बिवाह किया । (२४) यीशुने उनको उत्तर दिया क्या तुम इसी कारण भूलमें न पड़े हो कि धर्म्मपुस्तक और ईश्वरकी शक्ति नहीं बूझते हो । (२५) क्योंकि जब वे मृतकोंमेंसे जी उठें तब न बिवाह करते न बिवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्गमें दूतोंके समान हैं । (२६) मृतकोंके जी उठनेके विषयमें क्या तुमने मूसाके पुस्तकमें झाड़ीकी कथामें नहीं पढ़ा है कि ईश्वरने उससे कहा मैं इब्राहीमका ईश्वर और इसहाकका ईश्वर

और याकूबका ईश्वर हूं । (२७) ईश्वर मृतकोंका नहीं परन्तु जीवतोंका ईश्वर है सो तुम बड़ी भूलमें पड़े हो ।

[यीशुका श्रेष्ठ आज्ञाके विषयमें अध्यापकोंको उत्तर देना ।]

मत्ती २२ : ३४—४० ।

(२८) अध्यापकोंमेंसे एकने आ उन्हें बिबाद करते सुना और यह जानके कि यीशुने उन्हें अच्छी रीतिसे उत्तर दिया उससे पूछा सबसे बड़ी आज्ञा कौन है । (२९) यीशुने उसे उत्तर दिया सब आज्ञाओंमेंसे यही बड़ी है कि हे इस्रायेल सुनो परमेश्वर हमारा ईश्वर एकही परमेश्वर है । (३०) और तू परमेश्वर अपने ईश्वरको अपने सारे मनसे और अपने सारे प्राणसे और अपनी सारी बुद्धिसे और अपनी सारी शक्तिसे प्रेम कर. यही सबसे बड़ी आज्ञा है । (३१) और दूसरी उसके समान है सो यह है कि तू अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर . इनसे और कोई आज्ञा बड़ी नहीं । (३२) उस अध्यापकने उससे कहा अच्छा हे गुरु आपने सत्य कहा है कि एकही ईश्वर है और उसे छोड़ कोई दूसरा नहीं है । (३३) और उसको सारे मनसे और सारी बुद्धिसे और सारे प्राणसे और सारी शक्तिसे प्रेम करना और पड़ोसीको अपने समान प्रेम करना सारे होमोंसे और बलिदानोंसे अधिक है । (३४) जब यीशुने देखा कि उसने बुद्धिसे उत्तर दिया था तब उससे कहा तू ईश्वरके राज्यसे दूर नहीं है . और किसीको फिर उससे कुछ पूछनेका साहस न हुआ ।

[यीशुका अपनी पदवीके विषयमें अध्यापकोंको निरुत्तर करना ।]

मत्ती २२ : ४१—४६ ।

(३५) इसपर यीशुने मन्दिरमें उपदेश करते हुए कहा अध्यापक लोग क्योंकर कहते हैं कि ख्रीष्ट दाऊदका पुत्र है । (३६) दाऊद आपही पवित्र आत्माकी शिक्षासे बोला कि

परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा जबलों मैं तेरे शत्रुओंको तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी दहिनी ओर बैठ। (३७) दाऊद तो आपही उसे प्रभु कहता है फिर वह उसका पुत्र कहांसे है . भीड़के अधिक लोग प्रसन्नतासे उसकी सुनते थे।

[यीशुका अध्यापकोंके दोष प्रगट करना।]

मत्ती २४ : ६।

(३८) उसने अपने उपदेशमें उनसे कहा अध्यापकोंसे चौकस रहो जो लंबे वस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं . (३९) और बाजारोंमें नमस्कार और सभाके घरोंमें ऊंचे आसन और जेवनारोंमें ऊंचे स्थान भी चाहते हैं। (४०) वे बिधवाओंके घर खा जाते हैं और बहानाके लिये बड़ी बेरलों प्रार्थना करते हैं . वे अधिक दंड पावेंगे।

[यीशुका एक बिधवाके दानकी प्रशंसा करना।]

लूक २१ : १—४।

(४१) यीशु भंडारके साम्हने बैठके देखता था कि लोग क्योंकर भंडारमें रोकड़ डालते हैं और बहुत धनवानोंने बहुत कुछ डाला। (४२) और एक कंगाल बिधवाने आके दो छदाम अर्थात आध पैसा डाला। (४३) तब उसने अपने शिष्योंको अपने पास बुलाके उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि जिन्होंने भंडारमें डाला है उन सभोंसे इस कंगाल बिधवाने अधिक डाला है। (४४) क्योंकि सभोंने अपनी बढ़तीमेंसे कुछ कुछ डाला है परन्तु इसने अपनी घटतीमेंसे जो कुछ उसका था अर्थात अपनी सारी जीविका डाली है।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. १-दुःखोंका आरंभ।]

मत्ती २४ : १—१४।

१३ जब यीशु मन्दिरमेंसे निकलता था तब उसके शिष्योंमेंसे एकने उससे कहा हे गुरु देखिये कैसे पत्थर और कैसी रचना है। (२) यीशुने उसे उत्तर दिया क्या तू यह बड़ी

बड़ी रचना देखता है . पत्थरपर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जाय ।

(३) जब वह जैतून पर्ब्बतपर मन्दिरके साम्ने बैठा था तब पितर और याकूब और योहन और अन्द्रियने निरालेमें उस से पूछा . (४) कि हमोंसे कहिये यह कब होगा और यह सब बातें जिस समयमें पूरी होंगों उस समयका क्या चिन्ह होगा । (५) यीशु उन्हें उत्तर दे कहने लगा चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमावे । (६) क्योंकि बहुत लोग मेरे नामसे आके कहेंगे मैं वही हूं और बहुतोंको भरमावेंगे । (७) जब तुम लड़ाइयां और लड़ाइयोंकी चर्चा सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इनका होना अवश्य है परन्तु अन्त उस समयमें नहीं होगा । (८) क्योंकि देश देशके और राज्य राज्यके बिरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानोंमें भुईंडोल होंगे और अकाल और हुल्लड़ होंगे . यह तो दुःखोंका आरंभ होगा ।

(९) तुम अपने विषयमें चौकस रहो क्योंकि लोग तुम्हें पंचायतोंमें सोंपेंगे और तुम सभाओंमें मारे जाओगे और मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओंके आगे उनपर साक्षी होनेके लिये खड़े किये जाओगे । (१०) परन्तु अवश्य है कि पहिले सुसमाचार सब देशोंके लोगोंमें सुनाया जाय । (११) जब वे तुम्हें ले जाके सोंप देवें तब क्या कहोगे इसकी चिन्ता आगेसे मत करो और न सोच करो परन्तु जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी दिया जाय सोई कहो क्योंकि तुम नहीं परन्तु पवित्र आत्मा बोलनेहारा होगा । (१२) भाई भाईको और पिता पुत्रको बध किये जानेको सोंपेंगे और लड़के माता पिताके बिरुद्ध उठके उन्हें घात करवावेंगे । (१३) और मेरे नामके कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे पर जो अन्तलों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा ।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. २-महाक्लेश ।]

मत्ती २४ : १५—२८ ।

(१४) जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित बस्तुको जिसकी बात दानियेल भविष्यद्वक्ताने कही जहां उचित नहीं तहां खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे) तब जो यिहूदियामें हों सो पहाड़ोंपर भागें । (१५) जो कोठेपर हो सो न घरमें उतरे और न अपने घरमेंसे कुछ लेनेको उसमें पैठे । (१६) और जो खेतमें हो सो अपना बस्त्र लेनेको पीछे न फिरे । (१७) उन दिनोंमें हाय हाय गर्भवतियां और दूध पिलानेवालियां । (१८) परन्तु प्रार्थना करो कि तुमको जाड़ेमें भागना न होवे । (१९) क्योंकि उन दिनोंमें ऐसा क्लेश होगा जैसा उस सृष्टिके आरंभसे जो ईश्वरने सृजी अब तक न हुआ और कभी न होगा । (२०) यदि परमेश्वर उन दिनोंको न घटाता तो कोई प्राणी न बचता परन्तु उन चुने हुए लोगोंके कारण जिनको उसने चुना है उसने उन दिनोंको घटाया है ।

(२१) तब यदि कोई तुमसे कहे देखो खीष्ट यहां है अथवा देखो वहां है तो प्रतीति मत करो । (२२) क्योंकि झूठे खीष्ट और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके चिन्ह और अद्भुत काम दिखावेंगे इसलिये कि जो हो सके तो चुने हुए लोगोंको भी भरमावें । (२३) पर तुम चौकस रहो देखो मैंने आगेसे तुम्हें सब बातें कह दिई हैं ।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. ३-मनुष्यके पुत्रका फिर आना ।]

मत्ती २४ : २९—३५ ।

(२४) उन दिनोंमें उस क्लेशके पीछे सूर्य्य अंधियारा हो जायगा और चांद अपनी ज्योति न देगा । (२५) आकाशके तारे गिर पड़ेंगे और आकाशमेंकी सेना डिग जायगी । (२६) तब लोग मनुष्यके पुत्रको बड़े पराक्रम और ऐश्वर्य्यसे मेघोंपर आते देखेंगे । (२७) और तब वह अपने दूतोंको भेजेगा और

पृथिवीके इस सिवानेसे आकाशके उस सिवानेतक चहुं दिशासे अपने चुने हुए लोगोंको एकट्ठे करेगा।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. ४-गूलरके वृक्षका दृष्टान्त और सचेत रहनेका उपदेश।]

(२८) गूलरके वृक्षसे दृष्टान्त सीखो. जब उसकी डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम जानते हो कि धूपकाला निकट है। (२९) इस रीतिसे जब तुम यह बातें होते देखो तब जानो कि वह निकट है हां द्वारपर है। (३०) मैं तुमसे सच कहता हूं कि जबलों यह सब बातें पूरी न हो जायें तबलों इस समयके लोग नहीं जाते रहेंगे। (३१) आकाश और पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं।

(३२) उस दिन और उस घड़ीके विषयमें न कोई मनुष्य जानता है न स्वर्गबासी दूतगण और न पुत्र परन्तु केवल पिता। (३३) देखो जागते रहो और प्रार्थना करो क्योंकि तुम नहीं जानते हो वह समय कब होगा। (३४) वह ऐसा है जैसे परदेश जानेवाले एक मनुष्यने अपना घर छोड़ा और अपने दासोंको अधिकार और हर एकको उसका काम दिया और द्वारपालको जागते रहनेकी आज्ञा दिई। (३५) इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो घरका स्वामी कब आवेगा सांझको अथवा आधी रातको अथवा मुर्ग बोलनेके समयमें अथवा भोरको। (३६) ऐसा न हो कि वह अचांचक आके तुम्हें सोते पावे। (३७) और जो मैं तुमसे कहता हूं सो सभोंसे कहता हूं जागते रहो।

[यीशुको वध करनेका परामर्श।]

मत्ती २६ : १—५।

१४ निस्तार पर्ब्ब और अखमीरी रोटीका पर्ब्ब दो दिनके पीछे होनेवाला था और प्रधान याजक और अध्यापक लोग खोज करते थे कि यीशुको क्योंकर छलसे पकड़के

मार डालें । (२) परन्तु उन्होंने कहा पर्ब्बमें नहीं न हो कि लोगोंका हुल्लड़ होवे ।

[बैथनियामें एक स्त्रीका यीशुके सिरपर सुगन्ध तेल ढालना ।]

मत्ती २६ : ६—१३ ।

(३) जब वह बैथनियामें शिमोन कोढ़ीके घरमें था और भोजनपर बैठा तब एक स्त्री उजले पत्थरके पात्रमें जटामांसीका बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके आई और पात्र तोड़के उसके सिरपर ढाला । (४) कोई कोई अपने मनमें रिसियाते थे और बोले सुगन्ध तेलका यह क्षय क्यों हुआ । (५) क्योंकि वह तीन सौ सूकियोंसे अधिक दाममें बिक सकता और कंगालोंको दिया जा सकता . और वे उस स्त्रीपर कुड़कुड़ाये । (६) यीशुने कहा उसको रहने दो क्यों उसको दुःख देते हो . उसने अच्छा काम मुझसे किया है । (७) कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं और तुम जब चाहो तब उनसे भलाई कर सकते हो परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा । (८) जो कुछ वह कर सकी सो किया है . उसने मेरे गाड़े जानेके लिये आगेसे मेरे देहपर सुगन्ध तेल लगाया है । (९) मैं तुमसे सत्य कहता हूं सारे जगतमें जहां कहीं यह सुसमाचार सुनाया जाय तहां यह भी जो इसने किया है उसके स्मरणके लिये कहा जायगा ।

[यिहूदा इस्करियोतीका प्रधान याजकोंके हाथसे यीशुके पकड़वानेका दाम लेना ।]

मत्ती २६ : १४—१६ ।

(१०) तब यिहूदा इस्करियोती जो बारह शिष्योंमेंसे एक था प्रधान याजकोंके पास गया इसलिये कि यीशुको उन्होंके हाथ पकड़वाय । (११) वे यह सुनके आनन्दित हुए और उसको रुपैये देनेकी प्रतिज्ञा किई और वह खोज करने लगा कि उसे क्योंकर अवसर पाके पकड़वाय ।

[यीशुका शिष्योंके संग निस्तार पर्ब्बका भोजन करना और प्रभुभोजको निरूपण करना।]
मत्ती २६ : १७—३०।

(१२) अखमीरी रोटीके पर्ब्बके पहिले दिन जिसमें वे निस्तार पर्ब्बका मेम्ना मरते थे यीशुके शिष्य लोग उससे बोले आप कहां चाहते हैं कि हम जाके तैयार करें कि आप निस्तार पर्ब्बका भोजन खावें। (१३) उसने अपने शिष्योंमेंसे दोको यह कहके भेजा कि नगरमें जाओ और एक मनुष्य जलका घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा उसके पीछे हो लेओ। (१४) जिस घरमें वह पैठे उस घरके स्वामीसे कहो गुरु कहता है कि पाहुनशाला कहां है जिसमें मैं अपने शिष्योंके संग निस्तार पर्ब्बका भोजन खाऊं। (१५) वह तुम्हें एक सजी हुई और तैयार किई हुई बड़ी उपरौठो कोठरी दिखावेगा वहां हमारे लिये तैयार करो। (१६) तब उसके शिष्य लोग चले और नगरमें आके जैसा उसने उन्होंसे कहा तैसा पाया और निस्तार पर्ब्बका भोजन बनाया।

(१७) सांझको यीशु बारह शिष्योंके संग आया। (१८) जब वे भोजनपर बैठके खाते थे तब यीशुने कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुममेंसे एक जो मेरे संग खाता है मुझे पकड़वायगा। (१९) इसपर वे उदास होने और एक एक करके उससे कहने लगे वह क्या मैं हूं और दूसरेने कहा क्या मैं हूं। (२०) उसने उनको उत्तर दिया कि बारहोंमेंसे एक जो मेरे संग थालीमें हाथ डालता है सोई है। (२१) मनुष्यका पुत्र जैसा उसके विषयमें लिखा है वैसाही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिससे मनुष्यका पुत्र पकड़वाया जाता है . जो उस मनुष्यका जन्म न होता तो उसके लिये भला होता।

(२२) जब वे खाते थे तब यीशुने रोटी लेके धन्यबाद किया और उसे तोड़के उनको दिया और कहा लेओ खाओ यह

मेरा देह है। (२३) और उसने कटोरा ले धन्य मानके उन्हें दिया और सभोंने उससे पीया। (२४) और उसने उनसे कहा यह मेरा लोहू अर्थात नये नियमका लोहू है जो बहुतोंके लिये बहाया जाता है। (२५) मैं तुमसे सच कहता हूं कि जिस दिनलों मैं ईश्वरके राज्यमें उसे नया न पीऊं उस दिनलों मैं दाख रस फिर कभी न पीऊंगा। (२६) और वे भजन गाके जैतून पर्ब्बतपर गये।

[पितरके योशुसे मुकर जानेको भविष्यद्वाणी।
मत्ती २६ । ३१—३५ ।

(२७) तब योशुने उनसे कहा तुम सब इसी रात मेरे विषय में ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरियेको मारूंगा और भेड़ें तितर बितर हो जायेंगीं। (२८) परन्तु मैं अपने जी उठनेके पीछे तुम्हारे आगे गालीलको जाऊंगा। (२९) पितरने उससे कहा यदि सब ठोकर खावें तौभी मैं नहीं ठोकर खाऊंगा। (३०) योशुने उससे कहा मैं तुझे सत्य कहता हूं कि आज इसी रात मुर्गके दो बार बोलनेसे आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा। (३१) उसने और भी दृढ़तासे कहा जो आपके संग मुझे मरना हो तौभी मैं आपसे कभी न मुकरूंगा. सभोंने भी वैसाही कहा।

[बारीमें योशुका महाशोक।]
मत्ती २६ ३६—४६ ।

(३२) वे गेतशिमनी नाम स्थानमें आये और योशुने अपने शिष्योंसे कहा जबलों मैं प्रार्थना करूं तबलों तुम यहां बैठो। (३३) और वह पितर और याकूब और योहनको अपने संग ले गया और व्याकुल और बहुत उदास होने लगा। (३४) और उसने उनसे कहा मेरा मन यहांलों अति उदास है कि मैं मरनेपर हूं. तुम यहां ठहरो और जागते रहो। (३५) और

थोड़ा आगे बढ़के वह भूमिपर गिरा और प्रार्थना किई कि जो हो सके तो वह घड़ी उससे टल जाय। (३६) उसने कहा हे अब्बा हे पिता तुझसे सब कुछ हो सकता है यह कटोरा मेरे पाससे टाल दे तौभी जो मैं चाहता हूं सो न होय पर जो तू चाहता है। (३७) तब उसने आ उन्हें सोते पाया और पितरसे कहा हे शिमोन सो तू सोता है क्या तू एक घड़ी नहीं जाग सका। (३८) जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें न पड़ो . मन तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है। (३९) उसने फिर जाके वही बात कहके प्रार्थना किई। (४०) तब उसने लौटके उन्हें फिर सोते पाया क्योंकि उनकी आंखें नींदसे भरी थीं . और वे नहीं जानते थे कि उसको क्या उत्तर देवें। (४१) और उसने तीसरी बेर आ उनसे कहा सो तुम सोते रहते और बिस्राम करते हो . बहुत है घड़ी आ पहुंची है देखो मनुष्यका पुत्र पापियोंके हाथमें पकड़वाया जाता है। (४२) उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है।

[यीशुका पकड़वाया जाना।]

मत्ती २६ : ४७—५० ।

(४३) वह बोलताही था कि यिहूदा जो बारह शिष्योंमेंसे एक था तुरन्त आ पहुंचा और प्रधान याजकों और अध्यापकों और प्राचीनोंकी ओरसे बहुत लोग खड्ग और लाठियां लिये हुए उसके संग। (४४) यीशुके पकड़वानेहारेने उन्हें यह पता दिया था कि जिसको मैं चूमूं वही है उसको पकड़के यत्नसे ले जाओ। (४५) और वह आया और तुरन्त यीशु पास जाके कहा हे गुरु हे गुरु और उसको चूमा। (४६) तब उन्होंने उसपर अपने हाथ डालके उसे पकड़ा। (४७) जो लोग निकट खड़े थे उनमेंसे एकने खड्ग खींचके महायाजकके दासको

मारा और उसका कान उड़ा दिया। (४८) इसपर यीशुने लोगोंसे कहा क्या तुम मुझे पकड़नेको जैसे डाकूपर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो। (४९) मैं मन्दिरमें उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे संग था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा. परन्तु यह इसलिये है कि धर्म्मपुस्तककी बातें पूरी होवें। (५०) तब सब शिष्य उसे छोड़के भागे।

(५१) और एक जवान जो देहपर चद्दर ओढ़े हुए था उसके पीछे हो लिया और प्यादोंने उसे पकड़ा। (५२) वह चद्दर छोड़के उनसे नंगा भागा।

[यीशुको महायाजकके पास ले जाना और बधके योग्य ठहराके अपमान करना।]

मत्ती २६ : ५७—६८।

(५३) वे यीशुको महायाजकके पास ले गये और सब प्रधान याजक और प्राचीन और अध्यापक लोग उस पास एकट्ठे हुए। (५४) पितर दूर दूर उसके पीछे महायाजकके अंगनेके भीतरलों चला गया और प्यादोंके संग बैठके आग तापने लगा। (५५) प्रधान याजकोंने और न्याइयोंकी सारी सभाने यीशुको घात करवानेके लिये उसपर साक्षी ढूंढ़ी परन्तु न पाई। (५६) क्योंकि बहुतोंने उसपर झूठी साक्षी दिई परन्तु उनकी साक्षी एक समान न थी। (५७) तब कितनोंने खड़े हो उसपर यह झूठी साक्षी दिई. (५८) कि हमोंने इसको कहते सुना कि मैं यह हाथका बनाया हुआ मन्दिर गिराऊंगा और तीन दिनमें दूसरा बिन हाथका बनाया हुआ मन्दिर उठाऊंगा। (५९) पर यूं भी उनकी साक्षी एक समान न थी। (६०) तब महायाजकने बीचमें खड़ा हो यीशुसे पूछा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता है. ये लोग तेरे बिरुद्ध क्या साक्षी देते हैं। (६१) परन्तु वह चुप रहा और कुछ उत्तर न दिया. महायाजकने उससे फिर पूछा और उससे कहा क्या तू उस परम-

धन्यका पुत्र ख्रीष्ट है । (६२) यीशुने कहा मैं हूं और तुम मनुष्य के पुत्रको सर्वशक्तिमानकी दहिनी ओर बैठे और आकाशके मेघोंपर आते देखोगे । (६३) तब महायाजकने अपने बस्त्र फाडके कहा अब हमे साक्षियोंका और क्या प्रयोजन । (६४) ईश्वरकी यह निन्दा तुमने सुनी है तुम्हें क्या समझ पडता है . सभोंने उसको बधके योग्य ठहराया । (६५) तब कोई कोई उसपर थूकने लगे और उसका मुंह ढांपके उसे घूसे मारके उससे कहने लगे कि भविष्यद्वाणी बोल . प्यादोंने भी उसे थपेड़े मारे ।

[पितरका यीशुसे मुकर जाना ।]

मत्ती २६ : ६९—७५ ।

(६६) जब पितर नीचे अंगनेमें था तब महायाजककी दासियोंमेंसे एक आई . (६७) और पितरको आग तापते देखके उसपर दृष्टि करके बोली तू भी यीशु नासरीके संग था । (६८) उसने मुकरके कहा मैं नहीं जानता और नहीं बूझता तू क्या कहती है . तब वह बाहर डेवढ़ीमें गया और मुर्ग बोला । (६९) दासी उसे फिर देखके जो लोग निकट खड़े थे उनसे कहने लगी कि यह उनमेंसे एक है . वह फिर मुकर गया । (७०) फिर थोड़ी बेर पीछे जो लोग निकट खड़े थे उन्होंने पितरसे कहा तू सचमुच उनमेंसे एक है क्योंकि तू गालीली भी है और तेरी बोली वैसीही है । (७१) तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्यको जिसके विषयमें बोलते हो नहीं जानता हूं । (७२) तब मुर्ग दूसरी बार बोला और जो बात यीशुने उससे कही थी कि मुर्गके दो बार बोलनेसे आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा उस बातको पितरने स्मरण किया और सोच करते हुए रोने लगा ।

[पिलातका यीशुको क्रूशपर चढ़ाये जानेको सोंप देना ।]

मत्ती २७ : १, २, ११—३१ ।

१५ भोरको प्रधान याजकोंने प्राचीनों और अध्यापकोंके संग वरन न्याइयोंकी सारी सभाने तुरन्त आपसमें बिचार कर यीशुको बांधा और उसे ले जाके पिलातको सोंप दिया। (२) पिलातने उससे पूछा क्या तू यिहूदियोंका राजा है. उस ने उसको उत्तर दिया कि आपही तो कहते हैं। (३) और प्रधान याजकोंने उसपर बहुतसे दोष लगाये। (४) तब पिलात ने उससे फिर पूछा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता. देख वे तेरे बिरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं। (५) परन्तु यीशुने और कुछ उत्तर नहीं दिया यहांलों कि पिलातने अचंभा किया। (६) उस पर्व्वमें वह एक बन्धुवेको जिसे लोग मांगते थे उन्हों के लिये छोड़ देता था। (७) बरब्बा नाम एक मनुष्य अपने संगी राजद्रोहियोंके साथ जिन्होंने बलवेमें नरहिंसा किई थी बंधा हुआ था। (८) और लोग पुकारके पिलातसे मांगने लगे कि जैसा उन्होंके लिये सदा करता था तैसा करे। (९) पिलातने उनको उत्तर दिया क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यिहूदियोंके राजाको छोड़ देऊं। (१०) क्योंकि वह जानता था कि प्रधान याजकोंने उसको डाहसे पकड़वाया था। (११) परन्तु प्रधान याजकोंने लोगोंको उस्काया इसलिये कि वह बरब्बाहीको उनके लिये छोड़ देवे। (१२) पिलातने उत्तर देके उनसे फिर कहा तुम क्या चाहते हो जिसे तुम यिहूदियोंका राजा कहते हो उससे मैं क्या करूं। (१३) उन्होंने फिर पुकारा कि उसे क्रूशपर चढ़ाइये। (१४) पिलातने उनसे कहा क्यों उसने कौनसी बुराई किई है. परन्तु उन्होंने बहुत अधिक पुकारा कि उसे क्रूशपर चढ़ाइये।

(१५) तब पिलातने लोगोंको सन्तुष्ट करनेकी इच्छा कर

बरब्बाको उन्होंके लिये छोड़ दिया और यीशुको कोड़े मारके क्रूशपर चढ़ाये जानेको सोंप दिया। (१६) तब योद्धाओंने उसे घरके अर्थात अध्यक्षभवनके भीतर ले जाके सारी पलटनको एकट्ठे बुलाया। (१७) और उन्होंने उसे बैजनी बस्त्र पहिराया और कांटोंका मुकुट गून्थके उसके सिरपर रक्खा. (१८) और उसे नमस्कार करने लगे कि हे यिहूदियोंके राजा प्रणाम। (१९) और उन्होंने नरकटसे उसके सिरपर मारा और उसपर थूका और घुटने टेकके उसको प्रणाम किया। (२०) जब वे उससे ठट्ठा कर चुके तब उससे वह बैजनी बस्त्र उतारके और उसका निज बस्त्र उसको पहिराके उसे क्रूशपर चढ़ानेको बाहर ले गये। (२१) और उन्होंने कुरीनी देशके एक मनुष्य को अर्थात सिकन्दर और रूफके पिता शिमोनको जो गांवसे आते हुए उधर से जाता था बेगार पकड़ा कि उसका क्रूश ले चले।

[यीशुका क्रूशपर चढ़ाया जाना और प्राण त्यागना।]

मत्ती २७। ३२—५६।

(२२) तब वे उसे गलगथा स्थानपर लाये जिसका अर्थ यह है खोपड़ीका स्थान। (२३) और उन्होंने दाख रसमें मुर मिलाके उसे पीनेको दिया परन्तु उसने न लिया। (२४) तब उन्होंने उसको क्रूशपर चढ़ाया और उसके कपड़ोंपर चिट्ठिया डालके कि कौन किसको लेगा उन्हें बांट लिया। (२५) एक पहर दिन चढ़ा था कि उन्होंने उसको क्रूशपर चढ़ाया। (२६) और उस का यह दोषपत्र ऊपर लिखा गया कि यिहूदियोंका राजा। (२७) उन्होंने उसके संग दो डाकूओंको एकको उसकी दहिनी ओर और दूसरेको बाईं ओर क्रूशोंपर चढ़ाया। (२८) तब धर्म्मपुस्तक का यह बचन पूरा हुआ कि वह कुकर्म्मियोंके संग गिना गया। (२९) जो लोग उधरसे आते जाते थे उन्होंने अपने सिर हिलाके

और यह कहके उसकी निन्दा किई . (३०) कि हा मन्दिरके ढानेहारे और तीन दिनमें बनानेहारे अपनेको बचा और क्रूशपरसे उतर आ । (३१) इसी रीतिसे प्रधान याजकोंने भी अध्यापकोंके संग आपसमें ठट्ठा कर कहा उसने औरोंको बचाया अपनेको बचा नहीं सकता है। (३२) इस्रायेलका राजा ख्रीष्ट क्रूशपरसे अब उतर आवे कि हम देखके बिश्वास करें . जो उसके संग क्रूशोंपर चढ़ाये गये उन्होंने भी उसकी निन्दा किई ।

(३३) जब दो पहर हुआ तब सारे देशमें तीसरे पहरलों अंधकार हो गया । (३४) तीसरे पहर यीशुने बड़े शब्दसे पुकारके कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तूने क्यों मुझे त्यागा है । (३५) जो लोग निकट खड़े थे उनमेंसे कितनोंने यह सुनके कहा देखो वह एलियाह को बुलाता है । (३६) और एकने दौड़के इसपंजको सिरके में भिंगाया और नलपर रखके उसे पीनेको दिया और कहा रहने दो हम देखें कि एलियाह उसे उतारनेको आता है कि नहीं ।

(३७) तब यीशुने बड़े शब्दसे पुकारके प्राण त्यागा । (३८) और मन्दिरका परदा ऊपरसे नीचेलों फटके दो भाग हो गया । (३९) जो शतपति उसके सन्मुख खड़ा था उसने जब उसे यूं पुकारके प्राण त्यागते देखा तब कहा सचमुच यह मनुष्य ईश्वरका पुत्र था ।

(४०) कितनी स्त्रियां भी दूरसे देखती रहीं जिन्होंमें मरियम मगदलीनी और छोटे याकूबकी औ योशीकी माता मरियम और शालोमी थीं । (४१) जब यीशु गालीलमें था तब ये उसके पीछे हो लेती थीं और उसकी सेवा करती थीं . बहुतसी और स्त्रियां भी जो उसके संग यिरूशलीममें आईं वहां थीं ।

[यूसफका योशुको कबरमें रखना।
मत्ती २७ : ५७—६६।

(४२) यह दिन तैयारीकी दिन था जो बिश्रामवारके एक दिन आगे है. (४३) इसलिये जब सांझ हुई तब अरिमथिया नगर का यूसफ एक आदरवन्त मंत्री जो आप भी ईश्वरके राज्यकी बाट जोहता था आया और साहससे पिलातके पास जाके योशुकी लोथ मांगी। (४४) पिलातने अचंभा किया कि वह क्या मर गया है और शतपतिको अपने पास बुलाके उससे पूछा क्या उसको मरे कुछ बेर हुई। (४५) शतपतिसे जानके उसने यूसफको लोथ दिई। (४६) यूसफने एक चद्दर मोल लेके योशुको उतारके उस चद्दरमें लपेटा और उसे एक कबरमें जो पत्थरमें खोदी हुई थी रखा और कबरके द्वारपर पत्थर लुढ़का दिया। (४७) मरियम मगदलीनी और योशीकी माता मरियमने वह स्थान देखा जहां वह रखा गया।

[योशुका जी उठना।]
मत्ती २८ : १—१०।

१६ जब बिश्रामवार बीत गया तब मरियम मगदलीनी और याकूबकी माता मरियम और शालोमीने सुगंध मोल लिया कि आके योशुको मलें। (२) और अठवारेके पहिले दिन बड़ी भोर सूर्य्य उदय होते हुए वे कबरपर आईं। (३) और वें आपसमें बोलीं कौन हमारे लिये कबरके द्वारपरसे पत्थर लुढ़कावेगा। (४) परन्तु उन्होंने दृष्टि कर देखा कि पत्थर लुढ़काया गया है. और वह बहुत बड़ा था। (५) कबरके भीतर जाके उन्होंने उजले लंबे बस्त्र पहिने हुए एक जवानको दहिनी ओर बैठे देखा और चकित हुईं। (६) उसने उनसे कहा चकित मत होओ तुम योशु नासरीको जो क्रूशपर घात किया गया ढूंढ़ती हो. वह जी उठा है वह यहां नहीं है. देखो

यही स्थान है जहां उन्होंने उसे रखा । (७) परन्तु जाके उस के शिष्योंसे और पितरसे कहो कि वह तुम्हारे आगे गालीलको जाता है . जैसे उसने तुमसे कहा वैसे तुम उसे वहां देखोगे । (८) वे शीघ्र निकलके कबरसे भाग गईं और कम्पित और विस्मित हुईं और किसीसे कुछ न बोलीं क्योंकि वे डरती थीं ।

[यीशुका शिष्योंको दर्शन देना और स्वर्गमें जाना ।]

(९) यीशुने अठवारेके पहिले दिन भोरको जी उठके पहिले मरियम मगदलीनीको जिसमेंसे उसने सात भूत निकाले थे दर्शन दिया । (१०) उसने जाके उसके संगियोंको जो शोक करते और रोते थे कह दिया । (११) उन्होंने जब सुना कि वह जीता है और मरियमसे देखा गया है तब प्रतीति न किई ।

(१२) इसके पीछे उसने उनमेंसे दोको जो मार्गमें चलते और किसी गांवको जाते थे दूसरे रूपमें दर्शन दिया । (१३) उन्होंने भी जाके औरोंसे कह दिया परन्तु उन्होंने उनको भी प्रतीति न किई ।

(१४) पीछे उसने एग्यारह शिष्योंको जब वे भोजनपर बैठे थे दर्शन दिया और उनके अविश्वास और मनकी कठोरतापर उलहना दिया इसलिये कि जिन्होंने उसे जी उठे हुए देखा था उन लोगोंको उन्होंने प्रतीति न किई । (१५) और उसने उनसे कहा तुम सारे जगतमें जाके हर एक मनुष्यको सुसमाचार सुनाओ । (१६) जो विश्वास करे और बपतिसमा लेवे सो त्राण पावेगा परन्तु जो विश्वास न करे सो दंडके योग्य ठहराया जायगा (१७) और ये चिन्ह विश्वास करने-हारोंके संग प्रगट होंगे . वे मेरे नामसे भूतोंको निकालेंगे वे नई नई भाषा बोलेंगे । (१८) वे सांपोंको उठा लेंगे और जो

वे कुछ बिष पीवें तो उससे उनको कुछ हानि न होगा . वे रोगियोंपर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे।

(१९) सो प्रभु उन्होंसे बोलनेके पीछे स्वर्गपर उठा लिया गया और ईश्वरको दहिनी ओर बैठा। (२०) और उन्होंने निकलके सर्व्वत्र उपदेश किया और प्रभुने उनके संग कार्य्य किया और जो चिन्ह साथमें प्रगट होते थे उन्होंसे बचनको दृढ़ किया। आमीन ॥

लूक रचित सुसमाचार ।

[सुसमाचार लिखनेका प्रयोजन ।]

१ हे महामहिमन थियोफिल जो बातें हम लोगोंमें अति प्रमाण हैं उन बातोंका बृत्तान्त जिस रीतिसे उन्होंने जो आरंभसे साक्षी और बचनके सेवक थे हम लोगोंको सोंपा . (२) उसी रीतिसे लिखनेको बहुतोंने हाथ लगाया है . (३) इस लिये मुझे भी जिसने सब बातोंको आदिसे ठीक करके जांचा है अच्छा लगा कि एक ओरसे आपके पास लिखूं . (४) इस लिये कि जिन बातोंका उपदेश आपको दिया गया है आप उन बातोंकी दृढ़ता जानें ।

[इलीशिबाको गर्भ रहनेका वर्णन ।]

(५) यिहूदिया देशके हेरोद राजाके दिनोंमें अबियाहकी पारीमें जिखरियाह नाम एक याजक था और उसकी स्त्री जिसका नाम इलीशिबा था हारोनके बंशकी थी। (६) वे दोनों ईश्वरके सन्मुख धर्म्मी थे और परमेश्वरकी समस्त आज्ञाओं और विधियोंपर निर्दोष चलते थे । (७) उनको कोई लड़का न था क्योंकि इलीशिबा बांझ थी और वे दोनों बूढ़े थे। (८) जब जिखरियाह अपनी पारीकी रीतिपर ईश्वरके आगे याजकका काम करता था . (९) तब चिट्ठियां डालनेसे उसको याजकीय व्यवहारके अनुसार परमेश्वरके मन्दिरमें जाके धूप जलाना पड़ा । (१०) धूप जलानेके समय लोगोंकी सारी मंडली बाहर प्रार्थना करती थी । (११) तब परमेश्वरका एक दूत धूपकी बेदीकी दहिनी ओर खड़ा हुआ उसको दिखाई दिया।

(१२) जिखरियाह उसे देखके घबरा गया और उसे डर लगा। (१३) दूतने उससे कहा हे जिखरियाह मत डर क्योंकि तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरी स्त्री इलीशिबा पुत्र जनेगी और तू उसका नाम योहन रखना। (१४) तुझे आनन्द और आह्लाद होगा और बहुत लोग उसके जन्मनेसे आनन्दित होंगे। (१५) क्योंकि वह परमेश्वरके सन्मुख बड़ा होगा और न दाख रस न मद्य पीयेगा और अपनी माताके गर्भहीसे पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होगा। (१६) और वह इस्रायेलके सन्तानों मेंसे बहुतोंको परमेश्वर उनके ईश्वरकी ओर फिरावेगा। (१७) वह उसके आगे एलियाहके आत्मा और सामर्थ्यसे जायगा इसलिये कि पितरोंका मन लड़कोंकी ओर फेर दे और आज्ञा लंघन करनेहारोंको धर्म्मियोंके मतपर लावे और प्रभुके लिये एक सजे कुए लोगको तैयार करे। (१८) तब जिखरियाहने दूतसे कहा यह मैं किस रीतिसे जानूं क्योंकि मैं बूढ़ा हूं और मेरी स्त्री भी बूढ़ी है। (१९) दूतने उसको उत्तर दिया कि मैं जब्रायेल हूं जो ईश्वरके साम्ने खड़ा रहता हूं और मैं तुझसे बात करने और तुझे यह सुसमाचार सुनानेको भेजा गया हूं। (२०) और देख जिस दिनलों यह सब पूरा न हो जाय उस दिनलों तू गूंगा हो रहेगा और बोल न सकेगा क्योंकि तूने मेरी बातोंपर जो अपने समयमें पूरी किई जायेंगीं बिश्वास नहीं किया। (२१) लोग जिखरियाहकी बाट देखते थे और अचंभा करते थे कि उसने मन्दिरमें बिलंब किया। (२२) जब वह बाहर आया तब उन्होंसे बोल न सका और उन्होंने जाना कि उसने मन्दिरमें कोई दर्शन पाया था और वह उन्होंसे सैन करने लगा और गूंगा रह गया। (२३) जब उसकी सेवाके दिन पूरे हुए तब वह अपने घर गया। (२४) इन दिनोंके पीछे उस की स्त्री इलीशिबा गर्भवती हुई और अपनेको पांच मास यह

कहके छिपाया . (२५) कि मनुष्योंमें मेरा अपमान मिटानेको परमेश्वरने इन दिनोंमें कृपादृष्टि कर मुझसे ऐसा व्यवहार किया है।

[मरियमको गर्भ रहनेका वर्णन ।]

(२६) छठवें मासमें ईश्वरने जब्रायेल दूतको गालील देशके एक नगरमें जो नासरत कहावता है किसी कुंवारीके पास भेजा . (२७) जिसकी मंगनी यूसफ नाम दाऊदके घरानेके एक पुरुषसे हुई थी . उस कुंवारीका नाम मरियम था। (२८) दूतने घरमें प्रवेश कर उससे कहा हे अनुग्रहीत कल्याण परमेश्वर तेरे संग है स्त्रियोंमें तू धन्य है। (२९) मरियम उसे देखके उसके बचनसे घबरा गई और सोचने लगी कि यह कैसा नमस्कार है। (३०) तब दूतने उससे कहा हे मरियम मत डर क्योंकि ईश्वरका अनुग्रह तुझपर हुआ है। (३१) देख तू गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उसका नाम तू यीशु रखना। (३२) वह महान होगा और सर्व्वप्रधानका पुत्र कहावेगा और परमेश्वर ईश्वर उसके पिता दाऊदका सिंहासन उसको देगा। (३३) और वह याकूबके घरानेपर सदा राज्य करेगा और उसके राज्यका अन्त न होगा। (३४) तब मरियमने दूतसे कहा यह किस रीतिसे होगा क्योंकि मैं पुरुषको नहीं जानती हूं। (३५) दूतने उसको उत्तर दिया कि पवित्र आत्मा तुझपर आवेगा और सर्व्वप्रधानकी शक्ति तुझपर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र बालक ईश्वरका पुत्र कहावेगा। (३६) और देख तेरी कुटुंबिनी इलीशिबाको भी बुढ़ापेमें पुत्रका गर्भ रहा है और जो बांझ कहावती थी उसका यह छठवां मास है। (३७) क्योंकि कोई बात ईश्वरसे असाध्य नहीं है। (३८) मरियमने कहा देखिये मैं परमेश्वरकी दासी मुझे आपके बचनके अनुसार होय . तब दूत उसके पाससे चला गया।

[मरियम और इलीशिबाकी भेंट—मरियमका गीत।]

(३९) उन दिनोंमें मरियम उठके शीघ्रसे पर्व्वतीय देशमें यिहूदाके एक नगरको गई . (४०) और जिखरियाहके घरमें प्रवेश कर इलीशिबाको नमस्कार किया। (४१) ज्योंही इलीशिबाने मरियमका नमस्कार सुना त्योंही बालक उसके गर्भमें उछला और इलीशिबा पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हुई। (४२) और उसने बड़े शब्दसे बोलते हुए कहा तू स्त्रियोंमें धन्य है और तेरे गर्भका फल धन्य है। (४३) और यह मुझे कहांसे हुआ कि मेरे प्रभुकी माता मेरे पास आवे। (४४) देख ज्योंही तेरे नमस्कारका शब्द मेरे कानोंमें पड़ा त्योंही बालक मेरे गर्भमें आनन्दसे उछला। (४५) और धन्य बिश्वास करनेहारी कि परमेश्वरकी ओरसे जो बातें उससे कही गई हैं सो पूरी किई जायेंगी।

(४६) तब मरियमने कहा मेरा प्राण परमेश्वरकी महिमा करता है . (४७) और मेरा आत्मा मेरे त्राणकर्त्ता ईश्वरसे आनन्दित हुआ है। (४८) क्योंकि उसने अपनी दासीकी दीनताईपर दृष्टि किई है देखो अबसे सब समयोंके लोग मुझे धन्य कहेंगे। (४९) क्योंकि सर्व्वशक्तिमानने मेरे लिये महाकार्य्योंको किया है और उसका नाम पवित्र है। (५०) उसकी दया उन्होंपर जो उससे डरते हैं पीढ़ीसे पीढ़ीलों नित्य रहती है। (५१) उसने अपनी भुजाका बल दिखाया है उसने अभिमानियोंको उनके मनके परामर्शमें छिन्नभिन्न किया है। (५२) उसने बलवानोंको सिंहासनोंसे उतारा और दीनोंको ऊंचा किया है। (५३) उसने भूखोंको उत्तम बस्तुओंसे तृप्त किया और धनवानोंको छूछे हाथ फेर दिया है। (५४) उसने जैसे हमारे पितरोंसे कहा . (५५) तैसे सर्व्वदा इब्राहीम और उसके बंशपर अपनी दया स्मरण करनेके कारण अपने सेवक

इस्रायेलका उपकार किया है। (५६) मरियम तीन मासके अटकल इलीशिबाके संग रही तब अपने घरको लौटी।

[योहनके जन्मका वर्णन।]

(५७) तब इलीशिबाके जननेका समय पूरा हुआ और वह पुत्र जनी। (५८) उसके पड़ोसियों और कुटुंबोंने सुना कि परमेश्वरने उसपर बड़ी दया किई है और उन्होंने उसके संग आनन्द किया। (५९) आठवें दिन वे बालकका खतना करने को आये और उसके पिताके नामपर उसका नाम जिखरियाह रखने लगे। (६०) इसपर उसकी माताने कहा सो नहीं परन्तु उसका नाम योहन रखा जायगा। (६१) उन्होंने उससे कहा आपके कुटुंबोंमेंसे कोई नहीं है जो इस नामसे कहावता है। (६२) तब उन्होंने उसके पितासे सैन किया कि आप क्या चाहते हैं कि इसका नाम रखा जाय। (६३) उसने पटिया मंगाके यह लिखा कि उसका नाम योहन है. इससे वे सब अचंभित हुए। (६४) तब उसका मुंह और उसकी जीभ तुरन्त खुल गये और वह बोलने और ईश्वरका धन्यबाद करने लगा। (६५) और उन्होंके आसपासके सब रहनेहारोंको भय हुआ और इन सब बातोंकी चर्चा यिहूदियाके सारे पर्ब्बतीय देश में होने लगी। (६६) और सब सुननेहारोंने अपने अपने मन में सोचकर कहा यह कैसा बालक होगा. और परमेश्वरका हाथ उसके संग था।

[जिखरियाहका गीत।]

(६७) तब उसका पिता जिखरियाह पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हुआ और यह भविष्यद्वाक्य बोला. (६८) कि परमेश्वर इस्रायेलका ईश्वर धन्य होवे कि उसने अपने लोगोंपर दृष्टि कर उन्होंका उद्धार किया है. (६९) और जैसे उसने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओंके मुखसे जो आदिसे होते आये हैं

कहा . (७०) तैसे हमारे लिये अपने सेवक दाऊदके घरानेमें एक त्राणके सींगको . (७१) अर्थात हमारे शत्रुओंसे और हमारे सब बैरियोंके हाथसे एक बचानेहारेको प्रगट किया है . (७२) इसलिये कि वह हमारे पितरोंके संग दयाका व्यवहार करे और अपना पवित्र नियम स्मरण करे . (७३) अर्थात वह किरिया जो उसने हमारे पिता इब्राहीमसे खाई . (७४) कि हमें यह देवे कि हम अपने शत्रुओंके हाथसे बचके . (७५) निर्भय जीवन भर प्रतिदिन उसके सन्मुख पवित्रताई और धर्म्मसे उसकी सेवा करें। (७६) और तू हे बालक सर्ब्बप्रधान का भविष्यद्वक्ता कहावेगा क्योंकि तू परमेश्वरके आगे जायगा कि उसके पंथ बनावे . (७७) अर्थात हमारे ईश्वरकी महा करुणासे उसके लोगोंको उन्होंके पापमोचनके द्वारासे निस्तार का ज्ञान देवे। (७८) उसी करुणासे सूर्य्यका उदय ऊपरसे हमों पर प्रकाशित हुआ है . (७९) कि अंधकारमें और मृत्युकी छायामें बैठनेहारोंको ज्योति देवे और हमारे पांव कुशलके मार्गपर सीधे चलावे।

(८०) और वह बालक बढ़ा और आत्मामें बलवंत होता गया और इस्रायेली लोगोंपर प्रगट होनेके दिनलों जंगली स्थानों में रहा।

[यीशुका जन्म।]

२ उन दिनोंमें अगस्त कैसर महाराजाकी ओरसे आज्ञा हुई कि उसके राज्यके सब लोगोंके नाम लिखे जावें। (२) कुरीनियके सुरिया देशके अध्यक्ष होनेके पहिले यह नाम लिखाई हुई। (३) और सब लोग नाम लिखानेको अपने अपने नगरको गये। (४) यूसफ भी इसलिये कि वह दाऊदके घराने औा बंशका था . (५) मरियम स्त्रीके संग जिससे उसकी मंगनी हुई थी नाम लिखानेको गालील देशके नासरत नगरसे यिहूदिया

में बैतलहम नाम दाऊदके नगरको गया . उस समय मरियम गर्भवती थी । (६) उनके वहां रहते उसके जननेके दिन पूरे हुए । (७) और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसको कपड़ेमें लपेटके चरनीमें रखा क्योंकि उनके लिये सरायमें जगह न थी ।

[स्वर्गदूतोंका गड़ेरियोंको यीशुके जन्मका संदेश देना ।]

(८) उस देशमें कितने गड़ेरिये थे जो खेतमें रहते थे और रातको अपने झुंडका पहरा देते थे । (९) और देखो परमेश्वर का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ और परमेश्वरका तेज उनकी चारों ओर चमका और वे बहुत डर गये । (१०) दूतने उनसे कहा मत डरो क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्दका सुसमाचार सुनाता हूं जिससे सब लोगोंको आनन्द होगा . (११) कि आज दाऊदके नगरमें तुम्हारे लिये एक त्राणकर्त्ता अर्थात ख्रीष्ट प्रभु जन्मा है । (१२) और तुम्हारे लिये यह पता होगा कि तुम एक बालकको कपड़ेमें लपेटे हुए और चरनीमें पड़े हुए पाओगे। (१३) तब अचांचक स्वर्गीय सेनामेंसे बहुतेरे उस दूतके संग प्रगट हुए और ईश्वरकी स्तुति करते हुए बोले . (१४) सबसे ऊंचे स्थानमें ईश्वरका गुणानुवाद और पृथिवीपर शांति होय . मनुष्योंपर प्रसन्नता है । (१५) ज्योंही दूतगण उन्होंके पाससे स्वर्गको गये त्योंही गड़ेरियोंने आपसमें कहा आओ हम बैतलहमलों जाके यह बात जो हुई है जिसे परमेश्वरने हमोंको बताया है देखें । (१६) और उन्होंने शीघ्र जाके मरियम और यूसफको और बालकको चरनीमें पड़े हुए पाया । (१७) इन्हें देखके उन्होंने वह बात जो इस बालकके विषयमें उन्होंसे कही गई थी प्रचार किई । (१८) और सब सुननेहारे उन बातोंसे जो गड़ेरियोंने उनसे कहीं अचंभित हुए । (१९) परन्तु मरियमने इन सब बातोंको अपने मनमें रखा

और उन्हें सोचती रही। (२०) तब गड़ेरिये जैसा उन्होंसे कहा गया था तैसाही सब बातें सुनके और देखके उन बातोंके लिये ईश्वरका गुणानुबाद और स्तुति करते हुए लौट गये।

[यीशुको खतना करना और ईश्वरके आगे धरना—शिमियोन और हन्नाका वर्णन।]

(२१) जब आठ दिन पूरे होनेसे बालकका खतना करना हुआ तब उसका नाम यीशु रखा गया कि वही नाम उसके गर्भमें पड़नेके आगे दूतसे रखा गया था। (२२) और जब मूसाकी व्यवस्थाके अनुसार उनके शुद्ध होनेके दिन पूरे हुए तब वे बालकको यिरूशलीममें ले गये . (२३) कि जैसा परमेश्वरकी व्यवस्थामें लिखा है कि हर एक पहिलौठा नर परमेश्वरके लिये पवित्र कहावेगा तैसा उसे परमेश्वरके आगे धरें . (२४) और परमेश्वरकी व्यवस्थाकी बातके अनुसार पंडुकोंकी जोड़ी अथवा कपोतके दो बच्चे बलिदान करें।

(२५) तब देखो यिरूशलीममें शिमियोन नाम एक मनुष्य था . वह मनुष्य धर्म्मी और भक्त था और इस्रायेलकी शांतिकी बाट जोहता था और पवित्र आत्मा उसपर था। (२६) पवित्र आत्मासे उसको प्रतिज्ञा दिई गई थी कि जबलों तू परमेश्वरके अभिषिक्त जनको न देखे तबलों मृत्युको न देखेगा। (२७) और वह आत्माकी शिक्षासे मन्दिरमें आया और जब उस बालक अर्थात यीशुके माता पिता उसके विषयमें व्यवस्थाके व्यवहारके अनुसार करनेको उसे भीतर लाये . (२८) तब शिमियोनने उसको अपनी गोदीमें लेके ईश्वरका धन्यबाद कर कहा . (२९) हे प्रभु अभी तू अपने बचनके अनुसार अपने दासको कुशलसे बिदा करता है . (३०) क्योंकि मेरी आंखोंने तेरे त्राणकर्त्ताको देखा है . (३१) जिसे तूने सब देशोंके लोगोंके सन्मुख तैयार किया है . (३२) कि वह अन्यदेशियोंको प्रकाश करनेकी ज्योति और तेरे इस्रायेली लोगका तेज होवे।

(३३) यूसफ और यीशुकी माता इन बातोंसे जो उसके विषयमें कहीं गईं अचंभा करते थे। (३४) तब शिमियोनने उनको आशीस देके उसकी माता मरियमसे कहा देख यह तो इस्रायेलमें बहुतोंके गिरने और फिर उठनेका कारण होगा और एक चिन्ह जिसके बिरुद्धमें बातें किई जायेंगीं . (३५) हां तेरा निज प्राण भी खड्गसे वारपार छिदेगा . इससे बहुत हृदयोंके बिचार प्रगट किये जायेंगे।

(३६) और हन्ना नाम एक भविष्यद्वक्त्री थी जो आशेरके कुलके पनूएलकी पुत्री थी . वह बहुत बूढ़ी थी और अपने कुंवारपनसे सात बरस स्वामीके संग रही थी। (३७) और वह बरस चौरासी एककी बिधवा थी जो मन्दिरसे बाहर न जाती थी परन्तु उपवास औ प्रार्थनासे रात दिन सेवा करती थी। (३८) उसने भी उसी घड़ी निकट आके परमेश्वरका धन्य माना और यिरूशलीममें जो लोग उद्धारकी बाट देखते थे उन सभोंसे यीशुके विषयमें बात किई।

(३९) जब वे परमेश्वरकी व्यवस्थाके अनुसार सब कुछ कर चुके तब गालीलको अपने नगर नासरतको लौटे। (४०) और बालक बढ़ा और आत्मामें बलवन्त और बुद्धिसे परिपूर्ण होता गया और ईश्वरका अनुग्रह उसपर था।

[बारह बरसकी बयसमें यीशुकी उपदेशकोंके संग बातचीत।]

(४१) उसके माता पिता बरस बरस निस्तार पर्ब्बमें यिरूशलीमको जाते थे। (४२) जब वह बारह बरसका हुआ तब वे पर्ब्बकी रीतिपर यिरूशलीमको गये। (४३) और जब वे पर्ब्ब के दिनोंको पूरा करके लौटने लगे तब वह लड़का यीशु यिरूशलीममें रह गया परन्तु यूसफ और उसकी माता नहीं जानते थे। (४४) वे यह समझके कि वह संगवाले पथिकोंके बीचमें है एक दिनकी बाट गये और अपने कुटुंबों और

चिन्हारोंके बीचमें उसको ढूंढ़ने लगे। (४५) परन्तु जब उन्होंने उसको न पाया तब उसे ढूंढ़ते हुए यिरूशलीमको फिर गये। (४६) तीन दिनके पीछे उन्होंने उसे मन्दिरमें पाया कि उपदेशकोंके बीचमें बैठा हुआ उनकी सुनता और उनसे प्रश्न करता था। (४७) और जो लोग उसकी सुनते थे सो सब उसकी बुद्धि और उसके उत्तरोंसे बिस्मित हुए। (४८) और वे उसे देखके अचंभित हुए और उसकी माताने उससे कहा हे पुत्र हमसे क्यों ऐसा किया. देख तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे। (४९) उसने उनसे कहा तुम क्यों मुझे ढूंढ़ते थे. क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिताके विषयोंमें लगा रहना अवश्य है। (५०) परन्तु उन्होंने यह बात जो उसने उनसे कही न समझी। (५१) तब वह उनके संग चला और नासरतमें आया और उनके बशमें रहा और उसकी माताने इन सब बातोंको अपने मनमें रखा। (५२) और यीशु की बुद्धि और डील और उसपर ईश्वरका और मनुष्योंका अनुग्रह बढ़ता गया।

[योहन बपतिसमा देनेहारेका बृत्तान्त।]

मत्ती ३ : १—१२।

३ तिबरिय कैसरके राज्यके पंद्रहवें बरसमें जब पन्तिय पिलात यिहूदियाका अध्यक्ष था और हेरोद एक चौथाई अर्थात गालीलका राजा और उसका भाई फिलिप एक चौथाई अर्थात इतूरिया और त्राखोनीतिया देशोंका राजा और लुसानिय एक चौथाई अर्थात अबिलीनी देशका राजा था. (२) और जब हन्नस और कियाफा महायाजक थे तब ईश्वरका बचन जंगलमें ज़िखरियाहके पुत्र योहन पास आया (३)। और वह यर्दन नदीके आसपासके सारे देशमें आके पापमोचनके लिये पश्चात्तापके बपतिसमाका उपदेश करने लगा। (४) जैसे

यिशैयाह भविष्यद्वक्ताके कहे हुए पुस्तकमें लिखा है कि किसी का शब्द हुआ जो जंगलमें पुकारता है कि परमेश्वरका पन्थ बनाओ उसके राजमार्ग सीधे करो। (५) हर एक नाला भरा जायगा और हर एक पर्व्वत और टीला नीचा किया जायगा और टेढ़े पन्थ सीधे और ऊंचनीच मार्ग चौरस बन जायेंगे। (६) और सब प्राणी ईश्वरके त्राणको देखेंगे।

(७) तब बहुत लोग जो उससे बपतिसमा लेनेको निकल आये उन्होंसे योहनने कहा हे सांपोंके बंश किसने तुम्हें आने-वाले क्रोधसे भागनेको चिताया है। (८) पश्चात्तापके योग्य फल लाओ और अपने अपने मनमें मत कहने लगो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि ईश्वर इन पत्थरोंसे इब्राहीमके लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। (९) और अब भी कुल्हाड़ी पेड़ोंकी जड़पर लगी है इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और आगमें डाला जाता है। (१०) तब लोगोंने उससे पूछा तो हम क्या करें। (११) उसने उन्हें उत्तर दिया कि जिस पास दो अंगे हों सो जिस पास न हो उसके साथ बांट लेवे और जिस पास भोजन होय सो भी वैसाही करे। (१२) कर उगाहनेहारे भी बपतिसमा लेनेको आये और उससे बोले हे गुरु हम क्या करें। (१३) उसने उनसे कहा जो तुम्हें ठहराया गया है उस से अधिक मत ले लो। (१४) योद्धाओंने भी उससे पूछा हम क्या करें. उसने उनसे कहा किसीपर उपद्रव मत करो और न झूठे दोष लगाओ और अपने वेतनसे सन्तुष्ट रहो।

(१५) जब लोग आस देखते थे और सब अपने अपने मनमें योहनके विषयमें बिचार करते थे कि होय न होय यही खीष्ट है; (१६) तब योहनने सभोंको उत्तर दिया कि मैं तो तुम्हें जलसे बपतिसमा देता हूं परन्तु वह आता है जो मुझसे अधिक

शक्तिमान है मैं उसके जूतोंका बंध खोलनेके योग्य नहीं हूं वह तुम्हें पवित्र आत्मासे और आगसे बपतिसमा देगा। (१७) उसका सूप उसके हाथमें है और वह अपना सारा खलिहान शुद्ध करेगा और गेहूंको अपनेखत्तेमें एकट्ठा करेगा परन्तु भूसीको उस आग से जो नहीं बुझती है जलावेगा। (१८) उसने बहुत और बातोंका भी उपदेश करके लोगोंको सुसमाचार सुनाया।

(१९) पर उसने चौथाईके राजा हेरोदको उसके भाई फिलिप की स्त्री हेरोदियाके विषयमें और सब कुकर्म्मोंके विषयमें जो उसने किये थे उलहना दिया। (२०) इसलिये हेरोदने उन सभोंके उपरान्त यह कुकर्म्म भी किया कि योहनको बन्दीगृहमें मूंद रखा।

[यीशुका बपतिसमा लेना।]

मत्ती ३ : १३—१७।

(२१) सब लोगोंके बपतिसमा लेनेके पीछे जब यीशुने भी बपतिसमा लिया था और प्रार्थना करता था तब स्वर्ग खुल गया। (२२) और पवित्र आत्मा देही रूपमें कपोतकी नाईं उस पर उतरा और यह आकाशबाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है मैं तुझसे अति प्रसन्न हूं।

[यीशुकी वंशावलि।]

मत्ती १ : १—१७।

(२३) और यीशु आप तीस बरसके अटकल होने लगा और लोगोंकी समझमें यूसफका पुत्र था। (२४) यूसफ एलीका पुत्र था वह मत्तातका पुत्र वह लेवीका वह मल्किका वह यान्ना का वह यूसफका. (२५) वह मत्तथियाहका वह आमोसका वह नहूमका वह इसलिका वह नग्गईका. (२६) वह माटका वह मत्तथियाहका वह शिमिईका वह यूसफका वह यिहूदा का. (२७) वह योहानाका वह रीशाका वह जिरुब्बाबुलका वह

मत्तितियेलका वह नेरिका . (२८) वह मलकिका वह अद्दीका वह कोसमका वह इलमोददका वह एरका . (२९) वह योशी का वह इलियेजरका वह योरीमका वह मत्तातका वह लेवी का . (३०) वह शिमियोनका वह यिहूदाका वह यूसफका वह योननका वह इलियाकीमका . (३१) वह मिलेयाका वह मैनन का वह मत्तथका वह नाथनका वह दाऊदका . (३२) वह यिशी का वह ओबेदका वह बोअसका वह सलमोनका वह नहशोनका . (३३) वह अम्मीनादबका वह अरामका वह हिस्रोन का वह पेरसका वह यिहूदाका . (३४) वह याकूबका वह इसहाकका वह इब्राहीमका वह तेरहका वह नाहोरका . (३५) वह सिरूगका वह रियूका वह पेलगका वह एबरका वह शेलहका . (३६) वह कैननका वह अर्फक्षदका वह शेम का वह नूहका वह लमकका . (३७) वह मिथूशलहका वह हनोकका वह येरदका वह महल्लेलका वह कैननका . (३८) वह इनोशका वह शेतका वह आदमका वह ईश्वरका।

[यीशुकी परीक्षा ।]

मत्ती ४ : १—११ ।

४ यीशु पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हो यर्दनसे फिरा और आत्माकी शिक्षासे जंगलमें गया । (२) और चालीस दिन शैतानसे उसकी परीक्षा किई गई और उन दिनोंमें उसने कुछ नहीं खाया पर पीछे उनके पूरे होनेपर भूखा हुआ । (३) तब शैतानने उससे कहा जो तू ईश्वरका पुत्र है तो इस पत्थर से कह दे कि रोटी बन जाय। (४) यीशुने उसको उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटीसे नहीं परन्तु ईश्वरकी हर एक बातसे जीयेगा । (५) तब शैतानने उसे एक ऊंचे पर्ब्बत पर ले जाके उसको पलभरमें जगतके सब राज्य दिखाये । (६) और शैतानने उससे कहा मैं यह सब अधिकार और

इन्होंका बिभव तुझे देऊंगा क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है और मैं उसे जिसको चाहता हूं उसको देता हूं। (७) इसलिये जो तू मुझे प्रणाम करे तो सब तेरा होगा। (८) यीशुने उस को उत्तर दिया कि हे शैतान मेरे साम्हनेसे दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वरको प्रणाम कर और केवल उसीकी सेवा कर। (९) तब उसने उसको यिरूशलीम में ले जाके मन्दिरके कलशपर खड़ा किया और उससे कहा जो तू ईश्वरका पुत्र है तो अपनेको यहांसे नीचे गिरा. (१०) क्योंकि लिखा है कि वह तेरे बिषयमें अपने दूतोंको आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें. (११) और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि तेरे पांवमें पत्थरपर चोट लगे। (१२) यीशुने उसको उत्तर दिया यह भी कहा गया है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वरकी परीक्षा मत कर। (१३) जब शैतान सब परीक्षा कर चुका तब कुछ समयके लिये उसके पाससे चला गया।

[यीशुका गालील देशमें उपदेश करना और उसकी चर्चाका फैल जाना।]

(१४) यीशु आत्माकी शक्तिसे गालीलको फिर गया और उसकी कीर्त्ति आसपासके सारे देशमें फैल गई। (१५) और उसने उनकी सभाओंमे उपदेश किया और सभोंने उसकी बड़ाई किई।

[उसका नासरतके लोगोंसे निकाला जाना।]

(१६) तब वह नासरतको आया जहां पाला गया था और अपनी रीतिपर बिस्रामके दिन सभाके घरमें जाके पढ़नेको खड़ा हुआ। (१७) यिशैयाह भविष्यद्वक्ताका पुस्तक उसको दिया गया और उसने पुस्तक खोलके वह स्थान पाया जिस में लिखा था. (१८) कि परमेश्वरका आत्मा मुझपर है इस लिये कि उसने मुझे अभिषेक किया है कि कंगालोंको सुसमा-

धार सुनाऊं . (१९) उसने मुझे भेजा है कि जिनके मन चूर हैं उन्हें चंगा करूं और बन्धुओंको छूटनेकी और अंधोंको दृष्टि पानेकी बार्त्ता सुनाऊं और पेरे हुओंका निस्तार करूं और परमेश्वरके ग्राह्य बरसका प्रचार करूं । (२०) तब वह पुस्तक लपेटके सेवकके हाथमें देके बैठ गया और सभामें सब लोगों की आंखें उसे तक रहीं । (२१) तब वह उन्होंसे कहने लगा कि आजही धर्म्मपुस्तकका यह बचन तुम्हारे सुननेमें पूरा हुआ है । (२२) और सभोंने उसको सराहा और जो अनुग्रह की बातें उसके मुखसे निकलीं उनसे अचंभा किया और कहा क्या यह यूसफका पुत्र नहीं है । (२३) उसने उन्होंसे कहा तुम अवश्य मुझसे यह दृष्टान्त कहोगे कि हे वैद्य अपनेको चंगा कर . जो कुछ हमोंने सुना है कि कफर्नाहुममें किया गया सो यहां अपने देशमें भी कर । (२४) और उसने कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कोई भविष्यद्वक्ता अपने देशमें ग्राह्य नहीं होता है । (२५) और मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि एलियाहके दिनोंमें जब आकाश साढ़े तीन बरस बन्द रहा यहांलों कि सारे देशमें बड़ा अकाल पड़ा तब इस्रायेलमें बहुत विधवा थीं । (२६) परन्तु एलियाह उन्होंमेंसे किसीके पास नहीं भेजा गया केवल सीदोन देशके सारिफत नगरमें एक विधवाके पास । (२७) और इलीशा भविष्यद्वक्ताके समयमें इस्रायेलमें बहुत कोढ़ी थे परन्तु उन्होंमेंसे कोई शुद्ध नहीं किया गया केवल सुरिया देशका नामान । (२८) यह बातें सुनके सब लोग सभामें क्रोधसे भर गये . (२९) और उठके उसको नगरसे बाहर निकालके जिस पर्व्वतपर उनका नगर बना हुआ था उसकी चोटीपर ले चले कि उसको नीचे गिरा देवें । (३०) परन्तु वह उन्होंके बीचमेंसे होके निकला और चला गया ।

[कफर्नाहुममें यीशुका एक भूतग्रस्त मनुष्यको चंगा करना।]

मार्क १ : २१—२८।

(३१) और उसने गालीलके कफर्नाहुम नगरमें जाके बिश्राम के दिन लोगोंको उपदेश दिया। (३२) वे उसके उपदेशसे अचंभित हुए क्योंकि उसका बचन अधिकार सहित था। (३३) सभाके घरमें एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूतका आत्मा लगा था। (३४) उसने बड़े शब्दसे चिल्लाके कहा हे यीशु नासरी रहने दीजिये आपको हमसे क्या काम. क्या आप हमें नाश करने आये हैं. मैं आपको जानता हूं आप कौन हैं ईश्वरके पवित्र जन। (३५) यीशुने उसको डांटके कहा चुप रह और उसमेंसे निकल आ. तब भूत उस मनुष्यको बीच में गिराके उसमेंसे निकल आया और उसकी कुछ हानि न किई। (३६) इसपर सभोंको अचंभा हुआ और वे आपसमें बात करके बोले यह कौनसी बात है कि वह प्रभाव और पराक्रमसे अशुद्ध भूतोंको आज्ञा देता है और वे निकल आते हैं। (३७) सो उसकी कीर्त्ति आसपासके देशमें सर्ब्बत्र फैल गई।

[यीशुका पितरकी सासको चंगा करना और नगर नगरमें उपदेश करना।]

मत्ती ८ : १४—१७।

(३८) सभाके घरमेंसे उठके उसने शिमोनके घरमें प्रवेश किया और शिमोनकी सास बड़े ज्वरसे पीड़ित थी और उन्हों ने उसके लिये उससे बिन्ती किई। (३९) उसने उसके निकट खड़ा हो ज्वरको डांटा और वह उसे छोड़ गया और वह तुरन्त उठके उनकी सेवा करने लगी।

(४०) सूर्य्य डूबते हुए जिन्होंके पास दुःखी लोग नाना प्रकारके रोगोंमें पड़े थे वे सब उन्हें उसपास लाये और उस ने एक एकपर हाथ रखके उन्हें चंगा किया। (४१) भूत भी चिल्लाते और यह कहते हुए कि आप ईश्वरके पुत्र ख्रीष्ट हैं

बहुतोंमेंसे निकले परन्तु उसने उन्हें डांटा और बोलने न दिया क्योंकि वे जानते थे कि वह ख्रीष्ट है ।

(४२) बिहान हुए वह निकलके जंगली स्थानमें गया और लोगोंने उसको ढूंढ़ा और उस पास आके उसे रोकने लगे कि वह उनके पाससे न जाय । (४३) परन्तु उसने उन्होंसे कहा मुझे और और नगरोंमें भी ईश्वरके राज्यका सुसमाचार सुनाना होगा क्योंकि मैं इसीलिये भेजा गया हूं । (४४) सो उसने गालीलकी सभाओंमें उपदेश किया ।

[योशुका अद्भुत रीतिसे बहुत मछलियोंको पकड़वाना और कई शिष्योंको बुलाना ।]

५ एक दिन बहुत लोग ईश्वरका बचन सुननेको योशुपर गिरे पड़ते थे और वह गिनेसरतकी झीलके पास खड़ा था । (२) और उसने दो नाव झीलके तीरपर लगी देखीं और मछुवे उनपरसे उतरके जालोंको धोते थे । (३) उन नावोंमें से एकपर जो शिमोनकी थी चढ़के उसने उससे बिन्ती किई कि तीरसे थोड़ी दूर ले जाय और उसने बैठके नावपरसे लोगोंको उपदेश दिया । (४) जब वह बात कर चुका तब शिमोनसे कहा गहिरेमें ले जा और मछलियां पकड़नेको अपने जालोंको डालो । (५) शिमोनने उसको उत्तर दिया कि हे गुरु हमने सारी रात परिश्रम किया और कुछ नहीं पकड़ा तौभी आपकी बातपर मैं जाल डालूंगा । (६) जब उन्होंने ऐसा किया तब बहुत मछलियां बझाईं और उनका जाल फटने लगा । (७) इसपर उन्होंने अपने साझियोंको जो दूसरी नावपर थे सैन किया कि वे आके उनकी सहायता करें और उन्होंने आके दोनों नाव ऐसी भरीं कि वे डूबने लगीं । (८) यह देखके शिमोन पितर योशुके गोड़ोंपर गिरा और कहा हे प्रभु मेरे पाससे जाइये मैं पापी मनुष्य हूं । (९) क्योंकि वह और उसके सब संगी लोग इन मछलियोंके बझ जाने

से जो उन्होंने पकड़ी थीं बिस्मित हुए। (१०) और जबदीके पुत्र याकूब और योहन भी जो शिमोनके साझी बिस्मित हुए. तब यीशुने शिमोनसे कहा मत डर अबसे मनुष्योंको पकड़ेगा। (११) और वे नावोंको तीरपर लाके कुछ छोड़के उसके पीछे हो लिये।

[यीशुका एक कोढ़ीको चंगा करना।]

मत्ती ८ : १—४।

(१२) जब वह एक नगरमें था तब देखो एक मनुष्य कोढ़ से भरा हुआ वहां था और वह यीशुको देखके मुंहके बल गिरा और उससे बिन्ती किई कि हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं। (१३) उसने हाथ बढ़ा उसे छूके कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा. और उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा। (१४) तब उसने उसे आज्ञा दिई कि किसीसे मत कह परन्तु जाके अपने तईं याजकको दिखा और अपने शुद्ध होने के विषयमेंका चढ़ावा जैसा मूसाने आज्ञा दिई तैसा लोगोंपर साक्षी होनेके लिये चढ़ा। (१५) परन्तु यीशुकी कीर्त्ति अधिक फैल गई और बहुतेरे लोग सुननेको और उससे अपने रोगों से चंगे किये जानेको एकट्ठे हुए। (१६) और उसने जंगली स्थानोंमें अलग जाके प्रार्थना किई।

[यीशुका एक अर्द्धांगीको चंगा करना और उसका पाप क्षमा करना।]

मत्ती ९ : १—८।

(१७) एक दिन वह उपदेश करता था और फरीशी और व्यवस्थापक लोग जो गालील और यिहूदियाके हर एक गांवसे और यिरूशलीमसे आये थे वहां बैठे थे और उन्हें चंगा करनेको प्रभुका सामर्थ्य प्रगट हुआ। (१८) और देखो लोग एक मनुष्य को जो अर्द्धांगी था खाटपर लाये और वे उसको भीतर ले जाने और यीशुके आगे रखने चाहते थे। (१९) परन्तु जब

भीड़के कारण उसे भीतर ले जानेका कोई उपाय उन्हें न मिला तब उन्होंने कोठेपर चढ़के उसको खाट समेत छतमेंसे बीचमें यीशुके आगे उतार दिया। (२०) उसने उन्होंका बिश्वास देख के उससे कहा हे मनुष्य तेरे पाप क्षमा किये गये हैं । (२१) तब अध्यापक और फरीशी लोग बिचार करने लगे कि यह कौन है जो ईश्वरकी निन्दा करता है. ईश्वरको छोड़ कौन पापों को क्षमा कर सकता है। (२२) यीशुने उनके मनकी बातें जानके उनको उत्तर दिया कि तुम लोग अपने अपने मनमें क्या क्या बिचार करते हो । (२३) कौन बात सहज है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ और चल । (२४) परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्यके पुत्रको पृथिवीपर पाप क्षमा करनेका अधिकार है (उसने उस अर्द्धांगीसे कहा) मैं तुझसे कहता हूं उठ अपनी खाट उठाके अपने घरको जा । (२५) वह तुरन्त उन्होंके साम्ने उठके जिस पर वह पड़ा था उसको उठाके ईश्वरकी स्तुति करता हुआ अपने घरको चला गया । (२६) तब सब लोग बिस्मित हुए और ईश्वरकी स्तुति करने लगे और अति भयमान होके बोले हमने आज अनोखी बातें देखी हैं ।

[यीशुका लेवीको बुलाना ।]

मत्ती ९ । ९—१३ ।

(२७) इसके पीछे यीशुने बाहर जाके लेवी नाम एक कर उगाहनेहारेको कर उगाहनेके स्थानमें बैठे देखा और उससे कहा मेरे पीछे आ । (२८) वह सब कुछ छोड़के उठा और उसके पीछे हो लिया । (२९) और लेवीने अपने घरमें उसके लिये बड़ा भोज बनाया और बहुत कर उगाहनेहारे और बहुतसे और लोग थे जो उनके संग भोजनपर बैठे । (३०) तब उन्हीं के अध्यापक और फरीशी उसके शिष्योंपर कुड़कुड़ाके बोले

तुम कर उगाहनेहारों और पापियोंके संग क्यों खाते
पीते हो। (३१) यीशुने उनको उत्तर दिया कि
वैद्यका प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियोंको। (३२) मैं
को नहीं परन्तु पापियोंको पश्चात्तापके लिये बुलाने आया हूं

[यीशुका उपवास करनेका ब्योरा बताना।]

मत्ती ९ : १४—१७।

(३३) और उन्होंने उससे कहा योहनके शिष्य क्यों
बार उपवास और प्रार्थना करते हैं और वैसेही फरीशियोंके
शिष्य भी परन्तु आपके शिष्य खाते और पीते हैं। (३४) उस
ने उनसे कहा जब दूल्हा सखाओंके संग है तब क्या तुम उन
से उपवास करवा सकते हो। (३५) परन्तु वे दिन आवेंगे
जिनमें दूल्हा उनसे अलग किया जायगा तब वे उन दिनोंमें
उपवास करेंगे। (३६) उसने एक दृष्टान्त भी उनसे कहा कि
कोई मनुष्य नये कपड़ेका टुकड़ा पुराने वस्त्रमें नहीं लगाता
है नहीं तो नया कपड़ा उसे फाड़ता है और नये कपड़ेका
टुकड़ा पुरानेमें मिलता भी नहीं। (३७) और कोई मनुष्य
नया दाख रस पुराने कुप्पोंमें नहीं भरता है नहीं तो नया
दाख रस कुप्पोंको फाड़ेगा और वह आप बह जायगा और
कुप्पे नष्ट होंगे। (३८) परन्तु नया दाख रस नये कुप्पोंमें भरा
चाहिये तब दोनोंकी रक्षा होती है। (३९) कोई मनुष्य पुराना
दाख रस पीके तुरन्त नया नहीं चाहता है क्योंकि वह
कहता है पुराना ही अच्छा है।

[यीशुका बिश्रामवारके बिषयमें निर्णय करना।]

मत्ती १२ : १—८।

६. पर्ब्बके दूसरे दिनके पीछे बिश्रामके दिन यीशु खेतोंमें
होके जाता था और उसके शिष्य बालें तोड़के हाथोंमें
मल मलके खाने लगे। (२) तब कई एक फरीशियोंने उनसे

कहा जो काम बिश्रामके दिनमें करना उचित नहीं है सो क्यों करते हो। (३) योशुने उनको उत्तर दिया क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा है कि दाऊदने जब वह और उसके संगी लोग भूखे हुए तब क्या किया. (४) उसने क्योंकर ईश्वरके घरमें जाके भेटकी रोटियां लेके खाईं जिन्हें खाना और किसीको नहीं केवल याजकोंको उचित है और अपने संगियोंको भी दिईं। (५) और उसने उनसे कहा मनुष्यका पुत्र बिश्रामवारका भी प्रभु है।

[यीशुका एक मनुष्यको जिसका दहिना हाथ सूख गया था चंगा करना।]

मत्ती १२ : ९—१४।

(६) दूसरे बिश्रामवारको भी वह सभाके घरमें जाके उपदेश करने लगा और वहां एक मनुष्य था जिसका दहिना हाथ सूख गया था। (७) अध्यापक और फरीशी लोग उसमें दोष ठहरानेके लिये उसे ताकते थे कि वह बिश्रामके दिनमें चंगा करेगा कि नहीं। (८) पर वह उनके मनकी बातें जानता था और सूखे हाथवाले मनुष्यसे कहा उठ बीचमें खड़ा हो. वह उठके खड़ा हुआ। (९) तब योशुने उन्होंसे कहा मैं तुमसे एक बात पूछूंगा क्या बिश्रामके दिनोंमें भला करना अथवा बुरा करना प्राणको बचाना अथवा नाश करना उचित है। (१०) और उसने उन सभोंपर चारों ओर दृष्टि कर उस मनुष्यसे कहा अपना हाथ बढ़ा. उसने ऐसा किया और उसका हाथ फिर दूसरेकी नाईं भला चंगा हो गया। (११) पर वे बड़े क्रोधसे भर गये और आपसमें बोले हम योशुको क्या करें।

[यीशुका बारह प्रेरितोंको ठहराना।]

मत्ती १० : १—४।

(१२) उन दिनोंमें वह प्रार्थना करनेको पर्ब्बतपर गया और ईश्वर से प्रार्थना करनेमें सारी रात बिताई। (१३) जब बिहान

हुआ तब उसने अपने शिष्योंको अपने पास बुलाके उनमेंसे बारह जनोंको चुना जिनका नाम उसने प्रेरित भी रखा . (१४) अर्थात शिमोनको जिसका नाम उसने पितर भी रखा औ उसके भाई अन्द्रियको और याकूब औ योहनको और फिलिप औ बर्थलमईको . (१५) और मत्ती औ थोमाको और अलफईके पुत्र याकूबको औ शिमोनको जो उद्योगी कहावता है . (१६) और याकूबके भाई यिहूदाको औ यिहूदा इस्करियोतीको जो बिश्वासघातक हुआ ।

[यीशुका पहाड़ी उपदेश ।]

मत्ती ५, ६, ७ पर्ब्ब ।

(१७) तब वह उनके संग उतरके चौरस स्थानमें खड़ा हुआ और उसके बहुत शिष्य भी थे और लोगोंकी बड़ी भीड़ सारे यिहूदियासे और यिरूशलीमसे और सोर औ सीदोनके समुद्रके तीरसे जो उसकी सुननेको और अपने रोगोंसे चंगे किये जानेको आये थे . (१८) और अशुद्ध भूतोंके सताये हुए लोग भी . और वे चंगे किये जाते थे । (१९) और सब लोग उसे छूने चाहते थे क्योंकि शक्ति उससे निकलती थी और सभोंको चंगा करती थी ।

(२०) तब उसने अपने शिष्योंकी ओर दृष्टि कर कहा धन्य तुम जो दीन हो क्योंकि ईश्वरका राज्य तुम्हारा है । (२१) धन्य तुम जो अब भूखे हो क्योंकि तुम तृप्त किये जाओगे . धन्य तुम जो अब रोते हो क्योंकि तुम हंसोगे । (२२) धन्य तुम हो जब मनुष्य तुमसे बैर करें और जब वे मनुष्यके पुत्रके लिये तुम्हें अलग करें और तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हारा नाम दुष्टसा दूर करें । (२३) उस दिन आनन्दित हो और उछलो क्योंकि देखो तुम स्वर्गमें बहुत फल पाओगे . उनके पितरोंने भविष्यद्वक्ताओंसे वैसाही किया । (२४) परन्तु हाय तुम जो धनवान हो क्योंकि तुम अपनी शांति पा चुके हो । (२५) हाय

तुम जो भरपूर हो क्योंकि तुम भूखे होगे . हाय तुम जो अब हंसते हो क्योंकि तुम शोक करोगे और रोओगे। (२६) हाय तुम लोग जब सब मनुष्य तुम्हारे विषयमें भला कहें . उनके पितरोंने झूठे भविष्यद्वक्ताओंसे वैसाही किया ।

(२७) और भी मैं तुम्होंसे जो सुनते हो कहता हूं कि अपने शत्रुओंको प्यार करो . जो तुमसे बैर करें उनसे भलाई करो। (२८) जो तुम्हें स्राप देवें उनको आशीस देओ और जो तुम्हारा अपमान करें उनके लिये प्रार्थना करो । (२९) जो तुझे एक गालपर मारे उसको ओर दूसरा भी फेर दे और जो तेरा दोहर छीन लेवे उसको अंगा भी लेनेसे मत बर्जे । (३०) जो कोई तुझसे मांगे उसको दे और जो तेरी बस्तु छीन लेवे उससे फिर मत मांग । (३१) और जैसा तुम चाहते हो कि मनुष्य तुमसे करें तुम भी उनसे वैसाही करो । (३२) जो तुम उनसे प्रेम करो जो तुमसे प्रेम करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी अपने प्रेम करनेहारों से प्रेम करते हैं। (३३) और जो तुम उनसे भलाई करो जो तुमसे भलाई करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोगभी ऐसा करते हैं। (३४) और जो तुम उन्हें ऋण देओ जिनसे फिर पानेकी आशा रखते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी पापियों को ऋण देते हैं कि उतना फिर पावें । (३५) परन्तु अपने शत्रुओंको प्यार करो औ भलाई करो और फिर पानेकी आशा न रखके ऋण देओ और तुम बहुत फल पाओगे और सर्व्वप्रधान के सन्तान होगे क्योंकि वह उन्होंपर जो धन्य नहीं मानते हैं और दुष्टोंपर कृपाल है। (३६) सो जैसा तुम्हारा पिता दया-वन्त है तैसे तुम भी दयावन्त होओ ।

(३७) दूसरोंका बिचार मत करो तो तुम्हारा बिचार न किया जायगा . दोषी मत ठहराओ तो तुम दोषी न ठहराये

जाओगे. क्षमा करो तो तुम्हारी क्षमा किई जायगी। (३८) देओ तो तुमको दिया जायगा. लोग पूरा नाप दबाया और हिलाया हुआ और उभरता हुआ तुम्हारी गोदमें देंगे क्योंकि जिस नापसे तुम नापते हो उसीसे तुम्हारे लिये भी नापा जायगा। (३९) फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा क्या अन्धा अन्धेको मार्ग बता सकता है. क्या दोनों गढ़ेमें नहीं गिरेंगे। (४०) शिष्य अपने गुरुसे बड़ा नहीं है परन्तु जो कोई सिद्ध होवे सो अपने गुरुके समान होगा। (४१) जो तिनका तेरे भाईके नेत्रमें है उसे तू क्यों देखता है और जो लट्ठा तेरेही नेत्रमें है सो तुझे नहीं सूझता। (४२) अथवा तू जो आप अपने नेत्रमेंका लट्ठा नहीं देखता है क्योंकर अपने भाईसे कह सकता है कि हे भाई रहिये मैं यह तिनका जो तेरे नेत्रमें है निकालूं. हे कपटी पहिले अपने नेत्रसे लट्ठा निकाल दे तब जो तिनका तेरे भाईके नेत्रमें है उसे निकालनेको तू अच्छी रीतिसे देखेगा।

(४३) कोई अच्छा पेड़ नहीं है जो निकम्मा फल फले और कोई निकम्मा पेड़ नहीं है जो अच्छा फल फले। (४४) हर एक पेड़ अपनेही फलसे पहचाना जाता है क्योंकि लोग कांटोंके पेड़से गूलर नहीं तोड़ते और न कटैले झूड़से दाख तोड़ते हैं। (४५) भला मनुष्य अपने मनके भले भंडारसे भली बस्तु निकालता है और बुरा मनुष्य अपने मनके बुरे भंडार से बुरी बात निकालता है क्योंकि जो मनमें भरा है सोई उसका मुंह बोलता है।

(४६) तुम मुझे हे प्रभु हे प्रभु क्यों पुकारते हो और जो मैं कहता हूं सो नहीं करते। (४७) जो कोई मेरे पास आके मेरी बातें सुनके उन्हें पालन करे मैं तुम्हें बताऊंगा वह किस के समान है। (४८) वह एक मनुष्यके समान है जो घर बनाता था और उसने गहरे खोदके पत्थरपर नेव डाली और

जब बाढ़ आई तब धारा उस घरपर लगी पर उसे हिला न सकी क्योंकि उसकी नेव पत्थरपर डाली गई थी। (४९) परन्तु जो सुनके पालन न करे सो एक मनुष्यके समान है जिसने मिट्टीपर बिना नेवका घर बनाया जिसपर धारा लगी और वह तुरन्त गिर पड़ा और उस घरका बड़ा बिनाश हुआ।

[यीशुका एक शतपतिके दासको चंगा करना।]

मत्ती ८। १—१३।

७ जब यीशु लोगोंको अपनी सब बातें सुना चुका तब कफर्नाहूममें प्रवेश किया। (२) और किसी शतपतिका एक दास जो उसका प्रिय था रोगी हो मरनेपर था। (३) शतपतिने यीशुका चर्चा सुनके यिहूदियोंके कई एक प्राचीनोंको उससे यह बिन्ती करनेको उस पास भेजा कि आके मेरे दासको चंगा कीजिये। (४) उन्होंने यीशु पास आके उससे बड़े यत्नसे बिन्ती किई और कहा आप जिसके लिये यह काम करेंगे सो इसके योग्य है। (५) क्योंकि वह हमारे लोगसे प्रेम करता है और उसीने सभाका घर हमारे लिये बनाया। (६) तब यीशु उनके संग गया और वह घरसे दूर न था कि शतपतिने उस पास मित्रोंको भेजके उससे कहा हे प्रभु दुःख न उठाइये क्योंकि मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घरमें आवें। (७) इसलिये मैंने अपनेको आपके पास जानेके भी योग्य नहीं समझा परन्तु वचन कहिये तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा। (८) क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और योद्धा मेरे वशमें हैं और मैं एकको कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरेको आ तो वह आता है और अपने दासको यह कर तो वह करता है। (९) यह सुनके यीशुने उस मनुष्यपर अचंभा किया और मुंह फेरके जो बहुत लोग उसके पीछेसे आते थे उन्हों से कहा मैं तुमसे कहता हूं कि मैंने इस्रायेली लोगोंमें भी ऐसा

बड़ा बिश्वास नहीं पाया है। (१०) और जो लोग भेजे गये उन्होंने जब घरको लौटे तब उस रोगी दासको चंगा पाया।

[यीशुका नाइन नगरकी बिधवाके पुत्रको जिलाना।]

(११) दूसरे दिन यीशु नाइन नाम एक नगरको जाता था और उसके अनेक शिष्य और बहुतेरे लोग उसके संग जाते थे। (१२) ज्योंही वह नगरके फाटकके पास पहुंचा त्योंही देखो लोग एक मृतकको बाहर ले जाते थे जो अपनी मांका एक-लौता पुत्र था और वह बिधवा थी और नगरके बहुत लोग उसके संग थे। (१३) प्रभुने उसको देखके उसपर दया किई और उससे कहा मत रो। (१४) तब उसने निकट आके अर्थीको छूआ और उठानेहारे खड़े हुए और उसने कहा हे जवान मैं तुझसे कहता हूं उठ। (१५) तब मृतक उठ बैठा और बोलने लगा और यीशुने उसे उसकी मांको सौंप दिया। (१६) इससे सभोंको भय हुआ और वे ईश्वरकी स्तुति करके बोले कि हमारे बीचमें बड़ा भविष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है और कि ईश्वरने अपने लोगोंपर दृष्टि किई है। (१७) और उसके विषयमें यह बात सारे यिहूदियामें और आसपासके सारे देशमें फैल गई।

[यीशुका योहनके शिष्योंको उत्तर देना और योहनके विषयमें साक्षी देना।]

मत्ती ११ : १—१९।

(१८) योहनके शिष्योंने इन सब बातोंके विषयमें योहनसे कहा। (१९) तब उसने अपने शिष्योंमेंसे दो जनोंको बुलाके यीशु पास यह कहनेको भेजा कि जो आनेवाला था सो क्या आपही हैं अथवा हम दूसरेकी बाट जोहें। (२०) उन मनुष्योंने उस पास आ कहा योहन बपतिसमा देनेहारेने हमें आपके पास यह कहनेको भेजा है कि जो आनेवाला था सो क्या आपही हैं अथवा हम दूसरेकी बाट जोहें। (२१) उसी घड़ी यीशुने बहुतोंको जो रोगों और पीड़ाओं और दुष्ट भूतोंसे

दुःखी थे चंगा किया और बहुतसे अन्धोंको नेत्र दिये। (२२) और उसने उन्होंको उत्तर दिया कि जो कुछ तुमने देखा और सुना है सो जाके योहनसे कहो कि अन्धे देखते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालोंको सुसमाचार सुनाया जाता है। (२३) और जो कोई मेरे विषयमें ठोकर न खावे सो धन्य है।

(२४) जब योहनके दूत लोग चले गये तब यीशु योहनके विषयमें लोगोंसे कहने लगा तुम जंगलमें क्या देखनेको निकले. क्या पवनसे हिलते हुए नरकटको। (२५) फिर तुम क्या देखनेको निकले क्या सूक्ष्म वस्त्र पहिने हुए मनुष्यको . देखो जो भड़कीला वस्त्र पहिनते और सुखसे रहते हैं सो राज-भवनोंमें हैं। (२६) फिर तुम क्या देखनेको निकले क्या भविष्य-द्वक्ताको . हां मैं तुमसे कहता हूं एक मनुष्यको जो भविष्य-द्वक्तासे भी अधिक है। (२७) यह वही है जिसके विषयमें लिखा है कि देख मैं अपने दूतको तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ बनावेगा। (२८) मैं तुमसे कहता हूं कि जो स्त्रियोंसे जन्मे हैं उनमेंसे योहन बपतिसमा देनेहारेसे बड़ा भविष्यद्वक्ता कोई नहीं है परन्तु जो ईश्वरके राज्यमें अति छोटा है सो उससे बड़ा है। (२९) और सब लोगोंने जिन्होंने सुना और कर उगाहनेहारोंने योहनसे बपतिसमा लेके ईश्वरको निर्दोष ठहराया। (३०) परन्तु फरीशियों और व्यवस्थापकोंने उससे बपतिसमा न लेके ईश्वरके अभिप्रायको अपने विषयमें टाल दिया।

(३१) तब प्रभुने कहा मैं इस समयके लोगोंकी उपमा किस से देऊंगा वे किसके समान हैं। (३२) वे बालकोंके समान हैं जो बाजारमें बैठके एक दूसरेको पुकारके कहते हैं हमने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे हमने तुम्हारे

लिये बिलाप किया और तुम न रोये। (३३) क्योंकि योहन बपतिसमा देनेहारा न रोटी खाता न दाखरस पीता आया है और तुम कहते हो उसे भूत लगा है। (३४) मनुष्यका पुत्र खाता और पीता आया है और तुम कहते हो देखो पेटू और मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और पापियोंका मित्र। (३५) परन्तु ज्ञान अपने सब सन्तानोंसे निर्दोष ठहराया गया है।

[एक पापिनी स्त्रीका यीशुके पांवोंपर सुगन्ध तेल मलना।]

(३६) फरीशियोंमेंसे एकने यीशुसे बिन्ती किई कि मेरे संग भोजन कीजिये और वह फरीशीके घरमें जाके भोजन पर बैठा। (३७) और देखो उस नगरकी एक स्त्री जो पापिनी थी जब उसने जाना कि वह फरीशीके घरमें भोजनपर बैठा है तब उजले पत्थरके पात्रमें सुगन्ध तेल लाई. (३८) और पीछेसे उस के पांवों पास खड़ी हो रोते रोते उसके चरणोंको आंसूओंसे भिंगाने लगी और अपने सिरके बालोंसे पोंछा और उसके पांव चूमके उनपर सुगन्ध तेल मला। (३९) यह देखके फरीशी जिसने यीशुको बुलाया था अपने मनमें कहने लगा यह यदि भविष्यद्वक्ता होता तो जानता कि यह स्त्री जो उसको छूती है कौन और कैसी है क्योंकि वह पापिनी है। (४०) यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे शिमोन मैं तुझसे कुछ कहा चाहता हूं. वह बोला हे गुरु कहिये। (४१) किसी महाजनके दो ऋणी थे एक पांच सौ सूकी धारता था और दूसरा पचास। (४२) जब कि भर देनेको उन्होंके पास कुछ न था उसने दोनोंको क्षमा किया सो कहिये उनमेंसे कौन उसको अधिक प्यार करेगा। (४३) शिमोनने उत्तर दिया मैं समझता हूं कि वह जिसका उसने अधिक क्षमा किया. यीशुने उससे कहा तूने ठीक बिचार किया है। (४४) और स्त्रीकी ओर फिरके उसने शिमोनसे कहा तू इस स्त्रीको देखता है. मैं तेरे घरमें आया तूने मेरे

पांवोंपर जल नहीं दिया परन्तु इसने मेरे चरणोंको आंसूओंसे भिंगाया और अपने सिरके बालोंसे पोंछा है। (४५) तूने मेरा चूमा नहीं लिया परन्तु यह जबसे मैं आया तबसे मेरे पांवोंको चूम रही है। (४६) तूने मेरे सिरपर तेल नहीं लगाया परन्तु इसने मेरे पांवोंपर सुगंध तेल मला है। (४७) इसलिये मैं तुझसे कहता हूं कि उसके पाप जो बहुत हैं क्षमा किये गये हैं . कि उसने तो बहुत प्रेम किया है परन्तु जिसका थोड़ा क्षमा किया जाता है वह थोड़ा प्रेम करता है। (४८) और उसने स्त्रीसे कहा तेरे पाप क्षमा किये गये हैं। (४९) तब जो लोग उसके संग भोजनपर बैठे थे सो अपने अपने मनमें कहने लगे यह कौन है जो पापोंको भी क्षमा करता है। (५०) परन्तु उसने स्त्रीसे कहा तेरे विश्वासने तुझे बचाया है कुशलसे चली जा।

[यीशुका नगर नगरमें फिरना।]

८ इस पीछे यीशु नगर नगर और गांव गांव उपदेश करता हुआ और ईश्वरके राज्यका सुसमाचार सुनाता हुआ फिरा किया। (२) और बारहों शिष्य उसके संग थे और कितनी स्त्रियां भी जो दुष्ट भूतोंसे और रोगोंसे चंगी किई गई थीं अर्थात मरियम जो मगदलीनी कहावती है जिसमेंसे सात भूत निकल गये थे . (३) और हेरोदके भंडारी कूजाकी स्त्री योहाना और सोसन्ना और बहुतसी और स्त्रियां . ये तो अपनी संपत्तिसे उसकी सेवा करती थीं।

[बीज बोनेहारे का दृष्टान्त।]

मत्ती १३। १—२३।

(४) जब बड़ी भीड़ एकट्ठी होती थी और नगर नगरके लोग उस पास आते थे तब उसने दृष्टान्तमें कहा . (५) एक बोनेहारा अपना बीज बोनेको निकला . बीज बोनेमें कुछ

मार्गकी ओर गिरा और पांवोंसे रौंदा गया और आकाशके पंछियोंने उसे चुग लिया। (६) कुछ पत्थरपर गिरा और उपजा परन्तु तरावट न पानेसे सूख गया। (७) कुछ कांटोंके बीच में गिरा और कांटोंने एक संग बढ़के उसको दबा डाला। (८) परन्तु कुछ अच्छी भूमिपर गिरा और उपजा और सौ गुणे फल फला. यह बातें कहके उसने ऊंचे शब्दसे कहा जिसको सुननेके कान हों सो सुने।

(९) तब उसके शिष्योंने उससे पूछा इस दृष्टान्तका अर्थ क्या है. (१०) उसने कहा तुमको ईश्वरके राज्यके भेद जानने का अधिकार दिया गया है परन्तु और लोगोंसे दृष्टान्तोंमें बात होती है इस लिये कि वे देखते हुए न देखें और सुनते हुए न बूझें। (११) इस दृष्टान्तका अर्थ यह है. बीज तो ईश्वरका बचन है। (१२) मार्गकी ओरके वे हैं जो सुनते हैं तब शैतान आके उनके मनमेंसे बचन छीन लेता है ऐसा न हो कि वे बिश्वास करके त्राण पावें। (१३) पत्थरपरके वे हैं कि जब सुनते हैं तब आनन्दसे बचनको ग्रहण करते हैं परन्तु उनमें जड़ न बंधनेसे वे थोड़ी बेरलों बिश्वास करते हैं और परीक्षाके समयमें बहक जाते हैं। (१४) जो कांटोंके बीचमें गिरा सो वे हैं जो सुनते हैं पर अनेक चिन्ता और धन और जीवनके सुख बिलाससे दबते दबते दबाये जाते और पक्के फल नहीं फलते हैं। (१५) परन्तु अच्छी भूमिमेंका बीज वे हैं जो बचन सुनके भले और उत्तम मनमें रखते हैं और धीरजसे फल फलते हैं।

[दीपकका दृष्टान्त।]

मत्ती ४ : २१—२५।

(१६) कोई मनुष्य दीपकको बारके बर्त्तनसे नहीं ढांपता और न खाटके नीचे रखता है परन्तु दीवटपर रखता है कि

जो भीतर आवें सो उजियाला देखें। (१७) कुछ गुप्त नहीं है जो प्रगट न होगा और न कुछ छिपा है जो जाना न जायगा और प्रसिद्ध न होगा। (१८) इसलिये सचेत रहो तुम किस रीति से सुनते हो क्योंकि जो कोई रखता है उसको और दिया जायगा परन्तु जो कोई नहीं रखता है उससे जो कुछ वह समझता है कि मेरे पास है सो भी ले लिया जायगा।

[यीशुके कुटुम्बका वर्णन ।]

मत्ती १२ : ४६—५० ।

(१९) यीशुकी माता और उसके भाई उस पास आये परन्तु भीड़के कारण उससे भेंट नहीं कर सके। (२०) और कितनोंने उससे कह दिया कि आपकी माता और आपके भाई बाहर खड़े हुए आपको देखने चाहते हैं। (२१) उसने उनको उत्तर दिया कि मेरी माता और मेरे भाई येही लोग हैं जो ईश्वरका वचन सुनके पालन करते हैं।

[यीशुका आंधीको थांभना ।]

मत्ती ८ । २३—२७ ।

(२२) एक दिन वह और उसके शिष्य नावपर चढ़े और उसने उनसे कहा कि आओ हम झीलके उस पार चलें . सो उन्होंने खोल दिई। (२३) ज्यों वे जाते थे त्यों वह सो गया और झीलपर आंधी उठी और उनकी नाव भर जाने लगी और वे जोखिममें थे। (२४) तब उन्होंने उस पास आके उसे जगाके कहा हे गुरु हे गुरु हम नष्ट होते हैं . तब उसने उठके बयारको और जलके हिलकोरेको डांटा और वे थम गये और नीवा हो गया। (२५) और उसने उनसे कहा तुम्हारा विश्वास कहां है . परन्तु वे भयमान और अचंभित हो आपसमें बोले यह कौन है जो बयार और जलको भी आज्ञा देता है और वे उसकी आज्ञा मानते हैं।

[यीशुका गदेरा देशके एक मनुष्यमेंसे बहुत भूतोंको निकालना।]

मत्ती ८ः २८—३४।

(२६) वे गदेरियोंके देशमें जो गालीलके साम्ने उस पार है पहुंचे। (२७) जब यीशु तीरपर उतरा तब नगरका एक मनुष्य उससे आ मिला जिसको बहुत दिनोंसे भूत लगे थे और जो वस्त्र नहीं पहिनता न घरमें रहता था परन्तु कबरस्थानमें रहता था। (२८) वह यीशुको देखके चिल्लाया और उसको दंडवत कर बड़े शब्दसे कहा हे यीशु सर्व्वप्रधान ईश्वरके पुत्र आपको मुझसे क्या काम . मैं आपसे बिन्ती करता हूं कि मुझे पीड़ा न दीजिये। (२९) क्योंकि यीशुने अशुद्ध भूतको उस मनुष्यसे निकलनेको आज्ञा दिई थी . उस भूतने बहुत बार उसे पकड़ा था और वह जंजीरों और बेड़ियोंसे बंधा हुआ रखा जाता था परन्तु बंधनोंको तोड़ देता था और भूत उसे जंगलमें खदेड़ता था। (३०) यीशुने उससे पूछा तेरा नाम क्या है . उसने कहा सेना . क्योंकि बहुत भूत उसमें पैठ गये थे। (३१) और उन्होंने उससे बिन्ती किई कि हमें अथाह कुंडमें जानेकी आज्ञा न दीजिये। (३२) वहां बहुत सूअरोंका जो पहाड़पर चरते थे एक झुंड था सो उन्होंने उससे बिन्ती किई कि हमें उन्होंमें पैठने दीजिये और उसने उन्हें जाने दिया। (३३) तब भूत उस मनुष्यसे निकलके सूअरोंमें पैठे और वह झुंड कड़ाड़ेपरसे झीलमें दौड़ गया और डूब मरा। (३४) यह जो हुआ था सो देखके चरवाहे भागे और जाके नगरमें और गांवोंमें उसका समाचार कहा। (३५) और लोग यह जो हुआ था देखनेको बाहर निकले और यीशु पास आके जिस मनुष्यसे भूत निकले थे उसको यीशुके चरणोंके पास वस्त्र पहिने और सुबुद्धि बैठे हुए पाके डर गये। (३६) जिन लोगोंने देखा था उन्होंने उनसे कह दिया कि वह भूतग्रस्त मनुष्य क्योंकर चंगा

हो गया था। (३७) तब गदेराके आसपासके सारे लोगोंने योशुसे बिन्ती किई कि हमारे यहांसे चले जाइये क्योंकि उन्हें बड़ा डर लगा . सो वह नावपर चढ़के लौट गया। (३८) जिस मनुष्यसे भूत निकले थे उसने उससे बिन्ती किई कि मैं आपके संग रहूं पर योशुने उसे विदा किया . (३९) और कहा अपने घरको फिर जा और कह दे कि ईश्वरने तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं . उसने जाके सारे नगरमें प्रचार किया कि योशुने उसके लिये कैसे बड़े काम किये थे।

[योशुका एक कन्याको जिलाना और एक स्त्रीको चंगा करना।]

मार्क ५ : २१—४३।

(४०) जब योशु लौट गया तब लोगोंने उसे ग्रहण किया क्योंकि वे सब उसकी बाट जोहते थे। (४१) और देखो याईर नाम एक मनुष्य जो सभाका अध्यक्ष भी था आया और योशुके पांवों पड़के उससे बिन्ती किई कि वह उसके घर जाय। (४२) क्योंकि उसको बारह बरसकी एकलौती बेटी थी और वह मरनेपर थी . जब योशु जाता था तब भीड़ उसे दबाती थी।

(४३) और एक स्त्री जिसे बारह बरससे लोहू बहनेका रोग था जो अपनी सारी जीविका वैद्योंके पीछे उठाके किसीसे चंगी न हो सकी . (४४) तिसने पीछेसे आ उसके बस्त्रके आंचलको छूआ और उसके लोहूका बहना तुरन्त थम गया। (४५) योशुने कहा किसने मुझे छूआ . जब सब मुकर गये तब पितरने और उसके संगियोंने कहा हे गुरु लोग आपपर भीड़ लगाते और आपको दबाते हैं और आप कहते हैं किसने मुझे छूआ। (४६) योशुने कहा किसीने मुझे छूआ क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझमेंसे शक्ति निकली है। (४७) जब स्त्रीने देखा कि मैं छिपी नहीं हूं तब कांपती हुई आई और उसे दंडवत कर सब लोगोंके साम्ने उसको बताया कि उसने किस

कारणसे उसको छूआ था और क्योंकर तुरन्त चंगी हुई थी। (४८) उसने उससे कहा हे पुत्री ढाढ़स कर तेरे विश्वासने तुझे चंगा किया है कुशलसे चली जा।

(४९) वह बोलताही था कि किसीने सभाके अध्यक्षके घर से आ उससे कहा आपकी बेटी मर गई है गुरुको दुःख न दीजिये। (५०) यीशुने यह सुनके उसको उत्तर दिया कि मत डर केवल बिश्वास कर तो वह चंगी हो जायगी। (५१) घरमें आके उसने पितर और याकूब और योहन और कन्याके माता पिताको छोड़ और किसीको भीतर जाने न दिया। (५२) सब लोग कन्याके लिये रोते और छाती पीटते थे परन्तु उसने कहा मत रोओ वह मरी नहीं पर सोती है। (५३) वे यह जानके कि मर गई है उसका उपहास करने लगे। (५४) परन्तु उसने सभोंको बाहर निकाला और कन्याका हाथ पकड़के ऊंचे शब्दसे कहा हे कन्या उठ। (५५) तब उसका प्राण फिर आया और वह तुरन्त उठी और उसने आज्ञा किई कि उसे कुछ खानेको दिया जाय। (५६) उसके माता पिता विस्मित हुए पर उसने उनको आज्ञा दिई कि यह जो हुआ है किसीसे मत कहो।

[यीशुका बारह प्रेरितोंको भेजना।]

मत्ती १० । १ ।

९ यीशुने अपने बारह शिष्योंको एकट्ठे बुलाके उन्हें सब भूतोंको निकालनेका और रोगोंको चंगा करनेका सामर्थ्य और अधिकार दिया. (२) और उन्हें ईश्वरके राज्यकी कथा सुनाने और रोगियोंको चंगा करनेको भेजा। (३) और उसने उनसे कहा मार्गके लिये कुछ मत लेओ न लाठी न झोली न रोटी न रुपैये और दो दो अंगे तुम्हारे पास न होवें। (४) जिस किसी घरमें तुम प्रवेश करो उसीमें रहो और वहींसे निकल

जाओ। (५) जो कोई तुम्हें ग्रहण न करें उस नगरसे निकलते हुए उनपर साक्षी होनेके लिये अपने पांवोंकी धूल भी झाड़ डालो। (६) सो वे निकलके सर्व्वत्र सुसमाचार सुनाते और लोगोंको चंगा करते हुए गांव गांव फिरे।

[यीशुके विषयमें हेरोदकी चिन्ता।]

मत्ती १४ : १।

(७) चौथाई का राजा हेरोद सब कुछ जो यीशु करता था सुनके दुबधामें पड़ा क्योंकि कितनोंने कहा योहन मृतकोंमें से जी उठा है. (८) और कितनोंने कि एलियाह दिखाई दिया है और औरोंने कि अगले भविष्यद्वक्ताओंमेंसे एक जी उठा है। (९) और हेरोदने कहा योहनका तो मैंने सिर कटवाया परन्तु यह कौन है जिसके विषयमें मैं ऐसी बातें सुनता हूं. और उसने उसे देखने चाहा।

[यीशुका पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना।]

मत्ती १४ : १३—२१।

(१०) प्रेरितोंने फिर आके जो कुछ उन्होंने किया था सो यीशुको सुनाया और वह उन्हें संग लेके बैतसैदा नाम एक नगरके किसी जंगली स्थानमें एकान्तमें गया। (११) लोग यह जानके उसके पीछे हो लिये और उसने उन्हें ग्रहण कर ईश्वर के राज्यके विषयमें उनसे बातें किईं और जिन्होंको चंगा किये जानेका प्रयोजन था उन्हें चंगा किया।

(१२) जब दिन ढलने लगा तब बारह शिष्योंने आ उससे कहा लोगोंको बिदा कीजिये कि वे चारों ओरकी बस्तियों और गांवोंमें जाके टिकें और भोजन पावें क्योंकि हम यहां जंगली स्थानमें हैं। (१३) उसने उनसे कहा तुम उन्हें खाने को देओ. वे बोले हमारे पास पांच रोटियों और दो मछ-लियोंसे अधिक कुछ नहीं है पर हां हम जाके इन सब लोगों

के लिये भोजन मोल लेवें तो होय। (१४) वे लोग पांच सहस्र पुरुषोंके अटकल थे. उसने अपने शिष्योंसे कहा उन्हें पचास पचास करके पांति पांति बैठाओ। (१५) उन्होंने ऐसा किया और सभोंको बैठाया। (१६) तब उसने उन पांच रोटियों और दो मछलियोंको ले स्वर्गकी ओर देखके उनपर आशीस दिई और उन्हें तोड़के शिष्योंको दिया कि लोगोंके आगे रखें। (१७) सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े उन्होंसे वच रहे उनको बारह टोकरी उठाई गईं।

[पितरका स्वीकार।]

मत्ती १६। १३।

(१८) जब वह एकान्तमें प्रार्थना करता था और शिष्य लोग उसके संग थे तब उसने उनसे पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं। (१९) उन्होंने उत्तर दिया कि वे आपको योहन बपतिसमा देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने एलियाह कहते हैं और कितने कहते हैं कि अगले भविष्यद्वक्ताओंमेंसे कोई जी उठा है। (२०) उसने उनसे कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं. पितरने उत्तर दिया कि ईश्वरका अभिषिक्त जन। (२१) तब उसने उन्हें दृढ़तासे आज्ञा दिई कि यह बात किसीसे मत कहो। (२२) और उसने कहा मनुष्यके पुत्रको अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकोंसे तुच्छ किया जाय और मार डाला जाय और तीसरे दिन जी उठे।

[अपनी इच्छाको मारने और प्रतिदिन अपने क्रूशको उठानेका उपदेश।]

मत्ती १६। २४—२८।

(२३) उसने सभोंसे कहा यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे तो अपनी इच्छाको मारे और प्रतिदिन अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे। (२४) क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने

चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा । (२५) जो मनुष्य सारे जगतको प्राप्त करे और अपनेको नाश करे अथवा गंवावे उसको क्या लाभ होगा । (२६) जो कोई मुझसे और मेरी बातोंसे लजावे मनुष्य का पुत्र जब अपने और पिताके और पवित्र दूतोंके ऐश्वर्य्य में आवेगा तब उससे लजावेगा । (२७) मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उनमेंसे कोई कोई हैं कि जबलों ईश्वरका राज्य न देखें तबलों मृत्युका स्वाद न चीखेंगे ।

[यीशुका एक पर्व्वतपर शिष्योंके आगे तेजस्वी दिखाई देना ।]

मत्ती १७ । १—१३ ।

(२८) इन बातोंसे दिन आठ एकके पीछे यीशु पितर और योहन और याकूबको संग ले प्रार्थना करनेको पर्व्वतपर चढ़ गया । (२९) जब वह प्रार्थना करता था तब उसके मुंहका रूप औरही हो गया और उसका वस्त्र उजला हुआ और चमकने लगा । (३०) और देखो दो मनुष्य अर्थात मूसा और एलियाह उसके संग बात करते थे । (३१) वे तेजोमय दिखाई दिये और उसकी मृत्युकी जिसे वह यिरूशलोममें पूरी करनेपर था बात करते थे । (३२) पितर और उसके संगियोंकी आंखें नींदसे भरी थीं परन्तु वे जागते रहे और उसका ऐश्वर्य्य और उन दो मनुष्योंको जो उसके संग खड़े थे देखा । (३३) जब वे उसके पाससे जाने लगे तब पितरने यीशुसे कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है . हम तीन डेरे बनावें एक आपके लिये एक मूसाके लिये और एक एलियाहके लिये . वह नहीं जानता था कि क्या कहता था । (३४) उसके यह कहते हुए एक मेघने आ उन्हें छा लिया और जब उन दोनोंने उस मेघमें प्रवेश किया तब वे डर गये । (३५) और उस मेघसे यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उसकी सुनो । (३६) यह शब्द

होनेके पीछे यीशु अकेला पाया गया और उन्होंने इसको गुप्त रखा और जो देखा था उसकी कोई बात उन दिनोंमें किसीसे न कही।

[यीशुका एक भूतग्रस्त लड़केको चंगा करना।]

मत्ती १७ : ४—२१।

(३७) दूसरे दिन जब वे उस पर्ब्बतसे उतरे तब बहुत लोग उससे आ मिले। (३८) और देखो भीड़मेंसे एक मनुष्यने पुकारके कहा हे गुरु मैं आपसे बिन्ती करता हूं कि मेरे पुत्र पर दृष्टि कीजिये क्योंकि वह मेरा एकलौता है। (३९) और देखिये एक भूत उसे पकड़ता है और वह अचांचक चिल्लाता है और भूत उसे ऐसा मरोड़ता कि वह मुंहसे फेन बहाता है और उसे चूर कर कठिनसे छोड़ता है। (४०) और मैंने आपके शिष्योंसे बिन्ती किई कि उसे निकालें परन्तु वे नहीं सके। (४१) यीशुने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी और हठीले लोगो मैं कबलों तुम्हारे संग रहूंगा और तुम्हारी सहूंगा; अपने पुत्रको यहां ले आ। (४२) वह आताही था कि भूतने उसे पटकके मरोड़ा परन्तु यीशुने अशुद्ध भूतको डांटके लड़केको चंगा किया और उसे उसके पिताको सौंप दिया। (४३) तब सब लोग ईश्वरकी महाशक्तिसे अचंभित हुए।

(४४) जब समस्त लोग सब कामोंसे जो यीशुने किये अचंभा करते थे तब उसने अपने शिष्योंसे कहा तुम इन बातोंको अपने कानोंमें रखो क्योंकि मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके हाथमें पकड़वाया जायगा। (४५) परन्तु उन्होंने यह बात न समझी और वह उनसे छिपी थी कि उन्हें बूझ न पड़े और वे इस बातके विषयमें उससे पूछनेको डरते थे।

[ईश्वरके राज्यमें कौन बड़ा होगा।]

मत्ती १८ : १।

(४६) उन्होंमें यह बिचार होने लगा कि हममेंसे बड़ा कौन

है । (४७) यीशुने उनके मनका विचार जानके एक बालकको लेके अपने पास खड़ा किया . (४८) और उनसे कहा जो कोई मेरे नामसे इस बालकको ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करे वह मेरे भेजनेहारेको ग्रहण करता है . जो तुम सभोंमें अति छोटा है वही बड़ा होगा।

[जो हमारे विरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है ।]

मत्ती ९ : ३८—४० ।

(४९) तब योहनने उत्तर दिया कि हे गुरु हमने किसी मनुष्यको आपके नामसे भूतोंको निकालते देखा और हमने उसे वर्जा क्योंकि वह हमारे संग नहीं चलता है । (५०) यीशुने उससे कहा मत वर्जो क्योंकि जो हमारे विरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है ।

[शोमिरोनियोंकी ओर जिन्होंने उसको ग्रहण न किया यीशुकी नम्रता ।]

(५१) जब उसके उठाये जानेके दिन पहुंचे तब उसने यिरू-शलीम जानेको अपना मन दृढ़ किया। (५२) और उसने दूतोंको अपने आगे भेजा और उन्होंने जाके उसके लिये तैयारी करनेको शोमिरोनियोंके एक गांवमें प्रवेश किया। (५३) परन्तु उन लोगोंने उसे ग्रहण न किया क्योंकि वह यिरूशलोमकी ओर जानेका मुंह किये था । (५४) यह देखके उसके शिष्य याकूब और योहन बोले हे प्रभु आपकी इच्छा होय तो हम आगके आकाशसे गिरने और उन्हें नाश करनेकी आज्ञा देवें जैसा एलियाहने भी किया। (५५) परन्तु उसने पीछे फिरके उन्हें डांटके कहा क्या तुम नहीं जानते हो तुम कैसे आत्माके हो। (५६) मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके प्राण नाश करनेको नहीं परन्तु बचानेको आया है . तब वे दूसरे गांवको चले गये ।

[शिष्य होनेके विषयमें यीशुकी कथा ।]

मत्ती ८ : १८—२२ ।

(५७) जब वे मार्गमें जाते थे तब किसी मनुष्यने यीशुसे

कहा हे प्रभु जहां जहां आप जायें तहां मैं आपके पीछे चलूंगा। (५८) यीशुने उससे कहा लोमड़ियोंको मांदें और आकाशके पंछियोंको बसेरे हैं परन्तु मनुष्यके पुत्रको सिर रखनेका स्थान नहीं है। (५९) उसने दूसरेसे कहा मेरे पीछे आ. उसने कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिताको गाड़ने दीजिये। (६०) यीशुने उससे कहा मृतकोंको अपने मृतकोंको गाड़ने दे परन्तु तू जाके ईश्वरके राज्यकी कथा सुना। (६१) दूसरेने भी कहा हे प्रभु मैं आपके पीछे चलूंगा परन्तु पहिले मुझे अपने घरके लोगोंसे बिदा होने दीजिये। (६२) यीशुने उससे कहा अपना हाथ हलपर रखके जो कोई पीछे देखे सो ईश्वरके राज्यके योग्य नहीं है।

[यीशुका सत्तर शिष्योंको ठहराके भेजना।]

१० इसके पीछे प्रभुने सत्तर और शिष्योंको भी ठहराके उन्हें दो दो करके हर एक नगर और स्थानको जहां वह आप जानेपर था अपने आगे भेजा। (२) और उसने उन से कहा कटनी बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े हैं इसलिये कटनीके स्वामीसे बिन्ती करो कि वह अपनी कटनीमें बनिहारोंको भेजे। (३) जाओ देखो मैं तुम्हें मेम्नोंको नाईं हुंड़ारों के बीचमें भेजता हूं। (४) न थैली न झोली न जूते ले जाओ और मार्गमें किसीको नमस्कार मत करो। (५) जिस किसी घरमें तुम प्रवेश करो पहिले कहो इस घरका कल्याण होय। (६) यदि वहां कोई कल्याणके योग्य हो तो तुम्हारा कल्याण उसपर ठहरेगा नहीं तो तुम्हारे पास फिर आवेगा। (७) जो कुछ उन्होंके यहां मिले सोई खाते और पीते हुए उसी घर में रहो क्योंकि बनिहार अपनी बनिके योग्य है. घर घर मत फिरो। (८) जिस किसी नगरमें तुम प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण करें वहां जो कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय

से खाओ। (९) और उसमेंके रोगियोंको चंगा करो और लोगोंसे कहो कि ईश्वरका राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा है। (१०) परन्तु जिस किसी नगरमें प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण न करें उसकी सड़कोंपर जाके कहो. (११) तुम्हारे नगरकी धूल भी जो हमोंपर लगी है हम तुम्हारे आगे पोंछ डालते हैं तौभी यह जानो कि ईश्वरका राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा है। (१२) मैं तुमसे कहता हूं कि उस दिनमें उस नगरकी दशा से सदोमकी दशा सहने योग्य होगी।

(१३) हाय तू कोराजीन. हाय तू बैतसैदा. जो आश्चर्य्य कर्म्म तुम्होंमें किये गये हैं सो यदि सोर और सीदोनमें किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट पहिने राखमें बैठके पश्चात्ताप करते। (१४) परन्तु विचारके दिनमें तुम्हारी दशासे सोर और सीदोनकी दशा सहने योग्य होगी। (१५) और हे कफर्नाहूम जो स्वर्गलों ऊंचा किया गया है तू नरकलों नीचा किया जायगा। (१६) जो तुम्हारी सुनता है सो मेरी सुनता है और जो तुम्हें तुच्छ जानता है सो मुझे तुच्छ जानता है और जो मुझे तुच्छ जानता है सो मेरे भेजनेहारेको तुच्छ जानता है।

(१७) तब वे सत्तर शिष्य आनन्दसे फिर आके बोले हे प्रभु आपके नामसे भूत भी हमारे वशमें हैं। (१८) उसने उनसे कहा मैंने शैतानको बिजलीकी नाईं स्वर्गसे गिरते देखा। (१९) देखो मैं तुम्हें सांपों और बिच्छूओंको रौंदनेका और शत्रु के सारे पराक्रमपर सामर्थ्य देता हूं और किसी वस्तुसे तुम्हें कुछ हानि न होगी। (२०) तौभी इसमें आनन्द मत करो कि भूत तुम्हारे वशमें हैं परन्तु इसीमें आनन्द करो कि तुम्हारे नाम स्वर्गमें लिखे हुए हैं। (२१) उसी घड़ी यीशु आत्मामें आनन्दित हुआ और कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवीके प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तूने इन बातोंको ज्ञानवानों और

बुद्धिमानोंसे गुप्त रखा है और उन्हें बालकोंपर प्रगट किया है. हां हे पिता क्योंकि तेरी दृष्टिमें यही अच्छा लगा। (२२) मेरे पिताने मुझे सब कुछ सोंपा है और पुत्र कौन है सो कोई नहीं जानता केवल पिता और पिता कौन है सो कोई नहीं जानता केवल पुत्र और वही जिसपर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे। (२३) तब उसने अपने शिष्योंकी ओर फिरके निरालेमें कहा जो तुम देखते हो उसे जो नेत्र देखें सो धन्य हैं। (२४) क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जो तुम देखते हो उसको बहुतेरे भविष्यद्वक्ताओं और राजाओंने देखने चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो उसको सुनने चाहा पर न सुना।

[दयावन्त शोमिरोनीका दृष्टान्त।]

(२५) देखो किसी व्यवस्थापकने उठके उसकी परीक्षा करने को कहा हे गुरु कौन काम करनेसे मैं अनन्त जीवनका अधिकारी होंगा। (२६) उसने उससे कहा व्यवस्थामें क्या लिखा है. तू कैसे पढ़ता है। (२७) उसने उत्तर दिया कि तू परमेश्वर अपने ईश्वरको अपने सारे मनसे और अपने सारे प्राणसे और अपनी सारी शक्तिसे और अपनी सारी बुद्धिसे प्रेम कर और अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर। (२८) यीशुने उससे कहा तूने ठीक उत्तर दिया है. यह कर तो तू जीयेगा। (२९) परन्तु उसने अपने तईं धर्म्मी ठहरानेकी इच्छा कर यीशुसे कहा मेरा पड़ोसी कौन है। (३०) यीशुने उत्तर दिया कि एक मनुष्य यिरूशलीमसे यिरीहोको जाते हुए डाकूओंके हाथमें पड़ा जिन्होंने उसके वस्त्र उतार लिये और उसे घायल कर अधमूआ छोड़के चले गये। (३१) संयोगसे कोई याजक उस मार्गसे जाता था परन्तु उसे देखके साम्हनेसे होके चला गया। (३२) इसी रीतिसे एक लेवीय भी जब उस स्थानपर पहुंचा तब आके उसे देखा और साम्हनेसे होके चला गया। (३३) परन्तु एक शोमि-

रोनी पथिक उस स्थानपर आया और उसे देखके दया किई . (३४) और उस पास जाके उसके घावोंपर तेल और दाख रस ढालके पट्टियां बांधीं और उसे अपनेही पशुपर बैठाके सरायमें लाके उसकी सेवा किई । (३५) बिहान हुए उसने बाहर आ दो सूकी निकालके भठियारेको दिईं और उससे कहा उस मनुष्यकी सेवा कर और जो कुछ तेरा और लगेगा सो मैं जब फिर आऊंगा तब तुझे भर देऊंगा । (३६) सो तू क्या समझता है जो डाकूओंके हाथमें पड़ा उसका पड़ोसी इन तीनोंमेंसे कौन था । (३७) व्यवस्थापकने कहा वह जिसने उसपर दया किई . तब यीशुने उससे कहा जा तू भी वैसाही कर ।

[मर्था और मरियमसे यीशुकी बातचीत ।]

(३८) उन्होंके जाते हुए उसने किसी गांवमें प्रवेश किया और मर्था नाम एक स्त्रीने अपने घरमें उसकी पहुनई किई । (३९) उसकी मरियम नाम एक बहिन थी जो यीशुके चरणोंके पास बैठके उसका वचन सुनती थी । (४०) परन्तु मर्था बहुत सेवकाईमें बझी हुई थी और वह निकट आके बोली हे प्रभु क्या आपको सोच नहीं है कि मेरी बहिनने मुझे अकेली सेवा करने को छोड़ी है . इसलिये उसको आज्ञा दीजिये कि मेरी सहायता करे । (४१) यीशुने उसको उत्तर दिया हे मर्था हे मर्था तू बहुत बातोंके लिये चिन्ता करती और घबराती है । (४२) परन्तु एक बात आवश्यक है . और मरियमने उस उत्तम भागको चुना है जो उससे नहीं लिया जायगा ।

[प्रभुकी प्रार्थना ।]

मत्ती ६ । ९—१३ ।

११ जब यीशु एक स्थानमें प्रार्थना करता था ज्यों उसने समाप्ति किई त्यों उसके शिष्योंमेंसे एकने उससे कहा हे प्रभु जैसे योहनने अपने शिष्योंको सिखाया तैसे आप हमें

प्रार्थना करनेको सिखाइये। (२) उसने उनसे कहा जब तुम प्रार्थना करो तब कहो हे हमारे स्वर्गवासी पिता तेरा नाम पवित्र किया जाय तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसे स्वर्गमें वैसे पृथिवीपर पूरी होय. (३) हमारी दिनभरकी रोटी प्रति-दिन हमें दे. (४) और हमारे पापोंको क्षमा कर क्योंकि हम भी अपने हर एक ऋणीको क्षमा करते हैं और हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्टसे बचा।

[लाज छोड़के मांगनेहारेका दृष्टान्त ।]

(५) और उसने उनसे कहा तुममेंसे कौन है कि उसका एक मित्र होय और वह आधी रातको उस पास जाके उससे कहे कि हे मित्र मुझे तीन रोटी उधार दीजिये. (६) क्योंकि एक पथिक मेरा मित्र मुझ पास आया है और उसके आगे रखनेको मेरे पास कुछ नहीं है. (७) और वह भीतरसे उत्तर देवे कि मुझे दुःख न देना अब तो द्वार मूंदा गया है और मेरे बालक मेरे संग सोये हुए हैं मैं उठके तुझे नहीं दे सकता हूं। (८) मैं तुमसे कहता हूं जो वह इसलिये नहीं उसे उठके देगा कि उसका मित्र है तौभी उसके लाज छोड़के मांगनेके कारण उठके उसको जितना कुछ आवश्यक हो उतना देगा। (९) और मैं तुम्होंसे कहता हूं कि मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। (१०) क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है सो पाता है और जो खटखटाता है उसके लिये खोला जायगा। (११) तुममेंसे कौन पिता होगा जिससे पुत्र रोटी मांगे क्या वह उसको पत्थर देगा. और जो वह मछली मांगे तो क्या वह मछलीकी सन्ती उसको सांप देगा। (१२) अथवा जो वह अंडा मांगे तो क्या वह उसको बिच्छू देगा। (१३) सो यदि तुम बुरे होके

अपने लड़कोंको अच्छे दान देने जानते हो तो कितना अधिक करके स्वर्गीय पिता उन्होंको जो उससे मांगते हैं पवित्र आत्मा देगा ।

[लोगोंके अपवादका खण्डन ।]

मत्ती १२ । २२—३२ ।

(१४) यीशु एक भूतको जो गूंगा था निकालता था . जब भूत निकल गया तब वह गूंगा बोलने लगा और लोगोंने अचंभा किया। (१५) परन्तु उनमेंसे कोई कोई बोले यह तो बालजिबूल नाम भूतों के प्रधानकी सहायतासे भूतोंको निकालता है । (१६) औरों ने उसकी परीक्षा करनेको उससे आकाशका एक चिन्ह मांगा । (१७) पर उसने उनके मनकी बातें जानके उनसे कहा जिस जिस राज्यमें फूट पड़ी है वह राज्य उजड़ जाता है और घरसे घर जो बिगड़ता है सो नाश होता है । (१८) और यदि शैतानमें भी फूट पड़ी है तो उसका राज्य क्योंकर ठहरेगा . तुम लोग तो कहते हो कि मैं बालजिबूलकी सहायतासे भूतोंको निकालता हूं । (१९) पर यदि मैं बालजिबूलकी सहायता से भूतोंको निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किसकी सहायता से निकालते हैं . इसलिये वे तुम्हारे न्याय करनेहारे होंगे। (२०) परन्तु जो मैं ईश्वरकी उंगलीसे भूतोंको निकालता हूं तो अवश्य ईश्वरका राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है । (२१) जब हथियार बांधे हुए बलवन्त अपने घरकी रखवाली करता है तब उसकी सम्पत्ति कुशलसे रहती है । (२२) परन्तु जब वह जो उससे अधिक बलवन्त है उसपर आ पहुंचकर उसे जीतता है तब उसके सम्पूर्ण हथियार जिनपर वह भरोसा रखता था छीन लेता और उसका लूटा हुआ धन बांटता है । (२३) जो मेरे संग नहीं है सो मेरे विरुद्ध है और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो बिथराता है ।

[विदूदियोंकी बुरी दशा।]

(२४) जब अशुद्ध भूत मनुष्यसे निकल जाता है तब सूखे स्थानोंमें बिश्राम ढूंढ़ता फिरता है परन्तु जब नहीं पाता तब कहता है कि मैं अपने घरमें जहांसे निकला फिर जाऊंगा। (२५) और वह आके उसे झाड़ा बुहारा सुथरा पाता है। (२६) तब वह जाके अपनेसे अधिक दुष्ट सात और भूतोंको ले आता है और वे भीतर पैठके वहां बास करते हैं और उस मनुष्यको पिछली दशा पहिलीसे बुरी होती है।

[धन्य कौन हैं उसका वर्णन।]

मत्ती १२। ३८—४२।

(२७) वह यह बातें कहताही था कि भीड़मेंसे किसी स्त्रीने ऊंचे शब्दसे उससे कहा धन्य वह गर्भ जिसने तुझे धारण किया और वे स्तन जो तूने पिये। (२८) उसने कहा हां पर वेही धन्य हैं जो ईश्वरका बचन सुनके पालन करते हैं।

[यूनस भविष्यद्वक्ताका चिन्ह।]

(२९) जब बहुत लोगोंकी भीड़ एकट्ठी होने लगी तब वह कहने लगा कि इस समयके लोग दुष्ट हैं. वे चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उनको नहीं दिया जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ताका चिन्ह। (३०) जैसा यूनस निनिवीय लोगोंके लिये चिन्ह था वैसाही मनुष्यका पुत्र इस समयके लोगोंके लिये होगा। (३१) दक्षिणकी राणी बिचारके दिनमें इस समयके मनुष्योंके संग उठके उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमानका ज्ञान सुननेको पृथिवीके अन्तसे आई और देखो यहां एक है जो सुलेमानसे भी बड़ा है। (३२) निनिवीके लोग बिचारके दिनमें इस समयके लोगोंके संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्होंने यूनसका उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया और देखो यहां एक है जो यूनससे भी बड़ा है।

[दीपकका दृष्टान्त ।]

(३३) कोई मनुष्य दीपकको बारके गुप्तमें अथवा बर्त्तनके नीचे नहीं रखता है परन्तु दीवटपर कि जो भीतर आवें सो उजियाला देखें। (३४) शरीरका दीपक आंख है इसलिये जब तेरी आंख निर्मल है तब तेरा सकल शरीर भी उजियाला है परन्तु जब वह बुरी है तब तेरा शरीर भी अंधियारा है। (३५) सो देख लो कि जो ज्योति तुझमें है सो अंधकार न होवे। (३६) यदि तेरा सकल शरीर उजियाला हो और उसका कोई अंश अंधियारा न हो तो जैसा कि जब दीपक अपनी चमकसे तुझे ज्योति देवे तैसाही वह सब प्रकाशमान होगा।

[यीशुका फरीशियों और अध्यापकोंको उलहना देना।]

मत्ती २३ : १।

(३७) जब यीशु बात करता था तब किसी फरीशीने उससे बिन्ती किई कि मेरे यहां भोजन कीजिये और वह भीतर जाके भोजनपर बैठा। (३८) फरीशीने जब देखा कि उसने भोजनके पहिले नहीं धोया तब अचंभा किया। (३९) प्रभुने उससे कहा अब तुम फरीशी लोग कटोरे और थालको बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु तुम्हारा अन्तर अन्धेर और दुष्टतासे भरा है। (४०) हे निर्बुद्धि लोगो जिसने बाहरको बनाया क्या उसने भीतरको भी नहीं बनाया। (४१) परन्तु भीतरवाली वस्तुओंको दान करो तो देखो तुम्हारे लिये सब कुछ शुद्ध है। (४२) परन्तु हाय तुम फरीशियो तुम पोदीने और आरूदेका और सब भांतिके साग पातका दसवां अंश देते हो परन्तु न्यायको और ईश्वरके प्रेमको उल्लंघन करते हो. इन्हें करना और उन्हें न छोड़ना उचित था। (४३) हाय तुम फरीशियो तुम्हें सभाके घरोंमें ऊंचे आसन और बाजारोंमें नमस्कार प्रिय लगते

हैं। (४४) हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम उन कवरोंके समान हो जो दिखाई नहीं देतीं और मनुष्य जो उनके ऊपरसे चलते हैं नहीं जानते हैं।

(४५) तब व्यवस्थापकोंमेंसे किसीने उसको उत्तर दिया कि हे गुरु यह बातें कहनेसे आप हमोंकी भी निन्दा करते हैं। (४६) उसने कहा हाय तुम व्यवस्थापको भी तुम बोझे जिनको उठाना कठिन है मनुष्योंपर लादते हो परन्तु तुम आप उन बोझोंको अपनी एक उंगलीसे नहीं छूते हो। (४७) हाय तुम लोग तुम भविष्यद्वक्ताओंकी कबरें बनाते हो जिन्हें तुम्हारे पितरोंने मार डाला। (४८) सो तुम अपने पितरोंके कामोंपर साक्षी देते हो और उनमें सम्मति देते हो क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मार डाला और तुम उनकी कबरें बनाते हो। (४९) इसलिये ईश्वरके ज्ञानने कहा है कि मैं उन्होंके पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितोंको भेजूंगा और वे उनमेंसे कितनों को मार डालेंगे और सतावेंगे. (५०) कि हाबिलके लोहूसे लेके जिखरियाहके लोहू तक जो बेदी और मन्दिरके बीचमें घात किया गया जितने भविष्यद्वक्ताओंका लोहू जगतकी उत्पत्तिसे बहाया जाता है सबका लेखा इस समयके लोगोंसे लिया जाय। (५१) हां मैं तुमसे कहता हूं उसका लेखा इसी समयके लोगोंसे लिया जायगा। (५२) हाय तुम व्यवस्थापको तुमने ज्ञानकी कुंजी ले लिई है. तुमने आपही प्रवेश नहीं किया है और प्रवेश करनेहारोंको बर्जा है।

(५३) जब वह उन्होंसे यह बातें कहता था तब अध्यापक और फरीशी लोग निपट बैर करने और बहुत बातोंके विषयमें उसे कहवाने लगे. (५४) और दांव ताकते हुए उसके मुंहसे कुछ पकड़ने चाहते थे कि उसपर दोष लगावें।

[यीशुका अपने शिष्योंको कपटके विषय चिताना ।]

१२ उस समयमें सहस्रों लोग एकट्ठे हुए यहांलों कि एक दूसरेपर गिरे पड़ते थे इसपर यीशु अपने शिष्योंसे पहिले कहने लगा कि फरीशियोंके खमीरसे अर्थात कपटसे चौकस रहो। (२) कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा। (३) इसलिये जो कुछ तुमने अंधियारेमें कहा है सो उजियालेमें सुना जायगा और जो तुमने कोठरियोंमें कानोंमें कहा है सो कोठोंपरसे प्रचार किया जायगा।

[यीशुका बतलाना कि किससे डरना चाहिये ।]

मत्ती १० । २८—३३ ।

(४) मै तुम्होंसे जो मेरे मित्र हो कहता हूं कि जो शरीरको मार डालते हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते हैं उनसे मत डरो। (५) मैं तुम्हें बताऊंगा तुम किससे डरो. घात करनेके पीछे नरकमें डालनेका जिसको अधिकार है उसीसे डरो. हां मैं तुमसे कहता हूं उसीसे डरो। (६) क्या दो पैसेमें पांच गौरैया नहीं बिकतीं तौभी ईश्वर उनमेंसे एकको भी नहीं भूलता है। (७) परन्तु तुम्हारे सिरके बाल भी सब गिने हुए हैं इसलिये मत डरो तुम बहुत गौरैयाओंसे अधिक मोलके हो। (८) मैं तुमसे कहता हूं जो कोई मनुष्योंके आगे मुझे मान लेवे उसे मनुष्यका पुत्र भी ईश्वरके दूतोंके आगे मान लेगा। (९) परन्तु जो मनुष्योंके आगे मुझे नकारे सो ईश्वरके दूतोंके आगे नकारा जायगा। (१०) जो कोई मनुष्यके पुत्रके विरोधमें बात कहे वह उसके लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो पवित्र आत्माकी निन्दा करे वह उसके लिये नहीं क्षमा किई जायगी। (११) जब लोग तुम्हें सभाओं और अध्यक्षों और अधिकारियोंके आगे ले जावें

तब किस रीतिसे अथवा क्या उत्तर देओगे अथवा क्या कहोगे इसकी चिन्ता मत करो। (१२) क्योंकि जो कुछ कहना उचित होगा सो पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखावेगा।

[निर्बुद्धि धनवानका दृष्टान्त।]

(१३) भीड़मेंसे किसीने उससे कहा हे गुरु मेरे भाईसे कहिये कि पिताका धन मेरे संग बांट लेवे। (१४) उसने उससे कहा हे मनुष्य किसने मुझे तुम्हींपर न्यायी अथवा बांटने-हारा ठहराया। (१५) और उसने लोगोंसे कहा देखो लोभसे बचे रहो क्योंकि किसीको धन बहुत होय तौभी उसका जीवन उसके धनसे नहीं है। (१६) उसने उन्होंसे एक दृष्टान्त भी कहा कि किसी धनवान मनुष्यकी भूमिमें बहुत कुछ उपजा। (१७) तब वह अपने मनमें बिचार करने लगा कि मैं क्या करूं क्योंकि मुझको अपना अन्न रखनेका स्थान नहीं है। (१८) और उसने कहा मैं यही करूंगा मैं अपनी बखारियां तोड़के बड़ी बड़ी बनाऊंगा और वहां अपना सब अन्न और अपनी सम्पत्ति रखूंगा। (१९) और मैं अपने मनसे कहूंगा हे मन तेरे पास बहुत बरसोंके लिये बहुत सम्पत्ति रखी हुई है बिश्राम कर खा पी सुखसे रह। (२०) परन्तु ईश्वरने उससे कहा हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझसे ले लिया जायगा तब जो कुछ तूने एकट्ठा किया है सो किसका होगा। (२१) जो अपने लिये धन बटोरता है और ईश्वरकी ओर धनी नहीं है सो ऐसाही है।

[संसारमें मन लगानेका निषेध।]

मत्ती ६। [illegible]।

(२२) फिर उसने अपने शिष्योंसे कहा इसलिये मैं तुमसे कहता हूं अपने प्राणके लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे न शरीरके लिये कि क्या पहिरेंगे। (२३) भोजनसे प्राण

और वस्त्रसे शरीर बड़ा है । (२४) कौवोंको देख लो . वे न बोते हैं न लवते हैं उनको न भंडार न खत्ता है तौभी ईश्वर उनको पालता है . तुम पंछियोंसे कितने बड़े हो । (२५) तुम मेंसे कौन मनुष्य चिन्ता करनेसे अपनी आयुको डीढ़को एक हाथ भी बढ़ा सकता है । (२६) सो यदि तुम अति छोटा काम भी नहीं कर सकते हो तो और बातोंके लिये क्यों चिन्ता करते हो । (२७) सोसन फूलोंको देख लो वे कैसे बढ़ते हैं . वे न परिश्रम करते हैं न कातते हैं परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे विभवमें उनमेंसे एकके तुल्य विभूषित न था । (२८) यदि ईश्वर घासको जो आज खेतमें है और कल चूल्हेमें झोंकी जायगी ऐसी विभूषित करता है तो हे अल्पविश्वासियो कितना अधिक करके वह तुम्हें पहिरावेगा । (२९) तुम यह खोज मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे और न सन्देह करो । (३०) जगतके देव-पूजक लोग इन सब वस्तुओंका खोज करते हैं और तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन वस्तुओंका प्रयोजन है । (३१) परन्तु ईश्वरके राज्यका खोज करो तब यह सब वस्तु भी तुम्हें दिई जायेंगीं । (३२) हे छोटे झुंड मत डरो क्योंकि तुम्हारे पिताको तुम्हें राज्य देनेमें प्रसन्नता है । (३३) अपनी सम्पत्ति बेचके दान करो . अजर थैलियां और अक्षय धन अपने लिये स्वर्गमें एकट्ठा करो जहां चोर नहीं पहुंचता है और न कीड़ा बिगाड़ता है । (३४) क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा ।

[सचेत रहनेका उपदेश और दासोंका दृष्टान्त ।]

मत्ती २४ । ४३—५१ ।

(३५) तुम्हारी कमरें बंधी और दीपक जलते रहें । (३६) और तुम उन मनुष्योंके समान होओ जो अपने स्वामीकी बाट देखते हैं कि वह विवाहसे कब लौटेगा इसलिये कि जब वह आके द्वार

खटखटावे तब वे उसके लिये तुरन्त खोलें। (३७) वे दास धन्य हैं जिन्हें स्वामी आके जागते पावे. मैं तुमसे सच कहता हूं वह कमर बांधके उन्हें भोजनपर बैठावेगा और आके उनकी सेवा करेगा। (३८) जो वह दूसरे पहर आवे अथवा तीसरे पहर आवे और ऐसाही पावे तो वे दास धन्य हैं। (३९) तुम यह जानते हो कि यदि घरका स्वामी जानता चोर किस घड़ी आवेगा तो वह जागता रहता और अपने घरमें सेंध पड़ने न देता। (४०) इसलिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ीका अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्यका पुत्र आवेगा। (४१) तब पितरने उससे कहा हे प्रभु क्या आप हमोंसे अथवा सब लोगों से भी यह दृष्टान्त कहते हैं। (४२) प्रभुने कहा वह बिश्वासयोग्य और बुद्धिमान भंडारी कौन है जिसे स्वामी अपने परिवारपर प्रधान करेगा कि समयमें उन्हें सीधा देवे। (४३) वह दास धन्य है जिसे उसका स्वामी आके ऐसा करते पावे। (४४) मैं तुमसे सच कहता हूं वह उसे अपनी सब सम्पत्तिपर प्रधान करेगा। (४५) परन्तु जो वह दास अपने मनमें कहे कि मेरा स्वामी आनेमें बिलंब करता है और दासों और दासियोंको मारने लगे और खाने पीने और मतवाला होने लगे. (४६) तो जिस दिन वह बाट जोहता न रहे और जिस घड़ीका वह अनुमान न करे उसीमें उस दासका स्वामी आवेगा और उसको बड़ी ताड़ना देके अबिश्वासियोंके संग उसका अंश देगा। (४७) वह दास जो अपने स्वामीकी इच्छा जानता था परन्तु तैयार न रहा और उसकी इच्छाके समान न किया बहुतसी मार खायगा परन्तु जो नहीं जानता था और मार खानेके योग्य काम किया सो थोड़ीसी मार खायगा। (४८) और जिस किसीको बहुत दिया गया है उससे बहुत मांगा जायगा और जिसको लोगोंने बहुत सौंपा है उससे वे अधिक मांगेंगे।

[अवैये दुःखोंको आगमबाणी ।]

(४९) मैं पृथिवीपर आग लगाने आया हूं और मैं क्या चाहता हूं केवल यह कि अभी सुलग जाती। (५०) मुझे एक बपतिसमा लेना है और जबलों वह सम्पूर्ण न होय तबलों मैं कैसे सकेतेमें हूं। (५१) क्या तुम समझते हो कि मैं पृथिवीपर मिलाप करवाने आया हूं. मैं तुमसे कहता हूं सो नहीं परन्तु फूट। (५२) क्योंकि अबसे एक घरमें पांच जन अलग अलग होंगे तीन दोके बिरुद्ध और दो तीनके बिरुद्ध। (५३) पिता पुत्रके बिरुद्ध और पुत्र पिताके बिरुद्ध मां बेटीके बिरुद्ध और बेटी मांके बिरुद्ध सास अपनी पतोहके बिरुद्ध और पतोह अपनी सासके बिरुद्ध अलग अलग होंगे।

[उस समयके चिन्ह ।]

(५४) और भी उसने लोगोंसे कहा जब तुम मेघको पश्चिम से उठते देखते हो तब तुरन्त कहते हो कि झड़ी आती है और ऐसा होता है। (५५) और जब दक्षिणकी बयार चलते देखते हो तब कहते हो कि घाम होगा और वह भी होता है। (५६) हे कपटियो तुम धरती और आकाशका रूप चीन्ह सकते हो परन्तु इस समयको क्योंकर नहीं चीन्हते हो। (५७) और जो उचित है उसको तुम आपहीसे क्यों नहीं बिचार करते हो। (५८) जब तू अपने मुद्दईके संग अध्यक्षके पास जाता है मार्गहीमें उससे छूटनेका यत्न कर ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायीके पास खींच ले जाय और न्यायी तुझे प्यादेको सौंपे और प्यादा तुझे बन्दीगृहमें डाले। (५९) मैं तुझसे कहता हूं कि जबलों तू कौड़ी कौड़ी भर न देवे तबलों वहांसे छूटने न पावेगा।

[पश्चात्ताप करनेकी आवश्यकता ।]

१३ उस समयमें कितने लोग आ पहुंचे और उन गालीलियों के विषयमें जिनका लोहू पिलातने उनके बलिदानोंके

संग मिलाया था यीशुसे बात करने लगे। (२) उसने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम समझते हो कि ये गालीली लोग सब गालीलियोंसे अधिक पापी थे कि उन्होंपर ऐसी बिपत्ति पड़ी॥ (३) मैं तुमसे कहता हूं सो नहीं परन्तु जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीतिसे नष्ट होगे। (४) अथवा क्या तुम समझते हो कि वे अठारह जन जिन्होंपर शीलोहमें गुम्मट गिर पड़ा और उन्हें नाश किया सब मनुष्योंसे जो यिरूशलोममें रहते थे अधिक अपराधी थे। (५) मैं तुमसे कहता हूं सो नहीं परन्तु जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीतिसे नष्ट होगे।

[निष्फल गूलर बृक्षका दृष्टान्त।]

(६) उसने यह दृष्टान्त भी कहा कि किसी मनुष्यकी दाख की बारीमें एक गूलरका बृक्ष लगाया गया था और उसने आके उसमें फल ढूंढ़ा पर न पाया। (७) तब उसने मालीसे कहा देख मैं तीन बरससे आके इस गूलरके बृक्षमें फल ढूंढ़ता हूं पर नहीं पाता हूं. उसे काट डाल वह भूमिको क्यों निकम्मी करता है। (८) मालीने उसको उत्तर दिया कि हे स्वामी उसको इस बरस भी रहने दीजिये जबलों मैं उसका थाला खोदके खाद भरूं। (९) तब जो उसमें फल लगे तो भला. नहीं तो पीछे उसे कटवा डालिये।

[यीशुका एक कुबड़ी स्त्रीको चंगा करना और विश्रामवार के विषयमें निर्णय करना।]

(१०) बिश्रामके दिन यीशु एक सभाके घरमें उपदेश करता था। (११) और देखो एक स्त्री थी जिसे अठारह बरससे एक दुर्बल करनेवाला भूत लगा था और वह कुबड़ी थी और किसी रीतिसे अपनेको सीधी न कर सकती थी। (१२) यीशु ने उसे देखके अपने पास बुलाया और उससे कहा हे नारी

तू अपनी दुर्बलतासे छुड़ाई गई है। (१३) तब उसने उसपर हाथ रखा और वह तुरन्त सीधी हुई और ईश्वरकी स्तुति करने लगी। (१४) परन्तु यीशुने बिस्रामके दिनमें चंगा किया इससे सभाका अध्यक्ष रिसियाने लगा और उत्तर दे लोगोंसे कहा छः दिन हैं जिनमें काम करना उचित है सो उन दिनों में आके चंगे किये जाओ और बिस्रामके दिनमें नहीं। (१५) प्रभुने उसको उत्तर दिया कि हे कपटी क्या बिस्रामके दिन तुम्होंमेंसे हर एक अपने बैल अथवा गदहेको थानसे खोलके जल पिलानेको नहीं ले जाता। (१६) और क्या उचित न था कि यह स्त्री जो इब्राहीमकी पुत्री है जिसे शैतानने देखो अठारह बरससे बांध रखा था बिस्रामके दिन में इस बंधनसे खोली जाय। (१७) जब उसने यह बातें कहीं तब उसके सब बिरोधी लज्जित हुए और समस्त लोग सबै प्रतापके कर्म्मोंके लिये जो वह करता था आनन्दित हुए।

[राईके दाने और खमीरके दृष्टान्त ।]

मत्ती १३ । ३१—३३ ।

(१८) फिर उसने कहा ईश्वरका राज्य किसके समान है और मैं उसकी उपमा किससे देऊंगा। (१९) वह राईके एक दानेकी नाईं है जिसे किसी मनुष्यने लेके अपनी बारीमें बोया और वह बढ़ा और बड़ा पेड़ हो गया और आकाशके पंछियोंने उसकी डालियोंपर बसेरा किया। (२०) उसने फिर कहा मैं ईश्वर के राज्यकी उपमा किससे देऊंगा। (२१) वह खमीरकी नाईं है जिसको किसी स्त्रीने लेके तीन पसेरी आटेमें छिपा रखा यहांलों कि सब खमीर हो गया।

[सकेत फाटकसे पैठनेका उपदेश ।

(२२) वह उपदेश करता हुआ नगर नगर और गांव गांव होके यिरूशलीमकी ओर जाता था। (२३) तब किसीने उससे

कहा हे प्रभु क्या त्राण पानेहारे थोड़े हैं। (२४) उसने उन्होंसे कहा सकेत फाटकसे प्रवेश करनेको साहस करो क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि बहुत लोग प्रवेश करने चाहेंगे और नहीं सकेंगे। (२५) जब घरका स्वामी उठके द्वार मूंद चुकेगा और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाने लगोगे और कहोगे हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये और वह तुम्हें उत्तर देगा मैं तुम्हें नहीं जानता हूं तुम कहांके हो. (२६) तब तुम कहने लगोगे कि हम लोग आपके साम्ने खाते औ पीते थे और आपने हमारी सड़कोंमें उपदेश किया। (२७) परन्तु वह कहेगा मैं तुमसे कहता हूं मैं तुम्हें नहीं जानता हूं तुम कहांके हो. हे कुकर्म्म करनेहारो तुम सब मुझसे दूर होओ। (२८) वहां रोना औ दांत पीसना होगा कि उस समय तुम इब्राहीम और इसहाक और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओंको ईश्वरके राज्यमें बैठे हुए और अपनेको बाहर निकाले हुए देखोगे। (२९) और लोग पूर्ब्ब और पश्चिम और उत्तर और दक्षिणसे आके ईश्वरके राज्यमें बैठेंगे। (३०) और देखो कितने पिछले हैं जो अगले होंगे और कितने अगले हैं जो पिछले होंगे।

[हेरोदपर उलहना और यिरूशलीमके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी।]

(३१) उसी दिन कितने फरीशियोंने आके उससे कहा यहां से निकलके चला जा क्योंकि हेरोद तुझे मार डालने चाहता है। (३२) उसने उनसे कहा जाके उस लोमड़ीसे कहो कि देखो मैं आज और कल भूतोंको निकालता और रोगियोंको चंगा करता हूं और तीसरे दिन सिद्ध होंगा। (३३) तौभी आज और कल और परसों फिरना मुझे अवश्य है क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यिरूशलीमके बाहर नाश किया जाय। (३४) हे यिरूशलीम यिरूशलीम जो भविष्यद्वक्ताओंको मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरवाह

करती है जैसे मुर्गी अपने बच्चोंको पंखोंके नीचे एकट्ठे करती है वैसेही मैंने कितनी बेर तेरे बालकोंको एकट्ठे करनेको इच्छा किई परन्तु तुमने न चाहा। (३५) देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है और मैं तुमसे सच कहता हूं जिस समयमें तुम कहोगे धन्य वह जो परमेश्वरके नामसे आता है वह समय जबलों न आवे तबलों तुम मुझे फिर न देखोगे।

[यीशुका विश्रामके दिनमें एक जलंधरीको चंगा करना।]

१४ जब यीशु विश्रामके दिन प्रधान फरीशियोंमेंसे किसीके घरमें रोटी खानेको गया तब वे उसको ताकते थे। (२) और देखो एक मनुष्य उसके साम्हने था जिसे जलंधर रोग था। (३) इसपर यीशुने व्यवस्थापकों और फरीशियोंसें कहा क्या विश्रामके दिनमें चंगा करना उचित है. परन्तु वे चुप रहे। (४) तब उसने उस मनुष्यको लेके चंगा करके बिदा किया. (५) और उन्हें उत्तर दिया कि तुममेंसे किसका गदहा अथवा बैल कूएमें गिरेगा और वह तुरन्त बिश्रामके दिनमें उसे न निकालेगा। (६) वे उसको इन बातोंका उत्तर नहीं दे सके।

[नेवतहरियों और नेवता करनेके दृष्टान्त।]

(७) जब उसने देखा कि नेवतहरी लोग क्योंकर ऊंचे ऊंचे स्थान चुन लेते हैं तब एक दृष्टान्त दे उन्होंसे कहा. (८) जब कोई तुझे विवाहके भोजमें बुलावे तब ऊंचे स्थानमें मत बैठ ऐसा न हो कि उसने तुझसे अधिक आदरके योग्य किसीको बुलाया हो. (९) और जिसने तुझे और उसे नेवता दिया सो आके तुझसे कहे कि इस मनुष्यको स्थान दीजिये और तब तू लज्जित हो सबसे नीचा स्थान लेने लगे। (१०) परन्तु जब तू बुलाया जाय तब सबसे नीचे स्थानमें जाके बैठ इसलिये

कि जब वह जिसने तुझे नेवता दिया है आवे तब तुझसे कहे हे मित्र और ऊपर आइये . तब तेरे संग बैठनेहारोंके साम्ने तेरा आदर होगा । (११) क्योंकि जो कोई अपनेको ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो अपनेको नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा ।

(१२) तब जिसने उसे नेवता दिया था उसने उससे भी कहा जब तू दिनका अथवा रातका भोजन बनावे तब अपने मित्रों वा अपने भाइयों वा अपने कुटुंबों वा धनवान पड़ोसियोंको मत बुला ऐसा न हो कि वे भी इसके बदले तुझे नेवता देवें और यही तेरा प्रतिफल होय । (१३) परन्तु जब तू भोज करे तब कंगालों टुंडों लंगड़ों और अन्धोंको बुला । (१४) और तू धन्य होगा क्योंकि वे तुझे प्रतिफल नहीं दे सकते हैं परन्तु धर्म्मियोंके जी उठनेपर प्रतिफल तुझको दिया जायगा ।

[बड़ी बियारीका दृष्टान्त ।]

मत्ती २२ : १—१४ ।

(१५) उसके संग बैठनेहारोंमेंसे एकने यह बातें सुनके उससे कहा धन्य वह जो ईश्वरके राज्यमें रोटी खायगा । (१६) उसने उससे कहा किसी मनुष्यने बड़ी बियारी बनाई और बहुतोंको बुलाया । (१७) बियारीके समयमें उसने अपने दासके हाथ नेवतहरियोंको कहला भेजा कि आओ सब कुछ अब तैयार है । (१८) परन्तु वे सब एक मत होके क्षमा मांगने लगे . पहिलेने उस दाससे कहा मैंने कुछ भूमि मोल लिई है और उसे जाके देखना मुझे अवश्य है मैं तुझसे बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा । (१९) दूसरेने कहा मैंने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं और उन्हें परखनेको जाता हूं मैं तुझसे बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा । (२०) तीसरेने कहा मैंने बिवाह किया है इसलिये मैं नहीं आ सकता हूं । (२१) उस दासने आके अपने स्वामीको

यह बातें सुनाईं तब घरके स्वामीने क्रोध कर अपने दाससे कहा नगरकी सड़कों और गलियोंमें शीघ्र जाके कंगालों औ टुंडों औ लंगड़ों और अन्धोंको यहां ले आ। (२२) दासने फिर कहा हे स्वामी जैसे आपने आज्ञा दिई तैसे किया गया है और अब भी जगह है। (२३) स्वामीने दाससे कहा राजपथोंमें और गाछोंके नीचे जाके लोगोंको बिन लानेसे मत छोड़ कि मेरा घर भर जावे। (२४) क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि उन नेवते हुए मनुष्योंमेंसे कोई मेरी बियारी न चीखेगा।

[यीशुके शिष्य होनेमें जो दुःख सहना होगा उसे आगे से विचार करनेका दृष्टान्त।]

(२५) बड़ी भीड़ यीशुके संग जाती थी और उसने पीछे फिरके उन्होंसे कहा. (२६) यदि कोई मेरे पास आवे और अपनी माता और पिता और स्त्री और लड़कों और भाइयों और बहिनोंको हां और अपने प्राणको भी अप्रिय न जाने तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। (२७) और जो कोई अपना क्रूश उठाये हुए मेरे पीछे न आवे वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। (२८) तुममेंसे कौन है कि गढ़ बनाने चाहता हो और पहिले बैठके खर्च न जोड़े कि समाप्ति करनेको बिसात मुझे है कि नहीं। (२९) ऐसा न हो कि जब वह नेव डालके समाप्ति न कर सके तब सब देखनेहारे उसे ठट्ठेमें उड़ाने लगें. (३०) और कहें यह मनुष्य बनाने लगा परन्तु समाप्ति नहीं कर सका। (३१) अथवा कौन राजा है कि दूसरे राजासे लड़ाई करनेको जाता हो और पहिले बैठके बिचार न करे कि जो बीस सहस्र लेके मेरे बिरुद्ध आता है मैं दस सहस्र लेके उसका साम्हना कर सकता हूं कि नहीं। (३२) और जो नहीं तो उसके दूर रहतेहो वह दूतोंको भेजके मिलाप चाहता है। (३३) इसी रीतिसे तुम्होंमेंसे जो कोई अपना सर्बस्व त्यागन

न करे वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है । (३४) लोण अच्छा है परन्तु यदि लोणका स्वाद बिगड़ जाय तो वह किससे स्वादित किया जायगा । (३५) वह न भूमिके न खादके लिये काम आता है . लोग उसे बाहर फेंकते हैं . जिसको सुननेके कान हों सो सुने ।

[खोई हुई भेड़ और खोई हुई सूकीके दृष्टान्त ।]

१५ कर उगाहनेहारे और पापी लोग सब यीशु पास आते थे कि उसकी सुनें । (२) और फरीशी और अध्यापक कुड़कुड़ाके कहने लगे यह तो पापियोंको ग्रहण करता और उनके संग खाता है । (३) तब उसने उन्होंसे यह दृष्टान्त कहा . (४) तुममेंसे कौन मनुष्य है कि उसकी सौ भेड़ हों और उसने उनमेंसे एकको खोया हो और वह निन्नानवेको जंगलमें न छोड़े और जबलों उस खोई हुईको न पावे तब लों उसके खोजमें न जाय । (५) और वह उसे पाके आनन्द से अपने कांधोंपर रखता है . (६) और घरमें आके मित्रों औ पड़ोसियोंको एकट्ठे बुलाके उन्होंसे कहता है मेरे संग आनन्द करो कि मैंने अपनी खोई हुई भेड़ पाई है । (७) मैं तुमसे कहता हूं कि इसी रीतिसे जिन्हें पश्चात्ताप करनेका प्रयोजन न होय ऐसे निन्नानवे धर्म्मियोंसे अधिक एक पापीके लिये जो पश्चात्ताप करे स्वर्गमें आनन्द होगा ।

(८) अथवा कौन स्त्री है कि उसकी दस सूकी हों और वह जो एक सूकी खोवे तो दीपक बारके औ घर बुहारके उसे जब लों न पावे तबलों यत्नसे न ढूंढ़े । (९) और वह उसे पाके सखियों औ पड़ोसिनियोंको एकट्ठी बुलाके कहती है मेरे संग आनन्द करो कि मैंने जो सूकी खोई थी सो पाई है । (१०) मैं तुमसे कहता हूं कि इसी रीतिसे एक पापीके लिये जो पश्चात्ताप करता है ईश्वरके दूतोंमें आनन्द होता है ।

[उड़ाऊ पुत्रका दृष्टान्त ।]

(११) फिर उसने कहा किसी मनुष्यके दो पुत्र थे। (१२) उन मेंसे छुटकेने पितासे कहा हे पिता सम्पत्तिमेंसे जो मेरा अंश होय सो मुझे दीजिये . तब उसने उनको अपनी सम्पत्ति बांट दिई । (१३) बहुत दिन नहीं बीते कि छुटका पुत्र सब कुछ एकट्ठा करके दूर देश चला गया और वहां लुचपनमें दिन बिताते हुए अपनी सम्पत्ति उड़ा दिई । (१४) जब वह सब कुछ उठा चुका तब उस देशमें बड़ा अकाल पड़ा और वह कंगाल हो गया । (१५) और वह जाके उस देशके निवासियोंमेंसे एकके यहां रहने लगा जिसने उसे अपने खेतोंमें सूअर चरानेको भेजा । (१६) और वह उन छीमियोंसे जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरने चाहता था और कोई नहीं उसको कुछ देता था । (१७) तब उसे चेत हुआ और उसने कहा मेरे पिताके कितने मजूरोंको भोजनसे अधिक रोटी होती है और मैं भूखसे मरता हूं । (१८) मैं उठके अपने पिता पास जाऊंगा और उससे कहूंगा हे पिता मैंने स्वर्गके विरुद्ध और आपके साम्ने पाप किया है । (१९) मैं फिर आपका पुत्र कहावनेके योग्य नहीं हूं मुझे अपने मजूरोंमेंसे एकके समान कीजिये । (२०) तब वह उठके अपने पिता पास चला पर वह दूरही था कि उसके पिताने उसे देखके दया किई और दौड़के उसके गलेमें लिपटके उसे चूमा । (२१) पुत्रने उससे कहा हे पिता मैंने स्वर्गके विरुद्ध और आपके साम्ने पाप किया है और फिर आपका पुत्र कहावने के योग्य नहीं हूं । (२२) परन्तु पिताने अपने दासोंसे कहा सबसे उत्तम वस्त्र निकालके उसे पहिनाओ और उसके हाथ में अंगूठी और पांवोंमें जूते पहिनाओ । (२३) और मोटा बछड़ा लाके मारो और हम खावें और आनन्द करें । (२४) क्योंकि यह मेरा पुत्र मूआ था फिर जीआ है खो गया था फिर मिला

है . तब वे आनन्द करने लगे । (२५) उसका जेठा पुत्र खेतमें था और जब वह आते हुए घरके निकट पहुंचा तब बाजा और नाचका शब्द सुना । (२६) और उसने अपने सेवकोंमेंसे एकको अपने पास बुलाके पूछा यह क्या है । (२७) उसने उससे कहा आपका भाई आया है और आपके पिताने मोटा बछड़ा मारा है इसलिये कि उसे भला चंगा पाया है । (२८) परन्तु उसने क्रोध किया और भीतर जाने न चाहा इसलिये उसका पिता बाहर आ उसे मनाने लगा । (२९) उसने पिताको उत्तर दिया कि देखिये मैं इतने बरसोंसे आपकी सेवा करता हूं और कभी आपकी आज्ञाको उल्लंघन न किया और आपने मुझे कभी एक मेम्ना भी न दिया कि मैं अपने मित्रोंके संग आनन्द करता । (३०) परन्तु आपका यह पुत्र जो वेश्याओंके संग आपकी सम्पत्ति खा गया है ज्योंही आया त्योंही आपने उसके लिये मोटा बछड़ा मारा है । (३१) पिताने उससे कहा हे पुत्र तू सदा मेरे संग है और जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है । (३२) परन्तु आनन्द करना और हर्षित होना उचित था क्योंकि यह तेरा भाई मूआ था फिर जीआ है खो गया था फिर मिला है ।

[चतुर भंडारीका दृष्टान्त ।]

१६ यीशुने अपने शिष्योंसे भी कहा कोई धनवान मनुष्य था जिसका एक भंडारी था और यह दोष उसके आगे भंडारीपर लगाया गया कि वह आपकी सम्पत्ति उड़ा देता है । (२) उसने उसे बुलाके उससे कहा यह क्या है जो मैं तेरे विषयमें सुनता हूं . अपने भंडारपनका लेखा दे क्योंकि तू आगेको भंडारी नहीं रह सकेगा । (३) तब भंडारीने अपने मनमें कहा मैं क्या करूं कि मेरा स्वामी भंडारीका काम मुझ से छीन लेता है . मैं कोड़ नहीं सकता हूं और भीख मांगने

से मुझे लाज आती है। (४) मैं जानता हूं मैं क्या करूंगा इसलिये कि जब मैं भंडारपनसे छुड़ाया जाऊं तब लोग मुझे अपने घरोंमें ग्रहण करें। (५) और उसने अपने स्वामीके ऋणियोंमेंसे एक एकको अपने पास बुलाके पहिलेसे कहा तू मेरे स्वामीका कितना धारता है। (६) उसने कहा सौ मन तेल. वह उससे बोला अपना पत्र ले और बैठके शीघ्र पचास मन लिख। (७) फिर दूसरेसे कहा तू कितना धारता है. उसने कहा सौ मन गेहूं. वह उससे बोला अपना पत्र ले और अस्सी न लिख। (८) स्वामीने उस अधर्म्मी भंडारीको सराहा कि उसने बुद्धिका काम किया है. क्योंकि इस संसारके सन्तान अपने समयके लोगोंके विषयमें ज्योतिके सन्तानोंसे अधिक बुद्धिमान हैं। (९) और मैं तुम्होंसे कहता हूं कि अधर्म्मके धनके द्वारा अपने लिये मित्र कर लो कि जब तुम छूट जाओ तब वे तुम्हें अनन्त निवासोंमें ग्रहण करें।

(१०) जो अति थोड़ेमें बिश्वासयोग्य है सो बहुतमें भी बिश्वासयोग्य है और जो अति थोड़ेमें अधर्म्मी है सो बहुतमें भी अधर्म्मी है। (११) इसलिये जो तुम अधर्म्मके धनमें बिश्वासयोग्य न हुए हो तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा। (१२) और जो तुम पराये धनमें बिश्वासयोग्य न हुए हो तो तुम्हारा धन तुम्हें कौन देगा। (१३) कोई सेवक दो स्वामियोंकी सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एकसे बैर करेगा और दूसरेको प्यार करेगा अथवा एकसे लगा रहेगा और दूसरेको तुच्छ जानेगा. तुम ईश्वर और धन दोनोंकी सेवा नहीं कर सकते हो।

[व्यवस्थाका अधिकार।]

(१४) फरीशियोंने भी जो लोभी थे यह सब बातें सुनीं और उसका ठट्ठा किया। (१५) उसने उन्होंसे कहा तुम तो मनुष्यों

के आगे अपनेको धर्म्मी ठहराते हो परन्तु ईश्वर तुम्हारे मन को जानता है . जो मनुष्योंके लेखे महान है सो ईश्वरके आगे घिनित है। (१६) व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता लोग योहन लों थे तबसे ईश्वरके राज्यका सुसमाचार सुनाया जाता है और सब कोई उसमें बरियाईसे प्रवेश करते हैं। (१७) व्यवस्थाके एक बिन्दुके लोप होनेसे आकाश औ पृथिवीका टल जाना सहज है। (१८) जो कोई अपनी स्त्रीको त्यागके दूसरी से बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है और जो स्त्री अपने स्वामीसे त्यागी गई है उससे जो कोई बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है।

[धनवान और भिखारीका दृष्टान्त।]

(१९) एक धनवान मनुष्य था जो बैजनी वस्त्र और मलमल पहिनता और प्रतिदिन बिभव और सुखसे रहता था। (२०) और इलियाजर नाम एक कंगाल उसकी डेवढ़ीपर डाला गया था जो घावोंसे भरा हुआ था . (२१) और उन चूरचारों से जो धनवानकी मेजसे गिरते थे पेट भरने चाहता था और कुत्ते भी आके उसके घावोंको चाटते थे। (२२) वह कंगाल मर गया और दूतोंने उसको इब्राहीमकी गोदमें पहुंचाया और वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया। (२३) और परलोक में उसने पीड़ामें पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं और दूरसे इब्राहीमको और उसकी गोदमें इलियाजरको देखा। (२४) तब वह पुकारके बोला हे पिता इब्राहीम मुझपर दया करके इलियाजरको भेजिये कि अपनी उंगलीका छोर पानीमें डुबोके मेरी जीभको ठंढी करे क्योंकि मैं इस ज्वालामें कलपता हूं। (२५) परन्तु इब्राहीमने कहा हे पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीतेजी अपनी सम्पत्ति पा चुका है और वैसाही इलियाजर बिपत्ति परन्तु अब वह शांति पाता है और तू कलपता है।

(२६) और भी हमारे और तुम्हारे बीच में बड़ा अन्तर ठहराया गया है कि जो लोग इधरसे उस पार तुम्हारे पास जाया चाहें सो नहीं जा सकें और न उधरके लोग इस पार हमारे पास आवें। (२७) उसने कहा तब हे पिता मैं आपसे बिन्ती करता हूं उसे मेरे पिताके घर भेजिये . (२८) क्योंकि मेरे पांच भाई हैं वह उन्हें साक्षी देवे ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ाके स्थानमें आवें। (२९) इब्राहीमने उससे कहा मूसा और भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तक उनके पास हैं वे उनकी सुनें। (३०) वह बोला हे पिता इब्राहीम सो नहीं परन्तु यदि मृतकोंमेंसे कोई उनके पास जाय तो वे पश्चात्ताप करेंगे। (३१) उसने उससे कहा जो वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओंकी नहीं सुनते हैं तो यदि मृतकोंमेंसे कोई जी उठे तौभी नहीं मानेंगे।

[ठोकर खिलाने और अपराधके क्षमा करने और बिश्वासके गुणका उपदेश।]

१७ योशुने शिष्योंसे कहा ठोकरोंका न लगना अन्होना है परन्तु हाय वह मनुष्य जिसके द्वारासे वे लगती हैं। (२) इन छोटोंमेंसे एकको ठोकर खिलानेसे उसके लिये भला होता कि चक्कीका पाट उसके गलेमें बांधा जाता और वह समुद्रमें डाला जाता।

(३) अपने विषयमें सचेत रहो . यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो उसको समझा दे और यदि पछतावे तो उसे क्षमा कर। (४) जो वह दिन भरमें सात बेर तेरा अपराध करे और सात बेर दिन भरमें तेरी ओर फिरके कहे मैं पछताता हूं तो उसे क्षमा कर। (५) तब प्रेरितोंने प्रभुसे कहा हमारा बिश्वास बढ़ाइये। (६) प्रभुने कहा यदि तुमको राईके एक दानेके तुल्य विश्वास होता तो तुम इस गूलरके वृक्षसे जो कहते कि उखड़ जा और समुद्रमें लग जा वह तुम्हारी आज्ञा मानता।

(७) तुममेंसे कौन है कि उसका दास हल जोतता अथवा

चरवाही करता हो और ज्योंही वह खेतसे आवे त्योंही उससे कहेगा तुरन्त आ भोजनपर बैठ। (८) क्या वह उससे न कहेगा मेरी बियारी बनाके जबलों मैं खाऊं और पीऊं तबलों कमर बांधके मेरी सेवा कर और इसके पीछे तू खायगा और पीयेगा। (९) क्या उस दासका उसपर कुछ निहोरा हुआ कि उसने वह काम किया जिसकी आज्ञा उसको दिई गई. मैं ऐसा नहीं समझता हूं। (१०) इस रीतिसे तुम भी जब सब काम कर चुको जिसकी आज्ञा तुम्हें दिई गई है तब कहो हम निकम्मे दास हैं कि जो हमें करना उचित था सोई भर किया है।

[यीशुका दस कोढ़ियोंको चंगा करना।]

(११) यीशु यिरूशलीमको जाते हुए शोमिरोन और गालील के बीचमेंसे होके जाता था। (१२) जब वह किसी गांवमें प्रवेश करता था तब दस कोढ़ी उसके सन्मुख आ दूर खड़े हुए। (१३) और वे ऊंचे शब्दसे बोले हे यीशु गुरु हमपर दया कीजिये। (१४) यह देखके उसने उन्होंसे कहा जाके अपने तईं याजकोंको दिखाओ. जाते हुए वे शुद्ध किये गये। (१५) तब उनमेंसे एकने जब देखा कि मैं चंगा हुआ हूं बड़े शब्दसे ईश्वरकी स्तुति करता हुआ फिर आया. (१६) और यीशुका धन्य मानते हुए उसके चरणोंपर मुंहके बल गिरा. और वह शोमिरोनी था। (१७) इसपर यीशुने कहा क्या दसों शुद्ध न किये गये तो नौ कहां हैं। (१८) क्या इस अन्यदेशीको छोड़ कोई नहीं ठहरे जो ईश्वरकी स्तुति करनेको फिर आवें। (१९) तब उसने उससे कहा उठ चला जा तेरे विश्वासने तुझे बचाया है।

[ईश्वरके राज्यके शीघ्र आनेका वर्णन।]

(२०) जब फरीशियोंने उससे पूछा कि ईश्वरका राज्य कब आवेगा तब उसने उन्होंको उत्तर दिया कि ईश्वरका राज्य

प्रत्यक्ष रूपसे नहीं आता है . (२१) और न लोग कहेंगे देखो यहां है अथवा देखो वहां है क्योंकि देखो ईश्वरका राज्य तुम्हींमें है ।

(२२) उसने शिष्योंसे कहा वे दिन आवेंगे जिनमें तुम मनुष्य के पुत्रके दिनोंमेंसे एक दिन देखने चाहोगे पर न देखोगे । (२३) लोग तुम्होंसे कहेंगे देखो यहां है अथवा देखो वहां है पर तुम मत जाओ और न उनके पीछे हो लेओ । (२४) क्योंकि जैसे बिजली जो आकाशकी एक ओरसे चमकती है आकाशकी दूसरी ओर तक ज्योति देती है वैसाही मनुष्यका पुत्र भी अपने दिनमें होगा । (२५) परन्तु पहिले उसको अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और इस समयके लोगोंसे तुच्छ किया जाय । (२६) जैसा नूहके दिनोंमें हुआ वैसाही मनुष्यके पुत्रके दिनोंमें भी होगा । (२७) जिस दिनलों नूह जहाजपर न चढ़ा उस दिनलों लोग खाते पीते बिवाह करते औ बिवाह दिये जाते थे . तब उस दिन जलप्रलयने आके उन सभोंको नाश किया । (२८) और जिस रीतिसे लूतके दिनोंमें हुआ कि लोग खाते पीते मोल लेते बेचते बोते औ घर बनाते थे . (२९) परन्तु जिस दिन लूत सदोमसे निकला उस दिन आग और गन्धक आकाशसे बरसी और उन सभोंको नाश किया . (३०) उसी रीतिसे मनुष्य के पुत्रके प्रगट होनेके दिनमें होगा । (३१) उस दिनमें जो कोठेपर हो और उसकी सामग्री घरमें होय सो उसे लेनेको न उतरे और वैसेही जो खेतमें हो सो पीछे न फिरे । (३२) लूतकी स्त्रीको स्मरण करो । (३३) जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा और जो कोई उसे खोवे सो उसकी रक्षा करेगा । (३४) मैं तुमसे कहता हूं उस रातमें दो मनुष्य एक खाटपर होंगे एक लिया जायगा और दूसरा छोड़ा जायगा । (३५) दो स्त्रियां एक संग चक्की पीसती रहेंगी एक लिई जायगी

और दूसरी छोड़ी जायगी। (३६) दो जन खेतमें होंगे एक लिया जायगा और दूसरा छोड़ा जायगा। (३७) उन्होंने उसको उत्तर दिया हे प्रभु कहां. उसने उनसे कहा जहां लोथ होय तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे।

[अधर्म्मी बिचार कर्त्ताका दृष्टान्त।

१८ नित्य प्रार्थना करने और साहस न छोड़नेकी आवश्यकताके विषयमें यीशुने उन्होंसे एक दृष्टान्त कहा. (२) कि किसी नगरमें एक बिचारकर्त्ता था जो न ईश्वरसे डरता न मनुष्यको मानता था। (३) और उसी नगरमें एक बिधवा थी जिसने उस पास आ कहा मेरे मुद्दईसे मेरा पलटा लीजिये। (४) उसने कितनी बेरलों न माना परन्तु पीछे अपने मनमें कहा यद्यपि मैं न ईश्वरसे डरता न मनुष्यको मानता हूं. (५) तौभी यह बिधवा मुझे दुःख देती है इस कारण मैं उसका पलटा लेऊंगा ऐसा न हो कि नित्य नित्य आनेसे वह मेरे मुंहमें कालिख लगावे। (६) तब प्रभुने कहा सुनो यह अधर्म्मी बिचारकर्त्ता क्या कहता है। (७) और ईश्वर यद्यपि अपने चुने हुए लोगोंके विषयमें जो रात दिन उस पास पुकारते हैं धीरज धरे तौभी क्या उनका पलटा न लेगा। (८) मैं तुमसे कहता हूं वह शीघ्र उनका पलटा लेगा तौभी मनुष्यका पुत्र जब आवेगा तब क्या पृथिवीपर बिश्वास पावेगा।

[फरीशी और कर उगाहनेहारेका दृष्टान्त।]

(९) और उसने कितनोंसे जो अपनेपर भरोसा रखते थे कि हम धर्म्मी हैं और औरोंको तुच्छ जानते थे यह दृष्टान्त कहा। (१०) दो मनुष्य मन्दिरमें प्रार्थना करनेको गये एक फरीशी और दूसरा कर उगाहनेहारा। (११) फरीशीने अलग खड़ा हो यह प्रार्थना किई कि हे ईश्वर मैं तेरा धन्य मानता हूं कि मैं और मनुष्योंके समान नहीं हूं जो उपद्रवी अन्यायी

और परस्त्रीगामी हैं और न इस कर उगाहनेहारेके समान। (१२) मैं अठवारेमें दो बार उपवास करता हूं मैं अपनी सब कमाईका दसवां अंश देता हूं। (१३) कर उगाहनेहारेने दूर खड़ा हो स्वर्गकी ओर आंखें उठाने भी न चाहा परन्तु अपनी छाती पीटके कहा हे ईश्वर मुझ पापीपर दया कर। (१४) मैं तुमसे कहता हूं कि वह दूसरा नहीं पर यही मनुष्य धर्म्मी ठहराया हुआ अपने घरको गया क्योंकि जो कोई अपनेको ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो अपनेको नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा।

[यीशुका बालकोंको आशीष देना।]

(१५) लोग कितने बालकोंको भी यीशु पास लाये कि वह उन्हें छूवे परन्तु शिष्योंने यह देखके उन्हें डांटा। (१६) यीशुने बालकोंको अपने पास बुलाके कहा बालकोंको मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि ईश्वरका राज्य ऐसोंका है। (१७) मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वरके राज्यको बालककी नाईं ग्रहण न करे वह उसमें प्रवेश करने न पावेगा।

[एक धनवान जवानसे यीशुकी बातचीत।]

मत्ती १९। १६—३०।

(१८) किसी प्रधानने उससे पूछा हे उत्तम गुरु कौन काम करनेसे मैं अनन्त जीवनका अधिकारी होंगा। (१९) यीशुने उससे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर। (२०) तू आज्ञाओंको जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे अपनी माता और अपने पिताका आदर कर। (२१) उसने कहा इन सभोंको मैंने अपने लड़कपनसे पालन किया है। (२२) यीशुने यह सुनके उससे कहा तुझे अब भी एक बातकी घटी है. जो कुछ तेरा है सो बेचके कंगालोंको

बांट दे और तू स्वर्गमें धन पावेगा और आ मेरे पीछे हो ले। (२३) वह यह सुनके अति उदास हुआ क्योंकि वह बड़ा धनी था।

(२४) यीशुने उसे अति उदास देखके कहा धनवानोंको ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसा कठिन होगा। (२५) ईश्वर के राज्यमें धनवानके प्रवेश करनेसे ऊंटका सूईके नाकेमेंसे जाना सहज है। (२६) सुननेहारोंने कहा तब तो किसका त्राण हो सकता है। (२७) उसने कहा जो बातें मनुष्योंसे अन्होनी हैं सो ईश्वरसे हो सकती हैं।

(२८) पितरने कहा देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप के पीछे हो लिये हैं। (२९) उसने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि जिसने ईश्वरके राज्यके लिये घर वा माता पिता वा भाइयों वा स्त्री वा लड़कोंको त्यागा हो. (३०) ऐसा कोई नहीं है जो इस समयमें बहुत गुण अधिक और परलोकमें अनन्त जीवन न पावेगा।

[यीशुका अपनी मृत्युके विषयमें बताना।]

मत्ती २० : १७—१९।

(३१) यीशुने बारह शिष्योंको लेके उनसे कहा देखो हम यिरूशलीमको जाते हैं और जो कुछ मनुष्यके पुत्रके विषयमें भविष्यद्वक्ताओंसे लिखा गया है सो सब पूरा किया जायगा। (३२) वह अन्यदेशियोंके हाथ सोंपा जायगा और उससे ठट्ठा और अपमान किया जायगा और वे उसपर थूकेंगे. (३३) और उसे कोड़े मारके घात करेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा। (३४) उन्होंने इन बातोंमेंसे कोई बात न समझी और यह बात उनसे गुप्त रही और जो कहा जाता था सो वे नहीं बूझते थे।

[यिरीहोके एक अन्धेका वृत्तान्त।]

मत्ती २० : २९—३४।

(३५) जब वह यिरीहो नगरके निकट आता था तब एक

अन्धा मनुष्य मार्गकी ओर बैठा भीख मांगता था। (३६) जब उसने सुना कि बहुत लोग साम्नेसे जाते हैं तब पूछा यह क्या है। (३७) लोगोंने उसको बताया कि यीशु नासरी जाता है। (३८) तब उसने पुकारके कहा हे यीशु दाऊदके सन्तान मुझपर दया कीजिये। (३९) जो लोग आगे जाते थे उन्होंने उसे डांटा कि वह चुप रहे परन्तु उसने बहुत अधिक पुकारा हे दाऊदके सन्तान मुझपर दया कीजिये। (४०) तब यीशु खड़ा रहा और उसे अपने पास लानेकी आज्ञा किई और जब वह निकट आया तब उससे पूछा . (४१) तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं . वह बोला हे प्रभु मैं अपनी दृष्टि पाऊं। (४२) यीशुने उससे कहा अपनी दृष्टि पा तेरे बिश्वासने तुझे चंगा किया है। (४३) और वह तुरन्त देखने लगा और ईश्वरकी स्तुति करता हुआ यीशुके पीछे हो लिया और सब लोगोंने देखके ईश्वरका धन्यबाद किया।

[जक्कईका वृत्तान्त ।]

१९ यीशु यिरीहोमें प्रवेश करके उसके बीचसे होके जाता था। (२) और देखो जक्कई नाम एक मनुष्य था जो कर उगाहनेहारोंका प्रधान था और वह धनवान था। (३) वह यीशुको देखने चाहता था कि वह कैसा मनुष्य है परन्तु भीड़के कारण नहीं सका क्योंकि नाटा था। (४) तब जिस मार्गसे यीशु जानेपर था उसमें वह आगे दौड़के उसे देखनेको एक गूलरके बृक्षपर चढ़ा। (५) जब यीशु उस स्थान पर पहुंचा तब ऊपर दृष्टि कर उसे देखा और उससे कहा हे जक्कई शीघ्र उतर आ क्योंकि आज मुझे तेरे घरमें रहना होगा। (६) उसने शीघ्र उतरके आनन्दसे उसकी पहुनई किई। (७) यह देखके सब लोग कुड़कुड़ाके बोले वह तो पापी मनुष्यके यहां पाहुन होने गया है। (८) जक्कईने खड़ा हो

प्रभुसे कहा हे प्रभु देखिये मैं अपना आधा धन कंगालोंको देता हूं और यदि झूठे दोष लगाके किसीसे कुछ ले लिया है तो चौगुणा फेर देता हूं। (९) तब यीशुने उसको कहा आज इस घरानेका त्राण हुआ है इसलिये कि यह भी इब्राहीम का सन्तान है। (१०) क्योंकि मनुष्यका पुत्र खोये हुएको ढूंढने और बचाने आया है।

[दस मोहरका दृष्टान्त।]

मत्ती २५ : १४—३०।

(११) जब लोग यह सुनते थे तब वह एक दृष्टान्त भी कहने लगा इसलिये कि वह यिरूशलीमके निकट था और वे समझते थे कि ईश्वरका राज्य तुरन्त प्रगट होगा। (१२) उस ने कहा एक कुलीन मनुष्य दूर देशको जाता था कि राज-पद पाके फिर आवे। (१३) और उसने अपने दासोंमेंसे दसको बुलाके उन्हें दस मोहर देके उनसे कहा जबलों मैं न आऊं तबलों ब्योपार करो। (१४) परन्तु उसके नगरके निवासी उस से बैर रखते थे और उसके पीछे यह सन्देश भेजा कि हम नहीं चाहते हैं कि यह हमोंपर राज्य करे। (१५) जब वह राजपद पाके फिर आया तब उसने उन दासोंको जिन्हें रोकड़ दिई थी अपने पास बुलानेकी आज्ञा किई जिस्तें वह जाने कि किसने कौनसा ब्योपार किया है। (१६) तब पहिलेने आके कहा हे प्रभु आपकी मोहरसे दस मोहर लाभ हुई। (१७) उस ने उससे कहा धन्य हे उत्तम दास तू अति थोड़ेमें बिश्वास-योग्य हुआ तू दस नगरोंपर अधिकारी हो। (१८) दूसरेने आके कहा हे प्रभु आपकी मोहरसे पांच मोहर लाभ हुई। (१९) उसने उससे भी कहा तू भी पांच नगरोंका प्रधान हो। (२०) तीसरेने आके कहा हे प्रभु देखिये आपकी मोहर जिसे मैंने अंगोछेमें धर रखा। (२१) क्योंकि मैं आपसे डरता था

इसलिये कि आप कठोर मनुष्य हैं जो आपने नहीं धरा सो उठा लेते हैं और जो आपने नहीं बोया सो लवते हैं। (२२) उस ने उससे कहा हे दुष्ट दास मैं तेरेही मुंहसे तुझे दोषी ठहराऊंगा . तू जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूं जो मैंने नहीं धरा सो उठा लेता हूं और जो मैंने नहीं बोया सो लवता हूं । (२३) तो तूने मेरी रोकड़ कोठीमें क्यों नहीं दिई और मैं आके उसे ब्याज समेत ले लेता । (२४) तब जो लोग निकट खड़े थे उसने उन्होंसे कहा वह मोहर उससे लेओ और जिस पास दस मोहर हैं उसको देओ । (२५) उन्होंने उससे कहा हे प्रभु उस पास दस मोहर हैं । (२६) मैं तुमसे कहता हूं जो कोई रखता है उसको और दिया जायगा परन्तु जो नहीं रखता है उससे जो कुछ उस पास है सो भी ले लिया जायगा । (२७) परन्तु मेरे उन बैरियोंको जो नहीं चाहते थे कि मैं उन्होंपर राज्य करूं यहां लाके मेरे साम्हने बध करो।

[यीशुका यिरूशलीममें अद्भुत रीतिसे प्रवेश करना ।]

मत्ती २१ । १—११ ।

(२८) जब यीशु यह बातें कह चुका तब यिरूशलीमको जाते हुए आगे बढ़ा । (२९) और जब वह जैतून नाम पर्ब्बतके निकट बैतफगी और बैथनिया गांवों पास पहुंचा तब उसने अपने शिष्योंमेंसे दोको यह कहके भेजा . (३०) कि जो गांव सन्मुख है उसमें जाओ और उसमें प्रवेश करते हुए तुम एक गदहेके बच्चेको जिसपर कभी कोई मनुष्य नहीं चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खोलके लाओ । (३१) जो तुमसे कोई पूछे तुम उसे क्यों खोलते हो तो उससे यूं कहो प्रभुको इसका प्रयोजन है। (३२) जो भेजे गये थे उन्होंने जाके जैसा उसने उनसे कहा वैसा पाया । (३३) जब वे बच्चेको खोलते थे तब उसके स्वामियोंने उनसे कहा तुम बच्चेको क्यों खोलते हो । (३४) उन्होंने

कहा प्रभुको इसका प्रयोजन है। (३५) सो वे बच्चेको यीशु पास लाये और अपने कपड़े उसपर डालके यीशुको बैठाया। (३६) ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ा त्यों त्यों लोगोंने अपने अपने कपड़े मार्गमें बिछाये। (३७) जब वह निकट आया अर्थात जैतून पर्व्वतके उतारलों पहुंचा तब शिष्योंकी सारी मंडली आनन्दित हो सब आश्चर्य्य कर्म्मोंके लिये जो उन्होंने देखे थे बड़े शब्दसे ईश्वरकी स्तुति करने लगी. (३८) कि धन्य वह राजा जो परमेश्वरके नामसे आता है. स्वर्गमें शांति और सबसे ऊंचे स्थानमें गुणानुबाद होय। (३९) तब भीड़मेंसे कितने फरीशी लोग उससे बोले हे गुरु अपने शिष्योंको डांटिये। (४०) उसने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुमसे कहता हूं जो ये लोग चुप रहें तो पत्थर पुकार उठेंगे।

(४१) जब वह निकट आया तब नगरको देखके उसपर रोया. (४२) और कहा तू भी अपने कुशलकी बातें हां अपने इस दिनमें भी जो जानता. परन्तु अब वे तेरे नेत्रोंसे छिपी हैं। (४३) वे दिन तुझपर आवेंगे कि तेरे शत्रु तुझपर मोर्चा बांधेंगे और तुझे घेरेंगे और चारों ओर रोक रखेंगे. (४४) और तुझको औ तुझमें तेरे बालकोंको मिट्टीमें मिलावेंगे और तुझमें पत्थरपर पत्थर न छोड़ेंगे क्योंकि तूने वह समय जिसमें तुझ पर दृष्टि किई गई न जाना।

[यीशुका मन्दिरको पवित्र करना।]

मत्ती २१ : १२—१७।

(४५) तब वह मन्दिरमें जाके जो लोग उसमें बेचते औ मोल लेते थे उन्हें निकालने लगा. (४६) और उनसे बोला लिखा है कि मेरा घर प्रार्थनाका घर है. परन्तु तुमने उसे डाकूओंका खोह बनाया है। (४७) वह मन्दिरमें प्रतिदिन उपदेश करता था और प्रधान याजक और अध्यापक

और लोगोंके प्रधान उसे नाश करने चाहते थे . (४८) परन्तु नहीं जानते थे कि क्या करें क्योंकि सब लोग उसकी सुनने को लौलीन थे ।

[यीशुका प्रधान याजकोंको निरुत्तर करना ।]

मत्ती २१ । २३—२७ ।

२० उन दिनोंमेंसे एक दिन जब यीशु मन्दिरमें लोगोंको उपदेश देता और सुसमाचार सुनाता था तब प्रधान याजक और अध्यापक लोग प्राचीनोंके संग निकट आये . (२) और उससे बोले हमसे कह तुझे ये काम करनेका कैसा अधिकार है अथवा कौन है जिसने तुझको यह अधिकार दिया । (३) उसने उनको उत्तर दिया कि मैं भी तुमसे एक बात पूछूंगा मुझे उत्तर देओ । (४) योहनका बपतिसमा देना क्या स्वर्गकी अथवा मनुष्योंकी ओरसे हुआ । (५) तब उन्होंने आपसमें विचार किया कि जो हम कहें स्वर्गकी ओरसे तो वह कहेगा फिर तुमने उसका बिश्वास क्यों नहीं किया । (६) और जो हम कहें मनुष्योंकी ओरसे तो सब लोग हमें पत्थरवाह करेंगे क्योंकि वे निश्चय जानते हैं कि योहन भविष्यद्वक्ता था । (७) सो उन्होंने उत्तर दिया कि हम नहीं जानते वह कहांसे हुआ । (८) यीशुने उनसे कहा तो मैं भी तुमको नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करनेका कैसा अधिकार है ।

[दुष्ट मालियोंका दृष्टान्त ।]

मत्ती २१ : ३३—४६ ।

(९) तब वह लोगोंसे यह दृष्टान्त कहने लगा कि किसी मनुष्यने दाखकी बारी लगाई और मालियोंको उसका ठीका दे बहुत दिनलों परदेशको चला गया । (१०) समयमें उसने मालियों के पास एक दासको भेजा कि वे दाखकी बारीका कुछ फल उसको देवें परन्तु मालियोंने उसे मारके छूछे हाथ फेर दिया ।

(११) फिर उसने दूसरे दासको भेजा और उन्होंने उसे भी मारके और अपमान करके छूछे हाथ फेर दिया। (१२) फिर उसने तीसरेको भेजा और उन्होंने उसे भी घायल करके निकाल दिया। (१३) तब दाखकी बारीके स्वामीने कहा मैं क्या करूं. मैं अपने प्रिय पुत्रको भेजूंगा क्या जाने वे उसे देखके उसका आदर करेंगे। (१४) परन्तु माली लोग उसे देखके आपसमें बिचार करने लगे कि यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें कि अधिकार हमारा हो जाय। (१५) और उन्होंने उसे दाखकी बारीसे बाहर निकालके मार डाला. इसलिये दाखकी बारीका स्वामी उन्होंसे क्या करेगा। (१६) वह आके इन मालियोंको नाश करेगा और दाखकी बारी दूसरोंके हाथ देगा. यह सुनके उन्होंने कहा ऐसा न होवे। (१७) उसने उन्होंपर दृष्टि कर कहा तो धर्म्मपुस्तकके इस बचनका अर्थ क्या है कि जिस पत्थरको थवइयोंने निकम्मा जाना वही कोनेका सिरा हुआ है। (१८) जो कोई उस पत्थरपर गिरेगा सो चूर हो जायगा और जिस किसी पर वह गिरेगा उसको पीस डालेगा। (१९) प्रधान याजकों और अध्यापकोंने उसी घड़ी उसपर हाथ बढ़ाने चाहा क्योंकि जानते थे कि उसने हमारे बिरुद्ध यह दृष्टान्त कहा परन्तु वे लोगोंसे डरे।

[कर देनेका प्रश्न।]

मत्ती २२। १५—२२।

(२०) तब उन्होंने दांव ताकके भेदियोंको भेजा जो छलसे अपनेको धर्म्मी दिखावें इसलिये कि उसका बचन पकड़ें और उसे देशाध्यक्षके न्याय और अधिकारमें सौंप देवें। (२१) उन्होंने उससे पूछा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप यथार्थ कहते और सिखाते हैं और पक्षपात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वरका मार्ग सत्यतासे बताते हैं। (२२) क्या कैसरको कर देना हमें

उचित है अथवा नहीं । (२३) उसने उनकी चतुराई बूझके उनसे कहा मेरी परीक्षा क्यों करते हो । (२४) एक सूकी मुझे दिखाओ . इसपर किसकी मूर्त्ति और छाप है . उन्होंने उत्तर दिया कैसरकी । (२५) उसने उनसे कहा तो जो कैसरका है सो कैसरको देओ और जो ईश्वरका है सो ईश्वरको देओ । (२६) वे लोगोंके साम्ने उसकी बात पकड़ न सके और उसके उत्तरसे अचंभित हो चुप रहे ।

[यीशुका जी उठनेके विषयमें सदूकियोंको निरुत्तर करना ।]

मत्ती २२ : २३—३३ ।

(२७) सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकोंका जी उठना नहीं होगा उन्होंमेंसे कितने उस पास आये और उससे पूछा . (२८) कि हे गुरु मूसाने हमारे लिये लिखा कि यदि किसीका भाई अपनी स्त्रीके रहते हुए निःसन्तान मर जाय तो उसका भाई उस स्त्रीसे विवाह करे और अपने भाईके लिये बंश खड़ा करे । (२९) सो सात भाई थे . पहिला भाई बिवाह कर निःसन्तान मर गया । (३०) तब दूसरे भाईने उस स्त्रीसे बिवाह किया और वह भी निःसन्तान मर गया। (३१) तब तीसरेने उससे विवाह किया और वैसाही सातों भाइयोंने . पर वे सब निःसन्तान मर गये । (३२) सबके पीछे स्त्री भी मर गई । (३३) सो मृतकोंके जी उठनेपर वह उनमेंसे किसकी स्त्री होगी क्योंकि सातोंने उससे विवाह किया। (३४) यीशुने उनको उत्तर दिया कि इस लोकके सन्तान विवाह करते और बिवाह दिये जाते हैं। (३५) परन्तु जो लोग उस लोकमें पहुंचने और मृतकोंमें से जी उठनेके योग्य गिने जाते वे न बिवाह करते न बिवाह दिये जाते हैं । (३६) और न वे फिर मर सकते हैं क्योंकि वे स्वर्गदूतोंके समान हैं और जी उठनेके सन्तान होनेसे ईश्वरके सन्तान हैं । (३७) और मृतक लोग जो जी उठते हैं यह बात

मूसाने भी झाड़ीकी कथामें प्रगट किई है कि वह परमेश्वरको इब्राहीमका ईश्वर और इसहाकका ईश्वर और याकूबका ईश्वर कहता है। (३८) ईश्वर मृतकोंका नहीं परन्तु जीवतोंका ईश्वर है क्योंकि उसके लिये सब जीते हैं। (३९) अध्यापकोंमेंसे कितनोंने उत्तर दिया कि हे गुरु आपने अच्छा कहा है। (४०) और उन्हें फिर उससे कुछ पूछनेका साहस न हुआ।

[यीशुका अपनी पदवीके विषयमें लोगोंको निरुत्तर करना।]

मत्ती २२। ४१।

(४१) तब उसने उनसे कहा लोग क्योंकर कहते हैं कि ख्रीष्ट दाऊदका पुत्र है। (४२) दाऊद आपही गीतोंके पुस्तकमें कहता है कि परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा. (४३) जबलों मैं तेरे शत्रुओंको तेरे चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी दहिनी ओर बैठ। (४४) दाऊद तो उसे प्रभु कहता है फिर वह उसका पुत्र क्योंकर है।

[यीशुका अध्यापकोंको दोषी ठहराना।]

मत्ती २३। १।

(४५) जब सब लोग सुनते थे तब उसने अपने शिष्योंसे कहा. (४६) अध्यापकोंसे चौकस रहो जो लंबे वस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं और जिनको बाजारोंमे नमस्कार और सभाके घरोंमें ऊंचे आसन और जेवनारोंमें ऊंचे स्थान प्रिय लगते हैं। (४७) वे बिधवाओंके घर खा जाते हैं और बहानाके लिये बड़ी बेरलों प्रार्थना करते हैं. वे अधिक दंड पावेंगे।

[एक विधवाके दानकी प्रशंसा।]

मार्क १२ : ४१।

२१ यीशुने आंख उठाके धनवानोंको अपने अपने दान भंडारमें डालते देखा। (२) और उसने एक कंगाल बिधवाको भी उसमें दो दमड़ी डालते देखा। (३) तब उसने

कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि इस कंगाल बिधवाने सभोंसे अधिक डाला है। (४) क्योंकि इन सभोंने अपनी बढ़तीमेंसे ईश्वरको चढ़ाई हुई बस्तुओंमें कुछ कुछ डाला है परन्तु इसने अपनी घटतीमेंसे अपनी सारी जीविका डाली है।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. १—दुःखोंका आरंभ।]

मत्ती २४ । १—१४ ।

(५) जब कितने लोग मन्दिरके विषयमें बोलते थे कि वह सुन्दर पत्थरोंसे और चढ़ाई हुई बस्तुओंसे संवारा गया है तब उस ने कहा. (६) यह सब जो तुम देखते हो वे दिन आवेंगे जिन्होंमें पत्थरपर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जायगा। (७) उन्होंने उससे पूछा हे गुरु यह कब होगा और यह बातें जिस समयमें हो जायेंगीं उस समयका क्या चिन्ह होगा। (८) उसने कहा चौकस रहो कि भरमाये न जावो क्योंकि बहुत लोग मेरे नामसे आके कहेंगे मैं वही हूं और समय निकट आया है. सो तुम उनके पीछे मत जाओ। (९) जब तुम लड़ाइयों और हुल्लड़ोंकी चर्चा सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इनका पहिले होना अवश्य है पर अन्त तुरन्त नहीं होगा। (१०) तब उस ने उन्होंसे कहा देश देशके और राज्य राज्यके बिरुद्ध उठेंगे। (११) और अनेक स्थानोंमें बड़े भुईंडोल और अकाल और मरियां होंगीं और भयंकर लक्षण और आकाशसे बड़े बड़े चिन्ह प्रगट होंगे।

(१२) परन्तु इन सभोंके पहिले लोग तुमपर अपने हाथ बढ़ावेंगे और तुम्हें सतावेंगे और मेरे नामके कारण सभाके घरों और बन्दीगृहोंमें रखवावेंगे और राजाओं और अध्यक्षोंके आगे ले जावेंगे। (१३) पर इससे तुम्हारे लिये साक्षी हो जायगी। (१४) सो अपने अपने मनमें ठहरा रखो कि हम उत्तर देनेके लिये आगेसे चिन्ता न करेंगे। (१५) क्योंकि मैं

तुम्हें ऐसा बचन और ज्ञान देऊंगा कि तुम्हारे सब बिरोधी उसका खंडन अथवा साम्हना नहीं कर सकेंगे । (१६) तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुंब और मित्र लोग तुम्हें पकड़-वायेंगे और तुममेंसे कितनोंको घात करवायेंगे । (१७) और मेरे नामके कारण सब लोग तुमसे बैर करेंगे । (१८) परन्तु तुम्हारे सिरका एक बाल भी नष्ट न होगा । (१९) अपनी धीरतासे अपने प्राणोंकी रक्षा करो ।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. २—मत्ताकाल ।]
मत्ती २४ : १५—२८ ।

(२०) जब तुम यिरूशलोमको सेनाओंसे घेरे हुए देखो तब जानो कि उसका उजड़ जाना निकट आया है । (२१) तब जो यिहूदियामें हों सो पहाड़ोंपर भागें . जो यिरूशलोमके बीचमें हों सो निकल जावें और जो गांवोंमें हों सो उसमें प्रवेश न करें । (२२) क्योंकि येही दंड देनेके दिन होंगे कि धर्म्मपुस्तककी सब बातें पूरी होवें । (२३) उन दिनोंमें हाय हाय गर्भवतियां और दूध पिलानेवालियां क्योंकि देशमें बड़ा क्लेश और इन लोगों पर क्रोध होगा । (२४) वे खड्गकी धारसे मारे पड़ेंगे और सब देशों के लोगोंमें बंधुवे किये जायेंगे और जबलों अन्यदेशियोंका समय पूरा न होवे तबलों यिरूशलोम अन्यदेशियोंसे रौंदा जायगा ।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. ३—मनुष्यके पुत्रका फिर आना ।]
मत्ती २४ : २९—३१ ।

(२५) सूर्य्य और चांद और तारोंमें चिन्ह दिखाई देंगे और पृथिवीपर देश देशके लोगोंको संकट औ घबराहट होगी और समुद्र औ लहरोंका गर्जना होगा । (२६) और संसारपर आने-हारी बातोंके भयसे और बाट देखनेसे मनुष्य मृतकके ऐसे हो जायेंगे क्योंकि आकाशकी सेना डिग जायगी । (२७) तब वे मनुष्यके पुत्रको पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्यसे मेघपर आते देखेंगे ।

(२८) जब इन बातोंका आरंभ होगा तब तुम सीधे होके अपने सिर उठाओ क्योंकि तुम्हारा उद्धार निकट आता है ।

(२९) उसने उन्होंसे एक दृष्टान्त भी कहा कि गूलरका वृक्ष और सब वृक्षोंको देखो । (३०) जब उनकी कोंपलें निकलती हैं तब तुम देखकर आपही जानते हो कि धूपकाला अब निकट है । (३१) इस रीतिसे जब तुम यह बातें होते देखो तब जानो कि ईश्वरका राज्य निकट है । (३२) मैं तुमसे सच कहता हूं कि जबलों सब बातें पूरी न हो जायें तबलों इस समयके लोग नहीं जाते रहेंगे । (३३) आकाश और पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं ।

[यीशुका भविष्यद्वाक्य. ४—सचेत रहनेका उपदेश ।]

मत्ती २४ : ३६—४४ ।

(३४) अपने विषयमें सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारे मन अफराई और मतवालपन और सांसारिक चिन्ताओंसे भारी हो जावें और वह दिन तुमपर अचांचक आ पहुंचे । (३५) क्योंकि वह फंदेकी नाईं सारी पृथिवीके सब रहनेहारों पर आवेगा । (३६) इसलिये जागते रहो और नित्य प्रार्थना करो कि तुम इन सब आनेहारी बातोंसे बचनेके और मनुष्यके पुत्रके सन्मुख खड़े होनेके योग्य गिने जाओ ।

(३७) यीशु दिनको मन्दिरमें उपदेश करता था और रातको बाहर जाके जैतून नाम पर्ब्बतपर टिकता था । (३८) और तड़के सब लोग उसकी सुननेको मन्दिरमें उस पास आते थे ।

[यीशुको पकड़वानेका दाम ठहराना ।]

मत्ती २६ : १—५, १४—१६ ।

२२ अखमीरी रोटीका पर्ब्ब जो निस्तार पर्ब्ब कहावता है निकट आया । (२) और प्रधान याजक और अध्यापक लोग खोज करते थे कि यीशुको क्योंकर मार डालें क्योंकि वे लोगोंसे डरते थे ।

(३) तब शैतानने यिहूदामें जो इस्करियोती कहावता है और बारह शिष्योंमें गिना जाता था प्रवेश किया। (४) उसने जाके प्रधान याजकों और पहरुओंके अध्यक्षोंके संग बातचीत किई कि यीशुको क्योंकर उन्होंके हाथ पकड़वावे। (५) वे आनन्दित हुए और रुपैये देनेको उससे नियम बांधा। (६) वह अंगीकार करके उसे बिना हुल्लड़के उन्होंके हाथ पकड़वानेका अवसर ढूंढ़ने लगा।

[यीशुका निस्तार पर्ब्बका भोजन खाना और प्रभुभोजका स्थापन करना।]

मत्ती २६ : १७—३० ।

(७) तब अखमीरी रोटीके पर्ब्बका दिन जिसमें निस्तार पर्ब्बका मेम्ना मारना उचित था आ पहुंचा। (८) और यीशु ने पितर और योहनको यह कहके भेजा कि जाके हमारे लिये निस्तार पर्ब्बका भोजन बनाओ कि हम खायें। (९) वे उससे बोले आप कहां चाहते हैं कि हम बनावें। (१०) उस ने उनसे कहा देखो जब तुम नगरमें प्रवेश करो तब एक मनुष्य जलका घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा . जिस घरमें वह पैठे तुम उसके पीछे उस घरमें जाओ। (११) और उस घरके स्वामीसे कहो गुरु तुमसे कहता है कि पाहुनशाला कहां है जिसमें मैं अपने शिष्योंके संग निस्तार पर्ब्बका भोजन खाऊं। (१२) वह तुम्हें एक सजी हुई बड़ी उपरौठी कोठरी दिखावेगा वहां तैयार करो। (१३) उन्होंने जाके जैसा उसने उन्होंसे कहा तैसा पाया और निस्तार पर्ब्बका भोजन बनाया।

(१४) जब वह घड़ी पहुंची तब यीशु और बारहों प्रेरित उसके संग भोजनपर बैठे। (१५) और उसने उनसे कहा मैंने यह निस्तार पर्ब्बका भोजन दुःख भोगनेके पहिले तुम्हारे संग खानेकी बड़ी लालसा किई। (१६) क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जबलों वह ईश्वरके राज्यमें पूरा न होवे तबलों मैं

उसे फिर कभी न खाऊंगा। (१७) तब उसने कटोरा ले धन्य मानके कहा इसको लेओ और आपसमें बांटो। (१८) क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जबलों ईश्वरका राज्य न आवे तबलों मैं दाख रस कभी न पीऊंगा।

(१९) फिर उसने रोटी लेके धन्य माना और उसे तोड़के उनको दिया और कहा यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिये दिया जाता है. मेरे स्मरणके लिये यह किया करो। (२०) इसी रीतिसे उसने बियारीके पीछे कटोरा भी देके कहा यह कटोरा मेरे लोहूपर जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नया नियम है।

(२१) परन्तु देखो मेरे पकड़वानेहारेका हाथ मेरे संग मेजपर है। (२२) मनुष्यका पुत्र जैसा ठहराया गया है वैसाही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिससे वह पकड़वाया जाता है। (२३) तब वे आपसमें विचार करने लगे कि हममेंसे कौन है जो यह काम करेगा।

[शिष्योंका विवाद कि उनमेंसे कौन बड़ा है।]

मत्ती २० । २५—२८ ।

(२४) उन्होंमें यह विवाद भी हुआ कि उनमेंसे कौन बड़ा समझा जाय। (२५) यीशुने उनसे कहा अन्यदेशियोंके राजा उन्होंपर प्रभुता करते हैं और उन्होंके अधिकारी लोग परोपकारी कहावते हैं। (२६) परन्तु तुम ऐसे न होओ पर जो तुम्होंमें बड़ा है सो छोटेकी नाईं होवे और जो प्रधान है सो सेवककी नाईं होवे। (२७) कौन बड़ा है भोजनपर बैठनेहारा अथवा सेवक. क्या भोजनपर बैठनेहारा बड़ा नहीं है. परन्तु मैं तुम्हारे बीचमें सेवककी नाईं हूं। (२८) तुमही हो जो मेरी परीक्षाओंमें मेरे संग रहे हो। (२९) और जैसे मेरे पिताने मेरे लिये राज्य ठहराया है तैसा मैं तुम्हारे लिये ठहराता हूं.

(३०) कि तुम मेरे राज्यमें मेरी मेजपर खावो और पीवो और सिंहासनोंपर बैठके इस्रायेलके बारह कुलोंका न्याय करो।

[यीशुका पितरको चिताना।]

मत्ती २६ : ३३—३५।

(३१) और प्रभुने कहा हे शिमोन हे शिमोन देख शैतानने तुम्हें मांग लिया है इसलिये कि गेहूंकी नाईं तुम्हें फटके। (३२) परन्तु मैंने तेरे लिये प्रार्थना किई है कि तेरा बिश्वास घट न जाय और जब तू फिरे तब अपने भाइयोंको स्थिर कर। (३३) उसने उससे कहा हे प्रभु मैं आपके संग बंदीगृह में जानेको और मरनेको तैयार हूं। (३४) उसने कहा हे पितर मैं तुझसे कहता हूं कि आजही जबलों तू तीन बार मुझे नकारके न कहे कि मैं उसे नहीं जानता हूं तबलों मुर्ग न बोलेगा।

[शिष्योंके साहस करनेका उपदेश।]

(३५) और उसने उनसे कहा जब मैंने तुम्हें बिन थैली औ बिन झोली औ बिन जूते भेजा तब क्या तुमको किसी बस्तुकी घटी हुई. वे बोले किसूकी नहीं। (३६) उसने उनसे कहा परन्तु अब जिस पास थैली हो सो उसे ले ले और वैसेही झोली भी और जिस पास खड्ग न होय सो अपना बस्त्र बेचके एकको मोल लेवे। (३७) क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं अवश्य है कि धर्म्मपुस्तकका यह बचन भी कि वह कुकर्म्मियोंके संग गिना गया मुझपर पूरा किया जाय क्योंकि मेरे विषयमेंकी बातें सम्पूर्ण होनेपर हैं। (३८) तब वे बोले हे प्रभु देखिये यहां दो खड्ग हैं. उसने उनसे कहा बहुत है।

[गेतशिमनीकी बारीमें यीशुका महाशोक।]

मत्ती २६ : ३६—४६।

(३९) तब यीशु बाहर निकलके अपनी रीतिके अनुसार जैतून

पर्ब्बतपर गया और उसके शिष्य भी उसके पीछे हो लिये । (४०) उस स्थानमें पहुंचके उसने उनसे कहा प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें न पड़ो । (४१) और वह आप ढेला फेंकनेके टप्पेभर उनसे अलग गया और घुटने टेकके प्रार्थना किई . (४२) कि हे पिता जो तेरी इच्छा होय तो इस कटोरेको मेरे पाससे टाल दे तौभी मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूरी हो जाय । (४३) तब एक दूत उसे सामर्थ्य देनेको स्वर्गसे उसको दिखाई दिया । (४४) और उसने बड़े संकटमें होके अधिक दृढ़तासे प्रार्थना किई और उसका पसीना ऐसा हुआ जैसे लोहूके थक्के जो भूमिपर गिरें । (४५) तब वह प्रार्थनासे उठा और अपने शिष्योंके पास आ उन्हें शोकके मारे सोते पाया . (४६) और उनसे कहा क्यों सोते हो उठो प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें न पड़ो ।

[यीशुका पकड़वाया जाना ।]

मत्ती २६ । ४७—५६ ।

(४७) वह बोलताही था कि देखो बहुत लोग आये और बारह शिष्योंमेंसे एक शिष्य जिसका नाम यिहूदा था उनके आगे आगे चलता था और यीशुको चूमा लेनेको उस पास आया । (४८) यीशुने उससे कहा हे यिहूदा क्या तू मनुष्यके पुत्र को चूमा लेके पकड़वाता है । (४९) यीशुके संगियोंने जब देखा कि क्या होनेवाला है तब उससे कहा हे प्रभु क्या हम खड्गसे मारें। (५०) और उनमेंसे एकने महायाजकके दासको मारा और उसका दहिना कान उड़ा दिया । (५१) इसपर यीशुने कहा यहांतक रहने दो . और उस दासका कान छूके उसे चंगा किया । (५२) तब यीशुने प्रधान याजकों और मन्दिरके पहरुओं के अध्यक्षों और प्राचीनोंसे जो उस पास आये थे कहा क्या तुम जैसे डाकूपर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो। (५३) जब

मैं मन्दिरमें प्रतिदिन तुम्हारे संग था तब तुम्होंने मुझपर हाथ न बढ़ाये परन्तु यही तुम्हारी घड़ी और अंधकारका पराक्रम है।

[पितरका यीशुसे मुकर जाना।]
मत्ती २६ : ६९—७५।

(५४) वे उसे पकड़के ले चले और महायाजकके घरमें लाये और पितर दूर दूर उसके पीछे हो लिया। (५५) जब वे अंगनेमें आग सुलगाके एकट्ठे बैठे तब पितर उन्होंके बीचमें बैठ गया। (५६) और एक दासी उसे आगके पास बैठे देखके उसको ओर ताकके बोली यह भी उसके संग था। (५७) उसने उसे नकारके कहा हे नारी मैं उसे नहीं जानता हूं। (५८) थोड़ी बेर पीछे दूसरेने उसे देखके कहा तू भी उनमेंसे एक है. पितरने कहा हे मनुष्य मैं नहीं हूं। (५९) घड़ी एक बीते दूसरेने दृढ़तासे कहा यह भी सचमुच उसके संग था क्योंकि वह गालीली भी है। (६०) पितरने कहा हे मनुष्य मैं नहीं जानता तू क्या कहता है. और तुरन्त ज्यों वह कह रहा त्यों मुर्ग बोला। (६१) तब प्रभुने मुंह फेरके पितरपर दृष्टि किई और पितरने प्रभुका बचन स्मरण किया कि उसने उससे कहा था मुर्गके बोलनेसे आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा। (६२) तब पितर बाहर निकलके बिलक बिलक रोया।

[यीशुका प्रधान याजकों और प्राचीनोंसे बधके योग्य ठहराया जाना।]
मत्ती २६ : ५७—६८।

(६३) जो मनुष्य यीशुको धरे हुए थे वे उसे मारके ठट्ठा करने लगे. (६४) और उसकी आंखें ढांपके उसके मुंहपर थपेड़े मारके उससे पूछा कि भविष्यद्वाणी बोल किसने तुझे मारा। (६५) और उन्होंने बहुतसी और निन्दाकी बातें उसके बिरुद्ध में कहीं। (६६) ज्योंही बिहान हुआ त्योंही लोगोंके प्राचीन और प्रधान याजक और अध्यापक लोग एकट्ठे हुए और उसे अपनी न्यायसभामें लाये और बोले जो तू ख्रीष्ट है तो हमसे कह।

(६७) उसने उनसे कहा जो मैं तुमसे कहूं तो तुम प्रतीति नहीं करोगे। (६८) और जो मैं कुछ पूछूं तो तुम न उत्तर देओगे न मुझे छोड़ोगे। (६९) अबसे मनुष्यका पुत्र सर्व्वशक्तिमान ईश्वरकी दहिनी ओर बैठेगा। (७०) सभोंने कहा तो क्या तू ईश्वरका पुत्र है. उसने उन्होंसे कहा तुम तो कहते हो कि मैं हूं। (७१) तब उन्होंने कहा अब हमें साक्षीका और क्या प्रयोजन क्योंकि हमने आपही उसके मुखसे सुना है।

[यीशुका पिलातसे विचार किया जाना और उससे हेरोदके पास भेजा जाना और पीछे घातकोंके हाथ सौंपना।]

मत्ती २७ : १, २, ११—३१।

२३ तब सारा समाज उठके यीशुको पिलातके पास ले गया. (२) और उसपर यह कहके दोष लगाने लगा कि हमने यही पाया है कि यह मनुष्य लोगोंको बहकाता है और अपनेको ख्रीष्ट राजा कहके कैसरको कर देना बर्जता है। (३) पिलातने उससे पूछा क्या तू यिहूदियोंका राजा है. उसने उसको उत्तर दिया कि आपही तो कहते हैं। (४) तब पिलातने प्रधान याजकों और लोगोंसे कहा मैं इस मनुष्यमें कुछ दोष नहीं पाता हूं। (५) परन्तु उन्होंने अधिक दृढ़ताईसे कहा वह गालीलसे लेके यहांलों सारे यिहूदियामें उपदेश करके लोगोंको उसकाता है।

(६) पिलातने गालीलका नाम सुनके पूछा क्या यह मनुष्य गालीली है। (७) जब उसने जाना कि वह हेरोदके राज्यमेंका है तब उसे हेरोदके पास भेजा कि वह भी उन दिनोंमें यिरूशलीममें था। (८) हेरोद यीशुको देखके अति आनन्दित हुआ क्योंकि वह बहुत दिनसे उसको देखने चाहता था इसलिये कि उसके विषयमें बहुत बातें सुनी थीं और उसका कुछ आश्चर्य्य कर्म्म देखनेकी उसको आशा हुई। (९) उसने उससे

बहुत बातें पूछीं परन्तु उसने उसको कुछ उत्तर न दिया। (१०) और प्रधान याजकों और अध्यापकोंने खड़े हुए बड़ी धुनसे उसपर दोष लगाये। (११) तब हेरोदने अपनी सेनाके संग उसे तुच्छ जानके ठट्ठा किया और भड़कीला बस्त्र पहिराके उसे पिलातके पास फेर भेजा। (१२) उसी दिन पिलात और हेरोद जिन्होंके बीचमें आगेसे शत्रुता थी आपस में मित्र हो गये।

(१३) पिलातने प्रधान याजकों और अध्यक्षों और लोगों को एकट्ठे बुलाके उन्होंसे कहा. (१४) तुम इस मनुष्यको लोगोंका बहकानेहारा कहके मेरे पास लाये हो और देखो मैंने तुम्हारे साम्हने बिचार किया है परन्तु जिन बातोंमें तुम इस मनुष्यपर दोष लगाते हो उन बातोंके विषयमें मैंने उसमें कुछ दोष नहीं पाया है। (१५) न हेरोदने पाया है क्योंकि मैंने तुम्हें उस पास भेजा और देखो बधके योग्य कोई काम उस से नहीं किया गया है। (१६) सो मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा। (१७) पिलातको अवश्य भी था कि उस पर्ब्बमें एक मनुष्यको लोगोंके लिये छोड़ देवे। (१८) तब लोग सब मिलके चिल्लाये कि इसको ले जाइये और हमारे लिये बरब्बाको छोड़ दीजिये। (१९) यही बरब्बा किसी बलवेके कारण जो नगरमें हुआ था और नरहिंसाके कारण बन्दीगृहमें डाला गया था। (२०) पिलात यीशुको छोड़नेकी इच्छा कर लोगोंसे फिर बोला। (२१) परन्तु उन्होंने पुकारा कि उसे क्रूशपर चढ़ाइये क्रूशपर चढ़ाइये। (२२) उसने तीसरी बेर उनसे कहा क्यों उसने कौनसी बुराई किई है. मैंने उसमें बधके योग्य कोई दोष नहीं पाया है इसलिये मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा। (२३) परन्तु वे ऊंचे ऊंचे शब्दसे यत्न करके मांगने लगे कि वह क्रूशपर चढ़ाया जाय और उन्होंके और प्रधान

याजकोंके शब्द प्रबल ठहरे । (२४) सो पिलातने आज्ञा दिई कि उनकी बिन्तीके अनुसार किया जाय । (२५) और उसने उस मनुष्यको जो बलवे और नरहिंसाके कारण बन्दीगृहमें डाला गया था जिसे वे मांगते थे उनके लिये छोड़ दिया और यीशुको उनकी इच्छापर सोंप दिया । (२६) जब वे उसे ले जाते थे तब उन्होंने शिमोन नाम कुरीनी देशके एक मनुष्यको जो गांवसे आता था पकड़के उसपर क्रूश धर दिया कि उसे यीशुके पीछे ले चले ।

[यीशुको बधस्थानके मार्गपर ले जानेका वृत्तान्त ।]

(२७) लोगोंकी बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिई और बहुतेरी स्त्रियां भी जो उसके लिये छाती पीटती और बिलाप करती थीं । (२८) यीशुने उन्होंकी ओर फिरके कहा हे यिरूशलीमकी पुत्रियो मेरे लिये मत रोओ परन्तु अपने लिये और अपने बालकोंके लिये रोओ । (२९) क्योंकि देखो वे दिन आते हैं जिन्होंमें लोग कहेंगे धन्य वे स्त्रियां जो बांझ हैं और वे गर्भ जिन्होंने लड़के न जन्माये और वे स्तन जिन्होंने दूध न पिलाया है । (३०) तब वे पर्ब्बतोंसे कहने लगेंगे कि हमोंपर गिरो और टीलोंसे कि हमें ढांपो । (३१) क्योंकि जो वे हरे पेड़से यह करते हैं तो सूखेसे क्या किया जायगा । (३२) वे और दो मनुष्यों को भी जो कुकर्म्मी थे यीशुके संग घात करनेको ले चले ।

[यीशुका क्रूशपर प्राण देना ।]

मत्ती २७ । ३३—५६ ।

(३३) जब वे उस स्थानपर जो खोपड़ी कहावता है पहुंचे तब उन्होंने वहां उसको और उन कुकर्म्मियोंको एकको दहिनी ओर और दूसरेको बाईं ओर क्रूशोंपर चढ़ाया । (३४) तब यीशुने कहा हे पिता उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते क्या करते हैं . और उन्होंने चिट्ठियां डालके उसके कपड़े बांट लिये ।

(३५) लोग खड़े हुए देखते रहे और अध्यक्षोंने भी उनके संग ठट्ठाकर कहा उसने औरोंको बचाया जो वह ईश्वरका चुना हुआ जन ख्रीष्ट है तो अपनेको बचावे। (३६) योद्धाओंने भी उससे ठट्ठा करनेको निकट आके उसे सिरका दिया. (३७) और कहा जो तू यिहूदियोंका राजा है तो अपनेको बचा। (३८) और उसके ऊपरमें एक पत्र भी था जो यूनानीय औ रोमाय औ इब्रीय अक्षरोंमें लिखा हुआ था कि यह यिहूदियोंका राजा है।

(३९) जो कुकर्म्मी लटकाये गये थे उनमेंसे एकने उसकी निन्दा कर कहा जो तू ख्रीष्ट है तो अपनेको और हमोंको बचा। (४०) इसपर दूसरेने उसे डांटके कहा क्या तू ईश्वरसे कुछ डरता भी नहीं. तुझपर तो वैसाही दंड दिया जाता है। (४१) और हमोंपर न्यायकी रीतिसे दिया जाता क्योंकि हम अपने कर्म्मोंके योग्य फल भोगते हैं परन्तु इसने कोई अनुचित काम नहीं किया है (४२) तब उसने यीशुसे कहा हे प्रभु जब आप अपने राज्यमें आवें तब मेरी सुध लीजिये। (४३) यीशुने उससे कहा मैं तुझसे सच कहता हूं कि आजही तू मेरे संग स्वर्गलोकमें होगा।

(४४) जब दो पहरके निकट हुआ तब सारे देशमें तीसरे पहरलों अंधकार हो गया। (४५) सूर्य्य अंधियारा हो गया और मन्दिरका परदा बीचसे फट गया। (४६) और यीशुने बड़े शब्दसे पुकारके कहा हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे हाथमें सौंपता हूं और यह कहके प्राण त्यागा। (४७) जो हुआ था सो देखके शतपतिने ईश्वरका गुणानुवाद कर कहा निश्चय यह मनुष्य धर्म्मी था। (४८) और सब लोग जो यह देखनेको एकट्ठे हुए थे जो कुछ हुआ था सो देखके अपनी अपनी छाती पीटते हुए फिर गये। (४९) और यीशुके सब चिन्हार और वे स्त्रियां जो गालीलसे उसके संग आई थीं दूर खड़े हो यह सब देखते रहे।

[यीशुका कबरमें रखा जाना ।]

मत्ती २७ । ५७—६६ ।

(५०) और देखो यूसफ नाम यिहूदियोंके अरिमथिया नगर का एक मनुष्य था जो मन्त्री था और उत्तम और धर्म्मी पुरुष होके दूसरे मन्त्रियोंके विचार और काममें नहीं मिला था। (५१) और वह आप भी ईश्वरके राज्यकी बाट जोहता था। (५२) उसने पिलातके पास जाके यीशुको लोथ मांग लिई। (५३) तब उसने उसे उतारके चद्दरमें लपेटा और एक कबरमें रखा जो पत्थरमें खोदी हुई थी जिसमें कोई कभी नहीं रखा गया था। (५४) वह दिन तैयारीका दिन था और विश्रामवार समीप था। (५५) वे स्त्रियां भी जो गालीलसे उसके संग आई थीं पीछे हो लिईं और कबरको और उसकी लोथ क्योंकर रखी गई उसको देख लिया। (५६) और उन्होंने लौटके सुगन्ध द्रव्य और सुगन्ध तेल तैयार किया और आज्ञाके अनुसार विश्रामके दिनमें विश्राम किया।

[यीशुके जी उठनेका वर्णन ।]

मत्ती २८ । १—१० ।

२४ तब अठवारेके पहिले दिन बड़ी भोर ये स्त्रियां और उनके संग कई एक और स्त्रियां वह सुगन्ध जो उन्होंने तैयार किया था लेके कबरपर आईं। (२) परन्तु उन्हों ने पत्थरको कबरके साम्हनेसे लुढ़काया हुआ पाया। (३) और भीतर जाके प्रभु यीशुकी लोथ न पाई। (४) जब वे इस बात के विषयमें दुवधा कर रहीं तब देखो दो पुरुष चमकते वस्त्र पहिने हुए उनके निकट खड़े हो गये। (५) जब वे डर गईं और धरतीकी ओर मुंह झुकाये रहीं तब वे उनसे बोले तुम जीवतेको मृतकोंके बीचमें क्यों ढूंढ़ती हो। (६) वह यहां नहीं है परन्तु जी उठा है. स्मरण करो कि उसने गालील

में रहते हुए तुमसे कहा . (७) अवश्य है कि मनुष्यका पुत्र पापी लोगोंके हाथमें पकड़वाया जाय और क्रूशपर घात किया जाय और तीसरे दिन जी उठे। (८) तब उन्होंने उसकी बातोंको स्मरण किया। (९) और कबरसे लौटके उन्होंने ग्यारह शिष्योंको और और सभोंको यह सब बातें सुनाईं। (१०) मरियम मगदलीनी और योहाना और याकूबकी माता मरियम और उनके संगकी और स्त्रियां थीं जिन्होंने प्रेरितोंसे यह बातें कहीं। (११) परन्तु उनकी बातें उन्होंके आगे कहानीसी समझ पड़ीं और उन्होंने उनकी प्रतीति न किई। (१२) तब पितर उठके कबरपर दौड़ गया और झुकके केवल चद्दर पड़ी हुई देखी और जो हुआ था उससे अपने मनमें अचंभा करता हुआ चला गया।

[यीशुका इम्माऊको जाते हुए दो शिष्योंको दर्शन देना।]

(१३) देखो उसी दिन उनमेंसे दो जन इम्माऊ नाम एक गांवको जो यिरूशलीमसे कोश चार एक पर था जाते थे। (१४) और वे इन सब बातोंपर जो हुई थीं आपसमें बातचीत करते थे। (१५) ज्यों वे बातचीत और बिचार कर रहे त्यों यीशु आपही निकट आके उनके संग हो लिया। (१६) परन्तु उनकी दृष्टि ऐसी रोकी गई कि उन्होंने उसको नहीं चीन्हा। (१७) उसने उनसे कहा यह क्या बातें हैं जिनपर तुम चलते हुए आपसमें बातचीत करते और उदास होते हो। (१८) तब एक जनने जिसका नाम क्लियोपा था उत्तर देके उससे कहा क्या केवल तूही यिरूशलीममें डेरा करके वे बातें जो उसमें इन दिनोंमें हुई हैं नहीं जानता है। (१९) उसने उनसे कहा कौनसी बातें . उन्होंने उससे कहा यीशु नासरीके विषयमें जो भविष्यद्वक्ता और ईश्वरके और सब लोगोंके आगे काममें और बचनमें शक्तिमान पुरुष था।

(२०) क्योंकर हमारे प्रधान याजकों और अध्यक्षोंने उसे सोंप दिया कि उसपर बध किये जानेकी आज्ञा दिई जाय और उसे क्रूशपर घात किया है । (२१) परन्तु हमें आशा थी कि वही है जो इस्रायेलका उद्धार करेगा . और भी जबसे यह हुआ तबसे आज उसको तीसरा दिन है । (२२) और हमोंमें से कितनी स्त्रियोंने भी हमें बिस्मित किया है कि वे भोरको कबरपर गईं . (२३) पर उसकी लोथ न पाके फिर आके बोलीं कि हमने स्वर्गदूतोंका दर्शन भी पाया है जो कहते हैं कि वह जीता है । (२४) तब हमारे संगियोंमेंसे कितने जन कबर पर गये और जैसा स्त्रियोंने कहा तैसाही पाया परन्तु उस को न देखा । (२५) तब यीशुने उनसे कहा हे निर्बुद्धि और भविष्यद्वक्ताओंकी सब बातोंपर बिश्वास करनेमें मन्दमति लोगो . (२६) क्या अवश्य न था कि ख्रीष्ट यह दुःख उठाके अपने ऐश्वर्य्यमें प्रवेश करे । (२७) तब उसने मूसासे और सब भविष्यद्वक्ताओंसे आरंभ कर सारे धर्म्मपुस्तकमें अपने विषय मेंकी बातोंका अर्थ उन्होंको बताया । (२८) इतनेमें वे उस गांवके पास पहुंचे जहां वे जाते थे और उसने ऐसा किया जैसा कि आगे जाता है । (२९) परन्तु उन्होंने यह कहके उसको रोका कि हमारे संग रहिये क्योंकि सांझ हो चली और दिन ढल गया है . तब वह उनके संग रहनेको भीतर गया । (३०) जब वह उनके संग भोजनपर बैठा तब उसने रोटी लेके धन्यबाद किया और उसे तोड़के उनको दिया । (३१) तब उनकी दृष्टि खुल गई और उन्होंने उसको चीन्हा और वह उनसे अन्तर्द्धान हो गया । (३२) और उन्होंने आपसमें कहा जब वह मार्गमें हमसे बात करता था और धर्म्मपुस्तकका अर्थ हमें बताता था तब क्या हमारा मन हममें न तपता था । (३३) वे उसी घड़ी उठके यिरूशलीमको लौट गये और ग्यारह

शिष्योंको और उनके संगियोंको एकट्ठे हुए और यह कहते हुए पाया . (३४) कि निश्चय प्रभु जी उठा है और शिमोन को दिखाई दिया है। (३५) तब उन दोनोंने कह सुनाया कि मार्गमें क्या हुआ था और यीशु क्योंकर रोटी तोड़नेमें उनसे पहचाना गया।

[यीशुका एग्यारह शिष्योंको दर्शन देना।]

योहन २० : १९।

(३६) वे यह कहतेही थे कि यीशु आपही उनके बीचमें खड़ा हो उनसे बोला तुम्हारा कल्याण होय। (३७) परन्तु वे व्याकुल और भयमान हुए और समझा कि हम प्रेतको देखते हैं। (३८) उसने उनसे कहा क्यों व्याकुल हो और तुम्हारे मन में संदेह क्यों उत्पन्न होता है। (३९) मेरे हाथ और मेरे पांव देखो कि मैं आपही हूं . मुझे टोओ और देख लो क्योंकि जैसे तुम मुझमें देखते हो तैसे प्रेतको हाड़ मांस नहीं होते हैं। (४०) यह कहके उसने अपने हाथ पांव उन्हें दिखाये। (४१) ज्यों वे मारे आनन्दके प्रतीति न करते थे और अचंभित हो रहे त्यों उसने उनसे कहा क्या तुम्हारे पास यहां कुछ भोजन है। (४२) उन्होंने उसको कुछ भूनी मछली और मधुका छत्ता दिया। (४३) उसने लेके उनके साम्हने खाया। (४४) और उसने उनसे कहा यही वे बातें हैं जो मैंने तुम्हारे संग रहते हुए तुमसे कहीं कि जो कुछ मेरे बिषयमें मूसाकी व्यवस्थामें और भविष्यद्वक्ताओं और गीतोंके पुस्तकमें लिखा है सबका पूरा होना अवश्य है। (४५) तब उसने धर्म्मपुस्तक समझनेको उनका ज्ञान खोला . (४६) और उनसे कहा यूं लिखा है और इसी रीतिसे अवश्य था कि ख्रीष्ट दुःख उठावे और तीसरे दिन मृतकोंमेंसे जी उठे . (४७) और यिरूशलीमसे आरंभ कर सब देशोंके लोगोंमें उसके नामसे पश्चात्तापको और पाप मोचनको

कथा सुनाई जावे। (४८) तुम इन बातोंके साक्षी हो। (४९) देखो मेरे पिताने जिसकी प्रतिज्ञा किई उसको मैं तुम्होंपर भेजता हूं और तुम जबलों ऊपरसे शक्ति न पावो तबलों यिरूशलोम नगरमें रहो।

[यीशुका स्वर्गारोहण होना।]
प्रेरितों की क्रिया १ : ९—११।

(५०) तब वह उन्हें बैथनियालों बाहर ले गया और अपने हाथ उठाके उन्हें आशीस दिई। (५१) उन्हें आशीस देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्गपर उठा लिया गया। (५२) और वे उसको प्रणाम कर बड़े आनन्दसे यिरूशलोमको लौट गये . (५३) और नित्य मन्दिरमें ईश्वरकी स्तुति और धन्यवाद किया करते थे। आमीन॥

योहन रचित सुसमाचार।

[अनादि वचनका देहधारी होना।]

१ आदिमें वचन था और वचन ईश्वरके संग था और वचन ईश्वर था। (२) वह आदिमें ईश्वरके संग था। (३) सब कुछ उसके द्वारा सृजा गया और जो सृजा गया है कुछ भी उस बिना नहीं सृजा गया। (४) उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्योंका उजियाला था। (५) और वह उजियाला अंधकारमें चमकता है और अंधकारने उसको ग्रहण न किया।

(६) एक मनुष्य ईश्वरकी ओरसे भेजा गया जिसका नाम योहन था। (७) वह साक्षीके लिये आया कि उस उजियाले के विषयमें साक्षी देवे इसलिये कि सब लोग उसके द्वारासे विश्वास करें। (८) वह आप तो वह उजियाला न था परन्तु उस उजियालेके विषयमें साक्षी देनेको आया। (९) सच्चा उजियाला जो हर एक मनुष्यको उजियाला देता है जगतमें आनेवाला था। (१०) वह जगतमें था और जगत उसके द्वारा सृजा गया परन्तु जगतने उसको नहीं जाना। (११) वह अपने निज देशमें आया और उसके निज लोगोंने उसे ग्रहण न किया। (१२) परन्तु जितनोंने उसे ग्रहण किया उन्होंको अर्थात उसके नामपर बिश्वास करनेंहारोंको उसने ईश्वरके सन्तान होनेका अधिकार दिया। (१३) उन्होंका जन्म न लोहूसे न शरीरकी इच्छा से न मनुष्यकी इच्छासे परन्तु ईश्वरसे हुआ। (१४) और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीचमें डेरा किया और हमने उसकी महिमा पिताके एकलौतेकीसी महिमा देखी ✓ वह अनुग्रह और सच्चाईसे परिपूर्ण था। (१५) योहनने उसके विषयमें साक्षी दिई और पुकारके कहा यही था जिसके विषयमें मैंने कहा

कि जो मेरे पीछे आता है सो मेरे आगे हुआ है क्योंकि वह मुझसे पहिले था । (१६) उसकी भरपूरीसे हम सभोंने पाया है हां अनुग्रहपर अनुग्रह पाया है। (१७) क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारासे दिई गई अनुग्रह और सच्चाई यीशु ख्रीष्टके द्वारा से हुए । (१८) किसीने ईश्वरको कभी नहीं देखा है . एकलौता पुत्र जो पिताकी गोदमें है उसीने उसे बर्णन किया ।

[यीशुके विषयमें योहनकी साक्षी ।]

मत्ती ३ : १—१२ ।

(१९) योहनकी साक्षी यह है कि जब यिहूदियोंने यिरू-शलोमसे याजकों और लेवीयोंको उससे यह पूछनेको भेजा कि तू कौन है . (२०) तब उसने मान लिया और नहीं मुकर गया पर मान लिया कि मैं ख्रीष्ट नहीं हूं । (२१) तब उन्होंने उससे पूछा तो कौन . क्या तू एलियाह है . उसने कहा मैं नहीं हूं . क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है . उसने उत्तर दिया कि नहीं। (२२) फिर उन्होंने उससे कहा तू कौन है कि हम अपने भेजनेहारोंको उत्तर देवें . तू अपने विषयमें क्या कहता है । (२३) उसने कहा मैं किसीका शब्द हूं जो जंगलमें पुकारता है कि परमे-श्वरका पन्थ सीधा करो जैसा यिशैयाह भविष्यद्वक्ताने कहा। (२४) जो भेजे गये थे सो फरीशियोंमेंसे थे। (२५) उन्होंने उस से पूछ करके उससे कहा जो तू न ख्रीष्ट और न एलियाह और न वह भविष्यद्वक्ता है तो क्यों बपतिसमा देता है । (२६) योहनने उनको उत्तर दिया कि मैं तो जलसे बपतिसमा देता हूं परन्तु तुम्हारे बीचमें एक खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते हो । (२७) वही है मेरे पीछे आनेवाला जो मेरे आगे हुआ है मैं उसकी जूतीका बन्ध खोलनेके योग्य नहीं हूं । (२८) यह बातें यर्दन नदीके उस पार बैथाबरा गांवमें हुईं जहां योहन बपतिसमा देता था ।

(२९) दूसरे दिन योहनने यीशुको अपने पास आते देखा और कहा देखो ईश्वरका मेम्ना जो जगतके पापको उठा लेता है। (३०) यही है जिसके विषयमें मैंने कहा कि एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मेरे आगे हुआ है क्योंकि वह मुझसे पहिले था। (३१) मैं उसे नहीं चीन्हता था परन्तु जिस्तें वह इस्रायेली लोगोंपर प्रगट किया जाय इसीलिये मैं जलसे बपतिसमा देता हुआ आया हूं। (३२) और भी योहन ने साक्षी दिई कि मैंने आत्माको कपोतकी नाईं स्वर्गसे उतरते देखा है और वह उसपर ठहर गया। (३३) और मैं उसे नहीं चीन्हता था परन्तु जिसने मुझे जलसे बपतिसमा देनेको भेजा उसीने मुझसे कहा जिसपर तू आत्माको उतरते और उसपर ठहरते देखे वही तो पवित्र आत्मासे बपतिसमा देनेहारा है। (३४) और मैंने देखके साक्षी दिई है कि यही ईश्वरका पुत्र है।

[यीशुके पहिले शिष्योंका वर्णन।]

(३५) दूसरे दिन फिर योहन और उसके शिष्योंमेंसे दो जन खड़े थे। (३६) और ज्यों यीशु फिरता था त्यों वह उस पर दृष्टि करके बोला देखो ईश्वरका मेम्ना। (३७) उन दो शिष्योंने उसको बोलते सुना और यीशुके पीछे हो लिये। (३८) यीशुने मुंह फेरके उनको पीछे आते देखके उनसे कहा तुम क्या खोजते हो. उन्होंने उससे कहा हे रब्बी अर्थात हे गुरु आप कहां रहते हैं। (३९) उसने उनसे कहा आके देखो. उन्होंने जाके देखा वह कहां रहता था और उस दिन उस के संग रहे कि दो घड़ीके अटकल दिन रहा था। (४०) जो दो जन योहनकी सुनके यीशुके पीछे हो लिये उनमेंसे एक तो शिमोन पितरका भाई अन्द्रिय था। (४१) उसने पहिले अपने निज भाई शिमोनको पाया और उससे कहा हमने मसीहको अर्थात ख्रीष्टको पाया है। (४२) तब वह उसे यीशु

पास लाया और यीशुने उसपर दृष्टि कर कहा तू यूनसका पुत्र शिमोन है तू कैफा अर्थात पितर कहावेगा ।

(४३) दूसरे दिन यीशुने गालील देशको जानेकी इच्छा किई और फिलिपको पाके उससे कहा मेरे पीछे आ । (४४) फिलिप तो अन्द्रिय और पितरके नगर बैतसैदाका था । (४५) फिलिप ने नथनेलको पाके उससे कहा जिसके विषयमें मूसाने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओंने लिखा है उसको हमने पाया है अर्थात यूसफके पुत्र नासरत नगरके यीशुको । (४६) नथनेल ने उससे कहा क्या कोई उत्तम वस्तु नासरतसे उत्पन्न हो सकती है . फिलिपने उससे कहा आके देखिये । (४७) यीशु ने नथनेलको अपने पास आते देखा और उसके विषयमें कहा देखो यह सचमुच इस्रायेली है जिसमें कपट नहीं है । (४८) नथनेलने उससे कहा आप मुझे कहांसे पहचानते हैं . यीशुने उसको उत्तर दिया कि फिलिपके तुझे बुलानेके पहिले जब तू गूलरके वृक्ष तले था तब मैंने तुझे देखा । (४९) नथनेलने उसको उत्तर दिया कि हे गुरु आप ईश्वरके पुत्र हैं आप इस्रायेलके राजा हैं । (५०) यीशुने उसको उत्तर दिया मैंने जो तुझसे कहा कि मैंने तुझे गूलरके वृक्ष तले देखा क्या तू इसलिये विश्वास करता है . तू इनसे बड़े काम देखेगा । (५१) फिर उससे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं इसके पीछे तुम स्वर्गको खुला और ईश्वरके दूतोंको मनुष्यके पुत्र के ऊपरसे चढ़ते उतरते देखोगे ।

[यीशुके आश्चर्य्य कर्म्मोंका आरंभ ।]

२ तीसरे दिन गालीलके काना नगरमें एक बिवाहका भोज था और यीशुकी माता वहां थी । (२) यीशु भी और उसके शिष्य लोग उस विवाहके भोजमें बुलाये गये । (३) जब दाख रस घट गया तब यीशुकी माताने उससे कहा उनके

पास दाख रस नहीं है। (४) यीशुने उससे कहा हे नारी आप को मुझसे क्या काम. मेरा समय अबलों नहीं पहुंचा है। (५) उसकी माताने सेवकोंसे कहा जो कुछ वह तुमसे कहे सो करो। (६) वहां पत्थरके छः मटके यिहूदियोंके शुद्ध करने की रीतिके अनुसार धरे थे जिनमें डेढ़ डेढ़ अथवा दो दो मन समाते थे। (७) यीशुने उनसे कहा मटकोंको जलसे भर देओ. सो उन्होंने उन्हें मुंहामुंह भर दिया। (८) तब उसने उनसे कहा अब उंडेलो और भोजके प्रधानके पास ले जाओ. वे ले गये। (९) जब भोजके प्रधानने वह जल जो दाख रस बन गया था चीखा और वह नहीं जानता था कि वह कहां से आया परन्तु जिन सेवकोंने जल उंडेला था वे जानते थे तब भोजके प्रधानने दूल्हेको बुलाया. (१०) और उससे कहा हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाख रस देता और जब लोग पीके छक जाते तब मध्यम देता है. तूने अच्छा दाख रस अबलों रखा है। (११) यीशुने गालीलके काना नगरमें आश्चर्य्य कर्म्मोंका यह आरंभ किया और अपनी महिमा प्रगट किई और उसके शिष्योंने उसपर बिश्वास किया।

[यीशुका यिरूशलीममें प्रवेश होने और मन्दिरको शुद्ध करनेका बर्णन।]

मत्ती २१ : १२।

(१२) इसके पीछे वह और उसकी माता और उसके भाई और उसके शिष्य लोग कफर्नाहूम नगरको गये परन्तु वहां बहुत दिन न रहे। (१३) यिहूदियोंका निस्तार पर्ब्ब निकट था और यीशु यिरूशलीमको गया। (१४) और उसने मन्दिर में गोरूओं औ भेड़ों औ कपोतोंके बेचनेहारोंको और सर्राफों को बैठे हुए पाया। (१५) तब उसने रस्सियोंका कोड़ा बनाके उन सभोंको भेड़ों औ गोरूओं समेत मन्दिरसे निकाल दिया और सर्राफोंके पैसे बिथराके पीढ़ोंको उलट दिया. (१६) और

कपोतोंके बेचनेहारोंसे कहा इनको यहांसे ले जाओ मेरे पिता का घर ब्योपारका घर मत बनाओ। (१७) तब उसके शिष्यों ने स्मरण किया कि लिखा है तेरे घरके विषयमेंको घुन मुझे खा जाती है।

(१८) इसपर यिहूदियोंने उससे कहा तू जो यह करता है तो हमें कौनसा चिन्ह दिखाता है। (१९) यीशुने उनको उत्तर दिया कि इस मन्दिरको ढा दो और मैं उसे तीन दिनमें उठाऊंगा। (२०) यिहूदियोंने कहा यह मन्दिर छयालीस बरस में बनाया गया और तू क्या तीन दिनमें इसे उठावेगा। (२१) परन्तु वह अपने देहके मन्दिरके विषयमें बोला। (२२) सो जब वह मृतकोंमेंसे जी उठा तब उसके शिष्योंने स्मरण किया कि उसने उन्होंसे यह बात कही थी और उन्होंने धर्म्मपुस्तक पर और उस बचनपर जो यीशुने कहा था बिश्वास किया।

(२३) जब वह निस्तार पर्ब्बमें यिरूशलीममें था तब बहुत लोगोंने उसके आश्चर्य्य कर्म्मोंको जो वह करता था देखके उसके नामपर बिश्वास किया। (२४) परन्तु यीशुने अपनेको उन्होंके हाथ नहीं सौंपा क्योंकि वह सभोंको जानता था. (२५) और उसे प्रयोजन न था कि मनुष्यके विषयमें साक्षी कोई देवे क्योंकि वह आप जानता था कि मनुष्यमें क्या है।

[यीशुका निकोदीमको नये जन्म और जगतके त्राणका उपदेश देना।]

३ फरीशियोंमेंसे निकोदीम नाम एक मनुष्य था जो यिहूदियोंका एक प्रधान था। (२) वह रातको यीशु पास आया और उससे कहा हे गुरु हम जानते हैं कि आप ईश्वर की ओरसे उपदेशक आये हैं क्योंकि कोई इन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो आप करते हैं जो ईश्वर उसके संग न हो तो नहीं कर सकता है। (३) यीशुने उसको उत्तर दिया कि मैं तुझसे सच सच कहता हूं कोई यदि फिरके न जन्मे तो ईश्वरका

राज्य नहीं देख सकता है । (४) निकोदीमने उससे कहा मनुष्य बूढ़ा होके क्योंकर जन्म ले सकता है . क्या वह अपनी माताके गर्भमें दूसरी बेर प्रवेश करके जन्म ले सकता है । (५) यीशुने उत्तर दिया कि मैं तुझसे सच सच कहता हूं कोई यदि जल और आत्मासे न जन्मे तो ईश्वरके राज्यमें प्रवेश नहीं कर सकता है । (६) जो शरीरसे जन्मा है सो शरीर है और जो आत्मासे जन्मा है सो आत्मा है । (७) अचंभा मत कर कि मैंने तुझसे कहा तुमको फिरके जन्म लेना अवश्य है । (८) पवन जहां चाहता है तहां बहता है और तू उस का शब्द सुनता है परन्तु नहीं जानता है वह कहांसे आता और किधरको जाता है . जो कोई आत्मासे जन्मा है सो इसी रीतिसे है ।

(९) निकोदीमने उसको उत्तर दिया कि यह बातें क्योंकर हो सकती हैं। (१०) यीशुने उसको उत्तर दिया क्या तू इस्रायेली लोगोंका उपदेशक है और यह बातें नहीं जानता । (११) मैं तुझसे सच सच कहता हूं हम जो जानते हैं सो कहते हैं और जो देखा है उसपर साक्षी देते हैं और तुम हमारी साक्षी ग्रहण नहीं करते हो । (१२) जो मैंने तुमसे पृथिवीपरकी बातें कहीं और तुम प्रतीति नहीं करते हो तो यदि मैं तुमसे स्वर्गमेंकी बातें कहूं तुम क्योंकर प्रतीति करोगे। (१३) और कोई स्वर्गपर नहीं चढ़ गया है केवल वह जो स्वर्ग से उतरा अर्थात मनुष्यका पुत्र जो स्वर्गमें है । (१४) जिस रीतिसे मूसाने जंगलमें सांपको ऊंचा किया उसी रीतिसे अवश्य है कि मनुष्यका पुत्र ऊंचा किया जाय . (१५) इसलिये कि जो कोई उसपर बिश्वास करे सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे। (१६) क्योंकि ईश्वरने जगतको ऐसा प्यार किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उसपर

विश्वास करे सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे। (१७) ईश्वरने अपने पुत्रको जगतमें इसलिये नहीं भेजा कि जगतको दंडके योग्य ठहरावे परन्तु इसलिये कि जगत उस के द्वारा त्राण पावे। (१८) जो उसपर बिश्वास करता है सो दंडके योग्य नहीं ठहराया जाता है परन्तु जो बिश्वास नहीं करता सो दंडके योग्य ठहर चुका है क्योंकि उसने ईश्वरके एकलौते पुत्रके नामपर बिश्वास नहीं किया है। (१९) और दंडके योग्य ठहरानेका कारण यह है कि उजियाला जगत में आया है और मनुष्योंने अंधियारेको उजियालेसे अधिक प्यार किया क्योंकि उनके काम बुरे थे। (२०) क्योंकि जो कोई बुराई करता है सो उजियालेसे घिन्न करता है और उजियाले के पास नहीं आता है न हो कि उसके कामोंपर उलहना दिया जाय। (२१) परन्तु जो सच्चाईपर चलता है सो उजियाले के पास आता है इसलिये कि उसके काम प्रगट होवें कि ईश्वरकी ओरसे किये गये हैं।

[यीशुका और योहनका बपतिसमा देना।]

(२२) इसके पीछे यीशु और उसके शिष्य यिहूदिया देशमें आये और उसने वहां उनके संग रहके बपतिसमा दिलाया। (२३) योहन भी शालोमके निकट ऐनन नाम स्थानमें बप-तिसमा देता था क्योंकि वहां बहुत जल था और लोग आके बपतिसमा लेते थे। (२४) क्योंकि योहन अबलों बन्दीगृहमें नहीं डाला गया था।

[यीशुके विषयमें योहनका दूसरी बार साक्षी देना।]

(२५) योहनके शिष्यों और यिहूदियोंमें शुद्ध करनेके विषय में विवाद हुआ। (२६) और उन्होंने योहनके पास आके उससे कहा हे गुरु जो यर्दनके उस पार आपके संग था जिसपर आपने साक्षी दिई है देखिये वह बपतिसमा दिलाता है और

सब लोग उसके पास जाते हैं । (२७) योहनने उत्तर दिया यदि स्वर्गसे उसको न दिया जाय तो मनुष्य कुछ नहीं पा सकता है । (२८) तुम आपही मेरे साक्षी हो कि मैंने कहा मैं ख्रीष्ट नहीं हूं पर उसके आगे भेजा गया हूं। (२९) दूल्हिन जिसकी है सोई दूल्हा है परन्तु दूल्हेका मित्र जो खड़ा होके उसकी सुनता है दूल्हेके शब्दसे अति आनन्दित होता है . मेरा यह आनन्द पूरा हुआ है । (३०) अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं । (३१) जो ऊपरसे आता है सो सभोंके ऊपर है . जो पृथिवीसे है सो पृथिवीका है और पृथिवीकी बातें कहता है . जो स्वर्गसे आता है सो सभोंके ऊपर है । (३२) जो उसने देखा और सुना है वह उसपर साक्षी देता है और कोई उस का साक्षी ग्रहण नहीं करता । (३३) जिसने उसकी साक्षी ग्रहण किई है सो इस बातपर छाप दे चुका कि ईश्वर सत्य है । (३४) इसलिये कि जिसे ईश्वरने भेजा है सो ईश्वरकी बातें कहता है क्योंकि ईश्वर उसको आत्मा नापसे नहीं देता है । (३५) पिता पुत्रको प्यार करता है और उसने सब कुछ उसके हाथमें दिया है । (३६) जो पुत्रपर विश्वास करता है उसको अनन्त जीवन है पर जो पुत्रको न माने सो जीवन को नहीं देखेगा परन्तु ईश्वरका क्रोध उसपर रहता है ।

[यीशुका शोमिरोनी स्त्री और उसके नगरके लोगोंको सच्ची उपासनाका उपदेश देना ।]

४ जब प्रभुने जाना कि फरीशियोंने सुना है कि यीशु योहनसे अधिक शिष्य करके उन्हें बपतिसमा देता है . (२) तौभी यीशु आप नहीं परन्तु उसके शिष्य बपतिसमा देते थे . (३) तब वह यिहूदियाको छोड़के फिर गालीलको गया । (४) और उसको शोमिरोन देशमेंसे जाना अवश्य हुआ । (५) सो वह शिकर नाम शोमिरोनके एक नगरपर उस भूमिके निकट

पहुंचा जिसे याकूबने अपने पुत्र यूसफको दिया । (६) और याकूबका कूआ वहां था सो यीशु मार्गमें चलनेसे थकित हो उस कूएपर यूंही बैठ गया और दो पहरके निकट था । (७) एक शोमिरोनी स्त्री जल भरनेको आई . यीशुने उससे कहा मुझे पीनेको दीजिये । (८) उसके शिष्य लोग भोजन मोल लेनेको नगरमें गये थे । (९) शोमिरोनी स्त्रीने उससे कहा आप यिहूदी होके मुझसे जो शोमिरोनी स्त्री हूं क्योंकर पीनेको मांगते हैं क्योंकि यिहूदी लोग शोमिरोनियोंके संग व्यवहार नहीं करते । (१०) यीशुने उसको उत्तर दिया जो तू ईश्वरके दानको जानती और वह कौन है जो तुझसे कहता है मुझे पीनेको दीजिये तो तू उससे मांगती और वह तुझे अमृत जल देता । (११) स्त्रीने उससे कहा हे प्रभु जल भरनेको आपके पास कुछ नहीं है और कूआं गहिरा है तो वह अमृत जल आपको कहांसे मिला है । (१२) क्या आप हमारे पिता याकूबसे बड़े हैं जिसने यह कूआं हमें दिया और आपही अपने सन्तान और अपने ढोर समेत उसमेंसे पिया । (१३) यीशुने उसको उत्तर दिया कि जो कोई यह जल पीवे सो फिर पियासा होगा . (१४) पर जो कोई वह जल पीवे जो मैं उसको देऊंगा सो फिर कभी पियासा न होगा परन्तु जो जल मैं उसे देऊंगा सो उसमें अनन्त जीवनलों उमंगनेहारे जलका सोता हो जायगा । (१५) स्त्रीने उससे कहा हे प्रभु यह जल मुझे दीजिये कि मैं पियासी न होऊं और न जल भरनेको यहां आऊं । (१६) यीशुने उससे कहा जा अपने स्वामीको बुलाके यहां आ । (१७) स्त्रीने उत्तर दिया कि मेरे तईं स्वामी नहीं है . यीशु उससे बोला तूने अच्छा कहा कि मेरे तईं स्वामी नहीं है . (१८) क्योंकि तेरे पांच स्वामी हो चुके और अब जो तेरे संग रहता है सो तेरा स्वामी नहीं है . यह तूने सच कहा है । (१९) स्त्रीने

उससे कहा हे प्रभु मुझे सूझ पड़ता है कि आप भविष्यद्वक्ता हैं। (२०) हमारे पितरोंने इसी पहाड़पर भजन किया और आप लोग कहते हैं कि वह स्थान जहां भजन करना उचित है यिरूशलीममें है। (२१) यीशुने उससे कहा हे नारी मेरी प्रतीति कर कि वह समय आता है जिसमें तुम न इस पहाड़ पर और न यिरूशलीममें पिताका भजन करोगे। (२२) तुम लोग जिसे नहीं जानते हो उसका भजन करते हो हम लोग जिसे जानते हैं उसका भजन करते हैं क्योंकि त्राण यिहूदियों मेंसे है। (२३) परन्तु वह समय आता है और अब है जिस में सच्चे भक्त आत्मा और सच्चाईसे पिताका भजन करेंगे क्यों-कि पिता ऐसे भजन करनेहारोंको चाहता है। (२४) ईश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसका भजन करनेहारे आत्मा और सच्चाईसे भजन करें। (२५) स्त्रीने उससे कहा मैं जानती हूं कि मसीह अर्थात ख्रीष्ट आता है. वह जब आवेगा तब हमें सब कुछ बतावेगा। (२६) योशुने उससे कहा मैं जो तुझ से बोलता हूं वही हूं।

(२७) इतनेमें उसके शिष्य आये और अचंभा किया कि वह स्त्रीसे बात करता है तौभी किसीने नहीं कहा कि आप क्या चाहते हैं अथवा किसलिये उससे बात करते हैं। (२८) तब स्त्रीने अपना घड़ा छोड़ा और नगरमें जाके लोगोंसे कहा. (२९) आओ एक मनुष्यको देखो जिसने सब कुछ जो मैंने किया है मुझसे कहा है. यह क्या ख्रीष्ट है। (३०) सो वे नगरसे निकलके उस पास आये।

[कटनी और काटनेहारोंका वर्णन।]

(३१) इस बीचमें शिष्योंने योशुसे बिन्ती किई कि हे गुरु खाइये। (३२) उसने उनसे कहा खानेको मेरे पास भोजन है जो तुम नहीं जानते हो। (३३) शिष्योंने आपसमें कहा क्या

कोई उस पास कुछ खानेको लाया है । (३४) योशुने उनसे कहा मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेहारेकी इच्छापर चलूं और उसका काम पूरा करूं । (३५) क्या तुम नहीं कहते हो कि अब भी चार मास हैं तब कटनी आवेगी . देखो मैं तुम से कहता हूं अपनी आंखें उठाके खेतोंको देखो कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं। (३६) और काटनेहारा बनि पाता और अनन्त जीवनके लिये फल बटोरता है जिस्तें बोनेहारा और काटनेहारा दोनों एक संग आनन्द करें । (३७) इसमें वह बात सच्ची है कि एक बोता है और दूसरा काटता है । (३८) जिस में तुमने परिश्रम नहीं किया है उसको मैंने तुम्हें काटनेको भेजा . दूसरोंने परिश्रम किया है और तुमने उनके परिश्रम में प्रवेश किया है ।

(३९) उस नगरके शोमिरोनियोंमेंसे बहुतोंने उस स्त्रीके बचनके कारण जिसने साक्षी दिई कि उसने सब कुछ जो मैं ने किया है मुझसे कहा है योशुपर बिश्वास किया। (४०) इस लिये जब शोमिरोनी लोग उस पास आये तब उससे बिन्ती किई कि हमारे यहां रहिये . और वह वहां दो दिन रहा। (४१) और उसके वचनके कारण बहुत अधिक लोगोंने बिश्वास किया . (४२) और उस स्त्रीसे कहा हम अब तेरे बचनके कारण विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि हमने आपही सुना है और जानते हैं कि यह सचमुच ज़गतका त्राणकर्त्ता ख्रीष्ट है।

[योशुका गालील देशमें आना और दूसरा आश्चर्य्य कर्म्म करना ।]

(४३) दो दिनके पीछे योशु वहांसे निकलके गालीलको गया । (४४) उसने तो आपही साक्षी दिई कि भविष्यद्वक्ता अपने निज देशमें आदर नहीं पाता है। (४५) जब वह गालील में आया तब गालीलियोंने उसे ग्रहण किया क्योंकि जो कुछ उसने यिरूशलीममें पर्व्वमें किया था उन्होंने सब देखा था

कि वे भी पर्ब्बमें गये थे। (४६) सो योशु फिर गालीलके काना नगरमें आया जहां उसने जलको दाखरस बनाया था. और राजाके यहांका एक पुरुष था जिसका पुत्र कफर्नाहुममें रोगसे था। (४७) उसने जब सुना कि योशु यिहूदियासे गालील में आया है तब उस पास जाके उससे बिन्ती किई कि आके मेरे पुत्रको चंगा कीजिये. क्योंकि वह लड़का मरनेपर था। (४८) योशुने उससे कहा जो तुम चिन्ह और अद्भुत काम्म न देखो तो बिश्वास नहीं करोगे। (४९) राजाके यहांके पुरुष ने उससे कहा हे प्रभु मेरे बालकके मरनेके आगे आइये। (५०) योशुने उससे कहा चला जा तेरा पुत्र जीता है. उस मनुष्यने उस बातपर जो योशुने उससे कही बिश्वास किया और चला गया। (५१) और वह जाताही था कि उसके दास उससे आ मिले और सन्देश दिया कि आपका लड़का जीता है। (५२) उसने उनसे पूछा किस घड़ी उसका जी हलका हुआ. उन्होंने उससे कहा कल एक घड़ी दिन झुकते ज्वर ने उसको छोड़ा। (५३) सो पिताने जाना कि उसी घड़ीमें हुआ जिस घड़ी योशुने उससे कहा तेरा पुत्र जीता है और उसने औ उसके सारे घरानेने बिश्वास किया। (५४) यह दूसरा आश्चर्य्य कर्म्म योशुने यिहूदियासे गालीलमें आके किया।

[योशुका यिरूशलीमको आना और बिश्रामके दिन बैथेसदा कुंडके पास एक रोगीको चंगा करना।]

५ इसके पीछे यिहूदियोंका पर्ब्ब हुआ और योशु यिरूशलोमको गया। (२) यिरूशलोममें भेड़ी फाटकके पास एक कुंड है जो इब्रीय भाषामें बैथेसदा कहावता है जिसके पांच ओसारे हैं। (३) इन्होंमें रोगियों अंधों लंगड़ों और सूखे अंगवालोंकी बड़ी भीड़ पड़ी रहती थी जो जलके हिलनेकी बाट देखते थे। (४) क्योंकि समयके अनुसार एक स्वर्ग दूत उस

कुंडमें उतरके जलको हिलाता था इससे जो कोई जलके हिलनेके पीछे उसमें पहिले उतरता था कोई भी रोग उस को लगा हो चंगा हो जाता था । (५) एक मनुष्य वहां था जो अड़तीस बरससे रोगी था । (६) यीशुने उसे पड़े हुए देखके और यह जानके कि उसे अब बहुत दिन हो चुके उससे कहा क्या तू चंगा होने चाहता है । (७) रोगीने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरा कोई मनुष्य नहीं है कि जब जल हिलाया जाय तब मुझे कुंडमें उतारे और जबलों मैं जाता हूं दूसरा मुझसे आगे उतरता है । (८) यीशुने उससे कहा उठ अपनी खाट उठाके चल । (९) वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया और अपनी खाट उठाके चलने लगा पर उसी दिन बिश्रामवार था । (१०) इसलिये यिहूदियोंने उस चंगा किये हुए मनुष्यसे कहा यह बिश्रामका दिन है खाट उठाना तुझे उचित नहीं है । (११) उसने उन्हें उत्तर दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया उसीने मुझसे कहा अपनी खाट उठाके चल । (१२) उन्होंने उससे पूछा वह मनुष्य कौन है जिसने तुझसे कहा अपनी खाट उठाके चल । (१३) परन्तु वह चंगा किया हुआ मनुष्य नहीं जानता था वह कौन है क्योंकि उस स्थानमें भीड़ होनेसे यीशु वहांसे हट गया ।

(१४) इसके पीछे यीशुने उसको मन्दिरमें पाके उससे कहा देख तू चंगा हुआ है फिर पाप मत कर न हो कि इससे बुरी कोई बिपत्ति तुझपर आवे । (१५) उस मनुष्यने जाके यिहूदियों से कह दिया कि जिसने मुझे चंगा किया सो यीशु है ।

[यीशुका यिहूदियोंको अपनी महिमा वर्णन करना ।]

(१६) इस कारण यिहूदियोंने यीशुको सताया और उसे मार डालने चाहा कि उसने बिश्रामके दिनमें यह काम किया था । (१७) यीशुने उनको उत्तर दिया कि मेरा पिता अबलों

काम करता है मैं भी काम करता हूं। (१८) इस कारण यिहूदियोंने और भी उसे मार डालने चाहा कि उसने न केवल बिश्रामवारकी विधिको लंघन किया परन्तु ईश्वरको अपना निज पिता कहके अपनेको ईश्वरके तुल्य भी किया।

(१९) इसपर यीशुने उन्होंसे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं पुत्र आपसे कुछ नहीं कर सकता है केवल जो कुछ वह पिताको करते देखे क्योंकि जो कुछ वह करता है उसे पुत्र भी वैसेही करता है। (२०) क्योंकि पिता पुत्रको प्यार करता है और जो वह आप करता सो सब उसको बताता है और वह इनसे बड़े काम उसको बतावेगा जिस्तें तुम अचंभा करो। (२१) क्योंकि जैसा पिता मृतकोंको उठाता और जिलाता है वैसाही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है। (२२) और पिता किसीका बिचार भी नहीं करता है परन्तु बिचार करने का सब अधिकार पुत्रको दिया है इसलिये कि सब लोग जैसे पिताका आदर करते हैं वैसे पुत्रका आदर करें। (२३) जो पुत्रका आदर नहीं करता है सो पिताका जिसने उसे भेजा आदर नहीं करता है। (२४) मैं तुमसे सच सच कहता हूं जो मेरा बचन सुनके मेरे भेजनेहारेपर बिश्वास करता है उसको अनन्त जीवन है और दंडकी आज्ञा उसपर नहीं होती परन्तु वह मृत्युसे पार होके जीवनमें पहुंचा है। (२५) मैं तुमसे सच सच कहता हूं वह समय आता है और अब है जिसमें मृतक लोग ईश्वरके पुत्रका शब्द सुनेंगे और जो सुनेंगे सो जीयेंगे। (२६) क्योंकि जैसा पिता आपहीसे जीता है तैसा उसने पुत्रको भी अधिकार दिया है कि आपहीसे जीवे. (२७) और उसको बिचार करनेका भी अधिकार दिया है क्योंकि वह मनुष्यका पुत्र है। (२८) इससे अचंभा मत करो क्योंकि वह समय आता है जिसमें जो कबरोंमें हैं सो सब

उसका शब्द सुनके निकलेंगे . (२९) जिससे भलाई करनेहारे जीवनके लिये जी उठेंगे और बुराई करनेहारे दंडके लिये जी उठेंगे ।

(३०) मैं आपसे कुछ नहीं कर सकता हूं जैसा मैं सुनता हूं वैसा विचार करता हूं और मेरा बिचार यथार्थ है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं चाहता हूं परन्तु पिताकी इच्छा जिस ने मुझे भेजा । (३१) जो मैं अपने विषयमें साक्षी देता हूं तो मेरी साक्षी ठीक नहीं है । (३२) दूसरा है जो मेरे विषयमें साक्षी देता है और मैं जानता हूं कि जो साक्षी वह मेरे विषयमें देता है सो साक्षी ठीक है । (३३) तुमने योहनके पास भेजा और उसने सत्यपर साक्षी दिई । (३४) मैं मनुष्य से साक्षी नहीं लेता हूं परन्तु मैं यह बातें कहता हूं इसलिये कि तुम त्राण पावो । (३५) वह तो जलता और चमकता हुआ दीपक था और तुम कितनी बेरलों उसके उजियालेमें आनन्द करनेको प्रसन्न थे । (३६) परन्तु योहनकी साक्षीसे बड़ी साक्षी मेरे पास है क्योंकि जो काम पिताने मुझे पूरे करनेको दिये हैं अर्थात येही काम जो मैं करता हूं मेरे विषयमें साक्षी देते हैं कि पिताने मुझे भेजा है । (३७) और पिताने जिसने मुझे भेजा आपही मेरे विषयमें साक्षी दिई है. तुमने कभी उसका शब्द न सुना है और उसका रूप न देखा है । (३८) और तुम उसका वचन अपनेमें नहीं रखते हो कि जिसे उसने भेजा उसका बिश्वास नहीं करते हो । (३९) धर्म्म-पुस्तकमें ढूंढ़ो क्योंकि तुम समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन हमें मिलता है और वही है जो मेरे विषयमें साक्षी देता है । (४०) परन्तु तुम जीवन पानेको मेरे पास आने नहीं चाहते हो । (४१) मैं मनुष्योंसे आदर नहीं लेता हूं । (४२) परन्तु मैं तुम्हें जानता हूं कि ईश्वरका प्रेम तुममें नहीं है । (४३) मैं

अपने पिताके नामसे आया हूं और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते हो, यदि दूसरा अपनेही नामसे आवे तो उसे ग्रहण करोगे । (४४) तुम जो एक दूसरेसे आदर लेते हो और वह आदर जो अद्वैत ईश्वरसे है नहीं चाहते हो क्योंकर बिश्वास कर सकते हो । (४५) मत समझो कि मैं पिताके आगे तुमपर दोष लगाऊंगा . तुमपर दोष लगानेहारा तो है अर्थात मूसा जिसपर तुम भरोसा रखते हो । (४६) क्योंकि जो तुम मूसा का बिश्वास करते तो मेरा बिश्वास करते इसलिये कि उस ने मेरे विषयमें लिखा । (४७) परन्तु जो तुम उसके लिखेपर बिश्वास नहीं करते हो तो मेरे कहेपर क्योंकर बिश्वास करोगे ।

[योशुका पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना ।]

मत्ती १४ । १३—२१ ।

६ इसके पीछे योशु गालीलके समुद्र अर्थात तिबरियाके समुद्रके उस पार गया । (२) और बहुत लोग उसके पीछे हो लिये इस कारण कि उन्होंने उसके आश्चर्य्य कर्म्मोंको देखा जो वह रोगियोंपर करता था । (३) तब योशु पर्ब्बतपर चढ़के अपने शिष्योंके संग वहां बैठा । (४) और यिहूदियोंका पर्ब्ब अर्थात निस्तार पर्ब्ब निकट था । (५) योशुने अपनी आंखें उठाके बहुत लोगोंको अपने पास आते देखा और फिलिपसे कहा हम कहांसे रोटी मोल लेवें कि ये लोग खावें । (६) उसने उसे परखनेको यह बात कही क्योंकि जो वह करने पर था सो आप जानता था । (७) फिलिपने उसको उत्तर दिया कि दो सौ सूकियोंकी रोटी उनके लिये इतनी भी न होगी कि उनमेंसे हर एकको थोड़ी थोड़ी मिले । (८) उसके शिष्योंमेंसे एकने अर्थात शिमोन पितरके भाई आन्द्रियने उस से कहा ; (९) यहां एक छोकरा है जिस पास जवकी पांच रोटी और दो मछली हैं परन्तु इतने लोगोंके लिये ये क्या

हैं । (१०) यीशुने कहा उन मनुष्योंको बैठाओ . उस स्थानमें बहुत घास थी सो पुरुष जो गिन्तीमें पांच सहस्रके अटकल थे बैठ गये । (११) तब यीशुने रोटियां ले धन्य मानके शिष्यों को बांट दिईं और शिष्योंने बैठनेहारोंको और वैसेही मछ्लियोंमेंसे जितनी वे चाहते थे उतनी दिईं । (१२) जब वे तृप्त हुए तब उसने अपने शिष्योंसे कहा बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ खोया न जाय । (१३) सो उन्होंने बटोरा और जवकी पांच रोटियोंके जो टुकड़े खानेहारोंसे बच रहे उनसे बारह टोकरी भरीं । (१४) उन मनुष्योंने यह आश्चर्य्य कर्म्म जो यीशुने किया था देखके कहा यह सचमुच वह भविष्यद्वक्ता है जो जगतमें आनेवाला था । (१५) जब यीशुने जाना कि वे मुझे राजा बनानेके लिये आके मुझे पकड़ेंगे तब वह फिर अकेला पर्ब्बतपर गया ।

[यीशुका समुद्रपर चलना ।]

मत्ती १४ । २२—३४ ।

(१६) जब सांझ हुई तब उसके शिष्य लोग समुद्रके तीरपर गये . (१७) और नावपर चढ़के समुद्रके उस पार कफ़र्नाहूम को जाने लगे . और अंधियारा हुआ था और यीशु उनके पास नहीं आया था । (१८) बड़ी बयारके बहनेसे समुद्रमें लहरें भी उठती थीं । (१९) जब वे डेढ़ अथवा दो कोस खे गये थे तब उन्होंने यीशुको समुद्रपर चलते और नावके निकट आते देखा और डर गये । (२०) परन्तु उसने उनसे कहा मैं हूं डरो मत । (२१) तब वे उसे नावपर चढ़ा लेनेको प्रसन्न थे और तुरन्त नाव उस तीरपर जहां वे जाते थे लग गई ।

[यीशुका अपने आपको जीवनकी रोटी बताना जिससे जगतका जीवन होवे ।]

(२२) दूसरे दिन जो लोग समुद्रके उस पार खड़े थे उन्हों ने जाना कि जिस नावपर यीशुके शिष्य चढ़े उसे छोड़के

और कोई नाव यहां नहीं थी और यीशु अपने शिष्योंके संग उस नावपर नहीं चढ़ा पर केवल उसके शिष्य चले गये। (२३) तौभी पीछे और नावें तिबरिया नगरसे उस स्थानके निकट आई थीं जहां उन्होंने जब प्रभुने धन्य माना था रोटी खाई। (२४) सो जब लोगोंने देखा कि यीशु यहां नहीं है और न उसके शिष्य तब वे भी नावोंपर चढ़के यीशुको ढूंढ़ते हुए कफर्नाहूमको आये। (२५) और वे समुद्रके पार उसे पाके उससे बोले हे गुरु आप यहां कब आये। (२६) यीशुने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुमसे सच सच कहता हूं तुम मुझे इस लिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुमने आश्चर्य्य कर्म्मोंको देखा परन्तु इसलिये कि उन रोटियोंमेंसे खाके तृप्त हुए।

(२७) नाशमान भोजनके लिये परिश्रम मत करो परन्तु उस भोजनके लिये जो अनन्त जीवनलों रहता है जिसे मनुष्य का पुत्र तुमको देगा क्योंकि पिताने अर्थात ईश्वरने उसीपर छाप दिई है। (२८) उन्होंने उससे कहा ईश्वरके कार्य्य करने को हम क्या करें। (२९) यीशुने उन्हें उत्तर दिया ईश्वरका कार्य्य यह है कि जिसे उसने भेजा है उसपर तुम बिश्वास करो। (३०) उन्होंने उससे कहा आप कौनसा आश्चर्य्य कर्म्म करते हैं कि हम देखके आपका बिश्वास करें. आप क्या करते हैं। (३१) हमारे पितरोंने जंगलमें मन्ना खाया जैसा लिखा है कि उसने उन्हें स्वर्गकी रोटी खानेको दिई। (३२) यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं मूसाने तुम्हें स्वर्गकी रोटी न दिई परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची स्वर्ग की रोटी देता है। (३३) क्योंकि ईश्वरकी रोटी वह है जो स्वर्गसे उतरती और जगतको जीवन देती है। (३४) उन्होंने उससे कहा हे प्रभु यही रोटी हमें नित्य दीजिये। (३५) यीशु ने उनसे कहा जीवनकी रोटी मैं हूं. जो मेरे पास आवे सो

कभी भूखा न होगा और जो मुझपर बिश्वास करे सो कभी पियासा न होगा । (३६) परन्तु मैंने तुमसे कहा कि तुम मुझे देख भी चुके और बिश्वास नहीं करते हो। (३७) सब जो पिता मुझको देता है मेरे पास आवेगा और जो कोई मेरे पास आवे मैं उसे किसी रीतिसे दूर न करूंगा । (३८) क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजनेहारेकी इच्छा पूरी करनेको स्वर्गसे उतरा हूं । (३९) और पिताकी इच्छा जिसने मुझे भेजा यह है कि जिन्हें उसने मुझको दिया है उनमेंसे मैं किसीको न खोऊं परन्तु उन्हें पिछले दिनमें उठाऊं । (४०) मेरे भेजनेहारे की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्रको देखे और उसपर बिश्वास करे सो अनन्त जीवन पावे और मैं उसे पिछले दिनमें उठाऊंगा ।

[यीशुका यिग्रादी यिहूदियोंको उत्तर देना ।]

(४१) तब यिहूदी लोग उसके विषयमें कुड़कुड़ाने लगे इसलिये कि उसने कहा जो रोटी स्वर्गसे उतरी सो मैं हूं । (४२) वे बोले क्या यह यूसफका पुत्र यीशु नहीं है जिसके माता और पिताको हम जानते हैं. तो वह क्योंकर कहता है कि मैं स्वर्गसे उतरा हूं । (४३) यीशुने उनको उत्तर दिया कि आपसमें मत कुड़कुड़ाओ । (४४) यदि पिता जिसने मुझे भेजा उसे न खींचे तो कोई मेरे पास नहीं आ सकता है और उसको मैं पिछले दिनमें उठाऊंगा । (४५) भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तकमें लिखा है कि वे सब ईश्वरके सिखाये हुए होंगे सो हर एक जिसने पितासे सुना और सीखा है मेरे पास आता है । (४६) यह नहीं कि किसीने पिताको देखा है. केवल जो ईश्वरकी ओरसे है उसीने पिताको देखा है । (४७) मैं तुमसे सच सच कहता हूं जो कोई मुझपर बिश्वास करता है उसको अनन्त जीवन है । (४८) मैं जीवनकी रोटी

हूं। (४९) तुम्हारे पितरोंने जंगलमें मन्ना खाया और मर गये। (५०) यह वह रोटी है जो स्वर्गसे उतरती है कि जो उससे खावे सो न मरे। (५१) मैं जीवती रोटी हूं जो स्वर्गसे उतरी. यदि कोई यह रोटी खाय तो सदालों जीयेगा और जो रोटी मैं देऊंगा सो मेरा मांस है जिसे मैं जगतके जीवनके लिये देऊंगा। (५२) इसपर यिहूदी लोग आपसमें बिवाद करने लगे कि यह हमें क्योंकर अपना मांस खानेको दे सकता है। (५३) यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं जो तुम मनुष्यके पुत्रका मांस न खावो और उसका लोहू न पीवो तो तुममें जीवन नहीं है। (५४) जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है उसको अनन्त जीवन है और मैं उसे पिछले दिनमें उठाऊंगा। (५५) क्योंकि मेरा मांस सच्चा भोजन है और मेरा लोहू सच्ची पीनेकी बस्तु है। (५६) जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है सो मुझमें रहता है और मैं उसमें रहता हूं। (५७) जैसा जीवते पिताने मुझे भेजा और मैं पितासे जीता हूं तैसा वह भी जो मुझे खावे मुझसे जीयेगा। (५८) यह वह रोटी है जो स्वर्गसे उतरी. जैसा तुम्हारे पितरोंने मन्ना खाया और मर गये ऐसा नहीं. जो यह रोटी खाय सो सदालों जीयेगा। (५९) उसने कफर्नाहूममें उपदेश करते हुए सभाके घरमें यह बातें कहीं।

[बहुत शिष्योंका यीशुको छोड़ना पर बारह प्रेरितोंका उसके संग बना रहना।]

(६०) उसके शिष्योंमेंसे बहुतोंने यह सुनके कहा यह बात कठिन है इसे कौन सुन सकता है। (६१) यीशुने अपने मन में जाना कि उसके शिष्य इस बातके विषयमें कुड़कुड़ाते हैं इसलिये उनसे कहा क्या इस बातसे तुमको ठोकर लगती है। (६२) यदि मनुष्यके पुत्रको जहां वँह आगे था उस स्थानपर चढ़ते देखो तो क्या कहोगे। (६३) आत्मा तो जीवनदायक

है शरीरसे कुछ लाभ नहीं . जो बातें मैं तुमसे बोलता हूं सो आत्मा हैं और जीवन हैं । (६४) परन्तु तुम्होंमेंसे कितने हैं जो बिश्वास नहीं करते हैं . यीशु तो आरंभसे जानता था कि वे कौन हैं जो बिश्वास करनेहारे नहीं हैं और वह कौन है जो मुझे पकड़वायगा । (६५) और उसने कहा इसीलिये मैं ने तुमसे कहा है कि यदि मेरे पिताकी ओरसे उसको न दिया जाय तो कोई मेरे पास नहीं आ सकता है । (६६) इस समयसे उसके शिष्योंमेंसे बहुतेरे पीछे हटे और उसके संग और न चले । (६७) इसलिये यीशुने उन बारह शिष्योंसे कहा क्या तुम भी जाने चाहते हो । (६८) शिमोन पितरने उसको उत्तर दिया कि हे प्रभु हम किसके पास जायें . आपके पास अनन्त जीवनकी बातें हैं । (६९) और हमने बिश्वास किया और जान लिया है कि आप जीवते ईश्वरके पुत्र ख्रीष्ट हैं । (७०) यीशुने उनको उत्तर दिया क्या मैंने तुम बारहोंको नहीं चुना और तुममेंसे एक तो शैतान है । (७१) वह शिमोनके पुत्र यिहूदा इस्करियोतीके विषयमें बोला क्योंकि वही उसे पकड़वानेपर था और वह बारह शिष्योंमेंसे एक था ।

[यीशुका अपने भाइयोंसे बातचीत करना जो उसपर बिश्वास नहीं करते थे ।]

७ इसके पीछे यीशु गालीलमें फिरने लगा क्योंकि यिहूदी लोग उसे मार डालने चाहते थे इसलिये वह यिहूदियामें फिरने नहीं चाहता था । (२) और यिहूदियोंका पर्व्व अर्थात तंबूवास पर्व्व निकट था । (३) इसलिये उसके भाइयोंने उससे कहा यहांसे निकलके यिहूदियामें जा कि तेरे शिष्य लोग भी तेरे काम जो तू करता है देखें । (४) क्योंकि कोई नहीं गुप्तमें कुछ करता और आपही प्रगट होने चाहता है . जो तू यह करता है तो अपने तईं जगतको दिखा । (५) क्योंकि उसके भाई भी उसपर बिश्वास नहीं करते थे । (६) यीशुने उनसे

कहा मेरा समय अबलों नहीं पहुंचा है परन्तु तुम्हारा समय नित्य बना है। (७) जगत तुमसे बैर नहीं कर सकता है परन्तु वह मुझसे बैर करता है क्योंकि मैं उसके विषयमें साक्षी देता हूं कि उसके काम बुरे हैं। (८) तुम इस पर्ब्बमें जाओ . मैं अभी इस पर्ब्बमें नहीं जाता हूं क्योंकि मेरा समय अबलों पूरा नहीं हुआ है। (९) वह उनसे यह बातें कहके गालीलमें रह गया।

[तंबूबास पर्ब्बमें यीशुका मन्दिरमें यिहूदियोंको उपदेश देना।]

(१०) परन्तु जब उसके भाई लोग चले गये तब वह आप भी प्रगट होके नहीं पर जैसा गुप्त होके पर्ब्बमें गया। (११) यिहूदी लोग पर्ब्बमें उसे ढूंढ़ते थे और बोले वह कहां है। (१२) और लोग उसके विषयमें बहुत बातें आपसमें फुसफुसाके कहते थे . कितनोंने कहा वह उत्तम मनुष्य है परन्तु औरोंने कहा सो नहीं पर वह लोगोंको भरमाता है। (१३) तौभी यिहूदियोंके डर के मारे कोई उसके विषयमें खोलके नहीं बोला।

(१४) पर्ब्बके बीचोबीच यीशु मन्दिरमें जाके उपदेश करने लगा। (१५) यिहूदियोंने अचंभा कर कहा यह बिन सीखे क्योंकर बिद्या जानता है। (१६) यीशुने उनको उत्तर दिया कि मेरा उपदेश मेरा नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारेका है। (१७) यदि कोई उसकी इच्छापर चला चाहे तो इस उपदेशके विषयमें जानेगा कि वह ईश्वरकी ओरसे है अथवा मैं अपनी ओरसे कहता हूं। (१८) जो अपनी ओरसे कहता है सो अपनीही बड़ाई चाहता है परन्तु जो अपने भेजनेहारेकी बड़ाई चाहता है सोई सत्य है और उसमें अधर्म्म नहीं है। (१९) क्या मूसाने तुम्हें व्यवस्था न दिई . तौभी तुममेंसे कोई व्यवस्थापर नहीं चलता है . तुम क्यों मुझे मार डालने चाहते हो। (२०) लोगों ने उत्तर दिया कि तुझे भूत लगा है . कौन तुझे मार डालने चाहता है। (२१) यीशुने उनको उत्तर दिया कि मैंने एक काम

किया और तुम सब अचंभा करते हो। (२२) मूसाने तुम्हें खतनेकी आज्ञा दिई . इस कारण नहीं कि वह मूसाकी ओर से है परन्तु पितरोंकी ओरसे है . और तुम बिश्रामके दिनमें मनुष्यका खतना करते हो। (२३) जो बिश्रामके दिनमें मनुष्य का खतना किया जाता है जिस्तें मूसाकी व्यवस्था लंघन न होय तो तुम मुझसे क्यों इसलिये क्रोध करते हो कि मैंने बिश्रामके दिनमें सम्पूर्ण एक मनुष्यको चंगा किया। (२४) मुंह देखके विचार मत करो परन्तु यथार्थ बिचार करो।

[यीशुके विषयमें लोगोंके अनेक बिचार।]

(२५) तब यिरूशलीमके निवासियोंमेंसे कितने बोले क्या यह वह नहीं है जिसे वे मार डालने चाहते हैं। (२६) और देखो वह खोलके बात करता है और वे उससे कुछ नहीं कहते . क्या प्रधानोंने निश्चय जान लिया है कि यह सचमुच ख्रीष्ट है। (२७) परन्तु इस मनुष्यको हम जानते हैं कि वह कहांसे है पर ख्रीष्ट जब आवेगा तब कोई नहीं जानेगा कि वह कहांसे है। (२८) यीशुने मन्दिरमें उपदेश करते हुए पुकारके कहा तुम मुझे जानते और यह भी जानते हो कि मैं कहांसे हूं . मैं तो आपसे नहीं आया हूं परन्तु मेरा भेजनेहारा सत्य है जिसे तुम नहीं जानते हो। (२९) मैं उसे जानता हूं क्योंकि मैं उसकी ओरसे हूं और उसने मुझे भेजा है। (३०) इसपर उन्होंने उसको पकड़ने चाहा तौभी किसीने उसपर हाथ न बढ़ाया क्योंकि उसका समय अबलों नहीं पहुंचा था। (३१) और लोगोंमेंसे बहुतोंने उसपर बिश्वास किया और कहा ख्रीष्ट जब आवेगा तब क्या इन आश्चर्य्य कर्म्मोंसे जो इसने किये हैं अधिक करेगा।

[फरीशियोंका प्यादोंको यीशुको पकड़नेके लिये भेजना।]

(३२) फरीशियोंने लोगोंको उसके विषयमें यह बातें फुस-

फुसाके कहते सुना और फरीशियों और प्रधान याजकोंने प्यादों को उसे पकड़नेको भेजा। (३३) इसपर यीशुने कहा मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ रहता हूं तब अपने भेजनेहारेके पास जाता हूं। (३४) तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं रहूंगा तहां तुम नहीं आ सकोगे। (३५) यिहूदियोंने आपसमें कहा यह कहां जायगा कि हम उसे नहीं पावेंगे . क्या वह यूनानियोंमेंके तितर बितर लोगोंके पास जायगा और यूनानियों को उपदेश देगा। (३६) यह क्या बात है जो उसने कही कि तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं रहूंगा तहां तुम नहीं आ सकोगे।

(३७) पिछले दिन पर्व्वके बड़े दिनमें यीशुने खड़ा हो पुकारके कहा यदि कोई पियासा होवे तो मेरे पास आके पीवे। (३८) जो मुझपर बिश्वास करे जैसा धर्म्मपुस्तकने कहा तैसा उसके अन्तरसे अमृत जलकी नदियां बहेंगीं। (३९) उसने यह बचन आत्माके विषयमें कहा जिसे उसपर बिश्वास करनेहारे पानेपर थे क्योंकि पवित्र आत्मा अबलों नहीं दिया गया था इसलिये कि यीशुको महिमा अबलों प्रगट न हुई थी। (४०) लोगों मेंसे बहुतोंने यह बचन सुनके कहा यह सचमुच वह भविष्यद्वक्ता है। (४१) औरोंने कहा यह खीष्ट है परन्तु औरोंने कहा क्या खीष्ट गालीलमेंसे आवेगा। (४२) क्या धर्म्मपुस्तकने नहीं कहा कि खीष्ट दाऊदके बंशसे और बैतलहम नगरसे जहां दाऊद रहता था आवेगा। (४३) सो उसके कारण लोगोंमें बिभेद हुआ। (४४) उनमेंसे कितने उसको पकड़ने चाहते थे परन्तु किसीने उसपर हाथ न बढ़ाये।

[प्यादोंका उत्तर।]

(४५) तब प्यादे लोग प्रधान याजकों और फरीशियोंके पास आये और उन्होंने उन से कहा तुम उसे क्यों नहीं लाये

हो । (४६) प्यादोंने उत्तर दिया कि किसी मनुष्यने कभी इस मनुष्यकी नाईं बात न किई । (४७) फरीशियोंने उनको उत्तर दिया क्या तुम भी भरमाये गये हो । (४८) क्या प्रधानों अथवा फरीशियोंमेंसे किसीने उसपर बिश्वास किया है । (४९) परन्तु ये लोग जो व्यवस्थाको नहीं जानते हैं स्रापित हैं । (५०) निकोदीम जो रातको योशु पास आया और आप उनमेंसे एक था उनसे बोला . (५१) हमारी व्यवस्था जबलों मनुष्यकी न सुने और न जाने कि वह क्या करता है तबलों क्या उसको दोषी ठहराती है । (५२) उन्होंने उसे उत्तर दिया क्या आप भी गालीलके हैं . ढूंढ़के देखिये कि गालीलमेंसे भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होता । (५३) तब सब कोई अपने अपने घरको गये ।

[योशुका एक व्यभिचारिणीको छुड़ाना ।]

८ परन्तु योशु जैतून पर्व्वतपर गया . (२) और भोरको फिर मन्दिरमें आया और सब लोग उस पास आये और वह बैठके उन्हें उपदेश देने लगा । (३) तब अध्यापकों और फरीशियोंने एक स्त्रीको जो व्यभिचारमें पकड़ी गई थी उस पास लाके बीचमें खड़ी किई . (४) और उससे कहा हे गुरु यह स्त्री व्यभिचार कर्म्म करतेही पकडी गई । (५) व्यवस्था में मूसाने हमें आज्ञा दिई कि ऐसी स्त्रियां पत्थरवाह किई जावें सो आप क्या कहते हैं । (६) उन्होंने उसकी परीक्षा करनेको यह बात कही कि उसपर दोष लगानेका गौं मिले परन्तु योशु नीचे झुकके उंगलीसे भूमिपर लिखने लगा । (७) जब वे उससे पूछते रहे तब उसने उठके उनसे कहा तुम्होंमेंसे जो निष्पापी होय सो पहिले उसपर पत्थर फेंके । (८) और वह फिर नीचे झुकके भूमिपर लिखने लगा । (९) पर वे यह सुनके और अपने अपने मनसे दोषी ठहरके बड़ोंसे लेके छोटोंतक एक एक करके निकल गये और केवल योशु

रह गया और वह स्त्री बीचमें खड़ी रही। (१०) योशुने उठके स्त्रीको छोड़ और किसीको न देखके उससे कहा हे नारी वे तेरे दोषदायक कहां हैं . क्या किसीने तुझपर दंडकी आज्ञा न दिई। (११) उसने कहा हे प्रभु किसीने नहीं . योशुने उस से कहा मैं भी तुझपर दंडकी आज्ञा नहीं देता हूं जा और फिर पाप मत कर।

[योशुका अपने आपको जगतका प्रकाश बताना।]

(१२) तब योशुने फिर लोगोंसे कहा मैं जगतका प्रकाश हूं . जो मेरे पीछे आवे सो अंधकारमें नहीं चलेगा परन्तु जीवनका उजियाला पावेगा। (१३) फरीशियोंने उससे कहा तू अपनेही विषयमें साक्षी देता है तेरी साक्षी ठीक नहीं है। (१४) योशुने उनको उत्तर दिया कि जो मैं अपने विषयमें साक्षी देता हूं तौभी मेरी साक्षी ठीक है क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहांसे आया हूं और कहां जाता हूं परन्तु तुम नहीं जानते हो कि मैं कहांसे आता हूं और कहां जाता हूं। (१५) तुम शरीरको देखके बिचार करते हो मैं किसीका बिचार नहीं करता हूं। (१६) और जो मैं विचार करता हूं भी तो मेरा बिचार ठीक है क्योंकि मैं अकेला नहीं हूं परन्तु मैं हूं और पिता है जिसने मुझे भेजा। (१७) तुम्हारी व्यवस्थामें लिखा है कि दो जनोंकी साक्षी ठीक होती है। (१८) एक मैं हूं जो अपने विषयमें साक्षी देता हूं और पिता जिसने मुझे भेजा मेरे विषयमें साक्षी देता है। (१९) तब उन्होंने उससे कहा तेरा पिता कहां है . योशुने उत्तर दिया कि तुम न मुझे न मेरे पिताको जानते हो . जो मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते। (२०) यह बातें योशुने मन्दिरमें उपदेश करते हुए भंडार घरमें कहीं और किसीने उसको न पकड़ा क्योंकि उसका समय अबलों नहीं पहुंचा था।

[योशुका यिहूदियोंको चिताना ।]

(२१) तब योशुने उनसे फिर कहा मैं जाता हूं और तुम मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पापमें मरोगे . जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो। (२२) इसपर यिहूदियोंने कहा क्या वह अपनेको मार डालेगा कि वह कहता है जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो। (२३) उसने उनसे कहा तुम नीचेके हो मैं ऊपरका हूं . तुम इस जगतके हो मैं इस जगत का नहीं हूं। (२४) इसलिये मैंने तुमसे कहा कि तुम अपने पापोंमें मरोगे क्योंकि जो तुम बिश्वास न करो कि मैं वही हूं तो अपने पापोंमें मरोगे। (२५) उन्होंने उससे कहा तू कौन है . योशुने उनसे कहा पहिले जो मैं तुमसे कहता हूं वह भी सुनो। (२६) तुम्हारे विषयमें मुझे बहुत कुछ कहना और बिचार करना है परन्तु मेरा भेजनेहारा सत्य है और जो मैंने उससे सुना है सोई जगतसे कहता हूं। (२७) वे नहीं जानते थे कि वह उनसे पिताके विषयमें बोलता था। (२८) तब योशु ने उनसे कहा जब तुम मनुष्यके पुत्रको ऊंचा करोगे तब जानोगे कि मैं वही हूं और कि मैं आपसे कुछ नहीं करता हूं परन्तु जैसे मेरे पिताने मुझे सिखाया तैसे मैं यह बातें बोलता हूं। (२९) और मेरा भेजनेहारा मेरे संग है . पिताने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है क्योंकि मैं सदा वही करता हूं जिससे वह प्रसन्न होता है।

[योशुपर बहुत लोगोंका विश्वास करना पर यिहूदियोंका उसपर अधिक विवाद करना ।]

(३०) उसके यह बातें बोलतेही बहुत लोगोंने उसपर बिश्वास किया। (३१) तब योशुने उन यिहूदियोंसे जिन्होंने उस पर बिश्वास किया कहा जो तुम मेरे बचनमें बने रहो तो सचमुच मेरे शिष्य हो। (३२) और तुम सत्यको जानोगे और सत्यके द्वारासे तुम्हारा उद्धार होगा।

(३३) उन्होंने उसको उत्तर दिया कि हम तो इब्राहीमके बंश हैं और कभी किसीके दास नहीं हुए हैं. तू क्योंकर कहता है कि तुम्हारा उद्धार होगा। (३४) यीशुने उनको उत्तर दिया मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है सो पापका दास है। (३५) दास सदा घरमें नहीं रहता है. पुत्र सदा रहता है। (३६) सो यदि पुत्र तुम्हारा उद्धार करे तो निश्चय तुम्हारा उद्धार होगा। (३७) मैं जानता हूं कि तुम इब्राहीमके बंश हो परन्तु मेरा बचन तुममें नहीं समाता है इसलिये तुम मुझे मार डालने चाहते हो। (३८) मैंने अपने पिताके पास जो देखा है सो कहता हूं और तुमने अपने पिताके पास जो देखा है सो करते हो। (३९) उन्होंने उसको उत्तर दिया कि हमारा पिता इब्राहीम है. यीशुने उनसे कहा जो तुम इब्राहीमके सन्तान होते तो इब्राहीमके कर्म्म करते। (४०) परन्तु अब तुम मुझे अर्थात एक मनुष्यको जिसने वह सत्य बचन जो मैंने ईश्वरसे सुना तुमसे कहा है मार डालने चाहते हो. यह तो इब्राहीमने नहीं किया। (४१) तुम अपने पिताके कर्म्म करते हो. उन्होंने उससे कहा हम व्यभिचारसे नहीं जन्मे हैं हमारा एक पिता है अर्थात ईश्वर। (४२) यीशुने उनसे कहा यदि ईश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं ईश्वरकी ओरसे निकलके आया हूं. मैं आपसे नहीं आया हूं परन्तु उसने मुझे भेजा। (४३) तुम मेरी बात क्यों नहीं बूझते हो. इसीलिये कि मेरा बचन नहीं सुन सकते हो। (४४) तुम अपने पिता शैतानसे हो और अपने पिताके अभिलाषोंपर चला चाहते हो. वह आरंभसे मनुष्यघाती था और सच्चाईमें स्थिर नहीं रहता क्योंकि सच्चाई उसमें नहीं है. जब वह झूठ बोलता तब अपने स्वभावहीसे बोलता है क्योंकि वह झूठा और झूठका पिता है। (४५) परन्तु मैं सत्य कहता

हूं इसीलिये तुम मेरी प्रतीति नहीं करते हो । (४६) तुममेंसे कौन मुझे पापी ठहराता है . और जो मैं सत्य कहता हूं तो तुम क्यों मेरी प्रतीति नहीं करते हो । (४७) जो ईश्वरसे है सो ईश्वरकी बातें सुनता है . तुम ईश्वरसे नहीं हो इस कारण नहीं सुनते हो ।

(४८) तब यिहूदियोंने उसको उत्तर दिया क्या हम अच्छा नहीं कहते हैं कि तू शोमिरोनी है और भूत तुझे लगा है । (४९) यीशुने उत्तर दिया कि मुझे भूत नहीं लगा है परन्तु मैं अपने पिताका सन्मान करता हूं और तुम मेरा अपमान करते हो । (५०) पर मैं अपनी बड़ाई नहीं चाहता हूं . एक है जो चाहता और बिचार करता है । (५१) मैं तुमसे सच सच कहता हूं यदि कोई मेरी बातको पालन करे तो वह कभी मृत्युको न देखेगा । (५२) तब यिहूदियोंने उससे कहा अब हम जानते हैं कि भूत तुझे लगा है . इब्राहीम और भविष्यद्वक्ता लोग मर गये हैं और तू कहता है कि यदि कोई मेरी बात को पालन करे तो वह कभी मृत्युका स्वाद न चीखेगा । (५३) क्या तू हमारे पिता इब्राहीमसे जो मर गया है बड़ा है . भविष्यद्वक्ता लोग भी मर गये हैं . तू अपने तईं क्या बनाता है । (५४) यीशुने उत्तर दिया कि जो मैं अपनी बड़ाई करूं तो मेरी बड़ाई कुछ नहीं है . मेरी बड़ाई करनेहारा मेरा पिता है जिसे तुम कहते हो कि वह हमारा ईश्वर है । (५५) तौभी तुम उसे नहीं जानते हो परन्तु मैं उसे जानता हूं और जो मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता हूं तो मैं तुम्हारे समान झूठा होंगा परन्तु मैं उसे जानता और उसके बचनको पालन करता हूं । (५६) तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखनेको हर्षित होता था और उसने देखा और आनन्द किया । (५७) यिहूदियोंने उससे कहा तू अबलों पचास बरसका नहीं

है और क्या तूने इब्राहीमको देखा है। (५८) यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि इब्राहीमके होनेके पहिले से मैं हूं। (५९) तब उन्होंने पत्थर उठाये कि उसपर फेंकें परन्तु यीशु छिप गया और उन्होंके बीचमेंसे होके मन्दिरसे निकला और यूंहीं चला गया।

[बिश्रामके दिन यीशुका एक मनुष्यको चंगा करना जो जन्मका अंधा था।]

९ जाते हुए यीशुने एक मनुष्यको देखा जो जन्मका अंधा था। (२) और उसके शिष्योंने उससे पूछा हे गुरु किसने पाप किया इस मनुष्यने अथवा उसके माता पिताने जो वह अंधा जन्मा। (३) यीशुने उत्तर दिया कि न तो इस ने न इसके माता पिताने पाप किया परन्तु यह इसलिये हुआ कि ईश्वरके काम उसमें प्रगट किये जायें। (४) मुझे दिन रहते अपने भेजनेहारेके कामोंको करना अवश्य है. रात आती है जिसमें कोई नहीं काम कर सकता है। (५) जब लों मैं जगतमें हूं तबलों जगतका प्रकाश हूं। (६) यह कहके उसने भूमिपर थूका और उस थूकसे मिट्टी गीली करके वह गीली मिट्टी अंधेकी आंखोंपर लगाई. (७) और उससे कहा जाके शीलोहके कुंडमें धो जिसका अर्थ यह है भेजा हुआ. सो उसने जाके धोया और देखते हुए आया।

(८) तब पड़ोसियोंने और जिन्होंने आगे उसे अंधा देखा था उन्होंने कहा क्या यह वह नहीं है जो बैठा भीख मांगता था। (९) कितनोंने कहा यह वही है औरोंने कहा यह उस की नाईं है वह आप बोला मैं वही हूं। (१०) तब उन्होंने उस से कहा तेरी आंखें क्योंकर खुलीं। (११) उसने उत्तर दिया कि यीशु नाम एक मनुष्यने मिट्टी गीली करके मेरी आंखों पर लगाई और मुझसे कहा शीलोहके कुंडको जा और धो सो मैंने जाके धोया औ दृष्टि पाई। (१२) उन्होंने

उससे कहा वह मनुष्य कहां है . उसने कहा मैं नहीं जानता हूं ।

[उस चंगे किये हुए मनुष्यका फरीशियोंके साम्हने साक्षी देना ।]

(१३) वे उसको जो आगे अंधा था फरीशियोंके पास लाये । (१४) जब यीशुने मिट्टी गोली करके उसकी आंखें खोली थीं तब बिश्रामका दिन था । (१५) सो फरीशियोंने भी फिर उस से पूछा तूने किस रीतिसे दृष्टि पाई . वह उनसे बोला उस ने गोली मिट्टी मेरी आंखोंपर लगाई और मैंने धोया और देखता हूं । (१६) फरीशियोंमेंसे कितनोंने कहा यह मनुष्य ईश्वरकी ओरसे नहीं है क्योंकि वह बिश्रामका दिन नहीं मानता है . औरोंने कहा पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म कर सकता है . और उन्होंमें बिभेद हुआ । (१७) वे उस अंधे से फिर बोले उसने जो तेरी आंखे खोलीं तो तू उसके विषय में क्या कहता है . उसने कहा वह भविष्यद्वक्ता है ।

(१८) परन्तु यिहूदियोंने जबलों उस दृष्टि पाये हुए मनुष्य के माता पिताको नहीं बुलाया तबलों उसके विषयमें प्रतीति न किई कि वह अंधा था औ दृष्टि पाई । (१९) और उन्होंने उनसे पूछा क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम कहते हो कि वह अंधा जन्मा . तो वह अब क्योंकर देखता है । (२०) उसके माता पिताने उनको उत्तर दिया हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और कि वह अंधा जन्मा । (२१) परन्तु वह अब क्योंकर देखता है सो हम नहीं जानते अथवा किसने उसकी आंखें खोलीं हम नहीं जानते हैं . वह सयाना है उसीसे पूछिये वह अपने विषयमें आप कहेगा । (२२) यह बातें उसके माता पिताने इसलिये कहीं कि वे यिहूदियोंसे डरते थे क्योंकि यिहूदी लोग आपसमें ठहरा चुके थे कि यदि कोई यीशुको खोष्ट करके मान लेवे तो सभामेंसे निकाला जायगा । (२३) इस

कारण उसके माता पिताने कहा वह सयाना है उसीसे पूछिये।

(२४) तब उन्होंने उस मनुष्यको जो अंधा था दूसरी बेर बुलाके उससे कहा ईश्वरका गुणानुबाद कर . हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है। (२५) उसने उत्तर दिया वह पापी है कि नहीं सो मैं नहीं जानता हूं एक बात मैं जानता हूं कि मैं जो अंधा था अब देखता हूं। (२६) उन्होंने उससे फिर कहा उसने तुझसे क्या किया . तेरी आंखें किस रीति से खोलीं। (२७) उसने उनको उत्तर दिया कि मैं आप लोगों से कह चुका हूं और आप लोगोंने नहीं सुना . किसलिये फिर सुना चाहते हैं . क्या आप लोग भी उसके शिष्य हुआ चाहते हैं। (२८) तब उन्होंने उसकी निन्दा कर कहा तू उसका शिष्य है पर हम मूसाके शिष्य हैं। (२९) हम जानते हैं कि ईश्वरने मूसासे बातें किईं परन्तु इसको हम नहीं जानते कि कहांसे है। (३०) उस मनुष्यने उनको उत्तर दिया इसमें अचंभा है कि आप लोग नहीं जानते वह कहांसे है और उसने मेरी आंखें खोली हैं। (३१) हम जानते हैं कि ईश्वर पापियोंकी नहीं सुनता है परन्तु यदि कोई ईश्वरका उपासक होय और उसकी इच्छापर चले तो वह उसकी सुनता है। (३२) यह कभी सुननेमें नहीं आया कि किसीने जन्मके अंधेकी आंखें खोली हों। (३३) जो यह ईश्वरकी ओरसे न होता तो कुछ नहीं कर सकता। (३४) उन्होंने उसको उत्तर दिया कि तू तो सम्पूर्ण पापोंमें जन्मा और क्या तू हमें सिखाता है . और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।

(३५) यीशुने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया था और उसको पाकरके उससे कहा क्या तू ईश्वरके पुत्रपर बिश्वास करता है। (३६) उसने उत्तर दिया कि हे प्रभु वह

कौन है कि मैं उसपर विश्वास करूं । (३७) यीशुने उससे कहा तूने उसे देखा भी है और जो तेरे संग बात करता है वही है। (३८) उसने कहा हे प्रभु मैं बिश्वास करता हूं और उसको प्रणाम किया। (३९) तब यीशुने कहा मैं इस जगतमें विचारके लिये आया हूं कि जो नहीं देखते हैं सो देखें और जो देखते हैं सो अंधे हो जावें। (४०) फरीशियोंमेंसे जो जन उस के संग थे सो यह सुनके उससे बोले क्या हम भी अंधे हैं। (४१) यीशुने उनसे कहा जो तुम अंधे होते तो तुम्हें पाप न होता परन्तु अब तुम कहते हो कि हम देखते हैं इसलिये तुम्हारा पाप बना रहा।

[यीशुका अपनेको गड़ेरिये और द्वारके दृष्टान्तोंसे प्रगट करना ।]

१० मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो द्वारसे भेड़शालामें नहीं पैठता परन्तु दूसरी ओरसे चढ़ जाता है सो चोर औ डाकू है। (२) जो द्वारसे पैठता है सो भेड़ोंका रखवाला है। (३) उसके लिये द्वारपाल खोल देता है और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं और वह अपनी भेडोंको नाम ले ले बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता है। (४) और जब वह अपनी भेडे बाहर ले जाता है तब उनके आगे चलता है और भेडें उसके पीछे हो लेती हैं क्योंकि वे उसका शब्द जानती हैं। (५) परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जायेंगी पर उस से भागेंगी क्योंकि वे परायोंका शब्द नहीं जानती हैं। (६) यीशुने उनसे यह दृष्टान्त कहा परन्तु उन्होंने न बूझा कि यह क्या बातें हैं जो वह हमसे बोलता है। (७) तब यीशु ने फिर उनसे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि मैं भेड़ों का द्वार हूं। (८) जितने मेरे आगे आये सो सब चोर औ डाकू हैं परन्तु भेडोंने उनकी न सुनी। (९) द्वार मैं हूं : यदि मुझमेंसे कोई प्रवेश करे तो त्राण पावेगा और भीतर बाहर

आया जाया करेगा और चराई पावेगा। (१०) चोर किसी और कामको नहीं केवल चोरी औ घात औ नाश करनेको आता है. मैं आया हूं कि भेड़ें जीवन पावें और अधिकाईसे पावें। (११) मैं अच्छा गड़ेरिया हूं. अच्छा गड़ेरिया भेड़ोंके लिये अपना प्राण देता है। (१२) परन्तु मजूर जो गड़ेरिया नहीं है और भेड़ें उसके निजकी नहीं हैं हुंड़ारको आते देखके भेड़ों को छोड़ देता और भाग जाता है और हुंड़ार भेड़ें पकड़के उन्हें तितर बितर करता है। (१३) मजूर भागता है क्योंकि वह मजूर है और भेड़ोंकी कुछ चिन्ता नहीं करता है। (१४) मैं अच्छा गड़ेरिया हूं और जैसा पिता मुझे जानता है और मैं पिताको जानता हूं वैसा मैं अपनी भेड़ोंको जानता हूं और अपनी भेड़ोंसे जाना जाता हूं। (१५) और मैं भेड़ोंके लिये अपना प्राण देता हूं। (१६) मेरी और भेड़ें हैं जो इस भेड़शालाकी नहीं हैं. मुझे उनको भी लाना होगा और वे मेरा शब्द सुनेंगीं और एक झुंड और एक रखवाला होगा। (१७) पिता इस कारणसे मुझे प्यार करता है कि मैं अपना प्राण देता हूं जिस्तें उसे फिर लेऊं। (१८) कोई उसको मुझसे नहीं लेता है परन्तु मैं आपसे उसे देता हूं. उसे देनेका मुझे अधिकार है और उसे फिर लेनेका मुझे अधिकार है. यह आज्ञा मैंने अपने पितासे पाई।

(१९) तब यिहूदियोंमें इन बातोंके कारण फिर बिभेद हुआ। (२०) उनमेंसे बहुतोंने कहा उसको भूत लगा है वह बौरहा है तुम उसकी क्यों सुनते हो। (२१) औरोंने कहा यह बातें भूतग्रस्तकी नहीं हैं. भूत क्या अंधोंकी आंखें खोल सकता है।

[यीशुका मन्दिरमें स्थापन पर्ब्बके समय अपने आपको खीष्ट और ईश्वरका पुत्र प्रगट करना।]

(२२) यिरूशलीममें स्थापन पर्ब्ब हुआ और जाड़ेका समय

था । (२३) और योशु मन्दिरमें सुलेमानके ओसारेमें फिरता था । (२४) तब यिहूदियोंने उसे घेरके उससे कहा तू हमारे मनको कबलों दुबधामें रखेगा . जो तू ख्रीष्ट है तो हमसे खोलके कह । (२५) योशुने उन्हें उत्तर दिया कि मैंने तुमसे कहा और तुम बिश्वास नहीं करते हो . जो काम मैं अपने पिताके नामसे करता हूं वेही मेरे विषयमें साक्षी देते हैं । (२६) परन्तु तुम बिश्वास नहीं करते हो क्योंकि तुम मेरी भेड़ोंमेंसे नहीं हो जैसा मैंने तुमसे कहा । (२७) मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे हो लेती हैं । (२८) और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं और वे कभी नाश न होंगीं और कोई उन्हें मेरे हाथसे छीन न लेगा । (२९) मेरा पिता जिसने उन्हें मुझको दिया है सभोंसे बड़ा है और कोई मेरे पिताके हाथसे छीन नहीं सकता है । (३०) मैं और पिता एक हैं । (३१) तब यिहूदियोंने फिर उसे पत्थरवाह करनेको पत्थर उठाये । (३२) योशुने उनको उत्तर दिया कि मैंने अपने पिताकी ओरसे बहुतसे भले काम तुम्हें दिखाये हैं उनमेंसे किस कामके लिये मुझे पत्थरवाह करते हो । (३३) यिहूदियोंने उसको उत्तर दिया कि भले कामके लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते हैं परन्तु ईश्वरकी निन्दाके लिये और इसलिये कि तू मनुष्य होके अपनेको ईश्वर बनाता है । (३४) योशुने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम्हारी व्यवस्थामें नहीं लिखा है कि मैंने कहा तुम ईश्वरगण हो । (३५) यदि उसने उनको ईश्वरगण कहा जिनके पास ईश्वरका बचन पहुंचा और धर्म्मपुस्तकका बात लोप नहीं हो सकती है . (३६) तो जिसे पिताने पवित्र करके जगतमें भेजा है उससे क्या तुम कहते हो कि तू ईश्वरकी निन्दा करता है इसलिये कि मैंने कहा मैं ईश्वरका पुत्र हूं । (३७) जो मैं अपने पिता

के कार्य्य नहीं करता हूं तो मेरी प्रतीति मत करो। (३८) परन्तु जो मैं करता हूं तो यदि मेरी प्रतीति न करो तौभी उन कार्य्योंकी प्रतीति करो इसलिये कि तुम जानो और बिश्वास करो कि पिता मुझमें है और मैं उसमें हूं।

[यीशुका यिहूदियोंके बैरके कारण, यर्दन पार जाना।]

(३९) तब उन्होंने फिर उसे पकड़ने चाहा परन्तु वह उन के हाथसे निकल गया. (४०) और फिर यर्दनके उस पार उस स्थानपर गया जहां योहन पहिले बपतिसमा देता था और वहां रहा। (४१) और बहुत लोग उस पास आये और बोले योहनने तो कोई आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किया परन्तु जो कुछ योहनने इसके विषयमें कहा सो सब सच था। (४२) और वहां बहुतोंने उसपर बिश्वास किया।

[यीशुका इलियाजरको जिलाना।]

११ इलियाजर नाम बैथनियाका अर्थात मरियम और उसकी बहिन मर्थाके गांवका एक मनुष्य रोगी था। (२) मरियम वही थी जिसने प्रभुपर सुगन्ध तेल लगाया और उसके चरणोंको अपने बालोंसे पोंछा और उसका भाई इलियाजर था जो रोगी था। (३) सो दोनों बहिनोंने यीशुको कहला भेजा कि हे प्रभु देखिये जिसे आप प्यार करते हैं सो रोगी है। (४) यह सुनके यीशुने कहा यह रोग मृत्युके लिये नहीं परन्तु ईश्वरकी महिमाके लिये है कि ईश्वरके पुत्रकी महिमा उसके द्वारासे प्रगट किई जाय। (५) यीशु मर्थाको और उसकी बहिनको और इलियाजरको प्यार करता था।

(६) जब उसने सुना कि इलियाजर रोगी है तब जिस स्थान में वह था उस स्थानमें दो दिन और रहा। (७) तब इसके पीछे उसने शिष्योंसे कहा कि आओ हम फिर यिहूदियाको चलें। (८) शिष्योंने उससे कहा हे गुरु यिहूदी लोग अभी आप

ही पत्थरवाह किया चाहते थे और आप क्या फिर वहां जाते हैं । (९) यीशुने उत्तर दिया क्या दिनकी बारह घड़ी नहीं हैं. यदि कोई दिनको चले तो ठोकर नहीं खाता है क्योंकि वह इस जगतका उजियाला देखता है । (१०) परन्तु यदि कोई रातको चले तो ठोकर खाता है क्योंकि उजियाला उसमें नहीं है । (११) उसने यह बातें कहीं और इसके पीछे उनसे बोला हमारा मित्र इलियाजर सो गया है परन्तु मैं उसे जगानेको जाता हूं । (१२) उसके शिष्योंने कहा हे प्रभु जो वह सो गया है तो चंगा हो जायगा । (१३) यीशुने उसकी मृत्युके विषय में कहा परन्तु उन्होंने समझा कि उसने नींदमें सो जानेके विषयमें कहा । (१४) तब यीशुने उनसे खोलके कहा इलियाजर मर गया है । (१५) और तुम्हारे लिये मैं आनन्द करता हूं कि मैं वहां नहीं था जिस्तें तुम बिश्वास करो . परन्तु आओ हम उस पास चलें । (१६) तब थोमाने जो दिदुम कहावता है अपने संगी शिष्योंसे कहा कि आओ हम भी उसके संग मरनेको जायें । (१७) सो जब यीशु आया तब उसने यही पाया कि इलियाजरको कबरमें चार दिन हो चुके ।

(१८) बैथनिया यिरूशलीमके निकट अर्थात कोश एक दूर था । (१९) और बहुतसे यिहूदी लोग मर्था और मरियमके पास आये थे कि उनके भाईके विषयमें उनको शांति देवें । (२०) सो मर्थाने जब सुना कि यीशु आता है तब जाके उससे भेंट किई परन्तु मरियम घरमें बैठी रही । (२१) मर्थाने यीशुसे कहा हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता । (२२) परन्तु मैं जानती हूं कि अब भी जो कुछ आप ईश्वरसे मांगें ईश्वर आपको देगा । (२३) यीशुने उससे कहा तेरा भाई जी उठेगा । (२४) मर्थाने उससे कहा मैं जानती हूं कि पिछले दिन पुनरुत्थानमें वह जी उठेगा । (२५) यीशुने उससे कहा

मैंही पुनरुत्थान और जीवन हूं . जो मुझपर बिश्वास करे सो यदि मर जाय तौभी जीयेगा। (२६) और जो कोई जीवता हो और मुझपर बिश्वास करे सो कभी नहीं मरेगा . क्या तू इस बातका बिश्वास करती है। (२७) वह उससे बोली हां प्रभु मैंने बिश्वास किया है कि ईश्वरका पुत्र ख्रीष्ट जो जगत में आनेवाला था सो आपही हैं। (२८) यह कहके वह चली गई और अपनी बहिन मरियमको चुपकेसे बुलाके कहा गुरु आये हैं और तुझे बुलाते हैं। (२९) मरियम जब उसने सुना तब शीघ्र उठके यीशु पास आई। (३०) यीशु अबलों गांवमें नहीं आया था परन्तु उसी स्थानमें था जहां मर्थाने उससे भेंट किई। (३१) जो यिहूदी लोग मरियमके संग घरमें थे और उसको शांति देते थे सो जब उसे देखा कि वह शीघ्र उठके बाहर गई तब यह कहके उसके पीछे हो लिये कि वह कबर पर जाती है कि वहां रोवे। (३२) जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु था तब उसे देखके उसके पांवों पड़ी और उससे बोली हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता। (३३) जब यीशुने उसे रोते हुए और जो यिहूदी लोग उसके संग आये उन्हें भी रोते हुए देखा तब आत्मामें बिकल हुआ और घबराया . (३४) और कहा तुमने उसे कहां रखा है . वे उससे बोले हे प्रभु आके देखिये। (३५) यीशु रोया। (३६) तब यिहूदियोंने कहा देखो वह उसे कैसा प्यार करता था। (३७) परन्तु उनमेंसे कितनोंने कहा क्या यह जिसने अंधेकी आंखें खोलीं यह भी न कर सकता कि यह मनुष्य नहीं मरता। (३८) यीशु अपनेमें फिर बिकल होके कबरपर आया . वह गुफा थी और एक पत्थर उसपर धरा था। (३९) यीशुने कहा पत्थरको सरकाओ . उस मरे हुएकी बहिन मर्था उससे बोली हे प्रभु वह तो अब बसाता है क्योंकि उसको चार दिन

हुए हैं । (४०) यीशुने उससे कहा क्या मैंने तुझसे न कहा कि जो तू बिश्वास करे तो ईश्वरकी महिमाको देखेगी ।

(४१) तब जहां वह मृतक पड़ा था वहांसे उन्होंने पत्थर को सरकाया और यीशुने ऊपर दृष्टि कर कहा हे पिता मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तूने मेरी सुनी है । (४२) और मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है परन्तु जो बहुत लोग आसपास खड़े हैं उनके कारण मैंने यह कहा कि वे बिश्वास करें कि तूने मुझे भेजा । (४३) यह बातें कहके उसने बड़े शब्दसे पुकारा कि हे इलियाजर बाहर आ । (४४) तब वह मृतक चद्दरसे हाथ पांव बांधे हुए बाहर आया और उसका मुंह अंगोछेमें लपेटा हुआ था . यीशुने उनसे कहा उसे खोलो और जाने दो ।

[प्रधान याजकों और फरीशियोंका सभा एकट्ठी करना इस कारण कि यीशुको मार डालें ।]

(४५) तब बहुतसे यिहूदी लोगोंने जो मरियमके पास आये थे यह जो यीशुने किया था देखके उसपर बिश्वास किया । (४६) परन्तु उनमेंसे कितनोंने फरीशियोंके पास जाके जो यीशु ने किया था सो उन्होंसे कह दिया । (४७) इसपर प्रधान याजकों और फरीशियोंने सभा एकट्ठी करके कहा हम क्या करते हैं . यह मनुष्य तो बहुत आश्चर्य्य कर्म्म करता है । (४८) जो हम उसे यूं छोड़ देवें तो सब लोग उसपर बिश्वास करेंगे और रोमी लोग आके हमारे स्थान और लोगको भी उठा देंगे । (४९) तब उनमेंसे कियाफा नाम एक जन जो उस बरसका महायाजक था उनसे बोला तुम लोग कुछ नहीं जानते हो . (५०) और यह बिचार भी नहीं करते हो कि हमारे लिये अच्छा है कि लोगोंके लिये एक मनुष्य मरे और यह सम्पूर्ण लोग नाश न होवें । (५१) यह बात वह आपसे

नहीं बोला परन्तु उस बरसका महायाजक होके भविष्यद्वाक्य से कहा कि यीशु उन लोगोंके लिये मरनेपर था . (५२) और केवल उन लोगोंके लिये नहीं परन्तु इसलिये भी कि ईश्वरके सन्तानोंको जो तितर बितर हुए हैं एकमें एकट्ठे करे। (५३) सो उसी दिनसे उन्होंने उसे घात करनेको आपसमें बिचार किया। (५४) इसलिये यीशु प्रगट होके यिहूदियोंके बीचमें और नहीं फिरा परन्तु वहांसे जंगलके निकटके देशमें इफ्राईम नाम एक नगरको गया और अपने शिष्योंके संग वहां रहा। (५५) यिहूदियोंका निस्तार पर्ब्ब निकट था और बहुत लोग अपने तईं शुद्ध करनेको निस्तार पर्ब्बके आगे देशमेंसे यिरूशलीमको गये। (५६) उन्होंने यीशुको ढूंढ़ा और मन्दिरमें खड़े हुए आपसमें कहा तुम क्या समझते हो क्या वह पर्ब्ब में नहीं आवेगा। (५७) और प्रधान याजकों और फरीशियोंने भी आज्ञा दिई थी कि यदि कोई जाने कि यीशु कहां है तो बतावे इसलिये कि वे उसे पकड़ें।

[मरियमका यीशुके चरणोंपर सुगन्ध तेल लगाना।]

१२ निस्तार पर्ब्बके छः दिन आगे यीशु बैथनियामें आया जहां इलियाजर था जो मर गया था जिसे उसने मृतकों मेंसे उठाया था। (२) वहां उन्होंने उसके लिये बियारी बनाई और मर्था ने सेवा किई और इलियाजर यीशुके संग बैठनेहारों मेंसे एक था। (३) तब मरियमने आध सेर जटामांसीका बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके यीशुके चरणोंपर लगाया और उसके चरणोंको अपने बालोंसे पोंछा और तेलके सुगन्धसे घर भर गया। (४) इसपर उसके शिष्योंमेंसे शिमोनका पुत्र यिहूदा इस्करियोती नाम एक शिष्य जो उसे पकड़वानेपर था बोला। (५) यह सुगन्ध तेल क्यों नहीं तीन सौ सूकियोंपर बेचा गया और कंगालोंको दिया गया। (६) वह यह बात इसलिये नहीं

बोला कि वह कंगालोंकी चिन्ता करता था परन्तु इसलिये कि वह चोर था और थैली रखता था और जो उसमें डाला जाता सो उठा लेता था । (७) यीशुने कहा स्त्रीको रहने दे . उसने मेरे गाड़े जानेके दिनके लिये यह रखा है । (८) कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा ।

(९) यिहूदियोंमेंसे बहुत लोगोंने जाना कि यीशु वहां है और वे केवल यीशुके कारण नहीं परन्तु इलियाजरको देखने के लिये भी आये जिसे उसने मृतकोंमेंसे उठाया था । (१०) तब प्रधान याजकोंने इलियाजरकोभी मार डालनेका बिचार किया । (११) क्योंकि बहुत यिहूदियोंने उसके कारण जाके यीशुपर बिश्वास किया ।

[यीशुका यिरूशलीममें अद्भुत रीतिसे प्रवेश करना ।]

(१२) दूसरे दिन बहुत लोग जो पर्ब्बमें आये थे जब उन्होंने सुना कि यीशु यिरूशलीममें आता है . (१३) तब खजूरोंके पत्ते लेके उससे मिलनेको निकले और पुकारने लगे कि जय जय धन्य इस्रायेलका राजा जो परमेश्वरके नामसे आता है । (१४) यीशु एक गदहीके बच्चेको पाके उसपर बैठा . (१५) जैसा लिखा है कि हे सियोनकी पुत्री मत डर देख तेरा राजा गदहीके बच्चेपर बैठा हुआ आता है । (१६) यह बातें उसके शिष्योंने पहिले नहीं समझीं परन्तु जब यीशुकी महिमा प्रगट हुई तब उन्होंने स्मरण किया कि यह बातें उसके विषयमें लिखी हुई थीं और कि उन्होंने उससे यह किया था । (१७) जो लोग उसके संग थे उन्होंने साक्षी दिई कि उसने इलियाजर को कबरमेंसे बुलाया और उसको मृतकोंमेंसे उठाया । (१८) लोग इसी कारण उससे आ मिले भी कि उन्होंने सुना कि उसने यह आश्चर्य्य कर्म्म किया था । (१९) तब फरीशियोंने आपस

में कहा क्या तुम देखते हो कि तुमसे कुछ बन नहीं पडता. देखो संसार उसके पीछे गया है ।

[अन्यदेशियोंका योशुके पास आना ।]

(२०) जो लोग पर्ब्बमें भजन करनेको आये उन्होंमेंसे कितने यूनानी लोग थे । (२१) उन्होंने गालीलके बैतसैदा नगरके रहनेहारे फिलिपके पास आके उससे बिन्ती किई कि हे प्रभु हम योशुको देखने चाहते हैं । (२२) फिलिपने आके अन्द्रियसे कहा और फिर अन्द्रिय और फिलिपने योशुसे कहा । (२३) योशु ने उनको उत्तर दिया कि मनुष्यके पुत्रकी महिमाके प्रगट होनेकी घड़ी आ पहुंची है । (२४) मैं तुमसे सच सच कहता हूं यदि गेहूंका दाना भूमिमें पड़के मर न जाय तो वह अकेला रहता है परन्तु जो मर जाय तो बहुत फल फलता है । (२५) जो अपने प्राणको प्यार करे सो उसे खोवेगा और जो इस जगतमें अपने प्राणको अप्रिय जाने सो अनन्त जीवन लों उसकी रक्षा करेगा । (२६) यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरे पीछे हो लेवे और जहां मैं रहूंगा तहां मेरा सेवक भी रहेगा . यदि कोई मेरी सेवा करे तो पिता उसका आदर करेगा । (२७) अब मेरा मन व्याकुल हुआ है और मैं क्या कहूं . हे पिता मुझे इस घड़ीसे बचा. परन्तु मैं इसीलिये इस घड़ी लों आया हूं । (२८) हे पिता अपने नामकी महिमा प्रगट कर . तब यह आकाशबाणी हुई कि मैंने उसकी महिमा प्रगट किई है और फिर प्रगट करूंगा । (२९) तब जो लोग खड़े हुए सुनते थे उन्होंने कहा कि मेघ गर्जा . औरोंने कहा कोई स्वर्ग दूत उससे बोला । (३०) इसपर योशुने कहा यह शब्द मेरे लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये हुआ । (३१) अब इस जगतका बिचार होता है . अब इस जगतका अध्यक्ष बाहर निकाला जायगा । (३२) और मैं यदि पृथिवीपरसे ऊंचा किया जाऊं

तो सभोंको अपनी ओर खींचूंगा । (३३) यह कहनेमें उसने पता दिया कि वह कैसी मृत्युसे मरनेपर था । (३४) लोगोंने उसको उत्तर दिया कि हमने व्यवस्थामेंसे सुना है कि ख्रीष्ट सदालों रहेगा. तू क्योंकर कहता है कि मनुष्यके पुत्रको ऊंचा किया जाना होगा . यह मनुष्यका पुत्र कौन है। (३५) यीशु ने उनसे कहा उजियाला अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ है . जबलों उजियाला मिलता है तबलों चलो न हो कि अंधकार तुम्हें घेरे . जो अंधकारमें चलता है सो नहीं जानता मैं कहां जाता हूं । (३६) जबलों उजियाला मिलता है उजियालेपर बिश्वास करो कि तुम ज्योतिके सन्तान होओ . यह बातें कहके यीशु चल गया और उनसे छिपा रहा ।

(३७) परन्तु यद्यपि उसने उनके साम्ने इतने आश्चर्य्य कर्म्म किये थे तौभी उन्होंने उसपर बिश्वास न किया. (३८) कि यिशैयाह भविष्यद्वक्ताका वचन पूरा होवे जो उसने कहा कि हे परमेश्वर किसने हमारे समाचारका बिश्वास किया है और परमेश्वरकी भुजा किसपर प्रगट किई गई है। (३९) इस कारण वे बिश्वास न कर सके क्योंकि यिशैयाहने फिर कहा. (४०) उसने उनके नेत्र अंधे और उनका मन कठोर किया है ऐसा न हो कि वे नेत्रोंसे देखें और मनसे बूझें और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं। (४१) जब यिशैयाहने उसका ऐश्वर्य्य देखा और उसके विषयमें बोला तब उसने यह बातें कहीं। (४२) पर तौभी प्रधानोंमेंसे भी बहुतोंने उसपर बिश्वास किया परन्तु फरीशियोंके कारण नहीं मान लिया न हो कि वे सभामेंसे निकाले जायें । (४३) क्योंकि मनुष्योंकी प्रशंसा उनको ईश्वर की प्रशंसासे अधिक प्रिय लगती थी ।

(४४) यीशुने पुकारके कहा जो मुझपर बिश्वास करता है सो मुझपर नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारेपर बिश्वास करता है

(४५) और जो मुझे देखता है सो मेरे भेजनेहारेको देखता है। (४६) मैं जगतमें ज्योतिसा आया हूं कि जो कोई मुझपर बिश्वास करे सो अंधकारमें न रहे। (४७) और यदि कोई मेरी बातें सुनके बिश्वास न करे तो मैं उसे दंडके योग्य नहीं ठहराता हूं क्योंकि मैं जगतको दंडके योग्य ठहरानेको नहीं परन्तु जगतका चाण करनेको आया हूं। (४८) जो मुझे तुच्छ जाने और मेरी बातें ग्रहण न करे एक उसको दंडके योग्य ठहरानेहारा है . जो ब्रचन मैंने कहा है वही पिछले दिनमें उसे दंडके योग्य ठहरावेगा। (४९) क्योंकि मैंने अपनी ओरसे बात नहीं किई है परन्तु पिताने जिसने मुझे भेजा आप ही मुझे आज्ञा दिई है कि मैं क्या कहूं और क्या बोलूं। (५०) और मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो बोलता हूं सो जैसा पिताने मुझसे कहा है वैसाही बोलता हूं।

[यीशुका अपने शिष्योंके पांवोंको धोना और उसका तात्पर्य्य।]

१३ निस्तार पर्व्वके आगे यीशुने जाना कि मेरी घड़ी आ पहुंची है कि मैं इस जगतमेंसे पिताके पास जाऊं और उसने अपने निज लोगोंको जो जगतमें थे प्यार करके उन्हें अन्तलों प्यार किया। (२) और बियारीके समयमें जब शैतान शिमोनके पुच यिहूदा इस्करियोतीके मनमें उसे पकड़वानेका मत डाल चुका था . (३) तब यीशु यह जानके कि पिताने सब कुछ मेरे हाथोंमें दिया है और कि मैं ईश्वरकी ओरसे निकल आया और ईश्वरके पास जाता हूं . (४) बियारीसे उठा और अपने कपड़े रख दिये और अंगोछा लेके अपनी कमर बांधी। (५) तब पाचमें जल डालके वह शिष्योंके पांव धोने लगा और जिस अंगोछेसे उसकी कमर बंधी थी उससे पोंछने लगा। (६) तब वह शिमोन पितरके पास आया . उसने उससे

कहा हे प्रभु क्या आप मेरे पांव धोते हैं। (७) यीशुने उसको उत्तर दिया कि जो मैं करता हूं सो तू अब नहीं जानता है परन्तु इसके पीछे जानेगा। (८) पितरने उससे कहा आप मेरे पांव कभी न धोइयेगा. यीशुने उसको उत्तर दिया कि जो मैं तुझे न धोऊं तो मेरे संग तेरा कुछ अंश नहीं है। (९) शिमोन पितरने उससे कहा हे प्रभु केवल मेरे पांव नहीं परन्तु मेरे हाथ और सिर भी धोइये। (१०) यीशुने उससे कहा जो नहाया है उसको पांव धोने बिना और कुछ आवश्यक नहीं है परन्तु वह सम्पूर्ण शुद्ध है और तुम लोग शुद्ध हो परन्तु सब नहीं। (११) वह तो अपने पकड़वानेहारेको जानता था इस लिये उसने कहा तुम सब शुद्ध नहीं हो।

(१२) जब उसने उनके पांव धोके अपने कपड़े ले लिये थे तब फिर बैठके उन्होंसे कहा क्या तुम जानते हो कि मैंने तुमसे क्या किया है। (१३) तुम मुझे हे गुरु और हे प्रभु पुकारते हो और तुम अच्छा कहते हो क्योंकि मैं वही हूं। (१४) सो यदि मैंने प्रभु और गुरु होके तुम्हारे पांव धोये हैं तो तुम्हें भी एक दूसरेके पांव धोना उचित है। (१५) क्योंकि मैंने तुम को नमूना दिया है कि जैसा मैंने तुमसे किया है तुम भी वैसा करो। (१६) मैं तुमसे सच सच कहता हूं दास अपने स्वामीसे बड़ा नहीं और न प्रेरित अपने भेजनेहारेसे बड़ा है। (१७) जो तुम यह बातें जानते हो यदि उनपर चलो तो धन्य हो। (१८) मैं तुम सभोंके विषयमें नहीं कहता हूं. जिन्हें मैंने चुना है उन्हें मैं जानता हूं. परन्तु यह इसलिये है कि धर्म्मपुस्तक का बचन पूरा होवे कि जो मेरे संग रोटी खाता है उसने मेरे बिरुद्ध अपनी लात उठाई है। (१९) मैं अबसे इसके होने के आगे तुमसे कहता हूं कि जब वह हो जाय तब तुम बिश्वास करो कि मैं वही हूं। (२०) मैं तुमसे सच सच कहता

हूं कि जिस किसीको मैं भेजूं उसको जो ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारेको ग्रहण करता है।

[यिहूदा इस्करियोतीमें शैतानका पैठ जाना।]

मत्ती २६ : २१। मार्क १४ : १८।

(२१) यह बातें कहके यीशु आत्मामें व्याकुल हुआ और साक्षी देके बोला मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि तुममेंसे एक मुझे पकड़वायगा। (२२) इसपर शिष्य लोग यह सन्देह करते हुए कि वह किसके विषयमें बोलता है एक दूसरेकी ओर ताकने लगे। (२३) परन्तु यीशुके शिष्योंमेंसे एक जिसे यीशु प्यार करता था उसकी गोदमें बैठा हुआ था। (२४) सो शिमोन पितरने उसको सैन किया कि पूछिये कौन है जिस के विषयमें आप बोलते हैं। (२५) तब उसने यीशुकी छाती पर उठंगके उससे कहा हे प्रभु कौन है। (२६) यीशुने उत्तर दिया वही है जिसको मैं यह रोटीका टुकड़ा डुबोके देऊंगा. और उसने टुकड़ा डुबोके शिमोनके पुत्र यिहूदा इस्करियोती को दिया। (२७) उसी समयमें टुकड़ा लेनेके पीछे शैतान उस में पैठ गया. तब यीशुने उससे कहा जो तू करता है सो बहुत शीघ्र कर। (२८) परन्तु बैठनेहारोंमेंसे किसीने न जाना कि उसने किस कारण यह बात उससे कही। (२९) क्योंकि यिहूदा थैली जो रखता था इसलिये कितनोंने समझा कि यीशुने उससे कहा पर्ब्बके लिये जो हमें आवश्यक है सो मोल ले अथवा कंगालोंको कुछ दे। (३०) सो टुकड़ा लेनेके पीछे वह तुरन्त बाहर गया. उस समय रात थी।

[यीशुका शिष्योंको पिछला उपदेश देना—एक दूसरेको प्यार करनेकी आज्ञा।]

(३१) जब वह बाहर गया था तब यीशुने कहा अब मनुष्य के पुत्रकी महिमा प्रगट होती है और ईश्वरकी महिमा उस

के द्वारा प्रगट होती है। (३२) जो ईश्वरकी महिमा उसके द्वारा प्रगट होती है तो ईश्वर भी अपनी ओरसे उसकी महिमा प्रगट करेगा और तुरन्त उसे प्रगट करेगा। (३३) हे बालको मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ हूं. तुम मुझे ढूंढ़ोगे और जैसा मैंने यिहूदियोंसे कहा कि जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो तैसा मैं अब तुमसे भी कहता हूं। (३४) मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूसरेको प्यार करो. जैसा मैंने तुम्हें प्यार किया है तैसा तुम भी एक दूसरेको प्यार करो। (३५) जो तुम आपसमें प्यार करो तो इसीसे सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।

(३६) शिमोन पितरने उससे कहा हे प्रभु आप कहां जाते हैं. यीशुने उसको उत्तर दिया कि जहां मैं जाता हूं तहां तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता है परन्तु इसके उपरान्त तू मेरे पीछे आवेगा। (३७) पितरने उससे कहा हे प्रभु मैं क्यों नहीं अब आपके पीछे आ सकता हूं. मैं आपके लिये अपना प्राण देऊंगा। (३८) यीशुने उसको उत्तर दिया क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा. मैं तुझसे सच सच कहता हूं कि जब लों तू तीन बार मुझसे न मुकरे तबलों मुर्ग न बोलेगा।

[यीशुका पिछला उपदेश—उसका अपने शिष्योंको शांति देना—पवित्रात्मा को भेजनेकी प्रतिज्ञा।]

१४ तुम्हारा मन व्याकुल न होवे. ईश्वरपर बिश्वास करो और मुझपर बिश्वास करो। (२) मेरे पिताके घरमें बहुतसे रहनेके स्थान हैं नहीं तो मैं तुमसे कहता. मैं तुम्हारे लिये स्थान तैयार करने जाता हूं। (३) और जो मैं जाके तुम्हारे लिये स्थान तैयार करूं तो फिर आके तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं तहां तुम भी रहो। (४) और मैं कहां जाता हूं सो तुम जानते हो और मार्गको जानते हो।

(५) थोमाने उससे कहा हे प्रभु आप कहां जाते हैं सो हम नहीं जानते हैं और मार्गको हम क्योंकर जान सकें। (६) यीशु ने उससे कहा मैंही मार्ग औ सत्य औ जीवन हूं. बिना मेरे द्वारासे कोई पिता पास नहीं पहुंचता है। (७) जो तुम मुझे जानते तो मेरे पिताको भी जानते और अबसे तुम उसको जानते हो और उसको देखा है।

(८) फिलिपने उससे कहा हे प्रभु पिताको हमें दिखाइये तो हमारे लिये यही बहुत है। (९) यीशुने उससे कहा हे फिलिप मैं इतने दिनसे तुम्हारे संग हूं और क्या तूने मुझे नहीं जाना है. जिसने मुझे देखा है उसने पिताको देखा है और तू क्योंकर कहता है कि पिताको हमें दिखाइये। (१०) क्या तू प्रतीति नहीं करता है कि मैं पितामें हूं और पिता मुझमें है. जो बातें मैं तुमसे कहता हूं सो अपनी ओरसे नहीं कहता हूं परन्तु पिता जो मुझमें रहता है वही इन कामोंको करता है। (११) मेरीही प्रतीति करो कि मैं पितामें हूं और पिता मुझमें है नहीं तो कामोंहीके कारण मेरी प्रतीति करो। (१२) मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो मुझपर बिश्वास करे जो काम मैं करता हूं उन्हें वह भी करेगा और इनसे बड़े काम करेगा क्योंकि मैं अपने पिताके पास जाता हूं। (१३) और जो कुछ तुम मेरे नामसे मांगोगे सोई मैं करूंगा इसलिये कि पुत्रके द्वारा पिताकी महिमा प्रगट होय। (१४) जो तुम मेरे नामसे कुछ मांगो तो मैं उसे करूंगा।

(१५) जो तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरी आज्ञाओंको पालन करो। (१६) और मैं पितासे मांगूंगा और वह तुम्हें दूसरा शांतिदाता देगा कि वह सदा तुम्हारे संग रहे. (१७) अर्थात सत्यताका आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता है क्योंकि वह उसे नहीं देखता है और न उसे जानता है. परन्तु तुम

उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे संग रहता है और तुम्होंमें होगा। (१८) मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूंगा मैं तुम्हारे पास आऊंगा। (१९) अब थोड़ी बेरमें संसार मुझे फिर नहीं देखेगा परन्तु तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं जीता हूं तुम भी जोओगे. (२०) उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पितामें हूं और तुम मुझमें हो और मैं तुममें हूं। (२१) जो मेरी आज्ञाओंको पाके उन्हें पालन करता है वही है जो मुझे प्यार करता है और जो मुझे प्यार करता है सो मेरे पिताका प्यारा होगा और मैं उसे प्यार करूंगा और अपने तईं उसपर प्रगट करूंगा।

(२२) तब इस्करियोती नहीं परन्तु दूसरे यिहूदाने उससे कहा हे प्रभु आप किसलिये अपने तईं हमोंपर प्रगट करेंगे और संसारपर नहीं। (२३) योशुने उसको उत्तर दिया यदि कोई मुझे प्यार करे तो मेरी बातको पालन करेगा और मेरा पिता उसे प्यार करेगा और हम उस पास आवेंगे और उसके संग वास करेंगे। (२४) जो मुझे प्यार नहीं करता है सो मेरी बातें पालन नहीं करता है और जो बात तुम सुनते हो सो मेरी नहीं परन्तु पिताकी है जिसने मुझे भेजा। (२५) यह बातें मैंने तुम्हारे संग रहते हुए तुमसे कही हैं। (२६) परन्तु शांतिदाता अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नामसे भेजेगा वह तुम्हें सब कुछ सिखावेगा और सब कुछ जो मैंने तुमसे कहा है तुम्हें स्मरण करावेगा। (२७) मैं तुम्हें शांति दे जाता हूं मैं अपनी शांति तुम्हें देता हूं. जैसा जगत देता है तैसा मैं तुम्हें नहीं देता हूं. तुम्हारा मन व्याकुल न होय और डर न जाय। (२८) तुमने सुना कि मैंने तुमसे कहा मैं जाता हूं और तुम्हारे पास फिर आऊंगा. जो तुम मुझे प्यार करते तो मैंने जो कहा कि मैं पिता पास जाता हूं इससे तुम आनन्द करते क्योंकि मेरा पिता मुझसे बड़ा है। (२९) और मैंने अब इसके होनेके

आगे तुमसे कहा है कि जब वह हो जाय तब तुम बिश्वास करो । (३०) मैं तुम्हारे संग और बहुत बातें न करूंगा क्योंकि इस जगतका अध्यक्ष आता है और मुझमें उसका कुछ नहीं है । (३१) परन्तु यह इसलिये है कि जगत जाने कि मैं पिताको प्यार करता हूं और जैसा पिताने मुझे आज्ञा दिई तैसाही करता हूं . उठो हम यहांसे चलें ।

[दाख लता और उसकी डालियोंका दृष्टान्त—शिष्योंसे योशुका बड़ा प्रेम—उनके सताये जानेकी भविष्यद्वाणी—जगतके लोगोंके दोषका प्रमाण ।]

१५ मैं सच्ची दाख लता हूं और मेरा पिता किसान है । (२) मुझमें जो जो डाल नहीं फलती है वह उसे दूर करता है और जो जो डाल फलती है वह उसे शुद्ध करता है कि वह अधिक फल फले । (३) तुम तो उस बचनके गुण से जो मैंने तुमसे कहा है शुद्ध हो चुके । (४) तुम मुझमें रहो और मैं तुममें . जैसे डाल जो वह दाख लतामें न रहे तो आपसे फल नहीं फल सकती है तैसे तुम भी जो मुझमें न रहो तो नहीं फल सकते हो । (५) मैं दाख लता हूं तुम लोग डालें हो . जो मुझमें रहता है और मैं उसमें सो बहुत फल फलता है क्योंकि मुझसे अलग तुम कुछ नहीं कर सकते हो । (६) यदि कोई मुझमें न रहे तो वह ऐसा फेंका जाता जैसे डाल फेंकी जाती और सूख जाती और लोग ऐसी डालें बटोरके आग में डालते हैं और वे जल जाती हैं । (७) जो तुम मुझमें रहो और मेरी बातें तुममें रहें तो जो कुछ तुम्हारी इच्छा होय सो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जायगा । (८) तुम्हारे बहुत फल फलनेमें मेरे पिताकी महिमा प्रगट होती है और तुम मेरे शिष्य होओगे ।

(९) जैसा पिताने मुझसे प्रेम किया है तैसा मैंने तुमसे

प्रेम किया है . मेरे प्रेममें रहो । (१०) जैसे मैंने अपने पिता को आज्ञाओंको पालन किया है और उसके प्रेममें रहता हूं तैसे तुम जो मेरी आज्ञाओंको पालन करो तो मेरे प्रेममें रहोगे । (११) मैंने यह बातें तुमसे इसलिये कही हैं कि मेरा आनन्द तुम्होंमें रहे और तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण हो जाय । (१२) यह मेरी आज्ञा है कि जैसा मैंने तुम्हें प्यार किया है तैसा तुम एक दूसरेको प्यार करो । (१३) इससे बड़ा प्रेम किसीका नहीं है कि कोई अपने मित्रोंके लिये अपना प्राण देवे । (१४) तुम यदि सब काम करो जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं तो मेरे मित्र हो । (१५) मैं आगेको तुम्हें दास नहीं कहता हूं क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि मैंने जो अपने पिता से सुना है सो सब तुम्हें जनाया है । (१६) तुमने मुझे नहीं चुना परन्तु मैंने तुम्हें चुना और तुम्हें ठहराया कि तुम जाके फल फलो और तुम्हारा फल रहे और कि तुम मेरे नामसे जो कुछ पितासे मांगो वह तुमको देवे ।

(१७) मैं तुम्हें इन बातोंकी आज्ञा देता हूं इसलिये कि तुम एक दूसरेको प्यार करो । (१८) यदि संसार तुमसे बैर करता है तुम जानते हो कि उन्होंने तुमसे पहिले मुझसे बैर किया । (१९) जो तुम संसारके होते तो संसार अपनोंको प्यार करता परन्तु तुम संसारके नहीं हो पर मैंने तुम्हें संसारमेंसे चुना है इसीलिये संसार तुमसे बैर करता है । (२०) जो बचन मैंने तुमसे कहा कि दास अपने स्वामीसे बड़ा नहीं है सो स्मरण करो . जो उन्होंने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सतावेंगे जो मेरी बातको पालन किया है तो तुम्हारी भी पालन करेंगे । (२१) परन्तु वे मेरे नामके कारण तुमसे यह सब करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेहारेको नहीं जानते हैं ।

(२२) जो मैं न आता और उनसे बात न करता तो उन्हें पाप न होता परन्तु अब उन्हें उनके पापके लिये कोई बहाना नहीं है। (२३) जो मुझसे बैर करता है सो मेरे पितासे भी बैर करता है। (२४) जो मैं उन कामोंको जो और किसीने नहीं किये हैं उन्होंमें न किये होता तो उन्हें पाप न होता परन्तु अब उन्होंने देखके भी मुझसे और मेरे पितासे भी बैर किया है। (२५) पर यह इसलिये है कि जो बचन उन्होंकी व्यवस्थामें लिखा है कि उन्होंने मुझसे अकारण बैर किया सो पूरा होवे। (२६) परन्तु शांतिदाता जिसे मैं पिताकी ओरसे तुम्हारे पास भेजूंगा अर्थात सत्यताका आत्मा जो पिताकी ओरसे निकलता है जब आवेगा तब वह मेरे विषयमें साक्षी देगा। (२७) और तुम भी साक्षी देओगे क्योंकि तुम आरंभसे मेरे संग रहे हो।

[यीशुका पिछला उपदेश समाप्त—उसका शिष्योंको शांति देना।]

१६ मैंने तुमसे यह बातें कही हैं कि तुम ठोकर न खावो। (२) वे तुम्हें सभामेंसे निकलेंगे हां वह समय आता है जिसमें जो कोई तुम्हें मार डालेगा सो समझेगा कि मैं ईश्वर की सेवा करता हूं। (३) और वे तुमसे इसलिये यह करेंगे कि उन्होंने न पिताको न मुझको जाना है। (४) परन्तु मैंने तुमसे यह बातें कही हैं कि जब वह समय आवे तब तुम उन्हें स्मरण करो कि मैंने तुमसे कह दिया. और मैं तुमसे यह बातें आरंभसे न बोला क्योंकि मैं तुम्हारे संग था।

(५) पर अब मैं अपने भेजनेहारेके पास जाता हूं और तुम मेंसे कोई नहीं मुझसे पूछता है कि आप कहां जाते हैं। (६) परन्तु मैंने जो यह बातें तुमसे कही हैं इसलिये तुम्हारे मन शोकसे भर गये हैं। (७) तौभी मैं तुमसे सच बात कहता हूं तुम्हारे लिये अच्छा है कि मैं जाऊं क्योंकि जो मैं न जाऊं

तो शांतिदाता तुम्हारे पास नहीं आवेगा परन्तु जो मैं जाऊं तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा ।

(८) और वह आके जगतको पापके विषयमें और धर्म्मके विषयमें और विचारके विषयमें समझावेगा । (९) पापके विषय में यह कि वे मुझपर बिश्वास नहीं करते हैं । (१०) धर्म्मके विषयमें यह कि मैं अपने पिता पास जाता हूं और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे । (११) बिचारके विषयमें यह कि इस जगत के अध्यक्षका विचार किया गया है। (१२) मुझे और भी बहुत कुछ तुमसे कहना है परन्तु तुम अब नहीं सह सकते हो । (१३) पर वह जब आवेगा अर्थात सत्यताका आत्मा तब तुम्हें सारी सच्चाईलों मार्ग बतावेगा क्योंकि वह अपनी ओरसे नहीं कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा सो कहेगा और वह आनेवाली बातें तुमसे कह देगा । (१४) वह मेरी महिमा प्रगट करेगा क्योंकि वह मेरी बातमेंसे लेके तुमसे कह देगा । (१५) जो कुछ पिताका है सो सब मेरा है इसलिये मैंने कहा कि वह मेरी बातमेंसे लेके तुमसे कह देगा ।

(१६) थोड़ी बेरमें तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोडी बेरमें मुझे देखोगे क्योंकि मैं पिताके पास जाता हूं । (१७) तब उसके शिष्योंमेंसे कोई कोई आपसमें बोले यह क्या है जो वह हमसे कहता है कि थोड़ी बेरमें तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी बेरमें मुझे देखोगे . और यह कि मैं पिता के पास जाता हूं । (१८) सो उन्होंने कहा यह थोड़ी बेरकी बात जो वह कहता है क्या है . हम नहीं जानते वह क्या कहता है । (१९) यीशुने जाना कि वे मुझसे पूछा चाहते हैं और उनसे कहा मैं जो बोला कि थोडी बेरमें तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी बेरमें मुझे देखोगे क्या तुम इसके विषयमें आपसमें बिचार करते हो । (२०) मैं तुमसे सच सच

कहता हूं कि तुम रोओगे और बिलाप करोगे परन्तु संसार आनन्दित होगा . तुम्हें शोक होगा परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द हो जायगा। (२१) स्त्रीको जननेमें शोक होता है क्योंकि उसका समय आ पहुंचा है परन्तु जब वह बालक जन चुकी तब जगतमें एक मनुष्यके उत्पन्न होनेके आनन्दके कारण अपने क्लेशको फिर स्मरण नहीं करती है। (२२) और तुम्हें तो अभी शोक होता है परन्तु मैं तुम्हें फिर देखूंगा और तुम्हारा मन आनन्दित होगा और तुम्हारा आनन्द कोई तुमसे छीन न लेगा। (२३) और उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे . मैं तुमसे सच सच कहता हूं जो कुछ तुम मेरे नामसे पिता से मांगोगे वह तुमको देगा। (२४) अबलों तुमने मेरे नामसे कुछ नहीं मांगा है . मांगो तो पाओगे कि तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण होय। (२५) मैंने यह बातें तुमसे दृष्टान्तोंमें कही हैं परन्तु समय आता है जिसमें मैं तुमसे दृष्टान्तोंमें और नहीं कहूंगा परन्तु खोलके तुम्हें पिताके विषयमें बताऊंगा। (२६) उस दिन तुम मेरे नामसे मांगोगे और मैं तुमसे नहीं कहता हूं कि मैं तुम्हारे लिये पितासे प्रार्थना करूंगा। (२७) क्योंकि पिता आपही तुम्हें प्यार करता है इसलिये कि तुमने मुझे प्यार किया है और यह बिश्वास किया है कि मैं ईश्वरकी ओरसे निकल आया। (२८) मैं पिताकी ओरसे निकलके जगत में आया हूं . फिर जगतको छोड़के पिता पास जाता हूं। (२९) उसके शिष्योंने उससे कहा देखिये अब तो आप खोलके कहते हैं और कुछ दृष्टान्त नहीं कहते हैं। (३०) अब हमे ज्ञान हुआ कि आप सब कुछ जानते हैं और आपको प्रयोजन नहीं कि कोई आपसे पूछे . इससे हम बिश्वास करते हैं कि आप ईश्वरकी ओरसे निकल आये। (३१) यीशुने उनको उत्तर दिया क्या तुम अब बिश्वास करते हो। (३२) देखो समय आता

है और अभी आया है जिसमें तुम सब तितर बितर होके अपने अपने स्थानको जाओगे और मुझे अकेला छोड़ोगे. तौभी मैं अकेला नहीं हूं क्योंकि पिता मेरे संग है। (३३) मैं ने यह बातें तुमसे कही हैं इसलिये कि मुझमें तुमको शांति होय. जगतमें तुम्हें क्लेश होगा परन्तु ढाढ़स बांधो मैंने जगत को जीता है।

[यीशुका अपने लिये और प्रेरितों और सब शिष्योंके लिये पितासे प्रार्थना करना।]

१७ यह बातें कहके यीशुने अपनी आंखें स्वर्गकी ओर उठाईं और कहा हे पिता घड़ी आ पहुंची है. अपने पुत्रकी महिमा प्रगट कर कि तेरा पुत्र भी तेरी महिमा प्रगट करे। (२) क्योंकि तूने उसको सब प्राणियोंपर अधिकार दिया कि जिन्हें तूने उसको दिया है उन सभोंको वह अनन्त जीवन देवे। (३) और अनन्तजीवन यह है कि वे तुझको जो अद्वैत सत्य ईश्वर है और यीशु ख्रीष्टको जिसे तूने भेजा है पहचानें। (४) मैंने पृथिवीपर तेरी महिमा प्रगट किई है. जो काम तूने मुझे करनेको दिया सो मैंने पूरा किया है। (५) और अभी हे पिता तेरे संग जगतके होनेके आगे जो मेरी महिमा थी उस महिमासे तू अपने संग मेरी महिमा प्रगट कर।

(६) जिन मनुष्योंको तूने जगतमेंसे मुझको दिया है उन्हों पर मैंने तेरा नाम प्रगट किया है. वे तेरे थे और तूने उन्हें मुझको दिया और उन्होंने तेरे बचनको पालन किया है। (७) अब उन्होंने जान लिया है कि सब कुछ जो तूने मुझको दिया है तेरी ओरसे है। (८) क्योंकि वह बातें जो तूने मुझ को दिई हैं मैंने उन्होंको दिई हैं और उन्होंने उनको ग्रहण किया है और निश्चय जान लिया है कि मैं तेरी ओरसे निकल आया और विश्वास किया है कि तूने मुझे भेजा। (९) मैं उन्होंके लिये प्रार्थना करता हूं. मैं संसारके लिये नहीं परन्तु

जिन्हें तूने मुझको दिया है उन्होंके लिये प्रार्थना करता हूं क्योंकि वे तेरे हैं। (१०) और जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है और जो तेरा है सो मेरा है और मेरी महिमा उसमें प्रगट हुई है। (११) मैं अब जगतमें नहीं रहूंगा परन्तु ये जगतमें रहेंगे और मैं तेरे पास आता हूं. हे पवित्र पिता जिन्हें तू ने मुझको दिया है उनको अपने नाममें रक्षा कर कि जैसे हम एक हैं तैसे वे एक होवें। (१२) जब मैं उनके संग जगतमें था तब मैंने तेरे नाममें उनकी रक्षा किई. जिन्हें तूने मुझ को दिया है उनको मैंने रक्षा किई और उनमेंसे कोई नाश नहीं हुआ केवल बिनाशका पुत्र जिस्तें धर्म्मपुस्तकका बचन पूरा होवे। (१३) अब मैं तेरे पास आता हूं और मैं जगतमें यह बातें कहता हूं कि वे मेरा आनन्द अपनेमें सम्पूर्ण पावें। (१४) मैंने तेरा बचन उन्होंको दिया है और संसारने उनसे बैर किया है क्योंकि जैसा मैं संसारका नहीं हूं तैसे वे संसार के नहीं हैं। (१५) मैं यह प्रार्थना नहीं करता हूं कि तू उन्हें जगतमेंसे ले जा परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्टसे बचा रख। (१६) जैसा मैं संसारका नहीं हूं तैसे वे संसारके नहीं हैं। (१७) अपनी सच्चाईसे उन्हें पवित्र कर. तेरा बचन सच्चाई है। (१८) जैसे तूने मुझे जगतमें भेजा तैसे मैंने उन्हें भी जगत में भेजा है। (१९) और उनके लिये मै अपनेको पवित्र करता हूं कि वे भी सच्चाईसे पवित्र किये जावें।

(२०) और मैं केवल इनके लिये नहीं परन्तु उनके लिये भी जो इनके बचनके द्वारासे मुझपर बिश्वास करेंगे प्रार्थना करता हूं कि वे सब एक होवें. (२१) जैसा तू हे पिता मुझमें है और मैं तुझमें हूं तैसे वे भी हममें एक होवें इसलिये कि जगत बिश्वास करे कि तूने मुझे भेजा। (२२) और वह महिमा जो तूने मुझको दिई है मैंने उनको दिई है कि जैसे हम एक

हैं तैसे वे एक होवें . (२३) मैं उनमें और तू मुझमें कि वे एकमें सिद्ध होवें और कि जगत जाने कि तूने मुझे भेजा और जैसा मुझे प्यार किया तैसा उन्हें प्यार किया है। (२४) हे पिता मैं चाहता हूं कि जहां मैं रहूं तहां वे भी जिन्हें तूने मुझको दिया है मेरे संग रहें कि वे मेरी महिमाको देखें जो तूने मुझको दिई क्योंकि तूने जगतकी उत्पत्तिके आगे मुझे प्यार किया। (२५) हे धर्म्मी पिता संसार तुझे नहीं जानता है परन्तु मै तुझे जानता हूं और ये लोग जानते हैं कि तूने मुझे भेजा। (२६) और मैंने तेरा नाम उनको जनाया है और जनाऊंगा कि वह प्यार जिससे तूने मुझे प्यार किया उनमें रहे और मैं उनमें रहूं।

[यीशुका पकड़वाया जाना।]

मत्ती २६ ३६, ४७—५६।

१८ यीशु यह बातें कहके अपने शिष्योंके संग किद्रोन नालेके उस पार निकल गया जहां एक बारी थी जिस में वह और उसके शिष्य गये। (२) उसका पकड़वानेहारा यिहूदा भी वह स्थान जानता था क्योंकि यीशु बारंबार वहां अपने शिष्योंके संग एकट्ठा हुआ था। (३) तब यिहूदा पलटनको और प्रधान याजकों और फरीशियोंकी औरसे प्यादोंको लेके दीपकों और मशालों और हथियारोंको लिये हुए वहां आया। (४) सो यीशु सब बातें जो उसपर आनेवाली थीं जानके निकला और उनसे कहा तुम किसको ढूंढ़ते हो। (५) उन्होंने उसको उत्तर दिया कि यीशु नासरीको . यीशुने उनसे कहा मैं हूं . और उसका पकड़वानेहारा यिहूदा भी उनके संग खड़ा था। (६) ज्योंही उसने उनसे कहा मैं हूं त्योंही वे पीछे हटके भूमि पर गिर पड़े। (७) तब उसने फिर उनसे पूछा तुम किसको ढूंढ़ते हो . वे बोले यीशु नासरीको। (८) यीशुने उत्तर दिया

मैंने तुमसे कहा कि मैं हूं सो जो तुम मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्होंको जाने देओ । (९) यह इसलिये हुआ कि जो बचन उसने कहा था कि जिन्हे तूने मुझको दिया है उनमेंसे मैंने किसीको न खोया से पूरा होवे । (१०) शिमोन पितरके पास खड्ग था सो उसने उसे खींचके महायाजकके दासको मारा और उसका दहिना कान काट डाला . उस दासका नाम मलक था । (११) तब यीशुने पितरसे कहा अपना खड्ग काठीमें रख . जो कटोरा पिताने मुझको दिया है क्या मैं उसे न पीऊं ।

[यीशुका महायाजकके आगे बिचार होना और पितरका उससे मुकरना ।]

मत्ती २६ : ५७—७५ ।

(१२) तब उस पलटनने और सहस्रपतिने और यिहूदियोंके प्यादोंने यीशुको पकड़के बांधा . (१३) और पहिले उसे हन्नसके पास ले गये क्योंकि कियाफा जो उस बरसका महायाजक था उसका वह ससर था । (१४) कियाफा वह था जिसने यिहूदियोंको परामर्श दिया कि एक मनुष्यका हमारे लोगके लिये मरना अच्छा है ।

(१५) शिमोन पितर और दूसरा शिष्य यीशुके पीछे हो लिये . वह शिष्य महायाजकका जान पहचान था और यीशुके संग महायाजकके अंगनेके भीतर गया । (१६) परन्तु पितर बाहर द्वारपर खड़ा रहा सो दूसरा शिष्य जो महायाजकका जान पहचान था बाहर गया और द्वारपालिनसे कहके पितरको भीतर ले आया । (१७) वह दासी अर्थात द्वारपालिन पितरसे बोली क्या तू भी इस मनुष्यके शिष्योंमेंसे एक है . उसने कहा मैं नहीं हूं । (१८) दास और प्यादे लोग जाड़ेके कारण कोयलेकी आग सुलगाके खड़े हुए तापते थे और पितर उनके संग खड़ा हो तापने लगा ।

(१९) तब महायाजकने यीशुसे उसके शिष्योंके विषयमें और

उसकेउपदेशके विषयमें पूछा । (२०) यीशुने उसको उत्तर दिया कि मैंने जगतसे खोलके बातें किईं मैंने सभाके घरमें और मन्दिरमें जहां यिहूदी लोग नित्य एकट्ठे होते हैं सदा उपदेश किया और गुप्तमें कुछ नहीं कहा । (२१) तू मुझसे क्यों पूछता है . जिन्होंने सुना उन्होंसे पूछ ले कि मैंने उनसे क्या कहा . देख वे जानते हैं कि मैंने क्या कहा । (२२) जब यीशुने यह कहा तब प्यादोंमेंसे एक जो निकट खड़ा था उसको थपेड़ा मारके बोला क्या तू महायाजकको इस रीतिसे उत्तर देता है । (२३) यीशुने उसे उत्तर दिया यदि मैंने बुरा कहा तो उस बुराईकी साक्षी दे परन्तु यदि भला कहा तो मुझे क्यों मारता है । (२४) हन्नसने यीशुको बंधे हुए कियाफा महायाजकके पास भेजा ।

(२५) शिमोन पितर खड़ा हुआ आग तापता था . तब उन्होंने उससे कहा क्या तू भी उसके शिष्योंमेंसे एक है . उसने मुकरके कहा मैं नहीं हूं । (२६) महायाजकके दासोंमेंसे एक दास जो उस मनुष्यका कुटुंब था जिसका कान पितरने काट डाला बोला क्या मैंने तुझे बारीमें उसके संग न देखा । (२७) पितर फिर मुकर गया और तुरन्त मुर्ग बोला ।

[यीशुका पिलातके हाथ सौंपा जाना ।]

मत्ती २७ : १, २, ११—३१ ।

(२८) तब भोर हुआ और वे यीशुको कियाफाके पाससे अध्यक्षभवनपर ले गये परन्तु वे आप अध्यक्षभवनके भीतर नहीं गये इसलिये कि अशुद्ध न होवें परन्तु निस्तार पर्ब्बका भोजन खावें । (२९) सो पिलात उन पास निकल आया और कहा तुम इस मनुष्यपर क्या दोष लगाते हो । (३०) उन्होंने उसको उत्तर दिया कि जो यह कुकर्म्मी न होता तो हम उसे आपके हाथ न सौंपते । (३१) पिलातने उनसे कहा तुम उसको लेओ और अपनी व्यवस्थाके अनुसार उसका बिचार करो . यिहू-

दियोंने उससे कहा किसीको बध करनेका हमें अधिकार नहीं है । (३२) यह इसलिये हुआ कि योशुका बचन जिसे कहनेमें उसने पता दिया कि वह कैसी मृत्युसे मरनेपर था पूरा होवे ।

(३३) तब पिलात फिर अध्यक्षभवनके भीतर गया और योशुको बुलाके उससे कहा क्या तू यिहूदियोंका राजा है । (३४) योशुने उसको उत्तर दिया क्या आप अपनी ओरसे यह बात कहते हैं अथवा ओरोंने मेरे विषयमें आपसे कही । (३५) पिलातने उत्तर दिया क्या मैं यिहूदी हूं . तेरेही लोगों ने और प्रधान याजकोंने तुझे मेरे हाथमें सोंपा . तूने क्या किया है । (३६) योशुने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं है . जो मेरा राज्य इस जगतका होता तो मेरे सेवक लड़ते जिस्तें मैं यिहूदियोंके हाथमें न सोंपा जाता . परन्तु अब मेरा राज्य यहांका नहीं है । (३७) पिलातने उससे कहा फिर भी तू राजा है . योशुने उत्तर दिया कि आप ठीक कहते हैं क्यों कि मैं राजा हूं . मैंने इसलिये जन्म लिया है और इसलिये जगतमें आया हूं कि सत्यपर साक्षी देऊं . जो कोई सत्यको ओर है सो मेरा शब्द सुनता है । (३८) पिलातने उससे कहा सत्य क्या है और यह कहके फिर यिहूदियोंके पास निकल गया और उनसे कहा मैं उसमें कुछ दोष नहीं पाता हूं । (३९) परन्तु तुम्हारी यह रीति है कि मैं निस्तार पर्ब्बमें तुम्हारे लिये एक जनको छोड़ देऊं सो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यिहूदियोंके राजाको छोड़ देऊं । (४०) तब सभोंने फिर पुकारा कि इसको नहीं परन्तु बरब्बाको . और बरब्बा डाकू था ।

१९ तब पिलातने योशुको लेके उसे कोड़े मारे । (२) और योद्धाओंने कांटोंका मुकुट गून्थके उसके सिरपर रखा और उसे बैजनी बस्त्र पहिराया . (३) और कहा हे यिहूदियोंके राजा प्रणाम और उसे थपेड़े मारे ।

(४) तब पिलातने फिर बाहर निकलके लोगोंसे कहा देखो मैं उसे तुम्हारे पास बाहर लाता हूं कि तुम जानो कि मैं उसमें कुछ दोष नहीं पाता हूं। (५) सो यीशु कांटोंका मुकुट और बैजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला और उसने उन्हों से कहा देखो यही मनुष्य है। (६) जब प्रधान याजकों और प्यादोंने उसे देखा तब उन्होंने पुकारा कि उसे क्रूशपर चढ़ाइये क्रूशपर चढ़ाइये. पिलातने उनसे कहा तुम उसे लेके क्रूशपर चढाओ क्योंकि मैं उसमें दोष नहीं पाता हूं। (७) यिहूदियोंने उसको उत्तर दिया कि हमारी भी व्यवस्था है और हमारी व्यवस्थाके अनुसार वह बध होनेके योग्य है क्योंकि उसने अपनेको ईश्वरका पुत्र कहा। (८) जब पिलात ने यह बात सुनी तब और भी डर गया. (९) और फिर अध्यक्षभवनके भीतर गया और यीशुसे बोला तू कहांसे है. परन्तु यीशुने उसको उत्तर न दिया। (१०) पिलातने उससे कहा क्या तू मुझसे नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता है कि तुझे क्रूशपर चढ़ानेका मुझको अधिकार है और तुझे छोड़ देनेका मुझको अधिकार है। (११) यीशुने उत्तर दिया जो आपको ऊपरसे न दिया जाता तो आपको मुझपर कुछ अधिकार न होता इसलिये जो मुझे आपके हाथमें पकड़वाता है उसको अधिक पाप है। (१२) इससे पिलातने उसको छोड देने चाहा परन्तु यिहूदियोंने पुकारके कहा जो आप इसको छोड़ देवें तो आप कैसरके मित्र नहीं हैं. जो कोई अपने को राजा कहता है सो कैसरके बिरुद्ध बोलता है। (१३) यह बात सुनके पिलात यीशुको बाहर लाया और जो स्थान चबूतरा परन्तु इब्रीय भाषामें गबथा कहावता है उस स्थानमें विचार आसनपर बैठा। (१४) निस्तार पर्व्वकी तैयारीका दिन और दो पहरके निकट था. तब उसने यिहूदियोंसे कहा

देखो तुम्हारा राजा । (१५) परन्तु उन्होंने पुकारा कि ले जाओ ले जाओ उसे क्रूशपर चढ़ाओ . पिलातने उनसे कहा क्या मैं तुम्हारे राजाको क्रूशपर चढ़ाऊंगा . प्रधान याजकोंने उत्तर दिया कि कैसरको छोड़ हमारा कोई राजा नहीं है ।(१६) तब उसने योशुको क्रूशपर चढ़ाये जानेको उन्होंके हाथ सोंपा . तब वे उसे पकड़के ले गये ।

[योशुका क्रूशपर प्राण देना ।]

मत्ती २७ : ३२—५६ ।

(१७) और योशु अपना क्रूश उठाये हुए उस स्थानको जो खोपड़ीका स्थान कहावता और इब्रीय भाषामें गलगथा कहावता है निकल गया। (१८) वहां उन्होंने उसको और उस के संग दो और मनुष्योंको क्रूशोंपर चढ़ाया एकको इधर और एकको उधर और बीचमे योशुको । (१९) और पिलातने दोष-पत्र लिखके क्रूशपर लगाया और लिखी हुई बात यह थी योशु नासरी यिहूदियोंका राजा । (२०) यह दोषपत्र बहुत यिहूदियोंने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां योशु क्रूशपर चढ़ाया गया नगरके निकट था और पत्र इब्रीय औ यूनानीय औ रोमीय भाषामें लिखा हुआ था । (२१) तब यिहूदियोंके प्रधान याजकों ने पिलातसे कहा यिहूदियोंका राजा मत लिखिये परन्तु यह कि उसने कहा मैं यिहूदियोंका राजा हूं। (२२) पिलातने उत्तर दिया कि मैंने जो लिखा है सो लिखा है ।

(२३) जब योद्धाओंने योशुको क्रूशपर चढ़ाया था तब उसके कपड़े लेके चार भाग किये हर एक योद्धाके लिये एक भाग . और अंगा भी लिया परन्तु अंगा बिन सीअन ऊपरसे नीचेलों बिना हुआ था । (२४) इसलिये उन्होंने आपसमें कहा हम इसको न फाड़े परन्तु उसपर चिट्ठियां डालें कि वह किसका होगा . जिस्तें धर्म्मपुस्तकका वचन पूरा होवे कि उन्होंने मेरे

कपड़े आपसमें बांट लिये और मेरे बस्त्रपर चिट्ठियां डालीं: सो योद्धाओंने यह किया।

(२५) परन्तु यीशुकी माता और उसकी माताकी बहिन मरियम जो क्लियोपाकी स्त्री थी और मरियम मगदलीनी उस के क्रूशके निकट खड़ी थीं। (२६) सो यीशुने अपनी माताको और उस शिष्यको जिसे वह प्यार करता था उसके निकट खड़े हुए देखके अपनी मातासे कहा हे नारी देखिये आपका पुत्र। (२७) तब उसने उस शिष्यसे कहा देख तेरी माता: और उस समयसे उस शिष्यने उसको अपने घरमें ले लिया।

(२८) इसके पीछे यीशुने यह जानके कि अब सब कुछ हो चुका जिस्तें धर्म्मपुस्तकका बचन पूरा हो जाय इसलिये कहा मैं पियासा हूं। (२९) सिरकेसे भरा हुआ एक बर्त्तन धरा था सो उन्होंने इस्पंजको सिरकेमें भिंगाके एसोबके नलपर रखके उसके मुंहमें लगाया। (३०) जब यीशुने सिरका लिया था तब कहा पूरा हुआ है और सिर झुकाके प्राण त्यागा।

(३१) वह दिन तैयारीका दिन था और वह बिश्रामवार बड़ा दिन था इस कारण जिस्तें लोथें बिश्रामके दिन क्रूशपर न रहें यिहूदियोंने पिलातसे बिन्ती किई कि उनकी टांगें तोड़ी जायें और वे उतारे जायें। (३२) सो योद्धाओंने आके पहिलेकी टांगें तोड़ीं तब दूसरेकी भी जो यीशुके संग क्रूशपर चढ़ाये गये थे। (३३) परन्तु यीशु पास आके जब उन्होंने देखा कि वह मर चुका है तब उसकी टांगें न तोड़ीं। (३४) परन्तु योद्धाओंमेंसे एकने बर्छेसे उसका पंजर बेधा और तुरन्त लोहू और पानी निकला। (३५) इसके देखनेहारेने साक्षी दिई है और उसकी साक्षी सत्य है और वह जानता है कि सत्य कहता है इसलिये कि तुम बिश्वास करो। (३६) क्योंकि यह बातें इसलिये हुईं कि धर्म्मपुस्तकका बचन पूरा होवे कि उसकी

कोई हड्डी नहीं तोड़ी जायगी। (३७) और फिर धर्म्मपुस्तकका दूसरा एक बचन है कि जिसे उन्होंने बेधा उसपर वे दृष्टि करेंगे।

[यूसफका यीशुको कबरमें रखना।]

मत्ती २७ : ५७।

(३८) इसके पीछे अरिमथिया नगरके यूसफने जो यीशुका शिष्य था परन्तु यिहूदियोंके डरसे इसको छिपाये रहता था पिलातसे बिन्ती किई कि मैं यीशुकी लोथको ले जाऊं और पिलातने आज्ञा दिई सो वह आके यीशुकी लोथ ले गया। (३९) निकोदीम भी जो पहिले रातको यीशु पास आया था पचास सेरके अटकल मिलाये हुए गन्धरस और एलवा लेके आया। (४०) तब उन्होंने यीशुकी लोथको लिया और यिहूदियोंके गाड़नेकी रीतिके अनुसार उसे सुगंधके संग चद्दरमें लपेटा। (४१) उस स्थानपर जहां यीशु क्रूशपर चढ़ाया गया एक बारी थी और उस बारीमें एक नई कबर जिसमें कोई कभी नहीं रखा गया था। (४२) सो यिहूदियोंकी तैयारीके दिनके कारण उन्होंने यीशुको वहां रखा क्योंकि वह कबर निकट थी।

[यीशुके जी उठनेका शिष्योंपर प्रगट होना।]

मत्ती २८ : १—१०।

२० अठवारेके पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोरको अंधियारा रहतेही कबरपर आई और पत्थरको कबर से सरकाया हुआ देखा। (२) तब वह दौड़ी और शिमोन पितर और उस दूसरे शिष्यके पास जिसे यीशु प्यार करता था आके उनसे बोली वे प्रभुको कबरमेंसे ले गये हैं और हम नहीं जानतीं कि उसे कहां रखा है। (३) तब पितर और वह दूसरा शिष्य निकलके कबरपर आये। (४) वे दोनों एक संग दौड़े और दूसरा शिष्य पितरसे शीघ्र दौड़के आगे बढ़ा

और कबरपर पहिले पहुंचा । (५) और उसने झुकके चट्टर पड़ी हुई देखी तौभी वह भीतर नहीं गया । (६) तब शिमोन पितर उसके पीछेसे आ पहुंचा और कबरके भीतर गया और चट्टर पड़ी हुई देखी . (७) और वह अंगोछा जो उसके सिर पर था चट्टरके संग पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक स्थान में लपेटा हुआ देखा । (८) तब दूसरा शिष्य भी जो कबरपर पहिले पहुंचा भीतर गया और देखके बिश्वास किया । (९) वे तो अबलों धर्म्मपुस्तकका वचन नहीं समझते थे कि उसको मृतकोंमेंसे जी उठना होगा ।

[योशुका मरियम मगदलीनीको दर्शन देना ।]

(१०) तब दोनों शिष्य फिर अपने घर चले गये । (११) परन्तु मरियम रोती हुई कबरके पास बाहर खड़ी रही और रोते रोते कबरकी ओर झुकी . (१२) और दो दूतोंको उजला बस्त्र पहिने हुए देखा कि जहां योशुकी लोथ पड़ी थी तहां एक सिरहाने और दूसरा पैताने बैठा था । (१३) उन्होंने उससे कहा हे नारी तू क्यों रोती है . वह उनसे बोली वे मेरे प्रभु को ले गये हैं और मैं नहीं जानती कि उसे कहां रखा है । (१४) यह कहके उसने पीछे फिरके योशुको खड़े देखा और नहीं जानती थी कि योशु है । (१५) योशुने उससे कहा हे नारी तू क्यों रोती है किसको ढूंढ़ती है . उसने यह समझके कि माली है उससे कहा हे प्रभु जो आपने उसको उठा लिया है तो मुझसे कहिये कि उसे कहां रखा है और मैं उसे ले जाऊंगी । (१६) योशुने उससे कहा हे मरियम . वह पीछे फिरके उससे बोली हे रब्बूनी अर्थात हे गुरु । (१७) योशुने उससे कहा मुझे मत छू क्योंकि मैं अबलों अपने पिताके पास नहीं चढ़ गया हूं परन्तु मेरे भाइयोंके पास जाके उनसे कह दे कि मैं अपने पिता औ तुम्हारे पिता और अपने ईश्वर

औ तुम्हारे ईश्वर पास चढ़ जाता हूं । (१८) मरियम मग-दलीनीने जाके शिष्योंको सन्देश दिया कि मैंने प्रभुको देखा है और उसने मुझसे यह बातें कहीं ।

[यीशुका शिष्योंको दर्शन देना और थोमाको अपने जी उठनेका प्रमाण देना ।]

लूक २४ : ३६—४३ ।

(१९) अठवारेके उस पहिले दिनको सांझ होते हुए और जहां शिष्य लोग एकट्ठे हुए थे तहां द्वार यिहूदियोंके डरके मारे बन्द होते हुए यीशु आया और बीचमें खड़ा होके उनसे कहा तुम्हारा कल्याण होय । (२०) और यह कहके उसने अपने हाथ और अपना पंजर उनको दिखाये. तब शिष्य लोग प्रभुको देखके आनन्दित हुए । (२१) यीशुने फिर उनसे कहा तुम्हारा कल्याण होय . जैसे पिताने मुझे भेजा है तैसे मैं भी तुम्हें भेजता हूं । (२२) यह कहके उसने फूंक दिया और उनसे कहा पवित्र आत्मा लेओ । (२३) जिन्होंके पाप तुम क्षमा करो वे उनके लिये क्षमा किये जाते हैं . जिन्होंके तुम रखो वे रखे हुए हैं ।

(२४) परन्तु बारहोंमेंसे एक जन अर्थात थोमा जो दिदुम कहावता है जब यीशु आया तब उनके संग नहीं था । (२५) सो दूसरे शिष्योंने उससे कहा हमने प्रभुको देखा है . उसने उन से कहा जो मैं उसके हाथोंमें कीलोंका चिन्ह न देखूं और कीलोंके चिन्हमें अपनी उंगली न डालूं और उसके पंजरमें अपना हाथ न डालूं तो मैं बिश्वास न करूंगा । (२६) आठ दिनके पीछे उसके शिष्य लोग फिर घरके भीतर थे और थोमा उनके संग था . तब द्वार बन्द होते हुए यीशु आया और बीचमें खड़ा होके कहा तुम्हारा कल्याण होय । (२७) तब उस ने थोमासे कहा अपनी उंगली यहां लाके मेरे हाथोंको देख और अपना हाथ लाके मेरे पंजरमें डाल और अबिश्वासी नहीं परन्तु बिश्वासी हो । (२८) थोमाने उसको उत्तर दिया

कि हे मेरे प्रभु और मेरे ईश्वर। (२९) यीशुने उससे कहा हे थोमा तूने मुझे देखा है इसलिये बिश्वास किया है . धन्य वे हैं जो बिन देखे विश्वास करें।

(३०) योशुने अपने शिष्योंके आगे बहुत और आश्चर्य्य कर्म्म भी किये जो इस पुस्तकमें नहीं लिखे हैं। (३१) परन्तु ये लिखे गये हैं इसलिये कि तुम विश्वास करो कि यीशु जो है सो ईश्वरका पुत्र खीष्ट है और कि विश्वास करनेसे तुमको उस के नामसे जीवन होय।

[यीशुका तिबरियाके समुद्रके तीरपर शिष्योंको दर्शन देना और पितरके संग यीशुकी बातचीत।]

२१ इसके पीछे यीशुने फिर अपने तईं तिबरियाके समुद्र के तीरपर शिष्योंको दिखाया और इस रीतिसे दिखाया। (२) शिमोन पितर और थोमा जो दिदुम कहावता है और गालीलके काना नगरका नथनेल और जबदीके दोनों पुत्र और उसके शिष्योंमेंसे दो और जन एक संग थे। (३) शिमोन पितर ने उनसे कहा मैं मछली पकड़नेको जाता हूं . वे उससे बोले हम भी तेरे संग जायेंगे . सो वे निकलके तुरन्त नावपर चढ़े और उस रात कुछ नहीं पकड़ा। (४) जब भोर हुआ तब यीशु तीरपर खड़ा हुआ तौभी शिष्य लोग नहीं जानते थे कि यीशु है। (५) तब यीशुने उनसे कहा हे लड़को क्या तुम्हारे पास कुछ खानेको है . उन्होंने उसको उत्तर दिया कि नहीं . (६) उसने उनसे कहा नावकी दहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे . सो उन्होंने डाला और अब मछलियोंके झुंडके कारण वे उसे खींच न सके। (७) इसलिये वह शिष्य जिसे यीशु प्यार करता था पितरसे बोला यह तो प्रभु है . शिमोन पितरने जब सुना कि प्रभु है तब कमरमें अंगरखा कस लिया क्योंकि वह नंगा था और समुद्रमें कूद पड़ा। (८) परन्तु दूसरे

शिष्य लोग नावपर मछलियोंका जाल घसीटते हुए चले आये क्योंकि वे तीरसे दूर नहीं प्राय दो सौ हाथपर थे। (९) जब वे तीरपर उतरे तब उन्होंने कोयलेकी आग धरी हुई और मछली उसपर रखी हुई और रोटी देखी। (१०) यीशुने उनसे कहा जो मछलियां तुमने अभी पकड़ी हैं उनमेंसे ले आओ। (११) शिमोन पितरने जाके जालको जो एक सौ तिर्पन बड़ी मछलियोंसे भरा था तीरपर खींच लिया और इतनी होनेसे भी जाल नहीं फटा। (१२) यीशुने उनसे कहा कि आओ भोजन करो. परन्तु शिष्योंमेंसे किसीको साहस न हुआ कि उससे पूछे आप कौन हैं क्योंकि वे जानते थे कि प्रभु है। (१३) तब यीशुने आके रोटी लेके उनको दिई और वैसेही मछली भी। (१४) यह अब तीसरी बेर हुआ कि यीशुने मृतकोंमेंसे उठके अपने शिष्योंको दर्शन दिया।

(१५) तब भोजन करनेके पीछे यीशुने शिमोन पितरसे कहा हे यूनसके पुत्र शिमोन क्या तू मुझे इन्होंसे अधिक प्यार करता है. वह उससे बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूं. उसने उससे कहा मेरे मेम्नोंको चरा। (१६) उसने फिर दूसरी बेर उससे कहा हे यूनसके पुत्र शिमोन क्या तू मुझे प्यार करता है. वह उससे बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूं. उसने उससे कहा मेरी भेड़ोंकी रखवाली कर। (१७) उसने तीसरी बेर उससे कहा हे यूनसके पुत्र शिमोन क्या तू मुझे प्यार करता है. पितर उदास हुआ कि यीशुने उससे तीसरी बेर कहा क्या तू मुझे प्यार करता है और उससे बोला हे प्रभु आप सब कुछ जानते हैं आप जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूं. यीशुने उससे कहा मेरी भेड़ोंको चरा। (१८) मैं तुझसे सच सच कहता हूं जब तू जवान था तब अपनी कमर बांधके

जहां चाहता था वहां चलता था परन्तु जब तू बूढा होगा तब अपने हाथ फैलावेगा और दूसरा तेरी कमर बांधके जहां तू न चाहे वहां तुझे ले जायगा। (१९) यह कहनेमें उसने पता दिया कि पितर कैसी मृत्युसे ईश्वरकी महिमा प्रगट करेगा और यह कहके उससे बोला मेरे पीछे हो ले।

(२०) पितरने मुंह फेरके उस शिष्यको जिसे यीशु प्यार करता था और जिसने बियारीमें उसकी छातीपर उठंगके कहा हे प्रभु आपका पकड़वानेहारा कौन है पीछेसे आते देखा। (२१) उसको देखके पितरने यीशुसे कहा हे प्रभु इसका क्या होगा। (२२) यीशुने उससे कहा जो मैं चाहूं कि वह मेरे आनेलों रहे तो तुझे क्या. तू मेरे पीछे हो ले। (२३) इसलिये भाइयोंमें यह बात फैल गई कि वह शिष्य नहीं मरेगा. तौभी यीशुने यह नहीं कहा कि वह नहीं मरेगा परन्तु यह कि जो मैं चाहूं कि वह मेरे आनेलों रहे तो तुझे क्या।

[सुसमाचारकी समाप्ति।]

(२४) यह तो वह शिष्य है जो इन बातोंके विषयमें साक्षी देता है और जिसने यह बातें लिखीं और हम जानते हैं कि उसकी साक्षी सत्य है। (२५) और बहुत और काम भी हैं जो यीशुने किये. जो वे एक एक करके लिखे जाते तो मुझे बूझ पड़ता है कि पुस्तक जो लिखे जाते जगतमें भी न समाते। आमीन॥

प्रेरितोंकी क्रियाओंका बृत्तान्त ।

[यीशुका शिष्योंको आज्ञा देना और स्वर्गमें जाना ।]

मत्ती २८ : १९, २० । मार्क १६ : १५ । लूक २४ : ५१ ।

१ हे थियोफिल वह पहिला बृत्तान्त मैंने सब बातोंके विषयमें रचा जो यीशु उस दिनलों करने और सिखानेका आरंभ किये था . (२) जिस दिन वह पवित्र आत्माके द्वारासे जिन प्रेरितोंको उसने चुना था उन्हें आज्ञा दे करके उठा लिया गया । (३) और उसने उन्हें बहुतेरे अचल प्रमाणोंसे अपने तईं दुःख भोगनेके पीछे जीवता दिखाया कि चालीस दिनलों वे उसे देखा करते थे और वह ईश्वरके राज्यके विषय में उनसे बातें करता था । (४) और जब वह उनके संग एकट्ठा हुआ तब उन्हें आज्ञा दिई कि यिरूशलीमको मत छोड़ जाओ परन्तु पिताकी जो प्रतिज्ञा तुमने मुझसे सुनी है उसकी बाट जोहते रहो । (५) क्योंकि योहनने तो जलसे बपतिसमा दिया परन्तु थोड़े दिनोंके पीछे तुम्हें पवित्र आत्मासे बपतिसमा दिया जायगा । (६) सो उन्होंने एकट्ठे होके उससे पूछा कि हे प्रभु क्या आप इसी समयमें इस्रायेलो लोगोंको राज्य फेर देते हैं । (७) उसने उनसे कहा जिन कालों अथवा समयोंको पिता ने अपनेही बशमें रखा है उन्हें जाननेका अधिकार तुम्हें नहीं है । (८) परन्तु तुमपर पवित्र आत्माके आनेसे तुम सामर्थ्य पाओगे और यिरूशलीममें और सारे यिहूदिया और शोमिरोन देशोंमें और पृथिवीके अन्तलों मेरे साक्षी होओगे । (९) यह कहके वह उनके देखते हुए ऊपर उठाया गया और मेघने उसे उनकी दृष्टिसे छिपा लिया । (१०) ज्योंही वे उसके जाते

हुए स्वर्गकी ओर तकते रहे त्योंही देखो दो पुरुष उजला बस्त्र पहिने हुए उनके निकट खड़े हो गये . (११) और कहा हे गालीली लोगो तुम क्यों स्वर्गकी ओर देखते हुए खड़े हो . यही यीशु जो तुम्हारे पाससे स्वर्गपर उठा लिया गया है जिस रीतिसे तुमने उसे स्वर्गको जाते देखा है उसी रीतिसे आवेगा ।

(१२) तब वे जैतून नाम पर्ब्बतसे जो यिरूशलीमके निकट अर्थात एक बिश्रामवारकी बाट भर दूर है यिरूशलीमको लौटे । (१३) और जब वे पहुंचे तब उपरौठी कोठरीमें गये जहां वे अर्थात पितर औ याकूब औ योहन औ अन्द्रिय और फिलिप औ थोमा और बर्थलमई औ मत्ती और अलफईका पुत्र याकूब औ शिमोन उद्योगी और याकूबका भाई यिहूदा रहते थे । (१४) ये सब एक चित्त होके स्त्रियोंके और यीशु की माता मरियमके संग और उसके भाइयोंके संग प्रार्थना और बिन्तीमें लगे रहते थे ।

[यिहूदाकी सन्ती मत्तथियाइको प्रेरितके कामपर ठहराना ।]

(१५) उन दिनोंमें पितर शिष्योंके बीचमें खड़ा हुआ . एक सौ बीस जनके अटकल एकट्ठे थे . (१६) और कहा हे भाइयो अवश्य था कि धर्म्मपुस्तकका यह बचन पूरा होय जो पवित्र आत्माने दाऊदके मुखसे यिहूदाके विषयमें जो यीशुके पकड़नेहारोंका अगुवा था आगेसे कह दिया । (१७) क्योंकि वह हमारे संग गिना गया था और इस सेवकाईका अधिकार पाया था । (१८) उसने तो अधर्म्मकी मजूरीसे एक खेत मोल लिया और औंधे मुंह गिरके बीचसे फट गया और उसकी सब अन्तड़ियां निकल पड़ीं । (१९) यह बात यिरूशलीमके सब निवासियोंको जान पड़ी इसलिये वह खेत उनकी भाषामें हकलदामा अर्थात लोहूका खेत कहलाया । (२०) गीतोंके पुस्तकमें लिखा है कि उसका घर उजाड़ होय और उसमें कोई न बसे और कि

उसका रखवालोका काम दूसरा लेवे। (२१) इसलिये प्रभु यीशु योहनके बपतिसमाके समयसे लेके उस दिनलों कि वह हमारे पाससे उठा लिया गया जितने दिन हमारे बीचमें आया जाया किया. (२२) जो मनुष्य सब दिन हमारे संग रहे हैं उन्होंमें से उचित है कि एक जन हमारे संग यीशुके जी उठनेका साक्षी होय। (२३) तब उन्होंने दोको अर्थात यूसफको जो बर्शबा कहावता है जिसका उपनाम युस्त था और मत्तथियाहको खड़ा किया. (२४) और प्रार्थना करके कहा हे प्रभु सभोंके अन्तर्यामी इन दोनोंमेंसे एकको जिसे तूने चुना है ठहरा दे. (२५) कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताईका अधिकार पावे जिससे यिहूदा पतित हुआ कि अपने निज स्थानको जाय। (२६) तब उन्होंने चिट्ठियां डालीं और चिट्ठी मत्तथियाहके नामपर निकली और वह एग्यारह प्रेरितोंके संग गिना गया।

[पवित्र आत्माका दिया जाना और शिष्योंका अनेक बोलियां बोलना।]

२ जब पेंतिकोष्ट पर्व्वका दिन आ पहुंचा तब वे सब एक चित्त होकर एकट्ठे हुए थे। (२) और अचांचक प्रबल बयार के चलनेकासा स्वर्गसे एक शब्द हुआ जिससे सारा घर जहां वे बैठे थे भर गया। (३) और आगकीसी जीभें अलग अलग होती हुईं उन्हें दिखाई दिईं और वह हर एक जनपर ठहर गई। (४) तब वे सब पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हुए और जैसे आत्माने उन्हें बुलवाया तैसे आन आन बोलियां बोलने लगे।

(५) यिरूशलीममें कितने भक्त यिहूदी लोग बास करते थे जो स्वर्गके नीचेके हर एक देशसे आये थे। (६) इस शब्दके होनेपर बहुत लोग एकट्ठे हुए और घबरा गये क्योंकि उन्होंने उनको हर एक अपनीही भाषामें बोलते हुए सुना। (७) और वे सब बिस्मित और अचंभित हो आपसमें कहने लगे देखो ये सब जो बोलते हैं क्या गालीली लोग नहीं हैं। (८) फिर

हम लोग क्योंकर हर एक अपने अपने जन्म देशकी भाषामें सुनते हैं। (९) हम जो पर्थी और मादी और एलमी लोग और मिसपतामिया और यिहूदिया औ कपदोकिया और पन्त औ आशिया. (१०) और फ्रूगिया औ पंफुलिया और मिसर औ कुरीनीके आसपासका लूबिया देश इन सब देशोंके निवासी और रोम नगरसे आये हुए लोग क्या यिहूदी क्या यिहूदीय मतावलंबी. (११) क्रीतीय भी औ अरब लोग हैं उन्हें अपनी अपनी बोलियोंमें ईश्वरके महाकार्य्योंकी बात बोलते हुए सुनते हैं। (१२) सो वे सब विस्मित हो दुबधामें पड़े और एक दूसरेसे कहने लगा इसका अर्थ क्या है। (१३) परन्तु और लोग ठट्ठेमें कहने लगे वे नई मदिरासे छकाछक हुए हैं।

[पितरका उपदेश।]

(१४) तब पितरने एग्यारह शिष्योंके संग खड़ा होके ऊंचे शब्दसे उन्हें कहा हे यिहूदियो और यिरूशलीमके सब निवासियो इस बातको बूझ लो और मेरी बातोंपर कान लगाओ। (१५) ये तो मतवाले नहीं हैं जैसा तुम समझते हो क्योंकि पहरही दिन चढ़ा है। (१६) परन्तु यह वह बात है जो योएल भविष्यद्वक्तासे कही गई. (१७) कि ईश्वर कहता है पिछले दिनों में ऐसा होगा कि मैं सब मनुष्योंपर अपना आत्मा उंडेलूंगा और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियां भविष्यद्वाक्य कहेंगे और तुम्हारे जवान लोग दर्शन देखेंगे और तुम्हारे वृद्ध लोग स्वप्न देखेंगे। (१८) और भी मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर उन दिनोंमें अपना आत्मा उंडेलूंगा और वे भविष्यद्वाक्य कहेंगे। (१९) और मैं ऊपर आकाशमें अद्भुत काम और नीचे पृथिवीपर चिन्ह अर्थात लोहू और आग और धूंएकी भाफ दिखाऊंगा। (२०) परमेश्वरके बड़े और प्रसिद्ध दिनके आने के पहिले सूर्य्य अंधियारा और चांद लोहूसा हो जायगा।

(२१) और जो कोई परमेश्वरके नामकी प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा।

(२२) हे इस्रायेली लोगो यह बातें सुनो. यीशु नासरी एक मनुष्य जिसका प्रमाण ईश्वरसे आश्चर्य्य कर्म्मों और अद्भुत कामों और चिन्होंसे तुम्हें दिया गया है जो ईश्वरने तुम्हारे बीचमें जैसा तुम आप भी जानते हो उसके द्वारासे किये. (२३) उसीको जब वह ईश्वरके स्थिर मत और भविष्यत ज्ञानके अनुसार सोंपा गया तुमने लिया और अधर्म्मियोंके हाथोंके द्वारा क्रूशपर ठोंकके मार डाला। (२४) उसीको ईश्वरने मृत्युके बंधन खोलके जिला उठाया क्योंकि अन्होना था कि वह मृत्युके बशमें रहे। (२५) क्योंकि दाऊदने उसके विषयमें कहा मैंने परमेश्वरको सदा अपने साम्हने देखा कि वह मेरी दहिनी ओर है जिस्तें मैं डिग न जाऊं। (२६) इस कारण मेरा मन आनन्दित हुआ और मेरी जीभ हर्षित हुई हां मेरा शरीर भी आशामें बिस्राम करेगा। (२७) क्योंकि तू मेरे प्राणको परलोकमें न छोड़ेगा और न अपने पवित्र जनको सड़ने देगा। (२८) तूने मुझे जीवनका मार्ग बताया है तू मुझे अपने सन्मुख आनन्दसे परिपूर्ण करेगा।

(२९) हे भाइयो उस कुलपति दाऊदके विषयमें मैं तुमसे खोलके कहूं. वह तो मरा और गाड़ा भी गया और उसकी कबर आजलों हमारे बीचमें है। (३०) सो भविष्यद्वक्ता होके और यह जानके कि ईश्वरने मुझसे किरिया खाई है कि मैं शरीरके भावसे ख्रीष्टको तेरे बंशमेंसे उत्पन्न करूंगा कि वह तेरे सिंहासनपर बैठे. (३१) उसने होन्हारको आगेसे देखके ख्रीष्टके जी उठनेके विषयमें कहा कि उसका प्राण परलोकमें नहीं छोड़ा गया और न उसका देह सड़ गया। (३२) इसी यीशुको ईश्वरने जिला उठाया और इस बातके हम सब साक्षी हैं।

(३३) सो ईश्वरके दहिने हाथ ऊंच पद प्राप्त करके और पवित्र आत्माके विषयमें जो कुछ प्रतिज्ञा किया गया सोई पितासे पाके उसने यह जो तुम अब देखते और सुनते हो उंडेल दिया है। (३४) क्योंकि दाऊद स्वर्गपर नहीं चढ़ गया परन्तु उसने कहा कि परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा . (३५) जबलों मैं तेरे शत्रुओंको तेरे चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी दहिनी ओर बैठ। (३६) सो इस्रायेलका सारा घराना निश्चय जाने कि यह यीशु जिसे तुमने क्रूशपर घात किया इसीको ईश्वरने प्रभु और ख्रीष्ट ठहराया है।

[बहुत लोगोंका उस उपदेशको ग्रहण करना और बपतिसमा लेना।]

(३७) तब सुननेहारोंके मन छिद गये और वे पितरसे और दूसरे प्रेरितोंसे बोले हे भाइयो हम क्या करें। (३८) पितरने उनसे कहा पश्चात्ताप करो और हर एक जन यीशु ख्रीष्टके नामसे बपतिसमा लेओ कि तुम्हारा पापमोचन होय और तुम पवित्र आत्मा दान पाओगे। (३९) क्योंकि वह प्रतिज्ञा तुम्होंके लिये और तुम्हारे सन्तानोंके लिये और दूर दूरके सब लोगोंके लिये है जितनोंको परमेश्वर हमारा ईश्वर अपने पास बुलावे। (४०) बहुत और बातोंसे भी उसने साक्षी और उपदेश दिया कि इस समयके टेढ़े लोगोंसे बच जाओ।

(४१) तब जिन्होंने उसका बचन आनन्दसे ग्रहण किया उन्होंने बपतिसमा लिया और उस दिन तीन सहस्र जनके अटकल शिष्योंमें मिल गये। (४२) और वे प्रेरितोंके उपदेशमें और संगतिमें और रोटी तोड़नेमें और प्रार्थनामें लगे रहते थे। (४३) और सब मनुष्योंको भय हुआ और बहुतेरे अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितोंके द्वारा प्रगट होते थे। (४४) और सब विश्वास करनेहारे एकट्ठे थे और उन्होंकी सब सम्पत्ति साझे की थी। (४५) और वे धन सम्पत्तिको बेचके जैसा जिसको

प्रयोजन होता था तैसा सभोंमें बांट लेते थे। (४६) और वे प्रतिदिन मन्दिरमें एक चित्त होके लगे रहते थे और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मनकी सूधाईसे भोजन करते थे. (४७) और ईश्वरकी स्तुति करते थे और सब लोगों का उनपर अनुग्रह था. और प्रभु त्राण पानेहारोंको प्रतिदिन मंडलीमें मिलाता था।

[पितरसे एक लंगड़ेका चंगा होना और मन्दिरमें पितरका उपदेश।]

३ तीसरे पहर प्रार्थनाके समयमें पितर और योहन एक संग मन्दिरको जाते थे। (२) और लोग किसी मनुष्यको जो अपनी माताके गर्भहीसे लंगड़ा था लिये जाते थे जिसको वे प्रतिदिन मन्दिरके उस द्वारपर जो सुन्दर कहावता है रख देते थे कि वह मन्दिरमें जानेहारोंसे भीख मांगे। (३) उसने पितर और योहनको देखके कि मन्दिरमें जानेपर हैं उनसे भीख मांगी। (४) पितरने योहनके संग उसकी ओर दृष्टि कर कहा हमारी ओर देख। (५) सो वह उनसे कुछ पानेकी आशा करते हुए उनकी ओर ताकने लगा। (६) परन्तु पितरने कहा चांदी और सोना मेरे पास नहीं है परन्तु यह जो मेरे पास है मैं तुझे देता हूं यीशु ख्रीष्ट नासरीके नामसे उठ और चल। (७) तब उसने उसका दहिना हाथ पकड़के उसे उठाया और तुरन्त उसके पांवों और घुट्टियोंमें बल हुआ। (८) और वह उछलके खड़ा हुआ और फिरने लगा और फिरता और कूदता और ईश्वरकी स्तुति करता हुआ उनके संग मन्दिर में प्रवेश किया।

(९) सब लोगोंने उसे फिरते और ईश्वरकी स्तुति करते हुए देखा. (१०) और उसको चीन्हा कि वही है जो मन्दिर के सुन्दर फाटकपर भीखके लिये बैठा रहता था और जो उसको हुआ था उससे वे अति अचंभित और बिस्मित हुए।

(११) जिस समय वह लंगड़ा जो चंगा हुआ था पितर और योहनको पकड़े रहा सब लोग बहुत अचंभा करते हुए उस ओसारेमें जो सुलेमानका कहावता है उनके पास दौड़े आये।

(१२) यह देखके पितरने लोगोंसे कहा हे इस्रायेली लोगो तुम इस मनुष्यसे क्यों अचंभा करते हो अथवा हमारी ओर क्यों ऐसा ताकते हो कि जैसा हमने अपनीही शक्ति अथवा भक्तिसे इसको चलनेका सामर्थ्य दिया होता। (१३) इब्राहीम और इसहाक और याकूबके ईश्वरने हमारे पितरोंके ईश्वरने अपने सेवक यीशुकी महिमा प्रगट किई जिसे तुमने पकड़वाया और उसको पिलातके सन्मुख नकारा जब कि उसने उसे छोड़ देनेको ठहराया था। (१४) परन्तु तुमने उस पवित्र और धर्म्मीको नकारा और मांगा कि एक हत्यारा तुम्हें दिया जाय। (१५) और तुमने जीवनके कर्त्ताको घात किया परन्तु ईश्वरने उसे मृतकोंमेंसे उठाया और इस बातके हम साक्षी हैं। (१६) और उसके नामके बिश्वाससे उसके नामहीने इस मनुष्यको जिसे तुम देखते औ जानते हो सामर्थ्य दिया है हां जो विश्वास उसके द्वारासे है उसीसे यह संपूर्ण आरोग्य तुम सभोंके साम्ने इसको मिला है।

(१७) और अब हे भाइयो मैं जानता हूं कि तुम्होंने वह काम अज्ञानतासे किया और वैसे तुम्हारे प्रधानोंने भी किया। (१८) परन्तु ईश्वरने जो बात उसने अपने सब भविष्यद्वक्ताओंके मुखसे आगे बताई थी कि ख्रीष्ट दुःख भोगेगा वह बात इस रीतिसे पूरी किई। (१९) इसलिये पश्चात्ताप करके फिर जाओ कि तुम्हारे पाप मिटाये जायें जिस्तें जीवका ठंढा होनेका समय परमेश्वरकी ओरसे आवे। (२०) और वह यीशु ख्रीष्टको भेजे जिसका समाचार तुम्हें आगेसे कहा गया है। (२१) जिसे अवश्य है कि स्वर्ग सब बातोंके सुधारे जानेके उस समयलों

ग्रहण करे जिसकी कथा ईश्वरने आदिसे अपने पवित्र भविष्य-द्वक्ताओंके मुखसे कही है।

(२२) मूसाने पितरोंसे कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे भाइयोंमेंसे मेरे समान एक भविष्यद्वक्ताको तुम्हारे लिये उठावेगा जो जो बातें वह तुमसे कहे उन सब बातोंमें तुम उसकी सुनो। (२३) परन्तु हर एक मनुष्य जो उस भविष्य-द्वक्ताकी न सुने लोगोंमेंसे नाश किया जायगा। (२४) और सब भविष्यद्वक्ताओंने भी शमुएलसे और उसके पीछेके भविष्यद्वक्ताओं से लेके जितनोंने बातें किईं इन दिनोंका भी आगेसे सन्देश दिया है। (२५) तुम भविष्यद्वक्ताओंके और उस नियमके सन्तान हो जो ईश्वरने हमारे पितरोंके संग बांधा कि उसने इब्राहीमसे कहा पृथिवीके सारे घराने तेरे बंशके द्वारासे आशीस पावेंगे। (२६) तुम्हारे पास ईश्वरने अपने सेवक यीशु को उठाके पहिले भेजा जो तुममेंसे हर एकको तुम्हारे कुकर्म्मों से फिरानेमें तुम्हें आशीस देता था।

[पितर और योहनका महायाजकके आगे उत्तर देना।]

४ जिस समय वे लोगोंसे कह रहे याजक लोग और मन्दिरके पहरुओंका अध्यक्ष और सदूकी लोग उनपर चढ़ आये. (२) कि वे अप्रसन्न होते थे इसलिये कि वे लोगोंको सिखाते थे और मृतकोंमेंसे जी उठनेकी बात यीशुके प्रमाण से प्रचार करते थे। (३) और उन्होंने उन्हें पकड़के बिहानलों बन्दीगृहमें रखा क्योंकि सांझ हुई थी। (४) परन्तु बचनके सुननेहारोंमेंसे बहुतोंने बिश्वास किया और उन मनुष्योंकी गिन्ती पांच सहस्रके अटकल हुई।

(५) बिहान हुए लोगोंके प्रधान और प्राचीन और अध्या-पक लोग. (६) और हन्नस महायाजक और कियाफा और योहन और सिकन्दर और महायाजकके घरानेके जितने लोग

थे ये सब यिरूशलीममें एकट्ठे हुए । (७) और उन्होंने पितर और योहनको बीचमें खड़ा करके पूछा तुमने यह काम किस सामर्थ्यसे अथवा किस नामसे किया । (८) तब पितरने पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हो उनसे कहा हे लोगोंके प्रधानो और इस्रायेलके प्राचीनो . (९) इस दुर्ब्बल मनुष्यपर जो भलाई किई गई है यदि उसके विषयमें आज हमसे पूछा जाता है कि वह किस नामसे चंगा किया गया है . (१०) तो आप लोग सब जानिये और समस्त इस्रायेली लोग जानें कि यीशु ख्रीष्ट नासरीके नामसे जिसे आप लोगोंने क्रूशपर घात किया जिसे ईश्वरने मृतकोंमेंसे उठाया उसीसे यह मनुष्य आप लोगों के आगे चंगा खड़ा है । (११) यही वह पत्थर है जिसे आप थवइयोंने तुच्छ जाना जो कोनेका सिरा हुआ है । (१२) और किसी दूसरेसे त्राण नहीं है क्योंकि स्वर्गके नीचे दूसरा नाम नहीं है जो मनुष्योंके बीचमें दिया गया है जिससे हमें त्राण पाना होगा ।

(१३) तब उन्होंने पितर और योहनका साहस देखके और यह जानके कि वे विद्याहीन और अज्ञान मनुष्य हैं अचंभा किया और उनको चीन्हा कि वे यीशुके संग थे । (१४) और उस चंगा किये हुए मनुष्यको उनके संग खड़े देखके वे कोई बात विरोधमें न कह सके । (१५) परन्तु उनको सभाके बाहर जानेकी आज्ञा देके उन्होंने आपसमें बिचार किया . (१६) कि हम इन मनुष्योंसे क्या करें क्योंकि एक प्रसिद्ध आश्चर्य्य कर्म्म उन्होंसे हुआ है यह बात यिरूशलीमके सब निवासियोंपर प्रगट है और हम नहीं मुकर सकते हैं । (१७) परन्तु जिस्तें लोगोंमें अधिक फैल न जावे आओ हम उन्हें बहुत धमकावें कि वे इस नामसे फिर किसी मनुष्यसे बात न करें । (१८) और उन्होंने उन्हें बुलाके आज्ञा दिई कि यीशुके नामसे कुछ भी

मत बोलो और मत सिखाओ। (१९) परन्तु पितर और योहन ने उनको उत्तर दिया कि ईश्वरसे अधिक आप लोगोंको मानना क्या ईश्वरके आगे उचित है सो आप लोग बिचार कीजिये। (२०) क्योंकि जो हमने देखा और सुना है उसको न कहना हमसे नहीं हो सकता है। (२१) तब उन्होंने और धमकी देके उन्हें छोड़ दिया कि उन्हें दंड देनेका लोगोंके कारण कोई उपाय नहीं मिलता था क्योंकि जो हुआ था उसके लिये सब लोग ईश्वरका गुणानुबाद करते थे। (२२) क्योंकि वह मनुष्य जिसपर यह चंगा करनेका आश्चर्य्य कर्म्म किया गया था चालीस बरसके ऊपरका था।

(२३) वे छूटके अपने संगियोंके पास आये और जो कुछ प्रधान याजकों औ प्राचीनोंने उनसे कहा था सो सुना दिया। (२४) वे सुनके एक चित्त होकर ऊंचा शब्द करके ईश्वरसे बोले हे प्रभु तू ईश्वर है जिसने स्वर्ग औ पृथिवी औ समुद्र और सब कुछ जो उनमें है बनाया. (२५) जिसने अपने सेवक दाऊदके मुखसे कहा अन्यदेशियोंने क्यों कोप किया और लोगोंने क्यों व्यर्थ चिन्ता किई। (२६) परमेश्वरके और उसके अभिषिक्त जनके बिरुद्ध पृथिवीके राजा लोग खड़े हुए और अध्यक्ष लोग एक संग एकट्ठे हुए। (२७) क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक यीशुके बिरुद्ध जिसे तूने अभिषेक किया हेरोद और पन्तिय पिलात भी अन्यदेशियों और इस्रायेली लोगोंके सँग एकट्ठे हुए. (२८) कि जो कुछ तेरे हाथ और तेरे मतने आगेसे ठहराया था कि हो जाय सोई करें। (२९) और अब हे प्रभु उनकी धमकियों को देख. (३०) और चंगा करनेके लिये और चिन्हों और अद्भुत कामोंके तेरे पवित्र सेवक यीशुके नामसे किये जानेके लिये अपना हाथ बढ़ानेसे अपने दासोंको यह दीजिये कि तेरा वचन बड़े साहससे बोलें। (३१) जब उन्होंने प्रार्थना

किई थी तब वह स्थान जिसमें वे एकट्ठे हुए थे हिल गया और वे सब पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हुए और ईश्वरका बचन साहससे बोलने लगे ।

[शिष्योंका अपने धनको आपसमें बांट लेना ।]

(३२) बिश्वासियोंकी मंडलीका एक मन और एक जीव था और न कोई अपनी सम्पत्तिमेंसे कोई बस्तु अपनी कहता था परन्तु उन्होंकी सब सम्पत्ति साझेकी थी । (३३) और प्रेरित लोग बड़े सामर्थ्यसे प्रभु यीशुके जी उठनेकी साक्षी देते थे और उन सभोंपर बड़ा अनुग्रह था । (३४) और न उनमेंसे कोई दरिद्र था क्योंकि जो जो लोग भूमि अथवा घरोंके अधिकारी थे सो उन्हें बेचते थे . (३५) और बेची हुई बस्तुओं का दाम लाके प्रेरितोंके पांवोंपर रखते थे और जैसा जिसको प्रयोजन होता था तैसा हर एकको बांटा जाता था । (३६) और योशी नाम कुप्रस टापूका एक लेवीय जिसे प्रेरितोंने बर्णबा अर्थात शांतिका पुत्र कहा उसकी कुछ भूमि थी । (३७) सो वह उसे बेचके रुपैयोंको लाया और प्रेरितोंके पांवोंपर रखा ।

[अननियाह और सफीराका कपट करना और मर जाना ।]

५ परन्तु अननियाह नाम एक मनुष्यने अपनी स्त्री सफीरा के संगमें कुछ भूमि बेची . (२) और दाममेंसे कुछ रख छोड़ा जो उसकी स्त्री भी जानती थी और कुछ लाके प्रेरितोंके पांवोंपर रखा । (३) परन्तु पितरने कहा हे अननियाह शैतान ने क्यों तेरे मनमें यह मत दिया है कि तू पवित्र आत्मासे झूठ बोले और भूमिके दाममेंसे कुछ रख छोड़े । (४) जबलों वह रही क्या तेरी न रही और जब बिक गई क्या तेरे बश में न थी . यह क्या है कि तूने यह बात अपने मनमें रखी है . तू मनुष्योंसे नहीं परन्तु ईश्वरसे झूठ बोला है । (५) अन- नियाह यह बातें सुनतेही गिर पड़ा औ प्राण छोड़ दिया

और इन बातोंके सब सुननेहारोंको बड़ा भय हुआ। (६) और जवानोंने उठके उसे लपेटा और बाहर ले जाके गाड़ा। (७) पहर एकके पीछे उसकी स्त्री यह जो हुआ था न जानके भीतर आई। (८) इसपर पितरने उससे कहा मुझसे कह दे क्या तुमने वह भूमि इतनेहीमें बेची. वह बोली हां इतने में। (९) तब पितरने उससे कहा यह क्या है कि तुम दोनों ने परमेश्वरके आत्माकी परीक्षा करनेको एक संग युक्ति बांधी है. देख तेरे स्वामीके गाड़नेहारोंके पांव द्वारपर हैं और वे तुझे बाहर ले जायेंगे। (१०) तब वह तुरन्त उसके पांवोंके पास गिर पड़ी औ प्राण छोड़ दिया और जवानोंने भीतर आके उसे मरी हुई पाया और बाहर ले जाके उसके स्वामी के पास गाड़ा। (११) और सारी मंडलीको और इन बातोंके सब सुननेहारोंको बड़ा भय हुआ।

(१२) प्रेरितोंके हाथोंसे बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीचमें किये जाते थे और वे सब एक चित्त होके सुलेमानके ओसारेमें थे। (१३) औरोंमेंसे किसीको उनके संग मिलनेका साहस नहीं था परन्तु लोग उनकी बड़ाई करते थे। (१४) और और भी बहुत लोग पुरुष और स्त्रियां भी बिश्वास करके प्रभुसे मिल जाते थे। (१५) इससे लोग रोगियों को बाहर सड़कोंमें लाके खाटों और खटोलोंपर रखते थे कि जब पितर आवे तब उसकी परछाईं भी उनमेंसे किसीपर पड़े। (१६) आसपासके नगरोंके लोग भी रोगियोंको और अशुद्ध भूतोंसे सताये हुए लोगोंको लिये हुए यिरूशलीममें एकट्ठे होते थे और वे सब चंगे किये जाते थे।

[प्रेरितोंका बन्दीगृहमें रखा जाना और स्वर्गदूतका उन्हें छुड़ाना।]

(१७) तब महायाजक उठा और उसके सब संगी जो सदूकियोंका पंथ है और डाहसे भर गये. (१८) और प्रेरितोंको

पकड़के उन्हें सामान्य बन्दीगृहमें रखा। (१९) परन्तु परमेश्वर के एक दूतने रातको बन्दीगृहके द्वार खोलके उन्हें बाहर लाके कहा . (२०) जाओ और मन्दिरमें खड़े होके इस जीवनकी सारी बातें लोगोंसे कहो। (२१) यह सुनके उन्होंने भोरको मन्दिरमें प्रवेश किया और उपदेश करने लगे . तब महायाजक और उसके संगी लोग आये और न्याइयोंकी सभाको और इस्रायेलके सन्तानोंके सारे प्राचीनोंको एकट्ठे बुलाया और प्यादोंको बन्दीगृहमें भेजा कि उन्हें लावें। (२२) प्यादोंने जब पहुंचे तब उन्हें बन्दीगृहमें न पाया परन्तु लौटके सन्देश दिया . (२३) कि हमने बन्दीगृहको बड़ी दृढ़तासे बन्द किये हुए और पहरुओंको बाहर द्वारोंके साम्ने खड़े हुए पाया परन्तु जब खोला तब भीतर किसीको न पाया। (२४) जब महायाजक और मन्दिरके पहरुओंके अध्यक्ष और प्रधान याजकोंने यह बातें सुनीं तब वे उन्होंके विषयमें दुबधामें पड़े कि यह क्या हुआ चाहता है। (२५) तब किसीने आके उन्हें सन्देश दिया कि देखिये वे मनुष्य जिनको आप लोगोंने बन्दीगृहमें रखा मन्दिरमें खड़े हुए लोगोंको उपदेश देते हैं। (२६) तब पहरुओंका अध्यक्ष प्यादोंके संग जाके उन्हें ले आया परन्तु बरियाईसे नहीं क्योंकि वे लोगोंसे डरते थे ऐसा न हो कि पत्थरवाह किये जायें।

[पितरका महायाजकको उत्तर देना गमलियेलका परमार्थ।]

(२७) उन्होंने उन्हें लाके न्याइयोंकी सभामें खड़ा किया और महायाजकने उनसे पूछा . (२८) क्या हमने तुम्हें दृढ़ आज्ञा न दिई कि इस नामसे उपदेश मत करो . तौभी देखो तुमने यिरूशलीमको अपने उपदेशसे भर दिया है और इस मनुष्यका लोहू हमोंपर लाने चाहते हो। (२९) तब पितरने और प्रेरितोंने उत्तर दिया कि मनुष्योंकी आज्ञासे अधिक ईश्वरकी आज्ञाको मानना उचित है। (३०) हमारे पितरोंके ईश्वरने यीशुको

जिसे आप लोगोंने काठपर लटकाके घात किया जिला उठाया। (३१) उसको ईश्वरने कर्त्ता औ त्राताका ऊंच पद अपने दहिने हाथ दिया है कि वह इस्रायेली लोगोंसे पश्चात्ताप करवाके उन्हें पापमोचन देवे। (३२) और इन बातोंमें हम उसके साक्षी हैं और पवित्र आत्मा भी जिसे ईश्वरने अपने आज्ञाकारियोंको दिया है साक्षी है।

(३३) यह सुननेसे उनको तीरसा लग गया और वे उन्हें मार डालनेका विचार करने लगे। (३४) परन्तु न्याइयोंकी सभामें गमलियेल नाम एक फरीशी जो व्यवस्थापक और सब लोगोंमें मर्य्यादिक था खड़ा हुआ और प्रेरितोंको थोड़ी वेर बाहर करनेकी आज्ञा किई. (३५) और उनसे कहा हे इस्रायेली मनुष्यो अपने विषयमें सचेत रहो कि तुम इन मनुष्योंसे क्या किया चाहते हो। (३६) क्योंकि इन दिनोंके आगे थूदा यह कहता हुआ उठा कि मैं भी कोई हूं और लोग गिन्तीमें चार सौके अटकल उसके साथ लग गये परन्तु वह मारा गया और जितने लोग उसको मानते थे सब तितर बितर हुए और बिला गये। (३७) उसके पीछे नाम लिखानेके दिनोंमें यिहूदा गालीली उठा और बहुत लोगोंको अपने पीछे बहका लिया. वह भी नष्ट हुआ और जितने लोग उसको मानते थे सब तितर बितर हुए। (३८) और अब मैं तुम्होंसे कहता हूं इन मनुष्योंसे हाथ उठाओ और उन्हें जाने दो क्योंकि यह बिचार अथवा यह काम यदि मनुष्योंकी ओरसे होय तो लोप हो जायगा। (३९) परन्तु यदि ईश्वरसे है तो तुम उसे लोप नहीं कर सकते हो. ऐसा न हो कि तुम ईश्वरसे भी लड़नेहारे ठहरो।

(४०) तब उन्होंने उसकी मान लिई और प्रेरितोंको बुलाके उन्हें कोड़े मारके आज्ञा दिई कि यीशुके नामसे बात मत करो. तब उन्हें छोड़ दिया। (४१) सो वे इस बातसे कि हम

उसके नामके लिये निन्दित होनेके योग्य गिने गये आनन्द करते हुए न्याइयोंकी सभाके साम्हनेसे चले गये . (४२) और प्रतिदिन मन्दिरमें और घर घर उपदेश करने और यीशु ख्रीष्टका सुसमाचार सुनानेसे नहीं थंभे ।

[कंगालोंकी सेवाके लिये सात सेवकोंका ठहराया जाना ।]

६ उन दिनोंमें जब शिष्य बहुत होने लगे तब यूनानीय भाषा बोलनेहारे इब्रियोंपर कुड़कुड़ाने लगे कि प्रतिदिन की सेवकाईमें हमारी बिधवाओंकी सुध नहीं लिई जाती। (२) तब बारह प्रेरितोंने शिष्योंकी मंडलीको अपने पास बुलाके कहा यह अच्छा नहीं लगता है कि हम लोग ईश्वरका बचन छोड़के खिलाने पिलानेकी सेवकाईमें रहें। (३) इसलिये हे भाइयो अपनेमेंसे सात सुख्यात मनुष्योंको जो पवित्र आत्मा से और बुद्धिसे परिपूर्ण हों चुन लो कि हम उनको इस काम पर नियुक्त करें। (४) परन्तु हम तो प्रार्थनामें और बचनकी सेवकाईमें लगे रहेंगे। (५) यह बात सारी मंडलीको अच्छी लगी और उन्होंने स्तिफान एक मनुष्यको जो बिश्वाससे और पवित्र आत्मासे परिपूर्ण था और फिलिप औ प्रखर औ निकानर औ तीमोन औ पर्मिना और अन्तैखिया नगरके यिहूदीय मताव-लंबी निकोलावको चुन लिया . (६) और उन्हें प्रेरितोंके आगे खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके उनपर हाथ रखे। (७) और ईश्वरका बचन फैलता गया और यिरूशलीममें शिष्य लोग गिन्तीमें बहुत बढ़ते गये और बहुतेरे याजक लोग बिश्वासके अधीन हुए।

[स्तिफानका वर्णन जो प्रभुके नामके कारण पत्थरसे मारा गया ।]

(८) स्तिफान बिश्वास और सामर्थ्यसे पूर्ण होके बड़े बड़े अद्भुत और आश्चर्य्य कर्म्म लोगोंके बीचमें करता था। (९) तब उस सभामेंसे जो लिबर्त्तिनियोंकी कहावती है और कुरीनीय

औ सिकन्दरीय लोगोंमेंसे और किलिकिया औ आशिया देशोंके लोगोंमेंसे कितने उठके स्तिफानसे बिवाद करने लगे. (१०) परन्तु उस ज्ञानका और उस आत्माका जिन करके वह बात करता था साम्हना नहीं कर सकते थे।

(११) तब उन्होंने लोगोंको उभाड़ा जो बोले हमने उसको मूसाके और ईश्वरके बिरोधमें निन्दाकी बातें बोलते सुना है। (१२) और लोगों औ प्राचीनों औ अध्यापकोंको उसकाके वे चढ़ आये और उसे पकड़के न्याइयोंकी सभामें लाये. (१३) और झूठे साक्षियोंको खड़ा किया जो बोले यह मनुष्य इस पवित्र स्थानके और व्यवस्थाके बिरोधमें निन्दाकी बातें बोलनेसे नहीं थंभता है। (१४) क्योंकि हमने उसे कहते सुना है कि यह यीशु नासरी इस स्थानको ढायगा और जो व्यवहार मूसाने हमें सौंप दिये उन्हें बदल डालेगा। (१५) तब सब लोगोंने जो सभामें बैठे थे उसकी ओर ताकके उसका मुंह स्वर्गदूत के मुंहके ऐसा देखा।

७ तब महायाजकने कहा क्या यह बातें यूंहीं है। (२) स्तिफानने कहा हे भाइयो और पितरो सुनो. हमारा पिता इब्राहीम हारान नगरमें बसनेके पहिले जब मिसपतामिया देशमें था तब तेजोमय ईश्वरने उसको दर्शन दिया. (३) और उससे कहा तू अपने देश और अपने कुटुंबोंमेंसे निकलके जो देश मैं तुझे दिखाऊं उसीमें आ। (४) तब उसने कलदियोंके देशसे निकलके हारानमें बास किया और वहांसे उसके पिताके मरनेके पीछे ईश्वरने उसको इस देशमें लाके बसाया जिसमें आप लोग अब बसते हैं। (५) और उसने इस देशमें उसको कुछ अधिकार न दिया पैर रखने भर भूमि भी नहीं परन्तु उसको पुत्र न रहतेहीं उसको प्रतिज्ञा दिई कि मै यह देश तुझको और तेरे पीछे तेरे बंशको अधिकारके लिये देऊंगा। (६) और

ईश्वरने यूं कहा कि तेरे सन्तान पराये देशमें बिदेशी होंगे और वे लोग उन्हें दास बनावेंगे और चार सौ बरस उन्हें दुःख देंगे । (७) और जिन लोगोंके वे दास होंगे उन लोगोंका (ईश्वरने कहा) मैं बिचार करूंगा और इसके पीछे वे निकल आवेंगे और इसी स्थानमें मेरी सेवा करेंगे । (८) और उसने उसको खतनेका नियम दिया और इस रीतिसे इसहाक उससे उत्पन्न हुआ और उसने आठवें दिन उसका खतना किया और इसहाकने याकूबका और याकूबने बारह कुलपतियोंका । (९) और कुलपतियोंने यूसफसे डाह करके उसे मिसर देश जानेहारोंके हाथ बेचा परन्तु ईश्वर उसके संग था . (१०) और उसे उसके सब क्लेशोंसे छुड़ाके मिसरके राजा फिरऊनके आगे अनुग्रहके योग्य और बुद्धिमान किया और उसने उसे मिसर देशपर और अपने सारे घरपर प्रधान ठहराया । (११) तब मिसर और कनानके सारे देशमें अकाल और बड़ा क्लेश पड़ा और हमारे पितरोंको अन्न नहीं मिलता था । (१२) परन्तु याकूबने यह सुनके कि मिसरमें अनाज है हमारे पितरोंको पहिली बेर भेजा । (१३) और दूसरी बेरमें यूसफ अपने भाइयोंसे पहचाना गया और यूसफका घराना फिरऊनपर प्रगट हुआ । (१४) तब यूसफने अपने पिता याकूबको और अपने सब कुटुंबोंको जो पचहत्तर जन थे बुलवा भेजा । (१५) सो याकूब मिसरको गया और वह आप मरा और हमारे पितर लोग . (१६) और वे शिखिम नगरमें पहुंचाये गये और उस कबरमें रखे गये जिसे इब्राहीमने चांदी देके शिखिमके पिता हमोरके सन्तानोंसे मोल लिया ।

(१७) परन्तु जो प्रतिज्ञा ईश्वरने किरिया खाके इब्राहीमसे किई थी उसका समय ज्योंही निकट आया त्योंही वे लोग मिसरमें बढ़े और बहुत हो गये । (१८) इतनेमें दूसरा राजा उठा जो यूसफको नहीं जानता था । (१९) उसने हमारे लोगोंसे चतुराई करके हमारे

पितरोंके साथ ऐसी बुराई किई कि उनके बालकोंको बाहर फिंकवाया कि वे जीते न रहें। (२०) उस समयमें मूसा उत्पन्न हुआ जो परमसुन्दर था और वह अपने पिताके घरमें तीन मास पाला गया। (२१) जब वह बाहर फेंका गया तब फिरऊनकी बेटीने उसे उठा लिया और अपना पुत्र करके उसे पाला। (२२) और मूसाको मिसरियोंकी सारी बिद्या सिखाई गई और वह बातों और कामोंमें सामर्थी था। (२३) जब वह चालीस बरसका हुआ तब उसके मनमें आया कि अपने भाइयोंको अर्थात इस्राये़लके सन्तानोंको देख लेवे। (२४) और उसने एकपर अन्याय होते देखके रक्षा किई और मिसरीको मारके सताये हुएका पलटा लिया। (२५) वह बिचार करता था कि मेरे भाई समझेंगे कि ईश्वर मेरे हाथसे उन्होंका निस्तार करता है परन्तु उन्होंने नहीं समझा। (२६) अगले दिन वह उन्हें जब वे आपसमें लड़ते थे दिखाई दिया और यह कहके उन्हें मिलाप करनेको मनाया कि हे मनुष्यो तुम तो भाई हो एक दूसरेसे क्यों अन्याय करते हो। (२७) परन्तु जो अपने पड़ोसोसे अन्याय करता था उसने उसको हटाके कहा किसने तुझे हमोंपर अध्यक्ष और न्यायी ठहराया। (२८) क्या जिस रीतिसे तूने कल मिसरीको मार डाला तू मुझे मार डालने चाहता है। (२९) इस बातपर मूसा भागा और मिदियान देशमें परदेशी हुआ और वहां दो पुत्र उसको उत्पन्न हुए। (३०) जब चालीस बरस बीत गये तब परमेश्वरके दूतने सीनई पर्ब्बतके जंगलमें उसको एक झाड़ीकी आगको ज्वालामें दर्शन दिया। (३१) मूसाने देखके उस दर्शनसे अचंभा किया और जब वह दृष्टि करनेको निकट आता था तब परमेश्वरका शब्द उस पास पहुंचा। (३२) कि मैं तेरे पितरोंका ईश्वर अर्थात इब्राहीमका ईश्वर और इसहाकका ईश्वर और याकूबका ईश्वर हूं। तब मूसा

कांपने लगा और दृष्टि करनेका उसे साहस न रहा। (३३) तब परमेश्वरने उससे कहा अपने पांवोंकी जूतियां खोल क्योंकि वह स्थान जिसपर तू खड़ा है पवित्र भूमि है। (३४) मैंने दृष्टि करके अपने लोगोंकी जो मिसरमें हैं दुर्दशा देखी है और उनका कहरना सुना है और उन्हें छुड़ानेको उतर आया हूं और अब आ मैं तुझे मिसरको भेजूंगा। (३५) यही मूसा जिसे उन्होंने नकारके कहा किसने तुझे अध्यक्ष और न्यायी ठहराया उसीको ईश्वरने उस दूतके हाथसे जिसने उसको झाड़ीमें दर्शन दिया अध्यक्ष और निस्तारक करके भेजा। (३६) यही मिसर देशमें और लाल समुद्रमें और जंगलमें चालीस बरस अद्भुत काम और चिन्ह दिखाके उन्हें निकाल लाया। (३७) यही वह मूसा है जिसने इस्रायेलके सन्तानोंसे कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे भाइयोंमेंसे मेरे समान एक भविष्यद्वक्ताको तुम्हारे लिये उठावेगा तुम उसकी सुनो। (३८) यही है जो जंगलमें मंडलीके बीचमें उस दूतके संग जो सीनई पर्व्वत पर उससे बोला और हमारे पितरोंके संग था और उसने हमें देनेके लिये जीवती बाणियां पाईं। (३९) पर हमारे पितरोंने उसके आज्ञाकारी होनेकी इच्छा न किई परन्तु उसे हटाके अपने मनमें मिसरकी ओर फिरे. (४०) और हारोनसे बोले हमारे लिये देवोंको बनाइये जो हमारे आगे जायें क्योंकि यह मूसा जो हमें मिसर देशमेंसे निकाल लाया उसे हम नहीं जानते क्या हुआ है।

(४१) उन दिनोंमें उन्होंने बछड़ू बनाके उस मूर्त्तिके आगे बलि चढ़ाया और अपने हाथोंके कामोंसे मगन होते थे। (४२) तब ईश्वरने मुंह फेरके उन्हें आकाशकी सेना पूजनेको त्याग दिया जैसा भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकमें लिखा है कि हे इस्रायेलके घराने क्या तुमने चालीस बरस जंगलमें मेरे आगे

पशुमेध और बलि चढ़ाये। (४३) तौभी तुमने मोलकका तंबू और अपनी देवता रिंफनका तारा उठा लिया अर्थात उन आकारोंको जो तुमने पूजनेको बनाये. और मैं तुम्हें बाबुल से और उधर ले जाके बसाऊंगा।

(४४) साक्षीका तंबू जंगलमें हमारे पितरोंके बीचमें था जैसा उसीने ठहराया जिसने मूसासे कहा कि जो आकार तूने देखा है उसके अनुसार उसको बना। (४५) और उसको हमारे पितर लोग यिहोशुआके संग अगलोंसे पाके तब यहां लाये जब उन्होंने उन अन्यदेशियोंका अधिकार पाया जिन्हें ईश्वर ने हमारे पितरोंके साम्नेसे निकाल दिया. (४६) सोई दाऊद के दिनोंतक हुआ जिसपर ईश्वरका अनुग्रह था और जिस ने मांगा कि मैं याकूबके ईश्वरके लिये डेरा ठहराऊं। (४७) पर सुलेमानने उसके लिये घर बनाया। (४८) परन्तु सर्ब्बप्रधान जो है सो हाथके बनाये हुए मन्दिरोंमें बास नहीं करता है जैसा भविष्यद्वक्ताने कहा है. (४९) कि परमेश्वर कहता है स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथिवी मेरे चरणोंकी पीढ़ी है तुम मेरे लिये कैसा घर बनाओगे अथवा मेरे बिस्रामका कौनसा स्थान है। (५०) क्या मेरे हाथने यह सब बस्तु नहीं बनाईं।

(५१) हे हठीले और मन और कानोंके खतनाहीन लोगो तुम सदा पवित्र आत्माका साम्हना करते हो. जैसा तुम्हारे पितरोंने तैसा तुम भी। (५२) भविष्यद्वक्ताओंमेंसे तुम्हारे पितरों ने किसको नहीं सताया. और उन्होंने उन्हें मार डाला जिन्हों ने इस धर्म्मी जनके आनेका आगेसे सन्देश दिया जिसके तुम अब पकड़वानेहारे और हत्यारे हुए हो. (५३) जिन्होंने स्वर्ग दूतोंके द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था पाई है तौभी पालन न किई।

(५४) यह बातें सुननेसे उनके मनको तीरसा लग गया और वे स्तिफानपर दांत पीसने लगे। (५५) परन्तु उसने पवित्र

आत्मासे परिपूर्ण हो स्वर्गकी ओर ताकके ईश्वरकी महिमाको और यीशुको ईश्वरकी दहिनी ओर खड़े देखा . (५६) और कहा देखो मैं स्वर्गको खुले और मनुष्यके पुत्रको ईश्वरकी दहिनी ओर खड़े देखता हूं । (५७) तब उन्होंने बड़े शब्दसे चिल्लाके अपने कान बन्द किये और एक चित्त होके उसपर लपके . (५८) और उसे नगरके बाहर निकालके पत्थरवाह करने लगे और साक्षियोंने अपने कपड़े शावल नाम एक जवानके पांवों पास उतार रखे । (५९) और उन्होंने स्तिफान को पत्थरवाह किया जो यह कहके प्रार्थना करता था कि हे प्रभु यीशु मेरे आत्माको ग्रहण कर । (६०) और घुटने टेकके उसने बड़े शब्दसे पुकारा हे प्रभु यह पाप उनपर मत लगा और यह कहके सो गया ।

[उपद्रवके कारण मंडलीके लोगोंका तितर बितर होना और फिलिपका शोमिरोनियोंको सुसमाचार सुनाना । शिमोन टोन्हाका वृत्तान्त ।]

८ शावल स्तिफानके मारे जानेमें सम्मति देता था . उस समय यिरूशलीममेंकी मंडलीपर बड़ा उपद्रव हुआ और प्रेरितोंको छोड़ वे सब यिहूदिया और शोमिरोन देशोंमें तितर बितर हुए । (२) भक्त लोगोंने स्तिफानको कबरमें रखा और उसके लिये बड़ा बिलाप किया । (३) शावल मंडलीको नाश करता रहा कि घर घर घुसके पुरुषों और स्त्रियोंको पकड़के बन्दीगृहमें डालता था ।

(४) जो तितर बितर हुए सो सुसमाचार प्रचार करते हुए फिरा किये । (५) और फिलिपने शोमिरोनके एक नगरमें जाके ख्रीष्टकी कथा लोगोंको सुनाई । (६) और जो बातें फिलिपने कहीं उन्होंपर लोगोंने उन आश्चर्य्य कर्म्मोंको जो वह करता था सुनने और देखनेसे एक चित्त होके मन लगाया । (७) क्योंकि बहुतोंमेंसे जिन्हें अशुद्ध भूत लगे थे वे भूत बड़े

शब्दसे पुकारते हुए निकले और बहुत अर्द्धांगी और लंगड़े लोग चंगे किये गये। (८) और उस नगरमें बड़ा आनन्द हुआ।

(९) परन्तु उस नगरमें आगेसे शिमोन नाम एक मनुष्य था जो टोना करके शोमिरोनके लोगोंको बिस्मित करता था और अपनेको कोई बड़ा पुरुष कहता था। (१०) और छोटे से बड़ेतक सब उसको मानके कहते थे कि यह मनुष्य ईश्वर की महा शक्ति ही है। (११) उसने बहुत दिनोंसे उन्हें टोनोंसे बिस्मित किया था इसलिये वे उसको मानते थे। (१२) परन्तु जब उन्होंने फिलिपका जो ईश्वरके राज्यके और यीशु ख्रीष्ट के नामके विषयमेंका सुसमाचार सुनाता था बिश्वास किया तब पुरुष और स्त्रियां भी बपतिसमा लेने लगे। (१३) तब शिमोनने आप भी बिश्वास किया और बपतिसमा लेके फिलिप के संग लगा रहा और आश्चर्य्य कर्म्म और बड़े चिन्ह जो होते थे देखके बिस्मित होता था।

(१४) जो प्रेरित यिरूशलीममें थे उन्होंने जब सुना कि शोमिरोनियोंने ईश्वरका बचन ग्रहण किया है तब पितर और योहनको उनके पास भेजा। (१५) और उन्होंने जाके उनके लिये प्रार्थना किई कि वे पवित्र आत्मा पावें। (१६) क्योंकि वह अब लों उनमेंसे किसीपर नहीं पड़ा था केवल उन्हों ने प्रभु यीशुके नामसे बपतिसमा लिया था। (१७) तब उन्हों ने उनपर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।

(१८) शिमोन यह देखके कि प्रेरितोंके हाथोंके रखनेसे पवित्र आत्मा दिया जाता है उनके पास रुपैये लाया। (१९) और कहा मुझको भी यह अधिकार दीजिये कि जिस किसीपर मैं हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पावे। (२०) परन्तु पितरने उससे कहा तेरे रुपैये तेरे संग नष्ट होवें क्योंकि तूने ईश्वरका दान रुपैयोंसे मोल लेनेका बिचार किया है।

(२१) तुझे इस बातमें न भाग न अधिकार है क्योंकि तेरा मन ईश्वरके आगे सीधा नहीं है। (२२) इसलिये अपनी इस बुराईसे पश्चात्ताप करके ईश्वरसे प्रार्थना कर क्या जाने तेरे मनका बिचार क्षमा किया जाय। (२३) क्योंकि मैं देखता हूं कि तू अति कड़वे पित्तमें और अधर्म्मके बंधनमें पड़ा है। (२४) शिमोनने उत्तर दिया कि आप लोग मेरे लिये प्रभुसे प्रार्थना कीजिये कि जो बातें आप लोगोंने कही हैं उनमेंसे कोई बात मुझपर न पड़े।

(२५) सो वे साक्षी देके और प्रभुका बचन सुनाके यिरूशलीमको लौटे और उन्होंने शोमिरोनियोंके बहुत गांवोंमें सुसमाचार प्रचार किया।

[फिलिप और नपुंसकका बर्णन।]

(२६) परन्तु परमेश्वरके एक दूतने फिलिपसे कहा उठके दक्षिणको उस मार्गपर जा जो यिरूशलीमसे अज्जा नगरको जाता है वह जंगल है। (२७) वह उठके गया और देखो कूश देशका एक मनुष्य था जो नपुंसक और कूशियोंकी राणी कन्दाकीका एक प्रधान और उसके सारे धनपर अध्यक्ष था और यिरूशलीमको भजन करनेको आया था। (२८) और वह लौटता था और अपने रथपर बैठा हुआ यिशैयाह भविष्यद्वक्ताका पुस्तक पढ़ता था। (२९) तब आत्माने फिलिपसे कहा निकट जाके इस रथसे मिल जा। (३०) फिलिपने उस और दौड़के उस मनुष्यको यिशैयाह भविष्यद्वक्ताका पुस्तक पढ़ते हुए सुना और कहा क्या आप जो पढ़ते हैं उसे बूझते हैं। (३१) उसने कहा यदि कोई मुझे न बतावे तो मैं क्योंकर बूझ सकूं. और उसने फिलिपसे बिन्ती किई कि चढ़के मेरे संग बैठिये। (३२) धर्म्मपुस्तकका अध्याय जो वह पढ़ता था यही था कि वह भेड़की नाईं बध होनेको पहुंचाया गया और

जैसा मेम्ना अपने रोम कतरनेहारेके साम्ने अबोल है तैसा उसने अपना मुंह न खोला। (३३) उसकी दीनताईमें उसका न्याय नहीं होने पाया और उसके समयके लोगोंका बर्णन कौन करेगा क्योंकि उसका प्राण पृथिवीसे उठाया गया। (३४) इसपर नपुंसकने फिलिपसे कहा मैं आपसे बिन्ती करता हूं भविष्यद्वक्ता यह बात किसके विषयमें कहता है अपने विषयमें अथवा किसी दूसरेके विषयमें। (३५) तब फिलिपने अपना मुंह खोलके और धर्म्मपुस्तकके इस बचनसे आरंभ करके यीशुका सुसमाचार उसको सुनाया। (३६) मार्गमें जाते जाते वे किसी पानीके पास पहुंचे और नपुंसकने कहा देखिये जल है बपतिसमा लेनेमें मुझे क्या रोक है। (३७) [फिलिप ने कहा जो आप सारे मनसे बिश्वास करते हैं तो हो सकता है. उसने उत्तर दिया मैं बिश्वास करता हूं कि यीशु ख्रीष्ट ईश्वरका पुत्र है।] (३८) तब उसने रथ खड़ा करनेकी आज्ञा दिई और वे दोनों फिलिप और नपुंसक भी जलमें उतरे और फिलिपने उसको बपतिसमा दिया। (३९) जब वे जलमेंसे ऊपर आये तब परमेश्वरका आत्मा फिलिपको ले गया और नपुंसकने उसे फिर नहीं देखा क्योंकि वह अपने मार्गपर आनन्द करता हुआ चला गया। (४०) परन्तु फिलिप असदोद नगरमें पाया गया और आगे बढ़के जबलों कैसरिया नगरमें न पहुंचा सब नगरोंमें सुसमाचार सुनाता गया।

[दमेसकको जाते हुए शावलको यीशुका दर्शन पाना और मन फिराना।]

प्रेरितोंकी क्रिया २२; १—१६: २६ : ६—१८।

९ शावल जिसकी अबलों प्रभुके शिष्योंको धमकाने और घात करनेको सांस फूल रही थी महायाजकके पास गया. (२) और उससे दमेसक नगरकी सभाओंके नामपर चिट्ठियां मांगीं इसलिये कि यदि कोई मिले क्या पुरुष क्या

स्त्रियां जो उस पन्थके हों तो उन्हें बांधे हुए यिरूशलीमको ले आवे । (३) परन्तु जाते हुए जब वह दमेसकके निकट पहुंचा तब अचांचक स्वर्गसे एक ज्योति उसकी चारों ओर चमकी । (४) और वह भूमिपर गिरा और एक शब्द सुना जो उससे बोला हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता है । (५) उसने कहा हे प्रभु तू कौन है . प्रभुने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है पैनोंपर लात मारना तेरे लिये कठिन है । (६) उसने कंपित और अचंभित हो कहा हे प्रभु तू क्या चाहता है कि मैं करूं . प्रभुने उससे कहा उठके नगरमें जा और तुझ से कहा जायगा तुझे क्या करना उचित है । (७) और जो मनुष्य उसके संग जाते थे सो चुप खड़े थे कि वे शब्द तो सुनते थे पर किसीको नहीं देखते थे । (८) तब शावल भूमि से उठा परन्तु जब अपनी आंखें खोलीं तब किसीको न देख सका पर वे उसका हाथ पकड़के उसे दमेसकमें लाये । (९) और वह तीन दिनलों नहीं देख सकता था और न खाता न पीता था ।

(१०) दमेसकमें अननियाह नाम एक शिष्य था और प्रभु ने दर्शनमें उससे कहा हे अननियाह . उसने कहा हे प्रभु देखिये मैं हूं । (११) तब प्रभुने उससे कहा उठके उस गली में जो सीधी कहावती है जा और यिहूदाके घरमें शावल नाम तारस नगरके एक मनुष्यको ढूंढ़ क्योंकि देख वह प्रार्थना करता है . (१२) और उसने दर्शनमें यह देखा है कि अननियाह नाम एक मनुष्यने भीतर आके उसपर हाथ रखा कि वह दृष्टि पावे । (१३) अननियाहने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैंने बहुतोंसे इस मनुष्यके विषयमें सुना है कि उसने यिरूशलीममें तेरे पवित्र लोगोंसे कितनी बुराई किई है । (१४) और यहां उसको तेरे नामकी सब प्रार्थना करनेहारोंको बांधनेका

प्रधान याजकोंकी ओरसे अधिकार है। (१५) प्रभुने उससे कहा चला जा क्योंकि वह अन्यदेशियों और राजाओं और इस्रायेलके सन्तानोंके आगे मेरा नाम पहुंचानेको मेरा एक चुना हुआ पात्र है। (१६) क्योंकि मैं उसे बताऊंगा कि मेरे नामके लिये उसको कैसा बड़ा दुःख उठाना होगा।

(१७) तब अननियाहने जाके उस घरमें प्रवेश किया और उसपर हाथ रखके कहा हे भाई शावल प्रभुने अर्थात यीशु ने जिसने उस मार्गमें जिससे तू आता था तुझको दर्शन दिया मुझे भेजा है इसलिये कि तू दृष्टि पावे और पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होवे। (१८) और तुरन्त उसकी आंखोंसे छिलकेसे गिर पड़े और वह तुरन्त देखने लगा और उठके बपतिसमा लिया और भोजन करके बल पाया।

[पावलका यीशुका सुसमाचार प्रचार करना और यिहूदियोंका उससे बैर करना।]

(१९) तब शावल कितने दिन दमेसकमेंके शिष्योंके संग था। (२०) और वह तुरन्त सभाओंमें यीशुकी कथा सुनाने लगा कि वह ईश्वरका पुत्र है। (२१) और सब सुननेहारे बिस्मित हो कहने लगे क्या यह वह नहीं है जिसने यिरू-शलीममें इस नामकी प्रार्थना करनेहारोंको नाश किया और यहां इसीलिये आया था कि उन्हें बांधे हुए प्रधान याजकों के आगे पहुंचावे। (२२) परन्तु शावल और भी दृढ़ होता गया और यही ख्रीष्ट है इस बातका प्रमाण देके दमेसकमें रहनेहारे यिहूदियोंको व्याकुल किया। (२३) जब बहुत दिन बीत गये तब यिहूदियोंने उसे मार डालनेका आपसमें बिचार किया। (२४) परन्तु उनकी कुमंत्रणा शावलको जान पड़ी. वे उसे मार डालनेको रात और दिन फाटकोंपर पहरा भी देते थे। (२५) परन्तु शिष्योंने रातको उसे लेके टोकरेमें लट-काके भीतपरसे उतार दिया।

(२६) जब शावल यिरूशलीममें पहुंचा तब वह शिष्योंसे मिल जाने चाहता था और वे सब उससे डरते थे क्योंकि वे उसके शिष्य होनेकी प्रतीति नहीं करते थे। (२७) परन्तु बर्णबा उसे ले करके प्रेरितोंके पास लाया और उनसे कह दिया कि उसने क्योंकर मार्गमें प्रभुको देखा था और प्रभु उससे बोला था और क्योंकर उसने दमेसकमें यीशुके नामसे खोलके बात किई थी। (२८) तब वह यिरूशलीममें उनके संग आया जाया करने लगा और प्रभु यीशुके नामसे खोलके बात करने लगा। (२९) उसने यूनानीय भाषा बोलनेहारोंसे भी कथा और बिवाद किया पर वे उसे मार डालनेका यत्न करने लगे। (३०) यह जानके भाई लोग उसे कैसरियामें लाये और तारसकी ओर भेजा।

(३१) सो सारे यिहूदिया और गालील और शोमिरोनमें मंडलीको चैन होता था और वे सुधर जाती थीं और प्रभुके भयमें और पवित्र आत्माकी शांतिमें चलती थीं और बढ़ जाती थीं।

[पितरका ऐनियको चंगा करना और दर्काको जिलाना।]

(३२) तब पितर सब पवित्र लोगोंमें फिरते हुए उन्होंके पास भी आया जो लुद्दा नगरमें बास करते थे। (३३) वहां उसने ऐनिय नाम एक मनुष्यको पाया जो अर्द्धांगी था और आठ बरससे खाटपर पड़ा हुआ था। (३४) पितरने उससे कहा हे ऐनिय यीशु खीष्ट तुझे चंगा करता है उठ और अपना बिछौना सुधार, तब वह तुरन्त उठा। (३५) और लुद्दा और शारोनके सब निवासियोंने उसे देखा और वे प्रभुकी ओर फिरे।

(३६) याफो नगरमें तबीथा अर्थात दर्का नाम एक शिष्या थी, वह सुकर्म्मों और दानोंसे जो वह करती थी पूर्ण थी। (३७) उन दिनोंमें वह रोगी हुई और मर गई और उन्होंने

उसे नहलाके उपरौठी कोठरीमें रखा। (३८) और इसलिये कि लुद्दा याफोके निकट था शिष्योंने यह सुनके कि पितर वहां है दो मनुष्योंको उस पास भेजके बिन्ती किई कि हमारे पास आनेमें बिलंब न कीजिये। (३९) तब पितर उठके उनके संग गया और जब वह पहुंचा तब वे उसे उस उपरौठी कोठरीमें ले गये और सब बिधवाएं रोती हुईं और जो कुरते और बस्त्र दर्का उनके संग होते हुए बनाती थी उन्हें दिखाती हुईं उस पास खड़ी हुईं। (४०) परन्तु पितरने सभोंको बाहर निकाला और घुटने टेकके प्रार्थना किई और लोथकी ओर फिरके कहा हे तबीथा उठ. तब उसने अपनी आंखें खोलीं और पितरको देखके उठ बैठी। (४१) उसने हाथ देके उसको उठाया और पवित्र लोगों और बिधवाओंको बुलाके उसे जीवती दिखाई। (४२) यह बात सारे याफोमें जान पड़ी और बहुत लोगोंने प्रभुपर बिश्वास किया। (४३) और पितर याफोमें शिमोन नाम किसी चमारके यहां बहुत दिन रहा।

[कर्णीलिय नाम इतलीय पलटनके शतपतिका बृत्तान्त।]

१० कैसरियामें कर्णीलिय नाम एक मनुष्य था जो इतलीय नाम पलटनका एक शतपति था। (२) वह भक्त जन था और अपने सारे घराने समेत ईश्वरसे डरता था और लोगोंको बहुत दान देता था और नित्य ईश्वरसे प्रार्थना करता था। (३) उसने दिनको तीसरे पहरके निकट दर्शनमें प्रत्यक्ष देखा कि ईश्वरका एक दूत उस पास भीतर आया और उससे बोला हे कर्णीलिय। (४) उसने उसकी ओर ताकके और भयमान होके कहा हे प्रभु क्या है. उसने उससे कहा तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरणके लिये ईश्वरके आगे पहुंचे हैं। (५) और अब मनुष्योंको याफो नगर भेजके शिमोन को जो पितर कहावता है बुला। (६) वह शिमोन नाम किसी

चमारके यहां जिसका घर समुद्रके तीरपर है पाहुन है . जो कुछ तुझे करना उचित है सो वही तुझसे कहेगा । (७) जब वह दूत जो कर्णीलियसे बात करता था चला गया तब उस ने अपने सेवकोंमेंसे दोको और जो उसके यहां लगे रहते थे उनमेंसे एक भक्त योद्धाको बुलाया . (८) और उन्होंको सब बातें सुनाके उन्हें याफोको भेजा ।

(९) दूसरे दिन ज्योंही वे मार्गमें चलते थे और नगरके निकट पहुंचे त्योंही पितर दो पहरके निकट प्रार्थना करनेको कोठेपर चढ़ा । (१०) तब वह बहुत भूखा हुआ और कुछ खाने चाहता था पर जिस समय वे तैयार करते थे वह बेसुध हो गया । (११) और उसने स्वर्गको खुले और बड़ी चद्दरकी नाईं किसी पात्रको चार कोनोंसे बांधे हुए और पृथिवीकी ओर लटकाये हुए अपनी ओर उतरते देखा । (१२) उसमें पृथिवीके सब चौपाये और बनपशु और रेंगनेहारे जन्तु और आकाशके पंछी थे । (१३) और एक शब्द उस पास पहुंचा कि हे पितर उठ मार और खा । (१४) पितरने कहा हे प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध बस्तु नहीं खाई । (१५) और शब्द फिर दूसरी बेर उस पास पहुंचा कि जो कुछ ईश्वरने शुद्ध किया है उसको तू अशुद्ध मत कह । (१६) यह तीन बार हुआ तब वह पात्र फिर स्वर्गपर उठा लिया गया ।

(१७) जिस समय पितर अपने मनमें दुबधा करता था कि यह दर्शन जो मैंने देखा है क्या है देखो वे मनुष्य जो कर्णी-लियकी ओरसे भेजे गये थे शिमोनके घरका ठिकाना पा करके डेवढ़ीपर खड़े हुए . (१८) और पुकारके पूछते थे क्या शिमोन जो पितर कहावता है यहां पाहुन है । (१९) पितर उस दर्शन के विषयमें सोचताही था कि आत्माने उससे कहा देख तीन मनुष्य तुझे ढूंढ़ते हैं । (२०) पर तू उठके उतर जा और

उनके संग बेखटके चला जा क्योंकि मैंने उन्हें भेजा है। (२१) तब पितरने उन मनुष्योंके पास जो कर्णीलियको ओर से उस पास भेजे गये थे उतरके कहा देखो जिसे तुम ढूंढ़ते हो सो मैं हूं तुम किस कारणसे आये हो। (२२) वे बोले कर्णीलिय शतपति जो धर्म्मी मनुष्य और ईश्वरसे डरनेहारा और सारे यिहूदी लोगोंमें सुख्यात है उसको एक पवित्र दूत से आज्ञा दिई गई कि आपको अपने घरमें बुलाके आपसे बातें सुने। (२३) तब पितरने उन्हें भीतर बुलाके उनकी पहुनई किई और दूसरे दिन वह उनके संग गया और याफोके भाइयों मेंसे कितने उसके साथ हो लिये।

(२४) दूसरे दिन उन्होंने कैसरियामें प्रवेश किया और कर्णीलिय अपने कुटुंबों और प्रिय मित्रोंको एकट्ठे बुलाके उनकी बाट जोहता था। (२५) जब पितर भीतर आता था तब कर्णीलिय उससे आ मिला और पांवों पड़के प्रणाम किया। (२६) परन्तु पितरने उसको उठाके कहा खड़ा हो मैं आप भी मनुष्य हूं। (२७) और वह उसके संग बातचीत करता हुआ भीतर गया और बहुत लोगोंको एकट्ठे पाया। (२८) और उनसे कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशीकी संगति करना अथवा उसके यहां जाना यिहूदी मनुष्यको बर्ज्जित है परन्तु ईश्वरने मुझे बताया है कि तू किसी मनुष्यको अपवित्र अथवा अशुद्ध मत कह। (२९) इसलिये मैं जो बुलाया गया तो इसके बिरुद्ध कुछ न कहके चला आया सो मैं पूछता हूं कि तुम्होंने किस बातके लिये मुझे बुलाया है। (३०) कर्णीलियने कहा चार दिन हुए कि मैं इस घड़ीलों उपवास करता था और तीसरे पहर अपने घरमें प्रार्थना करता था कि देखो एक पुरुष चमकता बस्त्र पहिने हुए मेरे आगे खड़ा हुआ (३१) और बोला हे कर्णीलिय तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरे दान ईश्वरके आगे

स्मरण किये गये हैं । (३२) इसलिये याफो नगर भेजके शिमोन को जो पितर कहावता है बुला . वह समुद्रके तीरपर शिमोन चमारके घरमें पाहुन है . वह आके तुझसे बात करेगा । (३३) तब मैंने तुरन्त आपके पास भेजा और आपने अच्छा किया जो आये हैं सो अब ईश्वरने जो कुछ आपको आज्ञा दिई है सोई सुननेको हम सब यहां ईश्वरके साम्हने हैं ।

(३४) तब पितरने मुंह खोलके कहा मुझे सचमुच बूझ पड़ता है कि ईश्वर मुंह देखा बिचार करनेहारा नहीं है । (३५) परन्तु हर एक देशके लोगोंमें जो उससे डरता है और धर्म्मके कार्य्य करता है सो उससे ग्रहण किया जाता है । (३६) उसने वह वचन तुम्होंके पास भेजा है जो उसने इस्रायेलके सन्तानोंके पास भेजा अर्थात यीशु स्त्रीष्टके द्वारासे जो सभोंका प्रभु है शांतिका सुसमाचार सुनाया । (३७) तुम वह बात जानते हो जो उस बपतिसमाके पीछे जिसका योहनने उपदेश किया गालीलसे आरंभ कर सारे यिहूदियामें फैल गई . (३८) अर्थात नासरत नगरके योशुके विषयमें क्योंकर ईश्वरने उसको पवित्र आत्मा और सामर्थ्यसे अभिषेक किया और वह भलाई करता और सभोंको जो शैतानसे पेरे जाते थे चंगा करता फिरा क्योंकि ईश्वर उसके संग था । (३९) और हम उन सब कामोंके साक्षी हैं जो उसने यिहूदियोंके देशमें और यिरूशलीममें भी किये जिसे लोगोंने काठपर लटकाके मार डाला । (४०) उसको ईश्वरने तीसरे दिन जिला उठाया और उसको प्रगट होने दिया . (४१) सब लोगोंके आगे नहीं परन्तु साक्षियोंके आगे जिन्हें ईश्वरने पहिलेसे ठहराया था अर्थात हमोंके आगे जिन्होंने उसके मृतकोंमेंसे जी उठनेके पीछे उसके संग खाया और पीया । (४२) और उसने हमोंको आज्ञा दिई कि लोगोंको उपदेश और साक्षी देओ कि वही है जिसको ईश्वरने जीवतों

और मृतकोंका न्यायी ठहराया है। (४३) उसपर सारे भविष्य-द्वक्ता साक्षी देते हैं कि जो कोई उसपर बिश्वास करे सो उसके नामके द्वारा पापमोचन पावेगा।

(४४) पितर यह बातें कहताही था कि पवित्र आत्मा बचनके सब सुननेहारोंपर पड़ा। (४५) और खतना किये हुए बिश्वासी जितने पितरके संग आये थे बिस्मित हुए कि अन्यदेशियोंपर भी पवित्र आत्माका दान उंडेला गया है। (४६) क्योंकि उन्होंने उन्हें अनेक बोलियां बोलते और ईश्वरकी महिमा करते सुना। (४७) इसपर पितरने कहा क्या कोई जलको रोक सकता है कि इन लोगोंको जिन्होंने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है बपतिसमा न दिया जावे। (४८) और उसने आज्ञा दिई कि उन्हें प्रभुके नामसे बपतिसमा दिया जाय. तब उन्होंने उससे कई एक दिन ठहर जानेकी बिन्ती किई।

[अन्यदेशियोंको सुसमाचार सुनानेके बिषयमें पितरका उत्तर।]

११ जो प्रेरित और भाई लोग यिहूदियामें थे उन्होंने सुना कि अन्यदेशियोंने भी ईश्वरका बचन ग्रहण किया है। (२) और जब पितर यिरूशलीमको गया तब खतना किये हुए लोग उससे बिबाद करने लगे. (३) और बोले तूने खतनाहीन लोगोंके यहां जाके उनके संग खाया। (४) तब पितरने आरंभ कर एक ओरसे उन्हें कह सुनाया. (५) कि मैं याफो नगरमें प्रार्थना करता था और बेसुध होके एक दर्शन अर्थात स्वर्गपरसे चार कोनोंसे लटकाई हुई बड़ी चद्दरकी नाईं किसी पात्रको उतरते देखा और वह मेरे पासलों आया। (६) मैंने उसकी ओर ताकके देख लिया और पृथिवीके चौपायों और बन पशुओं और रेंगनेहारे जन्तुओंको और आकाशके पंछियोंको देखा. (७) और एक शब्द सुना जो मुझसे बोला हे पितर उठ मार और खा। (८) मैंने कहा हे प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि कोई अपवित्र अथवा

अशुद्ध वस्तु मेरे मुंहमें कभी नहीं गई। (९) परन्तु शब्दने दूसरी बेर स्वर्गसे मुझे उत्तर दिया कि जो कुछ ईश्वरने शुद्ध किया है उसको तू अशुद्ध मत कह। (१०) यह तीन बार हुआ तब सब कुछ फिर स्वर्गपर खींचा गया। (११) और देखो तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरियासे मेरे पास भेजे गये थे जिस घरमें मैं था उस घरपर आ पहुंचे। (१२) तब आत्माने मुझसे उनके संग बेखटके चले जानेको कहा और ये छः भाई भी मेरे संग गये और हमने उस मनुष्यके घरमें प्रवेश किया। (१३) और उसने हमें बताया कि उसने क्योंकर अपने घरमें एक दूतको खड़े हुए देखा था जो उससे बोला कि मनुष्योंको याफो नगर भेजके शिमोनको जो पितर कहावता है बुला। (१४) वह तुझ से बातें कहेगा जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना त्राण पावे। (१५) जब मैं बात करने लगा तब पवित्र आत्मा जिस रीतिसे आरंभमें हमोंपर पड़ा उसी रीतिसे उन्होंपर भी पड़ा। (१६) तब मैंने प्रभुका वचन स्मरण किया कि उसने कहा योहन ने जलसे बपतिसमा दिया परन्तु तुम्हें पवित्र आत्मासे बपतिसमा दिया जायगा। (१७) सो जब कि ईश्वरने प्रभु यीशु ख्रीष्टपर बिश्वास करनेहारोंको जैसे हमोंको तैसे उन्होंको भी एकसां दान दिया तो मैं कौन था कि मैं ईश्वरको रोक सकता।

(१८) वे यह सुनके चुप हुए और यह कहके ईश्वरकी स्तुति करने लगे कि तब तो ईश्वरने अन्यदेशियोंको भी पश्चात्ताप दान किया है कि वे जीवें।

[अन्तैखियामें सुसमाचार प्रचार किये जानेका वर्णन।]

(१९) स्तिफानके कारण जो क्लेश हुआ तिसके हेतुसे जो लोग तितर बितर हुए थे उन्होंने फैनीकिया देश और कुप्रस टापू और अन्तैखिया नगरलों फिरते हुए किसी औरको नहीं केवल यिहूदियोंको वचन सुनाया। (२०) परन्तु उनमेंसे कितने

कुप्रो और कुरीनीय मनुष्य थे जो अन्तैखियामें आके यूनानियों से बात करने और प्रभु यीशुका सुसमाचार सुनाने लगे। (२१) और प्रभुका हाथ उनके संग था और बहुत लोग बिश्वास करके प्रभुकी ओर फिरे। (२२) तब उनके विषयमें वह बात यिरूशलीममेंकी मंडलीके कानोंमें पहुंची और उन्होंने बर्णबाको भेजा कि वह अन्तैखियालों जाय। (२३) वह जब पहुंचा और ईश्वरके अनुग्रहको देखा तब आनन्दित हुआ और सभोंको उपदेश दिया कि मनकी अभिलाषा सहित प्रभुसे मिले रहो। (२४) क्योंकि वह भला मनुष्य और पवित्र आत्मा और बिश्वाससे परिपूर्ण था. और बहुत लोग प्रभुसे मिल गये। (२५) तब बर्णबा शावलको ढूंढ़नेके लिये तारसको गया। (२६) और वह उसको पाके अन्तैखियामें लाया और वे दोनों जन बरस भर मंडलीमें एकट्ठे होते थे और बहुत लोगोंको उपदेश देते थे और शिष्य लोग पहिले अन्तैखियामें ख्रीष्टियान कहलाये।

(२७) उन दिनोंमें कई एक भविष्यद्वक्ता यिरूशलीमसे अन्तैखियामें आये। (२८) उनमेंसे आगाब नाम एक जनने उठके आत्माकी शिक्षासे बताया कि सारे संसारमें बड़ा अकाल पड़ेगा और वह अकाल क्लौदिय कैसरके समयमें पड़ा। (२९) तब शिष्योंने हर एक अपनी अपनी सम्पत्तिके अनुसार यिहूदियामें रहनेहारे भाइयोंकी सेवकाईके लिये कुछ भेजनेको ठहराया। (३०) और उन्होंने यही किया अर्थात बर्णबा और शावलके हाथ प्राचीनोंके पास कुछ भेजा।

[हेरोदका याकूबको बध करना। पितरका बन्दीगृहमेंसे छुड़ाया जाना। हेरोदका मरण।]

१२ उस समय हेरोद राजाने मंडलीके कई एक जनोंको दुःख देनेको उनपर हाथ बढ़ाये। (२) उसने योहनके भाई याकूबको खड्गसे मार डाला। (३) और जब उसने देखा

कि यिहूदी लोग इससे प्रसन्न होते हैं तब उसने पितरको भी पकड़ा और अखमीरी रोटीके पर्ब्बके दिन थे । (४) और उसने उसे पकड़के बन्दीगृहमें डाला और चार चार योद्धाओंके चार पहरोंमें सोंप दिया कि वे उसको रखें और उसको निस्तार पर्ब्बके पीछे लोगोंके आगे निकाल लानेकी इच्छा करता था ।

(५) सो पितर बन्दीगृहमें पहरेमें रहता था परन्तु मंडली लौ लगाके उसके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करती थी । (६) और जब हेरोद उसे निकाल लानेपर था उसी रात पितर दो योद्धाओंके बीचमें दो जंजीरोंसे बंधा हुआ सोता था और पहरुए द्वारके आगे बन्दीगृहकी रक्षा करते थे। (७) और देखो परमेश्वरका एक दूत आ खड़ा हुआ और कोठरीमें ज्योति चमकी और उसने पितरके पंजरपर हाथ मारके उसे जगाके कहा शीघ्र उठ . तब उसकी जंजीरें उसके हाथोंसे गिर पड़ीं। (८) दूतने उससे कहा कमर बांध और अपने जूते पहिन ले और उसने वैसा किया . तब उससे कहा अपना बस्त्र ओढ़के मेरे पीछे हो ले । (९) और वह निकलके उसके पीछे चलने लगा और नहीं जानता था कि जो दूतसे किया जाता है सो सत्य है परन्तु समझता था कि मैं दर्शन देखता हूं। (१०) परन्तु वे पहिले और दूसरे पहरेमेंसे निकले और नगरमें जानेके लोहेके फाटकपर पहुंचे जो आपसे आप उनके लिये खुल गया और वे निकलके एक गलीके अन्तलों बढ़े और तुरन्त दूत पितरके पाससे चला गया । (११) तब पितरको चेत हुआ और उसने कहा अब मैं निश्चय जानता हूं कि प्रभुने अपना दूत भेजा है और मुझे हेरोदके हाथसे और सब बातोंसे जिनकी आस यिहूदी लोग देखते थे छुड़ाया है ।

(१२) और यह जानके वह योहन जो मार्क कहावता है

तिसकी माता मरियमके घरपर आया जहां बहुत लोग एकट्ठे हुए प्रार्थना करते थे। (१३) जब पितर डेवढ़ीके द्वारपर खटखटाया तब रोदा नाम एक दासी चुपचाप सुननेको आई। (१४) और पितरका शब्द पहचानके उसने आनन्दके मारे द्वार न खोला परन्तु भीतर दौड़के बताया कि पितर द्वारपर खड़ा है। (१५) उन्होंने उससे कहा तू बौराही है परन्तु वह दृढ़तासे बोली कि ऐसाही है. तब उन्होंने कहा उसका दूत है। (१६) परन्तु पितर खटखटाता रहा और वे द्वार खोलके उसे देखके बिस्मित हुए। (१७) तब उसने हाथसे उन्हें चुप रहनेका सैन किया और उनसे कहा कि प्रभु क्योंकर उसको बन्दीगृह मेंसे बाहर लाया था और बोला यह बातें याकूबसे और भाइयों से कह दीजियो तब निकलके दूसरे स्थानको गया।

(१८) बिहान हुए योद्धाओंमें बड़ी घबराहट होने लगी कि पितर क्या हुआ। (१९) जब हेरोदने उसे ढूंढ़ा और नहीं पाया तब पहरुओंको जांचके आज्ञा किई कि वे बध किये जायें. तब यिहूदियासे कैसरियाको गया और वहां रहा।

(२०) हेरोदको सोर औ सोदोनके लोगोंसे लड़नेका मन था परन्तु वे एक चित्त होके उस पास आये और बलास्तको जो राजाके शयनस्थानका अध्यक्ष था मनाके मिलाप चाहा क्योंकि राजाके देशसे उनके देशका पालन होता था। (२१) और ठहराये हुए दिनमें हेरोदने राजबस्त्र पहिनके सिंहासनपर बैठके उन्होंको कथा सुनाई। (२२) और लोग पुकार उठे कि ईश्वर का शब्द है मनुष्यका नहीं। (२३) तब परमेश्वरके एक दूतने तुरन्त उसको मारा क्योंकि उसने ईश्वरकी स्तुति न किई और कीड़े उसको खा गये और उसने प्राण छोड़ दिया। (२४) परन्तु ईश्वरका बचन अधिक अधिक फैलता गया।

(२५) जब बर्णबा और शावलने वह सेवकाई पूरी किई

थी तब वे योहनको भी जो मार्क कहावता था संग लेके यिरूशलीमसे लौटे ।

[बर्णबा और पावलका आन आन देशोंमें भेजा जाना और कुप्रस टापूमें सुसमाचार प्रचार करना । इलुमा टोन्हेका बृत्तान्त ।]

१३ अन्तैखियामेंकी मंडलीमें कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे अर्थात बर्णबा और शिमियोन जो निगर कहावता है और कुरोनीय लूकिय और चैाथाईके राजा हेरोद का दूधभाई मनहेम और शावल । (२) जिस समय वे उपवास सहित प्रभुकी सेवा करते थे पवित्र आत्माने कहा मैंने बर्णबा और शावलको जिस कामके लिये बुलाया है उस कामके निमित्त उन्हें मेरे लिये अलग करो । (३) तब उन्होंने उपवास औ प्रार्थना करके और उनपर हाथ रखके उन्हें बिदा किया ।

(४) सो वे पवित्र आत्माके भेजे हुए सिलूकिया नगरको गये और वहांसे जहाजपर कुप्रस टापूको चले । (५) और सालामी नगरमें पहुंचके उन्होंने ईश्वरका बचन यिहूदियोंकी सभाओंमें प्रचार किया और योहन भी सेवक होके उनके संग था । (६) और उन्होंने उस टापूके बीचसे पाफो नगरलों पहुंचके एक टोन्हेको पाया जो झूठा भविष्यद्वक्ता और यिहूदी था जिसका नाम बरयीशु था । (७) वह सर्ज्जिय पावल प्रधानके संग था जो बुद्धिमान पुरुष था . उसने बर्णबा और शावलको अपने पास बुलाके ईश्वरका बचन सुनने चाहा । (८) परन्तु इलुमा टोन्हा कि उसके नामका यही अर्थ है उनका सामना करके प्रधानको बिश्वासकी ओरसे बहकाने चाहता था । (९) तब शावल अर्थात पावलने पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होके और उसकी ओर ताकके कहा . (१०) हे सारे कपट और सब कुचालसे भरे हुए शैतानके पुत्र सकल धर्म्मके बैरी क्या तू प्रभुके सीधे मार्गोंको टेढ़ा करना न छोड़ेगा । (११) अब देख प्रभुका हाथ तुझपर है और तू

कितने समयलों अंधा होगा और सूर्य्यको न देखेगा . तुरन्त धुंधलाई और अंधकार उसपर पड़ा और वह इधर उधर टटोलने लगा कि लोग उसका हाथ पकड़ें। (१२) तब प्रधानने जो हुआ था सो देखके प्रभुके उपदेशसे अचंभित हो विश्वास किया।

[पिसिदिया देशके अन्तैखिया नगरमें पावलका उपदेश और यिहूदियोंका विरोध करना।]

(१३) पावल और उसके संगी पाफोसे जहाज खोलके पंफुलिया देशके पर्गा नगरमें आये परन्तु योहन उन्हें छोड़के यिरूशलीमको लौट गया। (१४) और पर्गासे आगे बढ़के वे पिसिदिया देशके अन्तैखिया नगरमें पहुंचे और विश्रामके दिन सभाके घरमें प्रवेश करके बैठ गये। (१५) और व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकके पढ़े जानेके पीछे सभाके अध्यक्षोंने उनके पास कहला भेजा कि हे भाइयो यदि लोगोंके लिये उपदेशकी कोई बात आप लोगोंके पास होय तो कहिये। (१६) तब पावलने खड़ा होके और हाथसे सैन करके कहा हे इस्रायेली लोगो और ईश्वरसे डरनेहारो सुनो। (१७) इन इस्रायेली लोगोंके ईश्वरने हमारे पितरोंको चुन लिया और इन लोगोंके मिसर देशमें परदेशी होते हुए उन्हें ऊंच पद दिया और बलवन्त भुजासे उस देशमेंसे निकाल लिया। (१८) और उसने चालीस एक बरस जंगलमें उनका निर्व्वाह किया. (१९) और कनान देशमें सात राज्यके लोगोंको नाश करके उनका देश चिट्ठियां डलवाके उनको बांट दिया। (२०) इसके पीछे उसने साढ़े चार सौ बरसके अटकल शमुएल भविष्यद्वक्तालों उन्हें न्याय करनेहारे दिये। (२१) उस समयसे उन्होंने राजा चाहा और ईश्वरने चालीस बरसलों बिन्यामीनके कुलके एक मनुष्य अर्थात कीशके पुत्र शावलको उन्हें दिया। (२२) और उसको अलग करके उसने उन्होंके लिये दाऊदको राजा होनेको

उठाया जिसके विषयमें उसने साक्षी देके कहा मैंने यिशीका पुत्र दाऊद अपने मनके अनुसार एक मनुष्य पाया है जो मेरी सारी इच्छाको पूरी करेगा । (२३) इसीके बंशमें से ईश्वरने प्रतिज्ञाके अनुसार इस्रायेलके लिये एक त्राणकर्त्ता अर्थात यीशु को उठाया । (२४) पर उसके आनेके आगे योहनने सब इस्रायेली लोगोंको पश्चात्तापके बपतिसमाका उपदेश दिया । (२५) और योहन जब अपनी दौड़ पूरी करता था तब बोला तुम क्या समझते हो मैं कौन हूं . मैं वह नहीं हूं परन्तु देखो मेरे पीछे एक आता है जिसके पांवोंकी जूती मैं खोलनेके योग्य नहीं हूं ।

(२६) हे भाइयो तुम जो इब्राहीमके बंशके सन्तान हो और तुम्होंमें जो ईश्वरसे डरनेहारे हो तुम्हारे पास इस त्राणकी कथा भेजी गई है । (२७) क्योंकि यिरूशलीमके निवासियोंने और उनके प्रधानोंने यीशुको न पहचानके उसका बिचार करनेमें भविष्यद्वक्ताओंकी बातें भी जो हर एक बिश्रामवार पढ़ी जाती हैं पूरी किईं । (२८) और उन्होंने बधके योग्य कोई दोष उसमें न पाया तौभी पिलातसे बिन्ती किई कि वह घात किया जाय । (२९) और जब उन्होंने उसके विषयमें लिखी हुई सब बातें पूरी किईं थीं तब उसे काठपरसे उतारके क़बरमें रखा । (३०) परन्तु ईश्वरने उसे मृतकोंमेंसे उठाया । (३१) और उसने बहुत दिन उन्होंको जो उसके संग गालीलसे यिरूशलीममें आये थे दर्शन दिया और वे लोगोंके पास उसके साक्षी हैं । (३२) हम उस प्रतिज्ञाका जो पितरोंसे किई गई तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं . (३३) कि ईश्वरने यीशुको उठानेमें यह प्रतिज्ञा उनके सन्तानोंके अर्थात हमोंके लिये पूरी किई है जैसा दूसरे गीतमें भी लिखा है कि तू मेरा पुत्र है मैंने आजही तुझे जन्म दिया है । (३४) और उसने जो उसको मृतकोंमेंसे उठाया और वह कभी सड़ न जायगा इसलिये यूं कहा है कि मैंने दाऊद

पर जो अचल कृपा किई सो तुमपर करूंगा। (३५) इसलिये उसने दूसरे एक गीतमें भी कहा है कि तू अपने पवित्र जनको सड़ने न देगा। (३६) दाऊद तो ईश्वरकी इच्छासे अपने समय के लोगोंकी सेवा करके सो गया और अपने पितरोंमें मिला और सड़ गया। (३७) परन्तु जिसको ईश्वरने जिला उठाया वह नहीं सड़ गया। (३८) इसलिये हे भाइयो जानो कि इसीके द्वारा पापमोचनकी कथा तुमको सुनाई जाती है। (३९) और इसीके हेतुसे हर एक बिश्वासी जन सब बातोंसे निर्दोष ठहराया जाता है जिनसे तुम मूसाकी व्यवस्थाके हेतुसे निर्दोष नहीं ठहर सकते थे। (४०) इसलिये चौकस रहो कि जो भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकमें कहा गया है सो तुमपर न पड़े . (४१) कि हे निन्दको देखो और अचंभित हो और लोप हो जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे दिनोंमें एक काम करता हूं ऐसा काम कि यदि कोई तुमसे उसका बर्णन करे तो तुम कभी प्रतीति न करोगे।

(४२) जब यिहूदी लोग सभाके घरमेंसे निकलते थे तब अन्यदेशियोंने बिन्ती किई कि यह बातें अगले बिश्रामवार हमसे कही जायें। (४३) और जब सभा उठ गई तब यिहूदियोंमें से और भक्तिमान यिहूदीय मतावलंबियोंमेंसे बहुत लोग पावल और बर्णबाके पीछे हो लिये और उन्होंने उनसे बातें करके उन्हें समझाया कि ईश्वरके अनुग्रहमें बने रहो।

(४४) अगले बिश्रामवार नगरके प्राय सब लोग ईश्वरका बचन सुननेको एकट्ठे आये. (४५) परन्तु यिहूदी लोग भीड़को देखके डाहसे भर गये और बिबाद औ निन्दा करते हुए पावल को बातोंके बिरुद्ध बोलने लगे। (४६) तब पावल और बर्णबाने साहस करके कहा अवश्य था कि ईश्वरका बचन पहिले तुम्हीं से कहा जाय परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो और अपने

तईं अनन्त जीवनके अयोग्य ठहराते हो देखो हम अन्यदेशियों की ओर फिरते हैं । (४७) क्योंकि परमेश्वरने हमें यूंहीं आज्ञा दिई है कि मैंने तुझे अन्यदेशियोंकी ज्योति ठहराई है कि तू पृथिवीके अन्तलों त्राणकर्त्ता होवे । (४८) तब अन्यदेशी लोग जो सुनते थे आनन्दित हुए और प्रभुके बचनकी बड़ाई करने लगे और जितने लोग अनन्त जीवनके लिये ठहराये गये थे उन्होंने बिश्वास किया । (४९) तब प्रभुका बचन उस सारे देश में फैलने लगा । (५०) परन्तु यिहूदियोंने भक्तिमती और कुलवन्ती स्त्रियोंको और नगरके बड़े लोगोंको उसकाया और पावल और बर्णबापर उपद्रव करवाके उन्हें अपने सिवानोंमेंसे निकाल दिया । (५१) तब वे उनके बिरुद्ध अपने पांवोंकी धूल झाड़के इकोनिया नगरमें आये । (५२) और शिष्य लोग आनन्दसे और पवित्र आत्मासे पूर्ण हुए ।

[प्रेरितोंका इकोनिया लुस्त्रा और और नगरोंमें उपदेश करना और अन्तैखियाको लौट आना ।]

१४ इकोनियामें उन्होंने यिहूदियोंके सभाके घरमें एक संग प्रवेश किया और ऐसी बातें किईं कि यिहूदियों और यूनानियोंमेंसे भी बहुत लोगोंने बिश्वास किया । (२) परन्तु न माननेहारे यिहूदियोंने अन्यदेशियोंके मन भाइयोंके बिरुद्ध उसकाये और बुरे कर दिये । (३) सो उन्होंने प्रभुके भरोसे जो अपने अनुग्रहके बचनपर साक्षी देता था और उनके हाथोंसे चिन्ह और अद्भुत काम करवाता था साहससे बात करते हुए बहुत दिन बिताये । (४) और नगरके लोग बिभिन्न हुए और कितने तो यिहूदियोंके साथ और कितने प्रेरितोंके साथ थे । (५) परन्तु जब अन्यदेशियों और यिहूदियोंने भी अपने प्रधानोंके संग उनकी दुर्दशा करने और उन्हें पत्थरवाह करने को हल्ला किया । (६) तब वे जान गये और लुकाओनिया

देशके लुस्त्रा और दर्बी नगरोंमें और आसपासके देशमें भाग गये . (७) और वहां सुसमाचार प्रचार करने लगे ।

(८) लुस्त्रामें एक मनुष्य पांवोंका निर्बल बैठा था जो अपनी माताके गर्भहीसे लंगड़ा था और कभी नहीं चला था । (९) वह पावलको बात करते सुनता था और उसने उसकी ओर ताकके देखा कि इसको चंगा किये जानेका बिश्वास है . (१०) और बड़े शब्दसे कहा अपने पांवोंपर सीधा खड़ा हो . तब वह कूदने और फिरने लगा ।

(११) पावलने जो किया था उसे देखके लोगोंने लुकाओ-नीय भाषामें ऊंचे शब्दसे कहा देवगण मनुष्योंके समान होके हमारे पास उतर आये हैं । (१२) और उन्होंने बर्णबाको जूपितर और पावलको हर्मि कहा क्योंकि वह बात करनेमें मुख्य था । (१३) और जूपितर जो उनके नगरके साम्हने था उसका याजक बैलोंको और फूलोंके हारोंको फाटकोंपर लाके लोगोंके संग बलिदान किया चाहता था । (१४) परन्तु प्रेरितों ने अर्थात बर्णबा और पावलने यह सुनके अपने कपड़े फाड़े और लोगोंकी ओर लपक गये और पुकारके बोले . (१५) हे मनुष्यो यह क्यों करते हो . हम भी तुम्हारे समान दुःख सुख भोगी मनुष्य हैं और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ विषयोंसे जीवते ईश्वरकी ओर फिरो जिसने स्वर्ग औ पृथिवी औ समुद्र और सब कुछ जो उनमें है बनाया । (१६) उसने बीती हुई पीढ़ियोंमें सब देशोंके लोगोंको अपने अपने मार्गोंमें चलने दिया । (१७) तौभी उसने अपनेको बिना साक्षी नहीं रख छोड़ा है कि वह भलाई किया करता और आकाशसे वर्षा और फलवन्त ऋतु देके हमोंके मनको भोजन और आनन्द से तृप्त किया करता है । (१८) यह कहनेसे उन्होंने लोगोंको कठिनतासे रोका कि वे उनके आगे बलिदान न करें ।

(१९) परन्तु कितने यिहूदियोंने अन्तैखिया और इकोनिया से आके लोगोंको मनाया और पावलको पत्थरवाह किया और यह समझके कि वह मर गया है उसे नगरके बाहर घसीट ले गये। (२०) परन्तु जब शिष्य लोग उस पास घिर आये तब उसने उठके नगरमें प्रवेश किया और दूसरे दिन बर्णबाके संग दर्बीको गया।

(२१) जब उन्होंने उस नगरके लोगोंको सुसमाचार सुनाया और बहुतोंको शिष्य किया था तब वे लुस्त्रा और इकोनिया और अन्तैखियाको लौटे. (२२) और यह उपदेश करते हुए कि विश्वासमें बने रहो और कि हमें बड़े क्लेशसे ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना होगा शिष्योंके मनको स्थिर करते गये। (२३) और हर एक मंडलीमें प्राचीनोंको उनपर ठहराके उन्हों ने उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभुके हाथ सौंपा जिस पर उन्होंने विश्वास किया था। (२४) और पिसिदियासे होके वे पंफुलियामें आये. (२५) और पर्गामें बचन सुनाके आता-लिया नगरको गये। (२६) और वहांसे वे जहाजपर अन्तै-खियाको चले जहांसे वे उस कामके लिये जो उन्होंने पूरा किया था ईश्वरके अनुग्रहपर सौंपे गये थे। (२७) वहां पहुंच के और मंडलीको एकट्ठी करके उन्होंने बताया कि ईश्वरने उन्होंके साथ कैसे बड़े काम किये थे और कि उसने अन्य-देशियोंके लिये बिश्वासका द्वार खोला था। (२८) और उन्हों ने वहां शिष्योंके संग बहुत दिन बिताये।

[खतनेके विषयमें विवाद होना और उसके निर्णयके लिये कितने भाइयोंका यिरूशलीमको जाना और इस बातका निर्णय पत्रमें लिखना।]

१५ कितने लोग यिहूदियासे आके भाइयोंको उपदेश देने लगे कि जो मूसाकी रीतिके अनुसार तुम्हारा खतना न किया जाय तो तुम त्राण नहीं पा सकते हो। (२) जब पावल

और बर्णबासे और उन्होंसे बहुत बिबाद और बिचार हुआ था तब भाइयोंने यह ठहराया कि पावल और बर्णबा और हममेंसे कितने और जन इस प्रश्नके विषयमें यिरूशलीमको प्रेरितों और प्राचीनोंके पास जायेंगे। (३) सो मंडलीसे कुछ दूर पहुंचाये जाके वे फैनीकिया और शोमिरोनसे होते हुए अन्यदेशियोंके मन फेरनेका समाचार कहते गये और सब भाइयोंको बहुत आनन्दित किया। (४) जब वे यिरूशलीममें पहुंचे तब मंडलीने और प्रेरितों और प्राचीनोंने उन्हें ग्रहण किया और उन्होंने बताया कि ईश्वरने उन्होंके साथ कैसे बड़े काम किये थे। (५) परन्तु फरीशियोंके पंथके लोगोंमेंसे कितने जिन्होंने बिश्वास किया था उठके बोले उन्हें खतना करना और मूसाकी व्यवस्थाको पालन करनेकी आज्ञा देना उचित है।

(६) तब प्रेरित और प्राचीन लोग इस बातका बिचार करनेको एकट्ठे हुए। (७) जब बहुत बिवाद हुआ तब पितरने उठके उनसे कहा हे भाइयो तुम जानते हो कि बहुत दिन हुए ईश्वरने हममेंसे चुन लिया कि मेरे मुंहसे अन्यदेशी लोग सुसमाचारका बचन सुनके बिश्वास करें। (८) और अन्तर्यामी ईश्वरने जैसा हमको तैसा उनको भी पवित्र आत्मा देके उन के लिये साक्षी दिई. (९) और बिश्वाससे उन्होंके मनको शुद्ध करके हमोंके और उन्होंके बीचमें कुछ भेद न रखा। (१०) सो अब तुम क्यों ईश्वरकी परीक्षा करते हो कि शिष्यों के गलेपर जूआ रखो जिसे न हमारे पितर लोग न हम लोग उठा सके। (११) परन्तु जिस रीतिसे वे उसी रीतिसे हम भी प्रभु यीशु ख्रीष्टके अनुग्रहसे त्राण पानेको बिश्वास करते हैं।

(१२) तब सारी सभा चुप हुई और बर्णबा और पावलकी जो यह बताते थे कि ईश्वरने उनके द्वारा कैसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम अन्यदेशियोंके बीचमें किये थे सुनती रही।

(१३) जब वे चुप हुए तब याकूबने उत्तर दिया कि हे भाइयो मेरी सुन लीजिये। (१४) शिमोनने बताया है कि ईश्वरने क्योंकर अन्यदेशियोंपर पहिले दृष्टि किई कि उनमेंसे अपने नामके लिये एक लोगको ले लेवे। (१५) और इससे भविष्यद्वक्ताओंकी बातें मिलती हैं जैसा लिखा है . (१६) कि परमेश्वर जो यह सब करता है सो कहता है इसके पीछे मैं फिरके दाऊदका गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा और उसके खंड़हर बनाऊंगा और उसे खड़ा करूंगा . (१७) इसलिये कि वे मनुष्य जो रह गये हैं और सब अन्यदेशी लोग जो मेरे नामसे पुकारे जाते हैं परमेश्वरको ढूंढ़ें। (१८) ईश्वर अपने सब कामोंको आदिसे जानता है। (१९) इसलिये मेरा बिचार यह है कि अन्यदेशियोंमेंसे जो लोग ईश्वरकी ओर फिरते हैं हम उनको दुःख न देवें . (२०) परन्तु उनके पास लिखें कि वे मूरतोंकी अशुद्ध बस्तुओंसे और व्यभिचारसे और गला घोंटे हुओंके मांससे और लोहूसे परे रहें। (२१) क्योंकि पूर्व्वोंके समयसे मूसाके पुस्तकके नगर नगरमें प्रचार करनेहारे हैं और हर एक बिश्रामवार वह सभाके घरोंमें पढ़ा जाता है।

(२२) तब सारी मंडली सहित प्रेरितों और प्राचीनोंको अच्छा लगा कि अपनेमेंसे मनुष्योंको चुनें अर्थात यिहूदाको जो बर्शबा कहावता है और सीलाको जो भाइयोंमें बड़े मनुष्य थे और उन्हें पावल और बर्णबाके संग अन्तैखियाको भेजें . (२३) और उनके हाथ यही लिख भेजें कि प्रेरित औ प्राचीन औ भाई लोग अन्तैखिया और सुरिया और किलिकियामेंके उन भाइयोंको जो अन्यदेशियोंमेंसे हैं नमस्कार। (२४) हमने सुना है कि कितने लोगोंने हममेंसे निकलके तुम्हें बातोंसे व्याकुल किया है कि वे खतना करवानेको और व्यवस्थाको पालन करनेको कहते हुए तुम्हारे मनको चंचल

करते हैं पर हमने उनको आज्ञा न दिई। (२५) इसलिये हम ने एक चित्त होके अच्छा जाना है. (२६) कि मनुष्यों को चुनके अपने प्यारे बर्णबा और पावलके संग जो ऐसे मनुष्य हैं कि अपने प्राणोंको हमारे प्रभु यीशु खीष्टके नामके लिये सोंप दिया है तुम्हारे पास भेजें। (२७) सो हमने यिहूदा और सीलाको भेजा है जो आप भी यही बातें मुखवचनसे कह देवें। (२८) पवित्र आत्माको और हमको अच्छा लगा है कि तुम्हींपर इन आवश्यक बातोंसे अधिक कोई भार न रखें. (२९) अर्थात कि मूरतोंके आगे बलि किये हुओंसे और लोहूसे और गला घोंटे हुओंके मांससे और व्यभिचारसे परे रहो. इन्हींसे अपनेको बचा रखनेसे तुम भला करोगे. आगे शुभ।

(३०) सो वे बिदा होके अन्तैखियामें पहुंचे और लोगोंको एकट्ठे करके वह पत्र दिया। (३१) वे पढ़के उस शांतिकी बातसे आनन्दित हुए। (३२) और यिहूदा और सीलाने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे बहुत बातोंसे भाइयोंको समझाके स्थिर किया। (३३) और कुछ दिन रहके वे प्रेरितोंके पास जानेको कुशलसे भाइयोंसे बिदा हुए। (३४) परन्तु सीलाने वहां रहना अच्छा जाना। (३५) और पावल और बर्णबा बहुत औरोंके संग प्रभुके बचनका उपदेश करते और सुसमाचार सुनाते हुए अन्तैखियामें रहे।

[पावल और बर्णबाका अलग अलग यात्रा करना।]

(३६) कितने दिनोंके पीछे पावलने बर्णबासे कहा जिन नगरोंमें हमने प्रभुका वचन प्रचार किया आओ हम हर एक नगरमें फिरके अपने भाइयोंको देख लेवें कि वे कैसे हैं। (३७) तब बर्णबाने योहनको जो मार्क कहावता है संग लेनेका बिचार किया। (३८) परन्तु पावलने उसको जो पंफुलियासे उनके पाससे चला गया और कामपर उनके साथ न गया संग ले जाना

अच्छा नहीं समझा। (३९) सो ऐसा टंटा हुआ कि वे एक दूसरे को छोड़ गये और बर्णबा मार्कको लेके जहाजपर कुप्रसको गया

[पावलकी दूसरी यात्राका वर्णन सीला और तिमोथिय उसके साथी ।]

(४०) परन्तु पावलने सीलाको चुन लिया और भाइयोंसे ईश्वरके अनुग्रहपर सौंपा जाके निकला. (४१) और मंडलियोंको स्थिर करता हुआ सारे सुरिया और किलिकियामें फिरा ।

[पावलका एक दर्शन पाना और उन्होंका फिलिपी नगरको जाना । लुदियाका वृत्तान्त । एक भूतग्रस्त कन्यासे भूतका निकाला जाना । पावल और सीलाका बन्दीगृहमें डाला जाना । बन्दीगृहके रक्षकका प्रभुकी ओर फिरना ।]

१६. तब पावल दर्बी और लुस्त्रामें पहुंचा और देखो वहां तिमोथिय नाम एक शिष्य था जो किसी बिश्वासी यिहूदिनीका पुत्र था परन्तु उसका पिता यूनानी था। (२) और लुस्त्रा और इकोनियामेंके भाई लोग उसकी सुख्याति करते थे। (३) पावलने चाहा कि यह मेरे संग जाय और जो यिहूदी लोग उन स्थानोंमें थे उनके कारण उसे लेके उसका खतना किया क्योंकि वे सब उसके पिताको जानते थे कि वह यूनानी था। (४) परन्तु नगर नगर जाते हुए उन्होंने उन बिधियोंको जो यिरूशलीममेंके प्रेरितों और प्राचीनोंसे ठहराई गई थीं भाइयोंको सौंप दिया कि उनको पालन करें। (५) सो मंडलियां बिश्वासमें स्थिर होती थीं और प्रतिदिन गिन्तीमें बढ़ती थीं। (६) और जब वे फ्रूगिया और गलातिया देशोंमें फिर चुके और पवित्र आत्माने उन्हें आशिया देशमें बात सुनानेको बर्जा. (७) तब उन्होंने मुसिया देशपर आके बिथुनिया देशको जानेकी चेष्टा किई परन्तु आत्माने उन्हें जाने न दिया। (८) और मुसियासे होके वे त्रोआ नगरमें आये

(९) रातको एक दर्शन पावलको दिखाई दिया कि कोई माकिदोनी पुरुष खड़ा हुआ उससे बिन्ती करके कहता था

कि उस पार माकिदोनिया देश जाके हमारा उपकार कीजिये। (१०) जब उसने यह दर्शन देखा तब हमने निश्चय जाना कि प्रभुने हमें उन लोगोंके तईं सुसमाचार सुनानेको बुलाया है इसलिये हमने तुरन्त माकिदोनियाको जाने चाहा। (११) सो त्रोआसे खोलके हम सामोथ्राकी टापूको सीधे आये और दूसरे दिन नियापलि नगरमें पहुंचे। (१२) वहांसे हम फिलिपी नगरमें आये जो माकिदोनियाके उस अंशका पहिला नगर है और रोमियोंकी बस्ती है और हम उस नगरमें कुछ दिन रहे।

(१३) बिश्रामके दिन हम नगरके बाहर नदीके तीरपर गये जहां प्रार्थना किई जाती थी और बैठके स्त्रियोंसे जो एकट्ठी हुई थीं बात करने लगे। (१४) और लुदिया नाम थुआतीरा नगरकी एक स्त्री बैजनी बस्त्र बेचनेहारी जो ईश्वरकी उपासना किया करती थी सुनती थी और प्रभुने उसका मन खोला कि वह पावलकी बातोंपर चित्त लगावे। (१५) और जब उसने और उसके घरानेने बपतिसमा लिया था तब उसने बिन्ती किई कि यदि आप लोगोंने मुझे प्रभुकी बिश्वासिनी जान लिई है तो मेरे घरमें आके रहिये और वह हमें मनाके ले गई।

(१६) जब हम प्रार्थनाको जाते थे तब एक दासी जिसे आगमबक्ता भूत लगा था हमको मिली जो आगमके कहनेसे अपने स्वामियोंके लिये बहुत कमा लाती थी। (१७) वह पावलके और हमारे पीछे आके पुकारने लगी कि ये मनुष्य सर्ब्बप्रधान ईश्वरके दास हैं जो हमें त्राणके मार्गकी कथा सुनाते हैं। (१८) उसने बहुत दिन यह किया परन्तु पावल अप्रसन्न हुआ और मुंह फेरके उस भूतसे कहा मैं तुझे यीशु ख्रीष्टके नामसे आज्ञा देता हूं कि उसमेंसे निकल आ और वह उसी घड़ी निकल आया।

(१९) जब उसके स्वामियोंने देखा कि हमारी कमाईकी

आशा गई है तब उन्होंने पावल और सीलाको पकड़के चौक में प्रधानोंके पास खींच लिया . (२०) और उन्हें अध्यक्षोंके पास लाके कहा ये मनुष्य जो यिहूदी हैं हमारे नगरके लोगों को व्याकुल करते हैं . (२१) और व्यवहारोंको प्रचार करते हैं जिन्हें ग्रहण करना अथवा मानना हमोंको जो रोमी हैं उचित नहीं है । (२२) तब लोग उनके बिरुद्ध एकट्ठे चढ़ आये और अध्यक्षोंने उनके कपड़े फाड़ डाले और उन्हें बेत मारनेको आज्ञा दिई . (२३) और उन्हें बहुत घायल करके बन्दीगृहमें डाला और बन्दीगृहके रक्षकको उन्हें यत्नसे रखनेकी आज्ञा दिई । (२४) उसने ऐसी आज्ञा पाके उन्हें भीतरकी कोठरीमें डाला और उनके पांव काठमें ठोंके ।

(२५) आधी रातको पावल और सीला प्रार्थना करते हुए ईश्वरका भजन गाते थे और बंधुए उनकी सुनते थे । (२६) तब अचांचक ऐसा बड़ा भुईंडोल हुआ कि बन्दीगृहकी नेवें हिलीं और तुरन्त सब द्वार खुल गये और सभोंके बंधन खुल पड़े । (२७) तब बन्दीगृहका रक्षक जागा और बन्दीगृहके द्वार खुले देखके खड्ग खींचा और अपने तईं मार डालनेपर था कि वह समझता था कि बंधुए लोग भाग गये हैं । (२८) परन्तु पावलने बड़े शब्दसे पुकारके कहा अपनेको कुछ दुःख न देना क्योंकि हम सब यहां हैं । (२९) तब वह दीपक मंगाके भीतर लपक गया और कंपित होके पावल और सीलाको दंडवत किई . (३०) और उनको बाहर लाके कहा हे प्रभुओ त्राण पानेको मुझे क्या करना होगा । (३१) उन्होंने कहा प्रभु यीशु ख्रीष्टपर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना त्राण पावेगा । (३२) और उन्होंने उसको और सभोंको जो उसके घरमें थे प्रभुका बचन सुनाया । (३३) और रातको उसी घड़ी उसने उनको लेके उनके घावोंको धोया और उसने और उसके सब लोगोंने तुरन्त

बपतिसमा लिया । (३४) तब उसने उन्हें अपने घरमें लाके उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत ईश्वरपर बिश्वास कियेसे आनन्दित हुआ ।

(३५) बिहान हुए अध्यक्षोंने प्यादोंके हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्योंको छोड़ देओ । (३६) तब बन्दीगृहके रक्षकने यह बातें पावलसे कह सुनाईं कि अध्यक्षोंने कहला भेजा है कि आप लोग छोड़ दिये जायें सो अब निकलके कुशलसे जाइये । (३७) परन्तु पावलने उनसे कहा उन्होंने हमें जो रोमी मनुष्य हैं दंडके योग्य ठहराये बिना लोगोंके आगे मारा और बन्दीगृह में डाला और अब क्या चुपकेसे हमें निकाल देते हैं . सो नहीं परन्तु आपही आके हमें बाहर ले जावें । (३८) प्यादोंने यह बातें अध्यक्षोंसे कह दिईं और वे यह सुनके कि रोमी हैं डर गये . (३९) और आके उन्हें मनाया और बाहर लाके बिन्ती किई कि नगरसे निकल जाइये । (४०) वे बन्दीगृहमेंसे निकल के लुदियाके यहां गये और भाइयोंको देखके उन्हें उपदेश देके चले गये ।

[थिसलोनिका नगरमें लोगोंका भिन्न भिन्न बिचार और प्रेरितोंका निकाला जाना । बिरेया नगरके लोगोंका पहिले सुबिचार पीछे बिरोध करना ।]

१७ अंफिपलि और अपल्लोनिया नगरोंसे होके वे थिस-लोनिका नगरमें आये जहां यिहूदियोंकी सभाका घर था । (२) और पावल अपनी रीतिपर उनके यहां गया और तीन बिश्रामवार उनसे धर्म्मपुस्तकमेंसे बातें किईं . (३) और यही खोल देता और समझाता रहा कि ख्रीष्टको दुःख भोगना और मृतकोंमेंसे जी उठना आवश्यक था और कि यह यीशु जिसकी कथा मैं तुम्हें सुनाता हूं वही ख्रीष्ट है । (४) तब उनमेंसे कितने जनोंने और भक्त यूनानियोंमेंसे बहुत लोगोंने और बहुतसी बड़ी बड़ी स्त्रियोंने मान लिया और पावल और

सीलासे मिल गये। (५) परन्तु न माननेहारे यिहूदियोंने डाह करके बाजारू लोगोंमेंसे कितने दुष्ट मनुष्योंको लिया और भोड़ लगाके नगरमें घूम मचाई और यासोनके घरपर चढ़ाई करके पावल और सीलाको लोगोंके पास लाने चाहा। (६) और उन्हें न पाके वे यह पुकारते हुए यासोनको और कितने भाइयोंको नगरके प्रधानोंके आगे खींच लाये कि ये लोग जिन्होंने जगतको उलटा पुलटा किया है यहां भी आये हैं। (७) और यासोनने उनकी पहुनई किई है और ये सब यह कहते हुए कि योशु नाम दूसरा राजा है कैसरकी आज्ञाओंके विरुद्ध करते हैं। (८) सो उन्होंने लोगोंको और नगरके प्रधानोंको जो यह बातें सुनते थे व्याकुल किया। (९) और उन्होंने यासोनसे और दूसरोंसे मुचलका लेके उन्हें छोड़ दिया।

(१०) तब भाइयोंने तुरन्त रातको पावल और सीलाको बिरेया नगरको भेजा और वे पहुंचके यिहूदियोंकी सभाके घरमें गये। (११) ये तो थिसलोनिकामेंके यिहूदियोंसे सुशील थे और उन्होंने सब भांतिसे तत्पर होके बचनको ग्रहण किया और प्रतिदिन धर्म्मपुस्तकमें ढूंढ़ते रहे कि यह बातें यूंहीं हैं कि नहीं। (१२) सो उनमेंसे बहुतोंने और यूनानीय कुलवन्ती स्त्रियोंमेंसे और पुरुषोंमेंसे बहुतेरोंने बिश्वास किया। (१३) परन्तु जब थिसलोनिकाके यिहूदियोंने जाना कि पावल बिरेयामें भी ईश्वरका बचन प्रचार करता है तब वे वहां भी आके लोगोंको उसकाने लगे। (१४) तब भाइयोंने तुरन्त पावलको बिदा किया कि वह समुद्रकी ओर जावे परन्तु सीला और तिमोथिय वहां रह गये। (१५) पावलके पहुंचानेहारे उसे आथीनी नगर तक लाये और सीला और तिमोथियके लिये उस पास बहुत शीघ्र जानेकी आज्ञा लेके बिदा हुए।

[आथीनी नगरके अरेयोपाग स्थानमें पावलका उपदेश।]

(१६) जब पावल आथीनीमें उनकी बाट जोहता था तब नगरको मूरतोंसे भरे हुए देखनेसे उसका मन भीतरसे उभड़ आया। (१७) सो वह सभाके घरमें यिहूदियों और भक्त लोगों से और प्रतिदिन चौकमें जो लोग मिलते थे उन्होंसे बातें करने लगा। (१८) तब इपिकूरीय और स्तोइकीय ज्ञानियोंमें से कितने उससे बिबाद करने लगे और कितने बोले यह बक-वादी क्या कहने चाहता है पर औरोंने कहा वह ऊपरी देवताओंका प्रचारक देख पड़ता है. क्योंकि वह उन्हे यीशु का और जी उठनेका सुसमाचार सुनाता था। (१९) तब उन्हों ने उसे लेके अरेयोपाग नाम स्थानपर लाके कहा क्या हम जान सकते कि यह नया उपदेश जो तुझसे सुनाया जाता है क्या है। (२०) क्योंकि तू अनूठी बातें हमें सुनाता है सो हम जानने चाहते हैं कि इनका अर्थ क्या है। (२१) सब आथीनीय लोग और परदेशी जो वहां रहते थे किसी और काममें नहीं केवल नई-नई बातके कहने अथवा सुननेमें समय काटते थे।

(२२) तब पावलने अरेयोपागके बीचमें खड़ा होके कहा हे आथीनीय लोगो मैं आप लोगोंको सर्व्वथा बड़े देवपूजक देखता हूं। (२३) क्योंकि जब मैं फिरते हुए आप लोगोंकी पूज्य बस्तुओंको देखता था तब एक ऐसी बेदी भी पाई जिस पर लिखा हुआ था कि अनजाने ईश्वरकी. सो जिसे आप लोग बिन जाने पूजते हैं उसीकी कथा मैं आप लोगोंको सुनाता हूं। (२४) ईश्वर जिसने जगत और सब कुछ जो उस में है बनाया सो स्वर्ग और पृथिवीका प्रभु होके हाथके बनाये हुए मन्दिरोंमें बास नहीं करता है. (२५) और न किसी बस्तु का प्रयोजन रखनेसे मनुष्योंके हाथोंकी सेवा लेता है क्योंकि

वह आपही सभोंको जीवन और श्वास और सब कुछ देता है । (२६) उसने एकही लोहूसे मनुष्योंके सब जातिगण सारी पृथिवीपर बसनेको बनाये हैं और ठहराये हुए समयोंको और उनके निवासके सिवानोंको इसलिये बांधा है . (२७) कि वे परमेश्वरको ढूंढ़ें क्या जानें उसे टटोलके पावें और तौभी वह हममेंसे किसीसे दूर नहीं है . (२८) क्योंकि हम उसीसे जीते और फिरते और होते हैं जैसे आप लोगोंके यहांके कितने कवियोंने भी कहा है कि हम तो उसके बंश हैं । (२९) सो जो हम ईश्वरके बंश हैं तो यह समझना कि ईश्वरत्व सोने अथवा रूपे अथवा पत्थरके अर्थात मनुष्यकी कारीगरी और कल्पनाकी गढ़ी हुई बस्तुके समान है हमें उचित नहीं है । (३०) इसलिये ईश्वर अज्ञानताके समयोंसे आनाकानी करके अभी सर्ब्बत्र सब मनुष्योंको पश्चात्ताप करनेकी आज्ञा देता है । (३१) क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह उस मनुष्यके द्वारा जिसे उसने नियुक्त किया है धर्म्मसे जगतका न्याय करेगा और उसने उस मनुष्यको मृतकोंमेंसे उठाके सभोंको निश्चय कराया है ।

(३२) मृतकोंके जो उठनेकी बात सुनके कितने ठट्ठा करने लगे और कितने बोले हम इसके विषयमें तुझसे फिर सुनेंगे । (३३) इसपर पावल उनके बीचमेंसे चला गया । (३४) परन्तु कई एक मनुष्य उससे मिल गये और बिश्वास किया जिनमें दियोनुसिय अरेयोपागी था और दामरी नाम एक स्त्री और उनके संग कितने और लोग ।

[पावलका करिन्थ नगरमें सुसमाचार प्रचार करना । उसका अनेक नगरों और देशोंमें फिरके यिरूशलीमको लौटना ।]

१८ इसके पीछे पावल आथीनीसे निकलके करिन्थ नगरमें आया । (२) और अकूला नाम पन्त देशका एक

यिहूदी था जो उन दिनोंमें इतालिया देशसे आया था इस लिये कि क्लौदियने सब यिहूदियोंको रोम नगरसे निकल जानेकी आज्ञा दिई थी. पावल उसको और उसकी स्त्री प्रिस्कीलाको पाके उनके यहां गया। (३) और उसका और उनका एकही उद्यम था इसलिये वह उनके यहां रहके कमाता था क्योंकि तम्बू बनाना उनका उद्यम था। (४) परन्तु हर एक बिश्रामवार वह सभाके घरमें बातें करके यिहूदियों और यूनानियोंको भी समझाता था। (५) जब सीला और तिमोथिय माकिदोनियासे आये तब पावल आत्माके बशमें होके यिहूदियोंको साक्षी देता था कि योशु तो ख्रीष्ट है। (६) परन्तु जब वे बिरोध और निन्दा करने लगे तब उसने कपड़े झाड़के उनसे कहा तुम्हारा लोहू तुम्हारेही सिरपर होय. मैं निर्दोष हूं. अबसे मैं अन्यदेशियोंके पास जाऊंगा। (७) और वहांसे जाके वह युस्त नाम ईश्वरके एक उपासकके घरमें आया जिसका घर सभाके घरसे लगा हुआ था। (८) तब सभाके अध्यक्ष क्रीस्पने अपने सारे घराने समेत प्रभुपर बिश्वास किया और करिन्थियोंमेंसे बहुत लोग सुनके बिश्वास करते और बपतिसमा लेते थे। (९) और प्रभुने रातको दर्शनके द्वारा पावलसे कहा मत डर परन्तु बात कर और चुप मत रह। (१०) क्योंकि मैं तेरे संग हूं और कोई तुझपर चढ़ाई न करेगा कि तुझे दुःख देवे क्योंकि इस नगरमें मेरे बहुत लोग हैं। (११) सो वह उन्होंमें ईश्वरका बचन सिखाते हुए डेढ़ बरस रहा।

(१२) जब गालियो आखाया देशका प्रधान था तब यिहूदी लोग एक चित्त होकर पावलपर चढ़ाई करके उसे बिचार आसनके आगे लाये. (१३) और बोले यह तो मनुष्योंको व्यवस्थाके बिपरीत रीतिसे ईश्वरको उपासना करनेको समझाता है। (१४) ज्योंही पावल मुंह खोलनेपर था त्योंही गालियोने

यिहूदियोंसे कहा हे यिहूदियो जो यह कोई कुकर्म्म अथवा बुरी कुचाल होती तो उचित जानके मैं तुम्हारी सहता। (१५) परन्तु जो यह विवाद उपदेशके और नामोंके और तुम्हारे यहांकी व्यवस्थाके विषयमें है तो तुमही जानो क्योंकि मैं इन बातोंका न्यायी होने नहीं चाहता हूं। (१६) और उसने उन्हें बिचार आसनके आगेसे खदेड़ दिया। (१७) तब सारे यूनानियोंने सभाके अध्यक्ष सोस्थिनीको पकड़के बिचार आसनके साम्ने मारा और गालियोने इन बातोंकी कुछ चिन्ता न किई।

(१८) पावल और भी बहुत दिन रहा तब भाइयोंसे बिदा होके जहाजपर सुरिया देशको गया और उसके संग प्रिस्कीला और अकूला. उसने किंक्रिया नगरमें अपना सिर मुंड़वाया क्योंकि उसने मन्नत मानी थी। (१९) और उसने इफिस नगरमें पहुंचके उनको वहां छोड़ा और आपही सभाके घरमें प्रवेश करके यिहूदियोंसे बातें किईं। (२०) जब उन्होंने उससे बिन्ती किई कि हमारे संग कुछ दिन और रहिये तब उसने न माना. (२१) परन्तु यह कहके उनसे बिदा हुआ कि आनेवाला पर्ब्ब यिरूशलीममें करना मुझे बहुत अवश्य है परन्तु ईश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर लौट आऊंगा। (२२) तब उसने इफिससे खोल दिया और कैसरियामें आया तब (यिरूशलीमको) जाके मंडलीको नमस्कार किया और अन्तैखियाको गया। (२३) फिर कुछ दिन रहके वह निकला और एक ओरसे गलातिया और फ्रूगिया देशोंमें सब शिष्योंको स्थिर करता हुआ फिरा।

[अपल्लोका बर्णन।]

(२४) अपल्लो नाम सिकन्दरिया नगरका एक यिहूदी जो सुवक्ता पुरुष और धर्म्मपुस्तकमें सामर्थी था इफिसमें आया। (२५) उसने प्रभुके मार्गकी शिक्षा पाई थी और आत्मामें अनुरागी

होके प्रभुके विषयमेंकी बातें बड़े यत्नसे सुनाता और सिखाता था परन्तु केवल योहनके बपतिसमाकी बात जानता था। (२६) वह सभाके घरमें साहससे बात करने लगा पर अकूला और प्रिस्कीलाने उसकी सुनके उसे लिया और ईश्वरका मार्ग उसको और ठीक करके बताया। (२७) और वह आखायाको जाने चाहता था सो भाइयोंने उसे ढाढ़स देके शिष्योंके पास लिखा कि वे उसे ग्रहण करें और उसने पहुंचके अनुग्रहसे जिन्होंने बिश्वास किया था उन्होंकी बड़ी सहायता किई। (२८) क्योंकि योशु जो ख्रीष्ट है यह बात धर्म्मपुस्तकके प्रमाणों से बतलाके उसने बड़े यत्नसे लोगोंके आगे यिहूदियोंको निरुत्तर किया।

[पावलके सुसमाचार प्रचार करनेकी तीसरी यात्राका वृत्तान्त। इफिस नगरमें उसका उपदेश और बिबाद और अनेक आश्चर्य्य कर्म्मोंका वर्णन। दीमीत्रिय सुनारका पावलपर उपद्रव मचाना।]

१९ अपल्लोके करिन्थमें होते हुए पावल ऊपरके सारे देशमें फिरके इफिसमें आया. (२) और कितने शिष्यों को पाके उनसे कहा क्या तुमने बिश्वास करके पवित्र आत्मा पाया. उन्होंने उससे कहा हमने तो सुना भी नहीं कि पवित्र आत्मा दिया जाता है। (३) तब उसने उनसे कहा तो तुमने किस बातपर बपतिसमा लिया. उन्होंने कहा योहनके बपतिसमापर। (४) पावलने कहा योहनने पश्चात्तापका बपतिसमा देके अपने पीछे आनेवालेहीपर बिश्वास करनेको लोगोंसे कहा अर्थात ख्रीष्ट योशुपर। (५) यह सुनके उन्होंने प्रभु योशुके नामसे बपतिसमा लिया। (६) और जब पावलने उनपर हाथ रखे तब पवित्र आत्मा उनपर आया और वे अनेक बोलियां बोलने और भविष्यद्वाक्य कहने लगे। (७) ये सब मनुष्य बारह एक थे।

(८) तब पावल सभाके घरमें प्रवेश करके साहससे बात करने लगा और तीन मास ईश्वरके राज्यके विषयमेंकी बातें सुनाता और समझाता रहा । (९) परन्तु जब कितने लोग कठोर हो गये और नहीं मानते थे और लोगोंके आगे इस मार्गकी निन्दा करने लगे तब वह उनके पाससे चला गया और शिष्योंको अलग करके तुरान नाम किसी मनुष्यके विद्या-लयमें प्रतिदिन बातें किईं । (१०) यह दो बरस होता रहा यहांलों कि आशियाके निवासी यिहूदी और यूनानी भी सभों ने प्रभु यीशुका वचन सुना । (११) और ईश्वरने पावलके हाथों से अनोखे आश्चर्य्य कर्म्म किये . (१२) यहांलों कि उसके देहपरसे अंगोछे और रूमाल रोगियोंके पास पहुंचाये जाते थे और रोग उनसे जाते रहते थे और दुष्ट भूत उनमेंसे निकल जाते थे ।

(१३) तब यिहूदी लोगोंमेंसे जो इधर उधर फिरा करते और भूत निकालनेको किरिया देते थे कितने जन उन्होंपर जिनको दुष्ट भूत लगे थे प्रभु यीशुका नाम यह कहके लेने लगे कि यीशु जिसे पावल प्रचार करता है हम उसीकी तुम्हें किरिया देते हैं । (१४) स्कीवा नाम एक यिहूदीय प्रधान याजकके सात पुत्र थे जो यह करते थे । (१५) परन्तु दुष्ट भूतने उत्तर दिया कि यीशुको मैं जानता हूं और पावलको पहचानता हूं पर तुम कौन हो । (१६) और वह मनुष्य जिसे दुष्ट भूत लगा था उनपर लपकके और उन्हें बशमें लाके उन पर ऐसा प्रबल हुआ कि वे नंगे और घायल उस घरमेंसे भागे । (१७) और यह बात इफिसके निवासी यिहूदी और यूनानी भी सब जान गये और उन सभोंको डर लगा और प्रभु यीशुके नामकी महिमा किई जाती थी । (१८) और जिन्हों ने विश्वास किया था उन्होंमेंसे बहुतोंने आके अपने काम

मान लिये और बतलाये। (१९) टोना करनेहारोंमेंसे भी अनेकोंने अपनी पोथियां एकट्ठी करके सभोंके साम्ने जला दिईं और उन्होंका दाम जोड़ा गया तो पचास सहस्र रुपैये ठहरा। (२०) यूं पराक्रमसे प्रभुका बचन फैला और प्रबल हुआ।

(२१) जब यह बातें हो चुकीं तब पावलने आत्मामें माकिदोनिया और आखायाके बीचसे यिरूशलीम जानेको ठहराया और कहा कि वहां जानेके पीछे मुझे रोमको भी देखना होगा। (२२) सो जो उसकी सेवा करते थे उनमेंसे दोको अर्थात तिमोथिय और इरास्तको माकिदोनियामें भेजके वह आपही आशियामें कुछ दिन रह गया। (२३) उस समय इस मार्गके विषयमें बड़ा हुल्लड़ हुआ। (२४) क्योंकि दीमीत्रिय नाम एक सुनार अर्त्तिमीके मन्दिरकीचांदीकीमूरतेंबनानेसेकारीगरोंको बहुतकाम दिलाता था। (२५) उसने उन्होंको और ऐसी ऐसी बस्तुओंके कारीगरों को एकट्ठे करके कहा हे मनुष्यो तुम जानते हो कि इस काम से हमोंको सम्पत्ति प्राप्त होती है। (२६) और तुम देखते और सुनते हो कि इस पावलने यह कहके कि जो हाथोंसे बनाये जाते सो ईश्वर नहीं हैं केवल इफिसके नहीं परन्तु प्राय समस्त आशियाके बहुत लोगोंको समझाके भरमाया है। (२७) और हमोंको केवल यह डर नहीं है कि यह उद्यम निन्दित हो जाय परन्तु यह भी कि बड़ी देवी अर्त्तिमीका मन्दिर तुच्छ समझा जाय और [illegible] महिमा जिसे समस्त आशिया और जगत पूजता है नष्ट हो जाय। (२८) वे यह सुनके और क्रोधसे पूर्ण होके पुकारने [illegible] इफिसियोंकी अर्त्तिमीकी जय। (२९) और सारे नगरमें [illegible] गड़बड़ाहट हुई और लोग गायस और अरिस्तार्ख दो [illegible] जो पावलके संगी पथिक थे पकड़के एक [illegible] होके रंगशालामें

दौड़ गये । (३०) जब पावलने लोगोंके पास भीतर जाने चाहा तब शिष्योंने उसको जाने न दिया । (३१) आशियाके प्रधानोंमेंसे भी कितनोंने जो उसके मित्र थे उस पास भेजके उससे बिन्ती किई कि रंगशालामें जानेको जोखिम मत अपने पर उठाइये । (३२) सो कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे क्योंकि सभा घबराई हुई थी और अधिक लोग नहीं जानते थे हम किस कारण एकट्ठे हुए हैं । (३३) तब भीड़मेंसे कितनों ने सिकन्दरको जिसे यिहूदियोंने खड़ा किया था आगे बढ़ाया और सिकन्दर हाथसे सैन करके लोगोंके आगे उत्तर दिया चाहता था । (३४) परन्तु जब उन्होंने जाना कि वह यिहूदी है सबके सब एक शब्दसे दो घड़ीके अटकल इफिसियोंकी अर्त्तिमीकी जय पुकारते रहे । (३५) तब नगरके लेखकने लोगोंको शांत करके कहा हे इफिसी लोगो कौन मनुष्य है जो नहीं जानता कि इफिसियोंका नगर बड़ी देवी अर्त्तिमी का और जूपितरकी ओरसे गिरी हुई मूर्त्तिका टहलुआ है । (३६) सो जब कि इन बातोंका खंडन नहीं हो सकता है उचित है कि तुम शांत होओ और कोई काम उतावलीसे न करो । (३७) क्योंकि तुम इन मनुष्योंको लाये हो जो न पवित्र वस्तुओंके चोर न तुम्हारी देवीके निन्दक हैं । (३८) सो जो दोमीत्रियको और उसके संगके कारीगरोंको किसीसे बिबाद है तो बिचारके दिन होते हैं और प्रधान लोग हैं वे एक दूसरेपर नालिश करें । (३९) परन्तु जो तुम दूसरी बातोंके विषयमें कुछ पूछते हो तो व्यवहारिक सभामें निर्णय किया जायगा । (४०) क्योंकि जो आज हुई है उसके हेतुसे हमपर बलवेका दोष लगाये जानेका डर है इसलिये कि कोई कारण नहीं है जिस करके हम इस भीड़का उत्तर दे सकेंगे । (४१) और यह कहके उसने सभाको बिदा किया ।

[पावलका कई एक देशोंसे होके मिलीत नगरमें पहुंचना।]

२० जब हुल्लड़ थम गया तब पावल शिष्योंको अपने पास बुलाके और गले लगाके माकिदोनिया जानेको चल निकला। (२) उस सारे देशमें फिरके और बहुत बातोंसे उन्हें उपदेश देके वह यूनान देशमें आया। (३) और तीन मास रहके जब वह जहाजपर सुरियाको जानेपर था यिहूदी लोग उसकी घातमें लगे इसलिये उसने माकिदोनिया होके लौट जानेको ठहराया। (४) बिरेया नगरका सोपातर और थिसलोनियोंमेंसे अरिस्तार्ख और सिकुन्द और दर्बी नगरका गायस और तिमोथिय और आशिया देशके तुखिक और त्रोफिम आशियालों उसके संग हो लिये। (५) इन्होंने आगे जाके त्रोआमें हमोंकी बाट देखी। (६) और हम लोग अखमीरी रोटी के पर्ब्बके दिनोंके पीछे जहाजपर फिलिपीसे चले और पांच दिनमें त्रोआमें उनके पास पहुंचे जहां हम सात दिन रहे।

(७) अठवारेके पहिले दिन जब शिष्य लोग रोटी तोड़ने को एकट्ठे हुए तब पावलने जो अगले दिन चले जानेपर था उनसे बातें किईं और आधी राततों बात करता रहा। (८) जिस उपरौठी कोठरीमें वे एकट्ठे हुए थे उसमें बहुत दीपक बरते थे। (९) और उतुख नाम एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ भारी नींदसे झुक रहा था और पावलके बड़ी बेरलों बातें करते करते वह नींदसे झुकके तीसरी अटारीपर से नीचे गिर पड़ा और मूआ उठाया गया। (१०) परन्तु पावल उतरके उसपर औंधे पड़ गया और उसे गोदीमें लेके बोला मत धूम मचाओ क्योंकि उसका प्राण उसमें है। (११) तब ऊपर जाके और रोटी तोड़के और खाके और बड़ी बेरलों भोरतक बातचीत करके वह चला गया। (१२) और वे उस जवानको जीते ले आये और बहुत शांति पाई।

(१३) तब हम लोग आगेसे जहाजपर चढ़के आसस नगर को गये जहांसे हमें पावलको चढ़ा लेना था क्योंकि उसने यूं ठहराया था इसलिये कि आपही पैदल जानेवाला था । (१४) जब वह आससमें हमसे आ मिला तब हम उसे चढ़ाके मितुलीनी नगरमें आये । (१५) और वहांसे खोलके हम दूसरे दिन खीयो टापूके साम्हने पहुंचे और अगले दिन सामो टापूमें लगान किया फिर त्रोगुलिया नगरमें रहके दूसरे दिन मिलीत नगरमें आये । (१६) क्योंकि पावलने इफिसको एक ओर छोड़के जाना ठहराया इसलिये कि उसको आशियामें अबेर न लगे क्योंकि वह शीघ्र जाता था कि जो उससे बन पड़े तो पेंतिकोष्ट पर्ब्बके दिनलों यिरूशलोममें पहुंचे ।

[इफिसकी मंडलीके प्राचीनोंको उपदेश देना और बिदा होना ।]

(१७) मिलीतसे उसने लोगोंको इफिस नगर भेजके मंडलीके प्राचीनोंको बुलाया । (१८) जब वे उस पास आये तब उसने उनसे कहा तुम जानते हो कि पहिले दिनसे जो मैं आशिया में पहुंचा मैं हर समय क्योंकर तुम्हारे बीचमें रहा . (१९) कि बड़ी दीनताईसे और बहुत रो रोके और उन परीक्षाओंमें जो मुझपर यिहूदियोंकी कुमंत्रणासे पड़ीं मैं प्रभुकी सेवा करता रहा . (२०) और क्योंकर मैंने लाभकी बातोंमेंसे कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई और लोगोंके आगे और घर घर तुम्हें न सिखाई . (२१) कि यिहूदियों और यूनानियोंको भी मैं साक्षी देके ईश्वरके आगे पश्चात्ताप करनेकी और हमारे प्रभु यीशु खीष्टपर विश्वास करनेकी बात कहता रहा। (२२) और अब देखो मैं आत्मासे बंधा हुआ यिरूशलोम को जाता हूं और नहीं जानता हूं कि वहां मुझपर क्या पड़ेगा . (२३) केवल यही जानता हूं कि पवित्र आत्मा नगर नगर साक्षी देता है कि बंधन और क्लेश मेरे लिये धरे हैं ।

(२४) परन्तु मैं किसी बातकी चिन्ता नहीं करता हूं और न अपना प्राण इतना बहुमूल्य जानता हूं जितना आनन्दसे अपनी दौड़को और ईश्वरके अनुग्रहके सुसमाचारपर साक्षी देनेकी सेवकाईको जो मैंने प्रभु यीशुसे पाई है पूरी करना बहुमूलय है । (२५) और अब देखो मैं जानता हूं कि तुम सब जिन्होंमें मैं ईश्वरके राज्यकी कथा सुनाता फिरा हूं मेरा मुंह फिर नहीं देखोगे । (२६) इसलिये मैं आजके दिन ईश्वरको साक्षी रखके तुमसे कहता हूं कि मैं सभोंके लोहूसे निर्दोष हूं । (२७) क्योंकि मैंने ईश्वरके सारे मतमेंसे कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई । (२८) सो अपने विषयमें और सारे झुंडके विषयमें जिसके बीचमें पवित्र आत्माने तुम्हें रखवाले ठहराये हैं सचेत रहो कि तुम ईश्वरकी मंडलीकी चरवाही करो जिसे उसने अपने लोहूसे मोल लिया है । (२९) क्योंकि मैं यह जानता हूं कि मेरे जानेके पीछे क्रूर हुंडार तुम्होंमें प्रवेश करेंगे जो झुंडको न छोड़ेंगे । (३०) तुम्हारे ही बीचमेंसे भी मनुष्य उठेंगे जो शिष्योंको अपने पीछे खींच लेनेको टेढ़ी बातें कहेंगे । (३१) इसलिये मैंने जो तीन बरस रात और दिन रो रोके हर एकको चिताना न छोड़ा यह स्मरण करते हुए जागते रहो । (३२) और अब हे भाइयो मैं तुम्हें ईश्वरको और उसके अनुग्रहके बचनको सौंप देता हूं जो तुम्हें सुधारने और सब पवित्र किये हुए लोगोंके बीचमें अधिकार देने सकता है । (३३) मैंने किसीके रूपे अथवा सोने अथवा बस्त्रका लालच नहीं किया । (३४) तुम आपही जानते हो कि इन हाथोंने मेरे प्रयोजनकी और मेरे संगियोंकी टहल किई । (३५) मैंने सब बातें तुम्हें बताईं कि इस रीतिसे परिश्रम करते हुए दुर्बलोंका उपकार करना और प्रभु यीशुकी बातें स्मरण करना चाहिये कि उसने कहा लेनेसे देना अधिक धन्य है ।

(३६) यह बातें कहके उसने अपने घुटने टेकके उन सभों के संग प्रार्थना किई । (३७) तब वे सब बहुत रोये और पावल के गलेमें लिपटके उसे चूमने लगे । (३८) वे सबसे अधिक उस बातसे शोक करते थे जो उसने कही थी कि तुम मेरा मुंह फिर नहीं देखोगे . तब उन्होंने उसे जहाजलों पहुंचाया ।

[पावल और उसके संगियोंका यिरूशलीममें पहुंचना और मन्दिरमें पावलका पकड़वाया जाना ।]

२१ जब हमने उनसे अलग होके जहाज खोला तब सीधे सीधे कौस टापूको चले और दूसरे दिन रोद टापूको और वहांसे पातारा नगरपर पहुंचे । (२) और एक जहाज को जो फैनीकियाको जाता था पाके हमने उसपर चढ़के खोल दिया । (३) जब कुप्रस टापू देखनेमें आया तब हमने उसे बायें हाथ छोड़ा और सुरियाको जाके सोर नगरमें लगान किया क्योंकि जहाजकी बोझाई वहां उतरनेपर थी । (४) और वहांके शिष्योंको पाके हम वहां सात दिन रहे . उन्होंने आत्माकी शिक्षासे पावलसे कहा यिरूशलीमको न जाइये । (५) जब हम उन दिनोंको पूरे कर चुके तब निकलके चलने लगे और सभोंने स्त्रियों और बालकों समेत हमें नगरके बाहर लों पहुंचाया और हमोंने तीरपर घुटने टेकके प्रार्थना किई । (६) तब एक दूसरेको गले लगाके हम तो जहाजपर चढ़े और वे अपने अपने घर लौटे ।

(७) तब हम सोरसे जलयात्रा पूरी करके तलिमाई नगर में पहुंचे और भाइयोंको नमस्कार करके उनके संग एक दिन रहे । (८) दूसरे दिन हम जो पावलके संगके थे वहांसे चलके कैसरियामें आये और फिलिप सुसमाचार प्रचारकके घरमें जो सातोंमेंसे एक था प्रवेश करके उसके यहां रहे । (९) इस मनुष्यको चार कुंवारी पुत्रियां थीं जो भविष्यद्वाणी कहा करती थीं ।

(१०) जब हम बहुत दिन रह चुके तब आगाब नाम एक भविष्यद्वक्ता यिहूदियासे आया। (११) वह हमारे पास आके और पावलका पटुका लेके और अपने हाथ और पांव बांधके बोला पवित्र आत्मा यह कहता है कि जिस मनुष्यका यह पटुका है उसको यिरूशलीममें यिहूदी लोग यूंहीं बांधेंगे और अन्यदेशियोंके हाथ सौंपेंगे। (१२) जब हमने यह बातें सुनीं तब हम लोग और उस स्थानके रहनेहारे भी पावलसे बिन्ती करने लगे कि यिरूशलीमको न जाइये। (१३) परन्तु उसने उत्तर दिया कि तुम क्या करते हो कि रोते और मेरा मन चूर करते हो. मैं तो प्रभु यीशुके नामके लिये यिरूशलीममें केवल बांधे जानेको नहीं परन्तु मरनेको भी तैयार हूं। (१४) जब वह नहीं मानता था तब हम यह कहके चुप हुए कि प्रभुकी इच्छा पूरी होवे।

(१५) इन दिनोंके पीछे हम लोग बाध छादके यिरूशलीम को जाने लगे। (१६) कैसरियाके शिष्योंमेंसे भी कितने हमारे संग हो लिये और मनासोन नाम कुप्रसके एक प्राचीन शिष्य के पास जिसके यहां हम पाहुन होवें हमें पहुंचाया। (१७) जब हम यिरूशलीममें पहुंचे तब भाइयोंने हमें आनन्द से ग्रहण किया।

(१८) दूसरे दिन पावल हमारे संग याकूबके यहां गया और सब प्राचीन लोग आये। (१९) तब उसने उनको नमस्कार कर जो जो कर्म्म ईश्वरने उसको सेवकाईके द्वारासे अन्य-देशियोंमें किये थे उन्हें एक एक करके बर्णन किया। (२०) उन्होंने सुनके प्रभुकी स्तुति किई और उससे कहा हे भाई आप देखते हैं कितने सहस्रों यिहूदियोंने बिश्वास किया है और सब व्यवस्थाके लिये धुन लगाये हैं। (२१) और उन्होंने आप के विषयमें सुना है कि आप अन्यदेशियोंके बीचमेंके सब

यिहूदियोंके तईं मूसाको त्याग करनेको सिखाते हैं और कहते हैं कि अपने बालकोंका खतना मत करो और न व्यवहारों पर चलो। (२२) सो क्या है कि बहुत लोग निश्चय एकट्ठे होंगे क्योंकि वे सुनेंगे कि आप आये हैं। (२३) इसलिये यह जो हम आपसे कहते हैं कीजिये . हमारे यहां चार मनुष्य हैं जिन्होंने मन्नत मानी है। (२४) उन्हें लेके उनके संग अपने को शुद्ध कीजिये और उनके लिये खर्चा दीजिये कि वे सिर मुंड़ावें तब सब लोग जानेंगे कि जो बातें हमने इसके विषय में सुनी थीं सो कुछ नहीं है परन्तु वह आप भी व्यवस्थाको पालन करते हुए उसके अनुसार चलता है। (२५) परन्तु जिन अन्यदेशियोंने बिश्वास किया है हमने उनके विषयमें यही ठहराके लिख भेजा कि वे ऐसी कोई बात न मानें केवल मूरतोंके आगे बलि किये हुएसे और लोहूसे और गला घोंटे हुओंके मांससे और व्यभिचारसे बचे रहें। (२६) तब पावलने उन मनुष्योंको लेके दूसरे दिन उनके संग शुद्ध होके मन्दिरमें प्रवेश किया और सन्देश दिया कि शुद्ध होनेके दिन अर्थात उनमेंसे हर एकके लिये चढावा चढ़ाये जाने तकके दिन कब पूरे होंगे।

(२७) जब वे सात दिन पूरे होने पर थे तब आशियाके यिहूदियोंने पावलको मन्दिरमें देखके सब लोगोंको उस्काया और उसपर हाथ डालके पुकारा . (२८) हे इस्रायेली लोगो सहायता करो यही वह मनुष्य है जो इन लोगोंके और व्यवस्थाके और इस स्थानके बिरुद्ध सर्व्वत्र सब लोगोंको उपदेश देता है . हां और उसने यूनानियोंको मन्दिरमें लाके इस पवित्र स्थानको अपवित्र भी किया है। (२९) उन्होंने तो इसके पहिले त्रोफिम इफिसीको पावलके संग नगरमें देखा था और समझते थे कि वह उसको मन्दिरमें लाया.

था। (३०) तब सारे नगरमें घबराहट हुई और लोग एकट्ठे दौड़े और पावलको पकड़के उसे मन्दिरके बाहर खींच लाये और तुरन्त द्वार मून्दे गये।

(३१) जब वे उसे मार डालने चाहते थे तब पलटनके सहस्र-पतिको सन्देश पहुंचा कि सारे यिरूशलीममें घबराहट हुई है। (३२) तब वह तुरन्त योद्धाओं और शतपतियोंको लेके उन पास दौड़ा और उन्होंने सहस्रपतिको और योद्धाओंको देखके पावलको मारना छोड़ दिया। (३३) तब सहस्रपतिने निकट आके उसे लेके आज्ञा किई कि दो जंजीरोंसे बांधा जाय और पूछने लगा यह कौन है और क्या किया है। (३४) परन्तु भीड़में कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे और जब सहस्रपति हुल्लड़के मारे निश्चय नहीं जान सकता था तब पावलको गढ़में ले जानेकी आज्ञा किई। (३५) जब वह सीढ़ीपर पहुंचा ऐसा हुआ कि भीड़की बरियाईके कारण योद्धाओंने उसे उठा लिया। (३६) क्योंकि लोगोंकी भीड़ उसे दूर कर पुकारती हुई पीछे आती थी।

(३७) जब पावल गढ़के भीतर पहुंचाये जानेपर था तब उसने सहस्रपतिसे कहा जो आपसे कुछ कहनेकी मुझे आज्ञा होय तो कहूं. उसने कहा क्या तू यूनानीय भाषा जानता है। (३८) तो क्या तू वह मिसरी नहीं है जो इन दिनोंके आगे बलवा करके कटारबन्ध लोगोंमेंसे चार सहस्र मनुष्योंको जंगलमें ले गया। (३९) पावलने कहा मैं तो तारसका एक यिहूदी मनुष्य हूं. किलिकियाके एक प्रसिद्ध नगरका निवासी हूं. और मैं आपसे बिन्ती करता हूं कि मुझे लोगोंसे बात करने दीजिये। (४०) जब उसने आज्ञा दिई तब पावलने सीढ़ी पर खड़ा होके लोगोंको हाथसे सैन किया. जब वे बहुत चुप हुए तब उसने इब्रीय भाषामें उनसे बात किई।

[यिहूदी लोगोंसे पावलकी कथा ।]

२२ उसने कहा हे भाइयो और पितरो मेरा उत्तर जो मैं आप लोगोंके आगे अब देता हूं सुनिये । (२) वे यह सुनके कि वह हमसे इब्रीय भाषामें बात करता है और भी चुप हुए । (३) तब उसने कहा मैं तो यिहूदी मनुष्य हूं जो किलिकियाके तारस नगरमें जन्मा पर इस नगरमें पाला गया और गमलियेलके चरणोंके पास पितरोंकी व्यवस्थाको ठीक रीतिपर सिखाया गया और जैसे आज तुम सब हो ऐसाही ईश्वरके लिये धुन लगाये था । (४) और मैंने इस पन्थके लोगोंको मृत्युलों सताया कि पुरुषों और स्त्रियोंको भी बांध बांधके बन्दीगृहोंमें डालता था । (५) इसमें महायाजक और सब प्राचीन लोग मेरे साक्षी हैं जिनसे मैं भाइयोंके नामपर चिट्ठियां पाके दमेसकको जाता था कि जो वहां थे उन्हें भी ताड़ना पानेको बांधे हुए यिरूशलीममें लाऊं । (६) परन्तु जब मैं जाता था और दमेसकके समीप पहुंचा तब दो पहरके निकट अचांचक बड़ी ज्योति स्वर्गसे मेरी चारों ओर चमकी । (७) और मैं भूमिपर गिरा और एक शब्द सुना जो मुझसे बोला हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता है । (८) मैंने उत्तर दिया कि हे प्रभु तू कौन है . उसने मुझसे कहा मैं योशु नासरी हूं जिसे तू सताता है । (९) जो लोग मेरे संग थे उन्होंने वह ज्योति देखी और डर गये परन्तु जो मुझसे बोलता था उसकी बात न सुनी । (१०) तब मैंने कहा हे प्रभु मैं क्या करूं . प्रभुने मुझसे कहा उठके दमेसकको जा और जो जो काम करनेको तुझे ठहराया गया है सबके विषयमें वहां तुझसे कहा जायगा । (११) जब उस ज्योतिके तेजके मारे मुझे नहीं सूझता था तब मैं अपने संगियोंके हाथ पकड़े हुए दमेसकमें आया । (१२) और अननियाह नाम व्यवस्थाके अनुसार एक भक्त मनुष्य जो वहां

के रहनेहारे सब यिहूदियोंके यहां सुख्यात था मेरे पास आया. (१३) और निकट खड़ा होके मुझसे कहा हे भाई शावल अपनी दृष्टि पा और उसी घड़ी मैंने उसपर दृष्टि किई। (१४) तब उसने कहा हमारे पितरोंके ईश्वरने तुझे ठहराया है कि तू उसकी इच्छाको जाने और उस धर्म्मीको देखे और उसके मुंहसे बात सुने। (१५) क्योंकि जो बातें तूने देखी और सुनी हैं उनके विषयमें तू सब मनुष्योंके आगे उसका साक्षी होगा। (१६) और अब तू क्यों बिलंब करता है. उठके बपतिसमा ले और प्रभु के नामकी प्रार्थना करके अपने पापोंको धो डाल। (१७) जब मैं यिरूशलीमको फिर आया ज्योंही मन्दिरमें प्रार्थना करता था त्योंही बेसुध हुआ. (१८) और उसको देखा कि मुझसे बोलता था शीघ्रता करके यिरूशलीमसे झट निकल जा क्योंकि वे मेरे विषयमें तेरी साक्षी ग्रहण न करेंगे। (१९) मैंने कहा हे प्रभु वे जानते हैं कि तुझपर बिश्वास करनेहारोंको मैं बन्दीगृहमें डालता और हर एक सभामें मारता था। (२०) और जब तेरे साक्षी स्तिफानका लोहू बहाया जाता था तब मैं भी आप निकट खड़ा था और उसके मारे जानेमें सम्मति देता था और उसके घातकोंके कपड़ोंकी रखवाली करता था। (२१) तब उसने मुझसे कहा चला जा क्योंकि मैं तुझे अन्यदेशियों के पास दूर भेजूंगा।

(२२) लोगोंने इस बातलों उसकी सुनी तब ऊंचे शब्दसे पुकारा कि ऐसे मनुष्यको पृथिवीपरसे दूर कर कि उसका जीता रहना उचित न था। (२३) जब वे चिल्लाते और कपड़े फेंकते और आकाशमें धूल उड़ाते थे. (२४) तब सहस्रपतिने उसको गढ़में ले जानेकी आज्ञा किई और कहा उसे कोड़े मारके जांचो कि मैं जानूं लोग किस कारणसे उसके बिरुद्ध ऐसा पुकारते हैं। (२५) जब वे पावलको चमड़ेके बंधोंसे बांधते थे तब उसने

शतपतिसे जो खड़ा था कहा क्या मनुष्यको जो रोमी है और दंडके योग्य नहीं ठहराया गया है कोड़े मारना तुम्हें उचित है। (२६) शतपतिने यह सुनके सहस्रपतिके पास जाके कह दिया कि देखिये आप क्या किया चाहते हैं यह मनुष्य तो रोमी है। (२७) तब सहस्रपतिने उस पास आके उससे कहा मुझसे कह क्या तू रोमी है . उसने कहा हां। (२८) सहस्र-पतिने उत्तर दिया कि मैंने यह रोमनिवासीको पदवी बहुत रुपैयोंपर मोल लिई . पावलने कहा परन्तु मैं ऐसाही जन्मा। (२९) तब जो लोग उसे जांचनेपर थे सो तुरन्त उसके पाससे हट गये और सहस्रपति भी यह जानके कि रोमी है और मैंने उसे बांधा है डर गया।

[पावलका यिहूदियोंकी न्यायसभाके आगे खड़ा किया जाना।]

(३०) और दूसरे दिन वह निश्चय जानने चाहता था कि उसपर यिहूदियोंसे क्यों दोष लगाया जाता है इसलिये उसको बंधनोंसे खोल दिया और प्रधान याजकोंको और न्याइयोंकी सारी सभाको आनेकी आज्ञा दिई और पावलको लाके उनके आगे खड़ा किया।

२३ पावलने न्याइयोंकी सभाकी ओर ताकके कहा हे भाइयो मैं इस दिनलों सर्व्वथा ईश्वरके आगे शुद्ध मन से चला हूं। (२) परन्तु अननियाह महायाजकने उन लोगों को जो उसके निकट खड़े थे उसके मुंहमें मारनेकी आज्ञा दिई। (३) तब पावलने उससे कहा हे चूना फेरी हुई भीत्ति ईश्वर तुझे मारेगा . क्या तू मुझे व्यवस्थाके अनुसार बिचार करनेको बैठा है और व्यवस्थाको लंघन करता हुआ मुझे मारनेकी आज्ञा देता। (४) जो लोग निकट खड़े थे सो बोले क्या तू ईश्वरके महायाजककी निन्दा करता है। (५) पावलने कहा हे भाइयो मैं नहीं जानता था कि यह महायाजक है.

क्योंकि लिखा है अपने लोगोंके प्रधानको बुरा मत कह। (६) तब पावलने यह जानके कि एक भाग सदूकी और एक भाग फरोशी हैं सभामें पुकारा हे भाइयो मैं फरीशी और फरीशीका पुत्र हूं मृतकोंकी आशा और जी उठनेके विषयमें मेरा विचार किया जाता है। (७) जब उसने यह बात कही तब फरीशियों और सदूकियोंमें बिबाद हुआ और सभा बिभिन्न हुई। (८) क्योंकि सदूकी कहते हैं कि न मृतकोंका जी उठना न दूत न आत्मा है परन्तु फरीशी दोनोंको मानते हैं। (९) तब बड़ी धूम मची और जो अध्यापक फरीशियोंके भागके थे सो उठके लड़ते हुए कहने लगे कि हम लोग इस मनुष्यमें कुछ बुराई नहीं पाते हैं परन्तु यदि कोई आत्मा अथवा दूत उससे बोला है तो हम ईश्वरसे न लड़ें। (१०) जब बहुत बिबाद हुआ तब सहस्रपतिको शंका हुई कि पावल उनसे फाड़ न डाला जाय इसलिये पलटनको आज्ञा दिई कि जाके उस को उनके बीचमेंसे छीनके गढ़में लाओ।

(११) उस रात प्रभुने उसके निकट खड़े हो कहा हे पावल ढाढ़स कर क्योंकि जैसा तूने यिरूशलीममें मेरे बिषयमेंकी साक्षी दिई है तैसाही तुझे रोममें भी साक्षी देना होगा।

[चालीस जनोंका उसे मार डालनेका नियम बांधना। पावलका फीलिक्स अध्यक्षके पास भेजा जाना।]

(१२) बिहान हुए कितने यिहूदियोंने एका करके प्रण बांधा कि जबलों हम पावलको मार न डालें तबलों जो खायें अथवा पीयें तो हमें धिक्कार है। (१३) जिन्होंने आपसमें यह किरिया खाई थी सो चालीस जनोंसे अधिक थे। (१४) वे प्रधान याजकों और प्राचीनोंके पास आके बोले हमने यह प्रण बांधा है कि जबलों हम पावलको मार न डालें तबलों यदि कुछ चीखें भी तो हमें धिक्कार है। (१५) इसलिये अब आप लोग न्याइयोंको

सभा समेत सहस्रपतिको समझाइये कि हम पावलके विषयमें की बातें और ठीक करके निर्णय करेंगे सो आप उसे कल हमारे पास लाइये. परन्तु उसके पहुंचनेके पहिलेही हम लोग उसे मार डालनेको तैयार हैं।

(१६) परन्तु पावलके भांजेने उनका घातमें लगना सुना और आके गढ़में प्रवेश कर पावलको सन्देश दिया। (१७) पावलने शतपतियोंमेंसे एकको अपने पास बुलाके कहा इस जवान को सहस्रपतिके पास ले जाइये क्योंकि उसको उससे कुछ कहना है। (१८) सो उसने उसे ले सहस्रपतिके पास लाके कहा पावल बन्धुवेने मुझे अपने पास बुलाके बिन्ती किई कि इस जवानको सहस्रपतिसे कुछ कहना है उसे उस पास ले जाइये। (१९) सहस्रपतिने उसका हाथ पकड़के और एकांतमें जाके पूछा तुझको जो मुझसे कहना है सो क्या है। (२०) उसने कहा यिहूदियोंने आपसे यही बिन्ती करनेको आपसमें ठहराया है कि हम पावलके विषयमें कुछ बात और ठीक करके पूछेंगे सो आप उसे कल न्याइयोंकी सभामें लाइये। (२१) परन्तु आप उन की न मानिये क्योंकि उनमेंसे चालीससे अधिक मनुष्य उसकी घातमें लगे हैं जिन्होंने यह प्रण बांधा है कि जबलों हम पावल को मार न डालें तबलों जो खायें अथवा पीयें तो हमें धिक्कार है और अब वे तैयार हैं और आपकी प्रतिज्ञाकी आस देख रहे हैं।

(२२) सो सहस्रपतिने यह आज्ञा देके कि किसीसे मत कह कि मैंने यह बातें सहस्रपतिको बताई हैं जवानको बिदा किया। (२३) और शतपतियोंमेंसे दोको अपने पास बुलाके उसने कहा दो सौ योद्धाओं और सत्तर घुड़चढ़ों और दो सौ भालैतोंको पहर रात बीते कैसरियाको जानेके लिये तैयार करो। (२४) और वाहन तैयार करो कि वे पावलको बैठाके फीलिक्स अध्यक्षके पास बचाके ले जावें।

(२५) उसने इस प्रकारकी चिट्ठी भी लिखी । (२६) क्लौदिय लुसिय महामहिमन अध्यक्ष फीलिक्सको नमस्कार। (२७) इस मनुष्यको जो यिहूदियोंसे पकड़ा गया था और उन्से मार डाले जानेपर था मैंने यह सुनके कि वह रोमी है पलटनके संग जा पहुंचके छुड़ाया। (२८) और मैं जानने चाहता था कि वे उसपर किस कारणसे दोष लगाते हैं इसलिये उसे उनकी न्याइयोंकी सभामें लाया । (२९) तब मैंने यह पाया कि उनकी व्यवस्थाके बिबादोंके विषयमें उसपर दोष लगाया जाता है परन्तु बध किये जाने अथवा बांधे जानेके योग्य कोई दोष उसमें नहीं है। (३०) जब मुझे बताया गया कि यिहूदी लोग इस मनुष्यकी घातमें लगेंगे तब मैंने तुरन्त उसको आपके पास भेजा और दोषदायकोंको भी आज्ञा दिई कि उसके बिरुद्ध जो बात होय उसे आपके आगे कहें . आगे शुभ ।

(३१) योद्धा लोग जैसे उन्हें आज्ञा दिई गई थी तैसे पावलको लेके रातहीको अन्तिपात्री नगरमें लाये । (३२) दूसरे दिन वे गढ़को लौटे और घुड़चढ़ोंको उसके संग जाने दिया। (३३) उन्होंने कैसरियामें पहुंचके और अध्यक्षको चिट्ठी देके पावलको भी उसके आगे खड़ा किया । (३४) अध्यक्षने पढ़के पूछा यह कौन प्रदेशका है और जब जाना कि किलिकियाका है . (३५) तब कहा जब तेरे दोषदायक भी आवें तब मैं तेरी सुनूंगा . और उसने उसे हेरोदके राजभवनमें पहरेमें रखनेकी आज्ञा किई ।

[फीलिक्सके आगे यिहूदियोंका पावलपर नालिश करना और पावलका उत्तर ।]

२४ पांच दिनके पीछे अननियाह महायाजक प्राचीनोंके और तर्तूल नाम किसी सुबक्ताके संग आया और उन्होंने अध्यक्षके आगे पावलपर नालिश किई । (२) जब पावल बुलाया गया तब तर्तूल यह कहके उसपर दोष लगाने लगा कि हे

महामहिमन फीलिक्स आपके द्वारा हमारा बहुत कल्याण जो होता है और आपकी प्रवीणतासे इस देशके लोगोंके लिये कितने काम जो सुफल होते हैं. (३) इसको हम लोग सर्ब्बथा और सर्व्वत्र बहुत धन्य मानके ग्रहण करते हैं। (४) परन्तु जिस्तें मेरी ओरसे आपको अधिक बिलंब न होय मैं बिन्ती करता हूं कि आप अपनी सुशीलतासे हमारी संक्षेप कथा सुन लीजिये। (५) क्योंकि हमने यही पाया है कि यह मनुष्य एक मरीके ऐसा है और जगतके सारे यिहूदियोंमें बलवा करानेहारा और नासरियोंके कुपन्थका प्रधान। (६) उसने मन्दिर को भी अपवित्र करनेकी चेष्टा किई और हमने उसे पकड़के अपनी व्यवस्थाके अनुसार बिचार करने चाहा। (७) परन्तु लुसिय सहस्रपतिने आके बड़ी बरियाईसे उसको हमारे हाथोंसे छीन लिया और उसके दोषदायकोंको आपके पास आनेकी आज्ञा दिई। (८) उसीसे आप पूछके इन सब बातोंके विषयमें जिनसे हम उसपर दोष लगाते हैं आपही जान सकेंगे॥ (९) यिहूदियोंने भी उसके संग लगके कहा यह बातें यूंहीं हैं॥

(१०) तब पावलने जब अध्यक्षने बोलनेका सैन उससे किया तब उत्तर दिया कि मैं यह जानके कि आप बहुत बरसोंसे इस देशके लोगोंके न्यायी हैं औरही साहससे अपने विषयमें की बातोंका उत्तर देता हूं। (११) क्योंकि आप जान सकते हैं कि जबसे मैं यिरूशलीममें भजन करनेको आया मुझे बारह दिनसे अधिक नहीं हुए। (१२) और उन्होंने मुझे न मन्दिरमें न सभाके घरोंमें न नगरमें किसीसे बिबाद करते हुए अथवा लोगोंकी भीड़ लगाते हुए पाया। (१३) और न वे उन बातोंको जिनके विषयमें वे अब मुझपर दोष लगाते हैं ठहरा सकते हैं। (१४) परन्तु यह मैं आपके आगे मान लेता हूं कि जिस मार्गको वे कुपन्थ कहते हैं उसीकी रीतिपर मैं अपने पितरोंके

ईश्वरकी सेवा करता हूं और जो बातें व्यवस्थामें औ भविष्य-द्वक्ताओंके पुस्तकमें लिखी हैं उन सभोंका बिश्वास करता हूं. (१५) और ईश्वरसे आशा रखता हूं जिसे ये भी आप रखते हैं कि धर्म्मी और अधर्म्मी भी सब मृतकोंका जी उठना होगा। (१६) इससे मैं आप भी साधना करता हूं कि ईश्वरकी और मनुष्योंकी ओर मेरा मन सदा निर्दोष रहे। (१७) बहुत बरसोंके पीछे मैं अपने लोगोंको दान देनेको और चढ़ावा चढ़ानेको आया। (१८) इसमें इन्होंने नहीं पर आशियाके कितने यिहूदियोंने मुझे मन्दिरमें शुद्ध किये हुए न भीड़के संग और न धूमधामके संग पाया। (१९) उनको उचित था कि जो मेरे विरुद्ध उनकी कोई बात होय तो यहां आपके आगे होते और मुझपर दोष लगाते। (२०) अथवा येही लोग आपही कहें कि जब मैं न्याइयोंकी सभाके आगे खड़ा था तब उन्होंने मुझमें कौनसा कुकर्म्म पाया. (२१) केवल इसी एक बातके विषयमें जो मैंने उनके बीचमें खड़ा होके पुकारा कि मृतकोंके जी उठनेके बिषयमें मेरा बिचार आज तुमसे किया जाता है।

(२२) यह बातें सुनके फीलिक्सने जो इस मार्गकी बातें बहुत ठीक करके बूझता था उन्हें यह कहके टाल दिया कि जब लुसिय सहस्रपति आवे तब मैं तुम्हारे विषयमेंकी बातें निर्णय करूंगा। (२३) और उसने शतपतिको आज्ञा दिई कि पावलकी रक्षा कर पर उसको अवकाश दे और उसके मित्रोंमेंसे किसीको उसकी सेवा करनेमें अथवा उस पास आनेमें मत रोक।

(२४) कितने दिनोंके पीछे फीलिक्स अपनी स्त्री द्रुसिल्लाके संग जो यिहूदिनी थी आया और पावलको बुलवाके ख्रीष्टपर विश्वास करनेके विषयमें उसकी सुनी। (२५) और जब वह धर्म्म और संयमके और आनेवाले बिचारके विषयमें बातें

करता था तब फीलिक्सने भयमान होके उत्तर दिया कि अब तो जा और अवसर पाके मैं तुझे बुलाऊंगा। (२६) वह यह आशा भी रखता था कि पावल मुझे रुपैये देगा कि मैं उसे छोड़ देऊं इसलिये और भी बहुत बार उसको बुलवाके उस से बातचीत करता था। (२७) परन्तु जब दो बरस पूरे हुए तब पर्किय फीष्टने फीलिक्सका काम पाया और फीलिक्स यिहूदियोंका मन रखनेको इच्छाकर पावलको बंधा हुआ छोड़ गया।

[पावलका फीष्टके आगे बिचार होना और कैसरकी दोहाई देना।]

२५ फीष्ट उस प्रदेशमें पहुंचके तीन दिनके पीछे कैसरिया से यिरूशलीमको गया। (२) तब महायाजकने और यिहूदियोंके बड़े लोगोंने उसके आगे पावलपर नालिश किई. (३) और उससे बिन्ती कर उसके बिरुद्ध यह अनुग्रह चाहा कि वह उसे यिरूशलीममें मंगवाय क्योंकि वे उसे मार्गमें मार डालनेको घात लगाये हुए थे। (४) फीष्टने उत्तर दिया कि पावल कैसरियामें पहरेमें रहता है और मैं आप वहां शीघ्र जाऊंगा। (५) फिर बोला तुममेंसे जो सामर्थी लोग हैं सो मेरे संग चलें और जो इस मनुष्यमें कुछ दोष होय तो उसपर दोष लगावें।

(६) और उनके बीचमें दस एक दिन रहके वह कैसरिया को गया और दूसरे दिन बिचार आसनपर बैठके पावलको लानेको आज्ञा किई। (७) जब पावल आया तब जो यिहूदी लोग यिरूशलीमसे आये थे उन्होंने आसपास खड़े होके उस पर बहुत बहुत और भारी भारी दोष लगाये जिनका प्रमाण वे नहीं दे सकते थे। (८) परन्तु उसने उत्तर दिया कि मैंने न यिहूदियोंकी ब्यवस्थाके न मन्दिरके न कैसरके बिरुद्ध कुछ अपराध किया है। (९) तब फीष्टने यिहूदियोंका मन रखनेको

इच्छा कर पावलको उत्तर दिया क्या तू यिरूशलोमको जाके वहां मेरे आगे इन बातोंके विषयमें बिचार किया जायगा। (१०) पावलने कहा मैं कैसरके बिचार आसनके आगे खड़ा हूं जहां उचित है कि मेरा बिचार किया जाय. यिहूदियोंका जैसा आप भी अच्छी रीतिसे जानते हैं मैंने कुछ अपराध नहीं किया है। (११) क्योंकि जो मैं अपराधी हूं और बधके योग्य कुछ किया है तो मैं मृत्युसे छुड़ाया जाना नहीं मांगता हूं परन्तु जिन बातोंसे ये मुझपर दोष लगाते हैं यदि उनमेंसे कोई बात नहीं ठहरती है तो कोई मुझे उन्होंके हाथ नहीं सोंप सकता है. मैं कैसरकी दोहाई देता हूं। (१२) तब फीष्टने मंत्रियोंकी सभाके संग बात करके उत्तर दिया क्या तूने कैसरकी दोहाई दिई है. तू कैसरके पास जायगा।

[अग्रिपाके आगे पावलका उत्तर देना। फीष्ट और अग्रिपासे पावलकी बातचीत।]

(१३) जब कितने दिन बीत गये तब अग्रिपा राजा और बर्णीकी फीष्टको नमस्कार करनेको कैसरियामें आये। (१४) और उनके बहुत दिन वहां रहते रहते फीष्टने पावलकी कथा राजाको सुनाई कि एक मनुष्य है जिसे फीलिक्स बंधमें छोड़ गया है। (१५) उसपर जब मैं यिरूशलोममें था तब प्रधान याजकोंने और यिहूदियोंके प्राचीनोंने नालिश किई और चाहा कि दंडकी आज्ञा उसपर दिई जाय। (१६) परन्तु मैंने उनको उत्तर दिया रोमियोंकी यह रीति नहीं है कि जबलों वह जिसपर दोष लगाया जाता है अपने दोषदायकोंके आम्ने साम्ने न हो और दोषके विषयमें उत्तर देनेका अवकाश न पाय तबलों किसी मनुष्यको नाश किये जानेके लिये सोंप देवें। (१७) सो जब वे यहां एकट्ठे हुए तब मैंने कुछ बिलंब न करके अगले दिन बिचार आसनपर बैठके उस मनुष्यको लानेकी आज्ञा किई। (१८) दोषदायकोंने उसके आसपास खड़े होके

जैसे दोष मैं समझता था वैसा कोई दोष नहीं लगाया। (१९) परन्तु अपनी पूजाके विषयमें और किसी मरे हुए यीशुके विषयमें जिसे पावल कहता था कि जीता है वे उससे कितने बिबाद करते थे। (२०) मुझे इस विषयके बिबादमें सन्देह था इसलिये मैंने कहा क्या तू यिरूशलीमको जाके वहां इन बातोंके विषयमें विचार किया जायगा। (२१) परन्तु जब पावलने दोहाई दे कहा मुझे अगस्त महाराजासे बिचार किये जानेको रखिये तब मैंने आज्ञा दिई कि जबलों मैं उसे कैसरके पास न भेजूं तबलों उसकी रक्षा किई जाय। (२२) तब अग्रिपाने फीष्टसे कहा मैं आप भी उस मनुष्यकी सुननेसे प्रसन्न होता. उसने कहा आप कल उसकी सुनेंगे।

(२३) सो दूसरे दिन जब अग्रिपा और बर्णीकीने बड़ी धूम धामसे आके सहस्रपतियों और नगरके श्रेष्ठ मनुष्योंके संग समाज स्थानमें प्रवेश किया और फीष्टने आज्ञा किई तब वे पावलको ले आये। (२४) और फीष्टने कहा हे राजा अग्रिपा और हे सब मनुष्यो जो यहां हमारे संग हो आप लोग इसको देखते हैं जिसके विषयमें सारे यिहूदियोंने यिरूशलीममें और यहां भी मुझसे बिन्ती करके पुकारा है कि इसका और जीता रहना उचित नहीं है। (२५) परन्तु यह जानके कि उसने बधके योग्य कुछ नहीं किया है जब कि उसने आप अगस्त महाराजाकी दोहाई दिई मैंने उसे भेजनेको ठहराया। (२६) परन्तु मैंने उसके विषयमें कोई निश्चयकी बात नहीं पाई है जो मैं महाराजाके पास लिखूं इसलिये मैं उसे आप लोगोंके साम्ने और निज करके हे राजा अग्रिपा आपके साम्ने लाया हूं कि विचार किये जानेके पीछे मुझे कुछ लिखनेको मिले। (२७) क्योंकि बन्धुवेको भेजनेमें दोष जो उसपर लगाये गये हैं नहीं बताना मुझे असंगत देख पड़ता है।

२६ अग्रिपाने पावलसे कहा तुझे अपने विषयमें बोलने की आज्ञा दिई जाती है . तब पावल हाथ बढ़ाके उत्तर देने लगा . (२) कि हे राजा अग्रिपा जिन बातोंसे यिहूदी लोग मुझपर दोष लगाते हैं उन सब बातोंके विषयमें मैं अपनेको धन्य समझता हूं कि आज आपके आगे उत्तर देऊंगा . (३) निज करके इसीलिये कि आप यिहूदियोंके बीचके सब व्यवहारों और विवादोंको बूझते हैं . सो मैं आपसे बिन्ती करता हूं धीरज करके मेरी सुन लीजिये। (४) लड़कपनसे मेरी जैसी चालचलन आरंभसे यिरूशलीममें मेरे लोगोंके बीचमें थी सो सब यिहूदी लोग जानते हैं। (५) वे जो साक्षी देने चाहते तो आदिसे मुझे पहचानते हैं कि हमारे धर्म्मके सबसे खरे पन्थके अनुसार मैं फरीशीकी चाल चला। (६) और अब जो प्रतिज्ञा ईश्वरने पितरोंसे किई मैं उसीकी आशाके विषय में बिचार किये जानेको खड़ा हूं . (७) जिसे हमारे बारहों कुल रात दिन यत्नसे सेवा करते हुए पानेकी आशा रखते हैं . इसी आशाके विषयमें हे राजा अग्रिपा यिहूदी लोग मुझपर दोष लगाते हैं।

(८) आप लोगोंके यहां यह क्यों बिश्वासके अयोग्य जाना जाता है कि ईश्वर मृतकोंको जिलाता। (९) मैंने तो अपने में समझा कि यीशु नासरीके नामके बिरुद्ध बहुत कुछ करना उचित है। (१०) और मैंने यिरूशलीममें वही किया भी और प्रधान याजकोंसे अधिकार पाके पवित्र लोगोंमेंसे बहुतोंको बन्दीगृहोंमें मूंद रखा और जब वे घात किये जाते थे तब मैंने अपनी सम्मति दिई। (११) और समस्त सभाके घरोंमें मैं बार बार उन्हें ताड़ना देके यीशुकी निन्दा करवाता था और उन पर अत्यन्त क्रोधसे उन्मत्त होके बाहरके नगरों तक भी सताता था। (१२) इस बीचमें जब मैं प्रधान याजकोंसे अधि-

कार और आज्ञा लेके दमेसकको जाता था . (१३) तब हे राजा मार्गमें दो पहर दिनको मैंने स्वर्गसे सूर्य्यके तेजसे अधिक एक ज्योति अपनी और अपने संग जानेहारोंकी चारों ओर चमकती हुई देखी। (१४) और जब हम सब भूमिपर गिर पड़े तब मैंने एक शब्द सुना जो मुझसे बोला और इब्रीय भाषामें कहा हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता है . पैनोंपर लात मारना तेरे लिये कठिन है। (१५) तब मैंने कहा हे प्रभु तू कौन है . उसने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है। (१६) परन्तु उठके अपने पांवोंपर खड़ा हो क्योंकि मैंने तुझे इसीलिये दर्शन दिया है कि उन बातोंका जो तूने देखी हैं और जिनमें मैं तुझे दर्शन देऊंगा तुझे सेवक और साक्षी ठहराऊं। (१७) और मैं तुझे तेरे लोगोंसे और अन्यदेशियोंसे बचाऊंगा जिनके पास मैं अब तुझे भेजता हूं . (१८) कि तू उनकी आंखें खोले इसलिये कि वे अंधियारेसे उजियालेकी ओर और शैतानके अधिकारसे ईश्वरकी ओर फिरें जिस्तें पापमोचन और उन लोगोंमें जो मुझपर बिश्वास करनेसे पवित्र किये गये हैं अधिकार पावें।

(१९) सो हे राजा अग्रिपा मैंने उस स्वर्गीय दर्शनकी बात न टाली . (२०) परन्तु पहिले दमेसक और यिरूशलीमके निवासियोंको तब यिहूदियाके सारे देशमें और अन्यदेशियों को पश्चात्ताप करनेका और ईश्वरकी ओर फिरनेका और पश्चात्तापके योग्य काम करनेका उपदेश दिया। (२१) इन बातोंके कारण यिहूदी लोग मुझे मन्दिरमें पकड़के मार डालने की चेष्टा करते थे। (२२) सो ईश्वरसे सहायता पाके मैं छोटे और बड़ेको साक्षी देता हुआ आजलों ठहरा हूं और उन बातोंको छोड़ कुछ नहीं कहता हूं जो भविष्यद्वक्ताओंने और मूसाने भी कहा कि होनेवाली हैं . (२३) अर्थात ख्रीष्टको दुःख

भोगना होगा और वही मृतकोंमेंसे पहिले उठके हमारे लोगों को और अन्यदेशियोंको ज्योतिकी कथा सुनावेगा।

(२४) जब वह यह उत्तर देता था तब फीष्टने बड़े शब्दसे कहा हे पावल तू बौड़हा है बहुत बिद्या तुझे बौड़हा करती है। (२५) पर उसने कहा हे महामहिमन फीष्ट मैं बौड़हा नहीं हूं परन्तु सच्चाई और बुद्धिकी बातें कहता हूं। (२६) इन बातोंको राजा बूझता है जिसके आगे मैं खोलके बोलता हूं क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि इन बातोंमेंसे कोई बात उससे छिपी नहीं है कि यह तो कोनेमें नहीं किया गया है। (२७) हे राजा अग्रिपा क्या आप भविष्यद्वक्ताओंका बिश्वास करते हैं. मैं जानता हूं कि आप बिश्वास करते हैं। (२८) तब अग्रिपाने पावलसे कहा तू थोड़ेमें मुझे ख्रीष्टियान होनेको मनाता है। (२९) पावलने कहा ईश्वरसे मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़ेमें क्या बहुतमें केवल आप नहीं परन्तु सब लोग भी जो आज मेरी सुनते हैं इन बन्धनोंको छोड़के ऐसे हो जायें जैसा मैं हूं।

(३०) जब उसने यह कहा तब राजा और अध्यक्ष और बर्णीकी और उनके संग बैठनेहारे उठे. (३१) और अलग जाके आपसमें बोले यह मनुष्य बध किये जाने अथवा बांधे जानेके योग्य कुछ नहीं करता है। (३२) तब अग्रिपाने फीष्टसे कहा जो यह मनुष्य कैसरकी दोहाई न दिये होता तो छोड़ा जा सकता।

[पावलका जहाजपर रोम नगरकी ओर जाना जहाजका टूटना और लोगोंका बच निकलना।]

२७ जब यह ठहराया गया कि हम जहाजपर इतालिया को जायें तब उन्होंने पावलको और कितने और बन्धुवोंको भी यूलिय नाम अगस्तकी पलटनके एक शतपतिके

हाथ सौंप दिया । (२) और आद्रामुतिया नगरके एक जहाज पर जो आशियाके तीरपरके स्थानोंको जाता था चढ़के हमने खोल दिया और अरिस्तार्ख नाम थिसलोनिकाका एक माकिदोनी हमारे संग था । (३) दूसरे दिन हमने सीदोनमें लगान किया और यूलियने पावलके साथ प्रेमसे व्यवहार करके उसे मित्रोंके पास जाने और पाहुन होने दिया । (४) वहांसे खोलके बयारके सन्मुख होनेके कारण हम कुप्रसके नीचेसे होके चले . (५) और किलिकिया और पंफुलियाके निकटके समुद्रमें होके लुकिया देशके मुरा नगर पहुंचे। (६) वहां शतपतिने सिकन्दरियाके एक जहाजको जो इतालियाको जाता था पाके हमें उस पर चढ़ाया । (७) बहुत दिनोंमें हम धीरे धीरे चलके और बयार जो हमें चलने न देती थी इसलिये कठिनतासे क्नीदके साम्ने पहुंचके सलमोनीके आम्ने साम्ने क्रीतीके नीचे चले . (८) और कठिनतासे उसके पाससे होते हुए शुभलंगरबारी नाम एक स्थानमें पहुंचे जहांसे लासेया नगर निकट था ।

(९) जब बहुत दिन बीत गये थे और जलयात्रामें जोखिम होती थी क्योंकि उपवास पर्ब्ब भी अब बीत चुका था तब पावलने उन्हें समझाके कहा . (१०) हे मनुष्यो मुझे सूझ पड़ता है कि इस जलयात्रामें हानि और बहुत टूटी केवल बोझाई और जहाजकी नहीं परन्तु हमारे प्राणोंकी भी हुआ चाहती है । (११) परन्तु शतपतिने पावलकी बातोंसे अधिक मांझीको और जहाजके स्वामीको मान लिई । (१२) और वह लंगरबारी जाड़ेका समय काटनेको अच्छी न थी इसलिये बहुतेरोंने परामर्श दिया कि वहांसे भी खोलके जो किसी रीतिसे हो सके तो फैनीको नाम क्रीतीकी एक लंगरबारीमें जो दक्षिण पश्चिम और उत्तर पश्चिमकी ओर खुलती है जा रहें और वहां जाड़ेका समय काटें ।

(१३) जब दक्षिणकी बयार मन्द मन्द बहने लगी तब उन्होंने यह समझके कि हमारा अभिप्राय सुफल हुआ है लंगर उठाया और तीर धरे धरे क्रीतीके पाससे जाने लगे। (१४) परन्तु थोड़ी बेरमें क्रीतीपरसे अति प्रचंड एक बयार उठी जो उरकलूदन कहावती है। (१५) यह जब जहाजपर लगी और वह बयारके साम्ने ठहर न सका तब हमने उसे जाने दिया और उड़ाये हुए चले गये। (१६) तब क्लौदा नाम एक छोटे टापूके नीचेसे जाके हम कठिनतासे डिंगीको धर सके। (१७) उसे उठाके उन्होंने अनेक उपाय करके जहाजको नीचेसे बांधा और सुर्त्ती नाम चड़पर टिक जानेके भयसे मस्तूल गिराके यूंहीं उड़ाये जाते थे। (१८) तब निपट बड़ी आंधी हमपर चलती थी इसलिये उन्होंने दूसरे दिन कुछ बोझाई फेंक दिई। (१९) और तीसरे दिन हमने अपने हाथों से जहाजकी सामग्री फेंक दिई। (२०) और जब बहुत दिनों तक न सूर्य्य न तारे दिखाई दिये और बड़ी आंधी चलती रही अन्तमें हमारे बचनेकी सारी आशा जाती रही।

(२१) जब वे बहुत उपवास कर चुके तब पावलने उनके बीचमें खड़ा होके कहा हे मनुष्यो उचित था कि तुम मेरी बात मानते और क्रीतीसे न खोलते न यह हानि और टूटी उठाते। (२२) पर अब मैं तुमसे बिन्ती करता हूं कि ढाढ़स बांधो क्योंकि तुम्हेंमेंसे किसीके प्राणका नाश न होगा केवल जहाजका। (२३) क्योंकि ईश्वर जिसका मैं हूं और जिसकी सेवा करता हूं उसका एक दूत इसी रात मेरे निकट खड़ा हुआ। (२४) और कहा हे पावल मत डर तुझे कैसरके आगे खड़ा होना अवश्य है और देख ईश्वरने सभोंको जो तेरे संग जलयात्रा करते हैं तुझे दिया है। (२५) इसलिये हे मनुष्यो ढाढ़स बांधो क्योंकि मैं ईश्वरका बिश्वास करता हूं कि जिस

रीतिसे मुझे कहा गया है उसी रीतिसे होगा । (२६) परन्तु हमें किसी टापूपर पड़ना होगा ।

(२७) जब चौदहवीं रात पहुंची ज्योंही हम आद्रिया समुद्र में इधर उधर उड़ाये जाते थे त्योंही आधी रातके निकट मल्लाहोंने जाना कि हम किसी देशके समीप पहुंचते हैं । (२८) और थाह लेके उन्होंने बीस पुरसे पाये और थोड़ा आगे बढ़के फिर थाह लेके पन्द्रह पुरसे पाये । (२९) तब पत्थ-रैले स्थानोंपर टिक जानेके डरसे उन्होंने जहाजको पिछाड़ीसे चार लंगर डाले और भोरका होना मनाते रहे। (३०) परन्तु जब मल्लाह लोग जहाजपरसे भागने चाहते थे और गलहीसे लंगर डालनेके बहानासे डिंगी समुद्रमें उतार दिई . (३१) तब पावलने शतपतिसे और योद्धाओंसे कहा जो ये लोग जहाज पर न रहें तो तुम नहीं बच सकते हो । (३२) तब योद्धाओं ने डिंगीके रस्से काटके उसे गिरा दिया ।

(३३) जब भोर होनेपर थी तब पावलने यह कहके सभों से भोजन करनेकी बिन्ती किई कि आज चौदह दिन हुए कि तुम लोग आस देखते हुए उपवासी रहते हो और कुछ भोजन न किया है । (३४) इसलिये मैं तुमसे बिन्ती करता हूं कि भोजन करो जिससे तुम्हारा बचाव होगा क्योंकि तुम मेंसे किसीके सिरसे एक बाल न गिरेगा। (३५) और यह बातें कहके औ रोटी लेके उसने सभोंके साम्ने ईश्वरका धन्य माना और तोड़के खाने लगा । (३६) तब उन सभोंने भी ढाढ़स बांधके भोजन किया । (३७) हम सब जो जहाजपर थे दो सौ छिहत्तर जन थे। (३८) भोजनसे तृप्त होके उन्होंने गेहूंको समुद्रमें फेंकके जहाजको हलका किया ।

(३९) जब बिहान हुआ तब वे उस देशको नहीं चीन्हते थे परन्तु किसी खालको देखा जिसका चौरस तीर था और

बिचार किया कि जो हो सके तो इसीपर जहाजको टिकावें। (४०) तब उन्होंने लंगरोंको काटके समुद्रमें छोड़ दिया और उसी समय पतवारोंके बंधन खोल दिये और बयारके सन्मुख पाल चढ़ाके तीरकी ओर चले। (४१) परन्तु दो समुद्रोंके संगमके स्थानमें पड़के उन्होंने जहाजको टिकाया और गलही तो गड़ गई और हिल न सकी परन्तु पिछाड़ी लहरोंकी बरियाईसे टूट गई। (४२) तब योद्धाओंका यह परामर्श था कि बन्धुवोंको मार डालें ऐसा न हो कि कोई पैरके निकल भागे। (४३) परन्तु शतपतिने पावलको बचानेकी इच्छासे उन्हें उस मतसे रोका और जो पैर सकते थे उन्हें आज्ञा दिई कि पहिले कूदके तीरपर निकल चलें. (४४) और दूसरोंको कि कोई पटरोंपर और कोई जहाजमेंकी बस्तुओंपर निकल जायें. इस रीतिसे सब कोई तीरपर बच निकले।

[मलिता टापूके लोगोंका शिष्टाचार।]

२८ जब वे बच गये तब जाना कि यह टापू मलिता कहावता है। (२) और उन जंगली लोगोंने हमोंसे अनोखा प्रेम किया क्योंकि मेंहके कारण जो पड़ता था और जाड़ेके कारण उन्होंने आग सुलगाके हम सभोंको ग्रहण किया।

(३) जब पावलने बहुतसी लकड़ी बटोरके आगपर रखी तब एक सांपने आंचसे निकलके उसका हाथ धर लिया। (४) और जब उन जंगलियोंने सांपको उसके हाथमें लटकते हुए देखा तब आपसमें कहा निश्चय यह मनुष्य हत्यारा है जिसे यद्यपि समुद्रसे बच गया तौभी दंडदायकने जीते रहने नहीं दिया है। (५) तब उसने सांपको आगमें झटक दिया और कुछ दुःख न पाया। (६) पर वे बाट देखते थे कि वह सूज जायगा अथवा अचांचक मरके गिर पड़ेगा परन्तु जब वे बड़ी बेरलों

बाट देखते रहे और देखा कि उसका कुछ नहीं बिड़गता है तब औरही बिचार कर कहा यह तो देवता है ।

(७) उस स्थानके आसपास पबलिय नाम उस टापूके प्रधानकी भूमि थी . उसने हमें ग्रहण करके तीन दिन प्रीतिभावसें पहुनई किई । (८) पबलियका पिता ज्वरसे और आंवलोहूसे रोगी पड़ा था सो पावलने उस पास घरमें प्रवेश करके प्रार्थना किई और उसपर हाथ रखके उसे चंगा किया । (९) जब यह हुआ था तब दूसरे लोग भी जो उस टापूमें रोगी थे आके चंगे किये गये । (१०) और उन्होंने हम लोगोंका बहुत आदर किया और जब हम खोलनेपर थे तब जो कुछ आवश्यक था सो दे दिया ।

[पावलका रोम नगरकी ओर जाना और मार्गमें भाइयोंसे भेंट करना । रोममें यिहूदियोंसे बात करना और सुसमाचार सुनाना ।]

(११) तीन मासके पीछे हम लोग सिकन्दरियाके एक जहाजपर जिसने उस टापूमें जाड़ेका समय काटा था जिसका चिन्ह दियस्कूरे था चल निकले । (१२) सुराकूस नगरमें लगान करके हम तीन दिन रहे । (१३) वहांसे हम घूमके रीगिया नगर पहुंचे और एक दिनके पीछे दक्षिणकी बयार जो उठी तो दूसरे दिन पुतियली नगरमें आये । (१४) वहां भाइयोंको पाके हम उनके यहां सात दिन रहनेको बुलाये गये और इस रीतिसे रोमको चले । (१५) वहांसे भाई लोग हमारा समाचार सुनके अप्पियचौक और तीन सरायलों हमसे मिलने को निकल आये जिन्हें देखके पावलने ईश्वरका धन्य मानके ढाढ़स बांधा ।

(१६) जब हम रोममें पहुंचे तब शतपतिने बन्धुवोंको सेनापतिके हाथ सौंप दिया परन्तु पावलको एक योद्धाके संग जो उसकी रक्षा करता था अकेला रहनेकी आज्ञा हुई । (१७) तीन

दिनके पीछे पावलने यिहूदियोंके बड़े बड़े लोगोंको एकट्ठे बुलाया और जब वे एकट्ठे हुए तब उनसे कहा हे भाइयो मैंने हमारे लोगोंके अथवा पितरोंके व्यवहारोंके बिरुद्ध कुछ नहीं किया था तौभी बंधुआ होके यिरूशलीमसे रोमियोंके हाथमें सोंपा गया। (१८) उन्होंने मुझे जांचके छोड़ देने चाहा क्योंकि मुझमें बधके योग्य कोई दोष न था। (१९) परन्तु जब यिहूदी लोग इसके बिरुद्ध बोलने लगे तब मुझे कैसरको दोहाई देना अवश्य हुआ पर यह नहीं कि मुझे अपने लोगोंपर कोई दोष लगाना है। (२०) इस कारणसे मैंने आप लोगोंको बुलाया कि आप लोगोंको देखके बात कहूं क्योंकि इस्रायेलकी आशाके लिये मैं इस जंजीरसे बन्धा हुआ हूं। (२१) तब वे उससे बोले न हमोंने आपके विषयमें यिहूदियासे चिट्ठियां पाईं न भाइयोंमेंसे किसीने आके आपके विषयमें बुरा कुछ बताया अथवा कहा। (२२) परन्तु आपका मत क्या है सो हम आपसे सुना चाहते हैं क्योंकि इस पन्थके विषयमें हम जानते हैं कि सर्ब्बत्र उसके बिरुद्धमें बातें किईं जाती हैं। (२३) सो उन्होंने उसको एक दिन ठहराया और बहुत लोग बासेपर उस पास आये जिनसे वह ईश्वरके राज्यको साक्षी देता हुआ और यीशुके विषयमेंकी बातें उन्हें मूसाकी व्यवस्थासे और भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकसे भी समझाता हुआ भोरसे सांझलों चर्चा करता रहा। (२४) तब कितनोंने उन बातोंको मान लिया और कितनोंने प्रतीति न किई। (२५) सो वे आपसमें एक मत न होके जब पावलने उनसे एक बात कही थी तब बिदा हुए कि पवित्र आत्माने हमारे पितरोंसे यिशैयाह भविष्यद्वक्ताके द्वारासे अच्छा कहा. (२६) कि इन लोगोंके पास जाके कह तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु नहीं बूझोगे और देखते हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा। (२७) क्योंकि इन

लोगोंका मन मोटा हो गया है और वे कानोंसे ऊंचा सुनते हैं और अपने नेत्र मून्द लिये हैं ऐसा न हो कि वे कभी नेत्रोंसे देखें और कानोंसे सुनें और मनसे समझें और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं। (२८) सो तुम जानो कि ईश्वरके त्राणको कथा अन्यदेशियोंके पास भेजी गई है और वे सुनेंगे। (२९) जब वह यह बातें कह चुका तब यिहूदी लोग आपसमें बहुत बिबाद करते हुए चले गये।

(३०) और पावलने दो बरस भर अपने भाड़ेके घरमें रहके सभोंको जो उस पास आते थे ग्रहण किया . (३१) और बिना रोक टोक बड़े साहससे ईश्वरके राज्यकी कथा सुनाता और प्रभु योशु खीष्टके विषयमेंकी बातें सिखाता रहा॥

रोमियोंको पावल प्रेरितकी पत्री।

[पत्रीका आभाष ।]

१ पावल जो यीशु ख्रीष्टका दास और बुलाया हुआ प्रेरित और ईश्वरके सुसमाचारके लिये अलग किया गया है. (२) वह सुसमाचार जिसकी प्रतिज्ञा उसने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा धर्म्मपुस्तकमें आगेसे किई थी. (३) अर्थात उसके पुत्र हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके विषयमेंका सुसमाचार जो शरीरके भावसे दाऊदके बंशमेंसे उत्पन्न हुआ. (४) और पवित्रताके आत्मा के भावसे मृतकोंके जो उठनेसे पराक्रम सहित ईश्वरका पुत्र ठहराया गया. (५) जिससे हमने अनुग्रह औ प्रेरिताई पाई है कि उसके नामके कारण सब देशोंके लोग बिश्वाससे आज्ञा-कारी हो जायें. (६) जिन्होंमें तुम भी यीशु ख्रीष्टके बुलाये हुए हो. (७) रोमके उन सब निवासियोंको जो ईश्वरके प्यारे और बुलाये हुए पवित्र लोग हैं. तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।

[पावलकी रोमियोंको सुसमाचार सुनानेकी इच्छा ।]

(८) पहिले मैं यीशु ख्रीष्टके द्वारासे तुम सभोंके लिये अपने ईश्वरका धन्य मानता हूं कि तुम्हारे बिश्वासका चर्चा सारे जगतमें किया जाता है। (९) क्योंकि ईश्वर जिसकी सेवा मैं अपने मनसे उसके पुत्रके सुसमाचारमें करता हूं मेरा साक्षी है कि मैं तुम्हें कैसे निरन्तर स्मरण करता हूं. (१०) और नित्य अपनी प्रार्थनाओंमें बिन्ती करता हूं कि किसी रीतिसे अब भी तुम्हारे पास जानेको मेरी यात्रा ईश्वरकी इच्छासे

सुफल होय । (११) क्योंकि मैं तुम्हें देखनेकी लालसा करता हूं कि मैं कोई आत्मिक वरदान तुम्हारे संग बांट लेऊं जिस्तें तुम स्थिर किये जावो . (१२) अर्थात कि मैं तुम्होंमें अपने अपने परस्पर बिश्वासके द्वारासे तुम्हारे संग शांति पाऊं । (१३) परन्तु हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इससे अनजान रहो कि मैंने बहुत बार तुम्हारे पास जानेका बिचार किया जिस्तें जैसा दूसरे अन्यदेशियोंमें तैसा तुम्होंमें भी मेरा कुछ फल होवे परन्तु अबलों मैं रोका रहा ।

(१४) मैं यूनानियों औ अन्यभाषियोंका और बुद्धिमानों औ निर्बुद्धियोंका ऋणी हूं । (१५) यूं मैं तुम्हें भी जो रोममें रहते हो सुसमाचार सुनानेको तैयार हूं ।

[पत्रीका अर्थ कि ईश्वरका धर्म्म विश्वाससे है ।]

(१६) क्योंकि मैं ख्रीष्टके सुसमाचारसे नहीं लजाता हूं इस लिये कि हर एक बिश्वास करनेहारेके लिये पहिले यिहूदी फिर यूनानीके लिये वह त्राणके निमित्त ईश्वरका सामर्थ्य है । (१७) क्योंकि उसमें ईश्वरका धर्म्म बिश्वाससे बिश्वासके लिये प्रगट किया जाता है जैसा लिखा है कि बिश्वाससे धर्म्मी जन जीयेगा ।

[अन्यदेशियोंके मूरत पूजने और बड़े बड़े पापोंका वर्णन ।]

(१८) जो मनुष्य सच्चाईको अधर्म्मसे रोकते हैं उनकी सारी अभक्ति और अधर्म्मपर ईश्वरका क्रोध स्वर्गसे प्रगट किया जाता है । (१९) इस कारण कि ईश्वरके विषयका ज्ञान उन में प्रगट है क्योंकि ईश्वरने उनपर प्रगट किया । (२०) क्योंकि जगतकी सृष्टिसे उसके अदृश्य गुण अर्थात उसके सनातन सामर्थ्य और ईश्वरत्व देखे जाते हैं क्योंकि वे उसके कार्य्योंसे पहचाने जाते हैं यहांलों कि वे मनुष्य निरुत्तर हैं । (२१) इस कारण कि उन्होंने ईश्वरको जानके न ईश्वरके योग्य गुणानुबाद किया

न धन्य माना परन्तु अनर्थक बाद बिचार करने लगे और उनका निर्बुद्धि मन अंधियारा हो गया। (२२) वे अपनेको ज्ञानी कहके मूर्ख बन गये. (२३) और अबिनाशी ईश्वरकी महिमाको नाश-मान मनुष्य और पंछियों और चौपायों और रेंगनेहारे जन्तु-ओंकी मूर्त्तिकी समानतासे बदल डाला।

(२४) इस कारण ईश्वरने उन्हें उनके मनके अभिलाषोंके अनुसार अशुद्धताके लिये त्याग दिया कि वे आपसमें अपने शरीरोंका अनादर करें. (२५) जिन्होंने ईश्वरकी सच्चाईको झूठसे बदल डाला और सृष्टिकी पूजा और सेवा सृजनहारकी पूजा और सेवासे अधिक किई जो सर्ब्बदा धन्य है. आमीन। (२६) इस हेतुसे ईश्वरने उन्हें नीच कामनाओंके बशमें त्याग दिया कि उनकी स्त्रियोंने भी स्वाभाविक व्यवहारको उससे जो स्वभावके बिरुद्ध है बदल डाला। (२७) वैसेही पुरुष भी स्त्रीके संग स्वाभाविक व्यवहार छोड़के अपनी कामुकतासे एक दूसरेकी ओर जलने लगे और पुरुषोंके साथ पुरुष निर्लज्ज कर्म्म करते थे और अपने भ्रमका फल जो उचित था अपनेमें भोगते थे। (२८) और ईश्वरको चित्तमें रखना जब कि उन्हें अच्छा न लगा इसलिये ईश्वरने उन्हें निकृष्ट मनके बशमें त्याग दिया कि वे अनुचित कर्म्म करें. (२९) और सारे अधर्म्म औ व्यभिचार औ दुष्टता औ लोभ औ बुराईसे भरे हुए और डाह औ नरहिंसा औ बैर औ छल औ दुर्भावसे भरपूर हों. (३०) और फुसफुसिये अपबादी ईश्वरद्रोही निन्दक अभिमानी दंभी बुरी बातोंके बनानेहारे माता पिताकी आज्ञा लंगन करनेहारे. (३१) निर्बुद्धि झूठे मयारहित क्षमारहित औ निर्दय होवें. (३२) जो ईश्वरकी बिधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करने-हारे मृत्युके योग्य हैं तौभी न केवल उन कामोंको करते हैं परन्तु करनेहारोंसे प्रसन्न भी होते हैं।

[यिहूदियोंके दोषका प्रमाण । ईश्वरका यथार्थ विचार ।]

२ सो हे मनुष्य तू कोई हो जो दूसरोंका विचार करता हो तू निरुत्तर है. जिस बातमें तू दूसरेका विचार करता है उसी बातमें अपनेको दोषी ठहराता है क्योंकि तू जो विचार करता है आपही वेही काम करता है । (२) पर हम जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारोंपर ईश्वरकी दंडकी आज्ञा यथार्थ है । (३) और हे मनुष्य जो ऐसे ऐसे काम करनेहारों का विचार करता और आपही वेही काम करता है क्या तू यही समझता कि मैं तो ईश्वरकी दंडकी आज्ञासे बचूंगा । (४) अथवा क्या तू उसकी कृपा औ सहनशीलता औ धीरज के धनको तुच्छ जानता है और यह नहीं बूझता है कि ईश्वरकी कृपा तुझे पश्चात्ताप करनेको सिखाती है. (५) परन्तु अपनी कठोरता और निःपश्चात्तापी मनके हेतुसे अपने लिये क्रोधके दिनलों हां ईश्वरके यथार्थ विचारके प्रगट होनेके दिनलों क्रोधका संचय करता है । (६) वह हर एक मनुष्य को उसके कर्म्मोंके अनुसार फल देगा । (७) जो सुकर्म्ममें स्थिर रहनेसे महिमा और आदर और अमरता ढूंढ़ते हैं उन्हें वह अनन्त जीवन देगा । (८) परन्तु जो विवादी हैं और सत्यको नहीं मानते पर अधर्म्मको मानते हैं उनपर कोप औ क्रोध पड़ेगा । (९) हर एक मनुष्यके प्राणपर जो बुरा करता है क्लेश और संकट पड़ेगा पहिले यिहूदी फिर यूनानीके । (१०) पर हर एकको जो भला करता है महिमा और आदर और कल्याण होगा पहिले यिहूदी फिर यूनानीको । (११) क्यों- कि ईश्वरके यहां पक्षपात नहीं है ।

(१२) क्योंकि जितने लोगोंने विना व्यवस्था पाप किया है सो विना व्यवस्था नाश भी होंगे और जितने लोगोंने व्यवस्था पाके पाप किया है सो व्यवस्थाके द्वारासे दंडके योग्य ठह-

राये जायेंगे । (१३) क्योंकि व्यवस्थाके सुननेहारे ईश्वरके यहां धर्म्मी नहीं हैं परन्तु व्यवस्थापर चलनेहारे धर्म्मी ठहराये जायेंगे । (१४) फिर जब अन्यदेशी लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं है स्वभावसे व्यवस्थाकी बातोंपर चलते हैं तब यद्यपि व्यवस्था उनके पास नहीं है तौभी वे अपने लिये आपही व्यवस्था हैं । (१५) वे व्यवस्थाका कार्य्य अपने अपने हृदयमें लिखा हुआ दिखाते हैं और उनका मन भी साक्षी देता है और उनकी चिन्ताएं परस्पर दोष लगातीं अथवा दोषका उत्तर देती हैं । (१६) यह उस दिन होगा जिस दिन ईश्वर मेरे सुसमाचारके अनुसार यीशु ख्रीष्टके द्वारासे मनुष्योंकी गुप्त बातोंका विचार करेगा ।

[यिहूदियोंका बेदखर होना । कौन खतना सत्य है ।]

(१७) देख तू यिहूदी कहावता है और व्यवस्थापर भरोसा रखता है और ईश्वरके विषयमें घमंड करता है . (१८) और उसकी इच्छाको जानता है और व्यवस्थाकी शिक्षा पाके विशेष्य बातोंको परखता है . (१९) और अपनेपर भरोसा रखता है कि मैं अन्धोंका अगुवा और अन्धकारमें रहनेहारोंका प्रकाश . (२०) और निर्बुद्धियोंका शिक्षक और बालकोंका उपदेशक हूं और ज्ञान औ सच्चाईका रूप मुझे व्यवस्थामें मिला है । (२१) सो क्या तू जो दूसरेको सिखाता है अपनेको नहीं सिखाता है . क्या तू जो चोरी न करनेका उपदेश देता है आपही चोरी करता है। (२२) क्या तू जो परस्त्रीगमन न करनेको कहता है आपही परस्त्रीगमन करता है . क्या तू जो मूरतोंसे घिन करता है पवित्र वस्तु चुराता है। (२३) क्या तू जो व्यवस्थाके विषयमें घमंड करता है व्यवस्थाको लंघन करनेसे ईश्वरका अनादर करता है। (२४) क्योंकि जैसा लिखा है तैसा ईश्वरका नाम तुम्हारे कारण अन्यदेशियोंमें निन्दित होता है ।

(२५) जो तू व्यवस्थापर चले तो खतनेसे लाभ है परन्तु जो तू व्यवस्थाको लंघन किया करे तो तेरा खतना अखतना हो गया है । (२६) सो यदि खतनाहीन मनुष्य व्यवस्थाकी विधियोंका पालन करे तो क्या उसका अखतना खतना न गिना जायगा । (२७) और जो मनुष्य प्रकृतिसे खतनाहीन होके व्यवस्थाको पूरी करे सो क्या तुझे जो लेख और खतना पाके व्यवस्थाको लंघन किया करता है दोषी न ठहरावेगा । (२८) क्योंकि जो प्रगटमें यिहूदी है सो यिहूदी नहीं और खतना जो प्रगटमें अर्थात देहमें है सो खतना नहीं । (२९) परन्तु यिहूदी वह है जो गुप्तमें यिहूदी है और मनका खतना जो लेखसे नहीं पर आत्मामें है सोई खतना है . ऐसे यिहूदीकी प्रशंसा मनुष्योंकी नहीं पर ईश्वरकी ओरसे है ।

[यिहूदी होनेकी श्रेष्ठता । ईश्वरका धर्म्म ।]

३ तो यिहूदीकी क्या श्रेष्ठता हुई अथवा खतनेका क्या लाभ हुआ । (२) सब प्रकारसे बहुत कुछ . पहिले यह कि ईश्वरकी वाणियां उनके हाथ सौंपी गईं । (३) जो कितनोंने बिश्वास न किया तो क्या हुआ . क्या उनका अबिश्वास ईश्वरके बिश्वासको व्यर्थ ठहरावेगा । (४) ऐसा न हो . ईश्वर सच्चा पर हर एक मनुष्य झूठा होय जैसा लिखा है कि जिस्तें तू अपनी बातोंमें निर्दोष ठहराया जाय और तेरा बिचार किये जानेमें तू जय पावे ।

(५) परन्तु यदि हमारा अधर्म्म ईश्वरके धर्म्मपर प्रमाण देता है तो हम क्या कहें . क्या ईश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है . इसको मैं मनुष्यकी रीतिपर कहता हूं । (६) ऐसा न हो . नहीं तो ईश्वर क्योंकर जगतका बिचार करेगा । (७) परन्तु यदि ईश्वरकी सच्चाई उसकी महिमाके लिये मेरी झुठाईके हेतुसे अधिक करके प्रगट हुई तो मैं क्यों अब भी

पापीकी नाईं दंडके योग्य ठहराया जाता हूं । (८) तो क्या यह भी न कहा जाय जैसा हमारी निन्दा किई जाती है और जैसा कितने लोग बोलते कि हम कहते है कि आओ हम बुराई करें जिस्तें भलाई निकले . ऐसोंपर दंडकी आज्ञा यथार्थ है ।

[सारे मनुष्योंका पापके वशमें होना ।]

(९) तो क्या . क्या हम उनसे अच्छे हैं . कभी नहीं क्योंकि हम प्रमाण दे चुके हैं कि यिहूदी और यूनानी भी सब पापके वशमें हैं . (१०) जैसा लिखा है कि कोई धर्म्मी जन नहीं है एक भी नहीं . (११) कोई बूझनेहारा नहीं कोई ईश्वरका ढूंढनेहारा नहीं । (१२) सब लोग भटक गये हैं वे सब एक संग निकम्मे हुए हैं कोई भलाई करनेहारा नहीं एक भी नहीं है । (१३) उनका गला खुली हुई कबर है उन्होंने अपनी जीभोंसे छल किया है सांपोंका बिष उनके होंठोंके नीचे है . (१४) और उनका मुंह स्राप औ कड़वाहटसे भरा है । (१५) उन के पांव लोहू बहानेको फुर्त्तीले हैं । (१६) उनके मार्गोंमें नाश और क्लेश है . (१७) और उन्होंने कुशलका मार्ग नहीं जाना है । (१८) उनके नेत्रोंके आगे ईश्वरका कुछ भय नहीं है ।

(१९) हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है सो उनके लिये कहती है जो व्यवस्थाके अधीन हैं इसलिये कि हर एक मुंह बन्द किया जाय और सारा संसार ईश्वरके आगे दंडके योग्य ठहरे । (२०) इस कारण कि व्यवस्थाके कर्म्मोंसे कोई प्राणी उसके आगे धर्म्मी नहीं ठहराया जायगा क्योंकि व्यवस्थाके द्वारा पापकी पहचान होती है ।

[ईश्वरका धर्म्म यीशु खीष्टपर बिश्वास करनेसे सभोंके लिये है ।]

(२१) पर अब व्यवस्थासे न्यारे ईश्वरका धर्म्म प्रगट हुआ

है जिसपर व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता लोग साक्षी देते हैं। (२२) और यह ईश्वरका धर्म्म योशु ख्रीष्टपर बिश्वास करनेसे सभोंके लिये और सभोंपर है जो बिश्वास करते हैं क्योंकि कुछ भेद नहीं है। (२३) क्योंकि सभोंने पाप किया है और ईश्वरकी प्रशंसा योग्य नहीं होते हैं. (२४) पर उसके अनुग्रहसे उस उद्धारके द्वारा जो ख्रीष्ट योशुसे है संतमेंत धर्म्मी ठहराये जाते हैं। (२५) उसको ईश्वरने प्रायश्चित्त स्थापन किया कि विश्वासके द्वारा उसके लोहूसे प्रायश्चित्त होवे जिस्तें आगे किये हुए पापोंसे ईश्वरकी सहनशीलतासे आनाकानी जो किई गई तिसके कारण वह अपना धर्म्म प्रगट करे. (२६) हां इस वर्त्तमान समयमें अपना धर्म्म प्रगट करे यहां लों कि योशुके विश्वासके अवलंबोको धर्म्मी ठहरानेमें भो धर्म्मी ठहरे।

(२७) तो वह घमंड करना कहां रहा. वह बर्ज्जित हुआ. कौन व्यवस्थाके द्वारासे. क्या कर्म्मोंकी. नहीं परन्तु बिश्वास की व्यवस्थाके द्वारासे। (२८) इसलिये हम यह सिद्धान्त करते हैं कि विना व्यवस्थाके कर्म्मोंसे मनुष्य बिश्वाससे धर्म्मी ठहराया जाता है। (२९) क्या ईश्वर केवल यिहूदियोंका ईश्वर है. क्या अन्यदेशियोंका नहीं. हां अन्यदेशियोंका भी है। (३०) क्योंकि एकही ईश्वर है जो खतना किये हुओंको बिश्वास से और खतनाहीनोंको बिश्वासके द्वारासे धर्म्मी ठहरावेगा। (३१) तो क्या हम बिश्वासके द्वारा व्यवस्थाको व्यर्थ ठहराते हैं. ऐसा न हो परन्तु व्यवस्थाको स्थापन करते हैं।

[इब्राहीमके धर्म्मी ठहराये जानेकी कथासे पूर्वोक्त बातोंके प्रमाण।]

४ तो हम क्या कहें कि हमारे पिता इब्राहीमने शरीर के अनुसार पाया है। (२) यदि इब्राहीम कर्म्मोंके हेतुसे धर्म्मी ठहराया गया तो उसे बड़ाई करनेकी जगह है।

(३) परन्तु ईश्वरके आगे नहीं है क्योंकि धर्म्मपुस्तक क्या कहता है. इब्राहीमने ईश्वरका बिश्वास किया और यह उसके लिये धर्म्म गिना गया। (४) अब कार्य्य करनेहारेको मजूरी देना अनुग्रहकी बात नहीं परन्तु ऋणकी बात गिना जाता है। (५) परन्तु जो कार्य्य नहीं करता पर भक्तिहीनको धर्म्मी ठहरानेहारेपर बिश्वास करता है उसके लिये उसका बिश्वास धर्म्म गिना जाता है। (६) जैसा दाऊद भी उस मनुष्यकी धन्यता जिसको ईश्वर बिना कर्म्मोंसे धर्म्मी ठहरावे बताता है. (७) कि धन्य वे जिनके कुकर्म्म क्षमा किये गये और जिनके पाप ढांपे गये. (८) धन्य वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न गिने।

(९) तो यह धन्यता क्या खतना किये हुए लोगोंहीके लिये है अथवा खतनाहीन लोगोंके लिये भी है. क्योंकि हम कहते हैं कि इब्राहीमके लिये बिश्वास धर्म्म गिना गया। (१०) तो वह क्योंकर उसके लिये गिना गया. जब वह खतना किया हुआ था अथवा जब खतनाहीन था. जब खतना किया हुआ था सो नहीं परन्तु जब खतनाहीन था। (११) और उसने खतनेका चिन्ह पाया कि जो बिश्वास उसने खतनाहीन दशामें किया था उस बिश्वासके धर्म्मकी छाप होवे जिस्तें जो लोग खतनाहीन दशामें बिश्वास करते हैं वह उन सभोंका पिता होय कि वे भी धर्म्मी ठहराये जायें. (१२) और जो लोग न केवल खतना किये हुए हैं परन्तु हमारे पिता इब्राहीमके उस बिश्वासकी लोकपर चलनेहारे भी हैं जो उसने खतनाहीन दशामें किया था उन लोगोंके लिये खतना किये हुओंका पिता ठहरे।

(१३) क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि इब्राहीम जगतका अधिकारी होगा न: उसको न उसके बंशको व्यवस्थाके द्वारासे मिली

परन्तु बिश्वासके धर्म्मके द्वारासे । (१४) क्योंकि यदि व्यवस्थाके अवलंबो अधिकारी हैं तो बिश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहराई गई है । (१५) व्यवस्था तो क्रोध जन्माती है क्योंकि जहां व्यवस्था नहीं हैं तहां उल्लंघन भी नहीं । (१६) इस कारण प्रतिज्ञा बिश्वाससे हुई कि अनुग्रहकी रीतिपर होय इसलिये कि सारे बंशके लिये दृढ़ होय केवल उनके लिये नहीं जो व्यवस्थाके अवलंबो हैं परन्तु उनके लिये भो जो इब्राहीमकेसे बिश्वासके अवलंबी हैं । (१७) वह तो उसके आगे जिसका उसने बिश्वास किया अर्थात ईश्वरके आगे जो मृतकोंको जिलाता है और जो बातें नहीं हैं उनका नाम ऐसा लेता कि जैसा वे हैं हम सभोंका पिता है जैसा लिखा है कि मैंने तुझे बहुत देशोंके लोगोंका पिता ठहराया है ।

(१८) उसने जहां आशा न देख पड़ती थी तहां आशा रखके बिश्वास किया इसलिये कि जो कहा गया था कि तेरा बंश इस रीतिसे होगा उसके अनुसार वह बहुत देशोंके लोगोंका पिता होय । (१९) और बिश्वासमें दुर्ब्बल न होके उसने यद्यपि सौ एक बरसका था तौभी न अपने शरीरको जो अब मृतकसा हुआ था और न साराःके गर्भकी मृतककीसी दशाको सोचा । (२०) उसने ईश्वरकी प्रतिज्ञापर अबिश्वाससे सन्देह किया सो नहीं परन्तु बिश्वासमें दृढ़ होके ईश्वरकी महिमा प्रगट किई . (२१) और निश्चय जाना कि जिस बातकी उसने प्रतिज्ञा किई है उसे करनेको भी सामर्थी है । (२२) इस हेतुसे यह उसके लिये धर्म्म गिना गया ।

(२३) पर न केवल उसके कारण लिखा गया कि उसके लिये गिना गया . (२४) परन्तु हमारे कारण भी जिनके लिये गिना जायगा अर्थात हमारे कारण जो उसपर बिश्वास करते हैं जिसने हमारे प्रभु यीशुको मृतकोंमेंसे उठाया . (२५) जो

हमारे अपराधोंके लिये पकड़वाया गया और हमारे धर्म्मी ठहराये जानेके लिये उठाया गया।

[ईश्वरसे मिलाप और अनेक और फलोंका वर्णन जो विश्वासियोंको यीशु खीष्टके द्वारा मिलते हैं।]

५ सो जब कि हम विश्वाससे धर्म्मी ठहराये गये हैं तो हमारे प्रभु यीशु खीष्टके द्वारा हमें ईश्वरसे मिलाप है। (२) और भी उसके द्वारा हमने इस अनुग्रहमें जिसमें स्थिर हैं विश्वाससे पहुंचनेका अधिकार पाया है और ईश्वरकी महिमाकी आशाके विषयमें बड़ाई करते हैं। (३) और केवल यह नहीं परन्तु हम क्लेशोंके विषयमें भी बड़ाई करते हैं क्योंकि जानते हैं कि क्लेशसे धीरज. (४) और धीरजसे खरा निकलना और खरे निकलनेसे आशा उत्पन्न होती है। (५) और आशा लज्जित नहीं करती है क्योंकि पवित्र आत्माके द्वारासे जो हमें दिया गया ईश्वरका प्रेम हमारे मनमें उंडेला गया है। (६) क्योंकि जब हम निर्ब्बल हो रहे थे तबही खीष्ट समयपर भक्तिहीनोंके लिये मरा। (७) धर्म्मी जनके लिये कोई मरे यह दुर्लभ है पर हां भले मनुष्यके लिये क्या जाने किसीको मरनेका भी साहस होय। (८) परन्तु ईश्वर हमारी ओर अपने प्रेमका माहात्म्य यूं दिखाता है कि जब हम पापी हो रहे थे तबही खीष्ट हमारे लिये मरा। (९) सो जब कि हम अब उसके लोहूके गुणसे धर्म्मी ठहराये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम उसके द्वारा क्रोधसे बचेंगे। (१०) क्योंकि यदि हम जब शत्रु थे तब ईश्वरसे उस के पुत्रकी मृत्युके द्वारासे मिलाये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम मिलाये जाके उसके जीवनके द्वारा त्राण पावेंगे। (११) और केवल यह नहीं परन्तु हम अपने प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारासे जिसके द्वारा हमने अब मिलाप पाया है ईश्वरके विषयमें भी बड़ाई करते हैं।

[आदमके पापके द्वारासे मृत्युका और योशु ख्रीष्टके धर्म्मसे अनन्त जीवन का प्राप्त होना ।]

(१२) इसलिये यह ऐसा है जैसा एक मनुष्यके द्वारासे पाप जगतमें आया और पापके द्वारा मृत्यु आई और इस रीतिसे मृत्यु सब मनुष्योंपर बीती क्योंकि सभोंने पाप किया । (१३) क्योंकि व्यवस्थालों पाप जगतमें था पर जहां व्यवस्था नहीं है तहां पाप नहीं गिना जाता । (१४) तौभी आदमसे मूसालों मृत्यु ने उन लोगोंपर भी राज्य किया जिन्होंने आदमके अपराधके समान पाप नहीं किया था . यह आदम उस आनेवालेका चिन्ह है । (१५) परन्तु जैसा यह अपराध है तैसा वह बर-दान भी है सो नहीं क्योंकि यदि एक मनुष्यके अपराधसें बहुत लोग मूए तो बहुत अधिक करके ईश्वरका अनुग्रह और वह दान एक मनुष्यके अर्थात योशु ख्रीष्टके अनुग्रहसे बहुत लोगोंपर अधिकाईसे हुआ । (१६) और जैसा वह दंड जो एकके द्वारासे हुआ जिसने पाप किया तैसा यह दान नहीं है क्योंकि निर्णयसे एक अपराधके कारण दंडकी आज्ञा हुई परन्तु बरदानसे बहुत अपराधोंसे निर्दोष ठहराये जानेका फल हुआ । (१७) क्योंकि यदि एक मनुष्यके अपराधसे मृत्युने उस एकके द्वारासे राज्य किया तो बहुत अधिक करके जो लोग अनुग्रहको और धर्म्मके दानको अधिकाई पाते हैं सो एक मनुष्यके अर्थात योशु ख्रीष्टके द्वारासे जीवनमें राज्य करेंगे । (१८) इसलिये जैसा एक अपराध सब मनुष्योंके लिये दंडकी आज्ञाका कारण हुआ तैसा एक धर्म्म भी सब मनुष्योंके लिये धर्म्मी ठहराये जानेका कारण हुआ जिससे जीवन होय । (१९) क्योंकि जैसा एक मनुष्यके आज्ञा लंघन करनेसे बहुत लोग पापी बनाये गये तैसा एक मनुष्यके आज्ञा माननेसे बहुत लोग धर्म्मी बनाये जायेंगे । (२०) पर व्यवस्थाका भी

प्रवेश हुआ कि अपराध बहुत होय परन्तु जहां पाप बहुत हुआ तहां अनुग्रह बहुत अधिक हुआ . (२१) कि जैसा पाप ने मृत्युमें राज्य किया तैसा हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवनके लिये धर्म्मके द्वारासे राज्य करे।

[विश्वासियोंको पापसे अलग रहना अवश्य है। वे पापके बंधनसे छूटके ईश्वरके दास बने हैं।]

६ तो हम क्या कहें . क्या हम पापमें रहें जिस्तें अनुग्रह बहुत होय। (२) ऐसा न हो . हम जो पापके लिये मूए हैं क्योंकर अब उसमें जीयेंगे।

(३) क्या तुम नहीं जानते हो कि हममेंसे जितनोंने ख्रीष्ट यीशुका बपतिसमा लिया उसकी मृत्युका बपतिसमा लिया। (४) सो उसकी मृत्युका बपतिसमा लेनेसे हम उसके संग गाड़े गये कि जैसे ख्रीष्ट पिताके ऐश्वर्य्यसे मृतकोंमेंसे उठाया गया तैसे हम भी जीवनकीसी नई चाल चलें। (५) क्योंकि यदि हम उसकी मृत्युकी समानतामें उसके संयुक्त हुए हैं तो निश्चय उसके जी उठनेकी समानतामें भी संयुक्त होंगे। (६) क्योंकि यही जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके संग क्रूश पर चढ़ाया गया इसलिये कि पापका शरीर क्षय किया जाय जिस्तें हम फिर पापके दास न होवें। (७) क्योंकि जो मूआ है सो पापसे छुड़ाया गया है। (८) और यदि हम ख्रीष्टके संग मूए हैं तो बिश्वास करते हैं कि उसके संग जीयेंगे भी। (९) क्योंकि जानते हैं कि ख्रीष्ट मृतकोंमेंसे उठके फिर नहीं मरता है . उसपर फिर मृत्युकी प्रभुता नहीं है। (१०) क्योंकि वह जो मरा तो पापके लिये एकही बेर मरा पर वह जीता है तो ईश्वरके लिये जीता है। (११) इस रीतिसे तुम भी अपने को समझो कि हम पापके लिये तो मृतक हैं परन्तु हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशुमें ईश्वरके लिये जीवते हैं।

(१२) सो पाप तुम्हारे मरनहार शरीरमें राज्य न करे कि तुम उसके अभिलाषोंसे पापके आज्ञाकारी होओ। (१३) और न अपने अंगोंको अधर्म्मके हथियार करके पापको सोंप देओ परन्तु जैसे मृतकोंमेंसे जी गये हो तैसे अपनेको ईश्वरको सोंप देओ और अपने अंगोंको ईश्वरके तईं धर्म्मके हथियार करके सोंपो। (१४) क्योंकि तुमपर पापकी प्रभुता न होगी इसलिये कि तुम व्यवस्थाके अधीन नहीं परन्तु अनुग्रहके अधीन हो।

(१५) तो क्या . क्या हम पाप किया करें इसलिये कि हम व्यवस्थाके अधीन नहीं परन्तु अनुग्रहके अधीन हैं . ऐसा न हो। (१६) क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम आज्ञा मानने के लिये जिसके यहां अपनेको दास करके सोंप देते हो उसी के दास हो जिसकी आज्ञा मानते हो चाहे मृत्युके लिये पाप के दास चाहे धर्म्मके लिये आज्ञापालनके दास। (१७) पर ईश्वरका धन्यबाद होय कि तुम पापके दास तो थे परन्तु तुम जिस उपदेशके सांचेमें ढाले गये मनसे उसके आज्ञाकारी हुए। (१८) और मैं तुम्हारे शरीरकी दुर्ब्बलताके कारण मनुष्य की रीति पर कहता हूं कि तुम पापसे उद्धार पाके धर्म्मके दास बने हो। (१९) जैसे तुमने अपने अंगोंको अधर्म्मके लिये अशुद्धता और अधर्म्मके दास करके अर्पण किया तैसे अब अपने अंगोंको पवित्रताके लिये धर्म्मके दास करके अर्पण करो। (२०) जब तुम पापके दास थे तब धर्म्मसे निर्बन्ध थे। (२१) सो उस समयमें तुम क्या फल फलते थे . वे कर्म्म जिनसे तुम अब लजाते हो क्योंकि उनका अन्त मृत्यु है। (२२) पर अब पापसे उद्धार पाके और ईश्वरके दास बनके तुम पवित्रताके लिये फल फलते हो और उसका अन्त अनन्त जीवन है। (२३) क्योंकि पापकी मजूरी मृत्यु है परन्तु ईश्वरका बरदान हमारे प्रभु खीष्ट यीशुमें अनन्त जीवन है।

[विश्वासी लोग व्यवस्थाके अधीन नहीं हैं इसलिये ईश्वरकी सेवा करना उन्हें अवश्य है। व्यवस्थाके हेतुसे पाप प्रबल होता है पर प्रभुके अनुग्रहसे छुटकारा प्राप्त होता है।]

७ हे भाइयो क्या तुम नहीं जानते हो क्योंकि मैं व्यवस्थाके जाननेहारोंसे बोलता हूं कि जबलों मनुष्य जीता रहे तबलों व्यवस्थाको उसपर प्रभुता है। (२) क्योंकि बिवाहिता स्त्री अपने जीवते स्वामीके संग व्यवस्थासे बन्धी है परन्तु यदि स्वामी मर जाय तो वह स्वामीकी व्यवस्थासे छूट गई। (३) इस लिये यदि स्वामीके जीतेजी वह दूसरे स्वामीकी हो जाय तो व्यभिचारिणी कहावेगी परन्तु यदि स्वामी मर जाय तो वह उस व्यवस्थासे निर्बन्ध हुई यहांलों कि दूसरे स्वामीकी हो जानेसे भी वह व्यभिचारिणी नहीं। (४) इसलिये हे मेरे भाइयो तुम भी खीष्टके देहके द्वारासे व्यवस्थाके लिये मर गये कि तुम दूसरेके हो जावो अर्थात उसीके जो मृतकोंमेंसे जी उठा इसलिये कि हम ईश्वरके लिये फल फलें। (५) क्योंकि जब हम शारीरिक दशामें थे तब पापोंके अभिलाष जो व्यवस्थाके द्वारासे थे हमारे अंगोंमें कार्य्य करवाते थे जिस्तें मृत्युके लिये फल फलें। (६) परन्तु अभी हम जिसमें बंधे थे उसके लिये मृतक होके व्यवस्थासे छूट गये हैं यहांलों कि लेखकी पुरानी रीतिपर नहीं परन्तु आत्माकी नई रीतिपर सेवा करते हैं।

(७) तो हम क्या कहें. क्या व्यवस्था पाप है. ऐसा न हो परन्तु बिना व्यवस्थाके द्वारासे मैं पापको न पहचानता हां व्यवस्था जो न कहती कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता। (८) परन्तु पापने अवसर पाके आज्ञाके द्वारा सब प्रकारका लालच मुझमें जन्माया क्योंकि बिना व्यवस्था पाप मृतक है। (९) मैं तो व्यवस्था बिना आगे जीवता था परन्तु जब आज्ञा आई तब पाप जी गया और मैं मूआ। (१०) और वही आज्ञा जो जीवनके लिये थी मेरे लिये मृत्युका

कारण ठहरी । (११) क्योंकि पापने अवसर पाके आज्ञाके द्वारा मुझे ठगा और उसके द्वारा मुझे मार डाला । (१२) सो व्यवस्था पवित्र है और आज्ञा पवित्र और यथार्थ और उत्तम है ।

(१३) तो क्या वह उत्तम वस्तु मेरे लिये मृत्यु हुई . ऐसा न हो परन्तु पाप जिस्तें वह पापसा दिखाई देवे उस उत्तम वस्तुके द्वारासे मेरे लिये मृत्युका जन्मानेहारा हुआ इसलिये कि पाप आज्ञाके द्वारासे अत्यन्त पापमय हो जाय। (१४) क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था आत्मिक है परन्तु मैं शारीरिक और पापके हाथ बिका हूं। (१५) क्योंकि जो मैं करता हूं उसको नहीं समझता हूं क्योंकि जो मैं चाहता हूं सोई नहीं करता हूं परन्तु जिससे घिनाता हूं सोई करता हूं । (१६) पर यदि मैं जो नहीं चाहता हूं सोई करता हूं तो मैं व्यवस्थाको मान लेता हूं कि अच्छी है। (१७) सो अब तो मैं नहीं उसे करता हूं परन्तु पाप जो मुझमें वसता है । (१८) क्योंकि मैं जानता हूं कि कोई उत्तम वस्तु मुझमें अर्थात मेरे शरीरमें नहीं बसती है क्योंकि चाहना तो मेरे संग है परन्तु अच्छी करनी मुझे नहीं मिलती है । (१९) क्योंकि वह अच्छा काम जो मैं चाहता हूं मैं नहीं करता हूं परन्तु जो बुरा काम नहीं चाहता हूं सोई करता हूं। (२०) पर यदि मैं जो नहीं चाहता हूं सोई करता हूं तो अब मैं नहीं उसे करता हूं परन्तु पाप जो मुझमें बसता है। (२१) सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं कि जब मैं अच्छा काम किया चाहता हूं तब बुरा काम मेरे संग है। (२२) क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व के भावसे ईश्वरकी व्यवस्थासे प्रसन्न हूं। (२३) परन्तु मैं अपने अंगोंमें दूसरी व्यवस्था देखता हूं जो मेरी बुद्धिकी व्यवस्थासे लड़ती है और मुझे पापकी व्यवस्थाके जो मेरे अंगोंमें है बंधनमें डालती है। (२४) अभागा मनुष्य जो मैं हूं मुझे इस मृत्युके देहसे कौन बचावेगा । (२५) मैं ईश्वरका धन्य मानता हूं कि

हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके द्वारासे वही बचानेहारा है . सो मैं आप बुद्धिसे तो ईश्वरको व्यवस्था की सेवा परन्तु शरीरसे पाप की व्यवस्थाकी सेवा करता हूं ।

[उनका नवीन जीवन जो शरीरके अनुसार नहीं पर आत्माके अनुसार चलते हैं ।]

८ सो अब जो लोग ख्रीष्ट यीशुमें हैं अर्थात शरीरके अनुसार नहीं परन्तु आत्माके अनुसार चलते हैं उनपर कोई दंडकी आज्ञा नहीं है। (२) क्योंकि जीवनके आत्माकी व्यवस्थाने ख्रीष्ट यीशुमें मुझे पापकी औ मृत्युकी व्यवस्थासे निर्बन्ध किया है । (३) क्योंकि जो व्यवस्थासे अन्होना था इसलिये कि शरीरके द्वारासे वह दुर्ब्बल थी उसको ईश्वरने किया अर्थात अपनेही पुत्रको पापके शरीरकी समानतामें और पापके कारण भेजके शरीरमें पापपर दंडकी आज्ञा दिई . (४) इसलिये कि व्यवस्थाकी बिधि हमोंमें जो शरीरके अनुसार नहीं परन्तु आत्माके अनुसार चलते हैं पूरी किई जाय ।

(५) जो शरीरके अनुसारी हैं सो शरीरकी बातोंपर मन लगाते हैं पर जो आत्माके अनुसारी हैं सो आत्माकी बातों पर मन लगाते हैं । (६) शरीरपर मन लगाना तो मृत्यु है परन्तु आत्मापर मन लगाना जीवन और कल्याण है । (७) इस कारण कि शरीरपर मन लगाना ईश्वरसे शत्रुता करना है क्योंकि वह मन ईश्वरकी व्यवस्थाके बशमें नहीं होता है क्योंकि हो नहीं सकता है। (८) और जो शारीरिक दशामें हैं सो ईश्वरको प्रसन्न नहीं कर सकते हैं। (९) पर जब कि ईश्वरका आत्मा तुममें बसता है तो तुम शारीरिक दशामें नहीं परन्तु आत्मिक दशामें हो . यदि किसीमें ख्रीष्टका आत्मा नहीं है तो वह उसका जन नहीं है । (१०) परन्तु यदि ख्रीष्ट तुममें है तो देह पापके कारण मृतक है पर आत्मा धर्म्मके कारण

जीवन है। (११) और जिसने योशुको मृतकोंमेंसे उठाया उसका आत्मा यदि तुममें वसता है तो जिसने ख्रीष्टको मृतकोंमेंसे उठाया सो तुम्हारे मरनहार देहोंको भी अपने आत्माके कारण जो तुममें वसता है जिलावेगा।

(१२) इसलिये हे भाइयो हम शरीरके ऋणो नहीं हैं कि शरीरके अनुसार दिन काटें। (१३) क्योंकि यदि तुम शरीरके अनुसार दिन काटो तो मरोगे परन्तु यदि आत्मासे देहकी क्रियाओंको मारो तो जीओगे। (१४) क्योंकि जितने लोग ईश्वरके आत्माके चलाये चलते हैं वेही ईश्वरके पुत्र हैं। (१५) क्योंकि तुमने दासत्वका आत्मा नहीं पाया है कि फिर भयमान होओ परन्तु लेपालकपनका आत्मा पाया है जिससे हम हे अब्बा अर्थात हे पिता पुकारते हैं। (१६) आत्मा आपही हमारे आत्माके संग साक्षी देता है कि हम ईश्वरके सन्तान हैं। (१७) और यदि सन्तान हैं तो अधिकारी भी हैं हां ईश्वरके अधिकारी और ख्रीष्टके संगी अधिकारी हैं कि हम तो उसके संग दुःख उठाते हैं जिस्तें उसके संग महिमा भी पावें।

[होनहार महिमाकी आशा और आत्मिक सहायतों का वर्णन जो विश्वासियोंको प्राप्त होती हैं।]

(१८) क्योंकि मैं समझता हूं कि इस वर्त्तमान समयके दुःख उस महिमाके आगे जो हमोंमें प्रगट किई जायगी कुछ गिनने के योग्य नहीं हैं। (१९) क्योंकि सृष्टिकी प्रत्याशा ईश्वरके सन्तानोंके प्रगट होनेकी बाट जोहती है। (२०) क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छासे नहीं परन्तु अधीन करनेहारेकी ओरसे व्यर्थताके अधीन इस आशासे किई गई. (२१) कि सृष्टि भी आपही विनाशके दासत्वसे उद्धार पाके ईश्वरके सन्तानोंकी महिमाकी निर्बन्धता प्राप्त करेगी। (२२) क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अबलों एक संग कहरती और पीड़ा पाती है। (२३) और

केवल वह नहीं पर हम लोग भी इसलिये कि हमारे पास आत्माका पहिला फल है आपही अपनेमें कहरते हैं और लेपालकपनकी अर्थात अपने देहके उद्धारकी बाट जोहते हैं। (२४) क्योंकि आशासे हमारा त्राण हुआ परन्तु जो आशा देखनेमें आती है सो आशा नहीं है क्योंकि जो कुछ कोई देखता है वह उसकी आशा भी क्यों रखता है। (२५) परन्तु यदि हम जो नहीं देखते हैं उसकी आशा रखते हैं तो धीरजसे उसकी बाट जोहते हैं।

(२६) इस रीतिसे पवित्र आत्मा भी हमारी दुर्ब्बलताओंमें सहायता करता है क्योंकि हम नहीं जानते हैं कौनसी प्रार्थना किस रीतिसे किया चाहिये परन्तु आत्मा आपही अकथ्य हाय मार मारके हमारे लिये बिन्ती करता है। (२७) और हृदयोंका जांचनेहारा जानता है कि आत्माकी मनसा क्या है कि वह पवित्र लोगोंके लिये ईश्वरकी इच्छाके समान बिन्ती करता है।

(२८) और हम जानते हैं कि जो लोग ईश्वरको प्यार करते हैं उनके लिये सब बातें मिलके भलाईहीका कार्य्य करती हैं अर्थात उनके लिये जो उसकी इच्छाके समान बुलाये हुए हैं। (२९) क्योंकि जिन्हें उसने आगेसे जाना उन्हें उसने अपने पुत्र के रूपके सदृश होनेको आगेसे ठहराया जिस्तें वह बहुत भाइयोंमें पहिलौठा होवे। (३०) फिर जिन्हें उसने आगेसे ठहराया उन्हें बुलाया भी और जिन्हें बुलाया उन्हें धर्म्मी ठहराया भी और जिन्हें धर्म्मी ठहराया उन्हें महिमा भी दिई।

(३१) तो हम इन बातोंपर क्या कहें. यदि ईश्वर हमारी ओर है तो हमारे विरुद्ध कौन होगा। (३२) जिसने अपने निज पुत्रको न रख छोड़ा परन्तु उसे हम सभोंके लिये सोंप दिया सो उसके संग हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा। (३३) ईश्वरके चुने हुए लोगोंपर दोष कौन लगावेगा. क्या

ईश्वर जो धर्म्मी ठहरानेहारा है। (३४) दंडकी आज्ञा देनेहारा कौन होगा. क्या ख्रीष्ट जो मरा हां जो जी भी उठा जो ईश्वरकी दहिनी ओर भी है जो हमारे लिये बिन्ती भी करता है। (३५) कौन हमें ख्रीष्टके प्रेमसे अलग करेगा. क्या क्लेश वा संकट वा उपद्रव वा अकाल वा नंगाई वा जोखिम वा खड्ग। (३६) जैसा लिखा है कि तेरे लिये हम दिन भर घात किये जाते हैं हम वध होनेवाली भेड़ोंकी नाईं गिने गये हैं। (३७) नहीं पर इन सब बातोंमें हम उसके द्वारासे जिसने हमें प्यार किया है जयवन्तसे भी अधिक हैं। (३८) क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु न जीवन न दूतगण न प्रधानता न पराक्रम न बर्त्तमान न भविष्य. (३९) न ऊंचाई न गहिराई न और कोई सृष्टि हमें ईश्वरके प्रेमसे जो हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशुमें है अलग कर सकेगी।

[यिहूदियोंके विषयमें पावलका बहुत चिन्ता करना।]

९ मैं ख्रीष्टमें सत्य कहता हूं मैं झूठ नहीं बोलता हूं और मेरा मन भी पवित्र आत्मामें मेरा साक्षी है. (२) कि मुझे बड़ा शोक और मेरे मनको निरन्तर खेद रहता है। (३) क्योंकि मैं आप प्रार्थना कर सकता कि अपने भाइयोंके लिये जो शरीरके भावसे मेरे कुटुंब हैं मैं ख्रीष्टसे स्रापित होता। (४) वे इस्रायेली लोग हैं और लेपालकपन औ तेज औ नियम औ व्यवस्थाका निरूपण औ सेवकाई औ प्रतिज्ञाएं उनकी हैं। (५) पितर लोग भी उन्हींके हैं और उनमेंसे शरीरके भावसे ख्रीष्ट हुआ जो सर्ब्बप्रधान ईश्वर सर्ब्बदा धन्य है. आमीन।

[ईश्वरकी इच्छापर कोई मनुष्य विवाद न करे।]

(६) पर ऐसा नहीं है कि ईश्वरका बचन टल गया है क्योंकि सब लोग इस्रायेली नहीं जो इस्रायेलसे जन्मे हैं. (७) और न इसलिये कि इब्राहीमके बंश हैं वे सब उसके सन्तान हैं

परन्तु (लिखा है) इसहाकसे जो हो सो तेरा बंश कहावेगा। (८) अर्थात शरीरके जो सन्तान सो ईश्वरके सन्तान नहीं हैं परन्तु प्रतिज्ञाके सन्तान बंश गिने जाते हैं। (९) क्योंकि यह बचन प्रतिज्ञाका था कि इस समयके अनुसार मैं आऊंगा और साराःको पुत्र होगा। (१०) और केवल यह नहीं परन्तु जब रिबका भी एकसे अर्थात हमारे पिता इसहाकसे गर्भवती हुई . (११) और बालक नहीं जन्मे थे और न कुछ भला अथवा बुरा किया था तबही उससे कहा गया कि बड़का छुटकेका दास होगा . (१२) इसलिये कि ईश्वरकी मनसा जो उसके चुन लेनेके अनुसार है कर्म्मोंके हेतुसे नहीं परन्तु बुलानेहारे की ओरसे बनी रहे। (१३) जैसा लिखा है कि मैंने याकूबको प्यार किया परन्तु एसौको अप्रिय जाना।

(१४) तो हम क्या कहें . क्या ईश्वरके यहां अन्याय है . ऐसा न हो। (१५) क्योंकि वह मूसासे कहता है मैं जिस किसीपर दया करूं उसपर दया करूंगा और जिस किसीपर कृपा करूं उसपर कृपा करूंगा। (१६) सो यह न तो चाहने-हारेका न तो दौड़नेहारेका परन्तु दया करनेहारे ईश्वरका काम है। (१७) क्योंकि धर्म्मपुस्तक फिरऊनसे कहता है कि मैंने तुझे इसी बातके लिये बढ़ाया कि तुझमें अपना पराक्रम दिखाऊं और कि मेरा नाम सारी पृथिवीमें प्रचार किया जाय। (१८) सो वह जिसपर दया किया चाहता है उसपर दया करता है परन्तु जिसे कठोर किया चाहता है उसे कठोर करता है। (१९) तो तू मुझसे कहेगा वह फिर दोष क्यों देता है क्योंकि कौन उसकी इच्छाका साम्ना करता है। (२०) हां पर हे मनुष्य तू कौन है जो ईश्वरसे बिबाद करता है . क्या गढ़ी हुई बस्तु गढ़नेहारेसे कहेगी तूने मुझे इस रीतिसे क्यों बनाया। (२१) अथवा क्या कुम्हारको मिट्टीपर अधिकार नहीं है कि एकही पिंडमें

से एक पात्रको आदरके लिये और दूसरेको अनादरके लिये बनावे। (२२) और यदि ईश्वरने अपना क्रोध दिखानेकी और अपना सामर्थ्य प्रगट करनेकी इच्छासे क्रोधके पात्रोंकी जो बिनाश के योग्य किये गये थे बड़े धीरजसे सही. (२३) और दयाके पात्रों पर जिन्हें उसने महिमाके लिये आगेसे तैयार किया अपनी महिमाके धनको प्रगट करनेकी इच्छा किई तो तू कौन है जो बिबाद करे। (२४) इन्होंको उसने बुलाया भी अर्थात हमोंको जो केवल यिहूदियोंमेंसे नहीं परन्तु अन्यदेशियोंमेंसे भी हैं। (२५) जैसा वह होशेयाके पुस्तकमें भी कहता है कि जो मेरे लोग न थे उन्हें मैं अपने लोग कहूंगा और जो प्यारी न थी उसे प्यारी कहूंगा। (२६) और जिस स्थानमें लोगोंसे कहा गया कि तुम मेरे लोग नहीं हो वहां वे जीवते ईश्वरके सन्तान कहावेंगे। (२७) परन्तु यिशैयाह इस्रायेलके विषयमें पुकारता है यद्यपि इस्रायेलके सन्तानोंकी गिन्ती समुद्रके बालूकी नाईं हो तौभी जो बच रहेंगे उन्होंकी रक्षा होगी। (२८) क्योंकि परमेश्वर बातको पूरी करनेवाला और धर्म्मसे शीघ्र निबाहनेवाला है कि वह देशमें बातको शीघ्र समाप्त करेगा। (२९) जैसा यिशैयाहने आगे भी कहा था कि यदि सेनाओंका प्रभु हमारे लिये बंश न छोड़ देता तो हम सदोमकी नाईं हो जाते और अमोराके समान किये जाते।

(३०) तो हम क्या कहें. यह कि अन्यदेशियोंने जो धर्म्मका पीछा नहीं करते थे धर्म्मको अर्थात उस धर्म्मको जो विश्वाससे है प्राप्त किया. (३१) परन्तु इस्रायेली लोग धर्म्मकी व्यवस्थाका पीछा करते हुए धर्म्मकी व्यवस्थाको नहीं पहुंचे। (३२) किस लिये. इसलिये कि वे बिश्वाससे नहीं परन्तु जैसे व्यवस्थाके कर्म्मोंसे उसका पीछा करते थे कि उन्होंने उस ठेसके पत्थरपर ठोकर खाई. (३३) जैसा लिखा है देखो मैं सियोनमें एक

ठेसका पत्थर और ठोकरकी चटान रखता हूं और जो कोई उसपर बिश्वास करे सो लज्जित न होगा ।

[यिहूदियोंका दोष जो ईश्वरके धर्म्मको नहीं मानते ।]

१० हे भाइयो इस्रायेलके लिये मेरे मनकी इच्छा और मेरी प्रार्थना जो मैं ईश्वरसे करता हूं उनके त्राणके लिये है । (२) क्योंकि मैं उनपर साक्षी देता हूं कि उनको ईश्वरके लिये धुन रहती है परन्तु ज्ञानकी रीतिसे नहीं । (३) क्योंकि वे ईश्वरके धर्म्मको न चीन्हके पर अपनाही धर्म्म स्थापन करनेका यत्न करके ईश्वरके धर्म्मके अधीन नहीं हुए ।

(४) क्योंकि धर्म्मके निमित्त हर एक बिश्वास करनेहारेके लिये ख्रीष्ट व्यवस्थाका अन्त है । (५) क्योंकि मूसा उस धर्म्मके विषयमें जो व्यवस्थासे है लिखता है कि जो मनुष्य यह बातें पालन करे सो उनसे जीयेगा । (६) परन्तु जो धर्म्म विश्वास से है सो यूं कहता है कि अपने मनमें मत कह कौन स्वर्गपर चढ़ेगा . यह तो ख्रीष्टको उतार लानेके लिये होता . (७) अथवा कौन पातालमें उतरेगा . यह तो ख्रीष्टको मृतकोंमेंसे ऊपर लानेके लिये होता । (८) फिर क्या कहता है . परन्तु बचन तेरे निकट तेरे मुंहमें और तेरे मनमें है . यह तो बिश्वास का बचन है जो हम प्रचार करते हैं . (९) कि यदि तू अपने मुंहसे प्रभु यीशुको मान लेवे और अपने मनसे बिश्वास करे कि ईश्वरने उसको मृतकोंमेंसे उठाया तो तू त्राण पावेगा । (१०) क्योंकि मनसे धर्म्मके लिये बिश्वास किया जाता है और मुंहसे त्राणके लिये मान लिया जाता है । (११) क्योंकि धर्म्मपुस्तक कहता है कि जो कोई उसपर बिश्वास करे सो लज्जित न होगा । (१२) यिहूदी और यूनानीमें कुछ भेद भी नहीं है क्योंकि सभोंका एकही प्रभु है जो सभोंके

लिये जो उससे प्रार्थना करते हैं धनी है । (१३) क्योंकि जो कोई परमेश्वरके नामकी प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा ।

(१४) फिर जिसपर लोगोंने बिश्वास नहीं किया उससे वे क्योंकर प्रार्थना करें और जिसकी उन्होंने सुनी नहीं उसपर वे क्योंकर बिश्वास करें और उपदेशक बिना वे क्योंकर सुनें। (१५) और वे जो भेजे न जायें तो क्योंकर उपदेश करें जैसा लिखा है कि जो कुशलका सुसमाचार सुनाते हैं अर्थात भली बातोंका सुसमाचार प्रचार करते हैं उनके पांव कैसे सुन्दर हैं । (१६) परन्तु सब लोगोंने उस सुसमाचारको नहीं माना क्योंकि यिशैयाह कहता है हे परमेश्वर किसने हमारे समाचारका बिश्वास किया है । (१७) सो बिश्वास समाचारसे और समाचार ईश्वरके बचनके द्वारासे आता है । (१८) पर मैं कहता हूं क्या उन्होंने नहीं सुना . हां बरन (लिखा है) उनका शब्द सारी पृथिवीपर और उनकी बातें जगतके सिवानोंतक निकल गईं । (१९) पर मैं कहता हूं क्या इस्रायेली लोग नहीं जानते थे . पहिले मूसा कहता है मैं उन्होंपर जो एक लोग नहीं हैं तुमसे डाह करवाऊंगा मैं एक निर्बुद्धि लोगपर तुमसे क्रोध करवाऊंगा । (२०) परन्तु यिशैयाह साहस करके कहता है कि जो मुझे नहीं ढूंढ़ते थे उनसे मैं पाया गया जो मुझे नहीं पूछते थे उनपर मैं प्रगट हुआ । (२१) परन्तु इस्रायेली लोगों को वह कहता है मैंने सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञा लंघन औ बिबाद करनेहारे लोगकी ओर पसारे ।

[ईश्वरने इस्रायेलियोंको त्याग नहीं किया उनपर पीछे फिर कृपा करेगा ।]

११ तो मैं कहता हूं क्या ईश्वरने अपने लोगोंको त्याग दिया है . ऐसा न हो क्योंकि मैं भी इस्रायेली जन इब्राहीमके बंशसे और बिन्यामीनके कुलका हूं । (२) ईश्वरने अपने लोगोंको जिन्हें उसने आगेसे जाना त्याग नहीं दिया

है . क्या तुम नहीं जानते हो कि धर्म्मपुस्तक एलियाहकी कथामें क्या कहता कि वह इस्रायेलके बिरुद्ध ईश्वरसे बिन्ती करता है . (३) कि हे परमेश्वर उन्होंने तेरे भविष्यद्वक्ताओं को घात किया है और तेरी बेदियोंको खोद डाला है और मैंही अकेला छूट गया हूं और वे मेरा प्राण लेने चाहते हैं। (४) परन्तु ईश्वरकी बाणी उससे क्या कहती है . मैंने अपने लिये सात सहस्र मनुष्योंको रख छोड़ा है जिन्होंने बाअलके आगे घुटना नहीं टेका है। (५) सो इस रीतिसे इस बर्त्तमान समयमें भी अनुग्रहसे चुने हुए कितने लोग बच रहे हैं। (६) जो यह अनुग्रहसे हुआ है तो फिर कर्म्मोंसे नहीं है नहीं तो अनुग्रह अब अनुग्रह नहीं है . पर यदि कर्म्मोंसे हुआ है तो फिर अनुग्रह नहीं है नहीं तो कर्म्म अब कर्म्म नहीं है। (७) तो क्या है . इस्रायेली लोग जिसको ढूंढ़ते हैं उसको उन्होंने प्राप्त नहीं किया है परन्तु चुने हुओंने प्राप्त किया है और दूसरे लोग कठोर किये गये हैं। (८) जैसा लिखा है कि ईश्वरने उन्हें आजके दिनलों जड़ताका आत्मा हां आंखें जो न देखें और कान जो न सुनें दिये हैं। (९) और दाऊद कहता है उनकी मेज उनके लिये फंदा और जाल और ठोकरका कारण और प्रतिफल हो जाय। (१०) उनकी आंखोंपर अन्धेरा छा जाय कि वे न देखें और तू उनकी पीठको नित्य झुका दे।

(११) तो मैं कहता हूं क्या उन्होंने इसलिये ठोकर खाई कि गिर पड़ें . ऐसा न हो परन्तु उनके गिरनेके हेतुसे अन्यदेशियोंको त्राण हुआ है कि उनसें डाह करवावे। (१२) परन्तु यदि उनके गिरनेसे जगतका धन और उनकी हानिसे अन्यदेशियोंका धन हुआ तो उनकी भरपूरीसे वह धन कितना अधिक करके होगा। (१३) मैं तुम अन्यदेशियोंसे कहता हूं . जब कि मैं अन्यदेशियोंके लिये प्रेरित हूं मैं अपनी सेवकाईको

बड़ाई करता हूं . (१४) कि किसी रीतिसे मैं उनसे जो मेरे शरीरके ऐसे हैं डाह करवाके उनमेंसे कई एकको भी बचाऊं। (१५) क्योंकि यदि उनके त्याग दिये जानेसे जगतका मिलाप हुआ तो उनके ग्रहण किये जानेसे क्या होगा . क्या मृतकोंमेंसे जीवन नहीं। (१६) यदि पहिला फल पवित्र है तो पिंड भी पवित्र है और यदि जड़ पवित्र है तो डालियां भी पवित्र हैं। (१७) परन्तु यदि डालियोंमेंसे कितनी तोड़ डाली गईं और तू जंगली जलपाई होके उन्होंमें साटा गया है और जलपाईके वृक्षको जड़ और तेलका भागी हुआ है तो डालियोंके बिरुद्ध घमंड मत कर। (१८) परन्तु जो तू घमंड करे तौभी तू जड़का आधार नहीं परन्तु जड़ तेरा आधार है। (१९) फिर तू कहेगा डालियां तोड़ डाली गईं कि मैं साटा जाऊं। (२०) अच्छा वे अबिश्वास के हेतुसे तोड़ डाली गईं पर तू बिश्वाससे खड़ा है . अभिमानी मत हो परन्तु भय कर। (२१) क्योंकि यदि ईश्वरने स्वाभाविक डालियां न छोड़ीं तो ऐसा न हो कि तुझे भी न छोड़े। (२२) सो ईश्वरकी कृपा और कड़ाईको देख . जो गिर पड़े उनपर कड़ाई परन्तु तुझपर जो तू उसकी कृपामें बना रहे तो कृपा . नहीं तो तू भी काट डाला जायगा। (२३) और वे भी जो अबिश्वास में न रहें तो साटे जायेंगे क्योंकि ईश्वर उन्हें फिर साट सकता है। (२४) क्योंकि यदि तू उस जलपाईके वृक्षसे जो स्वभावसे जंगली है काटा गया और स्वभावके बिरुद्ध अच्छी जलपाई के वृक्षमें साटा गया तो कितना अधिक करके ये जो स्वाभाविक डालियां हैं अपनेही जलपाईके वृक्षमें साटे जायेंगे।

(२५) और हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इस भेद से अनजान रहो ऐसा न हो कि अपने लेखे बुद्धिमान होओ अर्थात कि जबलों अन्यदेशियोंकी संपूर्ण संख्या प्रवेश न करे तब लों कुछ कुछ इस्रायेलियोंकी कठोरता रहेगी। (२६) और

तब सारा इस्रायेल त्राण पावेगा जैसा लिखा है कि बचानेहारा सियोनसे आवेगा और अधर्म्मीपनको याकूबसे अलग करेगा। (२७) जब मैं उनके पापोंको दूर करूंगा तब उनसे यही मेरी ओरसे नियम होगा। (२८) वे सुसमाचारके भावसे तुम्हारे कारण बैरी हैं परन्तु चुन लिये जानेके भावसे पितरोंके कारण प्यारे हैं। (२९) क्योंकि ईश्वर अपने बरदानोंसे और बुलाहटसे कभी पछतानेवाला नहीं। (३०) क्योंकि जैसे तुमने आगे ईश्वरकी आज्ञा लंघन किई परन्तु अभी उनके आज्ञा उल्लंघनके हेतुसे तुमपर दया किई गई है. (३१) तैसे इन्होंने भी अब आज्ञा लंघन किई है कि तुमपर जो दया किई जाती है उसके हेतुसे उनपर भी दया किई जाय। (३२) क्योंकि ईश्वरने सभोंको आज्ञा उल्लंघनमें बन्द कर रखा इसलिये कि सभोंपर दया करे।

[ईश्वरके ज्ञान और न्यायका बखान।]

(३३) आहा ईश्वरके धन और बुद्धि और ज्ञानकी गंभीरता. उसके बिचार कैसे अथाह और उसके मार्ग कैसे अगम्य हैं। (३४) क्योंकि परमेश्वरका मन किसने जाना अथवा उसका मंत्री कौन हुआ। (३५) अथवा किसने उसको पहिले दिया और उसका प्रतिफल उसको दिया जायगा। (३६) क्योंकि उससे और उसके द्वारा और उसके लिये सब कुछ है. उसका गुणानुबाद सर्व्वदा होय.. आमीन।

[अपने अपने पद और सामर्थ्यके अनुसार प्रभुको सेवा करना बिश्वासियोंको आवश्यक है इसका वर्णन।]

१२ सो हे भाइयो मैं तुमसे ईश्वरकी दयाके कारण बिन्ती करता हूं कि अपने शरीरोंको जीवता और पवित्र और ईश्वरको प्रसन्नता योग्य बलिदान करके चढ़ाओ कि यह तुम्हारी मानसिक सेवा है। (२) और इस संसारको रीतिपर

मत चला करो परन्तु तुम्हारे मनके नये होनेसे तुम्हारी चाल चलन बदली जाय जिस्तें तुम परखो कि ईश्वरकी इच्छा अर्थात उत्तम और प्रसन्नता योग्य और पूरा कार्य्य क्या है। (३) क्योंकि जो अनुग्रह मुझे दिया गया है उससे मैं तुममेंके हर एक जनसे कहता हूं कि जो मन रखना उचित है उस से ऊंचा मन न रखे परन्तु ऐसा मन रखे कि ईश्वरने हर एकको विश्वासका जो परिमाण बांट दिया है उसके अनुसार उसको सुबुद्धि मन होय । (४) क्योंकि जैसा हमें एक देहमें बहुत अंग हैं परन्तु सब अंगोंको एकही काम नहीं हैं . (५) तैसा हम जो बहुत हैं ख्रीष्टमें एक देह हैं और पृथक करके एक दूसरेके अंग हैं । (६) और जो अनुग्रह हमें दिया गया है जब कि उसके अनुसार भिन्न भिन्न बरदान हमें मिले हैं तो यदि भविष्यद्वाणीका दान हो तो हम बिश्वासके परिमाणके अनुसार बोलें . (७) अथवा सेवकाईका दान हो तो सेवकाई में लगे रहें . अथवा जो सिखानेहारा हो सो शिक्षामें लगा रहे . (८) अथवा जो उपदेशक हो सो उपदेशमें लगा रहे . जो बांट देवे सो सीधाईसे बांटे . जो अध्यक्षता करे सो यत्नसे करे . जो दया करे सो हर्षसे करे ।

[प्रेम और नम्रता और क्षमा इत्यादि करनेका उपदेश ।]

(९) प्रेम निष्कपट होय . बुराईसे घिन्न करो भलाईमें लगे रहो । (१०) भ्रातीय प्रेमसे एक दूसरेपर मया रखो . परस्पर आदर करनेमें एक दूसरेसे बढ़ चलो । (११) यत्न करनेमें आलसी मत हो . आत्मामें अनुरागी हो . प्रभुकी सेवा किया करो । (१२) आशासे आनन्दित हो . क्लेशमें स्थिर रहो . प्रार्थना में लगे रहो । (१३) पवित्र लोगोंको जो आवश्यक हो उसमें उनकी सहायता करो . अतिथिसेवाकी चेष्टा करो । (१४) अपने सतानेहारोंको आशीस देओ . आशीस देओ . स्राप मत देओ ।

(१५) आनन्द करनेहारोंके संग आनन्द करो और रोनेहारोंके संग रोओ । (१६) एक दूसरेकी ओर एकसा मन रखो . ऊंचा मन मत रखो परन्तु दीनोंसे संगति रखो . अपने लेखे बुद्धिमान मत होओ । (१७) किसीसे बुराईके बदले बुराई मत करो . जो बातें सब मनुष्योंके आगे भली हैं उनकी चिन्ता किया करो । (१८) यदि हो सके तुम तो अपनी ओरसे सब मनुष्योंके संग मिले रहो । (१९) हे प्यारो अपना पलटा मत लेओ परन्तु क्रोधको ठांव देओ क्योंकि लिखा है पलटा लेना मेरा काम है . परमेश्वर कहता है मैं प्रतिफल देऊंगा । (२०) इसलिये यदि तेरा शत्रु भूखा हो तो उसे खिला यदि प्यासा हो तो उसे पिला क्योंकि यह करनेसे तू उसके सिरपर आगके अंगारोंकी ढेरी लगावेगा । (२१) बुराईसे मत हार जा परन्तु भलाईसे बुराईको जीत ले ।

[देशाधिकारियोंके वशमें रहनेकी आवश्यकता ।]

१३ हर एक मनुष्य प्रधान अधिकारियोंके अधीन होवे क्योंकि कोई अधिकार नहीं है जो ईश्वरकी ओरसे न हो पर जो अधिकार हैं सो ईश्वरसे ठहराये हुए हैं । (२) इससे जो अधिकारका विरोध करता है सो ईश्वरकी विधिका साम्ना करता है और साम्ना करनेहारे अपने लिये दंड पावेंगे (३) क्योंकि अध्यक्ष लोग भले कामोंसे नहीं परन्तु बुरे कामोंसे डरानेहारे हैं . क्या तू अधिकारीसे निडर रहा चाहता है भला काम कर तो उससे तेरी सराहना होगी क्योंकि वह तेरी भलाईके लिये ईश्वरका सेवक है । (४) परन्तु जो तू बुरा काम करे तो भय कर क्योंकि वह खड्गको वृथा नहीं बांधता है इसलिये कि वह ईश्वरका सेवक अर्थात कुकर्म्मीपर क्रोध पहुंचानेको दंडकारक है । (५) इसलिये अधीन होना केवल उस क्रोधके कारण नहीं परन्तु विवेकके कारण भी अवश्य

है। (६) इस हेतुसे कर भी देओ क्योंकि वे ईश्वरके सेवक हैं जो इसी बातमें लगे रहते हैं। (७) सो सभोंको जो जो कुछ देना उचित है सो सो देओ जिसे कर देना हो उसे कर देओ जिसे महसूल देना हो उसे महसूल देओ जिससे भय करना हो उससे भय करो जिसका आदर करना हो उसका आदर करो।

[प्रेम जो व्यवस्थाका सार है इसका वर्णन।]

(८) किसीका कुछ ऋण मत धारो केवल एक दूसरेको प्यार करनेका ऋण क्योंकि जो दूसरेको प्यार करता है उसने व्यवस्था पूरी किई है। (९) क्योंकि यह कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे लालच मत कर और कोई दूसरी आज्ञा यदि होय तो इस बातमें अर्थात तू अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर सबका संग्रह है। (१०) प्रेम पड़ोसीको कुछ बुराई नहीं करता है इसलिये प्रेम करना व्यवस्थाको पूरा करना है।

[समय देखके अंधकारके कार्य्योंको त्यागनेका उपदेश।]

(११) यह इसलिये भी किया चाहिये कि तुम समयको जानते हो कि नींदसे हमारे जागनेका समय अब हुआ है क्योंकि जिस समयमें हमने विश्वास किया उस समयसे अब हमारा त्राण अधिक निकट है। (१२) रात बढ़ गई है और दिन निकट आया है इसलिये हम अन्धकारके कामोंको उतारके ज्योतिकी झिलम पहिन लें। (१३) जैसा दिनको चाहिये तैसा हम शुभ रीतिसे चलें, लीला क्रीड़ा औ मतवालपनमें अथवा व्यभिचार औ लुचपनमें अथवा बैर औ डाहमें न चलें। (१४) परन्तु प्रभु यीशु ख्रीष्टको पहिन लो और शरीरके लिये उसके अभिलाषोंको पूरा करनेकी चिन्ता मत करो।

[दुर्ब्बल भाईसे सूक्ष्म बातोंका विवाद करनेका निषेध।]

१४ जो बिश्वासमें दुर्ब्बल है उसे अपनी संगतिमें ले लेओ पर उसके मतका बिचार करनेको नहीं। (२) एक जन बिश्वास करता है कि सब कुछ खाना उचित है परन्तु जो दुर्ब्बल है सो सागपात खाता है। (३) जो खाता है सो न खानेहारेको तुच्छ न जाने और जो नहीं खाता है सो खानेहारेको दोषी न ठहरावे क्योंकि ईश्वरने उसको ग्रहण किया है। (४) तू कौन है जो पराये सेवकको दोषी ठहराता है. वह अपनेही स्वामीके आगे खड़ा होता है अथवा गिरता है. परन्तु वह खड़ा रहेगा क्योंकि ईश्वर उसे खड़ा रख सकता है। (५) एक जन एक दिनको दूसरे दिनसे बड़ा जानता है दूसरा जन हर एक दिनको एकसां जानता है. हर एक जन अपनेही मनमें निश्चय कर लेवे।

(६) जो दिनको मानता है सो प्रभुके लिये मानता है और जो दिनको नहीं मानता है सो प्रभुके लिये नहीं मानता है. जो खाता है सो प्रभुके लिये खाता है क्योंकि वह ईश्वरका धन्य मानता है और जो नहीं खाता है सो प्रभुके लिये नहीं खाता है और ईश्वरका धन्य मानता है। (७) क्योंकि हममें से कोई अपने लिये नहीं जीता है और कोई अपने लिये नहीं मरता है। (८) क्योंकि यदि हम जीवें तो प्रभुके लिये जीते हैं और यदि मरें तो प्रभुके लिये मरते हैं सो यदि हम जीवें अथवा यदि मरें तो प्रभुके हैं। (९) क्योंकि इसी बातके लिये खीष्ट मरा और उठा और फिरके जीया भी कि वह मृतकों औ जीवतोंका भी प्रभु होवे। (१०) तू अपने भाईको क्यों दोषी ठहराता है अथवा तू भी अपने भाईको क्यों तुच्छ जानता है क्योंकि हम सब खीष्टके विचार आसनके आगे खड़े होंगे। (११) क्योंकि लिखा है कि परमेश्वर कहता है जो

मैं जीता हूं तो मेरे आगे हर एक घुटना झुकेगा और हर एक जीभ ईश्वर के आगे मान लेगी । (१२) सो हममेंसे हर एक ईश्वरको अपना अपना लेखा देगा ।

[ईश्वरका राज्य खाना पीना नहीं है पर धर्म्म और मिलाप और आनन्द है ।]

(१३) सो हम अब फिर एक दूसरेको दोषी न ठहरावें परन्तु तुम यही ठहराओ कि भाईके आगे हम ठेस अथवा ठोकर का कारण न रखेंगे । (१४) मैं जानता हूं और प्रभु यीशुसे मुझे निश्चय हुआ है कि कोई वस्तु आपसे अशुद्ध नहीं है केवल जो जिस वस्तुको अशुद्ध जानता है उसके लिये वह अशुद्ध है । (१५) यदि तेरे भोजनके कारण तेरा भाई उदास होता है तो तू अब प्रेमकी रीतिसे नहीं चलता है . जिसके लिये खीष्ट मूआ उसको तू अपने भोजनके द्वारासे नाश मत कर ।

(१६) सो तुम्हारी भलाईकी निन्दा न किई जाय । (१७) क्योंकि ईश्वरका राज्य खाना पीना नहीं है परन्तु धर्म्म और मिलाप और आनन्द जो पवित्र आत्मासे है । (१८) क्योंकि जो इन बातोंमें खीष्टकी सेवा करता है सो ईश्वरको भावता और मनुष्योंके यहां भला ठहराया जाता है । (१९) इसलिये हम मिलापकी बातों और एक दूसरेके सुधारनेकी बातोंकी चेष्टा करें । (२०) भोजनके हेतु ईश्वरका काम नाश मत कर . सब कुछ शुद्ध तो है परन्तु जो मनुष्य खानेसे ठोकर खिलाता है उसके लिये बुरा है । (२१) अच्छा यह है कि तू न मांस खाय न दाख रस पीये न कोई काम करे जिससे तेरा भाई ठेस अथवा ठोकर खाता है अथवा दुर्ब्बल होता है ।

(२२) क्या तुझे विश्वास है . उसे ईश्वरके आगे अपने मनमें रख . धन्य वह है कि जो बात उसे अच्छी देख पड़ती है

उसमें अपनेको दोषी नहीं ठहराता है। (२३) परन्तु जो सन्देह करता है सो यदि खाय तो दंडके योग्य ठहरा है क्योंकि वह बिश्वासका काम नहीं करता है. परन्तु जो जो काम बिश्वासका नहीं है सो पाप है।

[निर्ब्बलोंको संभालने और अपनेहीको प्रसन्न न करनेका उपदेश।]

१५ हमें जो बलवन्त हैं उचित है कि निर्ब्बलोंकी दुर्ब्बलताओंको सहें और अपनेहीको प्रसन्न न करें। (२) हम मेंसे हर एक जन पड़ोसीकी भलाईके लिये उसे सुधारनेके निमित्त प्रसन्न करे। (३) क्योंकि ख्रीष्टने भी अपनेहीको प्रसन्न न किया परन्तु जैसा लिखा है तेरे निन्दकोंकी निन्दाकी बातें मुझपर आ पड़ीं। (४) क्योंकि जो कुछ आगे लिखा गया सो हमारी शिक्षाके लिये लिखा गया कि धीरताके और शांतिके द्वारा जो धर्म्मपुस्तकसे होती है हमें आशा होय। (५) और धीरता और शांतिका ईश्वर तुम्हें ख्रीष्ट यीशुके अनुसार आपस में एकसा मन रखनेका दान देवे. (६) जिस्तें तुम एक चित्त होके एक मुंहसे हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके पिता ईश्वरका गुणानुबाद करो। (७) इस कारण ईश्वरकी महिमाके लिये जैसा ख्रीष्टने तुम्हें ग्रहण किया तैसे तुम भी एक दूसरेको ग्रहण करो।

(८) मैं कहता हूं कि जो प्रतिज्ञाएं पितरोंसे किई गईं उन्हें दृढ़ करनेको यीशु ख्रीष्ट ईश्वरकी सच्चाईके लिये खतना किये हुए लोगोंका सेवक हुआ। (९) पर अन्यदेशी लोग भी दयाके कारण ईश्वरका गुणानुबाद करें जैसा लिखा है इस कारण मैं अन्यदेशियोंमें तेरा धन्य मानूंगा और तेरे नामकी गीतें गाऊंगा। (१०) और फिर कहा है हे अन्यदेशियो उसके लोगोंके संग आनन्द करो। (११) और फिर हे सब अन्यदेशियो परमेश्वरकी स्तुति करो और हे सब लोगो उसे सराहो।

(१२) और फिर यिशैयाह कहता है यिशीका एक मूल होगा और अन्यदेशियोंका प्रधान होनेको एक उठेगा उसपर अन्यदेशी लोग आशा रखेंगे। (१३) आशाका ईश्वर तुम्हें बिश्वास करनेमें सर्व्व आनन्द और शांतिसे परिपूर्ण करे कि पवित्र आत्माके सामर्थ्यसे तुम्हें अधिक करके आशा होय।

[रोमीय मंडलीके पास लिखनेमें पावलका अभिप्राय। मंडलीसे उसकी विन्ती।]

(१४) हे मेरे भाइयो मैं आप भी तुम्हारे विषयमें निश्चय जानता हूं कि तुम भी आपही भलाईसे भरपूर औ सारे ज्ञानसे परिपूर्ण हो और एक दूसरेको चिता सकते हो। (१५) परन्तु हे भाइयो मैंने तुम्हें चेत दिलाते हुए तुम्हारे पास कहीं कहीं बहुत साहससे जो लिखा है यह उस अनुग्रहके कारण हुआ जो ईश्वरने मुझे दिया है. (१६) इसलिये कि मैं अन्यदेशियोंके लिये यीशु ख्रीष्टका सेवक होऊं और ईश्वरके सुसमाचारका याजकीय कर्म्म करूं जिस्तें अन्यदेशियोंका चढ़ाया जाना पवित्र आत्मासे पवित्र किया जाके ग्राह्य होय।

(१७) सो उन बातोंमें जो ईश्वरसे संबन्ध रखती हैं मुझे ख्रीष्ट यीशुमें बड़ाई करनेका हेतु मिलता है। (१८) क्योंकि जो काम ख्रीष्टने मेरे द्वारासे नहीं किये उनमेंसे मैं किसी कामके विषयमें बात करनेका साहस न करूंगा परन्तु उन कामोंके विषयमें कहूंगा जो उसने मेरे द्वारासे अन्यदेशियोंको अधीनताके लिये वचन औ कर्म्मसे और चिन्हों औ अद्भुत कामोंके सामर्थ्यसे और ईश्वरके आत्माकी शक्तिसे किये हैं. (१९) यहां लों कि यिरूशलीम और चारों ओरके देशसे लेके इल्लुरिया देशलों मैंने ख्रीष्टके सुसमाचारको सम्पूर्ण प्रचार किया है। (२०) परन्तु मैं सुसमाचारको इस रीतिसे सुनानेकी चेष्टा करता था अर्थात कि जहां ख्रीष्टका नाम लिया गया तहां न सुनाऊं

ऐसा न हो कि पराई नेंवपर घर बनाऊं. (२१) परन्तु ऐसा सुनाऊं जैसा लिखा है कि जिन्हें उसका समाचार नहीं कहा गया वे देखेंगे और जिन्होंने नहीं सुना है वे समझेंगे।

(२२) इसी हेतुसे मैं तुम्हारे पास जानेमें बहुत बार रुक गया। (२३) परन्तु अब मुझे इस ओरके देशोंमें और स्थान नहीं रहा है और बहुत बरसोंसे मुझे तुम्हारे पास आनेकी लालसा है. (२४) इसलिये मैं जब कभी इस्पानिया देशको जाऊं तब तुम्हारे पास आऊंगा क्योंकि मैं आशा रखता हूं कि तुम्हारे पाससे जाते हुए तुम्हें देखूं और जब मैं पहिले तुम से कुछ कुछ तृप्त हुआ हूं तब तुमसे कुछ दूर उधर पहुंचाया जाऊं। (२५) परन्तु अभी मैं पवित्र लोगोंकी सेवा करनेके लिये यिरूशलीमको जाता हूं। (२६) क्योंकि माकिदोनिया और आखायाके लोगोंकी इच्छा हुई कि यिरूशलीमके पवित्र लोगों में जो कंगाल है उनको कुछ सहायता करें। (२७) उनकी इच्छा हुई और वे उनके ऋणी भी हैं क्योंकि यदि अन्यदेशी लोग उनकी आत्मिक वस्तुओंमें भागी हुए तो उन्हें उचित है कि शारीरिक वस्तुओंमें उनकी भी सेवा करें। (२८) सो जब मैं यह कार्य्य पूरा कर चुकूं और उनके लिये इस फलपर छाप दे चुकूं तब तुम्हारे पाससे होके इस्पानियाको जाऊंगा। (२९) और मैं जानता हूं कि तुम्हारे पास जब मैं आऊं तब ख्रीष्ट के सुसमाचारकी आशीसकी भरपूरीसे आऊंगा।

(३०) और हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके कारण और पवित्र आत्माके प्रेमके कारण मैं तुमसे बिन्ती करता हूं कि ईश्वर से मेरे लिये प्रार्थना करनेमें मेरे संग परिश्रम करो. (३१) कि मैं यिहूदियामेंके अविश्वासियोंसे बचूं और कि यिरूशलीमके लिये जो मेरी सेवकाई है सो पवित्र लोगोंको भावे. (३२) जिस्तें मैं ईश्वरकी इच्छासे तुम्हारे पास आनन्दसे आऊं और तुम्हारे

संग विश्राम करूं । (३३) शांतिका ईश्वर तुम सभोंके संग होवे . आमीन ।

[पावलका अपनी और अपने साथियोंकी ओरसे अनेक भाई वहिनोंके पास नमस्कार लिखना और पत्रीको समाप्त करना ।]

१६ मैं तुम्हारे पास हम लोगोंकी वहिन फैबोको जो किंक्रियामेंकी मंडलीकी सेवकी है सराहता हूं . (२) जिस्तें तुम उसे प्रभुमें जैसा पवित्र लोगोंके योग्य है वैसा ग्रहण करो और जिस किसी बातमें उसको तुमसे प्रयोजन होय उसके सहायक होओ क्योंकि वह भी बहुत लोगोंकी और मेरी भी उपकारिणी हुई है ।

(३) प्रिस्कीला और अकूलाको जो ख्रीष्ट यीशुमें मेरे सहकर्म्मी हैं नमस्कार । (४) उन्होंने मेरे प्राणके लिये अपनाही गला धर दिया जिनका केवल मैं नहीं परन्तु अन्यदेशियोंकी सारी मंडलियां भी धन्य मानती हैं । (५) उनके घरमेंकी मंडलीको भी नमस्कार . इपेनित मेरे प्यारेको जो ख्रीष्टके लिये आशियाका पहिला फल है नमस्कार । (६) मरियमको जिसने हमारे लिये बहुत परिश्रम किया नमस्कार । (७) अन्द्रोनिक और यूनिय मेरे कुटुंबों और मेरे संगी बंधुओंको जो प्रेरितोंमें प्रसिद्ध हैं और मुझसे पहिले ख्रीष्टमें हुए थे नमस्कार । (८) अम्पलिय प्रभुमें मेरे प्यारेको नमस्कार । (९) उर्ब्बान ख्रीष्टमें हमारे सहकर्म्मीको और स्ताखु मेरे प्यारेको नमस्कार । (१०) अपिल्लिको जो ख्रीष्टमें जांचा हुआ है नमस्कार . अरिस्तबूलके घरानेके लोगोंको नमस्कार । (११) हेरोदियोन मेरे कुटुंबको नमस्कार . नर्किसके घरानेके जो लोग प्रभुमें हैं उन्होंको नमस्कार । (१२) त्रुफेना और त्रुफोसाको जिन्होंने प्रभुमें परिश्रम किया नमस्कार . प्यारी परसीको जिसने प्रभुमें बहुत परिश्रम किया नमस्कार । (१३) रूफको जो प्रभुमें चुना हुआ है और

उसको श्रो मेरी माताको नमस्कार। (१४) असुंक्रित श्रार फिले-गोन श्रो हर्मा श्रो पात्रोवा श्रो हर्मीको श्रार उनके संगके भाइयोंको नमस्कार। (१५) फिललोग श्रो यूलियाको श्रार नोरिय श्रार उसकी बहिनको श्रार उलुम्पाको श्रार उनके संगके सब पवित्र लोगोंको नमस्कार। (१६) एक दूसरेको पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो. तुमको ख्रीष्टकी मंडलियोंकी श्रारसे नमस्कार।

(१७) हे भाइयो मैं तुमसे बिन्ती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षाके बिपरीत जो तुमने पाई है नाना भांतिके विरोध श्रार ठोकर डालते हैं उन्हें देख रखो श्रार उनसे फिर जाश्रो। (१८) क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टकी नहीं परन्तु अपने पेटकी सेवा करते हैं श्रार चिकनी श्रार मीठी बातोंसे सूधे लोगोंके मनको धोखा देते हैं। (१९) तुम्हारे आज्ञापालनका चर्चा सब लोगोंमें फैल गया है इससे मैं तुम्हारे विषयमें आनन्द करता हूं परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम भलाईके लिये बुद्धिमान पर बुराईके लिये सूधे होश्रो। (२०) शांतिका ईश्वर शैतानको शीघ्र तुम्हारे पांश्रों तले कुचलेगा. हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह तुम्हारे संग होय।

(२१) तिमोथिय मेरे सहकर्म्मीका श्रार लूकिय श्रो यासोन श्रो सोसिपातर मेरे कुटुंबोंका तुमसे नमस्कार। (२२) मुझ तर्त्तियपत्रीके लिखनेहारेका प्रभुमें तुमसे नमस्कार। (२३) गायस मेरे श्रार सारी मंडलीके आतिथ्यकारीका तुमसे नमस्कार. इरास्तका जो नगरका भंडारी है श्रार भाई क्वार्तका तुमसे नमस्कार। (२४) हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह तुम सभोंके संग होय. आमीन।

(२५) जो मेरे सुसमाचारके अनुसार श्रार यीशु ख्रीष्टके विषयके उपदेशके अनुसार अर्थात उस भेदके प्रकाशके अनु-

सार तुम्हें स्थिर कर सकता है. (२६) जो भेद सनातनसे गुप्त रखा गया था परन्तु अब प्रगट किया गया है और सनातन ईश्वरकी आज्ञासे भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकके द्वारा सब देशोंके लोगोंको बताया गया है कि वे बिश्वाससे आज्ञाकारी हो जायें. (२७) उसको अर्थात अद्वैत बुद्धिमान ईश्वरको यीशु ख्रीष्टके द्वारासे धन्य हो जिसका गुणानुबाद सर्व्वदा होवे। आमीन ॥

करिन्थियोंको पावल प्रेरितकी पहिली पत्री।

[पत्रीका आभास। करिन्थियोंके विषयमें पावलका धन्यवाद।]

१ पावल जो ईश्वरकी इच्छासे यीशु ख्रीष्टका बुलाया हुआ प्रेरित है और भाई सोस्थिनी. (२) ईश्वरकी मंडलीको जो करिन्थमें है जो ख्रीष्ट यीशुमें पवित्र किये हुए और बुलाये हुए पवित्र लोग हैं उन सभोंके संग जो हर स्थानमें हमारे हां उनके और हमारे भी प्रभु यीशु ख्रीष्टके नामकी प्रार्थना करते हैं. (३) तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।

(४) मैं सदा तुम्हारे विषयमें अपने ईश्वरका धन्य मानता हूं इसलिये कि ईश्वरका यह अनुग्रह तुम्हें ख्रीष्ट यीशुमें दिया गया. (५) कि उसमें तुम हर बातमें अर्थात सारे बचन और सारे ज्ञानमें धनवान किये गये. (६) जैसा ख्रीष्टके विषयकी साक्षी तुम्होंमें दृढ़ हुई. (७) यहांलों कि किसी बरदानमें तुम्हें घटी नहीं है और तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके प्रकाशकी बाट जोहते हो। (८) वह तुम्हें अन्तलों भी दृढ़ करेगा ऐसा कि तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके दिनमें निर्दोष होगे। (९) ईश्वर बिश्वासयोग्य है जिससे तुम उसके पुत्र हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टकी संगतिमें बुलाये गये।

[उन्होंमेंके बिभेदोंका वर्णन और उनके विषयमें उन्हें समझाना।]

(१०) हे भाइयो मैं तुमसे हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके नामके कारण बिन्ती करता हूं कि तुम सब एकही प्रकारकी बात बोलो और तुम्होंमें बिभेद न होवें परन्तु एकही मन और एकही बिचारमें सिद्ध होओ। (११) क्योंकि हे मेरे भाइयो क्लोईके

घरानेके लोगोंसे मुझपर तुम्हारे विषयमें प्रगट किया गया है कि तुम्होंमें बैर बिरोध हैं. (१२) और मैं यह कहता हूं कि तुम सब यूं बोलते हो कोई कि मैं पावलका हूं कोई कि मैं अपल्लोका कोई कि मैं कैफाका कोई कि मैं ख्रीष्टका हूं। (१३) क्या ख्रीष्ट बिभाग किया गया है. क्या पावल तुम्हारे लिये क्रूशपर घात किया गया अथवा क्या तुम्हें पावलके नाम से बपतिसमा दिया गया। (१४) मैं ईश्वरका धन्य मानता हूं कि क्रोस्प और गायसको छोड़के मैंने तुममेंसे किसीको बपतिसमा नहीं दिया. (१५) ऐसा न हो कि कोई कहे कि मैंने अपने नामसे बपतिसमा दिया। (१६) और मैंने स्तिफानके घरानेको भी बपतिसमा दिया. आगे मैं नहीं जानता हूं कि मैंने और किसीको बपतिसमा दिया। (१७) क्योंकि ख्रीष्टने मुझे बपतिसमा देनेको नहीं परन्तु सुसमाचार सुनानेको भेजा पर कथाके ज्ञानके अनुसार नहीं जिस्तें ऐसा न हो कि ख्रीष्टका क्रूश व्यर्थ ठहरे।

[ईश्वरका ज्ञान और जगतका ज्ञान।]

(१८) क्योंकि क्रूशकी कथा उन्हें जो नाश होते हैं मूर्खता है परन्तु हमें जो त्राण पाते हैं ईश्वरका सामर्थ्य है। (१९) क्योंकि लिखा है कि मैं ज्ञानवानोंके ज्ञानको नाश करूंगा और बुद्धिमानों की बुद्धिको तुच्छ कर देऊंगा। (२०) ज्ञानवान कहां है. अध्यापक कहां. इस संसारका बिवादी कहां. क्या ईश्वरने इस जगतके ज्ञानको मूर्खता न बनाई है। (२१) क्योंकि जब कि ईश्वरके ज्ञान से यूं हुआ कि जगतने ज्ञानके द्वारासे ईश्वरको न जाना तो ईश्वरकी इच्छा हुई कि उपदेशकी मूर्खताके द्वारासे बिश्वास करनेहारोंको बचावे। (२२) यिहूदी लोग तो चिन्ह मांगते हैं और यूनानी लोग भी ज्ञान ढूंढ़ते हैं. (२३) परन्तु हम लोग क्रूशपर मारे गये ख्रीष्टका उपदेश करते हैं जो यिहूदियोंको

ठोकरका कारण और यूनानियोंको मूर्खता है . (२४) परन्तु उन्होंको हां यिहूदियोंको और यूनानियोंको भी जो बुलाये हुए हैं ईश्वरका सामर्थ्य और ईश्वरका ज्ञान रूपी खीष्ट है। (२५) क्योंकि ईश्वरकी मूर्खता मनुष्योंसे अधिक ज्ञानवान है और ईश्वरकी दुर्ब्बलता मनुष्योंसे अधिक शक्तिमान है।

(२६) क्योंकि हे भाइयो तुम अपनी बुलाहटको देखते हो कि न तुममें शरीरके अनुसार बहुत ज्ञानवान न बहुत सामर्थी न बहुत कुलीन हैं। (२७) परन्तु ईश्वरने जगतके मूर्खोंको चुना है कि ज्ञानवानोंको लज्जित करे और जगतके दुर्ब्बलोंको ईश्वरने चुना है कि शक्तिमानोंको लज्जित करे। (२८) और जगतके अधमों और तुच्छोंको हां उन्हें जो नहीं हैं ईश्वरने चुना है कि उन्हें जो हैं लोप करे . (२९) जिस्तें कोई प्राणी ईश्वरके आगे घमंड न करे। (३०) उसीसे तुम खीष्ट यीशुमें हुए हो जो ईश्वरकी ओरसे हमोंको ज्ञान औ धर्म्म औ पवित्रता औ उद्धार हुआ है . (३१) जिस्तें जैसा लिखा है जो बड़ाई करे सो परमेश्वरके विषयमें बड़ाई करे।

[पावलका अपने उपदेशका वर्णन करना कि सांसारिक ज्ञानसे रहित परन्तु ईश्वरके सामर्थ्यके साथ था।]

२ हे भाइयो मैं जब तुम्हारे पास आया तब बचन अथवा ज्ञानकी उत्तमतासे तुम्हें ईश्वरकी साक्षी सुनाता हुआ नहीं आया। (२) क्योंकि मैंने यही ठहराया कि तुम्होंमें और किसी बातको न जानूं केवल यीशु खीष्टको हां क्रूशपर मारे गये खीष्टको। (३) और मैं दुर्ब्बलता और भयके साथ और बहुत कांपता हुआ तुम्हारे यहां रहा। (४) और मेरा बचन और मेरा उपदेश मनुष्योंके ज्ञानकी मनानेवाली बातोंसे नहीं परन्तु आत्मा और सामर्थ्यके प्रमाणसे था . (५) जिस्तें तुम्हारा विश्वास मनुष्योंके ज्ञानपर नहीं परन्तु ईश्वरके सामर्थ्यपर होवे।

(६) तौभी हम सिद्ध लोगोंमें ज्ञान सुनाते हैं पर इस संसारका अथवा इस संसारके लोप होनेहारे प्रधानोंका ज्ञान नहीं। (७) परन्तु हम एक भेदमें ईश्वरका गुप्त ज्ञान जिसे ईश्वरने सनातनसे हमारी महिमाके लिये ठहराया सुनाते हैं. (८) जिसे इस संसारके प्रधानोंमेंसे किसीने न जाना क्योंकि जो वे उसे जानते तो तेजोमय प्रभुको क्रूशपर घात न करते। (९) परन्तु जैसा लिखा है जो आंखने नहीं देखा और कानने नहीं सुना है और जो मनुष्यके हृदयमें नहीं समाया है वही है जो ईश्वरने उनके लिये जो उसे प्यार करते हैं तैयार किया है। (१०) परन्तु ईश्वरने उसे अपने आत्मासे हमोंपर प्रगट किया हैं क्योंकि आत्मा सब बातें हां ईश्वरकी गंभीर बातें भी जांचता है। (११) क्योंकि मनुष्योंमेंसे कौन है जो मनुष्यकी बातें जानता है केवल मनुष्यका आत्मा जो उसमें है. वैसे ही ईश्वरकी बातें भी कोई नहीं जानता है केवल ईश्वर का आत्मा। (१२) परन्तु हमने संसारका आत्मा नहीं पाया है परन्तु वह आत्मा जो ईश्वरकी ओरसे है इसलिये कि हम वह बातें जानें जो ईश्वरने हमें दिई हैं. (१३) जो हम मनुष्योंके ज्ञानकी सिखाई हुई बातोंमें नहीं परन्तु पवित्र आत्माकी सिखाई हुई बातोंमें आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाके सुनाते हैं। (१४) परन्तु प्राणिक मनुष्य ईश्वरके आत्माकी बातें ग्रहण नहीं करता है क्योंकि वे उसके लेखे मूर्खता हैं और वह उन्हें नहीं जान सकता है क्योंकि उनका बिचार आत्मिक रीतिसे किया जाता है। (१५) आत्मिक जन सब कुछ बिचार करता है परन्तु वह आप किसीसे बिचार नहीं किया जाता है। (१६) क्योंकि परमेश्वरका मन किसने जाना है जो उसे सिखावे. परन्तु हमको ख्रीष्टका मन है।

[करिन्थियोंकी शारीरिक चालका उलहना । प्रेरितोंके यथार्थ पदका निर्णय ।]

३ हे भाइयो मैं तुमसे जैसा आत्मिक लोगोंसे तैसा नहीं बात कर सका परन्तु जैसा शारीरिक लोगोंसे हां जैसा उन्होंसे जो खीष्टमें बालक हैं । (२) मैंने तुम्हें दूध पिलाया अन्न न खिलाया क्योंकि तुम तबलों नहीं खा सकते थे बरन अबलों भी नहीं खा सकते हो क्योंकि अबलों शारीरिक हो । (३) क्योंकि जब कि तुम्होंमें डाह और बैर और विरोध हैं तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो और मनुष्यकी रीतिपर नहीं चलते हो । (४) क्योंकि जब एक कहता है मैं पावलका हूं और दूसरा मैं अपल्लोका हूं तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो । (५) तो पावल कौन है और अपल्लो कौन है. केवल सेवक लोग जिनके द्वारा जैसा प्रभुने हर एकको दिया तैसा तुमने बिश्वास किया । (६) मैंने लगाया अपल्लोने सींचा परन्तु ईश्वरने बढ़ाया । (७) सो न तो लगानेहारा कुछ है और न सींचनेहारा परन्तु ईश्वर जो बढ़ानेहारा है । (८) लगानेहारा और सींचनेहारा दोनों एक हैं परन्तु हर एक जन अपनेही परिश्रमके अनुसार अपनीही बनि पावेगा । (९) क्योंकि हम ईश्वरके सहकर्म्मी हैं. तुम ईश्वरकी खेती ईश्वरकी रचना हो ।

[ईश्वरके मन्दिरकी पवित्रता । सांसारिक ज्ञानकी निष्फलता ।]

(१०) ईश्वरके अनुग्रहके अनुसार जो मुझे दिया गया मैंने ज्ञानवान थवईकी नाईं नेव डाली है और दूसरा मनुष्य उस पर घर बनाता है. परन्तु हर एक मनुष्य सचेत रहे कि वह किस रीतिसे उसपर बनाता है । (११) क्योंकि जो नेव पड़ी है अर्थात योशु खीष्ट उसे छोड़के दूसरी नेव कोई नहीं डाल सकता है । (१२) परन्तु यदि कोई इस नेवपर सोना वा रूपा वा बहुमूल्य पत्थर वा काठ वा घास वा फूस बनावे. (१३) तो हर एकका काम प्रगट हो जायगा क्योंकि वही दिन

उसे प्रगट करेगा इसलिये कि आग सहित प्रकाश होता है और हर एकका काम कैसा है सो वह आग परखेगी। (१४) यदि किसीका काम जो उसने बनाया है ठहरे तो वह मजूरी पावेगा। (१५) यदि किसीका काम जल जाय तो उसे टूटी लगेगी परन्तु वह आप बचेगा पर ऐसा जैसा आगके बोचसे होके कोई बचे।

(१६) क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम ईश्वरके मन्दिर हो और ईश्वरका आत्मा तुममें बसता है। (१७) यदि कोई मनुष्य ईश्वरके मन्दिरको नाश करे तो ईश्वर उसको नाश करेगा क्योंकि ईश्वरका मन्दिर पवित्र है और वह मन्दिर तुम हो।

(१८) कोई अपनेको छल न देवे. यदि कोई इस संसारमें अपनेको तुम्होंमें ज्ञानी समझे तो मूर्ख बने जिस्तें ज्ञानी हो जाय। (१९) क्योंकि इस जगतका ज्ञान ईश्वरके यहां मूर्खता है क्योंकि लिखा है वह ज्ञानियोंको उनकी चतुराईमें पकड़नेहारा है। (२०) और फिर परमेश्वर ज्ञानियोंकी चिन्ताएं जानता है कि वे व्यर्थ हैं। (२१) सो मनुष्योंके विषयमें कोई घमंड न करे क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है। (२२) क्या पावल क्या अपल्लो क्या कैफा क्या जगत क्या जोवन क्या मरण क्या वर्त्तमान क्या भविष्य सब कुछ तुम्हारा है। (२३) और तुम खोष्टके हो और खोष्ट ईश्वरका है।

[प्रेरित लोग ईश्वरके सेवक हैं और उनका बिचार ईश्वरही करेगा इसका वर्णन।]

४ यूंही मनुष्य हमें खोष्टके सेवक और ईश्वरके भेदोंकेते भंडारी करके जाने। (२) फिर भंडारियोंमें लोग यह चाहते हैं कि मनुष्य बिश्वासयोग्य पाया जाय। (३) परन्तु मेरे लेके अति छोटी बात है कि मेरा बिचार तुम्होंसे अथवा मनुष्यके न्यायसे किया जाय हां मैं अपना बिचार भी नहीं करता हूं।

(४) क्योंकि मेरे जानतेमें कुछ मुझसे नहीं हुआ परन्तु इससे मैं निर्दोष नहीं ठहरा हूं पर मेरा बिचार करनेहारा प्रभु है। (५) सो जबलों प्रभु न आवे समयके आगे किसी बातका बिचार मत करो . वही तो अंधकारकी गुप्त बातें ज्योतिमें दिखावेगा और हृदयोंके परामर्शोंको प्रगट करेगा और तब ईश्वरकी ओरसे हर एककी सराहना होगी ।

[पावलका करिन्थियोंको बालकोंकी नाईं उपदेश देना और अभिमानियों को चिताना ।]

(६) इन बातोंको हे भाइयो तुम्हारे कारण मैंने अपनेपर और अपल्लोपर दृष्टान्तसा लगाया है इसलिये कि हमोंमें तुम यह सीखो कि जो लिखा हुआ है उससे अधिक ऊंचा मन न रखो जिस्तें तुम एक दूसरेके पक्षमें और मनुष्यके बिरुद्ध फूल न जावो। (७) क्योंकि कौन तुझे भिन्न करता है . और तेरे पास क्या है जो तूने दूसरेसे नहीं पाया है . और यदि तूने दूसरेसे पाया है तो क्यों ऐसा घमंड करता है कि मानो दूसरेसे नहीं पाया । (८) तुम तो तृप्त हो चुके तुम धनी हो चुके तुमने हमारे बिना राज्य किया है हां मैं चाहता हूं कि तुम राज्य करते जिस्तें हम भी तुम्हारे संग राज्य करें । (९) क्योंकि मैं समझता हूं कि ईश्वरने सबके पीछे हम प्रेरितों को जैसे मृत्युके लिये ठहराये हुओंको प्रत्यक्ष दिखाया है क्योंकि हम जगतके हां दूतों और मनुष्योंके आगे लीलाके ऐसे बने हैं । (१०) हम खीष्टके कारण मूर्ख हैं पर तुम खीष्ट में बुद्धिमान हो . हम दुर्ब्बल हैं पर तुम बलवन्त हो . तुम मर्य्यादिक हो पर हम निरादर हैं । (११) इस घड़ीलों हम भूखे और प्यासे और नंगे भी रहते हैं और घूसे मारे जाते और डांवाडोल रहते हैं और अपनेही हाथोंसे कमानेमें परिश्रम करते हैं । (१२) हम अपमान किये जानेपर आशीस देते हैं

सताये जानेपर सह लेते हैं निन्दित होनेपर बिन्ती करते हैं। (१३) हम अबलों जगतका कूड़ा हां सब वस्तुओंको खुरचन के ऐसे बने हैं।

(१४) मैं यह बातें तुम्हें लज्जित करनेको नहीं लिखता हूं परन्तु अपने प्यारे बालकोंकी नाईं तुम्हें चिताता हूं। (१५) क्योंकि तुम्हें ख्रीष्टमें यदि दस सहस्र शिक्षक हों तौभी बहुत पिता नहीं हैं क्योंकि ख्रीष्ट यीशुमें सुसमाचारके द्वारा तुम मेरेही पुत्र हो। (१६) सो मैं तुमसे बिन्ती करता हूं तुम मेरीसी चाल चलो। (१७) इस हेतुसे मैंने तिमोथियको जो प्रभुमें मेरा प्यारा और विश्वासयोग्य पुत्र है तुम्हारे पास भेजा है और ख्रीष्टमें जो मेरे मार्ग हैं उन्हें वह जैसा मैं सर्व्वत्र हर एक मंडलीमें उपदेश करता हूं तैसा तुम्हें चेत दिलावेगा। (१८) कितने लोग फूल गये हैं माना कि मैं तुम्हारे पास नहीं आनेवाला हूं। (१९) परन्तु जो प्रभुकी इच्छा होय तो मैं शीघ्र तुम्हारे पास आऊंगा और उन फूले हुए लोगोंका बचन नहीं परन्तु सामर्थ्य बूझ लेऊंगा। (२०) क्योंकि ईश्वरका राज्य बचनमें नहीं परन्तु सामर्थ्यमें है। (२१) तुम क्या चाहते हो. मैं छड़ी लेके अथवा प्रेमसे और नम्रताके आत्मासे तुम्हारे पास आऊं।

[ख्रीष्टिय मंडलीके शुद्ध होनेकी आवश्यकता कुकर्म्मियोंको निकालनेकी आज्ञा।]

५ यह सर्व्वत्र सुननेमें आता हैं कि तुम्होंमें व्यभिचार है और ऐसा व्यभिचार कि उसका चर्चा देवपूजकोंमें भी नहीं होता है कि कोई मनुष्य अपने पिताकी स्त्रीसे बिवाह करे। (२) और तुम फूल गये हो यह नहीं कि शोक किया जिस्तें यह काम करनेहारा तुम्हारे बीचमेंसे निकाला जाता। (३) मैं तो शरीरमें दूर परन्तु आत्मामें साक्षात होके जिसने यह काम इस रीतिसे किया है उसका बिचार जैसा साक्षातमें कर चुका हूं. (४) कि हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके नामसे जब

तुम और मेरा आत्मा हमारे प्रभु यीशु खीष्टके सामर्थ्य सहित एकट्ठे हुए हैं . (५) तब ऐसा जन शरीरके बिनाशके लिये शैतानको सौंपा जाय जिस्तें आत्मा प्रभु यीशुके दिनमें चाण पावे।

(६) तुम्हारा घमंड करना अच्छा नहीं है . क्या तुम नहीं जानते हो कि थोड़ासा खमीर सारे पिण्डको खमीर कर डालता है। (७) सो पुराना खमीर सबका सब निकालो कि जैसे तुम अखमीरी हो तैसे नया पिण्ड होओ क्योंकि हमारा निस्तार पर्व्वका मेम्ना अर्थात् खीष्ट हमारे लिये बलि दिया गया है। (८) सो हम पर्व्वको न तो पुराने खमीरसे और न बुराई औ दुष्टताके खमीरसे परन्तु सीधाई औ सच्चाईके अखमीरी भावसे रखें।

(९) मैंने तुम्हारे पास पत्रीमें लिखा कि व्यभिचारियोंकी संगति मत करो। (१०) यह नहीं कि तुम इस जगतके व्यभिचारियों वा लोभियों वा उपद्रवियों वा मूर्त्तिपूजकोंकी सर्व्वथा संगति न करो नहीं तो तुम्हें जगतमेंसे निकल जाना अवश्य होता। (११) सो मैंने तुम्हारे पास यही लिखा कि यदि कोई जो भाई कहलाता है व्यभिचारी वा लोभी वा मूर्त्तिपूजक वा निन्दक वा मद्यप वा उपद्रवी होय तो उसकी संगति मत करो बरन ऐसे मनुष्यके संग खाओ भी नहीं। (१२) क्योंकि मुझे बाहरवालोंका बिचार करनेसे क्या काम . क्या तुम भीतरवालोंका बिचार नहीं करते हो। (१३) पर बाहरवालोंका बिचार ईश्वर करता है . फिर उस कुकर्म्मीको अपनेमेंसे निकाल देओ।

[अविश्वासियोंके आगे नालिश करनेका निषेध।]

६ तुममेंसे जो किसी जनको दूसरेसे बिवाद होय तो क्या उसे अधर्म्मियोंके आगे नालिश करनेका साहस होता है और पवित्र लोगोंके आगे नहीं। (२) क्या तुम नहीं जानते

हो कि पवित्र लोग जगतका बिचार करेंगे और यदि जगतका बिचार तुमसे किया जाता है तो क्या तुम सबसे छोटी बातोंका निर्णय करनेके अयोग्य हो । (३) क्या तुम नहीं जानते हो कि सांसारिक बातें पीछे रहे हम तो स्वर्गदूतोंहीका बिचार करेंगे। (४) सो यदि तुम्हें सांसारिक बातोंका निर्णय करना होय तो जो मंडलीमें कुछ नहीं गिने जाते हैं उन्हींको बैठाओ। (५) मैं तुम्हारी लज्जा निमित्त कहता हूं . क्या ऐसा है कि तुम्होंमें एक भी ज्ञानी नहीं है जो अपने भाइयोंके बीचमें बिचार कर सकेगा । (६) परन्तु भाई भाईपर नालिश करता है और सोई अविश्वासियोंके आगे भी । (७) सो तुम्होंमें निश्चय दोष हुआ है कि तुम्होंमें आपसमें बिबाद होते हैं . क्यों नहीं बरन अन्याय सहते हो . क्यों नहीं बरन ठगाई सहते हो । (८) परन्तु तुम अन्याय करते और ठगते हो हां भाइयोंसे भी यह करते हो । (९) क्या तुम नहीं जानते हो कि अन्याई लोग ईश्वर के राज्यके अधिकारी न होंगे ।

[ईश्वरके राज्यकी पवित्रता ।]

(१०) धोखा मत खाओ . न ब्यभिचारी न मूर्त्तिपूजक न परस्त्रीगामी न शुहदे न पुरुषगामी न चोर न लोभी न मद्यप न निन्दक न उपद्रवी लोग ईश्वरके राज्यके अधिकारी होंगे। (११) और तुममेंसे कितने लोग ऐसे थे परन्तु तुमने अपनेको धोया परन्तु तुम पवित्र किये गये परन्तु तुम प्रभु यीशुके नामसे और हमारे ईश्वरके आत्मासे धर्म्मी ठहराये गये ॥

[व्यभिचारका निषेध । विश्वासियोंके देह खीष्टके अंग और पवित्र आत्माके मन्दिर हैं ।]

(१२) सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ लाभका नहीं है . सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु मैं किसी बात के अधीन नहीं होंगा । (१३) भोजन पेटके लिये और पेट

भोजनके लिये है परन्तु ईश्वर इसका और उसका दोनोंका क्षय करेगा . पर देह व्यभिचारके लिये नहीं है परन्तु प्रभुके लिये और प्रभु देहके लिये है । (१४) और ईश्वरने अपने सामर्थ्यसे प्रभुको जिला उठाया और हमें भी जिला उठावेगा। (१५) क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम्हारे देह ख्रीष्टके अंग हैं . सो क्या मैं ख्रीष्टके अंग ले करके उन्हें बेश्याके अंग बनाऊं . ऐसा न हो । (१६) क्या तुम नहीं जानते हो कि जो बेश्यासे मिल जाता है सो एक देह होता है क्योंकि कहा है वे दोनों एक तन होंगे । (१७) परन्तु जो प्रभुसे मिल जाता है सो एक आत्मा होता है । (१८) व्यभिचारसे बचे रहो . हर एक पाप जो मनुष्य करता है देहके बाहर है परन्तु व्यभिचार करनेहारा अपनेही देहके विरुद्ध पाप करता है । (१९) क्या तुम नहीं जानते हो कि पवित्र आत्मा जो तुममें है जो तुम्हें ईश्वरकी ओरसे मिला है तुम्हारा देह उसी पवित्र आत्माका मन्दिर है और तुम अपने नहीं हो । (२०) क्योंकि तुम दाम देके मोल लिये गये हो सो अपने देहमें और अपने आत्मामें जो ईश्वरके हैं ईश्वरकी महिमा प्रगट करो ।

[स्त्री पुरुषके व्यवहारके विषयमें पावलका करिन्थियोंके प्रश्नका उत्तर देना ।]

७ जो बातें तुमने मेरे पास लिखीं उनके विषयमें मैं कहता हूं मनुष्यके लिये अच्छा है कि स्त्रीको न छूवे। (२) परन्तु व्यभिचार कर्म्मोंके कारण हर एक मनुष्यको अपनी ही स्त्री होय और हर एक स्त्रीको अपनाही स्वामी होय। (३) पुरुष अपनी स्त्रीसे जो स्नेह उचित है सो किया करे और वैसेही स्त्री भी अपने स्वामीसे । (४) स्त्रीको अपने देहपर अधिकार नहीं पर उसके स्वामीको अधिकार है और वैसेही पुरुषको भी अपने देहपर अधिकार नहीं पर उसकी स्त्रीको अधिकार है । (५) तुम एक दूसरेसे मत अलग रहो केवल

तुम्हें उपवास औ प्रार्थनाके लिये अवकाश मिलनेके कारण जो दोनोंकी सम्मतिसे तुम कुछ दिन अलग रहो तो रहो और फिर एकट्ठे हो जिस्तें शैतान तुम्हारे असंयमके कारण तुम्हारी परीक्षा न करे। (६) परन्तु मैं जो यह कहता हूं तो अनुमति देता हूं आज्ञा नहीं करता हूं। (७) मैं तो चाहता हूं कि सब मनुष्य ऐसे होवें जैसा मैं आपही हूं परन्तु हर एकने ईश्वर की ओरसे अपना अपना बरदान पाया है किसीने इस प्रकार का किसीने उस प्रकारका। (८) पर मैं अविवाहितोंसे और विधवाओंसे कहता हूं कि यदि वे जैसा मैं हूं तैसे रहें तो उनके लिये अच्छा है। (९) परन्तु जो वे असंयमी होवें तो विवाह करें क्योंकि विवाह करना जलते रहनेसे अच्छा है। (१०) विवाहितोंको मैं नहीं परन्तु प्रभु आज्ञा देता है कि स्त्री अपने स्वामीसे अलग न होय। (११) पर जो वह अलग भी होय तो अविवाहिता रहे अथवा अपने स्वामीसे मिल जाय. और पुरुष अपनी स्त्रीको न त्यागे।

(१२) दूसरोंसे प्रभु नहीं परन्तु मैं कहता हूं यदि किसी भाईकी अविश्वासिनी स्त्री होय और वह स्त्री उसके संग रहनेको प्रसन्न होय तो वह उसे न त्यागे। (१३) और जिस स्त्री को अविश्वासी स्वामी होय और वह स्वामी उसके संग रहनेको प्रसन्न होय वह उसे न त्यागे। (१४) क्योंकि वह अविश्वासी पुरुष अपनी स्त्रीके कारण पवित्र किया गया है और वह अविश्वासिनी स्त्री अपने स्वामीके कारण पवित्र किई गई है नहीं तो तुम्हारे लड़के अशुद्ध होते पर अब तो वे पवित्र हैं। (१५) परन्तु जो वह अविश्वासी जन अलग होता है तो अलग होय. ऐसी दशामें भाई अथवा बहिन बंधा हुआ नहीं है. परन्तु ईश्वरने हमें मिलापके लिये बुलाया है। (१६) क्योंकि हे स्त्री तू क्या जानती है कि तू अपने स्वामीको बचावेगी कि

नहीं अथवा हे पुरुष तू क्या जानता है कि तू अपनी स्त्रीको बचावेगा कि नहीं।

(१७) परन्तु जैसा ईश्वरने हर एकको बांट दिया है जैसा प्रभुने हर एकको बुलाया है तैसाही वह चले. और मैं सब मंडलियोंमें यूंही आज्ञा देता हूं। (१८) कोई खतना किया हुआ बुलाया गया हो तो खतनाहीनसा न बने. कोई खतनाहीन बुलाया गया हो तो खतना न किया जाय। (१९) खतना कुछ नहीं है और खतनाहीन होना कुछ नहीं है परन्तु ईश्वरकी आज्ञाओंका पालन करना सार है। (२०) हर एक जन जिस दशामें बुलाया गया उसीमें रहे। (२१) क्या तू दास हो करके बुलाया गया. चिन्ता मत कर पर यदि तेरा उद्धार हो भी सकता है तो बरन उसको भोग कर। (२२) क्योंकि जो दास प्रभुमें बुलाया गया है सो प्रभुका निर्बन्ध किया हुआ है और वैसेही निर्बन्ध जो बुलाया गया है सो ख्रीष्टका दास है। (२३) तुम दाम देके मोल लिये गये हो. मनुष्योंके दास मत बनो। (२४) हे भाइयो हर एक जन जिस दशामें बुलाया गया ईश्वरके आगे उसीमें बना रहे।

(२५) कुंवारियोंके विषयमें प्रभुकी कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली है परन्तु जैसा प्रभुने मुझपर दया किई है कि मैं बिश्वास-योग्य होऊं तैसा मैं परामर्श देता हूं। (२६) सो मैं बिचार करता हूं कि बर्त्तमान क्लेशके कारण यही अच्छा है अर्थात मनुष्यको वैसेही रहना अच्छा है। (२७) क्या तू स्त्रीके संग बंधा है. छूटनेका यत्न मत कर. क्या तू स्त्रीसे छूटा है. स्त्रीकी इच्छा मत कर। (२८) तौभी जो तू बिवाह करे तो तुझे पाप नहीं हुआ और यदि कुंवारी बिवाह करे तो उसे पाप नहीं हुआ पर ऐसोंको शरीरमें क्लेश होगा. परन्तु मैं तुमपर भार नहीं देता हूं।

(२९) हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि अब तो समय संक्षेप किया गया है इसलिये कि जिन्हें स्त्रियां हैं सो ऐसे होवें जैसे उन्हें स्त्रियां नहीं . (३०) और रोनेहारे भी ऐसे हों जैसे नहीं रोते और आनन्द करनेहारे ऐसे हों जैसे आनन्द नहीं करते और मोल लेनेहारे ऐसे हों जैसे नहीं रखते . (३१) और इस संसारके भोग करनेहारे ऐसे हों जैसे अतिभोग नहीं करते क्योंकि इस संसारका रूप बीतता जाता है।

(३२) मैं चाहता हूं कि तुम्हें चिन्ता न हो . अबिवाहित पुरुष प्रभुकी बातोंकी चिन्ता करता है कि प्रभुको क्योंकर प्रसन्न करे। (३३) परन्तु बिवाहित पुरुष संसारकी बातोंकी चिन्ता करता है कि अपनी स्त्रीको क्योंकर प्रसन्न करे। (३४) जोरू और कुंवारीमें भी भेद है . अबिवाहिता नारी प्रभुकी बातोंकी चिन्ता करती है कि वह देह और आत्मामें भी पवित्र होवे परन्तु बिवाहिता नारी संसारकी बातोंकी चिन्ता करती है कि अपने स्वामीको क्योंकर प्रसन्न करे। (३५) पर मैं यह बात तुम्हारेही लाभके लिये कहता हूं अर्थात मैं जो तुमपर फंदा डालूं इसलिये नहीं परन्तु तुम्हारे शुभ चाल चलने और दुचित्त न होके प्रभुमें लौलीन रहनेके लिये कहता हूं। (३६) परन्तु यदि कोई समझे कि मैं अपनी कन्यासे अशुभ काम करता हूं जो वह स्यानी हो और ऐसा होना अवश्य है तो वह जो चाहता है सो करे उसे पाप नहीं है . वे बिवाह करें। (३७) पर जो मनमें दृढ़ रहता है और उसको आवश्यक नहीं पर अपनी इच्छाके विषयमें अधिकार है और यह बात अपने मनमें ठहराई है कि अपनी कन्याको रखे वह अच्छा करता है। (३८) इसलिये जो बिवाह देता है सो अच्छा करता है और जो बिवाह नहीं देता है सो भी और अच्छा करता है।

(३९) स्त्री जबलों उसका स्वामी जीता रहे तबलों व्यवस्थासे

बंधी है परन्तु यदि उसका स्वामी मर जाय तो वह निर्बन्ध है कि जिससे चाहे उससे ब्याही जाय . पर केवल प्रभुमें । (४०) परन्तु जो वह वैसीही रहे तो मेरे विचारमें और भी धन्य है और मैं समझता हूं कि ईश्वरका आत्मा मुझमें भी है ।

[मूरतोंके आगे बलि किई हुई वस्तुओंके विषयमें ।]

८ मूरतोंके आगे बलि किई हुई वस्तुओंके विषयमें मैं कहता हूं . हम जानते हैं कि हम सभोंको ज्ञान है . ज्ञान फुलाता है परन्तु प्रेम सुधारता है । (२) यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूं तो जैसा जानना उचित है तैसा अबलों कुछ नहीं जानता है । (३) परन्तु यदि कोई जन ईश्वरको प्यार करता है तो वही ईश्वरसे जाना जाता है ।

(४) सो मूरतोंके आगे बलि किई हुई वस्तुओंके खानेके विषयमें मैं कहता हूं . हम जानते हैं कि मूर्त्ति जगतमें कुछ नहीं है और कि एक ईश्वरको छोड़के कोई दूसरा ईश्वर नहीं है । (५) क्योंकि यद्यपि क्या आकाशमें क्या पृथिवीपर कितने हैं जो ईश्वर कहलाते हैं जैसा बहुतसे देव और बहुतसे प्रभु हैं . (६) तौभी हमारे लिये एक ईश्वर पिता है जिससे सब कुछ है और हम उसके लिये हैं और एक प्रभु यीशु ख्रीष्ट है जिस के द्वारासे सब कुछ है और हम उसके द्वारासे हैं ।

(७) परन्तु सभोंमें यह ज्ञान नहीं है पर कितने लोग अबलों मूर्त्ति जानके मूर्त्तिके आगे बलि किई हुई वस्तु मानके उस वस्तुको खाते हैं और उनका मन दुर्ब्बल होके अशुद्ध किया जाता है। (८) भोजन तो हमें ईश्वरके निकट नहीं पहुंचाता है क्योंकि यदि हम खावें तो हमें कुछ बढ़ती नहीं और यदि नहीं खावें तो कुछ घटती भी नहीं । (९) परन्तु सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारा यह अधिकार कहीं दुर्ब्बलोंके लिये ठोकरका कारण हो जाय। (१०) क्योंकि यदि कोई तुझे जिसको

ज्ञान है मूर्त्तिके मन्दिरमें भोजनपर बैठे देखे तो क्या इसलिये कि वह दुर्व्वल है उसका मन मूर्त्तिके आगे बलि किई हुई वस्तु खानेको दृढ़ न किया जायगा। (११) और क्या वह दुर्व्वल भाई जिसके लिये ख्रीष्ट मूआ तेरे ज्ञानके हेतु नाश न होगा। (१२) परन्तु इस रीतिसे भाइयोंका अपराध करनेसे और उनके दुर्व्वल मनको चोट देनेसे तुम ख्रीष्टका अपराध करते हो। (१३) इस कारण यदि भोजन मेरे भाईको ठोकर खिलाता हो तो मैं कभी किसी रीतिसे मांस न खाऊंगा न हो कि मैं अपने भाईको ठोकर खिलाऊं।

[निज अधिकारको औरोंकी बिहतरीके लिये छोड़ना चाहिये। पावलका नमूना।]

९ क्या मैं प्रेरित नहीं हूं. क्या मैं निर्बन्ध नहीं हूं. क्या मैंने हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टको नहीं देखा है. क्या तुम प्रभुमें मेरे कृत नहीं हो। (२) जो मैं औरोंके लिये प्रेरित नहीं हूं तौभी तुम्हारे लिये तो हूं क्योंकि तुम प्रभुमें मेरी प्रेरिताईकी छाप हो। (३) जो मुझे जांचते हैं उनके लिये यही मेरा उत्तर है। (४) क्या हमें खाने और पीनेका अधिकार नहीं है। (५) क्या जैसा दूसरे प्रेरितों और प्रभुके भाइयोंको और कैफाको तैसा हमको भी अधिकार नहीं है कि एक धर्म्मबहिनसे बिवाह करके उसे लिये फिरें। (६) अथवा क्या केवल मुझको और बर्णबाको अधिकार नहीं है कि कमाई करना छोड़ें। (७) कौन कभी अपनेही खर्चसे योद्धापन किया करता है. कौन दाखकी बारी लगाता है और उसका कुछ फल नहीं खाता है. अथवा कौन भेड़ोंके झुंडकी रखवाली करता है और झुंडका कुछ दूध नहीं खाता है। (८) क्या मैं यह बातें मनुष्यकी रीतिपर बोलता हूं. क्या व्यवस्था भी यह बातें नहीं कहती है। (९) क्योंकि मूसाकी व्यवस्थामें लिखा

है कि दावनेहारे बैलका मुंह मत बांध . क्या ईश्वर बैलों को चिन्ता करता है । (१०) अथवा क्या वह निज करके हमारे कारण कहता है . हमारेही कारण लिखा गया कि उचित है कि हल जोतनेहारा आशासे हल जोते और दावनेहारा भागी होनेकी आशासे दावनी करे । (११) यदि हमने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तु बोई हैं तो हम जो तुम्हारी शारीरिक वस्तु लवें क्या यह बड़ी बात है । (१२) यदि दूसरे जन तुम पर इस अधिकारके भागी हैं तो क्या हम अधिक करके नहीं हैं . परन्तु हम यह अधिकार काममें न लाये पर सब कुछ सहते हैं जिस्तें खीष्टके सुसमाचारकी कुछ रोक न करें । (१३) क्या तुम नहीं जानते हो कि जो लोग याजकीय कर्म्म करते हैं सो मन्दिरमेंसे खाते हैं और जो लोग बेदीको सेवा करते हैं सो बेदीके अंशधारी होते हैं । (१४) यूंही प्रभुने भी जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं उनके लिये ठहराया है कि सुसमाचारसे उनकी जीविका होय ।

(१५) परन्तु मैं इन बातोंमेंसे कोई बात काममें नहीं लाया और मैंने तो यह बातें इसलिये नहीं लिखीं कि मेरे विषय में यूंही किया जाय क्योंकि मरना मेरे लिये इससे भला है कि कोई मेरा बड़ाई करना व्यर्थ ठहरावे । (१६) क्योंकि जो मैं सुसमाचार प्रचार करूं तो इससे कुछ मेरी बड़ाई नहीं है क्योंकि मुझे अवश्य पड़ता है और जो मैं सुसमाचार प्रचार न करूं तो मुझे सन्ताप है । (१७) क्योंकि जो मैं अपनी इच्छा से यह करता हूं तो मजूरी मुझे मिलती है पर जो अनिच्छा से तो भंडारीपन मुझे सौंपा गया है । (१८) सो मेरी कौनसी मजूरी है . यह कि सुसमाचार प्रचार करनेमें मैं खीष्टका सुसमाचार सेंतका ठहराऊं यहांलों कि सुसमाचारमें जो मेरा अधिकार है उसका मैं अतिभोग न करूं । (१९) क्योंकि सभोंसे

निर्बन्ध होके मैंने अपने को सभोंका दास बनाया कि मैं अधिक लोगोंको प्राप्त करूं। (२०) और यिहूदियोंके लिये मैं यिहूदीसा बना कि यिहूदियोंको प्राप्त करूं . जो लोग व्यवस्थाके अधीन हैं उनके लिये मैं व्यवस्थाके अधीनके ऐसा बना कि उन्हें जो व्यवस्थाके अधीन हैं प्राप्त करूं। (२१) व्यवस्थाहोनोंके लिये मैं जो ईश्वरकी व्यवस्थासे होन नहीं परन्तु खीष्टकी व्यवस्थाके अधीन हूं व्यवस्थाहोनसा बना कि व्यवस्थाहोनोंको प्राप्त करूं। (२२) मैं दुर्ब्बलोंके लिये दुर्ब्बलसा बना कि दुर्ब्बलोंको प्राप्त करूं. मैं सभों के लिये सब कुछ बना हूं कि मैं अवश्य कई एकको बचाऊं। (२३) और यही मैं सुसमाचारके कारण करता हूं कि मैं उसका भागी हो जाऊं।

(२४) क्या तुम नहीं जानते हो कि अखाड़ेमें दौड़नेहारे सबही दौड़ते हैं परन्तु जीतनेका फल एकही पाता है . तुम वैसेही दौड़ो कि तुम प्राप्त करो। (२५) और हर एक लड़नेहारा सब बातोंमें संयमी रहता है . सो वे तो नाशमान मुकुट परन्तु हम लोग अविनाशी मुकुट लेनेको ऐसे रहते हैं। (२६) मैं भी तो ऐसा दौड़ता हूं जैसा बिन दुवधासे दौड़ता मैं ऐसा नहीं मुष्टि लड़ता हूं जैसा बयारको पीटता हुआ लड़ता। (२७) परन्तु मैं अपने देहको ताड़ना करके बशमें लाता हूं ऐसा न हो कि मैं औरोंको उपदेश देके आपही किसी रीतिसे निकृष्ट बनूं।

[इस्रायेलियोंके दृष्टान्तसे करिन्थियोंको चिताना।]

१० हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इससे अनजान रहो कि हमारे पितर लोग सब मेघके नीचे थे और सब समुद्रके बीचमेंसे गये। (२) और सभोंको मेघमें और समुद्रमें मूसाके संबन्धका बपतिसमा दिया गया। (३) और सभोंने एकही आत्मिक भोजन खाया। (४) और सभोंने एकही आत्मिक पानी पिया क्योंकि वे उस आत्मिक पर्ब्बतसे जो उनके पीछे

पीछे चलता था पीते थे और वह पर्ब्बत ख्रीष्ट था । (५) परन्तु ईश्वर उनमेंके अधिक लोगोंसे प्रसन्न नहीं था क्योंकि वे जंगल में मारे पड़े । (६) यह बातें हमारे लिये दृष्टान्त हुईं इसलिये कि जैसे उन्होंने लालच किया तैसे हम लोग बुरी बस्तुओंके लालची न होवें । (७) और न तुम मूर्त्तिपूजक होओ जैसे उन्होंमेंसे कितने थे जैसा लिखा है लोग खाने और पीनेको बैठे और खेलनेको उठे । (८) और न हम ब्यभिचार करें जैसा उन्होंमेंसे कितनोंने ब्यभिचार किया और एक दिनमें तेईस सहस्र गिरे । (९) और न हम ख्रीष्टकी परीक्षा करें जैसा उन्होंमें से कितनोंने परीक्षा किई और सांपोंसे नाश किये गये । (१०) और न कुड़कुड़ाओ जैसा उन्होंमेंसे कितने कुड़कुड़ाये और नाशक से नाश किये गये । (११) पर यह सब बातें जो उनपर पड़ीं दृष्टान्त थीं और वे हमारी चितावनीके कारण लिखी गईं जिनके आगे जगतके अन्त समय पहुंचे हैं । (१२) इसलिये जो समझता है कि मैं खड़ा हूं सो सचेत रहे कि गिर न पड़े । (१३) तुमपर कोई परीक्षा नहीं पड़ी है केवल ऐसी जैसी मनुष्यको हुआ करती है और ईश्वर बिश्वासयोग्य है जो तुम्हें तुम्हारे सामर्थ्य के बाहर परीक्षित होने न देगा परन्तु परीक्षाके साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको ।

[मूरतोंके चढ़ावेमें भागी होनेका निषेध ।]

(१४) इस कारण हे मेरे प्यारो मूर्त्तिपूजासे बचे रहो । (१५) मैं जैसा बुद्धिमानोंसे बोलता हूं . जो मैं कहता हूं उसे तुम बिचार करो । (१६) वह धन्यवादका कटोरा जिसके ऊपर हम धन्यबाद करते हैं क्या ख्रीष्टके लोहूकी संगति नहीं है . वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं क्या ख्रीष्टके देहकी संगति नहीं है । (१७) एक रोटी है इसलिये हम जो बहुत हैं एक देह हैं क्योंकि हम सब उस एक रोटीके भागी होते हैं । (१८) शारीरिक इस्रायेलको

देखो . क्या बलिदानोंके खानेहारे बेदीके साझी नहीं हैं। (१९) ते मैं क्या कहता हूं . क्या यह कि मूर्त्ति कुछ है अथवा कि मूर्त्तिके आगेका बलिदान कुछ है। (२०) नहीं पर यह कि देवपूजक लोग जो कुछ बलिदान करते हैं सो ईश्वरके आगे नहीं पर भूतोंके आगे बलिदान करते हैं और मैं नहीं चाहता हूं कि तुम भूतोंके साझी हो जाओ। (२१) तुम प्रभुके कटोरे और भूतोंके कटोरे दोनोंसे नहीं पी सकते हो . तुम प्रभुकी मेज और भूतोंकी मेज दोनोंके भागी नहीं हो सकते हो। (२२) अथवा क्या हम प्रभुको छेड़ते हैं . क्या हम उससे अधिक शक्तिमान हैं।

[भाइयोंको सुधारनेके लिये निज अधिकारको छोड़ना चाहिये।]

(२३) सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ लाभका नहीं है . सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ नहीं सुधारता है। (२४) कोई अपना लाभ न ढूंढ़े परन्तु हर एक जन दूसरे का लाभ ढूंढ़े। (२५) जो कुछ मांसकी हाटमें बिकता है सो खाओ और बिवेकके कारण कुछ मत पूछो . (२६) क्योंकि पृथिवी और उसकी सारी संपत्ति परमेश्वरकी है। (२७) और यदि अविश्वासियोंमेंसे कोई तुम्हें नेवता देवे और तुम्हें जानेकी इच्छा होय तो जो कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय सो खाओ और बिवेकके कारण कुछ मत पूछो। (२८) परन्तु यदि कोई तुमसे कहे यह तो मूर्त्तिके आगे बलि किया हुआ है तो उसी बतानेहारेके कारण और बिवेकके कारण मत खाओ (क्योंकि पृथिवी और उसकी सारी सम्पत्ति परमेश्वरकी है)। (२९) बिवेक जो मैं कहता हूं सो अपना नहीं परन्तु उस दूसरेका क्योंकि मेरी निर्बन्धता क्यों दूसरेके बिवेकसे बिचार किई जाती है। (३०) जो मैं धन्यवाद करके भागी होता हूं तो जिसके ऊपर मैं धन्य मानता हूं उसके लिये मेरी निन्दा क्यों होती है। (३१) सो तुम जो खाओ अथवा पीओ अथवा कोई काम करो तो सब कुछ

ईश्वरकी महिमाके लिये करो । (३२) न यिहूदियों न यूना- नियोंको न ईश्वरकी मंडलीको ठोकर खिलाओ . (३३) जैसा मैं भी सब बातोंमें सभोंको प्रसन्न करता हूं और अपना लाभ नहीं परन्तु बहुतोंका लाभ ढूंढ़ता हूं कि वे चाण पावें ।

११ तुम मेरीसी चाल चलो जैसा मैं खीष्टकीसी चाल चलता हूं ।

[पुरुष और स्त्रीको कैसा पहिरावा भजनकी सभामें चाहिये ।]

(२) हे भाइयो मैं तुम्हें सराहता हूं कि सब बातोंमें तुम मुझे स्मरण करते हो और व्यवहारोंको जैसा मैंने तुम्हें ठहरा दिया तैसाही धारण करते हो । (३) पर मैं चाहता हूं कि तुम जान लेओ कि खीष्ट हर एक पुरुषका सिर है और पुरुष स्त्रीका सिर है और खीष्टका सिर ईश्वर है । (४) हर एक पुरुष जो सिरपर कुछ ओढ़े हुए प्रार्थना करता अथवा भवि- ष्यद्वाक्य कहता है अपने सिरका अपमान करता है । (५) परन्तु हर एक स्त्री जो उघाड़े सिर प्रार्थना करती अथवा भविष्यद्वाक्य कहती है अपने सिरका अपमान करती है क्योंकि वह मुंडी हुईसे कुछ भिन्न नहीं है । (६) यदि स्त्री सिर न ढांके तो बाल भी कटवावे परन्तु यदि बाल कटवाना अथवा मुंडवाना स्त्री को लज्जा है तो सिर ढांके । (७) क्योंकि पुरुषको तो सिर ढांकना उचित नहीं है क्योंकि वह ईश्वरका रूप और महिमा है परन्तु स्त्री पुरुषकी महिमा है । (८) क्योंकि पुरुष स्त्रीसे नहीं हुआ परन्तु स्त्री पुरुषसे हुई । (९) और पुरुष स्त्रीके लिये नहीं सृजा गया परन्तु स्त्री पुरुषके लिये सृजी गई । (१०) इसी लिये दूतोंके कारण स्त्रीको उचित है कि अधिकार अपने सिरपर रखे । (११) तौभी प्रभुमें न तो पुरुष बिना स्त्रीसे और न स्त्री बिना पुरुषसे है । (१२) क्योंकि जैसा स्त्री पुरुषसे है तैसा पुरुष स्त्रीके द्वारासे है परन्तु सब कुछ ईश्वरसे है । (१३) तुम

अपने अपने मनमें विचार करो : क्या उघाड़े सिर ईश्वरसे प्रार्थना करना स्त्रीको सोहता है। (१४) अथवा क्या प्रकृति आपही तुम्हें नहीं सिखाती है कि यदि पुरुष लंबा बाल रखे तो उसको अनादर है। (१५) परन्तु यदि स्त्री लंबा बाल रखे तो उसको आदर है क्योंकि बाल उसको ओढ़नीके लिये दिया गया है। (१६) परन्तु यदि कोई जन बिवादी देख पड़े तो न हमारी न ईश्वरकी मंडलियोंकी ऐसी रीति है।

[प्रभु भोजमें जो करिन्थीय मंडलीकी अनरीति होती थी उसका उलहना। प्रभु भोजके निरूपण का वृतान्त।]

(१७) परन्तु यह आज्ञा देनेमें मैं तुम्हें नहीं सराहता हूं कि तुम्हारे एकट्ठे होनेसे भलाई नहीं परन्तु हानि होती है। (१८) क्योंकि पहिले मैं सुनता हूं कि जब तुम मंडलीमें एकट्ठे होते हो तब तुम्होंमें अनेक बिभेद होते हैं और मैं कुछ कुछ प्रतीति करता हूं। (१९) क्योंकि कुपन्थ भी तुम्होंमें अवश्य होंगे इसलिये कि जो लोग खरे हैं सो तुम्होंमें प्रगट हो जावें। (२०) सो तुम जो एक स्थानमें एकट्ठे होते हो तो प्रभु भोज खानेके लिये नहीं है। (२१) क्योंकि खानेमें हर एक पहिले अपना अपना भोज खा लेता है और एक तो भूखा है दूसरा मतवाला है। (२२) क्या खाने और पीनेके लिये तुम्हें घर नहीं हैं अथवा क्या तुम ईश्वरकी मंडलीको तुच्छ जानते हो और जिन्हें नहीं हैं उन्हें लज्जित करते हो . मैं तुमसे क्या कहूं . क्या इस बातमें तुम्हें सराहूं . मैं नहीं सराहता हूं।

(२३) क्योंकि मैंने प्रभुसे यह पाया जो मैंने तुम्हें भी सौंप दिया कि प्रभु यीशुने जिस रात वह पकड़वाया गया उसी रात को रोटी लिई . (२४) और धन्य मानके उसे तोड़ा और कहा लेओ खाओ यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिये तोड़ा जाता है . मेरे स्मरणके लिये यह किया करो। (२५) इसी रातिसे

उसने बियारीके पीछे कटोरा भी लेके कहा यह कटोरा मेरे लोहूपर नया नियम है . जब जब तुम इसे पीवो तब मेरे स्मरणके लिये यह किया करो ।

(२६) क्योंकि जब जब तुम यह रोटी खावो और यह कटोरा पीवो तब प्रभुकी मृत्युको जबलों वह न आवे प्रचार करते हो । (२७) इसलिये जो कोई अनुचित रीतिसे यह रोटी खावे अथवा प्रभुका कटोरा पीवे सो प्रभुके देह और लोहूके दंडके योग्य होगा । (२८) परन्तु मनुष्य अपनेको परखे और इस रीतिसे यह रोटी खावे और इस कटोरेसे पीवे । (२९) क्योंकि जो अनुचित रीतिसे खाता और पीता है सो जब कि प्रभुके देहका विशेष नहीं मानता है तो खाने औ पीनेसे अपनेपर दंड लाता है । (३०) इस हेतुसे तुम्होंमें बहुत जन दुर्ब्बल औ रोगी हैं और बहुतसे सोते हैं । (३१) क्योंकि जो हम अपना अपना बिचार करते तो हमारा बिचार नहीं किया जाता । (३२) परन्तु हमारा बिचार जो किया जाता है तो प्रभुसे हम ताड़ना किये जाते हैं इसलिये कि संसारके संग दंडके योग्य न ठहराये जावें । (३३) इसलिये हे मेरे भाइयो जब तुम खानेको एकट्ठे होओ तब एक दूसरेके लिये ठहरो । (३४) परन्तु यदि कोई भूखा हो तो घरमें खाय जिस्तें एकट्ठे होनेसे तुम्हारा दंड न होवे . और जो कुछ रह गया है जब कभी मैं तुम्हारे पास आऊं तब उसके विषयमें आज्ञा देऊंगा ।

[अनेक प्रकारके दानोंका पवित्र आत्मासे दिया जाना ।]

१२ हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम आत्मिक विषयोंमें अनजान रहो । (२) तुम जानते हो कि तुम देवपूजक थे और जैसे जैसे सिखाये जाते थे तैसे तैसे गूंगी मूरतोंकी ओर भटक जाते थे । (३) इस कारण मैं तुम्हें बताता हूं कि कोई जो ईश्वरके आत्मासे बोलता है यीशुको स्रापित

नहीं कहता है और कोई यीशुको प्रभु नहीं कह सकता है केवल पवित्र आत्मासे ।

(४) वरदान तो बंटे हुए हैं परन्तु आत्मा एकही है। (५) और सेवकाइयां बंटी हुई हैं परन्तु प्रभु एकही है। (६) और कार्य्य बंटे हुए हैं परन्तु ईश्वर एकही है जो सभों से ये सब कार्य्य करवाता है।

(७) परन्तु एक एक मनुष्यको आत्माका प्रकाश दिया जाता है जिस्तें लाभ होय। (८) क्योंकि एकको आत्माके द्वारासे वुद्धिकी वात दिई जाती है और दूसरेको उसी आत्माके अनुसार ज्ञानकी बात. (९) और दूसरेको उसी आत्मासे बिश्वास और दूसरेको उसी आत्मासे चंगा करनेके बरदान. (१०) फिर दूसरेको आश्चर्य्य कर्म्म करनेकी शक्ति और दूसरेको भविष्यद्वाक्य बोलनेकी और दूसरेको आत्माओंको पहचाननेकी और दूसरेको अनेक प्रकारकी भाषा बोलनेकी और दूसरेको भाषाओंका अर्थ लगानेकी शक्ति दिई जाती है। (११) परन्तु ये सब कार्य्य वही एक आत्मा करवाता है और अपनी इच्छाके अनुसार हर एक मनुष्यको पृथक पृथक करके बांट देता है।

[देहका दृष्टान्त जिसमें भिन्न भिन्न अंग हैं परन्तु देह एकही है।]

(१२) क्योंकि जैसे देह तो एक है और उसके अंग बहुतसे है परन्तु उस एक देहके सब अंग यद्यपि बहुतसे हैं तौभी एक ही देह हैं तैसेही ख्रीष्ट भी है। (१३) क्योंकि हम लोग क्या यिहूदी क्या यूनानी क्या दास क्या निर्बन्ध सभोंने एक देह होनेको एक आत्मासे बपतिसमा लिया और सब एक आत्मा पिलाये गये। (१४) क्योंकि देह एकही अंग नहीं है परन्तु बहुतसे अंग। (१५) यदि पांव कहे मैं हाथ नहीं हूं इसलिये मैं देहका अंश नहीं हूं तो क्या वह इस कारणसे देहका अंश नहीं है। (१६) और यदि कान कहे मैं आंख नहीं

हूं इसलिये मैं देहका अंश नहीं हूं तो क्या वह इस कारण से देहका अंश नहीं है । (१७) जो सारा देह आंखही होता तो सुनना कहां . जो सारा देह कानही होता तो सूंघना कहां । (१८) परन्तु अब तो ईश्वरने अंगोंको और उनमेंसे एक एकको देहमें अपनी इच्छाके अनुसार रखा है । (१९) परन्तु यदि सब अंग एकही अंग होते तो देह कहां होता । (२०) पर अब बहुतसे अंग हैं परन्तु एकही देह । (२१) आंख हाथसे नहीं कह सकती है कि मुझे तेरा कुछ प्रयोजन नहीं और फिर सिर पांवोंसे नहीं कह सकता है कि मुझे तुम्हारा कुछ प्रयोजन नहीं । (२२) परन्तु देहके जो अंग अति दुर्ब्बल देख पड़ते हैं सो बहुत अधिक करके आवश्यक हैं । (२३) और देहके जिन अंगोंको हम अति निरादर समझते हैं उनपर हम बहुत अधिक आदर रखते हैं और हमारे शोभाहीन अंग बहुत अधिक शोभायमान किये जाते हैं । (२४) पर हमारे शोभायमान अंगोंको इसका कुछ प्रयोजन नहीं है परन्तु ईश्वरने देहको मिला लिया है और जिस अंगको घटी थी उसको बहुत अधिक आदर दिया है . (२५) कि देहमें बिभेद न होय परन्तु अंग एक दूसरेके लिये एक समान चिन्ता करें । (२६) और यदि एक अंग दुःख पाता है तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं अथवा यदि एक अंगकी बड़ाई किई जाती है तो सब अंग उसके साथ आनन्द करते हैं । (२७) सो तुम लोग ख्रीष्टके देह हो और पृथक पृथक करके उसके अंग हो ।

(२८) और ईश्वरने कितनोंको मंडलीमें रखा है पहिले प्रेरितोंको दूसरे भविष्यद्वक्ताओंको तीसरे उपदेशकोंको तब आश्चर्य्य कर्म्मोंको तब चंगा करनेके बरदानोंको और उपकारोंको और प्रधानताओंको और अनेक प्रकारकी भाषाओंको । (२९) क्या सब प्रेरित हैं . क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं . क्या सब

उपदेशक हैं . क्या सब आश्चर्य्य कर्म्म करनेहारे हैं। (३०) क्या सभोंको चंगा करनेके वरदान मिले हैं . क्या सब अनेक भाषा बोलते हैं . क्या सब अर्थ लगाते हैं। (३१) परन्तु अच्छे अच्छे वरदानोंकी अभिलाषा करो और मैं तुम्हें और भी एक श्रेष्ठ मार्ग बताता हूं।

[सारे वरदानोंमें प्रेमको श्रेष्ठता।]

१३ जो मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतोंकी बोलियां बोलूं पर मुझमें प्रेम न हो तो मैं ठनठनाता पीतल अथवा झनझनाती झांझ हूं। (२) और जो मैं भविष्यद्वाणी बोल सकूं और सब भेदोंको और सब ज्ञानको समझूं और जो मुझे सम्पूर्ण विश्वास होय यहांलों कि मैं पहाड़ोंको टाल देऊं पर मुझमें प्रेम न हो तो मैं कुछ नहीं हूं। (३) और जो मैं अपनी सारी संपत्ति कंगालोंको खिलाऊं और जो मैं जलाये जानेको अपना देह सौंप देऊं पर मुझमें प्रेम न हो तो मुझे कुछ लाभ नहीं है।

(४) प्रेम धीरजवन्त औ कृपाल है . प्रेम डाह नहीं करता है . प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता है और फूल नहीं जाता है। (५) वह अनरीति नहीं चलता है वह आपस्वार्थी नहीं है वह खिजलाया नहीं जाता है वह बुराईकी चिन्ता नहीं करता है। (६) वह अधर्म्मसे आनन्दित नहीं होता है परन्तु सच्चाईपर आनन्द करता है। (७) वह सब बातें सहता है सब बातोंका विश्वास करता है सब बातोंकी आशा रखता है सब बातोंमें स्थिर रहता है।

(८) प्रेम कभी नहीं टल जाता है परन्तु जो भविष्यद्वाणियां हों तो वे लोप होंगीं अथवा बोलियां हों तो उनका अन्त लगेगा अथवा ज्ञान हो तो वह लोप होगा। (९) क्योंकि हम अंश मात्र जानते हैं और अंश मात्र भविष्यद्वाणी कहते हैं। (१०) परन्तु जब वह जो सम्पूर्ण है आवेगा तब यह जो अंश

मात्र है लोप हो जायगा । (११) जब मैं बालक था तब मैं बालककी नाईं बोलता था मैं बालककासा मन रखता था मैं बालककासा बिचार करता था परन्तु मैं जो अब मनुष्य हुआ हूं तो बालककी बातें छोड़ दिईं हैं । (१२) हम तो अभी दर्पणमें गूढ़ अर्थसा देखते हैं परन्तु तब साक्षात देखेंगे. मैं अब अंश मात्र जानता हूं परन्तु तब जैसा पहचाना गया हूं तैसाही पहचानूंगा ।

(१३) सो अब बिश्वास आशा प्रेम ये तीनों रहते हैं परन्तु इनमेंसे प्रेम श्रेष्ठ है ।

[अन्य भाषा बोलनेके बरदानसे भविष्यद्वाक्योंके बरदानकी श्रेष्ठता ।]

१४ प्रेमकी चेष्टा करो तैाभी आत्मिक बरदानोंकी अभिलाषा करो परन्तु अधिक करके कि तुम भविष्यद्वाक्य कहो । (२) क्योंकि जो अन्य भाषा बोलता है सो मनुष्योंसे नहीं परन्तु ईश्वरसे बोलता है क्योंकि कोई नहीं बूझता है पर आत्मामें वह गूढ़ बातें बोलता है । (३) परन्तु जो भविष्यद्वाक्य कहता है सो मनुष्योंसे सुधारनेकी और उपदेश और शांतिकी बातें करता है । (४) जो अन्य भाषा बोलता है सो अपनेहीको सुधारता है परन्तु जो भविष्यद्वाक्य कहता है सो मंडलीको सुधारता है । (५) मैं चाहता हूं कि तुम सब अनेक अनेक भाषा बोलते परन्तु अधिक करके कि तुम भविष्यद्वाक्य कहते क्योंकि अनेक भाषा बोलनेहारा यदि अर्थ न लगावे कि मंडली सुधारी जाय तो भविष्यद्वाक्य कहनेहारा उससे बड़ा है ।

(६) अब हे भाइयो जो मैं तुम्हारे पास अनेक भाषा बोलता हुआ आऊं तैाभी जो मैं प्रकाश वा ज्ञान अथवा भविष्यद्वाणी वा उपदेश करके तुमसे न बोलूं तो मुझसे तुम्हारा क्या लाभ होगा । (७) निर्जीव बस्तु भी जो शब्द देती हैं चाहे बंशी चाहे बीण यदि स्वरोंमें भेद न कर दें तो जो बंशी अथवा

बीणपर बजाया जाता है सो क्योंकर पहचाना जायगा। (८) क्योंकि तुरही भी यदि अनिश्चय शब्द देवे तो कौन अपने को लड़ाईके लिये तैयार करेगा। (९) वैसेही तुम भी यदि जीभसे स्पष्ट बात न करो तो जो बोला जाता है सो क्योंकर बूझा जायगा क्योंकि तुम बयारसे बात करनेहारे ठहरोगे। (१०) जगतमें क्या जाने कितने प्रकारकी बोलियां होंगीं और उनमेंसे किसी प्रकारकी बोली निरर्थक नहीं है। (११) इसलिये जो मैं बोलीका अर्थ न जानूं तो मैं बोलनेहारेके लेखे परदेशी होऊंगा और बोलनेहारा मेरे लेखे परदेशी होगा। (१२) सो तुम भी जब कि आत्मिक विषयोंके अभिलाषी हो तो मंडली के सुधारनेके निमित्त बढ़ जानेका यत्न करो। (१३) इस कारण जो अन्य भाषा बोले सो प्रार्थना करे कि अर्थ भी लगा सके।

(१४) क्योंकि जो मैं अन्य भाषामें प्रार्थना करूं तो मेरा आत्मा प्रार्थना करता है परन्तु मेरी बुद्धि निष्फल है। (१५) तो क्या है . मैं आत्मासे प्रार्थना करूंगा और बुद्धिसे भी प्रार्थना करूंगा मैं आत्मासे गान करूंगा और बुद्धिसे भी गान करूंगा। (१६) नहीं तो यदि तू आत्मासे धन्यबाद करे तो जो अन-सिखकीसी दशा में है सो तेरे धन्य माननेपर क्योंकर आमीन कहेगा वह तो नहीं जानता तू क्या कहता हैं। (१७) क्योंकि तू तो भली रीतिसे धन्य मानता है परन्तु वह दूसरा सुधारा नहीं जाता है। (१८) मैं अपने ईश्वरका धन्य मानता हूं कि मैं तुम सभोंसे अधिक करके अन्य अन्य भाषा बोलता हूं। (१९) परन्तु मंडलीमें दस सहस्र बातें अन्य भाषामें कहनेसे मैं पांच बातें अपनी बुद्धिसे कहना अधिक चाहता हूं जिस्तें औरोंको भी सिखाऊं। (२०) हे भाइयो ज्ञानमें बालक मत होओ तौभी बुराईमें बालक होओ परन्तु ज्ञानमें सयाने होओ।

(२१) व्यवस्थामें लिखा है कि परमेश्वर कहता है मैं अन्य

भाषा बोलनेहारोंके द्वारा और पराये मुखके द्वारा इन लोगों से बात करूंगा और वे इस रीतिसे भी मेरी न सुनेंगे। (२२) सो अन्य अन्य बोलियां बिश्वासियोंके लिये नहीं पर अबिश्वासियोंके लिये चिन्ह हैं परन्तु भविष्यद्वाणी अबिश्वासियोंके लिये नहीं पर बिश्वासियोंके लिये चिन्ह है। (२३) सो यदि सारी मंडली एक संग एकट्ठी होय और सब अन्य अन्य भाषा बोलें और अनसिख अथवा अबिश्वासी लोग भीतर आवें तो क्या वे न कहेंगे कि ये लोग बौरहे हैं। (२४) परन्तु यदि सब भविष्यद्वाक्य कहें और कोई अबिश्वासी अथवा अनसिख मनुष्य भीतर आवे तो वह सभोंको ओरसे दोषी ठहरता है और सभोंसे जांचा जाता है । (२५) और इस रीतिसे उसके मनकी गुप्त बातें प्रगट हो जाती हैं और यूं वह मुंहके बल गिरके ईश्वर को प्रणाम करेगा और बतावेगा कि ईश्वर निश्चय इन लोगोंके बीचमें है ।

[मंडलीमें सब बातें शुभ रीतिसे करनेका उपदेश ।]

(२६) तो हे भाइयो क्या है . जब तुम एकट्ठे होते हो तब तुममेंसे हर एकके पास गीत है उपदेश है अन्य भाषा है प्रकाश है भाषाका अर्थ है . सब कुछ सुधारनेके लिये किया जाय। (२७) यदि कोई अन्य भाषा बोले तो दो दो अथवा बहुत होय तो तीन तीन और पारी पारी बोलें और एक मनुष्य अर्थ लगावे । (२८) परन्तु यदि अर्थ लगानेहारा न हो तो मंडलीमें चुप रहे और अपनेसे और ईश्वरसे बोले। (२९) भविष्यद्वक्ता दो अथवा तीन बोलें और दूसरे बिचार करें। (३०) और यदि दूसरेपर जो बैठा है कुछ प्रगट किया जाय तो पहिला चुप रहे । (३१) क्योंकि तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाक्य कह सकते हो इसलिये कि सब सीखें और सब शांति पावें। (३२) और भविष्यद्वक्ताओंके आत्मा भविष्यद्वक्ताओंके बशमें हैं।

(३३) क्योंकि ईश्वर हुल्लड़का नहीं परन्तु शांतिका कर्त्ता है जैसे पवित्र लोगोंको सब मंडलियोंमें है ।

(३४) तुम्हारी स्त्रियां मंडलियोंमें चुप रहें क्योंकि उन्हें बात करनेको नहीं परन्तु वशमें रहनेको आज्ञा दिई गई है जैसे व्यवस्था भी कहती है । (३५) और यदि वे कुछ सीखने चाहती हैं तो घरमें अपनेही स्वामियोंसे पूछें क्योंकि मंडलीमें बात करना स्त्रियोंको लज्जा है ।

(३६) क्या ईश्वरका वचन तुमहीमेंसे निकला अथवा केवल तुम्हारेही पास पहुंचा । (३७) यदि कोई मनुष्य भविष्यद्वक्ता अथवा आत्मिक जन देख पड़े तो मैं तुम्हारे पास जो बातें लिखता हूं वह उन्हें माने कि वे प्रभुकी आज्ञाएं हैं । (३८) परन्तु यदि कोई नहीं समझता है तो न समझे । (३९) सो हे भाइयो भविष्यद्वाक्य कहनेकी अभिलाषा करो और अनेक भाषा बोलनेको मत वर्जो । (४०) सब कुछ शुभ रीतिसे और ठिकाने सिर किया जाय ।

[यीशुके जी उठनेकी कथा और उसपर बहुत लोगोंकी साक्षी ।]

१५ हे भाइयो मैं वह सुसमाचार तुम्हें बताता हूं जो मैंने तुम्हें सुनाया जिसे तुमने ग्रहण भी किया जिसमें तुम खड़े भी रहते हो . (२) जिसके द्वारा जो तुम उस बचनको जिस करके मैंने तुम्हें सुसमाचार सुनाया धारण करते हो तो तुम्हारा त्राण भी होता है . नहीं तो तुमने बृथा बिश्वास किया है । (३) क्योंकि सबसे बड़ी बातोंमें मैंने यही तुम्हें सोंप दिई जो मैंने ग्रहण भी किई थी कि खीष्ट धर्म्मपुस्तकके अनु-सार हमारे पापोंके लिये मरा . (४) और कि वह गाड़ा गया और कि धर्म्मपुस्तकके अनुसार वह तीसरे दिन जी उठा . (५) और कि वह कैफ़ाको तब बारहों शिष्योंको दिखाई दिया । (६) तब वह एकही बेरमें पांच सौसे अधिक भाइयोंको दिखाई

दिया जिनमेंसे अधिक भाई अबलों बने रहे परन्तु कितने सो भी गये हैं। (७) तब वह याकूबको फिर सब प्रेरितोंको दिखाई दिया। (८) और सबके पीछे वह मुझको भी जैसे असमयके जन्मे हुएको दिखाई दिया। (९) क्योंकि मैं प्रेरितोंमें सबसे छोटा हूं और प्रेरित कहलानेके योग्य नहीं हूं इस कारण कि मैंने ईश्वरकी मंडलीको सताया। (१०) परन्तु मैं जो कुछ हूं सो ईश्वरके अनुग्रहसे हूं और उसका अनुग्रह जो मुझपर हुआ सो व्यर्थ नहीं हुआ परन्तु मैंने उन सभोंसे अधिक करके परिश्रम किया तौभी मैंने नहीं परन्तु ईश्वरके अनुग्रहने जो मेरे संग था परिश्रम किया। (११) सो क्या मैं क्या वे हम यूंही उपदेश करते हैं और तुमने यूंही बिश्वास किया।

[पावलका उनको उत्तर देना जो कहते हैं कि मृतकोंका पुनरुत्थान नहीं है।]

(१२) परन्तु जो खीष्टकी यह कथा सुनाई जाती है कि वह मृतकोंमेंसे जी उठा है तो तुममेंसे कई एक जन क्योंकर कहते हैं कि मृतकोंका पुनरुत्थान नहीं है। (१३) यदि मृतकोंका पुनरुत्थान नहीं है तो खीष्ट भी नहीं जी उठा है। (१४) और जो खीष्ट नहीं जी उठा है तो हमारा उपदेश व्यर्थ है और तुम्हारा बिश्वास भी व्यर्थ है। (१५) और हम ईश्वरके विषय में झूठे साक्षी भी ठहरते हैं क्योंकि हमने ईश्वरपर साक्षी दिई कि उसने खीष्टको जिला उठाया पर यदि मृतक नहीं जी उठते हैं तो उसने उसको नहीं उठाया। (१६) क्योंकि यदि मृतक नहीं जी उठते हैं तो खीष्ट भी नहीं जी उठा है। (१७) और जो खीष्ट नहीं जी उठा है तो तुम्हारा बिश्वास व्यर्थ है, तुम अबलों अपने पापोंमें पड़े हो। (१८) तब वे भी जो खीष्टमें सो गये हैं नष्ट हुए हैं। (१९) जो खीष्टपर केवल इसी जीवनलों हमारी आशा है तो सब मनुष्योंसे हम लोग अधिक अभागे हैं।

(२०) पर अब तो खीष्ट मृतकोंमेंसे जी उठा है और उन्होंका जो सो गये हैं पहिला फल हुआ है। (२१) क्योंकि जब कि मनुष्य के द्वारासे मृत्यु हुई मनुष्यके द्वारासे मृतकोंका पुनरुत्थान भी होगा। (२२) क्योंकि जैसा आदममें सब लोग मरते हैं तैसाही खीष्ट में सब लोग जिलाये जायेंगे। (२३) परन्तु हर एक अपने अपने पदके अनुसार जिलाया जायगा खीष्ट पहिला फल तब खीष्टके लोग उसके आनेपर। (२४) पीछे जब वह राज्यको ईश्वर अर्थात पिताके हाथ सौंपेगा जब वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार औ पराक्रम लोप करेगा तब अन्त होगा। (२५) क्योंकि जबलों वह सब शत्रुओंको अपने चरणोंतले न कर ले तबलों राज्य करना उसको अवश्य है। (२६) पिछला शत्रु जो लोप किया जायगा मृत्यु है। (२७) क्योंकि (लिखा है) उसने सब कुछ उसके चरणोंतले करके उसके अधीन किया. परन्तु जब वह कहेगा कि सब कुछ अधीन किया गया है तब प्रगट है कि जिसने सब कुछ उसके अधीन किया वह आप नहीं अधीन हुआ। (२८) और जब सब कुछ उसके अधीन किया जायगा तब पुत्र आप भी उसके अधीन होगा जिसने सब कुछ उसके अधीन किया जिस्तें ईश्वर सभोंमें सब कुछ होय। (२९) नहीं तो जो मृतकोंके लिये बपतिसमा लेते हैं सो क्या करेंगे. यदि मृतक निश्चय नहीं जी उठते हैं तो वे क्यों मृतकोंके लिये बपतिसमा लेते हैं। (३०) हम भी क्यों हर घड़ी जोखिममें रहते हैं। (३१) तुम्हारे विषयमें खीष्ट यीशु हमारे प्रभुमें जो बड़ाई मैं करता हूं उस बड़ाईकी सोंह मैं प्रतिदिन मरता हूं। (३२) जो मनुष्यकी रीतिपर मैं इफिसमें बन पशुओंसे लड़ा तो मुझे क्या लाभ हुआ. यदि मृतक नहीं जी उठते हैं तो आओ हम खावें औ पीवें कि बिहान मर जायेंगे। (३३) धोखा मत खाओ. बुरी संगति अच्छी चालको बिगाड़ती है। (३४) धर्म्म

के लिये जाग उठो और पाप मत करो क्योंकि कितने हैं जो ईश्वरको नहीं जानते हैं. मैं तुम्हारी लज्जा निमित्त कहता हूं।

[मृतकोंके पुनरुत्थानकी रीति और फल ।]

(३५) परन्तु कोई कहेगा मृतक लोग किस रीतिसे जी उठते हैं और कैसा देह धरके आते हैं। (३६) हे मूर्ख जो कुछ तू बोता है सो यदि मर न जाय तो जिलाया नहीं जाता है। (३७) और तू जो कुछ बोता है वह मूर्त्ति जो हो जायगी नहीं बोता है परन्तु निरा एक दाना चाहे गेहूंका चाहे और किसी अनाजका। (३८) परन्तु ईश्वर अपनी इच्छाके अनुसार उसका मूर्त्ति कर देता है और हर एक बीजको अपनी अपनी मूर्त्ति। (३९) हर एक शरीर एकही प्रकारका शरीर नहीं है परन्तु मनुष्योंकाशरीर और है पशुओंकाशरीर और है मछलियों का और है पंछियोंका और है। (४०) स्वर्गमेंके देह भी हैं और पृथिवीपरके देह हैं परन्तु स्वर्गमेंके देहोंका तेज और है और पृथिवीपरके देहोंका और है। (४१) सूर्य्यका तेज और है चंद्रमाका तेज और है और तारोंका तेज और है क्योंकि तेजमें एक तारा दूसरे तारेसे भिन्न है। (४२) वैसेही मृतकोंका पुनरुत्थान भी होगा. वह नाशमान बोया जाता है अबिनाशी उठाया जाता है। (४३) वह अनादर सहित बोया जाता है तेज सहित उठाया जाता है. दुर्ब्बलता सहित बोया जाता है सामर्थ्य सहित उठाया जाता है। (४४) वह प्राणिक देह बोया जाता है आत्मिक देह उठाया जाता है. एक प्राणिक देह है और एक आत्मिक देह है। (४५) यूं लिखा भी है कि पहिला मनुष्य आदम जीवता प्राणी हुआ. पिछला आदम जीवनदायक आत्मा है। (४६) पर जो आत्मिक है सोई पहिला नहीं है परन्तु वह जो प्राणिक है तब वह जो आत्मिक है। (४७) पहिला मनुष्य पृथिवीसे मिट्टीका था. दूसरा मनुष्य स्वर्गसे प्रभु है।

(४८) वह मिट्टीका जैसा था वैसे वे भी हैं जो मिट्टीके हैं और वह स्वर्गवासी जैसा है वैसे वे भी हैं जो स्वर्गवासी हैं। (४९) और जैसे हमने उसका रूप जो मिट्टीका था धारण किया है तैसे उस स्वर्गवासीका रूप भी धारण करेंगे। (५०) पर हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि मांस औ लोहू ईश्वरके राज्यके अधिकारी नहीं हो सकते हैं और न बिनाश अबिनाशका अधिकारी होता है। (५१) देखो मैं तुम्हें एक भेद बताता हूं कि हम सब नहीं सो जायेंगे परन्तु हम सब पिछली तुरही के समय क्षण भरमें पलक मारतेही बदले जायेंगे। (५२) क्योंकि तुरही फूंकी जायगी और मृतक अविनाशी उठाये जायेंगे और हम लोग बदले जायेंगे। (५३) क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान अविनाशको पहिन लेवे और यह मरनहार अमरता को पहिन लेवे। (५४) और जब यह नाशमान अविनाशको पहिन लेगा और यह मरनहार अमरताको पहिन लेगा तब वह वचन जो लिखा हुआ है कि जयमें मृत्यु निगली गई पूरा हो जायगा।

(५५) हे मृत्यु तेरा डंक कहां. हे परलोक तेरी जय कहां। (५६) मृत्युका डंक पाप है और पापका बल ब्यवस्था है। (५७) परन्तु ईश्वरका धन्यवाद होय जो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके द्वारासे हमें जयवन्त करता है। (५८) सो हे मेरे प्यारे भाइयो दृढ़ और अचल रहो और यह जानके कि प्रभुमें तुम्हारा परिश्रम ब्यर्थ नहीं है प्रभुके काममें सदा बढ़ते जाओ।

[चन्देके विषयमें पावलकी आज्ञा।]

१६ उस चन्देके विषयमें जो पवित्र लोगोंके लिये ठहराया गया है जैसा मैंने गलातियाकी मंडलियोंको आज्ञा दिई तैसा तुम भी करो। (२) हर अठवारेके पहिले दिन तुममेंसे हर एक मनुष्य जो कुछ उसकी सम्पत्तिमें बढती दिई जाय सोई

अपने पास एकट्ठा कर रखे ऐसा न हो कि जब मैं आऊं तब चन्दे उगाहे जायें । (३) और जब मैं पहुंचूंगा तब जो कोई तुम्हें अच्छे देख पड़ें उन्हें मैं चिट्ठियां देके भेजूंगा कि तुम्हारा दान यिरूशलीमको ले जावें । (४) पर जो मेरा भी जाना उचित होय तो वे मेरे संग जायेंगे ।

[पावलकी यात्राकी कथा । अनेक उपदेश । पत्रीकी समाप्ति ।]

(५) जब मैं माकिदोनियासे होके निकल चुकूं तब तुम्हारे पास आऊंगा । (६) क्योंकि मैं माकिदोनियासे होके निकलता हूं पर क्या जाने तुम्हारे यहां ठहरूंगा बरन जाड़ेका समय भी काटूंगा कि तुम जिधर कहीं मेरा जाना होय उधर मुझे कुछ दूरलों पहुंचावो । (७) क्योंकि मैं तुम्हें अब मार्गमें चलते चलते देखने नहीं चाहता हूं पर आशा रखता हूं कि यदि प्रभु ऐसा होने देवे तो कुछ दिन तुम्हारे यहां ठहर जाऊं । (८) परन्तु पेंतिकोष्टलों मैं इफिसमें रहूंगा । (९) क्योंकि एक बड़ा और कार्य्य योग्य द्वार मेरे लिये खुला है और बहुतसे बिरोधी हैं ।

(१०) यदि तिमोथिय आवे तो देखो कि वह तुम्हारे यहां निर्भय रहे क्योंकि जैसा मैं प्रभुका कार्य्य करता हूं तैसा वह भी करता है । (११) सो कोई उसे तुच्छ न जाने परन्तु उस को कुशलसे आगे पहुंचाओ कि वह मेरे पास आवे क्योंकि मैं भाइयोंके संग उसकी बाट देखता हूं । (१२) भाई अपल्लोके विषयमें यह है कि मैंने उससे बहुत बिन्ती किई कि भाइयों के संग तुम्हारे पास जाय पर उसको इस समयमें जानेकी कुछ भी इच्छा न थी परन्तु जब अवसर पावेगा तब जायगा ।

(१३) जागते रहो . बिश्वासमें दृढ़ रहो . पुरुषार्थ करो . बलवन्त होओ । (१४) तुम्हारे सब कर्म्म प्रेमसे किये जायें । (१५) और हे भाइयो मैं तुमसे यह बिन्ती करता हूं . तुम

स्तिफानके घरानेको जानते हो कि आखायाका पहिला फल है और उन्होंने अपने तईं पवित्र लोगोंकी सेवकाईके लिये ठहराया है । (१६) तुम ऐसोंके और हर एक मनुष्यके अधीन हो जो सहकर्म्मी औ परिश्रम करनेहारा है । (१७) स्तिफान और फर्तुनात और आखायिकके आनेसे मैं आनन्दित हूं कि इन्होंने तुम्हारी घटीको पूरी किई है । (१८) क्योंकि उन्होंने मेरे और तुम्हारे मनको सुख दिया है इसलिये ऐसोंको मानो ।

(१९) आशियाकी मंडलियोंकी ओरसे तुमको नमस्कार . अकूला और प्रिस्कीलाका और उनके घरमेंकी मंडलीका तुमसे प्रभुमें बहुत बहुत नमस्कार । (२०) सब भाई लोगोंका तुमसे नमस्कार . एक दूसरेको पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो । (२१) मुझ पावलका अपने हाथका लिखा हुआ नमस्कार । (२२) यदि कोई प्रभु यीशु ख्रीष्टको प्यार न करे तो स्रापित हो . मारानाथा (अर्थात प्रभु आता है) । (२३) प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह तुम्हारे संग होय । (२४) ख्रीष्ट यीशुमें मेरा प्रेम तुम सभोंके संग होवे । आमीन ॥

करिन्थियोंको पावल प्रेरितकी दूसरी पत्री।

[पत्रीका आभाष।]

१ पावल जो ईश्वरकी इच्छासे यीशु ख्रीष्टका प्रेरित है और भाई तिमोथिय ईश्वरकी मंडलीको जो करिन्थमें है उन सब पवित्र लोगोंके संग जो सारे आखाया देशमें हैं. (२) तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।

[दुःखोंमें शांति दिये जानेके लिये ईश्वरका धन्यवाद करना।]

(३) हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके पिता ईश्वरका जो दयाका पिता और समस्त शांतिका ईश्वर है धन्यबाद होय. (४) जो हमें हमारे सारे क्लेशमें शांति देता है इसलिये कि हम उन्हें जो किसी प्रकारके क्लेशमें हैं उस शांतिसे शांति दे सकें जिस करके हम आप ईश्वरसे शांति पाते हैं। (५) क्योंकि जैसा ख्रीष्टके दुःख हमोंमें बहुत होते हैं तैसा हमारी शांति भी ख्रीष्टके द्वारासे बहुत होती है। (६) परन्तु हम यदि क्लेश पाते हैं तो यह तुम्हारी शांति औ निस्तारके लिये है जो इन्हीं दुःखोंमें जिन्हें हम भी उठाते हैं स्थिर रहनेमें गुण करता है. अथवा यदि शांति पाते हैं तो यह तुम्हारी शांति औ निस्तारके लिये है। (७) और तुम्हारे विषयमें हमारी आशा दृढ़ है क्योंकि जानते हैं कि तुम जैसे दुःखोंके तैसे शांतिके भी भागी हो।

(८) हे भाइयो हम नहीं चाहते हैं कि तुम हमारे उस क्लेश के विषयमें अनजान रहो जो आशियामें हमको हुआ कि

सामर्थ्यसे अधिक हमपर अत्यन्त भार पड़ा यहांलों कि प्राण बचानेका भी हमें उपाय न रहा । (९) बरन हम आप मृत्यु की आज्ञा अपनेमें पा चुके थे कि हमारा भरोसा अपनेपर न होय परन्तु ईश्वरपर जो मृतकोंको जिलाता है । (१०) उस ने हमें ऐसी बड़ी मृत्युसे बचाया और बचाता है . उसपर हमने आशा रखी है कि वह फिर भी बचावेगा . (११) कि तुम भी हमारे लिये प्रार्थना करके सहायता करोगे जिस्तें जो बरदान बहुतोंके द्वारासे हमें मिलेगा उसके कारण बहुत लोग हमारे लिये धन्यबाद करें ।

[पावलका करिन्थमें न जानेका हेतु वर्णन करना ।]

(१२) क्योंकि हमारी बड़ाई यह है अर्थात हमारे मनकी साक्षी कि जगतमें पर और भी तुम्हारे यहां हमारा व्यवहार ईश्वरके योग्यकी सीधाई औ सच्चाई सहित शारीरिक ज्ञान के अनुसार नहीं परन्तु ईश्वरके अनुग्रहके अनुसार था । (१३) क्योंकि हम तुम्हारे पास और कुछ नहीं लिखते हैं केवल वह जो तुम पढ़ते अथवा मानते भी हो और मुझे भरोसा है कि अन्तलों भी मानोगे . (१४) जैसा तुमने कुछ कुछ हमों को भी माना है कि जिस रीतिसे प्रभु यीशुके दिनमें तुम हमारे लिये बड़ाई करनेके हेतु हो उसी रीतिसे तुम्हारे लिये हम भी हैं । (१५) और इस भरोसेसे मैं चाहता था कि पहिले तुम्हारे पास आऊं जिस्तें तुम्हें दूसरी बेर दान मिले . (१६) और तुम्हारे पाससे होके माकिदोनियाको जाऊं और फिर माकि-दोनियासे तुम्हारे पास आऊं और तुम्होंसे यिहूदियाकी ओर कुछ दूरलों पहुंचाया जाऊं । (१७) सो इसका बिचार करनेमें क्या मैंने हलकाई किई अथवा मैं जो बिचार करता हूं क्या शरीरके अनुसार बिचार करता हूं कि मेरी बातमें हां हां और नहीं नहीं होवे । (१८) ईश्वर बिश्वासयोग्य साक्षी है

रा बचन जो तुमसे कहा गया हां औ नहीं न था ।
ंकि ईश्वरका पुत्र यीशु ख्रीष्ट जिसका हमारे द्वारा
मेरे औ सीलाके औ तिमोथियके द्वारा तुम्हारे बीचमें
प्रचार हुआ हां औ नहीं न था पर उसमें हां ही था ।
(२०) क्योंकि ईश्वरकी प्रतिज्ञाएं जितनी हों उसीमें हां और
उसीमें आमीन हैं जिस्तें हमारे द्वारा ईश्वरकी महिमा प्रगट
होय । (२१) और जो हमें तुम्हारे संग ख्रीष्टमें दृढ़ करता है
और जिसने हमें अभिषेक किया है सो ईश्वर है । (२२) जिस
ने हमपर छाप भी दिई है और हम लोगोंके मनमें पवित्र
आत्माका बयाना दिया है । (२३) परन्तु मैं ईश्वरको अपने
प्राणपर साक्षी बदता हूं कि मैंने तुमपर दया किई जो अब
लों करिन्थ नहीं गया । (२४) यह नहीं कि हम तुमपर
बिश्वासके विषयमें प्रभुताई करनेहारे हैं परन्तु तुम्हारे
आनन्द के सहायक हैं क्योंकि तुम बिश्वाससे खड़े हो ।

२ परन्तु मैंने अपने लिये तुम्हारे विषयमें यही ठहराया
कि मैं फिर उनके पास उदास होके न जाऊंगा । (२) क्यों-
कि जो मैं तुम्हें उदास करूं तो फिर मुझे आनन्दित करनेहारा
कौन है केवल वह जो मुझसे उदास किया जाता है । (३) और
मैंने यही बात तुम्हारे पास इसलिये लिखी कि आनेपर मुझे
उनकी ओरसे शोक न होय जिनकी ओरसे उचित था कि मैं
आनन्दित होता क्योंकि मैं तुम सभोंका भरोसा रखता हूं कि
मेरा आनन्द तुम सभोंका आनन्द है । (४) बड़े क्लेश और मन
के कष्टसे मैंने बहुत रो रोके तुम्हारे पास लिखा इसलिये नहीं
कि तुम्हें शोक होय पर इसलिये कि तुम उस प्रेमको जान
लेओ जो मैं तुम्हारी ओर बहुत अधिक करके रखता हूं ।
(५) परन्तु किसीने यदि शोक दिलाया है तो मुझे नहीं
पर मैं बहुत भार न देऊं इसलिये कहता हूं कुछ कुछ तुम

सभोंको शोक दिलाया है । (६) ऐसे जनके लिये यह दंड जो भाइयोंमेंसे अधिक लोगोंने दिया बहुत है । (७) इसलिये इस के विरुद्ध तुम्हें और भी चाहिये कि उसे क्षमा करो और शांति देओ न हो कि ऐसा मनुष्य अत्यन्त शोकमें डूब जाय। (८) इस कारण मैं तुमसे बिन्ती करता हूं कि उसको अपने प्रेमका प्रमाण देओ । (९) क्योंकि मैंने इस हेतुसे लिखा भी कि तुम्हारी परीक्षा लेके जानूं कि तुम सब बातोंमें आज्ञा-कारी होते हो कि नहीं । (१०) जिसका तुम कुछ क्षमा करते हो मैं भी क्षमा करता हूं क्योंकि मैंने भी यदि कुछ क्षमा किया है तो जिसको क्षमा किया है उसको तुम्हारे कारण ख्रीष्टके साक्षात क्षमा किया है . (११) कि शैतानका हमपर दांव न चले क्योंकि हम उसकी जुगतोंसे अज्ञान नहीं हैं।

(१२) जब मैं ख्रीष्टका सुसमाचार प्रचार करनेको त्रोआमें आ-या और प्रभुके कामका एक द्वार मेरे लिये खुला था . (१३) तब मैंने अपने भाई तीतसको जो नहीं पाया तो मेरे मनको चैन न मिला परन्तु उनसे विदा होके मैं माकिदोनियाको गया ।

[प्रेरितोंकी सेवकाईकी रीति और उसके फल ।]

(१४) परन्तु ईश्वरका धन्यबाद होय जो सदा ख्रीष्टमें हमारी जय करवाता है और उसके ज्ञानका सुगन्ध हमारे द्वारासे हर स्थानमें फैलाता है । (१५) क्योंकि हम ईश्वरको उनमें जो त्राण पाते हैं और उनमें भी जो नाश होते हैं ख्रीष्ट के सुगन्ध हैं . (१६) इनको हम मृत्युके लिये मृत्युके गन्ध हैं पर उनको जीवनके लिये जीवनके गन्ध हैं . और इस काम के योग्य कौन है । (१७) क्योंकि हम उन बहुतोंके समान नहीं हैं जो ईश्वरके बचनमें मिलावट करनेहारे हैं परन्तु जैसे सच्चाईसे बोलनेहारे परन्तु जैसे ईश्वरकी ओरसे बोलनेहारे तैसे ईश्वरके सन्मुख ख्रीष्टकी बातें बोलते हैं ।

३ क्या हम फिर अपनी प्रशंसा करने लगे हैं अथवा जैसा कितनोंको तैसा क्या हमोंको भी प्रशंसाकी पत्रियां तुम्हारे पास लानेका अथवा तुम्हारे पाससे ले जानेका प्रयोजन है। (२) तुम हमारी पत्री हो जो हमारे हृदयमें लिखी गई है और सब मनुष्योंसे पहचानी औ पढ़ी जाती है। (३) क्योंकि तुम प्रत्यक्ष देख पड़ते हो कि ख्रीष्टकी पत्री हो जिसके विषयमें हमने सेवकाई किई और जो सियाहीसे नहीं परन्तु जीवते ईश्वरके आत्मासे पत्थरकी पटियाओंपर नहीं परन्तु हृदयकी मांसरूपी पटरियोंपर लिखी गई है।

(४) हमें ईश्वरकी ओर ख्रीष्टके द्वारासे ऐसाही भरोसा है. (५) यह नहीं कि हम जैसे अपनी ओरसे किसी बातका विचार आपसे करनेके योग्य हैं परन्तु हमारी योग्यता ईश्वरसे होती है. (६) जिसने हमें नये नियमके सेवक होनेके योग्य भी किया लेखके सेवक नहीं परन्तु आत्माके क्योंकि लेख मारता है परन्तु आत्मा जिलाता है।

(७) और यदि मृत्युकी सेवकाई जो लेखोंमें थी और पत्थरोंमें खोदी हुई थी तेजोमय हुई यहांलों कि मूसाके मुंहके तेजके कारण जो लोप होनेहारा भी था इस्रायेलके सन्तान उसके मुंहपर दृष्टि नहीं कर सकते थे. (८) तो आत्माकी सेवकाई और भी तेजोमय क्यों न होगी। (९) क्योंकि यदि दंडकी आज्ञाकी सेवकाई मक तेज थी तो बहुत अधिक करके धर्म्मकी सेवकाई तेजमें उससे श्रेष्ठ है। (१०) और जो तेजोमय कहा गया था सो भी इस करके अर्थात इस अधिक तेज के कारण कुछ तेजोमय न ठहरा। (११) क्योंकि यदि वह जो लोप होनेहारा था तेजवन्त था तो बहुत अधिक करके यह जो बना रहेगा तेजोमय है।

(१२) सो ऐसी आशा रखनेसे हम बहुत खोलके बात करते

हैं . (१३) और ऐसे नहीं जैसा मूसा अपने मुंहपर परदा डालता था कि इस्रायेलके सन्तान उस लोप होनेहारे विषय के अन्तपर दृष्टि न करें। (१४) बरन उनकी बुद्धि मन्द हुई क्योंकि आजलों पुराने नियमके पढ़नेमें वही परदा पड़ा रहता है और नहीं खुलता है कि वह ख्रीष्टमें लोप किया जाता है। (१५) पर आजलों जब मूसाका पुस्तक पढ़ा जाता है उनके हृदयपर परदा पड़ा है। (१६) परन्तु जब वह प्रभु की ओर फिरेगा तब वह परदा उठाया जायगा। (१७) प्रभु तो आत्मा है और जहां प्रभुका आत्मा है तहां निर्बन्धता है। (१८) और हम सब उघाड़े मुंह प्रभुका तेज जैसे दर्पणमें देखते हुए मानो प्रभु अर्थात आत्माके गुणसे तेजपर तेज प्राप्त कर उसी रूपमें बदलते जाते हैं।

[प्रेरितोंकी सच्चाईका वर्णन और सुसमाचारके कितनोंसे गुप्त रहनेका कारण।]

४ इस कारण जब कि उस दयाके अनुसार जो हमपर किई गई यह सेवकाई हमें मिली है हम कातर नहीं होते हैं. (२) पर लज्जाके गुप्त कामोंको त्यागके न चतुराई से चलते हैं न ईश्वरके बचनमें मिलावट करते हैं परन्तु सत्य को प्रगट करनेसे हर एक मनुष्यके बिवेकको ईश्वरके आगे अपने विषयमें प्रमाण देते हैं। (३) पर हमारा सुसमाचार यदि गुप्त भी है तो उन्हींपर गुप्त है जो नाश होते हैं. (४) जिन्होंमें देख पड़ता है कि इस संसारके ईश्वरने अविश्वासियोंकी बुद्धि अंधी किई है कि ख्रीष्ट जो ईश्वरकी प्रतिमा है तिसके तेजके सुसमाचारकी ज्योति उनपर प्रकाश न होय। (५) क्योंकि हम अपनेको नहीं परन्तु ख्रीष्ट यीशुको प्रभु करके प्रचार करते हैं और अपनेको यीशुके कारण तुम्हारे दास कहते हैं। (६) क्योंकि ईश्वर जिसने आज्ञा किई कि अन्धकारमेंसे ज्योति चमके वही है जो हम लोगोंके हृदयमें चमका कि

३ क्या हम फिर अपन्नीष्टके मुंहपर है उस तेजके ज्ञानको कितनोंको तैसा क्या ह

पास लानेका अथवा तुम्हारे.ओरका क्लेश उठाना ।]

(२) तुम हमारी पत्री ओत्त हमें मिट्टीके बर्त्तनोंमें मिली है कि और सब मनुष्योंसेई ईश्वरकी ठहरे और हमारी ओरसे नहीं। कि तुम प्रत्यक्षा क्लेश पाते हैं पर सकेतेमें नहीं हैं. दुवधामें विपयमें ह्याय नहीं. (९) सताये जाते हैं पर त्यागे नहीं जाते. जीवतेंध जाते हैं पर नाश नहीं होते। (१०) हम नित्य प्रभु ह्यीशुका मरण देहमें लिये फिरते हैं कि योशुका जीवन भी हमारे देहमें प्रगट किया जाय। (११) क्योंकि हम जो जीते हैं सदा योशुके कारण मृत्यु भोगनेको सोंपे जाते हैं कि योशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीरमें प्रगट किया जाय। (१२) सो मृत्यु हमोंमें परन्तु जीवन तुम्होंमें कार्य्य करता है।

(१३) परन्तु बिश्वासका वही आत्मा जैसा लिखा है मैंने बिश्वास किया इसलिये बोला जब कि हमें मिला है हम भी बिश्वास करते हैं इसलिये बोलते भी हैं. (१४) क्योंकि जानते हैं कि जिसने प्रभु योशुको जिला उठाया सो हमें भी योशु के द्वारा जिलाके तुम्हारे संग अपने आगे खड़ा करेगा। (१५) क्योंकि सब कुछ तुम्हारे लिये है जिस्तें अनुग्रह बहुत होके ईश्वरकी महिमाके लिये बहुत लोगोंके धन्यवादके हेतुसे बढ़ता जाय।

[उनका पीछे महा सुख करनेकी आशा रखना ।]

(१६) इसलिये हम कातर नहीं होते हैं परन्तु जो हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता है तौभी भीतरी मनुष्यत्व दिनपर दिन नया होता जाता है। (१७) क्योंकि हमारे क्लेश का क्षण भरका हलका बोझ हमारे लिये महिमाका अनन्त भार अधिकसे अधिक करके उत्पन्न करता है. (१८) कि हम

तो दृश्य विषयोंको नहीं परन्तु अदृश्य विषयोंको देखा करते हैं क्योंकि दृश्य विषय अनित्य हैं परन्तु अदृश्य विषय नित्य हैं।

५ हम जानते हैं कि जो हमारा पृथिवीपरका डेरासा घर गिराया जाय तो ईश्वरसे एक भवन हमें मिला है जो बिन हाथका बनाया हुआ नित्यस्थायी घर स्वर्गमें है। (२) क्योंकि इस डेरेमें हम कहरते भी हैं और अपना वह बासा जो स्वर्गीय है ऊपरसे पहिननेकी लालसा करते हैं। (३) जो ऐसाही ठहरे कि पहिने हुए हम नंगे नहीं पाये जायेंगे। (४) हां हम जो इस डेरेमें हैं बोझसे दबे हुए कहरते हैं क्योंकि हम उतारनेकी नहीं परन्तु ऊपरसे पहिननेकी इच्छा करते हैं कि जीवनसे यह मरनहार निगला जाय। (५) और जिसने हमें इसी बातके लिये तैयार किया है सो ईश्वर है जिसने हमें पवित्र आत्माका बयाना भी दिया है। (६) सो हम सदा ढाढ़स बांधते हैं और यह जानते हैं कि जबलों देहमें रहते हैं तबलों प्रभुसे अलग होते हैं। (७) क्योंकि हम रूप देखनेसे नहीं परन्तु विश्वाससे चलते हैं। (८) इसलिये हम साहस करते हैं और यही अधिक चाहते हैं कि देहसे अलग होके प्रभुके संग रहें।

(९) इस कारण हम चाहें संग रहते हुए चाहें अलग होते हुए उसकी प्रसन्नता योग्य होनेकी चेष्टा करते हैं। (१०) क्योंकि हम सभोंका ख्रीष्टके विचार आसनके आगे प्रगट किया जाना अवश्य है जिस्तें हर एक जन क्या भला काम क्या बुरा जो कुछ किया हो उसके अनुसार देहके द्वारा किये हुएका फल पावे।

[मिलापकी सेवकाईका वर्णन जो ईश्वरने सुसमाचारके प्रचारकोंको सौंपी हैं।]

(११) सो प्रभुका भय मानके हम मनुष्योंको समझाते हैं पर ईश्वरके आगे हम प्रगट होते हैं और मुझे भरोसा है कि तुम्होंके मनमें भी प्रगट हुए हैं। (१२) क्योंकि हम तुम्हारे पास फिर

अपनी प्रशंसा करते हैं सो नहीं परन्तु तुम्हें हमारे विषयमें बड़ाई करनेका कारण देते हैं कि जो लोग हृदयपर नहीं परन्तु रूपपर घमंड करते हैं उनके बिरुद्ध बड़ाई करनेको जगह तुम्हें मिले। (१३) क्योंकि हम चाहें बेसुध हों तो ईश्वर के लिये बेसुध हैं चाहें सुबुद्धि हों तो तुम्हारे लिये सुबुद्धि हैं।

(१४) ख्रीष्टका प्रेम हमें बश कर लेता है क्योंकि हमने यह बिचार किया कि यदि सभोंके लिये एक मरा तो वे सब मूए. (१५) और वह सभोंके लिये इस कारण मरा कि जो जीवते हैं सो अब अपने लिये न जीवें परन्तु उसके लिये जो उनके निमित्त मरा और जी उठा। (१६) सो हम अबसे किसीको शरीरके अनुसार करके नहीं समझते हैं और यदि हम ख्रीष्टको शरीरके अनुसार करके समझते भी थे तौभी अब उसको नहीं ऐसा समझते हैं। (१७) सो यदि कोई ख्रीष्टमें होय तो नई सृष्टि है. पिछली बातें बीत गई हैं देखो सब बातें नई हुई हैं।

(१८) और सब बातें ईश्वरकी ओरसे हैं जिसने यीशु ख्रीष्ट के द्वारा हमें अपने साथ मिला लिया और मिलापकी सेवकाई हमें दिई. (१९) अर्थात कि ईश्वर जगतके लोगोंके अपराध उनपर न लगाके ख्रीष्टमें जगतको अपने साथ मिला लेता था और मिलापका बचन हमोंको सोंप दिया। (२०) सो हम ख्रीष्टका सन्ती दूत हैं माने ईश्वर हमारे द्वारा उपदेश करता है. हम ख्रीष्टकी सन्ती बिन्ती करते हैं ईश्वरसे मिलाये जाओ। (२१) क्योंकि जो पापसे अनजान था उसको उसने हमारे लिये पाप बनाया कि उसमें हम ईश्वरके धर्म्म बनें।

[उनका दुःख भोगना और उनका स्वभाव जिससे वह अपने लिये प्रमाण देते हैं कि ईश्वरके सेवक हैं।]

६ सो हम जो सहकर्म्मी हैं उपदेश करते हैं कि ईश्वरके अनुग्रहको बृथा ग्रहण न करो। (२) क्योंकि वह कहता

है मैंने शुभ कालमें तेरी सुनी और निस्तारके दिनमें तेरा उपकार किया. देखो अभी वह शुभ काल है देखो अभी वह निस्तारका दिन है । (३) हम किसी बातसे कुछ ठोकर नहीं खिलाते हैं कि इस सेवकाईपर दोष न लगाया जाय. (४) परन्तु जैसे ईश्वरके सेवक तैसे हर बातसे अपने लिये प्रमाण देते हैं अर्थात बहुत धीरतासे क्लेशोंमें दरिद्रतामें संकटों में . (५) मार खानेमें बन्दीगृहोंमें हुल्लड़ोंमें परिश्रममें जागते रहनेमें उपवास करनेमें . (६) शुद्धतासे ज्ञानसे धीरजसे कृपालुता से पवित्र आत्मासे निष्कपट प्रेमसे . (७) सत्यके बचनसे ईश्वर के सामर्थ्यसे दहिने औ बायें धर्म्मके हथियारोंसे . (८) आदर औ निरादरसे अपयश औ सुयशसे कि भरमानेहारोंके ऐसे हैं तौभी सच्चे हैं . (९) अनजाने हुओंके ऐसे हैं तौभी जाने जाते हैं मरते हुओंके ऐसे हैं और देखो जीवते हैं ताड़ना किये हुओंके ऐसे हैं और घात नहीं किये जाते हैं . (१०) उदासोंके ऐसे हैं परन्तु सदा आनन्द करते हैं कंगालोंके ऐसे हैं परन्तु बहुतोंको धनवान करते हैं ऐसे हैं जैसा हमारे पास कुछ नहीं है तौभी सब कुछ रखते हैं ।

(११) हे करिन्थियो हमारा मुंह तुम्हारी और खुला है हमारा हृदय विस्तारित हुआ है । (१२) तुम्हें हमोंमें सकेता नहीं है परन्तु तुम्हारेही अन्तःकरणमें तुम्हें सकेता है । (१३) पर मैं तुमको जैसा अपने लड़कोंको इसका वैसाही बदला बताता हूं कि तुम भी विस्तारित होओ । (१४) मत अविश्वासियोंके संग असमान जूएमें जुत जाओ क्योंकि धर्म्म और अधर्म्मका कौनसा साझा है और अन्धकारके साथ ज्योतिकी कौन संगति । (१५) और बिलियालके संग ख्रीष्टकी कौन सम्मति है अथवा अविश्वासी के साथ विश्वासीका कौनसा भाग । (१६) और मूरतोंके संग ईश्वरके मन्दिरका कौनसा सम्बन्ध है क्योंकि तुम तो जीवते

ईश्वरके मन्दिर हो जैसा ईश्वरने कहा मैं उनमें बसूंगा और उनमें फिरूंगा और मैं उनका ईश्वर होंगा और वे मेरे लोग होंगे। (१७) इसलिये परमेश्वर कहता है उनके बीचमेंसे निकलो और अलग होओ और अशुद्ध वस्तुको मत छूओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा. (१८) और मैं तुम्हारा पिता होंगा और तुम मेरे पुत्र और पुत्रियां होगे सर्व्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है।

[पावलकी बिन्ती करिन्थियोंसे कि अविश्वासियोंकी संगत छोड़के संपूर्ण पवित्रता प्राप्त करें।]

७ सो हे प्यारो जब कि यह प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं आओ हम अपनेको शरीर और आत्माकी सब मलीनतासे शुद्ध करें और ईश्वरका भय रखते हुए संपूर्ण पवित्रता को प्राप्त करें।

[पावलका तीतसके आनेसे और अपनी पहिली पत्रीके फलसे आनन्द करना।]

(२) हमें ग्रहण करो हमने न किसीसे अन्याय किया न किसीको बिगाड़ा न किसीको ठगा। (३) मैं दोषी ठहरानेको नहीं कहता हूं क्योंकि मैंने आगेसे कहा है कि तुम हमारे मनमें हो ऐसा कि हम तुम्हारे संग मरने और तुम्हारे संग जीनेको तैयार हैं। (४) तुम्हारी ओर मेरा साहस बहुत है तुम्हारे विषयमें मुझे बड़ाई करनेकी जगह बहुत है हमारे सब क्लेशके विषयमें मैं शांतिसे भर गया हूं और अधिकसे अधिक आनन्द करता हूं।

(५) क्योंकि जब हम माकिदोनियामें आये तब भी हमारे शरीरको कुछ चैन नहीं मिला पर हम समस्त प्रकारसे क्लेश पाते थे. बाहरसे युद्ध भीतरसे भय था। (६) परन्तु दीनोंको शांति देनेहारेने अर्थात ईश्वरने तीतसके आनेसे हमोंको शांति दिई. (७) और केवल उसके आनेसे नहीं पर उस शांतिसे भी जिस करके उसने तुम्हारी लालसा औ तुम्हारे बिलाप औ मेरे लिये

तुम्हारे अनुरागका समाचार हमसे कहते हुए तुम्हारे विषयमें शांति पाई यहांलों कि मैं अधिक आनन्दित हुआ ।

(८) क्योंकि जो मैंने उस पत्रीसे तुम्हें शोक दिलाया तौभी मैं यद्यपि पछताता था अब नहीं पछताता हूं. मैं देखता हूं कि उस पत्रीने यदि केवल थोड़ी बेरलों तौभी तुम्हें शोक तो दिलाया । (९) अभी मैं आनन्द करता हूं इसलिये नहीं कि तुमने शोक किया परन्तु इसलिये कि शोक करनेसे पश्चात्ताप किया क्योंकि तुम्हारा शोक ईश्वरकी इच्छाके अनुसार था जिस्तें तुम्हें हमारी ओरसे किसी बातमें हानि न होय । (१०) क्योंकि जो शोक ईश्वरकी इच्छाके अनुसार है उससे वह पश्चात्ताप उत्पन्न होता है जिस करके त्राण है और जिससे किसीको नहीं पछताना है. परन्तु संसारके शोकसे मृत्यु उत्पन्न होती है । (११) क्योंकि अपना यही ईश्वर की इच्छा के अनुसार शोक दिलाया जाना देखो कि उससे कितना यत्न हां उत्तर देनेकी कितनी चिन्ता हां कितनी रिस हां कितना भय हां कितनी लालसा हां कितना अनुराग हां दंड देनेका कितना विचार तुममें उत्पन्न हुआ. तुमने समस्त प्रकारसे अपने लिये इस बातमें निर्दोष होनेका प्रमाण दिया है । (१२) सो मैंने जो तुम्हारे पास लिखा तौभी न तो उसके कारण लिखा जिसने अपराध किया न उसके कारण जिसका अपराध किया गया परन्तु इस कारण कि हमारे लिये जो तुम्हारा यत्न है सो तुम्होंमें ईश्वरके सन्मुख प्रगट किया जाय ।

(१३) इस कारणसे हमने तुम्हारी शांतिसे शांति पाई और बहुत अधिक करके तीतसके आनन्दसे और भी आनन्दित हुए क्योंकि उसके मनको तुम सभोंकी ओरसे सुख दिया गया है । (१४) क्योंकि यदि मैंने उसके आगे तुम्हारे विषयमें कुछ बड़ाई किई है तो लज्जित नहीं किया गया हूं परन्तु जैसा

हमने तुमसे सब बातें सच्चाईसे कहीं तैसा हमारा तीतसके आगे बड़ाई करना भी सत्य हुआ है। (१५) और वह जो तुम सभोंके आज्ञापालनको स्मरण करता है कि तुमने क्योंकर डरते और कांपते हुए उसको ग्रहण किया तो बहुत अधिक करके तुमपर स्नेह करता है। (१६) मैं आनन्द करता हूं कि तुम्हारी ओरसे मुझे समस्त प्रकारसे ढाढ़स बन्धता है।

[पावलका करिन्थियोंको कंगाल भाइयोंके लिये चन्दा देनेको सिताना।]

८ हे भाइयो हम तुम्हें ईश्वरका वह अनुग्रह जनाते हैं जो माकिदोनियाकी मंडलियोंमें दिया गया है . (२) कि क्लेशकी बडी परीक्षामें उनके आनन्दकी अधिकाई और उनकी महा दरिद्रता इन दोनोंके बढ़ जानेसे उनकी उदारताका धन प्रगट हुआ। (३) क्योंकि मैं साक्षी देता हूं कि वे अपने सामर्थ्य भर और सामर्थ्यसे अधिक आपहीसे तैयार थे . (४) और हमें बहुत मनाके बिन्ती करते थे कि हम उस दान को और पवित्र लोगोंके लिये जो सेवकाई तिसकी संगतिको ग्रहण करें . (५) और जैसा हमने आशा रखी थी तैसा नहीं परन्तु उन्होंने अपने तईं पहिले प्रभुको तब ईश्वरकी इच्छासे हमोंको दिया . (६) यहांलों कि हमने तीतससे बिन्ती किई कि जैसा उसने आगे आरंभ किया था तैसा तुम्होंमें इस अनुग्रहके कर्म्मको समाप्त भी कर ले।

(७) परन्तु जैसे हर एक बातमें अर्थात बिश्वासमें औ बचनमें औ ज्ञानमें औ सारे यत्नमें औ हमारी ओर तुम्हारे प्रेममें तुम्हारी बढ़ती होती है तैसे इस अनुग्रहके कर्म्ममें भी तुम्हारी बढ़ती होय। (८) मैं आज्ञाकी रीतिपर नहीं परन्तु औरोंके यत्न करनेके कारण और तुम्हारे प्रेमकी सच्चाईको परखनेके लिये कहता हूं। (९) क्योंकि तुम हमारे प्रभु यीशु खीष्टका अनुग्रह जानते हो कि वह जो धनी था तुम्हार

कारण दरिद्र हुआ कि उसकी दरिद्रताके द्वारा तुम धनी हो। (१०) और इस बातमें मैं परामर्श देता हूं क्योंकि यह तुम्हारे लिये अच्छा है जो बरस दिनसे केवल करनेका नहीं परन्तु चाहनेका भी आरंभ आगेसे कर चुके। (११) सो अब करने की भी समाप्ति करो कि जैसा चाहनेको तुम्हारे मनकी तैयारी थी वैसा तुम्हारी सम्पत्तिके समान तुम्हारा समाप्ति करना भी होवे। (१२) क्योंकि यदि आगेसे मनकी तैयारी होती है तो जो जिसके पास नहीं है उसके अनुसार नहीं परन्तु जो जिसके पास है उसके अनुसार वह ग्राह्य है। (१३) यह इसलिये नहीं है कि औरोंको चैन और तुमको क्लेश मिले. (१४) परन्तु समतासे इस वर्त्तमान समयमें तुम्हारी बढ़ती उन्होंकी घटतीमें काम आवे इसलिये कि उनकी बढ़ती भी तुम्हारी घटतीमें काम आवे जिस्तें समता होय. (१५) जैसा लिखा है जिसने बहुत संचय किया उसका कुछ उभरा नहीं और जिसने थोड़ा संचय किया उसका कुछ घटा नहीं।

(१६) और ईश्वरका धन्यबाद होय जो तुम्हारे लिये वही यत्न तीतसके हृदयमें देता है. (१७) कि उसने वह बिन्ती ग्रहण किई बरन अति यत्नवान होके वह अपनी इच्छासे तुम्हारे पास गया है। (१८) और हमने उसके संग उस भाई को भेजा है जिसकी प्रशंसा सुसमाचारके विषयमें सब मंडलियों में होती है। (१९) और केवल इतना नहीं परन्तु वह मंडलियों से ठहराया भी गया कि इस अनुग्रहके कर्म्मके लिये जिसकी सेवकाई हमसे किई जाती है हमारे संग चले जिस्तें प्रभुकी महिमा और तुम्हारे मनकी तैयारी प्रगट किई जाय। (२०) हम इस बातमें चौकस रहते हैं कि इस अधिकाईके विषयमें जिस की सेवकाई हमसे किई जाती है कोई हमपर दोष न लगावे। (२१) क्योंकि जो बातें केवल प्रभुके आगे नहीं परन्तु मनुष्यों

के आगे भी भली हैं हम उनकी चिन्ता करते हैं । (२२) और हमने उनके संग अपने भाई को भेजा है जिसको हमने बारंबार बहुत बातोंमें परखके यत्नवान पाया है पर अब तुमपर जो बड़ा भरोसा है उसके कारण बहुत अधिक यत्नवान पाया है । (२३) यदि तीतसकी पूछो जाय तो वह मेरा साथी और तुम्हारे लिये सहकर्म्मी है अथवा हमारे भाई लोग हों तो वे मंडलियोंके दूत और ख्रीष्टकी महिमा हैं । (२४) सो उन्हें मंडलियोंके सन्मुख अपने प्रेमका और तुम्हारे विषयमें हमारे बड़ाई करनेका प्रमाण दिखाओ ।

९ पवित्र लोगोंके लिये जो सेवकाई तिसके विषयमें तुम्हारे पास लिखना मुझे अवश्य नहीं है । (२) क्योंकि मैं तुम्हारे मनकी तैयारीको जानता हूं जिसके लिये मैं तुम्हारे विषयमें माकिदोनियोंके आगे बड़ाई करता हूं कि आखायाके लोग बरस दिनसे तैयार हुए हैं और तुम्हारे अनुरागने बहुतों को हिसका दिलाया है । (३) परन्तु मैंने भाइयोंको इसलिये भेजा है कि तुम्हारे विषयमें जो हमने बड़ाई किई है सो इस बातमें व्यर्थ न ठहरे अर्थात कि जैसा मैंने कहा तैसे तुम तैयार हो रहो . (४) ऐसा न हो कि यदि कोई माकिदोनी लोग मेरे संग आके तुम्हें तैयार न पावें तो क्या जानें इस निर्भय बड़ाई करनेमें हम न कहें तुम लज्जित होओ पर हमहो लज्जित होवें । (५) इसलिये मैंने भाइयोंसे बिन्ती करना अवश्य समझा कि वे आगे से तुम्हारे पास जावें और तुम्हारी उदारताका फल जिसका सन्देश आगे दिया गया था आगेसे सिद्ध करें कि यह लोभके नहीं परन्तु उदारताके फलके ऐसा तैयार होवे ।

(६) परन्तु यह है कि जो क्षुद्रतासे बोता है सो क्षुद्रतासे लवेगा भी और जो उदारतासे बोता है सो उदारतासे लवेगा

भी। (७) हर एक जन जैसा मनमें ठाने तैसा दान करे कुढ़ कुढ़के अथवा दबावसे न देवे क्योंकि ईश्वर हर्षसे देनेहारेको प्यार करता है। (८) और ईश्वर सब प्रकारका अनुग्रह तुम्हें अधिकाईसे दे सकता है जिस्ते हर बातमें और हर समयमें सब कुछ जो अवश्य होय तुम्हारे पास रहे और तुम्हें हर एक अच्छे काम के लिये बहुत सामर्थ्य होय। (९) जैसा लिखा है उसने बिथराया उसने कंगालोंको दिया उसका धर्म्म सदालों रहता है। (१०) जो बोनेहारेको बीज और भोजनके लिये रोटी देनेहारा है सो तुम्हें देवे और तुम्हारा बीज फलवन्त करे और तुम्हारे धर्म्म के फलोंको अधिक करे. (११) कि तुम हर बातमें सब प्रकारकी उदारताके लिये जो हमारे द्वारा ईश्वरका धन्यबाद करवाती है धनवान किये जावो। (१२) क्योंकि इस उपकारकी सेवकाई न केवल पवित्र लोगोंकी घटियोंको पूरी करती है परन्तु ईश्वर के बहुत धन्यबादोंके द्वारासे उभरती भी है। (१३) क्योंकि वे इस सेवकाईसे प्रमाण लेके तुम जो ख्रीष्टके सुसमाचारके अधीन होनेका अंगीकार करते हो उस अधीनताके लिये और उनको और सभोंकी सहायता करनेमें तुम्हारी उदारताके लिये ईश्वर का गुणानुबाद करते हैं। (१४) और ईश्वरका अत्यन्त अनुग्रह जो तुमपर है उसके कारण तुम्हारी लालसा करते हुए तुम्हारे लिये प्रार्थना करनेसे भी ईश्वरकी महिमा प्रगट करते हैं। (१५) ईश्वरका उसके अकथ्य दानके लिये धन्यबाद होवे।

[पावलका अपने अधिकारका वर्णन करना।]

१० मैं वही पावल जो तुम्हारे साम्ने तुम्होंमें दीन हूं परन्तु तुम्हारे पीछे तुम्हारी ओर साहस करता हूं तुमसे ख्रीष्टकी नम्रता और कोमलताके कारण बिन्ती करता हूं। (२) मैं यह बिन्ती करता हूं कि तुम्हारे साम्ने मुझे उस दृढ़तासे साहस करना न पड़े जिससे मैं कितनोंपर जो हमोंको शरीरके अनुसार

चलनेहारे समझते हैं साहस करनेका विचार करता हूं। (३) क्योंकि यद्यपि हम शरीरमें चलते फिरते हैं तौभी शरीरके अनुसार नहीं लड़ते हैं। (४) क्योंकि हमारे युद्धके हथियार शारीरिक नहीं परन्तु गढ़ोंको तोड़नेके लिये ईश्वरके कारण सामर्थी हैं। (५) हम तर्कोंको और हर एक ऊंची बातको जो ईश्वरके ज्ञानके बिरुद्ध उठती है खंडन करते हैं और हर एक भावनाको ख्रीष्टकी आज्ञाकारी करनेके लिये बन्दी कर लेते हैं. (६) और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञापालन पूरा हो जाय तब हर एक आज्ञालंघनका दंड देवें।

(७) क्या तुम जो कुछ सन्मुख है उसीको देखते हो. यदि कोई अपनेमें भरोसा रखता है कि वह ख्रीष्टका है तो आपही फिर यह समझे कि जैसा वह ख्रीष्टका है तैसे हम लोग भी ख्रीष्टके हैं। (८) क्योंकि जो मैं हमारे उस अधिकारके विषयमें जिसे प्रभुने तुम्हें नाश करनेके लिये नहीं परन्तु सुधारनेके लिये हमें दिया है कुछ अधिक करके भी बड़ाई करूं तो लज्जित न होंगा। (९) पर यह न होवे कि मैं ऐसा देख पड़ूं कि तुम्हें पत्रियोंसे डराता हूं। (१०) क्योंकि वह कहता है उसकी पत्रियां तो भारी औ प्रबल हैं परन्तु साक्षातमें उसका देह दुर्ब्बल और उसका बचन तुच्छ है। (११) ऐसा मनुष्य यह समझे कि हम लोग तुम्हारे पीछे पत्रियोंके द्वारा बचनमें जैसे हैं तुम्हारे साम्ने भी कर्म्ममें वैसेही होंगे।

(१२) क्योंकि हमें साहस नहीं है कि जो लोग अपनी प्रशंसा करते हैं उनमेंसे कितनोंके संग अपनेको गिनें अथवा अपनेको उनसे मिलाके देखें परन्तु वे अपनेको अपनेसे आप नापते हुए और अपनेको अपनेसे मिलाके देखते हुए ज्ञान प्राप्त नहीं करते हैं। (१३) हम तो परिमाणके बाहर बड़ाई नहीं करेंगे परन्तु जो परिमाणदण्ड ईश्वरने हमें बांट दिया है कि तुम्होंतक

भी पहुंचे उसके नापके अनुसार बड़ाई करेंगे । (१४) क्योंकि हम तुम्होंतक नहीं पहुंचते परन्तु अपनेको सिवानेके बाहर पसारते हैं ऐसा नहीं है क्योंकि ख्रीष्टका सुसमाचार प्रचार करनेमें हम तुम्होंतक भी पहुंच चुके हैं। (१५) और हम परिमाण के बाहर दूसरोंके परिश्रमके विषयमें बड़ाई नहीं करते हैं परन्तु हमें भरोसा है कि ज्यों ज्यों तुम्हारा बिश्वास बढ़ जाय त्यों त्यों हम अपने परिमाणके अनुसार तुम्हारे द्वारा अधिक अधिक बढ़ाये जायेंगे . (१६) कि हम तुम्हारे देशसे आगे बढ़के सुसमाचार प्रचार करें और यह नहीं कि हम दूसरोंके परिमाणके भीतर तैयार किई हुई बस्तुओंके विषयमें बड़ाई करें । (१७) पर जो बड़ाई करे सो प्रभुके विषयमें बड़ाई करे । (१८) क्योंकि जो अपनी प्रशंसा करता है सो नहीं परन्तु जिसकी प्रशंसा प्रभु करता है वही ग्रहण योग्य ठहरता है ।

[पावलके अपना बखान करनेका हेतु और झूठे प्रेरितोंका बर्णन ।]

११ मैं चाहता हूं कि तुम मेरी अज्ञानतामें थोड़ासा मेरी सह लेते . हां मेरी सह भी लेओ । (२) क्योंकि मैं ईश्वरके लिये तुम्हारे विषयमें धुन लगाये रहता हूं इसलिये कि मैंने एकही पुरुषसे तुम्हारी बात लगाई है जिस्तें तुम्हें पवित्र कुंवारीकी नाईं ख्रीष्टको सोंप देऊं । (३) परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांपने अपनी चतुराईसे हव्वाको ठगा तैसे तुम्हारे मन उस सीधाईसे जो ख्रीष्टकी ओर है कहीं भ्रष्ट न किये जायें । (४) यदि वह जो तुम्हारे पास आता है दूसरे यीशुको प्रचार करता है जिसे हमने प्रचार नहीं किया अथवा और आत्मा तुम्हें मिलता है जो तुम्हें नहीं मिला था अथवा और सुसमाचार जिसे तुमने ग्रहण नहीं किया था तो तुम भली रीतिसे सह लेते । (५) मैं तो समझता हूं कि मैं किसी बातमें उन अत्यन्त बड़े प्रेरितोंसे घट नहीं हूं । (६) यदि मैं बचनमें अनाड़ी

तौभी ज्ञानमें नहीं परन्तु हम हर बातमें सभोंके आगे तुमपर प्रगट किये गये ।

(७) मैं जो अपनेको नीचा करता था कि तुम ऊंचे किये जावो क्या इसमें मैंने पाप किया . क्योंकि मैंने सेंतमेंत ईश्वरका सुसमाचार तुम्हें सुनाया । (८) मैंने और मंडलियोंको लूट लिया कि तुम्हारी सेवाके लिये मैंने उनसे मजूरी लिई । (९) और जब मैं तुम्हारे संग था और मुझे घटी हुई तब मैंने किसीपर भार नहीं दिया क्योंकि भाइयोंने माकिदोनियासे आके मेरी घटीको पूरी किई और मैंने सर्व्वथा अपनेको तुमपर भार होनेसे बचा रखा और बचा रखूंगा । (१०) जो ख्रीष्टकी सच्चाई मुझमें है तो मेरे विषयमें यह बड़ाई आखाया देशमें नहीं बन्द किई जायगी । (११) किस कारण . क्या इसलिये कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता हूं . ईश्वर जानता है । (१२) पर मैं जो करता हूं सोई करूंगा कि जो लोग दांव ढूंढ़ते हैं उन्हें मैं दांव पाने न देऊं कि जिस बातमें वे घमंड करते हैं उसमें वे हमारेही समान ठहरें ।

(१३) क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित हैं छलका कार्य्य करनेहारे ख्रीष्टके प्रेरितोंका रूप धरनेहारे । (१४) और यह कुछ अचंभेकी बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिके दूतका रूप धरता है । (१५) सो यदि उसके सेवक भी धर्म्मके सेवकोंकासा रूप धरें तो कुछ बड़ी बात नहीं है . पर उनका अन्त उनके कर्म्मोंके अनुसार होगा ।

[पावलका अपने दुःखों और दुर्ब्बलतामें बड़ाई करना ।]

(१६) मैं फिर कहता हूं कोई मुझे मूर्ख न समझे और नहीं तो यदि मूर्ख जानके तौभी मुझे ग्रहण करो कि थोड़ासा मैं भी बड़ाई करूं । (१७) मैं जो बोलता हूं उसको प्रभुकी आज्ञा के अनुसार नहीं परन्तु इस निर्भय बड़ाई करनेमें जैसे मूर्खतासे

बोलता हूं । (१८) जब कि बहुत लोग शरीरके अनुसार बड़ाई करते हैं मैं भी बड़ाई करूंगा । (१९) तुम तो बुद्धिमान होके आनन्दसे मूर्खोंको सह लेते हो । (२०) क्योंकि यदि कोई तुम्हें दास बनाता है यदि कोई खा जाता है यदि कोई ले लेता है यदि कोई अपना बड़ापन करता है यदि कोई तुम्हारे मुंह पर थपेड़ा मारता है तो तुम सह लेते हो । (२१) इस अनादरकी रीतिपर मैं कहता हूं मानो कि हम दुर्ब्बल थे . परन्तु जिस बातमें कोई साहस करता है मैं मूर्खतासे कहता हूं मैं भी साहस करता हूं ।

(२२) क्या वे इब्री लोग हैं . मैं भी हूं . क्या वे इस्रायेली है . मैं भी हूं . क्या वे इब्राहीमके बंश हैं . मैं भी हूं । (२३) क्या वे ख्रीष्टके सेवक हैं . मैं बुद्धिहीनसा बोलता हूं उनसे बढ़कर मैं बहुत अधिक परिश्रम करनेसे औ अत्यन्त मार खानेसे औ बन्दीगृहमें बहुत अधिक पड़नेसे औ मृत्युलों बारंबार पहुंचनेसे ख्रीष्टका सेवक ठहरा । (२४) पांच बार मैंने यिहूदियोंके हाथसे उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाये । (२५) तीन बार मैंने बेत खाई एक बार पत्थरवाह किया गया तीन बार जहाज जिनपर मैं चढ़ा था टूट गये एक रात दिन मैंने समुद्रमें काटा । (२६) नदियोंको अनेक जोखिम डाकूओंको अनेक जोखिम अपने लोगोंसे अनेक जोखिम अन्यदेशियोंसे अनेक जोखिम नगरमें अनेक जोखिम जंगलमें अनेक जोखिम समुद्रमें अनेक जोखिम झूठे भाइयोंमें अनेक जोखिम इन सब जोखिमों सहित बार बार यात्रा करनेसे . (२७) और परिश्रम औ क्लेशसे बार बार जागते रहनेसे भूख औ प्याससे बार बार उपवास करनेसे जाड़े औ नंगाईसे मैं ख्रीष्टका सेवक ठहरा । (२८) और और बातोंको छोड़के यह भीड़ जो प्रतिदिन मुझपर पड़ती है अर्थात सब मंडलियोंकी चिन्ता । (२९) कौन दुर्ब्बल है और

मैं दुर्ब्बल नहीं हूं . कौन ठोकर खाता है और मैं नहीं जलता हूं। (३०) यदि बड़ाई करना अवश्य है तो मैं अपनी दुर्ब्बलताको बातोंपर बड़ाई करूंगा । (३१) हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका पिता ईश्वर जो सर्ब्बदा धन्य है जानता है कि मैं झूठ नहीं बोलता हूं । (३२) दमेसकमें अरिता राजाकी ओरसे जो अध्यक्ष था सो मुझे पकड़नेकी इच्छासे दमेसकियोंके नगरपर पहरा दिलाता था । (३३) और मैं खिड़की देके टोकरेमें भीतपरसे लटकाया गया और उसके हाथसे बच निकला ।

[पावलका स्वर्गलोकमें चढ़ा लिया जाना और पीछे संकट पाना ।]

१२ बड़ाई करना मेरे लिये अच्छा तो नहीं है . मैं प्रभुके दर्शनों और प्रकाशोंका बर्णन करूंगा । (२) मैं ख्रीष्टमें एक मनुष्यको जानता हूं कि चौदह बरस हुए क्या देह सहित मैं नहीं जानता हूं क्या देह रहित मैं नहीं जानता हूं ईश्वर जानता है ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्गलों उठा लिया गया । (३) मैं ऐसे मनुष्यको जानता हूं क्या देह सहित क्या देह रहित मैं नहीं जानता हूं ईश्वर जानता है . (४) कि स्वर्गलोकपर उठा लिया गया और अकथ्य बातें सुनीं जिनके बोलनेका सामर्थ्य मनुष्यको नहीं है । (५) ऐसे मनुष्यके विषय में मैं बड़ाई करूंगा परन्तु अपने विषयमें बड़ाई न करूंगा केवल अपनी दुर्ब्बलताओंपर । (६) क्योंकि यदि मैं बड़ाई करनेकी इच्छा करूंगा तो मूर्ख न होंगा क्योंकि सत्य बोलूंगा परन्तु मैं रुक जाता हूं ऐसा न हो कि कोई जो कुछ वह देखता है कि मैं हूं अथवा मुझसे सुनता है उससे मुझको कुछ बड़ा समझे । (७) और जिस्तें मैं प्रकाशोंकी अधिकाईसे अभिमानी न हो जाऊं इसलिये शरीरमें एक कांटा मानो मुझे घूसे मारनेको शैतानका एक दूत मुझे दिया गया कि मैं अभिमानी न हो जाऊं । (८) इस बातपर मैंने प्रभुसे तीन

बार बिन्ती किई कि मुझसे यह दूर किया जाय । (९) और उसने मुझसे कहा मेरा अनुग्रह तेरे लिये बस है क्योंकि मेरा सामर्थ्य दुर्ब्बलतामें सिद्ध होता है . सो मैं अति आनन्दसे अपनी दुर्ब्बलताओंहीके विषयमें बड़ाई करूंगा कि ख्रीष्टका सामर्थ्य मुझपर आ बसे । (१०) इस कारण मैं ख्रीष्टके लिये दुर्ब्बलताओंसे औ निन्दाओंसे औ दरिद्रतासे औ उपद्रवोंसे औ संकटोंसे प्रसन्न हूं क्योंकि जब मैं दुर्ब्बल हूं तब बलवन्त हूं ।

[करिन्थियोंको फिर समझाना ।]

(११) मैं बड़ाई करनेमें मूर्ख बना हूं तुमने मुझसे ऐसा करवाया है . उचित था कि मेरी प्रशंसा तुम्हींसे किई जाती क्योंकि यद्यपि मैं कुछ नहीं हूं तौभी उन अत्यन्त बड़े प्रेरितों से किसी बातमें घट नहीं था । (१२) प्रेरितके लक्षण तुम्हारे बीचमें सब प्रकारके धीरज सहित चिन्हों औ अद्भुत कामों औ आश्चर्य्य कर्म्मोंसे दिखाये गये । (१३) कौनसी बात थी जिसमें तुम और और मंडलियोंसे घट थे केवल यह कि मैंने आपही तुमपर भार नहीं दिया . मेरी यह अनीति क्षमा कीजियो । (१४) देखो मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आनेको तैयार हूं और मैं तुमपर भार न दूंगा क्योंकि मैं तुम्हारी सम्पत्तिको नहीं पर तुमहीको चाहता हूं क्योंकि उचित नहीं है कि लड़के माता पिताके लिये पर माता पिता लड़कोंके लिये संचय करें । (१५) परन्तु यद्यपि मैं जितना तुम्हें अधिक प्यार करता हूं उतना थोड़ा प्यारा हूं तौभी मैं अति आनन्द से तुम्हारे प्राणोंके लिये खर्च करूंगा और खर्च किया जाऊंगा ।

(१६) सो ऐसा होय मैंने तुमपर बोझ नहीं डाला . तौभी [कहते हैं कि] मैंने चतुर होके तुम्हें छलसे पकड़ा । (१७) क्या जिन्हें मैंने तुम्हारे पास भेजा उनमेंसे किसीके द्वारा मैंने लोभ कर कुछ तुमसे लिया

(१८) मैंने तीतससे बिन्ती किई और भाईको उसके संग भेजा. क्या तीतसने लोभ कर कुछ तुमसे लिया . क्या हम एकही बातोंसे न चले . क्या एकही लीकपर न चले ।

[उपदेश और नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति ।]

(१९) फिर क्या तुम समझते हो कि हम तुम्हारे साम्ने अपना उत्तर देते हैं . हम तो ईश्वरके साम्ने ख्रीष्टमें बोलते हैं पर हे प्यारो सब बातें तुम्हारे सुधारनेके लिये बोलते हैं। (२०) क्योंकि मैं डरता हूं ऐसा न हो कि क्या जानें मैं आके तुम्हें न ऐसे पाऊं जैसे मैं चाहता हूं और मैं तुमसे ऐसा पाया जाऊं जैसा तुम नहीं चाहते हो . कि क्या जानें नाना भांतिके बैर डाह क्रोध बिवाद दुर्बचन फुसफुसाहट अभिमान और बखेड़े होवें। (२१) और मेरा ईश्वर कहीं मुझे फिर आनेपर तुम्हारे यहां हेठा करे और मैं उन्होंमेंसे बहुतोंके लिये शोक करूं जिन्होंने आगे पाप किया था और उस अशुद्ध कर्म्म और ब्यभिचार और लुचपनसे जो उन्होंने किये थे पश्चात्ताप नहीं किया है।

१३ यह तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आता हूं . दो और तीन साक्षियोंके मुंहसे हर एक बात ठहराई जायगी। (२) मैं पहिले कह चुका और जैसा तुम्हारे साम्ने दूसरी बेर आगेसे कहता हूं और तुम्हारी पीठके पीछे उन लोगोंके पास जिन्होंने आगे पाप किया था और और सब लोगोंके पास अब लिखता हूं कि जो मैं फिर तुम्हारे पास आऊं तो नहीं छोड़ूंगा। (३) तुम तो ख्रीष्टके मुझमें बोलनेका प्रमाण ढूंढ़ते हो जो तुम्हारी ओर दुर्ब्बल नहीं है परन्तु तुम्होंमें सामर्थी है। (४) क्योंकि यद्यपि वह दुर्ब्बलतासे क्रूशपर घात किया गया तौभी ईश्वरके सामर्थ्यसे जीता है . हम भी उसमें दुर्ब्बल हैं परन्तु तुम्हारी ओर ईश्वरके सामर्थ्यसे उसके संग जीयेंगे।

(५) अपनेको परखो कि बिश्वासमें हो कि नहीं अपनेको जांचो. अथवा क्या तुम अपनेको नहीं पहचानते हो कि यीशु ख्रीष्ट तुम्होंमें है नहीं तो तुम निकृष्ट हो। (६) पर मेरा भरोसा है कि तुम जानोगे कि हम निकृष्ट नहीं हैं। (७) परन्तु मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि तुम कोई कुकर्म्म न करो इसलिये नहीं कि हम खरे देख पड़ें परन्तु इसलिये कि तुम सुकर्म्म करो. हम बरन निकृष्टके ऐसे होवें तो होवें। (८) क्योंकि हम सत्यके विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते हैं परन्तु सत्यके निमित्त। (९) जब हम दुर्व्वल हैं पर तुम बलवन्त हो तब हम आनन्द करते हैं और हम इस बातकी प्रार्थना भी करते हैं अर्थात तुम्हारे सिद्ध होनेकी। (१०) इस कारण मैं तुम्हारे पीछे यह बातें लिखता हूं कि तुम्हारे साम्ने मुझे उस अधिकारके अनुसार जिसे प्रभुने नाश करनेके लिये नहीं परन्तु सुधारनेके लिये मुझे दिया है कड़ाईसे कुछ करना न पड़े।

(११) अन्तमें हे भाइयो यह कहता हूं कि आनन्दित रहो सुधर जाओ शांत होओ एकही मन रखो मिले रहो और प्रेम औ शांतिका ईश्वर तुम्हारे संग होगा। (१२) एक दूसरे को पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो। (१३) सब पवित्र लोगों का तुमसे नमस्कार। (१४) प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह और ईश्वरका प्रेम और पवित्र आत्माकी संगति तुम सभोंके साथ रहे। आमीन॥

गलातियोंको पावल प्रेरितकी पत्री।

[पत्रीका आभाष।]

१ पावल जो न मनुष्योंकी ओरसे और न मनुष्यके द्वारा से परन्तु यीशु ख्रीष्टके द्वारासे और ईश्वर पिताके द्वारासे जिसने उसको मृतकोंमेंसे उठाया प्रेरित है. (२) और सब भाई लोग जो मेरे संग हैं गलातियाकी मंडलियोंको. (३) तुम्हें अनुग्रह और शांति ईश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट से मिले. (४) जिसने अपनेको हमारे पापोंके लिये दिया कि हमें इस बर्त्तमान बुरे संसारसे बचावे हमारे पिता ईश्वरकी इच्छा के अनुसार. (५) जिसका गुणानुबाद सदा सर्ब्बदा होवे. आमीन।

[गलातियोंके सत्य मतसे फिर जानेका उलहना। पावलका यह बताना कि मैंने सुसमाचार मनुष्यसे नहीं परन्तु ईश्वरसे पाया।]

(६) मैं अचंभा करता हूं कि जिसने तुम्हें ख्रीष्टके अनुग्रह के द्वारा बुलाया उससे तुम ऐसे शीघ्र औरही सुसमाचारकी ओर फिरे जाते हो। (७) और वह तो दूसरा सुसमाचार नहीं है पर केवल कितने लोग हैं जो तुम्हें व्याकुल करते हैं और ख्रीष्टके सुसमाचारको बदल डालने चाहते हैं। (८) परन्तु यदि हम भी अथवा स्वर्गसे एक दूत भी उस सुसमाचारसे भिन्न जो हमने तुमको सुनाया दूसरा सुसमाचार तुम्हें सुनावे तो स्रापित होवे। (९) जैसा हमने पहिले कहा है तैसा मैं अब भी फिर कहता हूं कि जिसको तुमने ग्रहण किया उससे भिन्न यदि कोई तुम्हें दूसरा सुसमाचार सुनाता है तो स्रापित होवे। (१०) क्योंकि मैं अब क्या मनुष्योंको अथवा ईश्वरको मनाता हूं. अथवा क्या मैं मनुष्योंको प्रसन्न करने चाहता हूं. जो मैं अब भी मनुष्योंको प्रसन्न करता तो ख्रीष्टका दास न होता।

(११) हे भाइयो मैं उस सुसमाचारके विषयमें जो मैंने प्रचार किया तुम्हें जनाता हूं कि वह मनुष्यके मतके अनुसार नहीं है। (१२) क्योंकि मैंने भी उसको मनुष्यकी ओरसे नहीं पाया और न मैं सिखाया गया परन्तु यीशु ख्रीष्टके प्रकाश करनेके द्वारासे पाया।

(१३) क्योंकि यिहूदीय मतमें मेरी जैसी चाल चलन आगे थी सो तुमने सुनी है कि मैं ईश्वरकी मंडलीको अत्यन्त सताता था और उसे नाश करता था. (१४) और अपने देशके बहुत लोगोंसे जो मेरी वयसके थे यिहूदीय मतमें अधिक बढ़ गया कि मैं अपने पुर्खोंके व्यवहारोंके विषयमें बहुत अधिक धुन लगाये था। (१५) परन्तु ईश्वरकी जिसने मुझे मेरी माताके गर्भहीसे अलग किया और अपने अनुग्रहसे बुलाया जब इच्छा हुई. (१६) कि मुझमें अपने पुत्रको प्रगट करे जिस्तें मैं अन्य-देशियोंमें उसका सुसमाचार प्रचार करूं तब तुरन्त मैंने मांस औ लोहूके संग परामर्श न किया. (१७) और न यिरूशलीमको उनके पास गया जो मेरे आगे प्रेरित थे परन्तु अरब देशको चला गया और फिर दमेसकको लौटा। (१८) तब तीन बरसके पीछे मैं पितरसे भेंट करनेको यिरूशलीम गया और उसके यहां पन्द्रह दिन रहा। (१९) परन्तु प्रेरितोंमेंसे मैंने और किसीको नहीं देखा केवल प्रभुके भाई याकूबको। (२०) मैं तुम्हारे पास जो बातें लिखता हूं देखो ईश्वरके साम्ने मैं कहता हूं कि मैं झूठ नहीं बोलता हूं। (२१) तिसके पीछे मैं सुरिया और किलिकिया देशोंमें गया। (२२) पर यिहूदियाकी मंडलियोंको जो ख्रीष्टमें थीं मेरे रूपका परिचय नहीं हुआ था। (२३) वे केवल सुनते थे कि जो हमें आगे सताता था सो जिस बिश्वास को आगे नाश करता था उसीका अब सुसमाचार प्रचार करता है। (२४) और मेरे विषयमें उन्होंने ईश्वरका गुणानुवाद किया।

२ तब चौदह बरसके पीछे मैं बर्णबाके साथ फिर यिरूशलीमको गया और तीतसको भी अपने संग ले गया। (२) मैं प्रकाशके अनुसार गया और जो सुसमाचार मैं अन्यदेशियों में प्रचार करता हूं उसको मैंने उन्हें सुनाया पर जो बड़े समझे जाते थे उन्हें एकान्तमें सुनाया जिस्तें न हो कि मैं किसी रीतिसे बृथा दौड़ता हूं अथवा दौड़ा था। (३) परन्तु तीतस भी जो मेरे संग था यद्यपि यूनानी था तौभी उसके खतना किये जानेकी आज्ञा न दिई गई। (४) और यह उन झूठे भाइयोंके कारण हुआ जो चोरी से भीतर ले लिये गये थे और हमें बंधमें डालनेके लिये हमारी निर्बंधताको जो ख्रीष्ट यीशुमें हमें मिली है देख लेनेको छिपके घुस आये थे। (५) उनके बशमें हम एक घड़ी भी अधीन नहीं रहे इसलिये कि सुसमाचारकी सच्चाई तुम्हारे पास बनी रहे। (६) फिर जो लोग कुछ बड़ समझे जाते थे वे जैसे थे तैसे थे मुझे कुछ काम नहीं ईश्वर किसी मनुष्यका पक्षपात नहीं करता है उनसे मैंने कुछ नहीं पाया क्योंकि जो लोग बड़े समझे जाते थे उन्होंने मुझे कुछ नहीं बताया। (७) परन्तु इसके बिरुद्ध जब याकूब और कैफा और योहनने जो खंभे समझे जाते थे देखा कि जैसा खतना किये हुओंके लिये सुसमाचार पितरको सौंपा गया तैसा खतनाहीनोंके लिये मुझे सौंपा गया. (८) क्योंकि जिसने पितरसे खतना किये हुओंमेंको प्रेरिताईका कार्य्य करवाया तिसने मुझसे भी अन्यदेशियोंमें कार्य्य करवाया. (९) और जब उन्होंने उस अनुग्रहको जो मुझे दिया गया था जान लिया तब उन्होंने मुझको और बर्णबाको संगतिके दहिने हाथ दिये इस कारण कि हम अन्यदेशियोंके पास और वें आप खतना किये हुओंके पास जावें। (१०) केवल यह चाहा कि हम कंगालोंकी सुध लेवें और यही काम करनेमें मैंने तो यत्न भी किया।

(११) परन्तु जब पितर अन्तैखियामें आया तब मैंने साक्षात उस का साम्ना किया इसलिये कि दोषी ठहराया गया था। (१२) क्योंकि कितने लोगोंके याकूबके पाससे आनेके पहिले वह अन्यदेशियोंके साथ खाता था परन्तु जब वे आये तब खतना किये हुए लोगोंके डरके मारे हटके अपनेको अलग रखता था। (१३) और उसके संग दूसरे यिहूदियोंने भी कपट किया यहांलों कि बर्णबा भी उनके कपटसे बहकाया गया। (१४) परन्तु जब मैंने देखा कि वे सुसमाचारकी सच्चाईपर सीधे नहीं चलते हैं तब मैंने सभोंके साम्ने पितरसे कहा कि जो तू यिहूदी होके अन्यदेशियोंकी रीतिपर चलता है और यिहूदीय मतपर नहीं तो तू अन्यदेशियोंको यिहूदीय मतपर क्यों चलाता है। (१५) हम जो जन्मके यिहूदी हैं और अन्यदेशियोंमेंके पापी लोग नहीं . (१६) यह जानके कि मनुष्य व्यवस्थाके कर्म्मांसे नहीं पर केवल यीशु ख्रीष्टके विश्वासके द्वारासे धर्म्मी ठहराया जाता है हमने भी ख्रीष्ट यीशुपर विश्वास किया कि हम व्यवस्थाके कर्म्मांसे नहीं पर ख्रीष्टके विश्वाससे धर्म्मी ठहरें इस कारण कि व्यवस्थाके कर्म्मांसे कोई प्राणी धर्म्मी नहीं ठहराया जायगा। (१७) परन्तु यदि ख्रीष्टमें धर्म्मी ठहराये जानेका यत्न करनेसे हम आप भी पापी ठहरे तो क्या ख्रीष्ट पापका सेवक है . ऐसा न हो। (१८) क्योंकि जो बस्तु मैंने गिराई थी यदि उसीको फिर बनाता हूं तो अपनेपर प्रमाण देता हूं कि अपराधी हूं। (१९) मैं तो व्यवस्थाके द्वारासे व्यवस्थाके लिये मरा कि ईश्वरके लिये जीऊं। (२०) मैं ख्रीष्टके संग क्रूशपर चढ़ाया गया हूं तौभी जीता हूं . अब तो मैं आप नहीं पर ख्रीष्ट मुझमें जीता है और मैं शरीरमें अब जो जीता हूं सो ईश्वरके पुत्रके विश्वासमें जीता हूं जिसने मुझे प्यार किया और मेरे लिये अपनेको सोंप दिया। (२१) मैं ईश्वरके

अनुग्रहको व्यर्थ नहीं करता हूं क्योंकि यदि व्यवस्थाके द्वारासे धर्म्म होता है तो ख्रीष्ट अकारण मूआ।

[इस बातका प्रमाण कि व्यवस्थाके द्वारासे त्राण हो नहीं सकता व्यवस्थाका अभिप्राय ख्रीष्टलों पहुंचाना है।]

३ हे निर्बुद्धि गलातियो किसने तुम्हें मोह लिया है कि तुम लोग सत्यको न मानो जिनके आगे यीशु ख्रीष्ट क्रूशपर चढ़ाया हुआ साक्षात तुम्हारे बीचमें प्रगट किया गया। (२) मैं तुमसे केवल यही सुनने चाहता हूं कि तुमने आत्माको क्या व्यवस्थाके कर्म्मोंके हेतुसे अथवा बिश्वासके समाचारके हेतुसे पाया। (३) क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो. क्या आत्मासे आरंभ करके तुम अब शरीरसे सिद्ध किये जाते हो। (४) क्या तुमने इतना दुःख बृथा उठाया. जो ऐसा ठहरे कि बृथाही उठाया।

(५) जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम्होंमे आश्चर्य्य कर्म्म करवाता है सो क्या व्यवस्थाके कर्म्मोंके हेतुसे अथवा बिश्वासके समाचारके हेतुसे ऐसा करता है। (६) जैसे इब्राहीमने ईश्वरका बिश्वास किया और यह उसके लिये धर्म्म गिना गया। (७) सो यह जानो कि जो बिश्वासके अवलम्बी हैं सोई इब्राहीमके सन्तान हैं। (८) फिर ईश्वर जो बिश्वाससे अन्यदेशियोंको धर्म्मी ठहराता है यह बात आगेसे देखके धर्म्मपुस्तकने इब्राहीमको आगेसे सुसमाचार सुनाया कि तुझमें सब देशोंके लोग आशीस पावेंगे। (९) सो वे जो बिश्वासके अवलम्बी हैं बिश्वासी इब्राहीमके संग आशीस पाते हैं।

(१०) क्योंकि जितने लोग व्यवस्थाके कर्म्मोंके अवलम्बी हैं वे सब स्रापबश हैं क्योंकि लिखा है हर एक जन जो व्यवस्थाके पुस्तकमें लिखी हुई सब बातें पालन करनेको उनमें बना नहीं रहता है स्रापित है। (११) परन्तु व्यवस्थाके द्वारासे

ईश्वरके यहां कोई नहीं धर्म्मी ठहरता है यह बात प्रगट है क्योंकि बिश्वाससे धर्म्मी जन जीयेगा। (१२) पर ब्यवस्था बिश्वास संबन्धी नहीं है परन्तु जो मनुष्य यह बातें पालन करे सो उनसे जीयेगा। (१३) ख्रीष्टने दाम देके हमें ब्यवस्थाके स्रापसे छुड़ाया कि वह हमारे लिये स्रापित बना क्योंकि लिखा है हर एक जन जो काठपर लटकाया जाता है स्रापित है। (१४) यह इसलिये हुआ कि इब्राहीमको आशीस ख्रीष्ट यीशुमें अन्यदेशियोंपर पहुंचे और कि जो कुछ आत्माके विषयमें प्रतिज्ञा किया गया सो बिश्वासके द्वारासे हमें मिले।

(१५) हे भाइयो मैं मनुष्यको रीतिपर कहता हूं कि मनुष्यके नियमको भी जो दृढ़ किया गया है कोई टाल नहीं देता है और न उसमें मिला देता है। (१६) फिर प्रतिज्ञाएं इब्राहीमको और उसके बंशको दिई गईं. वह नहीं कहता है बंशोंको जैसे बहुतोंके विषयमें परन्तु जैसे एकके विषयमें और तेरे बंशको. सोई ख्रीष्ट है। (१७) पर मैं यह कहता हूं कि जो नियम ईश्वरने ख्रीष्टके लिये आगेसे दृढ़ किया था उसको व्यवस्था जो चार सौ तीस बरस पीछे हुई नहीं उठा देती है ऐसा कि प्रतिज्ञाको ब्यर्थ कर दे। (१८) क्योंकि यदि अधिकार ब्यवस्थासे होता है तो फिर प्रतिज्ञासे नहीं है. परन्तु ईश्वरने उसे इब्राहीमको प्रतिज्ञाके द्वारासे दिया है।

(१९) तो ब्यवस्था क्या करती है. जबलों वह बंश जिसको प्रतिज्ञा दिई गई थी न आया तबलों अपराधोंके कारण वह भी दिई गई और वह दूतोंके द्वारा मध्यस्थके हाथमें निरूपण किई गई। (२०) मध्यस्थ एकका नहीं होता है परन्तु ईश्वर एक है। (२१) तो क्या ब्यवस्था ईश्वरकी प्रतिज्ञाओंके बिरुद्ध है. ऐसा न हो क्योंकि यदि ऐसी ब्यवस्था दिई जाती कि जिलाने सकती तो निश्चय करके धर्म्म ब्यवस्थासे होता।

(२२) परन्तु धर्म्मपुस्तकने सभोंको पाप तले बन्द कर रखा इसलिये कि यीशु ख्रीष्टके बिश्वासका फल जिसकी प्रतिज्ञा किई गई बिश्वास करनेहारोंको दिया जावे । (२३) परन्तु विश्वासके आनेके पहिले हम बिश्वासके लिये जो प्रगट होनेपर था ब्यवस्थाके पहरेमें बन्द किये हुए रहते थे । (२४) सो ब्यवस्था हमारी शिक्षक हुई है कि ख्रीष्टलों पहुंचावे जिस्तें हम बिश्वाससे धर्म्मी ठहराये जावें ।

(२५) परन्तु बिश्वास जो आ चुका है तो अब हम शिक्षकके बशमें नहीं हैं । (२६) क्योंकि ख्रीष्ट यीशुपर बिश्वास करनेके द्वारासे तुम सब ईश्वरके सन्तान हो । (२७) क्योंकि जितनोंने ख्रीष्टमें बपतिसमा लिया उन्होंने ख्रीष्टको पहिन लिया । (२८) उसमें न यिहूदी न यूनानी है उसमें न दास न निर्बन्ध है उसमें नर औ नारी नहीं है क्योंकि तुम सब ख्रीष्ट यीशुमें एक हो । (२९) पर जो तुम ख्रीष्टके हो तो इब्राहीमके बंश और प्रतिज्ञाके अनुसार अधिकारी हो ।

[प्रभु यीशु ख्रीष्टका बिश्वासियोंको ब्यवस्थाके बशसे छुड़ाना ।]

४ पर मैं कहता हूं कि अधिकारी जबलों बालक है तबलों यद्यपि सब बस्तुओंका स्वामी है तौभी दाससे कुछ भिन्न नहीं है । (२) परन्तु पिताके ठहराये हुए समयलों रक्षकों और भंडारियोंके बशमें है । (३) वैसेही हम भी जब बालक थे तब संसारकी आदिशिक्षाके बशमें दास बने हुए थे । (४) परन्तु जब समयकी पूर्णता पहुंची तब ईश्वरने अपने पुत्रको भेजा जो स्त्रीसे जन्मा और ब्यवस्थाके बशमें उत्पन्न हुआ । (५) इसलिये कि दाम देके उन्हें जो ब्यवस्थाके बशमें हैं छुड़ावे जिस्तें लेपालकोंका पद हमें मिले । (६) और तुम जो पुत्र हो इस कारण ईश्वरने अपने पुत्रके आत्माको जो हे अब्बा अर्थात हे पिता पुकारता है तुम्हारे हृदयमें भेजा है ।

(७) सो तू अब दास नहीं परन्तु पुत्र है और यदि पुत्र है तो ख्रीष्टके द्वारासे ईश्वरका अधिकारी भी है ।

(८) भला तब तो तुम ईश्वरको न जानके उन्होंके दास थे जो स्वभावसे ईश्वर नहीं हैं . (९) परन्तु अब तुम ईश्वरको जानके पर और भी ईश्वरसे जाने जाके क्योंकर फिर उस दुर्ब्बल और फलहीन आदिशिक्षाकी ओर मुंह फेरते हो जिसके तुम फिर नये सिरसे दास हुआ चाहते हो । (१०) तुम दिनों और मासों औ समयों औ बरसोंको मानते हो । (११) मैं तुम्हारे विषयमें डरता हूं कि क्या जानें मैंने बृथा तुम्हारे लिये परिश्रम किया है । (१२) हे भाइयो मैं तुमसे बिन्ती करता हूं तुम मेरे समान हो जाओ क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूं . तुमसे मेरी कुछ हानि नहीं हुई । (१३) पर तुम जानते हो कि पहिले मैंने शरीरकी दुर्ब्बलताके कारण तुम्हें सुसमाचार सुनाया । (१४) और मेरी परीक्षाको जो मेरे शरीरमें थी तुमने तुच्छ नहीं जाना न घिन्न किया परन्तु जैसे ईश्वरके दूतको जैसे ख्रीष्ट यीशुको तैसेही मुझको ग्रहण किया । (१५) तो वह तुम्हारी धन्यता कैसी थी . क्योंकि मैं तुम्हारा साक्षी हूं कि जो हो सकता तो तुम अपनी अपनी आंखें निकालके मुझको देते । (१६) सो क्या तुमसे सत्य बोलनेसे मैं तुम्हारा बैरी हुआ हूं । (१७) वे भली रीतिसे तुम्हारे अभिलाषी नहीं होते हैं परन्तु तुम्हें निकलवाया चाहते हैं जिस्तें तुम उनके अभिलाषी होओ । (१८) पर अच्छा है कि भली बातमें तुम्हारी अभिलाषा जिस समय मैं तुम्हारे संग रहूं केवल उसी समय किई जाय सो नहीं परन्तु सदा किई जाय । (१९) हे मेरे बालको जिनके लिये जबलों तुम्होंमें ख्रीष्टका रूप न बन जाय तबलों मैं फिर प्रसवकीसी पीड़ उठाता हूं . (२०) मैं चाहता कि अब तुम्हारे संग होता और अपनी बोली बदलता क्योंकि तुम्हारे विषयमें मुझे संदेह होता है ।

[इब्राहीमके दो पुत्रोंके वृत्तान्तसे व्यवस्थाका और सुसमाचारका दृष्टान्त ।]

(२१) तुम जो व्यवस्थाके वशमें हुआ चाहते हो मुझसे कहो क्या तुम व्यवस्थाको नहीं सुनते हो । (२२) क्योंकि लिखा है कि इब्राहीमके दो पुत्र हुए एक तो दासीसे और एक तो निर्बन्ध स्त्रीसे । (२३) परन्तु जो दासीसे हुआ सो शरीरके अनुसार जन्मा पर जो निर्बन्ध स्त्रीसे हुआ सो प्रतिज्ञाके द्वारासे जन्मा । (२४) यह बातें दृष्टान्तके लिये कही जाती हैं क्योंकि यह स्त्रियां दो नियम हैं एक तो सीनई पर्ब्बतसे जो दास होनेके लिये लड़के जनता है सोई हाजिरा है । (२५) क्योंकि हाजिराका अर्थ अरबमें सीनई पर्ब्बत है और वह यिरूशलीमके तुल्य जो अब है गिनी जाती है और अपने बालकों समेत दासी होती है । (२६) परन्तु ऊपरकी यिरूशलीम निर्बन्ध है और वह हम सभोंकी माता है । (२७) क्योंकि लिखा है हे बांझ जो नहीं जनती है आनन्दित हो तू जो प्रसवकी पीड़ नहीं उठाती है ऊंचे शब्दसे पुकार क्योंकि जिस स्त्रीको स्वामी है उसके लड़कोंसे अनाथके लड़के और भी बहुत हैं । (२८) पर हे भाइयो हम लोग इसहाककी रीतिपर प्रतिज्ञाके सन्तान हैं । (२९) परन्तु जैसा उस समयमें जो शरीरके अनुसार जन्मा सो उसको जो आत्माके अनुसार जन्मा सताता था वैसाही अब भी होता है । (३०) परन्तु धर्म्मपुस्तक क्या कहता है : दासीको और उसके पुत्रको निकाल दे क्योंकि दासीका पुत्र निर्बन्ध स्त्रीके पुत्रके संग अधिकारी न होगा । (३१) सो हे भाइयो हम दासीके नहीं परन्तु निर्बन्ध स्त्रीके सन्तान हैं ।

[उस निर्बन्धतामें दृढ़ रहनेका उपदेश जिस करके ख्रीष्टने हमें निर्बन्ध किया ।]

५ सो उस निर्बन्धता में जिस करके ख्रीष्टने हमें निर्बन्ध किया है दृढ़ रहो और दासत्वके जूएमें फिर मत जोते जाओ । (२) देखो मैं पावल तुमसे कहता हूं कि जो तुम्हारा

खतना किया जाय तो ख्रीष्टसे तुम्हें कुछ लाभ न होगा । (३) फिर भी मैं साक्षी दे हर एक मनुष्यसे जिसका खतना किया जाता है कहता हूं कि सारी व्यवस्थाको पूरी करना उसको अवश्य है। (४) तुममेंसे जो जो व्यवस्थाके अनुसार धर्म्मी ठहराये जाते हो सो ख्रीष्टसे भ्रष्ट हुए हो . तुम अनुग्रहसे पतित हुए हो। (५) क्योंकि पवित्र आत्मासे हम लोग बिश्वाससे धर्म्मकी आशाकी बाट जोहते हैं । (६) क्योंकि ख्रीष्ट यीशुमें न खतना न खतनाहीन होना कुछ काम आता है परन्तु बिश्वास जो प्रेमके द्वारासे कार्य्यकारी होता है ।

(७) तुम भली रीतिसे दौड़ते थे . किसने तुम्हें रोका कि सत्यको न मानो । (८) यह मनावना तुम्हारे बुलानेहारेकी ओरसे नहीं है । (९) थोड़ासा खमीर सारे पिंडको खमीर कर डालता है । (१०) मैं प्रभुपर तुम्हारे विषयमें भरोसा रखता हूं कि तुम्हारी कोई दूसरी मति न होगी पर जो तुम्हें व्याकुल करता हैं कोई हो वह इसका दंड भोगेगा। (११) पर हे भाइयो जो मैं अब भी खतनेका उपदेश करता हूं तो क्यों फिर सताया जाता हूं . तब क्रूशकी ठोकर तो जाती रही । (१२) मैं चाहता हूं कि जो तुम्हें गड़बड़ाते हैं सो अपनेहीको काट डालते ।

[शरीरके कर्म्म और आत्माका फल ।]

(१३) क्योंकि हे भाइयो तुम लोग निर्बन्ध होनेको बुलाये गये केवल इस निर्बन्धतासे शरीरके लिये गों मत पकड़ो परन्तु प्रेमसे एक दूसरेके दास बनो । (१४) क्योंकि सारी व्यवस्था एकही बातमें पूरी होती है अर्थात इसमें कि तू अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर। (१५) परन्तु जो तुम एक दूसरेको दांतसे काटो औ खा जाओ तो चौकस रहो कि एक दूसरेसे नाश न किये जावो । (१६) पर मैं कहता हूं आत्माके अनुसार चलो तो तुम शरीरकी लालसा किसी

रीतिसे पूरी न करोगे। (१७) क्योंकि शरीरकी लालसा आत्माके बिरुद्ध और आत्माकी शरीरके बिरुद्ध होती है और ये दोनों परस्पर बिरोध करते हैं इसलिये कि तुम जो करने चाहो उसे करने न पावो। (१८) परन्तु जो तुम आत्माके चलाये चलते हो तो व्यवस्थाके बशमें नहीं हो। (१९) शरीरके कर्म्म प्रगट हैं सो ये हैं परस्त्रीगमन ब्यभिचार अशुद्धता लुचपन. (२०) मूर्त्तिपूजा टोना औ नाना भांतिके शत्रुता बैर ईर्षा क्रोध बिबाद बिरोध कुपन्थ. (२१) डाह नरहिंसा मतवालपन औ लीला क्रीड़ा और इनके ऐसे और और कर्म्म. इनके विषयमें मैं तुमको आगेसे कहता हूं जैसा मैंने आगे भी कहा था कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे ईश्वरके राज्यके अधिकारी न होंगे। (२२) परन्तु आत्माका फल यह है प्रेम आनन्द मिलाप धीरज कृपा भलाई बिश्वास नम्रता औ संयम. (२३) कोई व्यवस्था ऐसे ऐसे कामोंके बिरुद्ध नहीं है। (२४) जो ख्रीष्टके लोग हैं उन्होंने शरीरको उसके रागों और अभिलाषों समेत क्रूशपर चढ़ाया है। (२५) जो हम आत्माके अनुसार जीते हैं तो आत्माके अनुसार चलें भी। (२६) हम घमंडी न हो जावें जो एक दूसरेको छेड़ें और एक दूसरेसे डाह करें।

[आत्मिक चाल चलनेका उपदेश चितावनी और आशीर्व्वाद सहित पत्रीकी समाप्ति।]

६ हे भाइयो यदि मनुष्य किसी अपराधमें पकड़ा भी जावे तौभी तुम जो आत्मिक हो नम्रता संयुक्त आत्मासे ऐसे मनुष्यको सुधारो और तू अपनेको देख रख कि तू भी परीक्षामें न पड़े। (२) एक दूसरेके भार उठाओ और इस रीतिसे ख्रीष्टकी व्यवस्थाको पूरी करो। (३) क्योंकि यदि कोई जो कुछ नहीं है समझता है कि मैं कुछ हूं तो अपनेको धोखा देता है। (४) परन्तु हर एक जन अपने कामको जांचे और तब दूसरेके विषयमें नहीं पर केवल अपने विषयमें उसको बड़ाई करनेकी जगह होगी।

(५) क्योंकि हर एक जन अपनाही बोझ उठावेगा । (६) जो वचनकी शिक्षा पाता है सो समस्त अच्छी बस्तुओंमें सिखाने-हारेकी सहायता करे । (७) धोखा मत खाओ ईश्वरसे ठट्ठा नहीं किया जाता है क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है उसको लवेगा भी । (८) क्योंकि जो अपने शरीरके लिये बोता है सो शरीरसे बिनाश लवेगा परन्तु जो आत्माके लिये बोता है सो आत्मासे अनन्त जीवन लवेगा । (९) पर सुकर्म्म करनेमें हम कातर न होवें क्योंकि जो हमारा बल न घटे तो ठीक समय मे लवेंगे । (१०) इसलिये जैसा हमें अवसर मिलता है हम सब लोगोंसे पर निज करके बिश्वासके घरानेसे भलाई करें ।

(११) देखो मैंने कैसी बड़ी पत्री तुम्हारे पास अपने हाथसे लिखी है । (१२) जितने लोग शरीरमें अच्छा रूप दिखाने चाहते हैं वेही तुम्हारे खतना किये जानेकी दृढ़ आज्ञा देते हैं केवल इसीलिये कि वे ख्रीष्टके क्रूशके कारण सताये न जावें । (१३) क्योंकि वे भी जिनका खतना किया जाता है आप ब्यवस्थाको पालन नहीं करते हैं परन्तु तुम्हारे खतना किये जानेकी इच्छा इसलिये करते हैं कि तुम्हारे शरीरके विषयमें बड़ाई करें । (१४) पर मुझसे ऐसा न होवे कि किसी और बातके विषयमें बडाई करूं केवल हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके क्रूशके विषयमें जिसके द्वारासे जगत मेरे लेखे क्रूश-पर चढ़ाया गया है और मैं जगतके लेखे । (१५) क्योंकि ख्रीष्ट यीशुमें न खतना न खतनाहीन होना कुछ है परन्तु नई सृष्टि । (१६) और जितने लोग इस विधिसे चलेंगे उन्हींपर और ईश्वरके इस्रायेली लोगपर कल्याण और दया होवे । (१७) अब तो कोई मुझे दुःख न देवे क्योंकि मैं प्रभु यीशुके चिन्ह अपने देहमें लिये फिरता हूं । (१८) हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह तुम्हारे आत्माके संग होवे । आमीन ॥

इफिसियोंको पावल प्रेरितकी पत्री।

[पत्रीका आभास।]

१ पावल जो ईश्वरकी इच्छासे यीशु ख्रीष्टका प्रेरित है उन पवित्र और ख्रीष्ट यीशुमें बिश्वासी लोगोंको जो इफिसमें हैं . (२) तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।

[ईश्वरके अनुग्रहका और यीशुके बिश्वासियोंके अधिकारका बर्णन।]

(३) हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके पिता ईश्वरका धन्यबाद होय जिसने ख्रीष्टमें हमोंको स्वर्गीय स्थानोंमें सब प्रकारकी आत्मिक आशीससे आशीस दिई है . (४) जैसा उसने उसमें जगतकी उत्पत्तिके आगे हमें चुन लिया कि हम प्रेमसे उसके सन्मुख पवित्र औ निर्दोष होवें . (५) और अपनी इच्छाकी सुमतिके अनुसार हमें आगेसे ठहराया कि यीशु ख्रीष्टके द्वारासे हम उसके लेपालक होवें . (६) इसलिये कि उसके अनुग्रहकी महिमाकी स्तुति किई जाय जिस करके उसने हमें उस प्यारेमें अनुग्रह पात्र किया . (७) जिसमें उसके लोहूके द्वारासे हमें उद्धार अर्थात अपराधोंका मोचन ईश्वरके अनुग्रहके धनके अनुसार मिलता है। (८) और उसने समस्त ज्ञान औ बुद्धि सहित हमपर यह अनुग्रह अधिकाईसे किया . (९) कि उसने अपनी इच्छाका भेद अपनी उस सुमतिके अनुसार हमें बताया जो उसने समयोंकी पूर्णताका कार्य्य निबाहने निमित्त अपनेमें ठानी थी . (१०) अर्थात कि जो कुछ स्वर्गमें है और जो कुछ पृथिवीपर है सब कुछ वह ख्रीष्टमें संग्रह करेगा . (११) हां उसीमें जिसमें हम उसीकी मनसासे जो अपनी इच्छाके मतके अनुसार सब कार्य्य करता है आगेसे ठहराये जाके अधिकारके लिये

चुने गये भी . (१२) इसलिये कि उसकी महिमाकी स्तुति हमारे द्वारासे किई जाय जिन्होंने आगे ख्रीष्टपर भरोसा रखा था . (१३) जिसपर तुमने भी सत्यताका वचन अर्थात अपने चाणका सुसमाचार सुनके भरोसा रखा और जिसमें तुमने विश्वास करके प्रतिज्ञाके आत्मा अर्थात पवित्र आत्माकी छाप भी पाई . (१४) जो मोल लिये हुओंके उद्धारलों हमारे अधिकारका बयाना है इस कारण कि ईश्वरकी महिमाकी स्तुति किई जाय।

[इफिसियोंके लिये पावलकी प्रार्थना ।]

(१५) इस कारणसे मैं भी प्रभु यीशुपर जो विश्वास और सब पवित्र लोगोंसे जो प्रेम तुम्होंमें हैं इनका समाचार सुनके . (१६) तुम्हारे लिये धन्य मानना नहीं छोड़ता हूं और अपनी प्रार्थनाओंमें तुम्हें स्मरण करता हूं . (१७) कि हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका ईश्वर जो तेजस्वी पिता है तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान औा प्रकाशका आत्मा देवे . (१८) और तुम्हारे मनके नेत्र प्रकाशित होवें जिस्तें तुम जानो कि उसकी बुलाहटकी आशा क्या है और पवित्र लोगोंमें उसके अधिकारकी महिमा का धन क्या है . (१९) और हमारी ओर जो बिश्वास करते हैं उसके सामर्थ्यकी अत्यन्त अधिकाई क्या है . (२०) सोई उसकी शक्तिके प्रभावके उस कार्य्यके अनुसार है जो उसने ख्रीष्टके विषयमें किया कि उसको मृतकोंमेंसे उठाया . (२१) और स्वर्गीय स्थानोंमें समस्त प्रधानता और अधिकार और पराक्रम और प्रभुताके ऊपर और हर एक नामके ऊपर जो न केवल इस लोकमें परन्तु परलोकमें भी लिया जाता है अपने दहिने हाथ बैठाया . (२२) और सब कुछ उसके चरणोंके नीचे अधीन किया और उसे मंडलीको सब बस्तुओंपर सिर बना करके दिया . (२३) जो मंडली उसका देह है अर्थात उसकी जो सभोंमें सब कुछ भरता है भरपूरी है ।

[श्राण प्राप्त करना हमारे कर्म्मोंसे नहीं पर ईश्वरकी दयासे है ।]

२ तुम्हें भी ईश्वरने जिलाया जो अपराधों और पापोंके कारण मृतक थे . (२) जिन पापोंमें तुम आगे इस संसार की रीतिके अनुसार हां आकाशके अधिकारके अर्थात उस आत्माके अध्यक्षके अनुसार चले जो आत्मा अब भी आज्ञा लंघन करनेहारोंसे कार्य्य करवाता है . (३) जिनके बीचमें हम सब भी आगे शरीर और भावनाओंकी इच्छाएं पूरी करते हुए अपने शरीरके अभिलाषोंकी चाल चले और और लोगोंके समान स्वभावहीसे क्रोधके सन्तान थे । (४) परन्तु ईश्वरने जो दयाके धनका धनी है अपने उस बड़े प्रेमके कारण जिस करके उसने हमसे प्रेम किया . (५) जब हम अपराधोंके कारण मृतक थे तबही हमें ख्रीष्टके संग जिलाया कि अनुग्रह सैं तुम्हारा त्राण हुआ है . (६) और संगही उठाया और ख्रीष्ट यीशुमें संगही स्वर्गीय स्थानोंमें बैठाया . (७) इसलिये कि ख्रीष्ट यीशुमें हमपर कृपा करनेमें वह आनेहारे समयोंमें अपने अनुग्रहका अत्यन्त धन दिखावे । (८) क्योंकि अनुग्रहसे बिश्वासके द्वारा तुम्हारा त्राण हुआ है और यह तुम्हारी ओरसे नहीं हुआ ईश्वरका दान है । (९) यह कर्म्मोंसे नहीं हुआ न हो कि कोई घमंड करे । (१०) क्योंकि हम उसके बनाये हुए हैं जो ख्रीष्ट यीशुमें अच्छे कर्म्मोंके लिये सृजे गये जिन्हें ईश्वरने आगेसे ठहराया कि हम उनमें चलें ।

[क्या खतना किये हुए क्या खतनाहीन सब बिश्वासी लोगोंका यीशुमें एक होना ।]

(११) इसलिये स्मरण करो कि पूर्व्व समयमें तुम जो शरीर में अन्यदेशी हो और जो लोग शरीरमें हाथके किये हुए खतनेसे खतनावाले कहावते हैं उनसे खतनाहीन कहे जाते हो . (१२) तुम लोग उस समयमें ख्रीष्टसे अलग थे और इस्रायेलकी प्रजाके पदसे नियारे किये हुए थे और प्रतिज्ञा

के नियमोंके भागी न थे ग्रोर जगतमें ग्राशाहीन ग्रोर ईश्वर रहित थे । (१३) पर ग्रब तो ख्रीष्ट यीशुमें तुम जो ग्रागे दूर थे ख्रीष्टके लोहूके द्वारा निकट किये गये हो । (१४) क्योंकि वही हमारा मिलाप है जिसने दोनोंको एक किया ग्रोर रुकावकी बिचली भीत्ति गिराई . (१५) ग्रोर विधि संबन्धी ग्राज्ञाग्रोंकी व्यवस्थाको लोप करके ग्रपने शरीरमें शत्रुता मिटा दिई जिस्तें वह ग्रपनेमें दोसे एक नया पुरुष उत्पन्न करके मिलाप करे . (१६) ग्रोर शत्रुताको क्रूशपर नाश करके उस क्रूशके द्वारा दोनोंको एक देहमें ईश्वरसे मिलावे । (१७) ग्रोर उसने ग्राके तुम्हें जो दूर थे ग्रोर उन्हें जो निकट थे मिलाप का सुसमाचार सुनाया । (१८) क्योंकि उसके द्वारा हम दोनों को एक ग्रात्मामें पिताके पास पहुंचनेका ग्रधिकार मिलता है । (१९) इसलिये तुम ग्रब ऊपरी ग्रोर बिदेशी नहीं हो परन्तु पवित्र लोगोंके संगी पुरवासी ग्रोर ईश्वरके घरानेके हो . (२०) ग्रोर प्रेरितों ग्रो भविष्यद्वक्ताग्रोंकी नेवपर निर्माण किये गये हो जिसके कोनेका पत्थर यीशु ख्रीष्ट ग्रापही है . (२१) जिसमें सारी रचना एक संग जुटके प्रभुमें पवित्र मन्दिर बनती जाती है . (२२) जिसमें तुम भी ग्रात्माके द्वारा ईश्वर का वासा होनेको एक संग निर्माण किये जाते हो ।

[उस बड़े भेदका बयान जिसे पावल प्रचार करता था ।]

३ इसीके कारण मैं पावल जो तुम ग्रन्यदेशियोंके लिये ख्रीष्ट यीशुके कारण बंधुग्रा हूं . (२) जो कि ईश्वरका जो ग्रनुग्रह तुम्हारे लिये मुझे दिया गया उसके भंडारीपन का समाचार तुमने सुना . (३) ग्रर्थात कि प्रकाशसे उसने मुझे भेद बताया जैसा मैं ग्रागे संक्षेप करके लिख चुका हूं . (४) जिससे तुम जब पढ़ो तब ख्रीष्टके भेदमें मेरा ज्ञान बूझ सकते हो . (५) जो भेद ग्रोर ग्रोर समयोंमें मनुष्योंके सन्तानों

को ऐसा नहीं बताया गया था जैसा अब वह आत्मासे ईश्वर के पवित्र प्रेरितों औ भविष्यद्वक्ताओंपर प्रगट किया गया है. (६) अर्थात कि ख्रीष्टमें सुसमाचारके द्वारासे अन्यदेशी लोग संगी अधिकारी और एकही देहके और ईश्वरकी प्रतिज्ञाके संभागी हैं। (७) और मैं ईश्वरके अनुग्रहके दानके अनुसार जो मुझे उसके सामर्थ्यके कार्य्यके अनुसार दिया गया उस सुसमाचारका सेवक हुआ। (८) मुझे जो सब पवित्र लोगोंमेंसे अति छोटेसे भी छोटा हूं यह अनुग्रह दिया गया कि मैं अन्यदेशियोंमें ख्रीष्टके अगम्य धनका सुसमाचार प्रचार करूं. (९) और सभों पर प्रकाशित करूं कि उस भेदका निबाहना क्या है जो ईश्वरमें आदिसे गुप्त था जिसने यीशु ख्रीष्टके द्वारा सब कुछ सृजा. (१०) इसलिये कि अब स्वर्गीय स्थानोंमेंके प्रधानों और अधिकारियोंपर मंडलीके द्वारासे ईश्वरकी नाना प्रकारकी बुद्धि प्रगट किई जाय. (११) उस सनातन इच्छाके अनुसार जो उसने ख्रीष्ट यीशु हमारे प्रभुमें पूरी किई. (१२) जिसमें हमोंको साहस और निश्चयसे निकट आनेका अधिकार उसके बिश्वासके द्वारासे मिलते हैं। (१३) इसलिये मैं बिन्ती करता हूं कि जो अनेक क्लेश तुम्हारे लिये मुझे होते हैं इनमें कातर न होओ कि यह तुम्हारा आदर है।

[इफिसियोंके लिये पावलकी प्रार्थना और परमेश्वरका धन्यबाद करना।]

(१४) मैं इसीके कारण हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके पिताके आगे अपने घुटने टेकता हूं. (१५) जिससे क्या स्वर्गमें क्या पृथिवीपर सारे घरानेका नाम रखा जाता है. (१६) कि वह तुम्हें अपनी महिमाके धनके अनुसार यह देवे कि तुम उस में [illegible]पाके द्वारासे अपने भीतरी मनुष्यत्वमें सामर्थ्य पाके ख़तनेक[illegible]ओ. (१७) कि ख्रीष्ट बिश्वासके द्वारासे तुम्हारे हो. (१८) [illegible]र प्रेममें तुम्हारी जड़ बन्धी हुई और नेव इस्रायेलकी प्र[illegible]

डाली हुई होय . (१८) जिस्तें यह चौड़ाई औ लंबाई औ गहिराई और ऊंचाई क्या है इसको तुम सब पवित्र लोगों के साथ बूझनेकी शक्ति पावो . (१९) और ख्रीष्टके प्रेमको जानो जो ज्ञानसे ऊर्द्ध है इसलिये कि तुम ईश्वरकी सारी पूर्णतालों पूरे किये जावो ।

(२०) उसका जो उस सामर्थ्यके अनुसार जो हमोंमें कार्य्य करता है सब बातोंसे अधिक हां हम जो कुछ मांगते अथवा बूझते हैं उससे अत्यन्त अधिक कर सकता है . (२१) उसी का गुणानुवाद ख्रीष्ट यीशुके द्वारा मंडलीमें पीढ़ी पीढ़ी नित्य सर्व्वदा होवे . आमीन ।

[दीनताई और मेलका उपदेश ।]

४ सो मैं जो प्रभुके लिये बंधुआ हूं तुमसे बिन्ती करता हूं कि जिस बुलाहटसे तुम बुलाये गये उसके योग्य चाल चलो . (२) अर्थात सारी दीनता औ नम्रता सहित और धीरज सहित प्रेमसे एक दूसरेको सह लेओ . (३) और मिलाप के बंधमें आत्माकी एकताकी रक्षा करनेका यत्न करो ।

(४) जैसे तुम अपनी बुलाहटकी एकही आशामें बुलाये गये तैसेही एक देह है और एक आत्मा . (५) एक प्रभु एक विश्वास एक बपतिसमा . (६) एक ईश्वर और सभोंका पिता जो सभोंपर और सभोंके मध्यमें और तुम सभोंमें है ।

(७) परन्तु अनुग्रह हममेंसे हर एकको ख्रीष्टके दानके परिमाणसे दिया गया । (८) इसलिये वह कहता है कि वह ऊंचेपर चढ़ा और बंधुओंको बांध ले गया और मनुष्योंको दान दिये । (९) इस बातका कि चढ़ा क्या अभिप्राय है . यही कि वह पहिले पृथिवीके निचले स्थानोंमें उतरा भी था । (१०) जो उतर गया सोई है जो सब स्वर्गोंसे ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ पूर्ण करे । (११) और उसने यह दान दिये

अर्थात जबलों हम सब लोग बिश्वासकी और ईश्वरके पुत्र के ज्ञानकी एकतालों न पहुंचें और एक पूरा मनुष्य न हो जावें और ख्रीष्टको पूर्णताकी डीलके परिमाणलों न बढ़ें. (१२) तबलों उसने पवित्र लोगोंकी पूर्णताके कारण सेवकाईके कर्म्मके लिये औ ख्रीष्टके देहके सुधारनेके लिये. (१३) कितनों को प्रेरित करके औ कितनोंको भविष्यद्वक्ता करके औ कितनों को सुसमाचार प्रचारक करके औ कितनोंको रखवाले और उपदेशक करके दिया. (१४) इसलिये कि हम अब बालक न रहें जो मनुष्योंकी ठगविद्याके और भ्रमको जुगतें बांधनेकी चतुराई के द्वारा उपदेशकी हर एक बयारसे लहराते और इधर उधर फिराये जाते हों. (१५) परन्तु प्रेममें सत्यतासे चलते हुए सब बातोंमें उसके ऐसे बनते जावें जो सिर है अर्थात ख्रीष्ट. (१६) जिससे सारा देह एक संग जुटके और एक संग गठके हर एक परस्पर उपकारी गांठके द्वारासे उस कार्य्यके अनुसार जो हर एक अंशके परिमाणसे उसमें किया जाता है देहको बढ़ाता है कि वह प्रेममें अपनेको सुधारे।

[पुराने मनुष्यत्वको उतार रखने और नये मनुष्यत्व पहिन लेनेका उपदेश।]

(१७) सो मैं यह कहता हूं और प्रभुके साक्षात उपदेश करता हूं कि तुम लोग अब फिर ऐसे न चलो जैसे और और अन्यदेशी लोग अपने मनकी अनर्थ रीतिपर चलते हैं. (१८) कि उस अज्ञानताके कारण जो उनमें है और उनके मनकी कठोरताके कारण उनकी बुद्धि अंधियारी हुई है और वे ईश्वरके जीवनसे नियारे किये हुए हैं. (१९) और उन्होंने खेद रहित होके अपने तईं लुचपनको सौंप दिया है कि सब प्रकारका अशुद्ध कर्म्म लालसासे किया करें। (२०) परन्तु तुमने ख्रीष्टको इस रीतिसे नहीं सीख लिया है. (२१) जो ऐसा है कि तुमने उसीकी सुनी और उसीमें सिखाये गये

जैसा यीशुमें सच्चाई है . (२२) कि अगली चाल चलनके विषय में पुराने मनुष्यत्वको जो भरमानेहारी कामनाओंके अनुसार भ्रष्ट होता जाता है उतार रखो . (२३) और अपने मनके आत्मिक स्वभावसे नये होते जावो . (२४) और नये मनुष्यत्वको पहिन लेओ जो ईश्वरके समान सत्यानुसारी धर्म्म और पवित्रतामें सृजा गया ।

(२५) इस कारण झूठको दूर करके हर एक अपने पड़ोसी के साथ सत्य बोला करो क्योंकि हम लोग एक दूसरेके अंग हैं । (२६) क्रोध करो पर पाप मत करो . सूर्य्य तुम्हारे कोप पर अस्त न होवे . (२७) और न शैतानको ठांव देओ । (२८) चोरी करनेहारा अब चोरी न करे बरन हाथोंसे भला कार्य्य करनेमें परिश्रम करे इसलिये कि जिसे प्रयोजन हो उसे बांट देनेको कुछ उस पास होवे । (२९) कोई अशुद्ध बचन तुम्हारे मुंहसे न निकले परन्तु जहां जैसा आवश्यक है तहां जो वचन सुधारनेके लिये अच्छा हो सोई मुंहसे निकले कि उससे सुननेहारोंको अनुग्रह मिले । (३०) और ईश्वरके पवित्र आत्मा को जिससे तुमपर उद्धारके दिनके लिये छाप दिई गई उदास मत करो । (३१) सब प्रकारकी कड़वाहट औ कोप औ क्रोध औ कलह औ निन्दा समस्त बैरभाव समेत तुमसे दूर किई जाय । (३२) और आपसमें कृपाल औ करुणामय होओ और जैसे ईश्वरने ख्रीष्टमें तुम्हें क्षमा किया तैसे तुम भी एक दूसरेको क्षमा करो ।

५ सो प्यारे बालकोंकी नाईं ईश्वरके अनुगामी होओ . (२) और प्रेममें चलो जैसे ख्रीष्टने भी हमसे प्रेम किया और हमारे लिये अपनेको ईश्वरके आगे चढ़ावा और बलिदान करके सुगन्धकी बासके लिये सौंप दिया

(३) और जैसा कि पवित्र लोगोंके योग्य है तैसा व्यभिचार

का और सब प्रकारके अशुद्ध कर्म्मका अथवा लोभका नाम भी तुम्होंमें न लिया जाय . (४) और न निर्लज्जताका न मूढ़ताकी बातचीतका अथवा ठट्ठेका नाम कि यह बातें सोहती नहीं परन्तु धन्यबादही सुना जाय। (५) क्योंकि तुम यह जानते हो कि किसी ब्यभिचारीको अथवा अशुद्ध जनको अथवा लोभी मनुष्यको जो मूर्त्तिपूजक है ख्रीष्ट और ईश्वरके राज्यमें अधिकार नहीं है। (६) कोई तुम्हें अनर्थक बातोंसे धोखा न देवे क्योंकि इन कर्म्मोंके कारण ईश्वरका क्रोध आज्ञा लंघन करनेहारोंपर पड़ता है। (७) सो तुम उनके संग भागी मत होओ।

(८) क्योंकि तुम आगे अन्धकार थे पर अब प्रभुमें उजियाले हो . ज्योतिके सन्तानोंकी नाईं चलो। (९) क्योंकि सब प्रकार की भलाई औ धर्म्म औ सत्यतामें आत्माका फल होता है। (१०) और परखो कि प्रभुको क्या भावता है। (११) और अंधकारके निष्फल कार्य्योंमें भागी मत होओ परन्तु और भी उनपर दोष देओ। (१२) क्योंकि जो कर्म्म गुप्तमें उनसे किये जाते हैं उन्हें कहना भी लाजकी बात है। (१३) परन्तु सब कर्म्म जब उनपर दोष दिया जाता है तब ज्योतिसे प्रगट किये जाते हैं क्योंकि जो कुछ प्रगट किया जाता है सो उजियाला होता है। (१४) इस कारण वह कहता है हे सोने-हारे जाग और मृतकोंमेंसे उठ और ख्रीष्ट तुझे ज्योति देगा।

(१५) सो चौकस रहो कि तुम क्योंकर यत्नसे चलते हो . निर्बुद्धियोंकी नाईं नहीं परन्तु बुद्धिमानोंकी नाईं चलो। (१६) और अपने लिये समयका लाभ करो क्योंकि ये दिन बुरे हैं। (१७) इस कारणसे अज्ञान मत होओ परन्तु समझते रहो कि प्रभुकी इच्छा क्या है। (१८) और दाख रससे मतवाले मत होओ जिसमें लुचपन होता है परन्तु आत्मासे परिपूर्ण

होओ । (१९) और गीतों और भजनों और आत्मिक गानोंमें एक दूसरेसे बातें करो और अपने अपने मनमें प्रभुके आगे गान और कीर्त्तन करो । (२०) और सदा सब बातोंके लिये हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके नामसे ईश्वर पिताका धन्य मानो । (२१) और ईश्वरके भयसे एक दूसरेके अधीन होओ ।

[स्त्री और पुरुष पिता पुत्र दास और स्वामीके लिये उपदेश ।]

(२२) हे स्त्रियो जैसे प्रभुके तैसे अपने अपने स्वामीके अधीन रहो । (२३) क्योंकि जैसा ख्रीष्ट मंडलीका सिर है तैसा पुरुष भी स्त्रीका सिर है । (२४) वह तो देहका त्राणकर्त्ता है तौभी जैसे मंडली ख्रीष्टके अधीन रहती है वैसे स्त्रियां भी हर बातमें अपने अपने स्वामीके अधीन रहें । (२५) हे पुरुषो अपनी अपनी स्त्रीको ऐसा प्यार करो जैसा ख्रीष्टने भी मंडली को प्यार किया और अपनेको उसके लिये सौंप दिया . (२६) कि उसको बचनके द्वारा जलके स्नानसे शुद्ध कर पवित्र करे . (२७) जिस्तें वह उसे अपने आगे मर्य्यादिक मंडली खड़ा करे जिसमें कलंक अथवा झुरी अथवा ऐसी कोई बस्तु भी न होवे परन्तु जिस्तें पवित्र औ निर्दोष होवे । (२८) यूंही उचित है कि पुरुष अपनी अपनी स्त्रीको अपने अपने देहके समान प्यार करें . जो अपनी स्त्रीको प्यार करता है सो अपने को प्यार करता है । (२९) क्योंकि किसीने कभी अपने शरीर से बैर नहीं किया परन्तु उसको ऐसा पालता और पोसता है जैसा प्रभु भी मंडलीको पालता पोसता है । (३०) क्योंकि हम उसके देहके अंग हैं अर्थात उसके मांसमेंके और उसकी हड्डियोंमेंके हैं । (३१) इस हेतुसे मनुष्य अपने माता पिताको छोड़के अपनी स्त्रीसे मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे । (३२) यह भेद बड़ा है परन्तु मैं तो ख्रीष्टके और मंडली के विषयमें कहता हूं । (३३) पर तुम भी एक एक करके हर

एक अपनी अपनी स्त्रीको अपने समान प्यार करो और स्त्री को उचित है कि स्वामीका भय माने।

६ हे लड़को प्रभुमें अपने अपने माता पिताकी आज्ञा मानो क्योंकि यह उचित है। (२) अपनी माता और पिता का आदर कर कि यह प्रतिज्ञा सहित पहिली आज्ञा है. (३) जिस्तें तेरा भला हो और तू भूमिपर बहुत दिन जीवे। (४) और हे पिताओ अपने अपने लड़कोंसे क्रोध मत करवाओ परन्तु प्रभुकी शिक्षा और चितावनी सहित उनका प्रतिपालन करो।

(५) हे दासो जो लोग शरीरके अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं डरते और कांपते हुए अपने मनकी सीधाईसे जैसे ख्रीष्टकी तैसे उनकी आज्ञा मानो। (६) और मनुष्योंको प्रसन्न करनेहारोंकी नाईं मुंह देखी सेवा मत करो परन्तु ख्रीष्टके दासों की नाईं अन्तःकरणसे ईश्वरकी इच्छापर चलो. (७) और सुमतिसे सेवा करो मानो तुम मनुष्योंकी नहीं परन्तु प्रभुकी सेवा करते हो. (८) क्योंकि जानते हो कि जो कुछ हर एक मनुष्य भला करेगा इसीका फल वह चाहे दास हो चाहे निर्बन्ध हो प्रभुसे पावेगा। (९) और हे स्वामियो तुम उन्होंसे वैसाही करो और धमकी मत दिया करो क्योंकि जानते हो कि स्वर्गमें तुम्हारा भी स्वामी है और उसके यहां पक्षपात नहीं है।

[धर्म्मकी लड़ाई धर्म्मके हथियारोंसे लड़ने और प्रार्थना करनेका उपदेश।]

(१०) अन्तमें हे मेरे भाइयो यह कहता हूं कि प्रभुमें और उसकी शक्तिके प्रभावमें बलवन्त हो रहो। (११) ईश्वरके सम्पूर्ण हथियार बांध लेओ जिस्तें तुम शैतानकी जुगतोंके साम्हने खड़े रह सको। (१२) क्योंकि हमारा यह युद्ध लोहू औ मांससे नहीं है परन्तु प्रधानोंसे और अधिकारियोंसे और इस संसारके अंधकारके महाराजाओंसे और आकाशमेंकी

दुष्टताकी आत्मिक सेनासे । (१३) इस कारणसे ईश्वरके संपूर्ण हथियार ले लेओ कि तुम बुरे दिनमें साम्हना कर सको और सब कुछ पूरा करके खड़े रह सको । (१४) सो अपनी कमर सच्चाईसे कसके और धर्म्मकी झिलम पहिनके. (१५) और पांवोंमें मिलापके सुसमाचारकी तैयारीके जूते पहिनके खड़े रहो । (१६) और सभोंके ऊपर बिश्वासकी ढाल लेओ जिससे तुम उस दुष्टके सब अग्निबाणोंको बुझा सकोगे । (१७) और चाणका टोप लेओ और आत्माका खड्ग जो ईश्वरका बचन है । (१८) और सब प्रकारकी प्रार्थना और बिन्तीसे हर समय आत्मामें प्रार्थना किया करो और इसीके निमित्त समस्त स्थिरता सहित और सब पवित्र लोगोंके लिये बिन्ती करते हुए जागते रहो । (१९) और मेरे लिये भी बिन्ती करो कि मुझे अपना मुंह खोलनेके समय बोलनेका सामर्थ्य दिया जाय कि मैं साहससे सुसमाचारका भेद बताऊं जिसके लिये मैं जंजीर से बंधा हुआ दूत हूं. (२०) और कि मैं उसके विषयमें साहस से बात करूं जैसा मुझे बोलना उचित है ।

[पत्रीकी समाप्ति ।]

(२१) परन्तु इसलिये कि तुम भी मेरी दशा जानो कि मैं कैसा रहता हूं तुखिक जो प्यारा भाई और प्रभुमें बिश्वासयोग्य सेवक है तुम्हें सब बातें बतावेगा. (२२) कि मैंने उसे इसीके निमित्त तुम्हारे पास भेजा है कि तुम हमारे विषयमेंकी बातें जानो और वह तुम्हारे मनको शांति देवे ।

(२३) भाइयोंको ईश्वर पितासे और प्रभु योशु खीष्टसे शांति और प्रेम बिश्वास सहित मिले । (२४) जो हमारे प्रभु योशु खीष्टसे अक्षय प्रेम रखते हैं उन सभोंपर अनुग्रह होवे । आमीन ॥

फिलिपीयोंको पावल प्रेरितकी पत्री।

[पत्रीका आभाष।]

१ पावल और तिमोथिय जो यीशु ख्रीष्टके दास हैं फिलिपी में जितने लोग ख्रीष्ट यीशुमें पवित्र लोग हैं उन सभोंको मंडलीके रखवालों और सेवकों समेत. (२) तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।

[फिलिपीयोंके विषयमें पावलका धन्यवाद औ प्रार्थना।]

(३) मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूं तब अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं. (४) और तुमने पहिले दिनसे लेके अबलों सुसमाचारके लिये जो सहायता किई है. (५) उससे आनन्द करता हुआ नित्य अपनी हर एक प्रार्थनामें तुम सभोंके लिये बिन्ती करता हूं। (६) और इसी बातका मुझे भरोसा है कि जिसने तुम्होंमें अच्छा काम आरंभ किया है सो यीशु ख्रीष्ट के दिनलों उसे पूरा करेगा। (७) जैसे तुम सभोंके लिये यह सोचना मुझे उचित है इस कारण कि मेरे बंधनोंमें और सुसमाचारके लिये उत्तर औ प्रमाण देनेमें मैं तुम्हें मनमें रखता हूं कि तुम सब मेरे संग अनुग्रहके भागी हो। (८) क्योंकि ईश्वर मेरा साक्षी है कि यीशु ख्रीष्टकीसी करुणासे मैं क्योंकर तुम सभोंकी लालसा करता हूं। (९) और मैं यही प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान और सब प्रकारके बिवेक सहित अब भी अधिक अधिक बढ़ता जाय. (१०) यहांलों कि तुम विशेष्य बातोंको परखो जिस्तें तुम ख्रीष्टके दिनलों निष्कपट रहो और ठोकर न खाओ. (११) और धर्म्मके फलों से परिपूर्ण होओ जिनसे यीशु ख्रीष्टके द्वारा ईश्वरकी महिमा और स्तुति होती है।

[पावलके क्लेशके कारणसे सुसमाचारका अधिक करके प्रचार किया जाना ।]

(१२) पर हे भाइयो मैं चाहता हूं कि तुम यह जानो कि मेरी जो दशा हुई है उससे सुसमाचारकी बढ़तीही निकली है . (१३) यहांलों कि सारे राजभवनमें और और सब लोगों पर मेरे बंधन प्रगट हुए हैं कि ख्रीष्टके लिये हैं . (१४) और जो प्रभुमें भाई लोग हैं उनमेंसे बहुतेरे मेरे बंधनोंसे भरोसा पाके बहुत अधिक करके बचनको निर्भय बोलनेका साहस करते हैं । (१५) कितने लोग डाह और बैरके कारण भी और कितने सुमतिके कारण भी ख्रीष्टका प्रचार करते हैं । (१६) वे तो सरलतासे नहीं पर विरोधसे ख्रीष्टकी कथा सुनाते हैं और समझते हैं कि हम पावलके बंधनोंमें उसे क्लेश भी देंगे । (१७) परन्तु ये तो यह जानके कि पावल सुसमाचारके लिये उत्तर देनेको ठहराया गया है प्रेमसे सुनाते हैं । (१८) तो क्या हुआ . तौभी हर एक रीतिसे चाहे बहानासे चाहे सच्चाईसे ख्रीष्टकी कथा सुनाई जाती है और मैं इससे आनन्द करता हूं और आनन्द करूंगा भी ।

(१९) क्योंकि मैं जानता हूं कि इसीसे तुम्हारी प्रार्थनाके द्वारा और यीशु ख्रीष्टके आत्माके दानके द्वारा मेरी प्रत्याशा और भरोसेके अनुसार मेरा निस्तार हो जायगा . (२०) अर्थात यह भरोसा कि मैं किसी बातमें लज्जित न होंगा परन्तु ख्रीष्टकी महिमा सब प्रकारके साहसके साथ जैसा हर समय में तैसा अब भी मेरे देहमें चाहे जीवनके द्वारा चाहे मृत्युके द्वारा प्रगट किई जायगी। (२१) क्योंकि मेरे लिये जीना ख्रीष्ट है और मरना लाभ है । (२२) परन्तु यदि शरीरमें जीना हैं यह मेरे लिये कार्य्यका फल है और मैं नहीं जानता हूं मैं क्या चुन लेऊंगा । (२३) क्योंकि मैं इन दो बातोंके सकेतमें हूं कि मुझे उठ जाने और ख्रीष्टके संग रहनेका अभिलाष है

क्योंकि यह औरही बहुत अच्छा है। (२४) परन्तु शरीरमें रहना तुम्हारे कारण अधिक आवश्यक है। (२५) और मुझे इस बात का निश्चय होनेसे मैं जानता हूं कि मैं रहूंगा और बिश्वासमें तुम्हारी बढ़ती और आनन्दके लिये तुम सभोंके संग ठहर जाऊंगा. (२६) इसलिये कि मेरे फिर तुम्हारे पास आनेके द्वारासे मेरे विषयमें ख्रीष्ट यीशुमें बड़ाई करनेका हेतु तुम्हें अधिक होवे।

[मिलाप और दृढ़ता और प्रेम और नम्रताका उपदेश।]

(२७) केवल तुम्हारा आचरण ख्रीष्टके सुसमाचारके योग्य होवे कि मैं चाहे आके तुम्हें देखूं चाहे तुमसे दूर रहूं तुम्हारे विषयमें यह बात सुनूं कि तुम एकही आत्मामें दृढ़ रहते हो और एक मनसे सुसमाचारके विश्वासके लिये मिलके साहस करते हो. (२८) और बिरोधियोंसे तुम्हें किसी बात में डर नहीं लगता है जो उनके लिये तो बिनाशका प्रमाण परन्तु तुम्हारे लिये निस्तारका प्रमाण है और यह ईश्वरकी ओरसे है। (२९) क्योंकि ख्रीष्टके लिये यह बरदान तुम्हें दिया गया कि न केवल उसपर बिश्वास करो पर उसके लिये दुःख भी उठावो. (३०) कि तुम्हारी वैसीही लड़ाई है जैसी तुमने मुझमें देखी और अब सुनते हो कि मुझमें है।

२ सो यदि ख्रीष्टमें कुछ शांति यदि प्रेमसे कुछ समाधान यदि कुछ आत्माकी संगति यदि कुछ करुणा औ दया होय. (२) तो मेरे आनन्दको पूरा करो कि तुम एकसां मन रखो और तुम्हारा एकही प्रेम एकही चित्त एकही मत होय। (३) तुम्हारा कुछ बिरोधका अथवा घमंडका मत न होय परन्तु दीनतासे एक दूसरेको अपनेसे बड़ा समझो। (४) हर एक अपने अपने विषयोंको न देखा करे परन्तु हरएक दूसरोंके भी देख लेवे।

(५) तुम्हेंामें यही मन होय जो ख्रीष्ट यीशुमें भी था. (६) जिसने ईश्वरके रूपमें होके ईश्वरके तुल्य होना डकैती न

समझा . (७) परन्तु अपने तईं हीन करके दासका रूप धारण किया और मनुष्योंके समान बना . (८) और मनुष्यकेसे डौल पर पाया जाके अपनेको दीन किया और मृत्युलों हां क्रूश की मृत्युलों आज्ञाकारी रहा । (९) इस कारण ईश्वरने उस को बहुत ऊंचा भी किया और उसको वह नाम दिया जो सब नामोंसे ऊर्द्ध है . (१०) इसलिये कि जो स्वर्गमें और जो पृथिवीपर और जो पृथिवीके नीचे हैं उन सभोंका हर एक घुटना यीशुके नामसे झुकाया जाय . (११) और हर एक जीभसे मान लिया जाय कि यीशु खीष्टही प्रभु है जिस्तें ईश्वर पिताका गुणानुवाद होय ।

(१२) सो हे मेरे प्यारो जैसे तुम सदा आज्ञाकारी हुए तैसे जब मैं तुम्हारे संग रहूं केवल उस समयमें नहीं परन्तु मैं जो अभी तुमसे दूर हूं बहुत अधिक करके इस समयमें डरते और कांपते हुए अपने चाणका कार्य्य निबाहो . (१३) क्योंकि ईश्वरही है जो अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्होंसे इच्छा और कार्य्य भी करवाता है । (१४) सब काम बिना कुड़कुड़ाने और बिना विवादसे किया करो . (१५) जिस्तें तुम निर्दोष और सूधे बनो और टेढ़े और हठीले लोगके बीचमें ईश्वरके निष्कलंक पुत्र होओ . (१६) जिन्होंके बीचमें तुम जीवनका बचन लिये हुए जगतमें ज्योतिधारियोंकी नाईं चमकते हो कि मुझे खीष्टके दिनमें बड़ाई करनेका हेतु होय कि मैं न वृथा दौड़ा न वृथा परिश्रम किया । (१७) बरन जो मैं तुम्हारे बिश्वासके बलिदान और सेवकाईपर ढाला जाता हूं तौभी मैं आनन्दित हूं और तुम सभोंके संग आनन्द करता हूं । (१८) वैसेही तुम भी आनन्दित होओ और मेरे संग आनन्द करो ।

[पावलका इपाफ्रदीतको भेजनेका संदेश देना ।]

(१९) परन्तु मुझे प्रभु यीशुमें भरोसा है कि मैं तिमोथिय

को शीघ्र तुम्हारे पास भेजूंगा जिस्तें मैं भी तुम्हारी दशा जानके ढाढ़स पाऊं। (२०) क्योंकि मेरे पास कोई नहीं है जिस का मेरे ऐसा मन है जो सच्चाईसे तुम्हारे विषयमें चिन्ता करेगा। (२१) क्योंकि सब अपनेही अपनेही लिये यत्न करते हैं खीष्ट यीशुके लिये नहीं। (२२) परन्तु उसको तुम परखके जान चुके हो कि जैसा पुत्र पिताके संग तैसे उसने मेरे संग सुसमाचारके लिये सेवा किई। (२३) सो मुझे भरोसा है कि ज्योंहीं मुझे देख पड़ेगा कि मेरी क्या दशा होगी त्योंहीं मैं उसीको तुरन्त भेजूंगा। (२४) पर मैं प्रभुमें भरोसा रखता हूं कि मैं भी आपही शीघ्र आऊंगा।

(२५) परन्तु मैंने इपाफ्रदीतको जो मेरा भाई और सहकर्म्मी और संगी योद्धा पर तुम्हारा दूत और आवश्यक बातोंमें मेरी सेवा करनेहारा है तुम्हारे पास भेजना अवश्य समझा। (२६) क्योंकि वह तुम सभोंकी लालसा करता था और बहुत उदास हुआ इसलिये कि तुमने सुना था कि वह रोगी हुआ था। (२७) और वह रोगी तो हुआ यहांलों कि मरनेके निकट था परन्तु ईश्वरने उसपर दया किई और केवल उसपर नहीं परन्तु मुझपर भी कि मुझे शोकपर शोक न होवे। (२८) सो मैंने उसको और भी यत्नसे भेजा कि तुम उसे फिर देखके आनन्दित होओ और मेरा शोक घटे। (२९) सो उसे प्रभुमें सब प्रकारके आनन्दसे ग्रहण करो और ऐसे जनोंको आदर योग्य समझो। (३०) क्योंकि खीष्टके कार्य्य निमित्त वह अपने प्राणपर जोखिम उठाके मरनेके निकट पहुंचा इसलिये कि मेरी सेवा करनेमें तुम्हारी घटीको पूरी करे।

[शारीरिक कर्म्मोंपर आशा रखनेका निषेध और यीशुके धर्म्मका बड़ा अभिलाषी होना।]

३ अन्तमें हे मेरे भाइयो यह कहता हूं कि प्रभुमें आनन्दित रहो . वही बातें तुम्हारे पास फिर लिखनेसे मुझे

कुछ दुःख नहीं है और तुम्हें बचाव है। (२) कुत्तोंसे चौकस रहो दुष्ट कर्म्मकारियोंसे चौकस रहो काटे हुओंसे चौकस रहो। (३) क्योंकि खतना किये हुए हम हैं जो आत्मासे ईश्वरकी सेवा करते हैं और ख्रीष्ट योशुके बिषयमें बड़ाई करते हैं और भरोसा शरीरपर नहीं रखते हैं। (४) पर मुझे तो शरीरपर भी भरोसा है. यदि और कोई शरीरपर भरोसा रखना उचित जानता है मैं और भी. (५) कि आठवें दिन का खतना किया हुआ इस्रायेलके वंशका बिन्यामीनके कुल का इब्रियोंमेंसे इब्री हूं व्यवस्थाकी कहो तो फरीशी. (६) उद्योग को कहो तो मंडलीका सतानेहारा व्यवस्थामेंके धर्म्मकी कहो तो निर्दोष हुआ। (७) परन्तु जो जो बातें मेरे लेखे लाभ थीं उन्हें मैंने ख्रीष्टके कारण हानि समझी है। (८) हां सचमुच अपने प्रभु ख्रीष्ट योशुके ज्ञानकी श्रेष्ठताके कारण मैं सब बातें हानि समझता भी हूं और उसके कारण मैंने सब बस्तुओंकी हानि उठाई और उन्हें कूड़ासा जानता हूं कि मैं ख्रीष्टको प्राप्त करूं. (९) और उसमें पाया जाऊं ऐसा कि मेरा अपना धर्म्म जो व्यवस्थासे है सो नहीं परन्तु वह धर्म्म जो ख्रीष्टके बिश्वासके द्वारासे है वही धर्म्म जो बिश्वासके कारण ईश्वरसे है मुझे होय. (१०) जिस्तें मैं ख्रीष्टको और उसके जी उठनेकी शक्ति को और उसके दुःखोंकी संगतिको जानूं और उसकी मृत्युके सदृश किया जाऊं. (११) जो मैं किसी रीतिसे मृतकोंके जी उठनेका भागी होऊं। (१२) यह नहीं कि मैं पा चुका हूं अथवा सिद्ध हो चुका हूं परन्तु मैं पीछा करता हूं कि कहीं उसको पकड़ लेऊं जिसके निमित्त मैं भी ख्रीष्ट योशुसे पकड़ा गया।

(१३) हे भाइयो मैं नहीं समझता हूं कि मैंने पकड़ लिया है परन्तु एक काम मैं करता हूं कि पीछेकी बातें तो भूलता

जाता पर आगेकी बातोंकी ओर झपटता जाता हूं. (१४) और ऊपरका बुलाहट जो ख्रीष्ट यीशुमें ईश्वरकी ओरसे है झंडा देखता हुआ उस बुलाहटके जयफलका पीछा करता हूं। (१५) सो हममेंसे जितने सिद्ध हैं यही मन रखें और यदि किसी बातमें तुम्हें औरही मन होय तो ईश्वर यह भी तुम पर प्रगट करेगा । (१६) तौभी जहांलों हम पहुंचे हैं एक ही विधिसे चलना और एकही मन रखना चाहिये ।

[पारमार्थिक और लौकिक दोनों प्रकारके मनुष्योंकी भिन्न भिन्न दशा ।]

(१७) हे भाइयो तुम मिलके मेरीसी चाल चलो और उन्हें देखते रहो जो ऐसे चलते हैं जैसे हम तुम्हारे लिये दृष्टान्त हैं । (१८) क्योंकि बहुत लोग चलते हैं जिनके विषयमें मैंने बार बार तुमसे कहा है और अब रोता हुआ भी कहता हूं कि वे ख्रीष्टके क्रूशके बैरी हैं . (१९) जिनका अन्त बिनाश है जिनका ईश्वर पेट है जो अपनी लज्जापर बड़ाई करते हैं और पृथिवीपरकी बस्तुओंपर मन लगाते हैं । (२०) क्योंकि हम तो स्वर्गकी प्रजा हैं जहांसे हम त्राणकर्त्ताकी अर्थात प्रभु यीशु ख्रीष्टकी बाट भी जोहते हैं . (२१) जो उस कार्य्य के अनुसार जिस करके वह सब बस्तुओंको अपने बशमें कर सकता है हमारी दीनताईके देहका रूप बदल डालेगा कि वह उसके ऐश्वर्य्यके देहके सदृश हो जावे ।

[ऊपरके उपदेशकी समाप्ति ।]

४ सो हे मेरे प्यारे और अभिलषित भाइयो मेरे आनन्द और मुकुट यूंही हे प्यारो प्रभुमें दृढ़ रहो ।

(२) मैं इवोदियासे बिन्ती करता हूं और सुन्तुखीसे बिन्ती करता हूं कि वे प्रभुमें एकसां मन रखें । (३) और हे सच्चे संघाती मैं तुझसे भी बिन्ती करता हूं इन स्त्रियोंकी सहायता कर जिन्होंने क्लीमीके साथ भी और मेरे और और सहकर्म्मियों

के साथ जिनके नाम जीवनके पुस्तकमें हैं मेरे संग सुसमाचारके विषयमें मिलके साहस किया ।

(४) प्रभुमें सदा आनन्द करो . मैं फिर कहूंगा आनन्द करो । (५) तुम्हारी मृदुता सब मनुष्योंपर प्रगट होवे . प्रभु निकट है । (६) किसी बातमें चिन्ता मत करो परन्तु हर एक बातमें धन्यवादके साथ प्रार्थनासे और बिन्तीसे तुम्हारे निवेदन ईश्वरको जनाये जावें । (७) और ईश्वरकी शांति जो समस्त ज्ञानसे ऊर्द्ध है खीष्ट यीशुमें तुम लोगोंके हृदय और तुम लोगोंके मनकी रक्षा करेगी । (८) अन्तमें हे भाइयो यह कहता हूं कि जो जो बातें सत्य हैं जो जो आदरयोग्य हैं जो जो यथार्थ हैं जो जो शुद्ध हैं जो जो सुहावनी हैं जो जो सुख्यात हैं कोई गुण जो होय और कोई यश जो होय उन्हीं बातोंकी चिन्ता करो । (९) जो तुमने सीखीं भी और ग्रहण किईं और सुनीं और मुझमें देखीं वही बातें किया करो और शांतिका ईश्वर तुम्हारे संग होगा ।

[पावलके आनन्दका वर्णन उस सहायताके कारणसे जो उसको फिलिपीयोंके प्रेमसे मिली और पत्रीकी समाप्ति ।]

(१०) मैंने प्रभुमें बड़ा आनन्द किया कि मेरे लिये सोच करनेमें तुम अब भी फिर पनपे और इस बातका तुम सोच करते भी थे पर तुम्हें अवसर न था । (११) यह नहीं कि मैं दरिद्रताके विषयमें कहता हूं क्योंकि मैं सीख चुका हूं कि जिस दशामें हूं उसमें सन्तोष करूं । (१२) मैं दीन होने जानता हूं मैं उभरने भी जानता हूं मैं सर्व्वत्र और सब बातोंमें तृप्त होनेको और भूखा रहनेको भी उभरनेको और दरिद्र होनेको भी सिखाया गया हूं । (१३) मैं खीष्टमें जो मुझे सामर्थ्य देता है सब कुछ कर सकता हूं । (१४) तौभी तुमने भला किया जो मेरे क्लेशमें मेरी सहायता किई । (१५) और हे फिलिपीयो

तुम यह भी जाना कि सुसमाचारके आरंभमें जब मैं माकिदोनियासे निकला तब देने लेनेके विषयमें किसी मंडलीने मेरी सहायता न किई पर केवल तुमहीने। (१६) क्योंकि थिसलोनिकामें भी तुमने एक बेर और दो बेर भी जो मुझे आवश्यक था सो भेजा। (१७) यह नहीं कि मैं दान चाहता हूं पर मैं वह फल चाहता हूं जिससे तुम्हारे निमित्त अधिक लाभ होवे। (१८) पर मैं सब कुछ पा चुका हूं और मुझे बहुत है. जो तुम्हारी ओरसे आया माना सुगंध माना ग्राह्य बलिदान जो ईश्वरको भावता है सोई इपाफ्रदीतके हाथ पाके मैं भरपूर हूं। (१९) और मेरा ईश्वर अपने धनके अनुसार महिमा सहित ख्रीष्ट यीशुमें सब कुछ जो तुम्हें आवश्यक हो भरपूर करके देगा। (२०) हमारे पिता ईश्वरका गुणानुबाद सदा सर्ब्बदा होय. आमीन।

(२१) ख्रीष्ट यीशुमें हर एक पवित्र जनको नमस्कार. मेरे संगके भाई लोगोंका तुमसे नमस्कार। (२२) सब पवित्र लोगोंका निज करके उन्होंका जो कैसरके घराजेके हैं तुमसे नमस्कार। (२३) हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह तुम सभोंके संग होवे। आमीन॥

कलस्सीयोंको पावल प्रेरितकी पत्री ।

[पत्रीका आभाष ।]

१ पावल जो ईश्वरकी इच्छासे योशु ख्रीष्टका प्रेरित हैं और भाई तिमोथिय कलस्सीमेंके पवित्र लोगों और ख्रीष्टमें विश्वासी भाइयोंको . (२) तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु योशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले ।

[कलस्सीयोंके विषयमें पावलका धन्यवाद और उनके लिये प्रार्थना ।]

(३) हम नित्य तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हुए अपने प्रभु योशु ख्रीष्टके पिता ईश्वरका धन्य मानते हैं . (४) कि हमने ख्रीष्ट योशुपर तुम्हारे विश्वासका और उस प्रेमका समाचार पाया है जो सब पवित्र लोगोंसे उस आशाके कारण रखते हो . (५) जो आशा तुम्हारे लिये स्वर्गमें धरी है जिसकी कथा तुमने आगे सुसमाचारकी सत्यताके बचनमें सुनी . (६) वह सुसमाचार जो तुम्हारे पास भी जैसा सारे जगतमें पहुंचा है और फल लाता और बढ़ता है जैसा तुममें भी उस दिनसे फलता है जिस दिनसे तुमने सुना और सत्यतासे ईश्वरका अनुग्रह जाना . (७) जैसे तुमने हमारे प्यारे संगी दास इपाफ्रासे सीखा जो तुम्हारे लिये ख्रीष्टका विश्वासयोग्य सेवक है . (८) और जिसने तुम्हारा प्रेम जो आत्मासे है हमें बताया ।

(९) इस कारणसे हम भी जिस दिनसे हमने सुना उस दिनसे तुम्हारे लिये प्रार्थना करना और यह मांगना नहीं छोड़ते हैं कि तुम सारे ज्ञान और आत्मिक बुद्धि सहित ईश्वरकी इच्छाकी पहचानसे परिपूर्ण होओ . (१०) जिस्तें तुम

प्रभुके योग्य चाल चलो ऐसा कि सब प्रकारसे प्रसन्नता होय और हर एक अच्छे काममें फलवान होओ और ईश्वरकी पहचानमें बढ़ते जावो . (११) और समस्त बलसे उसकी महिमाके प्रभावके अनुसार बलवन्त किये जावो यहांलों कि आनन्दसे सकल स्थिरता और धीरज दिखावो . (१२) और कि तुम पिताका धन्य मानो जिसने हमें पवित्र लोगोंका अधिकार जो ज्योतिमें है उस अधिकारके अंशके योग्य किया . (१३) और हमें अंधकारके बशसे छुड़ाके अपने प्रियतम पुत्रके राज्यमें लाया . (१४) जिसमें उसके लोहूके द्वारा हमें उद्धार अर्थात पापमोचन मिलता है ।

[प्रभु यीशुका माहात्म्य ।]

(१५) वह तो अदृश्य ईश्वरकी प्रतिमा और सारी सृष्टिपर पहिलौठा है . (१६) क्योंकि उससे सब कुछ सृजा गया वह जो स्वर्गमें है और वह जो पृथिवीपर है दृश्य और अदृश्य क्या सिंहासन क्या प्रभुताएं क्या प्रधानताएं क्या अधिकार सब कुछ उसके द्वारासे और उसके लिये सृजा गया है । (१७) और वही सबके आगे है और सब कुछ उसीसे बना रहता है । (१८) और वही देहका अर्थात मंडलीका सिर है कि वह आदि है और मृतकोंमेंसे पहिलौठा जिस्तें सब बातों में वही प्रधान होय । (१९) क्योंकि ईश्वरकी इच्छा थी कि उसमें समस्त पूर्णता बास करे . (२०) और कि उसके क्रूशके लोहूके द्वारासे मिलाप करके उसीके द्वारा सब कुछ चाहे वह जो पृथिवीपर है चाहे वह जो स्वर्गमें है अपनेसे मिलावे ।

(२१) और तुम्हें जो आगे नियारे किये हुए थे और अपनी बुद्धिसे बुरे कर्म्मोंमें रहके बैरी थे उसने अभी उसके मांसके देहमें मृत्युके द्वारासे मिला लिया है . (२२) कि तुम्हें अपने सन्मुख पवित्र औ निष्कलंक औ निर्दोष खड़ा करे . (२३) जो

ऐसाही है कि तुम विश्वासमें नेव दिये हुए दृढ़ रहते हो और सुसमाचार जो तुमने सुना उसकी आशासे हटाये नहीं जाते . वह सुसमाचार जो आकाशके नीचेकी सारी सृष्टिमें प्रचार किया गया जिसका मैं पावल सेवक बना ।

[पावलके दुःखों और क्लेशोंका बर्णन जो वह कलस्सीयोंके लिये उठाता था ।]

(२४) और मैं अब उन दुःखोंमें जो मैं तुम्हारे लिये उठाता हूं आनन्द करता हूं और ख्रीष्टके क्लेशोंकी जो घटी है सो उसके देहके लिये अर्थात मंडलीके लिये अपने शरीरमें पूरी करता हूं। (२५) उस मंडलीका मैं ईश्वरके भंडारीपनके अनुसार जो तुम्हारे लिये मुझे दिया गया सेवक बना कि ईश्वरके बचनको सम्पूर्ण प्रचार करूं. (२६) अर्थात उस भेदको जो आदि से और पीढ़ी पीढ़ी गुप्त रहा परन्तु अब उसके पवित्र लोगोंपर प्रगट किया गया है . (२७) जिन्हें ईश्वरने बताने चाहा कि अन्यदेशियोंमें इस भेदकी महिमाका धन क्या है अर्थात तुम्हों में ख्रीष्ट जो महिमाकी आशा है. (२८) जिसे हम प्रचार करते हैं और हर एक मनुष्यको चिताते हैं और समस्त ज्ञानसे हर एक मनुष्यको सिखाते हैं जिस्तें हर एक मनुष्यको ख्रीष्ट यीशुमें सिद्ध करके आगे खड़ा करें। (२९) और इसके लिये मैं उसके उस कार्य्यके अनुसार जो मुझमें सामर्थ्य सहित गुण करता है उद्योग करके परिश्रम भी करता हूं ।

२ क्योंकि मैं चाहता हूं कि तुम जानो कि तुम्हारे और उनके जो लाओदिकियामें हैं और जितनोंने शरीरमें मेरा मुंह नहीं देखा है सभोंके विषयमें मेरा कितना बड़ा उद्योग होता है . (२) इसलिये कि उनके मन शांत होवें और वे प्रेम में गठ जावें जिस्तें वे ज्ञानके निश्चयका सारा धन प्राप्त करें और ईश्वर पिताका और ख्रीष्टका भेद पहचानें. (३) जिसमें बुद्धि औ ज्ञानकी गुप्त सम्पत्ति सबकी सब धरी है ।

[ख्रीष्टमें बने रहनेका उपदेश ।]

(४) मैं यह कहता हूं न हो कि कोई तुम्हें फुसलाऊ बातों से धोखा देवे । (५) क्योंकि जो मैं शरीरमें तुमसे दूर रहता हूं तौभी आत्मामें तुम्हारे संग हूं और आनन्दसे तुम्हारी रीति विधि और ख्रीष्टपर तुम्हारे बिश्वासकी स्थिरता देखता हूं । (६) सो तुमने ख्रीष्ट यीशुको प्रभु करके जैसे ग्रहण किया वैसे उसीमें चलो । (७) और उसमें तुम्हारी जड़ बंधी हुई होय और तुम बनते जाओ और विश्वासमें जैसे तुम सिखाये गये वैसे दृढ़ होते जाओ और धन्यवाद करते हुए उसमें बढ़ते जाओ ।

(८) चौकस रहो कि कोई ऐसा न हो जो तुम्हें उस तत्त्वज्ञान और ब्यर्थ धोखेके द्वारासे धर ले जाय जो मनुष्योंके परम्पराई मतके अनुसार और संसारकी आदिशिक्षाके अनुसार है पर ख्रीष्टके अनुसार नहीं है । (९) क्योंकि उसमें ईश्वरत्वकी सारी पूर्णता सदेह बास करती है । (१०) और उसमें तुम परिपूर्ण हुए हो जो समस्त प्रधानता और अधिकारका सिर है . (११) जिसमें तुमने बिन हाथका किया हुआ खतना भी अर्थात शारीरिक पापोंके देहके उतारनेमें ख्रीष्टका खतना पाया . (१२) और बपतिसमा लेनेमें उसके संग गाड़े गये और उसी में ईश्वरके कार्य्यके बिश्वासके द्वारा जिसने उसको मृतकोंमें से उठाया संगही उठाये भी गये । (१३) और तुम्हें जो अपराधों में और अपने शरीरकी खतनाहीनतामें मृतक थे उसने उसके संग जिलाया कि उसने तुम्हारे सब अपराधोंको क्षमा किया . (१४) और विधियोंका लेख जो हमारे बिरुद्ध और हमसे बिपरीत था मिटा डाला और उसको कीलोंसे क्रूशपर ठोंकके मध्यमेंसे उठा दिया है . (१५) और प्रधानताओं और अधिकारों की सज्जा उतारके क्रूशपर उनपर जयजयकार करके उन्हें प्रगटमें दिखाया ।

[मिथ्या भक्ति और सांसारिक ज्ञानसे परे रहनेका उपदेश ।]

(१६) इसलिये खानेमें अथवा पीनेमें अथवा पर्ब्ब वा नये चान्दके दिन वा विश्रामके दिनोंके विषयमें कोई तुम्हारा विचार न करे . (१७) कि यह बातें आनेहारी बातोंकी छाया हैं परन्तु देह ख्रीष्टका है । (१८) कोई जो अपनी इच्छासे दीनताई और दूतोंकी पूजा करनेहारा होय तुम्हारा प्रतिफल हरण न करे जो उन बातोंमें जिन्हें नहीं देखा है घुस जाता है और अपने शारीरिक ज्ञानसे बृथा फुलाया जाता है . (१९) और सिरको धारण नहीं करता है जिससे सारा देह गांठों और बंधोंसे उपकार पाके और एक संग गठके ईश्वरके बढ़ावसे बढ़ जाता है । (२०) जो तुम ख्रीष्टके संग संसारकी आदिशिक्षाको ओर मर गये तो क्यों जैसे संसारमें जीते हुए उन विधियोंके वशमें हो जो मनुष्योंकी आज्ञाओं और शिक्षाओं के अनुसार हैं . (२१) कि मत छू और न चीख और न हाथ लगा . (२२) वस्तुओं जो काममें लानेसे सब नाश होनेहारी हैं । (२३) ऐसी विधियां निज इच्छाके अनुसारकी भक्तिसे और दीनतासे और देहको कष्ट देनेसे ज्ञानका नाम तो पाती हैं पर वे कुछ भी आदरके योग्य नहीं केवल शारीरिक स्वभाव को तृप्त करनेके लिये हैं ।

[ख्रीष्टके संग जिलाये हुओंके योग्य चाल चलनेका उपदेश ।]

३ सो जो तुम ख्रीष्टके संग जी उठे तो ऊपरकी वस्तुओं का खोज करो जहां ख्रीष्ट ईश्वरके दहिने हाथ बैठा हुआ है । (२) पृथिवीपरकी वस्तुओंपर नहीं परन्तु ऊपरकी वस्तुओंपर मन लगाओ । (३) क्योंकि तुम तो मूए और तुम्हारा जीवन ख्रीष्टके संग ईश्वरमें छिपाया गया है । (४) जब ख्रीष्ट जो हमारा जीवन है प्रगट होगा तब तुम भी उसके संग महिमा सहित प्रगट किये जाओगे ।

[अशुद्धता श्रो क्रोध श्रो झूठका निषेध ।]

(५). इसलिये अपने अंगोंको जो पृथिवीपर हैं व्यभिचार श्रो अशुद्धता श्रो कामना श्रो कुइच्छाको श्रार लोभको जो मूर्त्तिपूजा है मार डालो . (६) कि इनके कारण ईश्वरका क्रोध आज्ञा लंघन करनेहारों पर पड़ता है . (७) जिन्होंके बीचमें आगे जब तुम इनमें जोते थे तब तुम भी चलते थे । (८) पर अब तुम भी इन सब बातोंको क्रोध श्रो कोप श्रो वैरभावको श्रो निन्दा श्रो गालीको अपने मुंहसे दूर करो । (९) एक दूसरे से झूठ मत बोलो कि तुमने पुराने मनुष्यत्वको उसकी क्रियाश्रों समेत उतार डाला है . (१०) श्रार नयेको पहिन लिया है जो अपने सृजनहारके रूपके अनुसार ज्ञान प्राप्त करनेको नया होता जाता है । (११) उसमें यूनानी श्रार यिहूदी खतना किया हुश्रा श्रार खतनाहीन अन्यभाषियां स्कुथी दास श्रो निर्बन्ध नहीं है परन्तु ख्रीष्ट सब कुछ श्रार सभोंमें है ।

[दया क्षमा प्रेम श्रोर धन्यवादके विषयमें उपदेश ।]

(१२) सा ईश्वरके चुने हुए पवित्र श्रार प्यारे लोगोंको नाईं बड़ी करुणा श्रो कृपालुता श्रो दीनता श्रो नम्रता श्रो धीरज पहिन लेश्रो . (१३) श्रार एक दूसरेकी सह लेश्रो श्रार यदि किसीको किसीपर दोष देनेका हेतु होय तो एक दूसरेको क्षमा करो . जैसे ख्रीष्टने तुम्हें क्षमा किया तैसे तुम भी करो। (१४) पर इन सभोंके ऊपर प्रेमको पहिन लेश्रो जो सिद्धताका बंध है । (१५) श्रार ईश्वरकी शांति जिसके लिये तुम एक देहमें बुलाये भी गये तुम्हारे हृदयमें प्रबल होय श्रार धन्य माना करो । (१६) ख्रीष्टका वचन तुम्होंमें अधिकाईसे बसे श्रार गीतों श्रार भजनों श्रार आत्मिक गानोंमें समस्त ज्ञान सहित एक दूसरेको सिखाश्रो श्रार चिताश्रो श्रार अनुग्रह सहित अपने अपने मनमें प्रभुके आगे गान करो । (१७) श्रार

बचनसे अथवा कर्म्मसे जो कुछ तुम करो सब काम प्रभु यीशुके नामसे करो और उसके द्वारासे ईश्वर पिताका धन्य मानो ।

[पुरुष और स्त्री पिता औ पुत्र स्वामी औ दासके लिये उपदेश ।]

(१८) हे स्त्रियो जैसा प्रभुमें सोहता है तैसा अपने अपने स्वामीके अधीन रहो । (१९) हे पुरुषो अपनी अपनी स्त्रीको प्यार करो और उनकी ओर कड़वे मत होओ ।

(२०) हे लड़को सब बातोंमें अपने अपने माता पिता की आज्ञा मानो क्योंकि यह प्रभुको भावता है । (२१) हे पिताओ अपने अपने लड़कोंको मत खिजाओ न हो कि वे उदास होवें ।

(२२) हे दासो जो लोग शरीरके अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं मनुष्योंको प्रसन्न करनेहारोंकी नाईं मुंह देखी सेवासे नहीं परन्तु मनकी सीधाईसे ईश्वरसे डरते हुए सब बातोंमें उन की आज्ञा मानो । (२३) और जो कुछ तुम करो सब कुछ जैसे मनुष्योंके लिये सो नहीं परन्तु जैसे प्रभुके लिये अन्तःकरण से करो . (२४) क्योंकि जानते हो कि प्रभुसे तुम अधिकारका प्रतिफल पाओगे क्योंकि तुम प्रभु ख्रीष्टके दास हो । (२५) परन्तु अनीति करनेहारा जो अनीति उसने किई है तिसका फल पावेगा और पक्षपात नहीं है ।

४ हे स्वामियो अपने अपने दासोंसे न्याययुक्त और यथार्थ व्यवहार करो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारा भी स्वर्गमें स्वामी है ।

[प्रार्थना और शुभ चलनका उपदेश ।]

(२) प्रार्थनामें लगे रहो और धन्यबादके साथ उसमें जागते रहो । (३) और इसके संग हमारे लिये भी प्रार्थना करो कि ईश्वर हमारे लिये बात करनेका ऐसा द्वार खोल दे कि हम

ख्रीष्टका भेद जिसके कारण मैं बांधा भी गया हूं बोल देवें. (४) जिस्तें मैं जैसा मुझे बोलना उचित है वैसाही उसे प्रगट करूं। (५) बाहरवालोंकी ओर बुद्धिसे चलो और अपने लिये समयका लाभ करो। (६) तुम्हारा बचन सदा अनुग्रह सहित और लोणसे स्वादित होय जिस्तें तुम जानो कि हर एकको किस रीतिसे उत्तर देना तुम्हें उचित है।

[तुखिक और उनीसिम भाइयोंके भेजनेका कारण। नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति।]

(७) तुखिक जो प्यारा भाई और विश्वासयोग्य सेवक और प्रभुमें मेरा संगी दास है मेरा सब समाचार तुम्हें सुनावेगा. (८) कि मैंने उसे इसीके निमित्त तुम्हारे पास भेजा है कि वह तुम्हारे विषयमेंकी बातें जाने और तुम्हारे मनको शांति देवे। (९) उसे मैंने उनीसिमके संग जो विश्वासयोग्य और प्यारा भाई और तुम्हेंमेंका है भेजा है वे यहांका सब समाचार तुम्हे सुनावेंगे।

(१०) आरिस्तार्ख जो मेरा संगी बंधुआ है और मार्क जो बर्णबाका भाई लगता है जिसके विषयमें तुमने आज्ञा पाई. जो वह तुम्हारे पास आवे तो उसे ग्रहण करो. (११) और यीशु जो युस्त कहावता है इन तीनोंका तुमसे नमस्कार. खतना किये हुए लोगोंमेंसे केवल येही ईश्वरके राज्यके लिये मेरे सहकर्म्मी हैं जिनसे मुझे शांति हुई है। (१२) इपाफ्रा जो तुम्हेंमेंसे एक ख्रीष्टका दास है तुमसे नमस्कार कहता है और सदा तुम्हारे लिये प्रार्थनाओंमें उद्योग करता है कि तुम ईश्वरकी सारी इच्छामें सिद्ध और परिपूर्ण बने रहो। (१३) क्योंकि मैं उसका साक्षी हूं कि तुम्हारे लिये और उनके लिये जो लाओदिकेयामें हैं और उनके लिये जो हियरापलिमें हैं उसका बडा अनुराग है। (१४) लूकका जो प्यारा वैद्य है और दीमाका

तुमसे नमस्कार। (१५) लाओदिकेयामेंके भाइयोंको और नुम्फाको और उसके घरमेंकी मंडलीको नमस्कार। (१६) और जब यह पत्री तुम्हारे यहां पढ़ लिई जाय तब ऐसा करो कि लाओदिकियोंकी मंडलीमें भी पढ़ी जाय और कि तुम भी लाओदिकेयाकी पत्री पढ़ो। (१७) और अर्खिपसे कहो जो सेवकाई तूने प्रभुमें पाई है उसे देखता रह कि तू उसे पूरी करे। (१८) मुझ पावलका अपने हाथका लिखा हुआ नमस्कार. मेरे बंधनोंकी सुध लेओ. अनुग्रह तुम्हारे संग होवे। आमीन॥

थिसलोनिकियोंको पावल प्रेरितकी पहिली पत्री ।

[पत्रीका आभाष ।]

१ पावल और सीला और तिमोथिय थिसलोनिकियोंकी मंडलीको जो ईश्वर पिता और प्रभु यीशु ख्रीष्टमें है . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले ।

[थिसलोनिकियोंके विषयमें पावलका धन्यवाद और उनके सुसमाचार ग्रहण करनेका बखान ।]

(२) हम अपनी प्रार्थनाओंमें तुम्हें स्मरण करते हुए नित्य तुम सभोंके विषयमें ईश्वरका धन्य मानते हैं . (३) क्योंकि हम अपने पिता ईश्वरके आगे तुम्हारे बिश्वासके कार्य्य और प्रेमके परिश्रमको और हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टमें आशाकी धीरताको निरन्तर स्मरण करते हैं । (४) और हे भाइयो ईश्वरके प्यारो हम तुम्हारा चुन लिया जाना जानते हैं । (५) क्योंकि हमारा सुसमाचार केवल बचनसे नहीं परन्तु सामर्थ्यसे भी और पवित्र आत्मासे और बड़े निश्चयसे तुम्हारे पास पहुंचा जैसा तुम जानते हो कि तुम्हारे कारण हम तुम्होंमें कैसे बने । (६) और तुम लोग बड़े क्लेशके बीचमें पवित्र आत्माके आनन्दसे बचनको ग्रहण करके हमोंके और प्रभुके अनुगामी बने . (७) यहांलों कि माकिदोनिया और आखायामेंके सब बिश्वासियोंके लिये तुम दृष्टान्त हुए । (८) क्योंकि न केवल माकिदोनिया और आखायामें तुम्हारी ओरसे प्रभुके बचनका ध्वनि फैल गया परन्तु हर एक स्थानमें भी तुम्हारे

विश्वासका जो ईश्वरपर है चर्चा हो गया है यहांलों कि हमें कुछ बोलनेका प्रयोजन नहीं है। (९) क्योंकि वे आपही हमारे विषयमें बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना किस प्रकारका था और तुम क्योंकर मूरतोंसे ईश्वरकी ओर फिरे जिस्तें जीवते और सच्चे ईश्वरकी सेवा करो . (१०) और स्वर्ग से उसके पुत्रकी जिसे उसने मृतकोंमेंसे उठाया बाट देखो अर्थात यीशुकी जो हमें आनेवाले क्रोधसे बचानेहारा है।

[थिसलोनिकियोंके बीचमें पावलके उपदेशकी रीति।]

२ हे भाइयो तुम्हारे पास हमारे आनेके बिषयमें तुम आपही जानते हो कि वह व्यर्थ नहीं था। (२) परन्तु आगे फिलिपीमें जैसा तुम जानते हो दुःख पाके और दुर्दशा भोगके हमने ईश्वरका सुसमाचार बहुत रगड़े झगड़ेमें तुम्हें सुनानेको अपने ईश्वरसे साहस पाया। (३) क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रमसे और न अशुद्धतासे और न छलके साथ है . (४) परन्तु जैसा ईश्वरको अच्छा देख पड़ा है कि सुसमाचार हमें सौंपा जाय तैसा हम बोलते हैं अर्थात जैसे मनुष्योंको प्रसन्न करते हुए सो नहीं परन्तु ईश्वरको जो हमोंके मनको जांचता है। (५) क्योंकि हम न तो कभी लल्लोपत्तोकी बात किया करते थे जैसा तुम जानते हो और न लोभके लिये बहाना करते थे ईश्वर साक्षी है। (६) और यद्यपि हम ख्रीष्टके प्रेरित होके मर्य्यादा ले सकते तौभी हम मनुष्योंसे चाहे तुम्होंसे चाहे दूसरोंसे आदर नहीं चाहते थे। (७) परन्तु तुम्हारे बीचमें हम ऐसे कोमल बने जैसी माता अपने बालकों को दूध पिला पोसता है। (८) वैसेही हम तुम्होंसे स्नेह करते हुए तुम्हें केवल ईश्वरका सुसमाचार नहीं परन्तु अपना अपना प्राण भी बांट देनेको प्रसन्न थे इसलिये कि हमारे तुम प्यारे बन गये। (९) क्योंकि हे भाइयो तुम हमारे परिश्रम

और क्लेशको स्मरण करते हो कि तुममेंसे किसीपर भार न देनेके लिये हमने रात औ दिन कमाते हुए तुम्होंमें ईश्वर का सुसमाचार प्रचार किया । (१०) तुम लोग साक्षी हो और ईश्वर भी कि तुम्होंके आगे जो विश्वासी हो हम कैसी पवित्रता औ धर्म्म औ निर्दोषतासे चले । (११) जैसे तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने लड़कोंको तैसे हम तुम्होंमेंसे एक एकको क्योंकर उपदेश औं शांति औ साक्षी देते थे. (१२) जिस्तें तुम ईश्वरके योग्य चलो जो तुम्हें अपने राज्य और ऐश्वर्य्यमें बुलाता है ।

(१३) इस कारणसे हम निरन्तर ईश्वरका धन्य भी मानते हैं कि तुमने जब ईश्वरके समाचारका वचन हमसे पाया तब मनुष्योंका वचन नहीं पर जैसा सचमुच है ईश्वरका वचन ग्रहण किया जो तुम्होंमें जो विश्वास करते हो गुण भी करता है । (१४) क्योंकि हे भाइयो ख्रीष्ट यीशुमें ईश्वरकी मंडलियां जो यिहूदियामें हैं उनके तुम अनुगामी बने कि तुमने अपने स्वदेशियोंसे वैसाही दुःख पाया जैसा उन्होंने भी यिहूदियोंसे. (१५) जिन्होंने प्रभु यीशुको और भविष्यद्वक्ताओंको मार डाला और हमोंको सताया और ईश्वरको प्रसन्न नहीं करते हैं और सब मनुष्योंके विरुद्ध हैं. (१६) कि वे अन्यदेशियोंसे उनके त्राणके लिये बात करनेसे हमें वर्जते हैं जिस्तें नित्य अपने पापोंको पूरा करें. परन्तु उनपर क्रोध अत्यन्त लों पहुंचा है ।

[उनसे पावलकी बड़ी प्रीति और उनका समाचार सुनके उसका आनन्दित होना ।]

(१७) पर हे भाइयो हमोंने हृदयमें नहीं पर देहमें थोडी वेरलों तुमसे अलग किये जाके बहुत अधिक करके तुम्हारा मुंह देखनेको बडी अभिलाषासे यत्न किया । (१८) इसलिये हमने अर्थात मुझ पावलने एक बेर और दो बेर भी तुम्हारे पास आनेकी इच्छा किई और शैतानने हमें रोका । (१९) क्योंकि

हमारी आशा अथवा आनन्द अथवा बड़ाईका मुकुट क्या है. क्या तुम भी हमारे प्रभु योशु खीष्टके आगे उसके आनेपर नहीं हो । (२०) तुम तो हमारी बड़ाई और आनन्द हो ।

३ इस कारण जब हम और सह न सके तब हमने आथीनीमें अकेले छोड़े जानेको अच्छा जाना . (२) और तिमोथियको जो हमारा भाई और ईश्वरका सेवक और खीष्टके सुसमाचारमें हमारा सहकर्म्मी है तुम्हें स्थिर करनेको और तुम्हारे विश्वासके विषयमें तुम्हें समझानेको भेजा. (३) जिस्तें कोई इन क्लेशोंमें डगमगा न जाय क्योंकि तुम आप जानते हो कि हम इसके लिये ठहराये हुए हैं। (४) क्योंकि जब हम तुम्हारे यहां थे तब भी तुमको आगेसे कहते थे कि हम तो क्लेश पावेंगे जैसा हुआ भी है और तुम जानते हो । (५) इस कारणसे जब मैं और सह न सका तब तुम्हारा विश्वास बूझनेको भेजा ऐसा न हो कि किसी रीतिसे परीक्षा करनेहारेने तुम्हारी परीक्षा किई और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो ।

(६) पर अभी तिमोथिय जो तुम्हारे पाससे हमारे यहां आया है और तुम्हारे विश्वास और प्रेमका सुसमाचार हमारे पास लाया है और यह कि तुम नित्य भली रीतिसे हमें स्मरण करते हो और हमें देखनेकी लालसा करते हो जैसे हम भी तुम्हें देखनेकी लालसा करते हैं. (७) तो इस हेतुसे हे भाइयो तुम्हारे विश्वासके द्वारासे हमने अपने सारे क्लेश औ दरिद्रता में तुम्हारे विषयमें शांति पाई है । (८) क्योंकि अब जो तुम प्रभुमें दृढ़ रहो तो हम जीवते हैं। (९) क्योंकि हम धन्यबाद का कौनसा फल तुम्हारे विषयमें ईश्वरको इस सारे आनन्द के लिये दे सकते हैं जिस करके हम तुम्हारे कारण अपने ईश्वरके आगे आनन्द करते हैं. (१०) कि रात औ दिन हम

अत्यन्त विन्ती करते हैं कि तुम्हारा मुंह देखें और तुम्हारे बिश्वासकी जो घटी है उसे पूरी करें।

(११) हमारा पिता ईश्वर आपही और हमारा प्रभु यीशु ख्रीष्ट तुम्हारी ओर हमारा मार्ग सीधा करे। (१२) पर तुम्हें प्रभु एक दूसरेकी ओर और सभोंकी ओर प्रेममें अधिकाई देवे और उभारे जैसे हम भी तुम्हारी ओर उभरते हैं. (१३) जिस्तें वह तुम्हारे मनको स्थिर करे और हमारे पिता ईश्वरके आगे हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके अपने सब पवित्रोंके संग आनेपर पवित्रताईमें निर्दोष भी करे।

[पवित्रता और भ्रात्रीय प्रेम और अच्छा धन्धा करनेका उपदेश।]

४ सो हे भाइयो अन्तमें हम प्रभु यीशुमें तुम्हें विन्ती और उपदेश करते हैं कि जैसा तुमने हमसे पाया कि किस रीतिसे चलना और ईश्वरको प्रसन्न करना तुम्हें उचित है तुम अधिक बढ़ते जाओ। (२) क्योंकि तुम जानते हो कि हमने प्रभु यीशुकी ओरसे कौन कौन आज्ञा तुम्हें दिईं। (३) क्योंकि ईश्वरकी इच्छा यह है अर्थात तुम्हारी पवित्रता कि तुम व्यभिचारसे परे रहो. (४) कि तुममेंसे हर एक अपने अपने पात्रको उन अन्यदेशियोंकी नाईं जो ईश्वरको नहीं जानते हैं कामाभिलाषासे रखे सो नहीं. (५) परन्तु पवित्रता और आदरसे रखने जाने. (६) कि इस बातमें कोई अपने भाई को न ठगे और न उसपर दांव चलावे क्योंकि जैसा हमने आगे तुमसे कहा और साक्षी भी दिई तैसा प्रभु इन सब बातों के विषयमें पलटा लेनेहारा है। (७) क्योंकि ईश्वरने हमोंको अशुद्धताके लिये नहीं परन्तु पवित्रतामें बुलाया। (८) इस कारण जो तुच्छ जानता है सो मनुष्यको नहीं परन्तु ईश्वरको जिसने अपना पवित्र आत्मा भी हमें दिया तुच्छ जानता है।

(९) भ्रात्रीय प्रेमके विषयमें तुम्हें प्रयोजन नहीं है कि मैं

तुम्हारे पास लिखूं क्योंकि एक दूसरेको प्यार करनेको तुम आप ही ईश्वरके सिखाये हुए हो । (१०) क्योंकि तुम सारे माकिदोनियाके सब भाइयोंकी ओर सोई करते भी हो परन्तु हे भाइयो हम तुमसे विन्ती करते हैं कि अधिक बढ़ते जाओ । (११) और जैसे हमने तुम्हें आज्ञा दिई तैसे चैनसे रहनेका और अपना अपना काम करनेका और अपने अपने हाथोंसे कमानेका यत्न करो । (१२) जिस्तें तुम बाहरवालोंकी ओर शुभ रीतिसे चलो और तुम्हें किसी वस्तुकी घटती न होय ।

[मृतकोंके जी उठने और प्रभुके दिनके आनेका वर्णन ।]

(१३) हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम उनके विषयमें जो सोये हुए हैं अनजान रहो न हो कि तुम औरोंके समान जिन्हें आशा नहीं है शोक करो । (१४) क्योंकि जो हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी उठा तो वैसेही ईश्वर उन्हें भी जो यीशुमें सोये हैं उसके संग लावेगा । (१५) क्योंकि हम प्रभुके वचनके अनुसार तुमसे यह कहते हैं कि हम जो जीवते और प्रभुके आने लों बच जाते हैं उनके आगे जो सोये हैं नहीं बढ़ चलेंगे । (१६) क्योंकि प्रभु आपही ऊंचे शब्द सहित प्रधान दूतके शब्द सहित और ईश्वरकी तुरही सहित स्वर्गसे उतरेगा और जो स्त्रीष्टमें मूए हैं सोई पहिले उठेंगे । (१७) तब हम जो जीवते और बच जाते हैं एक संग उनके साथ प्रभुसे मिलनेको मेघोंमें आकाशपर उठा लिये जायेंगे और इस रीतिसे हम सदा प्रभुके संग रहेंगे । (१८) सो इन बातोंसे एक दूसरेको शांति देओ ।

५ पर हे भाइयो कालों और समयोंके विषयमें तुम्हें प्रयोजन नहीं है कि तुम्हारे पास कुछ लिखा जाय । (२) क्योंकि तुम आप ठीक करके जानते हो कि जैसा रातको चोर तैसाही प्रभुका दिन आता है । (३) क्योंकि जब लोग कहेंगे कुशल है

और कुछ भय नहीं तब जैसी गर्भवतीपर प्रसवकी पीड़ तैसा उनपर बिनाश अचांचक आ पड़ेगा और वे किसी रीतिसे नहीं बचेंगे । (४) पर हे भाइयो तुम तो अंधकारमें नहीं हो कि तुमपर वह दिन चोरकी नाईं आ पड़े । (५) तुम सब ज्योतिके सन्तान और दिनके सन्तान हो . हम न रातके न अंधकारके हैं । (६) इसलिये हम औरोंके समान सोवें सो नहीं परन्तु जागें और सचेत रहें । (७) क्योंकि सोनेहारे रात को सोते हैं और मतवाले लोग रातको मतवाले होते हैं । (८) पर हम जो दिनके हैं तो विश्वास और प्रेमकी झिलम और टोप अर्थात त्राणकी आशा पहिनके सचेत रहें । (९) क्योंकि ईश्वरने हमें क्रोधके लिये नहीं पर इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु ख्रीष्टके द्वारासे त्राण प्राप्त करें . (१०) जो हमारे लिये मरा कि हम चाहे जागें चाहे सोवें एक संग उस के साथ जीवें । (११) इस कारण एक दूसरेको शांति देओ और एक दूसरेको सुधारो जैसे तुम करते भी हो ।

[उपदेशकोंका आदर करने और नाना धर्म्म क्रियाओंका उपदेश ।]

(१२) हे भाइयो हम तुमसे बिन्ती करते हैं कि जो तुम्हों में परिश्रम करते हैं और प्रभुमें तुमपर अध्यक्षता करते हैं और तुम्हें चिताते हैं उन्हें पहचान रखो . (१३) और उनके कामके कारण उन्हें अत्यन्त प्रेमके योग्य समझो . आपसमें मिले रहो ।

(१४) और हे भाइयो हम तुमसे बिन्ती करते हैं अनरीतिसे चलनेहारोंको चिताओ कायरोंको शांति देओ दुर्ब्बलोंको संभालो सभोंकी ओर धीरजवन्त होओ । (१५) देखो कि कोई किसी से बुराईके बदले बुराई न करे परन्तु सदा एक दूसरेकी ओर और सभोंकी ओर भी भलाईकी चेष्टा करो । (१६) सदा आनन्दित रहो । (१७) निरन्तर प्रार्थना करो । (१८) हर बातमें

धन्य मानो क्योंकि तुम्हारे विषयमें यही ख्रीष्ट यीशुमें ईश्वरकी इच्छा है । (१९) आत्माको निबृत्त मत करो । (२०) भविष्यद्वाणियां तुच्छ मत जानो । (२१) सब बातें जांचो अच्छोको धर लेओ । (२२) सब प्रकारकी बुराईसे परे रहो । (२३) शांतिका ईश्वर आपही तुम्हें सम्पूर्ण पवित्र करे और तुम्हारा सम्पूर्ण आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके आनेपर निर्दोष रखा जाय । (२४) तुम्हारा बुलानेहारा विश्वासयोग्य है और वही यह करेगा ।

[पत्रीकी समाप्ति ।]

(२५) हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना करो । (२६) सब भाइयोंको पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो । (२७) मैं तुम्हें प्रभुकी किरिया देता हूं कि यह पत्री सब पवित्र भाइयोंको पढ़के सुनाई जाय । (२८) हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह तुम्हारे संग होवे । आमीन ॥

थिसलोनिकियोंको पावल प्रेरितकी
दूसरी पत्री।

[पत्रीका आभाय।]

१ पावल और सीला और तिमोथिय थिसलोनिकियोंकी मंडलीको जो हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टमें है. (२) तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।

[थिसलोनिकियोंके विश्वास औ प्रेम औ दृढ़ताईके विषयमें पावलादिका धन्यवाद। उनके लिये प्रार्थना।]

(३) हे भाइयो तुम्हारे विषयमें नित्य ईश्वरका धन्य मानना हमें उचित है जैसा योग्य है क्योंकि तुम्हारा बिश्वास बहुत बढ़ता है और एक दूसरेकी ओर तुम सभोंमेंसे हर एकका प्रेम अधिक होता जाता है. (४) यहांलों कि सब उपद्रवोंमें जो तुमपर पड़ते हैं और क्लेशोंमें जो तुम सहते हो तुम्हारा जो धीरज और बिश्वास है उसके लिये हम आपही ईश्वर की मंडलियोंमें तुम्हारे विषयमें बड़ाई करते हैं।

(५) यह तो ईश्वरके यथार्थ बिचारका प्रमाण है जिस्तें तुम ईश्वरके राज्यके योग्य गिने जावो जिसके लिये तुम दुःख भी उठाते हो। (६) क्योंकि यह तो ईश्वरके न्यायके अनुसार है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं उन्हें प्रतिफलमें क्लेश देवे. (७) और तुम्हें जो क्लेश पाते हो हमारे संग उस समयमें चैन देवे जिस समय प्रभु यीशु स्वर्गसे अपने सामर्थ्यके दूतों के संग धधकती आगमें प्रगट होगा. (८) और जो लोग ईश्वरको नहीं जानते हैं और जो लोग हमारे प्रभु यीशु

ख्रीष्टके सुसमाचारको नहीं मानते हैं उन्हें दंड देगा . (९) कि वे तो प्रभुके सन्मुखसे और उसकी शक्तिके तेजकी ओरसे उस दिन अनन्त विनाशका दंड पावेंगे . (१०) जिस दिन वह अपने पवित्र लोगोंमें तेजोमय और सब बिश्वास करनेहारोंमें आश्चर्य्य दिखाई देनेको आवेगा . कि हमने तुमको जो साक्षी दिई उसपर विश्वास तो किया गया ।

(११) इस निमित्त हम नित्य तुम्हारे विषयमें प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा ईश्वर तुम्हें इस बुलाहटके योग्य समझे और भलाईकी सारी सुइच्छाको और बिश्वासके कार्य्यको सामर्थ्य सहित पूरा करे . (१२) जिस्तें तुम्होंमें हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके नामकी महिमा और उसमें तुम्हारी महिमा हमारे ईश्वरके और प्रभु यीशु ख्रीष्टके अनुग्रहके समान प्रगट किई जाय ।

[ख्रीष्टके दिनके आनेका ब्योरा और पापपुरुषके प्रगट होनेकी भविष्यद्वाणी और जो लोग उस पुरुषसे धोखा खायें उनकी दुर्गति ।]

२ पर हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके आनेके और हमोंके उस पास एकट्ठे होनेके बिषयमें हम तुमसे बिन्ती करते हैं . (२) कि अपना अपना मन शीघ्र डिगने न देओ और आत्माके द्वारा अथवा बचनके द्वारा अथवा पत्रीके द्वारा जैसे हमारी ओरसे होते घबरा न जाओ कि मानो ख्रीष्टका दिन आ पहुंचा है । (३) कोई तुम्हें किसी रीतिसे न छले क्योंकि जबलों धर्म्मत्याग न हो लेवे और वह पापपुरुष अर्थात विनाशका पुत्र (४) जो बिरोध करनेहारा और सब पर जो ईश्वर अथवा पूज्य कहावता है अपनेको ऊंचा करनेहारा है यहांलों कि वह ईश्वरके मन्दिरमें ईश्वरकी नाईं बैठके अपनेको ईश्वर करके दिखावे प्रगट न होय तबलों वह दिन नहीं पहुंचेगा । (५) क्या तुम्हें सुरत नहीं कि जब मैं

तुम्हारे यहां था तब भी मैंने यह बातें तुमसे कहीं। (६) और अब तुम उस बस्तुको जानते हो जो इसलिये रोकती है कि वह अपनेही समयमें प्रगट होवे। (७) क्योंकि अधर्म्मका भेद अब भी कार्य्य करता है पर केवल जबलों वह जो अभी रोकता है टल न जावे। (८) और तब वह अधर्म्मी प्रगट होगा जिसे प्रभु अपने मुंहके पवनसे नाश करेगा और अपने आनेके प्रकाशसे लोप करेगा. (९) अर्थात वह अधर्म्मी जिसका आना शैतानके कार्य्यके अनुसार झूठके सब प्रकारके सामर्थ्य और चिन्हों और अद्भुत कामोंके साथ. (१०) और उन्होंमें जो नष्ट होते हैं अधर्म्मके सब प्रकारके छलके साथ है इस कारण कि उन्होंने सच्चाईके प्रेमको नहीं ग्रहण किया कि उनका त्राण होता। (११) और इस कारणसे ईश्वर उनपर भ्रांतिकी प्रबलता भेजेगा कि वे झूठका बिश्वास करें. (१२) जिस्तें सब लोग जिन्होंने सच्चाईका बिश्वास न किया परन्तु अधर्म्मसे प्रसन्न हुए दंडके योग्य ठहरें।

(१३) पर हे भाइयो प्रभुके प्यारो तुम्हारे विषयमें नित्य ईश्वरका धन्य मानना हमें उचित है कि ईश्वरने आदिसे तुम्हें आत्माकी पवित्रता और सच्चाईके बिश्वासके द्वारा त्राण पानेको चुन लिया. (१४) और इसके लिये तुम्हें हमारे सुसमाचारके द्वारासे बुलाया जिस्तें तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टकी महिमाको प्राप्त करो। (१५) इसलिये हे भाइयो दृढ़ रहो और जो बातें तुमने हमारे चाहे बचनके द्वारा चाहे पत्रीके द्वारा सीखीं उन्हें धारण करो। (१६) हमारा प्रभु यीशु ख्रीष्ट आपही और हमारा पिता ईश्वर जिसने हमें प्यार किया और अनुग्रहसे अनन्त शांति और अच्छी आशा दिई है. (१७) तुम्हारे मनको शांति देवे और तुम्हें हर एक अच्छे बचन और कर्म्ममें स्थिर करे।

[कई एक उपदेश और शांतिकी बातें ।]

३ अन्तमें हे भाइयो यह कहता हूं कि हमारे लिये प्रार्थना करो कि प्रभुका वचन जैसा तुम्हारे यहां फैलता है तैसाही शीघ्र फैले और तेजोमय ठहरे. (२) और कि हम अविचारी और दुष्ट मनुष्योंसे बच जायें क्योंकि बिश्वास सभोंको नहीं है। (३) परन्तु प्रभु विश्वासयोग्य है जो तुम्हें स्थिर करेगा और दुष्टसे बचाये रहेगा। (४) और हम प्रभुमें तुम्हारे विषयमें भरोसा रखते हैं कि जो कुछ हम तुम्हें आज्ञा देते हैं उसे तुम करते हो और करोगे भी। (५) प्रभु तो ईश्वरके प्रेमकी ओर और खीष्टके धीरजकी ओर तुम्हारे मनकी अगवाई करे।

(६) हे भाइयो हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु खीष्टके नामसे आज्ञा देते हैं कि हर एक भाईसे जो अनरीतिसे चलता है और जो शिक्षा उसने हमसे पाई उसके अनुसार नहीं चलता है अलग हो जाओ। (७) क्योंकि तुम आप जानते हो कि किस रीतिसे हमारे अनुगामी होना उचित है क्योंकि हम तुम्होंमें अनरीतिसे नहीं चले. (८) और सेंतकी रोटी किसीके यहांसे न खाई परन्तु परिश्रम और क्लेशसे रात औ दिन कमाते थे कि तुममेंसे किसीपर भार न देवें। (९) यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं है परन्तु इसलिये कि अपनेको तुम्हारे कारण दृष्टान्त कर देवें जिस्तें तुम हमारे अनुगामी होओ। (१०) क्योंकि जब हम तुम्हारे यहां थे तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई कमाने नहीं चाहता है तो खाना भी न खाय। (११) क्योंकि हम सुनते हैं कि कितने लोग तुम्होंमें अनरीतिसे चलते हैं और कुछ कमाते नहीं परन्तु औरोंके काममें हाथ डालते हैं। (१२) ऐसोंको हम आज्ञा देते हैं और अपने प्रभु यीशु खीष्टकी ओरसे उपदेश करते हैं कि वे चैनसे कमाके अपनीही रोटी खाया करें। (१३) और तुम हे

भाइयो सुकर्म्म करनेमें कातर मत होओ । (१४) यदि कोई इस पत्रीमेंका हमारा बचन नहीं मानता है उसे चीन्ह रखो और उसकी संगति मत करो जिस्तें वह लज्जित होय । (१५) तौभी उसे बैरीसा मत समझो परन्तु भाई जानके चिताओ ।

[पत्रीकी समाप्ति ।]

(१६) शांतिका प्रभु आपही नित्य तुम्हें सर्बथा शांति देवे. प्रभु तुम सभोंके संग होवे । (१७) मुझ पावलका अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार जो हर एक पत्रीमें चिन्ह है . मैं यूंही लिखता हू । (१८) हमारे प्रभु यीशु खीष्टका अनुग्रह तुम सभोंके संग होवे । आमीन ॥

तिमोथियको पावल प्रेरितकी पहिली पत्री ।

[पत्रीका आभाष ।]

१ पावल जो हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वरकी और हमारी आशा प्रभु यीशु ख्रीष्टकी आज्ञाके अनुसार यीशु ख्रीष्टका प्रेरित है विश्वासमें अपने सच्चे पुत्र तिमोथियको . (२) तुझे हमारे पिता ईश्वर और हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशुसे अनुग्रह और दया और शांति मिले ।

[विवादियोंका वर्णन और व्यवस्थाका अभिप्राय ।]

(३) जैसे मैंने माकिदोनियाको जाते हुए तुझसे बिन्ती किई [तैसे फिर कहता हूं] कि इफिसमें रहियो जिस्तें तू कितनोंको आज्ञा देवे कि आन आन उपदेश मत किया करो. (४) और कहानियोंपर और अनन्त बंशावलियोंपर मन मत लगाओ जिनसे ईश्वरके भंडारीपनका जो बिश्वासके विषयमें है निबाह नहीं होता है परन्तु और भी बिबाद उत्पन्न होते हैं । (५) धर्म्माज्ञाका अन्त वह प्रेम है जो शुद्ध मनसे और अच्छे विवेकसे और निष्कपट बिश्वाससे होता है . (६) जिनसे कितने लोग भटकके बकवादको ओर फिर गये हैं . (७) जो व्यवस्थापक हुआ चाहते हैं परन्तु न वह बातें बूझते जो वे कहते हैं और न यह जानते हैं कि कौनसी बातोंके विषयमें दृढ़तासे बोलते हैं । (८) पर हम जानते हैं कि व्यवस्था यदि कोई उसको विधिके अनुसार यह जानके काममें लावे तो अच्छी है ; (९) कि व्यवस्था धर्म्मी जनके लिये नहीं ठहराई गई है परन्तु अधर्म्मी और निरंकुश लोगोंके लिये भक्तिहीनों और पापियोंके लिये अपवित्र और अशुद्ध लोगोंके लिये पितृघातकों

औ मातृघातकोंके लिये . (१०) मनुष्यघातकों व्यभिचारियों पुरुषगामियों मनुष्यबिक्रइयों झूठों और झूठी किरिया खानेहारोंके लिये है और यदि दूसरा कोई कर्म्म हो जो खरे उपदेशके बिरुद्ध है तो उसके लिये भी है . (११) परमधन्य ईश्वरकी महिमाके सुसमाचारके अनुसार जो मुझे सोंपा गया।

[परमेश्वरका बड़ा अनुग्रह जो पावलपर हुआ तिसका बर्णन ।]

(१२) और मैं ख्रीष्ट यीशु हमारे प्रभुका जिसने मुझे सामर्थ्य दिया धन्य मानता हूं कि उसने मुझे बिश्वासयोग्य समझा और सेवकाईके लिये ठहराया . (१३) जो आगे निन्दक और सतानेहारा और उपद्रवी था परन्तु मुझपर दया किई गई क्योंकि मैंने अबिश्वासतामें अज्ञानतासे ऐसा किया। (१४) और हमारे प्रभुका अनुग्रह बिश्वासके साथ और प्रेमके साथ जो ख्रीष्ट यीशुमें है बहुत अधिकाईसे हुआ। (१५) यह बचन बिश्वासयोग्य और सर्ब्बथा ग्रहणयोग्य है कि ख्रीष्ट यीशु पापियोंको बचानेके लिये जगतमें आया जिन्होंमें मैं सबसे बड़ा हूं। (१६) परन्तु मुझपर इसी कारणसे दया किई गई कि मुझमें सबसे अधिक करके यीशु ख्रीष्ट समस्त धीरज दिखावे कि यह उन लोगोंके लिये जो उसपर अनन्त जीवनके लिये बिश्वास करनेवाले थे एक नमूना होवे। (१७) सनातन कालके अबिनाशी और अदृश्य राजाको अर्थात अद्वैत बुद्धिमान ईश्वर को सदा सर्ब्बदा प्रतिष्ठा और गुणानुवाद होवे . आमीन ।

[तिमोथियको दृढ़ताईका उपदेश देना ।]

(१८) यह आज्ञा हे पुत्र तिमोथिय मैं उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो तेरे विषयमें आगेसे किई गईं तुझे सोंप देता हूं कि तू उन्होंकी सहायतासे अच्छी लड़ाईका योद्धा होय . (१९) और बिश्वासको और अच्छे बिवेकको रखे जिसे त्यागने से कितनोंके बिश्वासका जहाज मारा गया। (२०) इन्होंमेंसे

हुमिनई और सिकन्दर हैं जिन्हें मैंने शैतानको सोंप दिया कि वे ताड़ना पाके सीखें कि निन्दा न करें ।

[प्रार्थना करनेका उपदेश और यीशुके मध्यस्थ होनेका वर्णन ।]

२ सो मैं सबसे पहिले यह उपदेश करता हूं कि बिन्ती औ प्रार्थना औ निवेदन औ धन्यबाद सब मनुष्योंके लिये किये जावें . (२) राजाओंके लिये भी और सभोंके लिये जिन का ऊंच पद है इसलिये कि हम बिश्राम और चैनसे सारी भक्ति और गंभीरतामें अपना अपना जन्म बितावें । (३) क्योंकि यह हमारे चाणकर्त्ता ईश्वरको अच्छा लगता और भावता है . (४) जिसकी इच्छा यह है कि सब मनुष्य चाण पावें और सत्यके ज्ञानलों पहुंचें । (५) क्योंकि एकही ईश्वर है और ईश्वर और मनुष्योंका एकही मध्यस्थ है अर्थात खीष्ट यीशु जो मनुष्य है . (६) जिसने सभोंके उद्धारके दाममें अपनेको दिया । (७) यही उपयुक्त समयमेंकी साक्षी है जिसके लिये मैं प्रचारक औ प्रेरित और बिश्वास औ सच्चाईमें अन्यदेशियोंका उपदेशक ठहराया गया . मैं खीष्टमें सत्य कहता हूं मैं झूठ नहीं बोलता हूं ।

पुरुषों और स्त्रियोंके आचरणकी विधि ।]

(८) सो मैं चाहता हूं कि हर स्थानमें पुरुष लोग बिना क्रोध औ बिना बिबाद पवित्र हाथोंको उठाके प्रार्थना करें । (९) इसी रीतिसे मैं चाहता हूं कि स्त्रियां भी संकोच और संयमके साथ अपने तईं उस पहिरावनसे जो उनके योग्य है संवारें गून्थे हुए बाल वा सोने वा मोतियोंसे वा बहुमूल्य वस्त्रसे नहीं परन्तु अच्छे कर्म्मोंसे . (१०) कि यही उन स्त्रियों को जो ईश्वरकी उपासनाकी प्रतिज्ञा करती हैं सोहता है । (११) स्त्री चुपचाप सकल अधीनतासे सीख लेवे । (१२) परन्तु मैं स्त्रीको उपदेश करने अथवा पुरुषपर अधिकार रखनेकी

नहीं परन्तु चुपचाप रहनेकी आज्ञा देता हूं । (१३) क्योंकि आदम पहिले बनाया गया तब हव्वा । (१४) और आदम नहीं छला गया परन्तु स्त्री छली गई और अपराधिनी हुई । (१५) तौभी जो वे संयम सहित बिश्वास और प्रेम और पवित्रतामें रहें तो लड़के जननेमें त्राण पावेंगी ।

[मंडलीके रखवालों और सेवकोंका कैसा स्वभाव और चरित्र चाहिये ।]

३ यह बचन बिश्वासयोग्य है कि यदि कोई मंडलीके रखवालेका काम लेने चाहता है तो अच्छे कामको लालसा करता है । (२) सो उचित है कि रखवाला निर्दोष और एकहीस्त्रीका स्वामी सचेत औ संयमी औरसुशील और अतिथिसेवक औ सिखानेमें निपुण होय . (३) मद्यपानमें आसक्त नहीं और न मरकहा न नीच कमाई करनेहारा परन्तु मृदुभाव मिलनसार औ निर्लोभी . (४) जो अपनेही घरकी अच्छी रीतिसे अध्यक्षता करता हो और लड़कोंको सारी गंभीरतासे अधीन रखता हो । (५) पर यदि कोई अपनेही घरकी अध्यक्षता करने न जानता हो तो क्योंकर ईश्वरकी मंडलीको रखवाली करेगा । (६) फिर नवशिष्य न होय ऐसा न हो कि अभिमानसे फूलके शैतानके दंडमें पड़े । (७) और भी उसको उचित है कि बाहरवालोंके यहां सुख्यात होवे ऐसा न हो कि निन्दित हो जाय और शैतानके फंदेमें पड़े ।

(८) वैसेही मंडलीके सेवकोंको उचित है कि गंभीर होवे दोरंगी नहीं न बहुत मद्यकी रुचि करनेहारे न नीच कमाई करनेहारे . (९) परन्तु बिश्वासका भेद शुद्ध बिवेकसे रखनेहारे हों । (१०) पर ये लोग पहिले परखे भी जावें तब जो निर्दोष निकलें तो सेवकका काम करें । (११) इसी रीतिसे स्त्रियोंको उचित है कि गंभीर होवें और दोष लगानेवालियां नहीं परन्तु सचेत और सब बातोंमें बिश्वासयोग्य । (१२) सेवक लोग एक

एक स्त्रीके स्वामी और लड़कोंकी और अपने अपने घरको अच्छी रीतिसे अध्यक्षता करनेहारे हों। (१३) क्योंकि जिन्होंने सेवकका काम अच्छी रीतिसे किया है वे अपने लिये अच्छा पद प्राप्त करते हैं और उस बिश्वासमें जो ख्रीष्ट यीशुपर है बड़ा साहस पाते हैं।

[तिमोथियके पास लिखनेका अभिप्राय और यीशुके अवतारका बर्णन ।]

(१४) मैं तेरे पास बहुत शीघ्र अानेकी आशा रखके भी यह बातें तेरे पास लिखता हूं। (१५) पर इसलिये लिखता हूं कि जो मैं बिलंब करूं तौभी तू जाने कि ईश्वरके घरमें जो जीवते ईश्वरकी मंडली और सत्यका खंभा औ नेव है कैसी चाल चलना उचित है। (१६) और यह बात सब मानते हैं कि भक्तिका भेद बड़ा है कि ईश्वर शरीरमें प्रगट हुआ आत्मामें निर्दोष ठहराया गया स्वर्गदूतोंको दिखाई दिया आन आन देशियोंमें प्रचार किया गया जगतमें उसपर बिश्वास किया गया वह महिमामें उठा लिया गया।

[कुपन्थियोंके प्रगट होनेकी भविष्यद्वाणी ।]

४ पवित्र आत्मा स्पष्टतासे कहता है कि इसके पीछे कितने लोग बिश्वाससे बहक जायेंगे और भरमानेहारे आत्माओंपर और भूतोंकी शिक्षाओंपर मन लगावेंगे . (२) उन झूठ बोलनेहारोंके कपटके अनुसार जिनका निज मन दागा हुआ होगा . (३) जो बिवाह करनेसे बर्जेंगे और खानेकी बस्तुओंसे परे रहनेकी आज्ञा देंगे जिन्हें ईश्वरने इसलिये सृजा कि बिश्वासी लोग और सत्यके माननेहारे उन्हें धन्यबादके संग भोग करें। (४) क्योंकि ईश्वरकी सृजी हुई हर एक बस्तु अच्छी है और कोई बस्तु जो धन्यबादके संग ग्रहण किई जाय फेंकनेके योग्य नहीं है। (५) क्योंकि वह ईश्वरके बचन के और प्रार्थनाके द्वारा पवित्र किई जाती है।

[प्राचलका तिमोथियको सुचाल और यत्न और चोकसाईके विषयमें चिताना ।]

(६) भाइयोंको इन बातोंका स्मरण करवानेसे तू यीशु ख्रीष्टका अच्छा सेवक ठहरेगा जिसका बिश्वासकी और उस अच्छी शिक्षाकी बातोंमें जो तूने प्राप्त किई हैं अभ्यास होता है। (७) परन्तु अशुद्ध और बुढ़ियाकीसी कहानियोंसे अलग रह पर भक्तिके लिये अपनी साधना कर। (८) क्योंकि देहकी साधना कुछ थोड़ेके लिये फलदाई है परन्तु भक्ति सब बातों के लिये फलदाई है कि उसको अबके जीवनकी और आने-वालेकी भी प्रतिज्ञा है। (९) यह वचन बिश्वासयोग्य और सर्ब्बथा ग्रहणयोग्य है। (१०) क्योंकि हम इसके निमित्त परिश्रम करते हैं और निन्दित भी होते हैं कि हमने जीवते ईश्वरपर भरोसा रखा है जो सब मनुष्योंका निज करके बिश्वासियोंका बचानेहारा है। (११) इन बातोंकी आज्ञा और शिक्षा किया कर।

(१२) कोई तेरी जवानीको तुच्छ न जाने परन्तु बचनमें चलनमें प्रेममें आत्मामें बिश्वासमें और पवित्रतामें तू बिश्वा-सियोंके लिये दृष्टान्त बन जा। (१३) जबलों मैं न आऊं तबलों पढ़नेमें उपदेशमें और शिक्षामें मन लगा। (१४) उस बरदान से जो तुझमें है जो भविष्यद्वाणीके द्वारा प्राचीन लोगोंके हाथ रखनेके साथ तुझे दिया गया निश्चिन्त न रहना। (१५) इन बातोंकी चिन्ता कर इनमें लगा रह कि तेरी बढ़ती सभोंमें प्रगट होवे। (१६) अपने विषयमें और शिक्षाके विषयमें सचेत रह कि तू उनमें बना रहे क्योंकि यह करनेमें तू अपनेको और अपने सुननेहारोंको भी बचावेगा।

[मंडलीमेंकी स्त्रियों और बिधवाओंसे कैसा व्यवहार किया चाहिये।]

५ बूढ़ेको मत डपट परन्तु उसको जैसे पिता जानके उपदेश दे और जवानोंको जैसे भाइयोंको. (२) बुढ़ियाओंको जैसे

माताओंको और युवतियोंको जैसे बहिनोंको सारी पवित्रतासे उपदेश दे। (३) बिधवाओंका जो सचमुच बिधवा हैं आदर कर। (४) परन्तु जो किसी बिधवाके लड़के अथवा नाती पोते हों तो वे लोग पहिले अपनेही घरका सन्मान करने और अपने पितरोंको प्रतिफल देनेको सीखें क्योंकि यह ईश्वरको अच्छा लगता और भावता है। (५) जो सचमुच बिधवा और अकेली छोड़ी हुई है सो ईश्वरपर भरोसा रखती है और रात दिन बिन्ती औ प्रार्थनामें लगी रहती है। (६) परन्तु जो भोग बिलासमें रहती है सो जीतेजी मर गई है। (७) और इन बातोंकी आज्ञा दिया कर इसलिये कि वे निर्दोष होवें। (८) परन्तु यदि कोई जन अपने कुटुंबके और निज करके अपने घरानेके लिये चिन्ता न करे तो वह बिश्वाससे मुकर गया है और अबिश्वासीसे भी बुरा है। (९) बिधवा वही गिनी जाय जिसकी वयस साठ बरसके नीचे न हो जो एकही स्वामीकी स्त्री हुई हो. (१०) जो सुकर्म्मोंके विषयमें सुख्यात हो यदि उसने लड़कोंको पाला हो यदि अतिथिसेवा किई हो यदि पवित्र लोगोंके पाओंको धोया हो यदि दुःखियोंका उपकार किया हो यदि हर एक अच्छे कामकी चेष्टा किई हो तो गिन्तीमें आवे। (११) परन्तु जवान बिधवाओंको अलग कर क्योंकि जब वे खीष्टके बिरुद्ध सुख बिलासकी इच्छा करती हैं तब बिवाह करने चाहती हैं। (१२) और दंडके योग्य होती हैं क्योंकि उन्होंने अपने पहिले बिश्वासको तुच्छ जाना है। (१३) और इसके संग वे बेकार रहने और घर घर फिरनेको सीखती हैं और केवल बेकार रहने नहीं परन्तु बकवाही होने और पराये काममें हाथ डालने और अनुचित बातें बोलनेको सीखती हैं। (१४) इसलिये मैं चाहता हूं कि जवान विधवाएं विवाह करें औ लड़के जनें औ घरबारी करें औ किसी बिरोधी

को निन्दाके कारण कुछ अवसर न देवें। (१५) क्योंकि अब भी कितनी तो बहकके शैतानके पीछे हो लिई हैं। (१६) जो किसी बिश्वासी अथवा बिश्वासिनीके यहां बिधवाएं हों तो वही उनका उपकार करे और मंडलीपर भार न दिया जाय जिस्तें वह उन्होंका जो सचमुच बिधवा हैं उपकार करे।

[प्राचीनोंसे कैसा व्यवहार किया चाहिये और कितनी और बातोंका उपदेश।]

(१७) जिन प्राचीनोंने अच्छी रीतिसे अध्यक्षता किई है सो दूने आदरके योग्य समझे जावें निज करके वे जो उपदेश और शिक्षामें परिश्रम करते हैं। (१८) क्योंकि धर्म्मपुस्तक कहता है कि दावनेहारे बैलका मुंह मत बांध और कि बनिहार अपनी बनिके योग्य है। (१९) प्राचीनके बिरुद्ध दो अथवा तीन साक्षियोंकी साक्षी बिना अपबादको ग्रहण न करना। (२०) पाप करनेहारोंको सभोंके आगे समझा दे इसलिये कि और लोग भी डर जावें। (२१) मैं ईश्वरके और प्रभु योशु ख्रीष्टके और चुने हुए दूतोंके आगे दृढ़ आज्ञा देता हूं कि तू मनकी गांठ न बांधके इन बातोंको पालन करे और कोई काम पक्षपात की रीतिसे न करे। (२२) किसीपर हाथ शीघ्र न रखना और न दूसरोंके पापोंमें भागी होना. अपनेको पवित्र रख। (२३) अब जल मत पिया कर परन्तु अपने उदरके और अपने बारम्बार के रोगोंके कारण थोड़ासा दाख रस लिया कर। (२४) कितने मनुष्योंके पाप प्रत्यक्ष हैं और बिचारित होनेको आगेही चलते हैं परन्तु कितनोंके वे पीछे भी हो लेते हैं। (२५) वैसे ही कितनोंके सुकर्म्म भी प्रत्यक्ष हैं और जो और प्रकारके हैं सो छिप नहीं सकते हैं।

[दासोंके लिये उपदेश।]

६ जितने दास जूएके नीचे हैं वे अपने अपने स्वामीको सारे आदरके योग्य समझें जिस्तें ईश्वरके नामकी और

धर्म्मापदेशकी निन्दा न किई जाय । (२) और जिन्होंके स्वामी विश्वासी जन हों सो उन्हें इसलिये कि भाई हैं तुच्छ न जानें परन्तु और भी उनकी सेवा करें क्योंकि वे जो इस भलाईके भागी होते हैं बिश्वासी और प्यारे हैं . इन बातोंकी शिक्षा और उपदेश किया कर ।

[विवादियोंसे परे रहनेकी आज्ञा । लोभका निषेध । तिमोथियको निज धर्म्म कर्म्ममें दृढ़ रहनेका उपदेश ।]

(३) यदि कोई जन आन उपदेश करता है और खरी बातोंको अर्थात हमारे प्रभु यीशु खीष्टकी बातोंको और उस शिक्षाको जो भक्तिके अनुसार है नहीं मानता है . (४) तो वह अभिमानसे फूल गया है और कुछ नहीं जानता है परन्तु उसे बिवादोंका और शब्दोंके झगड़ोंका रोग है जिनसे डाह वैर निन्दाकी बातें और दूसरोंकी ओर बुरे संदेह . (५) और उन मनुष्योंके व्यर्थ रगड़े झगड़े उत्पन्न होते हैं जिनके मन बिगड़े हैं और जिन्से सच्चाई हरी गई है जो समझते हैं कि कमाईही भक्ति है . ऐसे लोगोंसे अलग रहना ।

(६) पर सन्तोषयुक्त भक्ति बड़ी कमाई है । (७) क्योंकि हम जगतमें कुछ नहीं लाये और प्रगट है कि हम कुछ ले जाने भी नहीं सकते हैं । (८) और भोजन औ बस्त्र जो हमें मिला करें तो इन्हींसे सन्तुष्ट रहना चाहिये । (९) परन्तु जो लोग धनी होने चाहते हैं सो परीक्षा और फंदेमें और बहुतेरे बुद्धिहीन और हानिकारी अभिलाषोंमें फंसते हैं जो मनुष्योंको बिनाश और बिध्वंस में डुबा देते हैं । (१०) क्योंकि धनका लोभ सब बुराइयोंका मूल है उसे प्राप्त करनेकी चेष्टा करते हुए कितने लोग बिश्वाससे भरमाये गये हैं और अपनेको बहुत खेदोंसे वारपार छेदा है ।

(११) परन्तु हे ईश्वरके जन तू इन बातोंसे बचा रह और धर्म्म औ भक्ति औ बिश्वास औ प्रेम औ धीरज औ नम्रताको

चेष्टा कर । (१२) बिश्वासकी अच्छी लड़ाई लड़ और अनन्त जीवनको धर ले जिसके लिये तू बुलाया भी गया और बहुत साक्षियोंके आगे अच्छा अंगीकार किया । (१३) मैं तुझे ईश्वर के आगे जो सभोंको जिलाता है और ख्रीष्ट यीशुके आगे जिसने पन्तिय पिलातके साम्हने अच्छे अंगीकारकी साक्षी दिई आज्ञा देता हूं . (१४) कि तू इस आज्ञाको निष्खोट औ निर्दोष हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके प्रकाशलों पालन कर . (१५) जिसे वह अपनेही समयोंमें दिखावेगा जो परमधन्य और अद्वैत पराक्रमी और राज्य करनेहारोंका राजा औ प्रभुता करनेहारोंका प्रभु है . (१६) और अमरता केवल उसीकी है और वह अगम्य ज्योतिमें बास करता है और उसको मनुष्योंमेंसे किसीने नहीं देखा है और न कोई देख सकता है . उसको प्रतिष्ठा और अनन्त पराक्रम होय . आमीन ।

[धनवानोंके लिये उपदेश ।]

(१७) जो लोग इस संसारमें धनी हैं उन्हें आज्ञा दे कि वे अभिमानी न होवें और धनकी चंचलतापर भरोसा न रखें परन्तु जीवते ईश्वरपर जो सुखप्राप्तिके लिये हमें सब कुछ धनीकी रीतिसे देता है . (१८) और कि वे भलाई करें और अच्छे कामोंके धनवान होवें और उदार औ परोपकारी हों . (१९) और भविष्यत्कालके लिये अच्छी नेव अपने लिये जुगा रखें जिस्तें अनन्त जीवनको धर लेवें ।

[उपदेश सहित पत्रीकी समाप्ति ।]

(२०) हे तिमोथिय इस थाथीकी रक्षा कर और अशुद्ध बकवादोंसे और जो झुठाईसे ज्ञान कहावता है उसकी बिरुद्ध बातोंसे परे रह . (२१) कि इस ज्ञानकी प्रतिज्ञा करते हुए कितने लोग बिश्वासके विषयमें भटक गये हैं . तेरे संग अनुग्रह होय । आमीन ॥

तिमोथियको पावल प्रेरितकी दूसरी पत्री।

[पत्रीका आभाष।]

१ पावल जो उस जीवनकी प्रतिज्ञाके अनुसार जो ख्रीष्ट यीशुमें है ईश्वरकी इच्छासे यीशु ख्रीष्टका प्रेरित है. (२) मेरे प्यारे पुत्र तिमोथियको ईश्वर पितासे और हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशुसे अनुग्रह और दया और शांति मिले।

[पावलका तिमोथियके विषयमें धन्यवाद करना और धर्म्म युद्धमें दृढ़ता करनेका उपदेश देना।]

(३) मैं ईश्वरका धन्य मानता हूं जिसकी सेवा मैं अपने पितरोंकी रीतिपर शुद्ध मनसे करता हूं कि रात दिन मुझे मेरी प्रार्थनाओंमें तेरे विषयमें ऐसे निरन्तर चेत रहता है। (४) और तेरे आंसुओंको स्मरण करके मैं तुझे देखनेकी लालसा करता हूं जिस्तें आनन्दसे परिपूर्ण होऊं। (५) क्योंकि उस निष्कपट विश्वासकी मुझे सुरत पड़ती है जो तुझमें है जो पहिले तेरी नानी लोईसमें और तेरी माता उनीकीमें बसता था और मुझे निश्चय हुआ है कि तुझमें भी बसता है।

(६) इस कारणसे मैं तुझे चेत दिलाता हूं कि ईश्वरके वरदानको जो मेरे हाथोंके रखनेके द्वारासे तुझमें है जगा दे। (७) क्योंकि ईश्वरने हमें कादराईका नहीं परन्तु सामर्थ्य औ प्रेम औ प्रबोधका आत्मा दिया है। (८) इसलिये तू न हमारे प्रभुकी साक्षीसे और न मुझसे जो उसका बंधुआ हूं लज्जित हो परन्तु सुसमाचारके लिये मेरे संग ईश्वरकी शक्तिकी सहायतासे दुःख उठा। (९) जिसने हमें बचाया और उस पवित्र बुलाहट से बुलाया जो हमारे कर्म्मोंके अनुसार नहीं परन्तु उसीकी

इच्छा और उस अनुग्रहके अनुसार थी जो खीष्ट यीशुमें सनातनसे हमें दिया गया . (१०) परन्तु अभी हमारे त्राणकर्त्ता यीशु खीष्टके प्रकाशके द्वारा प्रगट किया गया है जिसने मृत्यु का क्षय किया परन्तु जीवन और अमरताको उस सुसमाचार के द्वारासे प्रकाशित किया . (११) जिसके लिये मैं प्रचारक औ प्रेरित और अन्यदेशियोंका उपदेशक ठहराया गया । (१२) इस कारणसे मैं इन दुःखोंको भी भोगता हूं परन्तु मैं नहीं लजाता हूं क्योंकि मैं उसे जानता हूं जिसका मैंने बिश्वास किया है और मुझे निश्चय हुआ है कि वह उस दिनके लिये मेरी थाथीकी रक्षा करनेका सामर्थ्य रखता है । (१३) जो बातें तूने मुझसे सुनीं सोई विश्वास और प्रेमसे जो खीष्ट यीशुसे होते हैं तेरे लिये खरी बातोंका नमूना होवें । (१४) पवित्र आत्माके द्वारा जो हममें बसता है इस अच्छी थाथीकी रक्षा कर।

(१५) तू यही जानता है कि वे सब जो आशियामें हैं जिनमें फुगील और हर्मागिनिस हैं मुझसे फिर गये । (१६) उनीसिफर के घरानेपर प्रभु दया करे क्योंकि उसने बहुत बार मेरे जीव को ठंढा किया और मेरी जंजीरसे नहीं लजाया . (१७) परन्तु जब रोममें था तब बड़े यत्नसे मुझे ढूंढ़ा और पाया । (१८) प्रभु उसको यह देवे कि उस दिनमें उसपर प्रभुसे दया किई जाय. इफिसमें भी उसने कितनी सेवकाई किई सो तू बहुत अच्छी रीतिसे जानता है ।

२ सो हे मेरे पुत्र तू उस अनुग्रहसे जो खीष्ट यीशुमें है बलवन्त हो । (२) और जो बातें तूने बहुत साक्षियोंके आगे मुझसे सुनीं उन्हें बिश्वासयोग्य मनुष्योंको सौंप दे जो दूसरोंको भी सिखानेके योग्य होवें । (३) सो तू यीशु खीष्टके अच्छे योद्धाको नाईं दुःख सह ले । (४) जो कोई युद्ध करता है सो अपनेको जीविकाके ब्योपारोंमें नहीं उलझाता है इसलिये कि अपने

भरती करनेहारेको प्रसन्न करे। (५) और यदि कोई मल्लयुद्ध भी करे तो वह विधिके अनुसार मल्लयुद्ध न करे तो उसे मुकुट नहीं दिया जाता है। (६) उचित है कि पहिले वह गृहस्थ जो परिश्रम करता है फलोंका अंश पावे। (७) जो मैं कहता हूं उसे बूझ ले क्योंकि प्रभु तुझे सब बातोंमें ज्ञान देगा।

(८) स्मरण कर कि यीशु ख्रीष्ट जो दाऊदके बंशसे था मेरे सुसमाचारके अनुसार मृतकोंमेंसे जी उठा है। (९) उस सुसमाचारके लिये मैं कुकर्म्मीकी नाईं यहांलों दुःख उठाता हूं कि बांधा भी गया हूं परन्तु ईश्वरका बचन बंधा नहीं है। (१०) मैं इसलिये चुने हुए लोगोंके कारण सब बातोंमें धीरज धरे रहता हूं कि अनन्त महिमा सहित वह त्राण जो ख्रीष्ट यीशुमें है उन्हें भी मिले। (११) यह बचन विश्वासयोग्य है कि जो हम उसके संग मूए तो उसके संग जीयेंगे भी। (१२) जो हम धीरज धरे रहें तो उसके संग राज्य भी करेंगे, जो हम उससे मुकर जायें तो वह भी हमसे मुकर जायगा। (१३) जो हम अविश्वासी होवें वह विश्वासयोग्य रहता है वह अपनेको आप नहीं नकार सकता है।

[व्यर्थ विवाद और बकवादका निषेध और प्रभुके दासके योग्यकी चाल और स्वभावका वर्णन।]

(१४) इन बातोंका उन्हें स्मरण करवा और प्रभुके आगे दृढ़ आज्ञा दे कि वे शब्दोंके झगड़े न किया करें जिनसे कुछ लाभ नहीं होता पर सुननेहारे बहकाये जाते हैं। (१५) अपने तईं ईश्वरके आगे ग्रहणयोग्य और ऐसा कार्य्यकारी जो लज्जित न होय और सत्यके बचनका यथार्थ विभाग करवैया ठहरानेका यत्न कर। (१६) परन्तु अशुद्ध बकवादोंसे बचा रह क्योंकि ऐसे बकवादी अधिक अभक्तिमें बढ़ते जायेंगे। (१७) और उनका बचन सड़े घावकी नाईं फैलता जायगा। (१८) उन्हेंमें हुमिनई

और फिलीत हैं जो सत्यके विषयमें भटक गये हैं और कहते हैं कि पुनरुत्थान हो चुका है और कितनोंके विश्वासको उलट देते हैं। (१९) तौभी ईश्वरकी दृढ़ नेव बनी रहती है जिसपर यह छाप है कि प्रभु उन्हें जो उसके हैं जानता है और यह कि हर एक जन जो ख्रीष्टका नाम लेता है कुकर्म्मसे अलग रहे। (२०) बड़े घरमें केवल सोने और चांदीके बर्त्तन नहीं परन्तु काठ और मिट्टीके बर्त्तन भी हैं और कोई कोई आदरके कोई कोई अनादरके हैं। (२१) सो यदि कोई अपनेको इनसे शुद्ध करे तो वह आदरका बर्त्तन होगा जो पवित्र किया गया है और स्वामीके बड़े काम आता है और हर एक अच्छे कर्म्मके लिये तैयार किया गया है। (२२) पर जवानीकी अभिलाषाओंसे बचा रह परन्तु धर्म्म औ बिश्वास औ प्रेम और जो लोग शुद्ध मनसे प्रभुकी प्रार्थना करते हैं उन्होंके संग मिलापकी चेष्टा कर। (२३) पर मूढ़ता और अविद्याके विवादोंको अलग कर क्योंकि तू जानता है कि उनसे झगड़े उत्पन्न होते हैं। (२४) और प्रभुके दासको उचित नहीं है कि झगड़ा करे परन्तु सभोंकी ओर कोमल और सिखानेमें निपुण और सहनशील होय. (२५) और बिरोधियोंको नम्रतासे समझावे क्या जाने ईश्वर उन्हें पश्चात्ताप दान करे कि वे सत्यको पहचानें. (२६) और जिन्हें शैतानने अपनी इच्छा निमित्त बझाया था उसके फंदेमेंसे सचेत होके निकलें।

[कुपन्थियोंके प्रगट होनेकी भविष्यद्वाणी।]

३ पर यह जान ले कि पिछले दिनोंमें कठिन समय आ पड़ेंगे। (२) क्योंकि मनुष्य आपस्वार्थी लोभी दंभी अभिमानी निन्दक माता पिताकी आज्ञा लंघन करनेहारे कृतघ्नी अपवित्र. (३) मयारहित क्षमारहित दोष लगानेहारे असंयमी कठोर भलेके बैरी. (४) बिश्वासघातक उतावले घमंडसे फूले हुए

और ईश्वरसे अधिक सुख बिलासहीको प्रिय जाननेहारे होंगे. (५) जो भक्तिका रूप धारण करेंगे परन्तु उसकी शक्तिसे मुकरेंगे: इन्होंसे परे रह । (६) क्योंकि इन्होंमेंसे वे हैं जो घर घर घुसके उन ओछी स्त्रियोंको बश कर लेते हैं जो पापोंसे लदी हैं और नाना प्रकारकी अभिलाषाओंके चलाये चलती हैं. (७) जो सदा सीखती हैं परन्तु कभी सत्यके ज्ञानलों नहीं पहुंच सकती हैं । (८) जिस रीतिसे यान्नी औ यांब्रीने मूसाका साम्ना किया उसी रीतिसे ये मनुष्य भी जिनके मन बिगड़े हैं और जो बिश्वासके बिषयमें निकृष्ट हैं सत्यका साम्ना करते हैं। (९) परन्तु वे अधिक नहीं बढ़ेंगे क्योंकि जैसे उन दोनोंकी अज्ञानता सभोंपर प्रगट हो गई वैसे इन लोगोंकी भी हो जायगी ।

[पावलका अपने नमूनेसे तिमोथियको साहस देना ।]

(१०) परन्तु तूने मेरा उपदेश औ आचरण औ मनसा औ बिश्वास औ धीरज औ प्रेम औ स्थिरता. (११) और मेरा अनेक बार सताया जाना औ दुःख उठाना अच्छी रीतिसे जाना है कि मुझपर अन्तैखियामें और इकोनियामें और लुस्त्रामें कैसी बातें बीतीं मैंने कैसे बड़े उपद्रव सहे पर प्रभुने मुझे सभोंसे उबारा। (१२) और सब लोग जो ख्रीष्ट यीशुमें भक्ताईसे जन्म बिताने चाहते हैं सताये जायेंगे। (१३) परन्तु दुष्ट मनुष्य और बहकानेहारे धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए अधिक बुरी दशालों बढ़ते जायेंगे ।

[धर्म्मपुस्तककी शिक्षापर दृढ़ रहनेका उपदेश ।]

(१४) पर तूने जिन बातोंको सीखा और निश्चय जाना है उनमें बना रह. क्योंकि तू जानता है कि किससे सीखा. (१५) और कि बालकपनसे धर्म्मपुस्तक तेरा जाना हुआ है जो बिश्वासके द्वारा जो ख्रीष्ट यीशुमें है तुझे त्राण निमित्त बुद्धिमान कर सकता है । (१६) सारा धर्म्मपुस्तक ईश्वरकी

प्रेरणासे रचा गया और उपदेशके लिये औ समझानेके लिये औ सुधारनेके लिये औ धर्म्मकी शिक्षाके लिये फलदाई है. (१७) जिस्तें ईश्वरका जन सिद्ध अर्थात हर एक उत्तम कर्म्मके लिये सिद्ध किया हुआ होवे।

[पावलका तिमोथियको चिताना और अपनी आशाका बर्णन करना।]

४ सो मैं ईश्वरके आगे और प्रभु यीशु ख्रीष्टके आगे जो अपने प्रगट होने और अपने राज्य करनेपर जीवतों और मृतकोंका बिचार करेगा दृढ़ आज्ञा देता हूं (२) वचनको प्रचार कर समय और असमय तत्पर रह सब प्रकारके धीरज और शिक्षा सहित समझा और डांट और उपदेश कर। (३) क्योंकि समय आवेगा जिसमें लोग खरे उपदेशको न सहेंगे परन्तु अपनीही अभिलाषाओंके अनुसार अपने लिये उपदेशकोंका ढेर लगावेंगे क्योंकि उनके कान सुरसुरावेंगे. (४) और वे सच्चाईसे कान फेरेंगे पर कहानियोंकी ओर फिर जावेंगे। (५) परन्तु तू सब बातोंमें सचेत रह दुःख सह ले सुसमाचार प्रचारकका कार्य्य कर अपनी सेवकाईको सम्पूर्ण कर। (६) क्योंकि मैं अब भी ढाला जाता हूं और मेरे बिदा होनेका समय आ पहुंचा है। (७) मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूं मैंने अपनी दौड़ पूरी किई है मैंने बिश्वासको पालन किया है। (८) अब तो मेरे लिये वह धर्म्मका मुकुट धरा है जिसे प्रभु जो धर्म्मी बिचारकर्त्ता है उस दिन मुझे देगा और केवल मुझे नहीं पर उन सभोंको भी जिन्होंने उसका प्रगट होना प्रिय जाना है।

[पावलका अपने हालका सन्देश देना और पिछली आज्ञाओंको जताना।]

(९) मेरे पास शीघ्र आनेका यत्न कर। (१०) क्योंकि दीमाने इस संसारको प्रिय जानके मुझे छोड़ा है और थिसलोनिकाको गया है क्रीस्की गलातियाको और तीतस दलमातियाको गया है। (११) केवल लूक मेरे साथ है. मार्कको लेके अपने

संग ला क्योंकि वह सेवकाईके लिये मेरे बहुत काम आता है। (१२) परन्तु तुखिकको मैंने इफिसको भेजा। (१३) उस लबादेको जो मैं त्रोआमें कार्पके यहां छोड़ आया और पुस्तकों को निज करके चर्म्मपत्रोंको जब तू आवे तब ले आ। (१४) सिकन्दर ठठेरेने मुझसे बहुत बुराइयां किईं. प्रभु उसके कर्म्मोंके अनुसार उसको फल देवे। (१५) और तू भी उससे बचा रह क्योंकि उसने हमारी बातोंका बहुतही बिरोध किया है। (१६) मेरे पहिली बेर उत्तर देनेमें कोई मेरे संग नहीं रहा परन्तु सभोंने मुझे छोडा. इसका उनपर दोष न लगाया जाय। (१७) परन्तु प्रभु मेरे निकट खड़ा हुआ और मुझे सामर्थ्य दिया जिस्तें मेरे द्वारासे उपदेश सम्पूर्ण सुनाया जाय और सब अन्यदेशी लोग सुनें और मैं सिंहके मुखसे बचाया गया। (१८) और प्रभु मुझे हर एक बुरे कर्म्मसे बचावेगा और अपने स्वर्गीय राज्यके लिये मेरी रक्षा करेगा. उसका गुणानुबाद सदा सर्ब्बदा होय. आमीन।

[पत्रीकी समाप्ति।]

(१९) प्रिस्कीला और अकूलाको और उनीसिफरके घरानेको नमस्कार। (२०) इरास्त करिन्थमें रह गया और त्रोफिम रोगी था उसे मैंने मिलोतमें छोड़ा। (२१) जाड़के पहिले आनेका यत्न कर. उबूल और पूदी और लीनस और क्लौदिया और सब भाई लोगोंका तुझे नमस्कार। (२२) प्रभु यीशु ख्रीष्ट तेरे आत्माके संग होय. अनुग्रह तुम्हींके संग होवे। आमीन॥

तीतसको पावल प्रेरितकी पत्री ।

[पत्रीका आभाष ।]

१ पावल जो ईश्वरका दास और ईश्वरके चुने हुए लोगों के बिश्वासके विषयमें और जो सत्य वचन भक्तिके समान है उस सत्य बचनके ज्ञानके बिषयमें अनन्त जीवनकी आशासे यीशु ख्रीष्टका प्रेरित है . (२) कि उस जीवनकी प्रतिज्ञा ईश्वरने जो झूठ बोल नहीं सकता है सनातनसे किई . (३) परन्तु उपयुक्त समयमें अपने बचनको उपदेशके द्वारा जो हमारे चाणकर्त्ता ईश्वरकी आज्ञाके अनुसार मुझे सोंपा गया प्रगट किया . (४) तीतसको जो साधारण बिश्वासके अनुसार मेरा सच्चा पुत्र है ईश्वर पिता और हमारे चाणकर्त्ता प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और दया और शांति मिले ।

[पावलका तीतसको क्रीतीकी धर्म्म मंडली सुधारनेकी आज्ञा देना ।]

(५) मैंने इसी कारण तुझे क्रीतीमें छोड़ा कि जो बातें रह गईं तू उन्हें सुधारता जाय और नगर नगर प्राचीनोंको नियुक्त करे जैसे मैंने तुझे आज्ञा दिई . (६) कि यदि कोई निर्दोष और एकही स्त्रीका स्वामी होय और उसको बिश्वासी लड़के हों जिन्हें लुचपनका दोष नहीं है और जो निरंकुश नहीं हैं तो वही नियुक्त किया जाय। (७) क्योंकि उचित है कि मंडली का रखवाला जो ईश्वरका भंडारीसा है निर्दोष होय और न हठी न क्रोधी न मद्यपानमें आसक्त न मरकहा न नीच कमाई करनेहारा हो . (८) परन्तु अतिथिसेवक औ भलेका प्रेमी औ सुबुद्धि औ धर्म्मी औ पवित्र औ संयमी होय . (९) और बिश्वास-योग्य बचनको जो धर्म्मोपदेशके अनुसार है धरे रहे जिस्तें

वह खरी शिक्षासे उपदेश करनेका और बिवादियोंको समझाने का भी सामर्थ्य रखे ।

(१०) क्योंकि बहुतेरे निरंकुश बकवादी और धोखा देनेहारे हैं निज करके खतना किये हुए लोग . (११) जिनका मुंह बन्द करना अवश्य है जो नीच कमाईके कारण अनुचित बातोंका उपदेश करते हुए घरानेका घराना बिगाड़ते हैं । (१२) उन मेंसे एक जन उनके निजका एक भविष्यद्वक्ता बोला क्रीतीय लोग सदा झूठे औ दुष्ट पशु औ निकम्मे पेटपोसू हैं । (१३) यह साक्षी सत्य है इस हेतुसे उन्हें कड़ाईसे समझा दे जिस्तें वे बिश्वासमें निष्खोट रहें . (१४) और यिहूदीय कहानियोंमें और उन मनुष्योंकी आज्ञाओंमें जो सत्यसे फिर जाते हैं मन न लगावें । (१५) शुद्ध लोगोंके लिये सब कुछ शुद्ध है परन्तु अशुद्ध और अबिश्वासी लोगोंके लिये कुछ नहीं शुद्ध है परन्तु उन्होंका मन और बिवेक भी अशुद्ध हुआ है । (१६) वे ईश्वर को जाननेका अंगीकार करते हैं परन्तु अपने कर्म्मोंसे उस से मुकर जाते हैं कि वे घिनौने और आज्ञा लंघन करनेहारे और हर एक अच्छे कर्म्मके लिये निकृष्ट हैं ।

[बूढ़े और जवान पुरुषों औ स्त्रियों और दासोंके लिये उपदेश और ईश्वरके अनुग्रहका अभिप्राय ।]

२ परन्तु तू वह बातें कहा कर जो खरे उपदेशके योग्य हैं । (२) बूढ़ोंसे कह कि सचेत औ गंभीर औ संयमी होवें और बिश्वास औ प्रेम औ धीरजमें निष्खोट रहें । (३) वैसेही बुढ़ियाओंसे कह कि उनका आचरण पवित्र लोगोंके ऐसा होय और न दोष लगानेवालियां न बहुत मद्यपानके बशमें होवें पर अच्छी बातोंकी शिक्षा देनेवालियां . (४) इसलिये कि वे जवान स्त्रियोंको सचेत करें कि वे अपने अपने स्वामी औ लड़कोंसे प्रेम करनेवालियां . (५) औ संयमी औ पतिब्रता औ

घरमें रहनेवाली औ भली होवे और अपने अपने स्वामीके अधीन रहें जिस्तें ईश्वरके वचनकी निन्दा न किई जावे। (६) वैसेही जवानोंको संयमी रहनेका उपदेश दे। (७) और सब बातोंमें अपने तईं अच्छे कर्म्मोंका दृष्टान्त दिखा और उपदेशमें निर्बिकारता औ गंभीरता औ शुद्धता सहित . (८) खरा औ निर्दोष वचन प्रचार कर कि बिरोधी हमोंपर कोई बुराई लगानेका गौं न पाके लज्जित होय। (९) दासोंको उपदेश दे कि अपने अपने स्वामीके अधीन रहें और सब बातोंमें प्रसन्नता योग्य होवें और फिरके उत्तर न देवें . (१०) और न चोरी करें परन्तु सब प्रकारकी अच्छी सचौटी दिखावें जिस्तें वे सब बातोंमें हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वरके उपदेशको शोभा देवें।

[ईश्वरके अनुग्रहका अभिप्राय।]

(११) क्योंकि ईश्वरका त्राणकारी अनुग्रह सब मनुष्योंपर प्रगट हुआ है . (१२) और हमें शिक्षा देता है इसलिये कि हम अभक्तिसे और सांसारिक अभिलाषाओंसे मन फेरके इस जगतमें संयम औ न्याय औ भक्तिसे जन्म बितावें . (१३) और अपनी सुखदाई आशाकी और महा ईश्वर और अपने त्राणकर्त्ता यीशु ख्रीष्टके ऐश्वर्य्यके प्रकाशकी बाट जोहते रहें . (१४) जिसने अपने तईं हमारे लिये दिया कि सब अधर्म्मसे हमारा उद्धार करे और अपने लिये एक निज लोगको शुद्ध करे जो अच्छे कर्म्मोंके उद्योगी होवें। (१५) यह बातें कहा कर और उपदेश कर और दृढ़ आज्ञा करके समझा दे . कोई तुझे तुच्छ न जाने।

[शासाधिकारियोंके बशमें रहने और शुभ चाल चलनेका उपदेश।]

३ लोगोंको स्मरण करवा कि वे अध्यक्षों और अधिकारियोंके अधीन और आज्ञाकारी होवें और हर एक अच्छे कर्म्मके लिये तैयार रहें . (२) और किसीकी निन्दा न करें

परन्तु मिलनसार औ मृदुभाव हों और सब मनुष्योंको और समस्त प्रकारकी नम्रता दिखावें । (३) क्योंकि हम लोग भी आगे निर्बुद्धि और आज्ञा लंघन करनेहारे थे और भरमाये जाते थे और नाना प्रकारके अभिलाष और सुख बिलासके दास बने रहते थे और बैरभाव और डाहमें समय बिताते थे और घिनौने और आपसके बैरी थे । (४) परन्तु जब हमारे चाणकर्त्ता ईश्वरकी कृपा और मनुष्योंपर उसकी प्रीति प्रगट हुई . (५) तब धर्म्मके कार्य्योंसे जो हमने किये सो नहीं परन्तु अपनी दयाके अनुसार नये जन्मके स्नानके द्वारा और पवित्र आत्मासे नये किये जानेके द्वारा उसने हमें बचाया . (६) जिस आत्माको उस ने हमारे चाणकर्त्ता यीशु ख्रीष्टके द्वारा हमों पर अधिकाई से उंडेला . (७) इसलिये कि हम उसके अनुग्रह से धर्म्मी ठहराये जाके अनन्त जीवनकी आशाके अनुसार अधिकारी बन जावें । (८) यह बचन बिश्वासयोग्य है और मैं चाहता हूं कि इन बातोंके विषयमें तू दृढ़तासे बोले इस लिये कि जिन लोगोंने ईश्वरका बिश्वास किया है सो अच्छे अच्छे कर्म्म किया करनेके सोचमें रहें . यही बातें उत्तम और मनुष्योंके लिये फलदाई हैं ।

[अनेक बातों का उपदेश और नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति ।]

(९) परन्तु मूढ़ताके बिवादोंसे और बंशावलियोंसे और बैर बिरोधसे और व्यवस्थाके विषयमेंके झगड़ोंसे बचा रह क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं । (१०) पाषंडी मनुष्यको एक बेर बरन दो बेर चितानेके पीछे अलग कर । (११) क्योंकि तू जानता है कि ऐसा मनुष्य भटकाया गया है और पाप करता है और अपनेको आप दोषी ठहराता है । (१२) जब मैं अर्त्तिमा अथवा तुखिकको तेरे पास भेजूं तब निकोपलिमें मेरे पास आनेका यत्न कर क्योंकि मैंने जाड़ेको समय वहीं काटनेको

ठहराया है। (१३) जीनस व्यवस्थापकको और अपल्लोको बड़े यत्नसे आगे पहुंचा कि उन्हें किसी बस्तुकी घटी न होय। (१४) और हमारे लोग भी जिन जिन बस्तुओंका अवश्य प्रयोजन हो उनके लिये अच्छे अच्छे कार्य्य किया करनेको सीखें कि वे निष्फल न होवें। (१५) सब लोगोंका जो मेरे संग हैं तुझसे नमस्कार . जो लोग बिश्वासके कारण हमें प्यार करते हैं उनको नमस्कार . अनुग्रह तुम सभोंके संग होवे। आमीन॥

फिलीमोनको पावल प्रेरितकी पत्री।

[पत्रीका आभास।]

१ पावल जो ख्रीष्ट यीशुके कारण बंधुआ है और भाई तिमोथिय प्यारे फिलीमोनको जो हमारा सहकर्म्मी भी है. (२) और प्यारी अप्फियाको और हमारे संगी योद्धा अर्खिपको और आपके घरमेंकी मंडलीको. (३) आप लोगोंको हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।

[फिलीमोनके विषयमें पावलका धन्यबाद औ प्रार्थना।]

(४) मैं आपके प्रेम और बिश्वासका जो आप प्रभु यीशुपर और सब पवित्र लोगोंसे रखते हैं समाचार सुनके. (५) अपने ईश्वरका धन्य मानता हूं और नित्य अपनी प्रार्थनाओंमें आपको स्मरण करता हूं. (६) कि हम लोगोंमेंकी समस्त भलाई ख्रीष्ट यीशुके लिये होती है इस बातके ज्ञानसे वह सहायता जो आप बिश्वाससे किया करते हैं सुफल हो जाय। (७) क्योंकि आपके प्रेमसे हमें बहुत आनन्द और शांति मिलती है इस लिये कि हे भाई आपके द्वारा पवित्र लोगोंके अन्तःकरण को सुख दिया गया है।

[उनीसिमके विषयमें फिलीमोनसे पावलकी बिन्ती।]

(८) इस कारण जो बात सोहती है उसकी यद्यपि आपको आज्ञा देनेका मुझे ख्रीष्टसे बहुत साहस है. (९) तौभी मैं प्रेमके कारण बरन बिन्तीही करता हूं क्योंकि मैं ऐसा हूं मानो बूढ़ा पावल और अब यीशु ख्रीष्टके कारण बंधुआ भी हूं। (१०) मैं अपने पुत्रके लिये जिसे मैंने बंधनमें रहते हुए जन्माया है आपसे बिन्ती करता हूं सोई उनीसिम है. (११) जो पहिले आपके कुछ कामका न था परन्तु अब आपके और मेरे

बड़े कामका है । (१२) उसको मैंने लौटा दिया है और आप उसको मेरा अन्तःकरणसा जानके ग्रहण कीजिये । (१३) उसे मैं अपने पास रखा चाहता था इसलिये कि सुसमाचारके बंधनों में वह आपके बदले मेरी सेवा करे। (१४) परन्तु मैंने आपकी सम्मति बिना कुछ करनेकी इच्छा न किई जिस्तें आपकी कृपा जैसे दबावसे न हो पर आपकी इच्छाके अनुसार होय। (१५) क्योंकि क्या जानें वह इसीके कारण कुछ दिन अलग हुआ कि सदा आपका हो जावे . (१६) पर अब तो दासकी नाईं नहीं परन्तु दाससे बढ़के अर्थात प्यारा भाई होय निज कर मेरा पर कितना अधिक करके क्या शरीरमें क्या प्रभुमें आप होंका प्यारा । (१७) इसलिये जो आप मुझे संभागी समझते हैं तो जैसे मुझको तैसे उसको ग्रहण कीजिये । (१८) और जो उससे आपकी कुछ हानि हुई अथवा वह आपका कुछ धारता हो तो इसको मेरे नामपर लिखिये। (१९) मुझ पावलने अपने हाथसे लिखा है मैं भर देऊंगा जिस्तें मुझे आपसे यह कहना न पड़े कि अपने तईं भी मुझे देना आपको उचित है . (२०) हां हे भाई आपसे प्रभुमें मुझे आनन्द पहुंचे प्रभुमें मेरे अन्तःकरणको सुख दीजिये। (२१) आपके आज्ञाकारी होनेका भरोसा रखके मैंने आपके पास लिखा है क्योंकि जानता हूं कि जो मैं कहता हूं उससे भी आप अधिक करेंगे ।

[नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति ।]

(२२) और भी मेरे लिये बासा तैयार कीजिये क्योंकि मुझे आशा है कि आप लोगोंकी प्रार्थनाओंके द्वारा मैं आप लोगोंको दे दिया जाऊंगा । (२३) इपफ्रा जो ख्रीष्ट यीशुके कारण मेरा संगी बंधुआ है . (२४) औ मार्क औ अरिस्तार्ख औ दीमा औ लूक जो मेरे सहकर्म्मी हैं इन्होंका आपको नमस्कार। (२५) हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह आप लोगोंके आत्माके संग होवे। आमीन॥

इब्रियोंको (पावल प्रेरितकी) पत्री ।

[प्रभु यीशु ख्रीष्टका जो ईश्वरका पुत्र है स्वर्गदूतोंसे श्रेष्ठ होना ।]

१ ईश्वरने पूर्व्वकालमें समय समय औ नाना प्रकारसे भविष्यद्वक्ताओंके द्वारा पितरोंसे बातें कर . (२) इन पिछले दिनोंमें हमोंसे पुत्रके द्वारा बातें किईं जिसे उसने सब बस्तुओं का अधिकारी ठहराया जिसके द्वारा उसने सारे जगतको सृजा भी . (३) जो उसकी महिमाका तेज और उसके तत्त्वकी मुद्रा और अपनी शक्तिके बचनसे सब बस्तुओंका संभालने- हारा होके अपनेही द्वारासे हमारे पापोंका परिशोधन कर ऊंचे स्थानोंमेंकी महिमाके दहिने हाथ जा बैठा . (४) और जितने भर उसने स्वर्गदूतोंसे श्रेष्ठ नाम पाया है उतने भर उनसे बड़ा हुआ ।

(५) क्योंकि दूतोंमेंसे ईश्वरने किससे कभी कहा तू मेरा पुत्र है मैंने आजही तुझे जन्माया है और फिर कि मैं उसका पिता होंगा और वह मेरा पुत्र होगा । (६) और जब वह फिर पहिलौठेको संसारमें लावे वह कहता है ईश्वरके सब दूतगण उसको प्रमाण करें । (७) दूतोंके विषयमें वह कहता है जो अपने दूतोंको पवन और अपने सेवकोंको आगकी ज्वाला बनाता है । (८) परन्तु पुत्रसे कि हे ईश्वर तेरा सिंहासन सर्व्वदालों है तेरे राज्यका राजदंड सीधाईका राजदंड है । (९) तूने धर्म्मको प्रिय जाना और कुकर्म्मसे घिन्न किई इस कारण ईश्वर तेरे ईश्वरने तुझे तेरे संगियोंसे अधिक करके आनन्दके तेलसे अभिषेक किया । (१०) और यह कि हे प्रभु आदिमें तूने पृथिवीकी नेव डाली और स्वर्ग तेरे हाथोंके कार्य्य

हैं। (११) वे नाश होंगे परन्तु तू बना रहता है और वस्त्रको नाईं वे सब पुराने हो जायेंगे। (१२) और तू उन्हें चद्दरकी नाईं लपेटेगा और वे बदल जायेंगे परन्तु तू एकसा रहता है और तेरे बरस नहीं घटेंगे। (१३) और दूतोंमेंसे उसने किससे कभी कहा है जबलों मैं तेरे शत्रुओंको तेरे चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी दहिनी ओर बैठ। (१४) क्या वे सब सेवा करनेहारे आत्मा नहीं हैं जो त्राण पानेवाले लोगोंके निमित्त सेवकाईके लिये भेजे जाते हैं।

[प्रभु यीशु ख्रीष्टका जो मनुष्यका पुत्र और त्राणकर्त्ता है स्वर्गदूतोंसे श्रेष्ठ होना।]

२ इस कारण अवश्य है कि हम लोग उन बातोंपर जो हमने सुनी हैं बहुत अधिक करके मन लगावें ऐसा न हो कि भूल जावें। (२) क्योंकि यदि वह बचन जो दूतोंके द्वारासे कहा गया दृढ़ हुआ और हर एक अपराध और आज्ञा लंघनका यथार्थ प्रतिफल मिला। (३) तो हम लोग ऐसे बड़े त्राणसे निश्चिन्त रहके क्योंकर बचेंगे अर्थात इस त्राणसे जो प्रभुके द्वारा प्रचारित होने लगा और हमोंके पास सुननेहारोंसे दृढ़ किया गया। (४) जिनके संग ईश्वर भी चिन्हों और अद्भुत कामोंसे भी और नाना प्रकारके आश्चर्य्य कर्म्मोंसे और अपनी इच्छाके अनुसार पवित्र आत्माके दानोंके बांटनेसे साक्षी देता था।

(५) क्योंकि उसने इस होनेहार जगतको जिसके विषयमें हम बोलते हैं दूतोंके अधीन नहीं किया। (६) परन्तु किसीने कहीं साक्षी दिई कि मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुध लेता है अथवा मनुष्यका पुत्र क्या है कि तू उसपर दृष्टि करता है। (७) तूने उसको कुछ थोड़ासा दूतोंसे छोटा किया तूने उसे महिमा और आदरका मुकुट पहिनाया और उसको अपने हाथोंके कार्य्योंपर प्रधान किया तूने सब कुछ उसके

चरणोंके नीचे अधीन किया । (८) सब कुछ उसके अधीन करनेसे उसने कुछ भी रख न छोड़ा जो उसके अधीन नहीं हुआ . तौभी हम अबलों नहीं देखते हैं कि सब कुछ उसके अधीन किया गया है । (९) परन्तु हम यह देखते हैं कि उसको जो कुछ थोड़ासा दूतोंसे छोटा किया गया था अर्थात यीशुको मृत्यु भोगनेके कारण महिमा और आदरका मुकुट पहिनाया गया है इसलिये कि वह ईश्वरके अनुग्रहसे सबके लिये मृत्युका स्वाद चीखे ।

(१०) क्योंकि जिसके कारण सब कुछ है और जिसके द्वारा सब कुछ है उसके यह योग्य था कि बहुत पुत्रोंको महिमालों पहुंचानेमें उनके त्राणके कर्त्ताको दुःख भोगनेके द्वारा सिद्ध करे । (११) क्योंकि पवित्र करनेहारा और वे भी जो पवित्र किये जाते हैं सब एकहीसे हैं और इस कारणसे वह उन्हें भाई कहनेमें नहीं लजाता है । (१२) वह कहता है मैं तेरा नाम अपने भाइयोंको सुनाऊंगा सभाके बीचमें मैं तेरा भजन गाऊंगा । (१३) और फिर कि मैं उसपर भरोसा रखूंगा और फिर कि देख मैं और लड़के जो ईश्वरने मुझे दिये । (१४) इस लिये जब कि लड़के मांस औ लोहूके भागी हुए हैं वह आप भी वैसेही इनका भागी हुआ इसलिये कि मृत्युके द्वारा उस को जिसे मृत्युका सामर्थ्य था अर्थात शैतानको नाश करे . (१५) और जितने लोग मृत्युके भयसे जीवन भर दासत्वमें फंसे हुए थे उन्हें छुड़ावे । (१६) क्योंकि वह तो दूतोंको नहीं थांभता है परन्तु इब्राहीमके वंशको थांभता है । (१७) इस कारण उसको अवश्य था कि सब बातोंमें भाइयोंके समान हो जावे जिस्तें वह उन बातोंमें जो ईश्वरसे संबन्ध रखती हैं दयाल और विश्वासयोग्य महायाजक बने कि लोगोंके पापोंके लिये प्रायश्चित्त करे । (१८) क्योंकि जिस जिस बात

में उसने परीक्षामें पड़के दुःख पाया है उस उस बातमें वह उनकी जिनकी परीक्षा किई जाती है सहायता कर सकता है।

[प्रभु यीशु ख्रीष्टका मूसासे श्रेष्ठ होना इस बातके कारण कठोरता और अविश्वासके निषेध करना।]

३ इस कारण हे पवित्र भाइयो जो स्वर्गीय बुलाहटमें संभागी हो हमारे अंगीकार किये हुए मतके प्रेरित और महायाजक ख्रीष्ट यीशुको देख लेओ. (२) जो अपने ठहरानेहारेके बिश्वासयोग्य है जैसा मूसा भी उसके सारे घरमें बिश्वासयोग्य था। (३) क्योंकि यह तो उतने भर मूसासे अधिक बड़ाईके योग्य समझा गया है जितने भर घरके आदरसे घरके बनानेहारेका आदर अधिक होता है। (४) क्योंकि हर एक घर किसीका तो बनाया हुआ है परन्तु जिसने सब कुछ बनाया सो ईश्वर है। (५) और मूसा तो जो बातें कही जानेपर थीं उनकी साक्षीके लिये सेवककी नाईं उसके सारे घरमें बिश्वासयोग्य था। (६) परन्तु ख्रीष्ट पुत्रकी नाईं उसके घरका अध्यक्ष होकर बिश्वासयोग्य है और हम लोग यदि साहसको और आशाकी बड़ाईको अन्तलों दृढ़ थांभे रहें तो उसके घर हैं। (७) इसलिये जैसे पवित्र आत्मा कहता है कि आज जो तुम उसका शब्द सुनो. (८) तो अपने मन कठोर मत करो जैसे चिढ़ावमें और परीक्षाके दिन जंगलमें हुआ. (९) जहां तुम्हारे पितरोंने मेरी परीक्षा लिई और मुझे जांचा और चालीस बरस मेरे कामोंको देखा. (१०) इस कारण मैं उस समयके लोगोंसे उदास हुआ और बोला उनके मन सदा भटकते हैं और उन्होंने मेरे मार्गोंको नहीं जाना है॰ (११) सो मैंने क्रोध कर किरिया खाई कि वे मेरे बिश्राममें प्रवेश न करेंगे. (१२) तैसे हे भाइयो चौकस रहो कि जीवते ईश्वरको

त्यागनेमें अविश्वासका बुरा मन तुम्होंमेंसे किसीमें न ठहरे। (१३) परन्तु जबलों आज कहावता है प्रतिदिन एक दूसरेको समझाओ ऐसा न हो कि तुममेंसे कोई जन पापके छलसे कठोर हो जाय। (१४) क्योंकि हम जो भरोसेके आरंभको अन्तलों दृढ़ थांभे रहें तब तो ख्रीष्टमें संभागी हुए हैं. (१५) जैसे उस वाक्यमें है कि आज जो तुम उसका शब्द सुनो तो अपने मन कठोर मत करो जैसे चिढ़ावमें हुआ। (१६) क्योंकि किन लोगोंने सुनके चिढ़ाया. क्या उन सब लोगोंने नहीं जो मूसाके द्वारा मिसरसे निकले। (१७) और वह किन लोगोंसे चालीस बरस उदास हुआ. क्या उन लोगोंसे नहीं जिन्होंने पाप किया जिनकी लोथें जंगलमें गिरीं। (१८) और किन लोगोंसे उसने किरिया खाई कि तुम मेरे विश्राममें प्रवेश न करोगे केवल आज्ञा लंघन करनेहारोंसे। (१९) सो हम देखते हैं कि वे अविश्वासके कारण प्रवेश नहीं कर सके।

४ इसलिये हमोंको डरना चाहिये न हो कि यद्यपि ईश्वरके विश्राममें प्रवेश करनेकी प्रतिज्ञा रह गई है तौभी तुम्होंमेंसे कोई जन ऐसा देख पड़े कि उसमें नहीं पहुंचा है। (२) क्योंकि जैसे उन्होंको तैसे हमोंको वह सुसमाचार सुनाया गया है परन्तु उन्हें समाचारके वचनसे जो सुननेहारोंसे विश्वास से नहीं मिलाया गया कुछ लाभ न हुआ। (३) क्योंकि हम लोग जिन्होंने विश्वास किया है विश्राममें प्रवेश करते हैं. इसके विषयमें यद्यपि उसके कार्य्य जगतकी उत्पत्तिसे बन चुके थे तौभी उसने कहा है सो मैंने क्रोध कर किरिया खाई कि वे मेरे विश्राममें प्रवेश न करेंगे। (४) क्योंकि सातवें दिनके विषयमें उसने कहीं यूं कहा है और ईश्वरने सातवें दिन अपने सब कार्य्योंसे विश्राम किया। (५) तौभी इस ठौर फिर कहा है वे मेरे विश्राममें प्रवेश न करेंगे। (६) सो जब कि कितनोंका

उसमें प्रवेश करना रह गया है और जिन्होंको उसका सुसमाचार पहिले सुनाया गया उन्होंने आज्ञालंघनके कारण प्रवेश न किया . (७) और फिर वह आज कह करके किसी दिनका ठिकाना दे इतने दिनोंके पीछे दाऊदके द्वारा बोलता है जैसे कहा गया है आज जो तुम उसका शब्द सुनो तो अपने मन कठोर मत करो . (८) परन्तु जो यिहोशूआने उन्हें बिश्राम दिया होता तो ईश्वर पीछे दूसरे दिनकी बात न करता . (९) तो जानो कि ईश्वरके लोगोंके लिये बिश्रामवारसा एक बिश्राम रह गया है । (१०) क्योंकि जिसने उसके बिश्राममें प्रवेश किया है जैसे ईश्वरने अपनेही कार्य्योंसे तैसे उसने भी अपने कार्य्योंसे बिश्राम किया है । (११) सो हम लोग उस बिश्राममें प्रवेश करनेका यत्न करें ऐसा न हो कि कोई जन आज्ञालंघनके उसी दृष्टान्तके समान पतित होय । (१२) क्योंकि ईश्वरका बचन जीवता औ प्रबल और हर एक दोधारे खड्गसे भी चोखा है और वारपार छेदनेहारा है यहांलों कि जीव और आत्माको और गांठ गांठ औ गूदे गूदेको अलग अलग करे और हृदय की चिन्ताओं और भावनाओंका बिचार करनेहारा है । (१३) और कोई सृजी हुई वस्तु उसके आगे गुप्त नहीं है परन्तु जिससे हमें काम है उसके नैनोंके आगे सब कुछ नंगा और खुला हुआ है ।

[प्रभु यीशु खीष्टका उन महायाजकोंसे श्रेष्ठ होना जो पहिले नियमके हैं ।]

(१४) सो जब कि हमारा एक बड़ा महायाजक है जो स्वर्ग होके गया है अर्थात ईश्वरका पुत्र यीशु आओ हम अपने अंगीकार किये हुए मतको धरे रहें । (१५) क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं है जो हमारी दुर्ब्बलताओंके दुःखको बूझ न सके परन्तु बिना पाप वह हमारे समान सब बातोंमें परीक्षित हुआ है । (१६) इसलिये हम लोग अनुग्रहके सिंहा-

उनके पास साहससे आवें कि दया हमपर किई जाय और हम समय योग्य सहायताके लिये अनुग्रह पावें ।

५ क्योंकि हर एक महायाजक मनुष्योंमेंसे लिया जाके मनुष्योंके लिये उन बातोंके विषयमें जो ईश्वरसे संबन्ध रखती हैं ठहराया जाता है कि चढ़ावोंको और पापोंके निमित्त बलिदानोंको चढ़ावे । (२) और वह अज्ञानों और भूलनेहारोंकी ओर दयाशील हो सकता है क्योंकि वह आप भी दुर्ब्बलतासे घेरा हुआ है । (३) और इसके कारण उसे अवश्य है कि जैसे लोगोंके लिये वैसे अपने लिये भी पापोंके निमित्त चढ़ाया करे । (४) और यह आदर कोई अपने लिये नहीं लेता है परन्तु जो हारोनकी नाईं ईश्वरसे बुलाया जाता है सो लेता है । (५) वैसेही खीष्टने भी महायाजक बननेको अपनी बड़ाई न किई परन्तु जो उससे बोला तू मेरा पुत्र है मैंने आजही तुझे जन्माया है उसीने उसकी बड़ाई किई । (६) जैसे वह दूसरे ठौरमें भी कहता है तू मलकीसिदककी पदवीपर सदालों याजक है । (७) उसने अपने शरीरके दिनों में ऊंचे शब्दसे पुकार पुकारके औ रो रोके उससे जो उसे मृत्युसे बचा सकता था बिन्ती और निवेदन किये और उस भयके निमित्त सुना गया . (८) और यद्यपि पुत्र था तौभी जिन दुःखोंको भोगा उनसे आज्ञा मानना सीखा . (९) और सिद्ध बनके उन सभोंके लिये जो उसके आज्ञाकारी होते हैं अनन्त त्राणका कर्त्ता हुआ . (१०) और ईश्वरसे मलकीसिदक की पदवीपरका महायाजक कहा गया ।

(११) इस पुरूषके विषयमें हमें बहुत वचन कहना है जिसका अर्थ बताना भी कठिन है क्योंकि तुम सुननेमें आलसी हुए हो । (१२) क्योंकि यद्यपि इतने समयके बीतनेसे तुम्हें उचित था कि शिक्षक होते तौभी तुम्होंको फिर आवश्यक है कि

कोई तुम्हें सिखावे कि ईश्वरकी बाणियोंकी आदिशिक्षा क्या है और ऐसे हुए हो कि तुम्हें अन्नका नहीं परन्तु दूधका प्रयोजन है। (१३) क्योंकि जो कोई दूधही पीता है उसको धर्म्मके बचनका परिचय नहीं है क्योंकि बालक है। (१४) परन्तु अन्न उनके लिये है जो सयाने हुए हैं जिनके ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास के कारण भले औ बुरेके बिचारके लिये साधे हुए हैं।

६ इस कारण ख्रीष्टके आदि बचनको छोड़के हम सिद्धताको ओर बढ़ते जावें. (२) और यह नहीं कि मृतवत कर्म्मोंसे पश्चात्ताप करनेकी और ईश्वरपर बिश्वास करनेकी और बपतिसमोंके उपदेशकी और हाथ रखनेकी और मृतकोंके जी उठनेकी और अनन्त दंडकी नेव फिरके डालें। (३) हां जो ईश्वर यूं करने देवे तो हम यही करेंगे। (४) क्योंकि जिन्होंने एक बेर ज्योति पाई और स्वर्गीय दानका स्वाद चीखा और पवित्र आत्माके भागी हुए. (५) और ईश्वरके भले बचनका औ होनेहार जगतकी शक्तिका स्वाद चीखा (६) और पतित हुए हैं उन लोगोंको पश्चात्तापके निमित्त फिरके नये करना अन्होना है क्योंकि वे ईश्वरके पुत्रको अपने लिये फिर क्रूशपर चढ़ाते और प्रगटमें उसपर कलंक लगाते हैं। (७) क्योंकि जिस भूमिने वह वर्षा जो उसपर बारंबार पड़ती है पिई है और जिन लोगोंके कारण वह जोती बोई जाती है उन लोगोंके योग्य साग पात उपजाती है सो ईश्वरसे आशीस पाती है। (८) परन्तु जो वह कांटे और ऊंटकटारे जन्माती है तो निकृष्ट है और स्रापित होनेके निकट है जिसका अन्त यह है कि जलाई जाय। (९) परन्तु हे प्यारो यद्यपि हम यूं बोलते हैं तौभी तुम्हारे विषयमें हमें अच्छीही बातों और त्राण संयुक्त बातोंका भरोसा है। (१०) क्योंकि ईश्वर अन्याई नहीं है कि तुम्हारे कार्य्यको

और उसके नामपर जो प्रेम तुमने दिखाया उस प्रेमके परिश्रम को भूल जावे कि तुमने पवित्र लोगोंकी सेवा किई और करते हो । (११) परन्तु हम चाहते हैं कि तुम्होंमेंसे हर एक जन अन्तलों आशाके निश्चयके लिये वही यत्न दिखाया करे . (१२) कि तुम आलसी नहीं परन्तु जो लोग बिश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओंके अधिकारी होते हैं उन्होंके अनुगामी बनो।

(१३) क्योंकि ईश्वरने इब्राहीमको प्रतिज्ञा देके जब कि अपनेसे किसी बड़ेकी किरिया नहीं खा सकता था अपनीही किरिया खाके कहा . (१४) निश्चय मैं तुझे बहुत आशीस देऊंगा और तुझे बहुत बढ़ाऊंगा । (१५) और इस रीतिसे इब्राहीमने धीरज धरके प्रतिज्ञा प्राप्त किई । (१६) क्योंकि मनुष्य तो अपनेसे बड़ेकी किरिया खाते हैं और किरिया दृढ़ताके लिये उनके समस्त बिवादका अन्त है। (१७) इसलिये ईश्वर प्रतिज्ञाके अधिकारियोंपर अपने मतकी अचलताको बहुतही प्रगट करनेकी इच्छा कर किरियाके द्वारा मध्यस्थ हुआ . (१८) कि दो अचल विषयोंके द्वारा जिनमें ईश्वरका झूठ बोलना अन्होना है दृढ़ शांति हम लोगोंको मिले जो साम्हने रखी हुई आशा धर लेनेको भाग आये हैं। (१९) वह आशा हमारे लिये प्राणका लंगरसा होती है जो अटल औ दृढ़ है और परदेके भीतरलों प्रवेश करता है . (२०) जहां हमारे लिये अगुवा होके यीशुने प्रवेश किया है जो मलकीसिदककी पदवीपर सदालों महायाजक बना है ।

[मलकीसिदककी याजकता । प्रभु यीशु खीष्टकी अटल और सनातन याजकताका दृष्टान्त ।]

७ यह मलकीसिदक शलीमका राजा और सर्व्वप्रधान ईश्वरका याजक जो इब्राहीमसे जब वह राजाओंको मारनेसे लौटता था आ मिला और उसको आशीस दिई .

(२) जिसको इब्राहीमने सब वस्तुओंमेंसे दसवां अंश भी दिया जो पहिले अपने नामके अर्थसे धर्म्मका राजा है और फिर शलीमका राजा भी अर्थात शांतिका राजा है . (३) जिसका न पिता न माता न बंशावलि है जिसके न दिनोंका आदि न जीवनका अन्त है परन्तु ईश्वरके पुत्रके समान किया गया है नित्य याजक बना रहता है ।

(४) पर देखो यह कैसा बड़ा पुरुष था जिसको इब्राहीम कुलपतिने लूटमेंसे दसवां अंश भी दिया । (५) लेवीके सन्तानोंमेंसे जो लोग याजकीय पद पाते हैं उन्हें तो व्यवस्थाके अनुसार लोगोंसे अर्थात अपने भाइयोंसे यद्यपि वे इब्राहीमके देहसे जन्मे हैं दसवां अंश लेनेकी आज्ञा होती है । (६) परन्तु इसने जो उनकी बंशावलिमेंका नहीं है इब्राहीमसे दसवां अंश लिया है और उसको जिसे प्रतिज्ञाएं मिलीं आशीस दिई है । (७) पर अखंडनीय बात है कि छोटेको बड़ेसे आशीस दिई जाती है । (८) और यहां मनुष्य जो मरते हैं दसवां अंश लेते हैं परन्तु वहां वह लेता है जिसके विषयमें साक्षी दिई जाती है कि वह जीता है । (९) और यह भी कह सकते कि इब्राहीमके द्वारा लेवीसे भी जो दसवां अंश लेनेहारा है दसवां अंश लिया गया है । (१०) क्योंकि जिस समय मलकीसिदक उसके पितासे आ मिला उस समय वह अपने पिताके देहमें था ।

(११) सो यदि लेवीय याजकताके द्वारा जिसके संयोगमें लोगोंको व्यवस्था दिई गई थी सिद्धता हुई होती तो और क्या प्रयोजन था कि दूसरा याजक मलकीसिदककी पदवीपर खड़ा होय और हारोनकी पदवीका न कहावे । (१२) क्योंकि याजकता जो बदली जाती है तो अवश्य करके व्यवस्थाकी भी बदली होती है । (१३) जिसके विषयमें यह बातें कही जातीं सो

दूसरे कुलमेंका है जिसमेंसे किसी मनुष्यने बेदीकी सेवा नहीं किई है । (१४) क्योंकि प्रत्यक्ष है कि हमारा प्रभु यिहूदाके कुलसे उदय हुआ है जिससे मसाने याजकताके विषयमें कुछ नहीं कहा । (१५) और वह बात और भी बहुत प्रगट इससे होती है कि मलकीसिदकके समान दूसरा याजक खड़ा है. (१६) जो शारीरिक आज्ञाकी व्यवस्थाके अनुसार नहीं परन्तु अविनाशी जीवनकी शक्तिके अनुसार बन गया है। (१७) क्योंकि ईश्वर साक्षी देता है कि तू मलकीसिदककी पदवीपर सदालों याजक है। (१८) सो अगली आज्ञाकी दुर्ब्बलता औ निष्फलताके कारण उसका तो लोप होता है इसलिये कि व्यवस्थाने किसी बातको सिद्ध नहीं किया । (१९) परन्तु एक उत्तम आशाका स्थापन होता है जिसके द्वारा हम ईश्वरके निकट पहुंचते हैं।

(२०) और वे लोग बिना किरिया याजक बन गये हैं परन्तु यह तो किरियाके अनुसार उससे बना है जो उससे कहता है परमेश्वरने किरिया खाई है और नहीं पछतावेगा तू मलकीसिदककी पदवीपर सदालों याजक है। (२१) सो जब कि योशु किरिया बिना याजक नहीं हुआ है. (२२) वह उतने भर उत्तम नियमका जामिन हुआ है। (२३) और वे तो बहुतसे याजक बन गये हैं इस कारण कि मृत्यु उन्हें रहने नहीं देती है. (२४) परन्तु यह सदालों रहता है इस कारण उसकी याजकता अटल है। (२५) इसलिये जो लोग उसके द्वारा ईश्वरके पास आते हैं वह उनका त्राण अत्यन्तलों कर सकता है क्योंकि वह उनके लिये बिन्ती करनेको सदा जीता है। (२६) क्योंकि ऐसा महायाजक हमारे योग्य था जो पवित्र औ सूधा औ निर्मल औ पापियोंसे अलग और स्वर्गसे भी ऊंचा किया हुआ है. (२७) जिसे प्रतिदिन प्रयोजन नहीं है कि प्रधान याजकोंकी नाईं पहिले अपनेही पापोंके लिये

तब लोगोंके पापोंके लिये बलि चढ़ावे क्योंकि इसको वह एकही बेर कर चुका कि अपने तईं चढ़ाया । (२८) क्योंकि व्यवस्था मनुष्योंको जिन्हें दुर्ब्बलता है प्रधान याजक ठहराती है परन्तु जो किरिया व्यवस्थाके पीछे खाई गई उसकी बात पुत्रको जो सर्ब्बदा सिद्ध किया गया है ठहराती है ।

[पहिले नियमका उस नये नियमका प्रतिरूप और परछाईं होना जिसका मध्यस्थ प्रभु यीशु है ।]

८ जो बातें कही जाती हैं उनमें सार बात यह है कि हमारा ऐसा महायाजक है कि स्वर्गमें महिमाके सिंहासनके दहिने हाथ जा बैठा . (२) और पवित्र स्थानका और उस सच्चे तंबूका सेवक हुआ जिसे किसी मनुष्यने नहीं परन्तु परमेश्वरने खड़ा किया । (३) क्योंकि हर एक प्रधान याजक चढ़ावे और बलिदान चढ़ानेके लिये ठहराया जाता है इस कारण अवश्य है कि इसीके पास भी चढ़ानेके लिये कुछ होय। (४) फिर याजक तो हैं जो व्यवस्थाके अनुसार चढ़ावे चढ़ाते हैं और स्वर्गमेंकी बस्तुओंके प्रतिरूप ओ परछाईंकी सेवा करते हैं जैसे मूसाको जब वह तंबू बनानेपर था आज्ञा दिई गई अर्थात ईश्वरने कहा देख जो आकार तुझे पहाड़पर दिखाया गया उसके अनुसार सब कुछ बना । (५) इसलिये जो यह पृथिवीपर होता तो याजक नहीं होता । (६) परन्तु अब जैसे वह और उत्तम नियमका मध्यस्थ है जो और उत्तम प्रतिज्ञाओंपर स्थापन किया गया है तैसी श्रेष्ठ सेवकाई भी उसे मिली है ।

(७) क्योंकि जो वह पहिला नियम निर्दोष होता तो दूसरेके लिये जगह न ढूंढ़ी जाती । (८) परन्तु वह उनपर दोष देके बोलता है कि परमेश्वर कहता है देखो वे दिन आते हैं कि मैं इस्रायेलके घरानेके संग और यिहूदाके घरानेके संग

नया नियम स्थापन करूंगा। (९) जो नियम मैंने उनके पितरोंके संग उस दिन बांधा जिस दिन उन्हें मिसर देशमेंसे निकाल लानेको उनका हाथ थांभा उस नियमके अनुसार नहीं क्योंकि वे मेरे नियमपर नहीं ठहरे और मैंने उनकी सुध न लिई परमेश्वर कहता है। (१०) परन्तु यही नियम है जो मैं उन दिनोंके पीछे इस्रायेलके घरानेके संग बांधूंगा परमेश्वर कहता है मैं अपनी व्यवस्थाको उनके मनमें डालूंगा और उसे उनके हृदयमें लिखूंगा और मैं उनका ईश्वर होंगा और वे मेरे लोग होंगे। (११) और वे हर एक अपने पड़ोसीको और हर एक अपने भाईको यह कहके न सिखावेंगे कि परमेश्वरको पहचान क्योंकि उनमेंके छोटेसे बड़ेलों सब मुझे जानेंगे। (१२) क्योंकि मैं उनके अधर्म्मके विषयमें दया करूंगा और उनके पापोंको और उनके कुकर्म्मोंको फिर कभी स्मरण न करूंगा।

(१३) नया नियम कहनेसे उसने पहिला नियम पुराना ठहराया है पर जो पुराना और जीर्ण होता जाता है सो लोप होनेके निकट है।

[पहिले नियमके बलिदान और चढ़ावे चढ़ानेवालोंको सिद्ध कर नहीं सकते पर प्रभु यीशु खीष्टका एकही बलिदान सनातनलों सिद्ध करता है।]

९ सो उस पहिले नियमके संयोगमें भी सेवकाईकी विधियां और लौकिक पवित्र स्थान था। (२) क्योंकि तंबू बनाया गया अगला तंबू जिसमें दीवट और मेज और रोटीकी भेंट थी जो पवित्र स्थान कहावता है। (३) और दूसरे परदेके पीछे वह तंबू जो पवित्रोंमेंसे पवित्र स्थान कहावता है. (४) जिस में सोनेकी धूपदानी थी और नियमका सन्दूक जो चारों ओर सोनेसे मढ़ा हुआ था और उसमें सोनेका कलसी जिसमें मन्ना था और हारोनकी छड़ी जिसकी कोंपलें निकलीं और नियम की दोनों पटियाएं। (५) और उसके ऊपर दोनों तेजस्वी

किरूब थे जो दयाके आसनको छाये थे. इन्होंके विषयमें पृथग्‌ पृथक्‌ बात करनेका अभी समय नहीं है।

(६) यह सब वस्तु जो इस रीतिसे बनाई गई हैं तो अगले तंबूमें याजक लोग नित्य प्रवेश कर सेवा किया करते हैं। (७) परन्तु दूसरेमें केवल महायाजक बरस भरमें एक बेर जाता है और लोहू बिना नहीं जाता है जिसे अपने लिये और लोगों की अज्ञानताओंके लिये चढ़ाता है। (८) इससे पवित्र आत्मा यही बताता है कि जबलों अगला तंबू स्थापित रहता तबलों पवित्र स्थानका मार्ग प्रगट नहीं हुआ। (९) और यह तो बर्त्तमान समयके लिये दृष्टान्त है जिसमें चढ़ावे और बलिदान चढ़ाये जाते हैं जो सेवा करनेहारेके मनको सिद्ध नहीं कर सकते हैं। (१०) केवल खाने और पीनेकी वस्तुओं और नाना बपतिसमों और शरीरकी बिधियोंके संबन्धमें यह बातें सुधर जानेके समयलों ठहराई हुई हैं। (११) परन्तु ख्रीष्ट जब होनेहार उत्तम विषयोंका महायाजक होके आया तब उसने और भी बड़े और सिद्ध तंबूमेंसे जो हाथका बनाया हुआ नहीं अर्थात इस सृष्टिका नहीं है. (१२) और बकरों और बछड़ुओं के लोहूके द्वारा नहीं परन्तु अपनेही लोहूके द्वारासे एकही बेर पवित्र स्थानमें प्रवेश किया और अनन्त उद्धार प्राप्त किया। (१३) क्योंकि यदि बैलों और बकरोंका लोहू और बछियाकी राख जो अपवित्र लोगोंपर छिड़की जाती शरीरकी शुद्धताके लिये पवित्र करती है. (१४) तो कितना अधिक करके ख्रीष्ट का लोहू जिसने सनातन आत्माके द्वारा अपने तईं ईश्वरके आगे निष्कलंक चढाया तुम्हारे मनको मृतवत कर्म्मोंसे शुद्ध करेगा कि तुम जीवते ईश्वरकी सेवा करो।

(१५) और इसीके कारण वह नये नियमका मध्यस्थ है जिस्तें पहिले नियमके संबन्धी अपराधोंके उद्धारके लिये मृत्यु भोग

किये जानेसे बुलाये हुए लोग अनन्त अधिकारकी प्रतिज्ञाको प्राप्त करें । (१६) क्योंकि जहां मरणोपरान्त दानका नियम है तहां नियमके बांधनेहारेकी मृत्युका अनुमान अवश्य है । (१७) क्योंकि ऐसा नियम लोगोंके मरनेपर दृढ़ होता है नहीं तो जबलों उसका बांधनेहारा जीता है तबलों नियम कभी काम नहीं आता है । (१८) इसलिये वह पहिला नियम भी लोहू बिना नहीं स्थापन किया गया है । (१९) क्योंकि जब मूसा व्यवस्था के अनुसार हर एक आज्ञा सब लोगोंसे कह चुका तब उसने जल और लाल ऊन और एसोबके संग बछड़ुओं और बकरों का लोहू लेके पुस्तकहीपर और सब लोगोंपर भी छिड़का. (२०) और कहा यह उस नियमका लोहू है जिसे ईश्वरने तुम्हारे विषयमें आज्ञा करके ठहराया है । (२१) और उसने तंबूपर भी और सेवाकी सब सामग्रीपर उसी रीतिसे लोहू छिड़का । (२२) और व्यवस्थाके अनुसार प्राय सब बस्तु लोहूके द्वारा शुद्ध किई जाती हैं और बिना लोहू बहाये पापमोचन नहीं होता है ।

(२३) सो अवश्य था कि स्वर्गमेंकी बस्तुओंके प्रतिरूप इन्हींसे शुद्ध किये जायें परन्तु स्वर्गमेंकी बस्तु आपही इन्होंसे उत्तम बलिदानोंसे शुद्ध किई जायें । (२४) क्योंकि ख्रीष्टने हाथके बनाये हुए पवित्र स्थानमें जो सच्चेका दृष्टान्त है प्रवेश नहीं किया परन्तु स्वर्गहीमें प्रवेश किया कि हमारे लिये अब ईश्वरके सन्मुख दिखाई देवे . (२५) पर इसलिये नहीं कि जैसा महायाजक बरस बरस दूसरेका लोहू लिये हुए पवित्र स्थानमें प्रवेश करता है तैसा वह अपनेको बार बार चढ़ावे . (२६) नहीं तो जगतकी उत्पत्तिसे लेके उसको बहुत बेर दुःख भोगना पड़ता परन्तु अब जगतके अन्तमें वह एक बेर अपनेही बलिदानके द्वारा पापको दूर करनेके लिये प्रगट

हुआ है। (२७) और जैसे मनुष्योंके लिये एक बेर मरना और उसके पीछे बिचार ठहराया हुआ है. (२८) वैसेही ख्रीष्ट बहुतोंके पापोंको उठा लेनेके लिये एक बेर चढ़ाया गया और जो लोग उसकी बाट जोहते हैं उनको त्राणके लिये दूसरी बेर बिना पापसे दिखाई देगा।

१० व्यवस्थामें तो होनेहार उत्तम विषयोंकी परछाईं मात्र है पर उन विषयोंका स्वरूप नहीं इसलिये वह बरस बरस एकही प्रकारके बलिदानोंके सदा चढ़ाये जानेसे कभी उन्हें जो निकट आते हैं सिद्ध नहीं कर सकती है। (२) नहीं तो क्या उन्होंका चढ़ाया जाना बन्द न हो जाता इस कारण कि सेवा करनेहारोंको जो एक बेर शुद्ध किये गये थे फिर पापी होनेका कुछ बोध न रहता। (३) पर इन्होंमें बरस बरस पापोंका स्मरण हुआ करता है। (४) क्योंकि अन्होना है कि बैलों और बकरोंका लोहू पापोंको दूर करे। (५) इस कारण ख्रीष्ट जगतमें आते हुए कहता है तूने बलिदान और चढ़ावे को न चाहा परन्तु मेरे लिये देह सिद्ध किया। (६) तू होमोंसे और पाप निमित्तके बलियोंसे प्रसन्न न हुआ। (७) तब मैंने कहा देख मैं आता हूं धर्म्मपुस्तकमें मेरे विषयमें लिखा भी है जिस्तें हे ईश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं। (८) ऊपर उसने कहा है बलिदान और चढ़ावेको और होमों और पाप निमित्त के बलियोंको तूने न चाहा और न उनसे प्रसन्न हुआ अर्थात उनसे जो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाये जाते हैं। (९) तब कहा है देख मैं आता हूं जिस्तें हे ईश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं. वह पहिलेको उठा देता है इसलिये कि दूसरेको स्थापन करे। (१०) उसी इच्छाके अनुसार हम लोग योशु ख्रीष्टके देहके एकही बेर चढ़ाये जानेके द्वारा पवित्र किये गये हैं।

(११) और हर एक याजक खड़ा होके प्रतिदिन सेवकाई

करता है और एकही प्रकारके बलिदानोंको जो पापोंको कभी मिटा नहीं सकते हैं वारंवार चढ़ाता है। (१२) परन्तु वह तो पापोंके लिये एकही बलिदान चढ़ाके ईश्वरके दहिने हाथ सदा बैठ गया. (१३) और अबसे जबलों उसके शत्रु उसके चरणों की पीढ़ी न बनाये जायें तबलों बाट जोहता रहता है। (१४) क्योंकि एकही चढ़ावेसे उसने उन्हें जो पवित्र किये जाते हैं सदा सिद्ध किया है।

(१५) और पवित्र आत्मा भी हमें साक्षी देता है क्योंकि उसने पहिले कहा था. (१६) यही नियम है जो मैं उन दिनोंके पीछे उनके संग बांधूंगा परमेश्वर कहता है मैं अपनी व्यवस्था को उनके हृदयमें डालूंगा और उसे उनके मनमें लिखूंगा. (१७) [तब पीछे कहा] मैं उनके पापोंको और उनके कुकर्म्मों को फिर कभी स्मरण न करूंगा। (१८) पर जहां इनका मोचन हुआ तहां फिर पापोंके लिये चढ़ावा न रहा।

[इन बातोंके कारण स्थिर रहनेका उपदेश। पतित होनेका भयंकर फल।]

(१९) सो हे भाइयो जब कि यीशुके लोहूके द्वारासे हमें पवित्र स्थानमें प्रवेश करनेको साहस मिलता है. (२०) और हमारे लिये परदेमेंसे अर्थात उसके शरीरमेंसे नया और जीवता मार्ग है जो उसने हमारे लिये स्थापन किया. (२१) और हमारा महायाजक है जो ईश्वरके घरका अध्यक्ष है. (२२) तो आओ बुरे मनसे शुद्ध होनेको हृदयपर छिड़काव किये हुए और देह शुद्ध जलसे नहलाये हुए हम लोग विश्वासके निश्चयके साथ सच्चे मनसे निकट आवें. (२३) और आशाके अंगीकारको दृढ़ कर थांभ रखें क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा किई है वह विश्वासयोग्य है. (२४) और प्रेम औ सुकर्म्मोंमें उस्काने के लिये एक दूसरेकी चिन्ता किया करें. (२५) और जैसे कितनोंकी रीति है तैसे आपसमें एकट्ठे होना न छोड़ें परन्तु

एक दूसरेको समझावें . और जितने भर उस दिनको निकट आते देखो उतने अधिक करके यह किया करो ।

(२६) क्योंकि जो हम सत्यका ज्ञान प्राप्त करनेके पीछे जान बूझके पाप किया करें तो पापोंके लिये फिर कोई बलिदान नहीं. (२७) परन्तु दंडका भयंकर बाट जोहना और विरोधियों को भक्षण करनेवाली आगका ज्वलन रह गया । (२८) जिसने मूसाकी व्यवस्थाको तुच्छ जाना है कोई हो वह दो अथवा तीन साक्षियोंकी साक्षीपर दयासे बर्ज्जित होके मर जाता है । (२९) तो क्या समझते हो कितने और भी भारी दंडके योग्य वह गिना जायगा जिसने ईश्वरके पुत्रको पांवों तले रौंदा है और नियमके लोहूको जिससे वह पवित्र किया गया था अपवित्र जाना है और अनुग्रहके आत्माका अपमान किया है । (३०) क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा कि पलटा लेना मेरा काम है परमेश्वर कहता है मैं प्रतिफल देऊंगा और फिर कि परमेश्वर अपने लोगोंका बिचार करेगा । (३१) जीवते ईश्वरके हाथोंमें पड़ना भयंकर बात है ।

(३२) परन्तु अगले दिनोंको स्मरण करो जिनमें तुम ज्योति पाके दुःखोंके बड़े युद्धमें स्थिर रहे . (३३) कुछ यह कि निन्दाओं और क्लेशोंसे तुम लीलाके ऐसे बनाये जाते थे कुछ यह कि जिनके इस रीतिसे दिन कटते थे उनके संग तुम भागी हुए । (३४) क्योंकि तुम मेरे बंधनोंके दुःखमें भी दुःखी हुए और यह जानके कि स्वर्गमें हमारे लिये श्रेष्ठ और अक्षय सम्पत्ति है तुमने अपनी सम्पत्तिका लूटा जाना आनन्दसे ग्रहण किया । (३५) सो अपने साहसको जिसका बड़ा प्रतिफल होता है मत त्याग देओ । (३६) क्योंकि तुम्हें स्थिरताका प्रयोजन है इसलिये कि ईश्वरकी इच्छा पूरी करके तुम प्रतिज्ञाका फल पावो । (३७) क्योंकि थोड़ी ऐसी बेरमें वह जो आनेवाला

है आवेगा और बिलंब न करेगा । (३८) बिश्वाससे धर्म्मी जन जीयेगा परन्तु जो वह हट जाय तो मेरा मन उससे प्रसन्न नहीं । (३९) पर हम लोग हट जानेवाले नहीं हैं जिस्से बिनाश होता परन्तु बिश्वास करनेहारे हैं जिससे आत्माको रक्षा होगी ।

[बिश्वासका लक्षण और हाबिल हनोक नूह इब्राहीम आदि बिश्वासियोंके वृत्तान्तसे उसके अनेक उदाहरण ।]

११ बिश्वास जिन बातोंकी आशा रखी जाती उन बातोंका निश्चय और अन्देखी बातोंका प्रमाण है ।

(२) इसीके विषयमें प्राचीन लोग सुख्यात हुए । (३) बिश्वास से हम बूझते हैं कि सारा जगत ईश्वरके बचनसे रचा गया यहांलों कि जो देखा जाता है सो उससे जो दिखाई देता है नहीं बनाया गया है । (४) बिश्वाससे हाबिलने ईश्वरके आगे काइनसे बड़ा बलिदान चढ़ाया और उसके द्वारा उसपर साक्षी दिई गई कि धर्म्मी जन है क्योंकि ईश्वरने आपही उसके चढ़ावोंपर साक्षी दिई और उसीके द्वारा वह मूएपर भी अबलों बोलता है । (५) बिश्वाससे हनोक उठा लिया गया कि मृत्युको न देखे और नहीं मिला क्योंकि ईश्वरने उसको उठा लिया था क्योंकि उसपर साक्षी दिई गई है कि उठा लिये जानेके पहिले उसने ईश्वरको प्रसन्न किया था । (६) परन्तु बिश्वास बिना उसे प्रसन्न करना असाध्य है क्योंकि अवश्य है कि जो ईश्वरके पास आवे सो बिश्वास करे कि वह है और कि वह उन्हें जो उसे ढूंढ़ लेते हैं प्रतिफल देनेहारा है । (७) बिश्वाससे नूह जो बातें उस समयमें देख नहीं पड़ती थीं उनके विषयमें ईश्वरसे चिताया जाके डर गया और अपने घरानेकी रक्षाके लिये जहाज बनाया और उसके द्वारासे उसने संसारको दोषी ठहराया और उस धर्म्मका अधिकारी हुआ जो बिश्वाससे होता है ।

(८) बिश्वाससे इब्राहीम जब बुलाया गया तब आज्ञाकारी होके निकला कि उस स्थानको जाय जिसे वह अधिकारके लिये पानेपर था और मैं किधर जाता हूं यह न जानके निकल चला । (९) बिश्वाससे वह प्रतिज्ञाके देशमें जैसे पराये देशमें बिदेशी रहा और इसहाक और याकूबके साथ जो उसी प्रतिज्ञाके संगी अधिकारी थे तंबूओंमें बास किया । (१०) क्योंकि वह उस नगरकी बाट जोहता था जिसकी नेवें हैं जिसका रचनेहारा और बनानेहारा ईश्वर है । (११) बिश्वाससे सारःने भी गर्भ धारण करनेकी शक्ति पाई और बयसके व्यतीत होनेपर भी बालक जनी क्योंकि उसने उसको जिसने प्रतिज्ञा किई थी बिश्वासयोग्य समझा । (१२) इस कारण एकही जनसे जो मृतकसा भी हो गया था लोग इतने जन्मे जितने आकाश के तारे हैं और जैसे समुद्रके तीरपरका बालू जो अगणित है । (१३) ये सब बिश्वासहीमें मरे कि उन्होंने प्रतिज्ञाओंका फल नहीं पाया परन्तु उसे दूरसे देखा और निश्चय कर लिया और प्रणाम किया और मान लिया कि हम पृथिवीपर ऊपरी और परदेशी हैं । (१४) क्योंकि जो लोग ऐसी बातें कहते हैं सो प्रगट करते हैं कि देश ढूंढ़ते हैं । (१५) और जो वे उस देशको जिससे निकल आये थे स्मरण करते तो उन्हें लौट जानेका अवसर मिलता । (१६) पर अब वे और उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश पहुंचनेकी चेष्टा करते हैं इसलिये ईश्वर उनका ईश्वर कहलानेमें उनसे लजाता नहीं क्योंकि उसने उनके लिये नगर तैयार किया है । (१७) बिश्वाससे इब्राहीमने जब उसकी परीक्षा लिई गई तब इसहाकको चढ़ाया । (१८) जिसने प्रतिज्ञाओं को पाया था और जिसको कहा गया था कि इसहाकसे जो हो सो तेरा बंश कहावेगा सोई अपने एकलौतेको चढ़ाता था । (१९) क्योंकि उसने बिचार किया कि ईश्वर मृतकोंमेंसे

भी उठा सकता है जिनमेंसे उसने दृष्टान्तमें उसे पाया भी। (२०) बिश्वाससे इसहाकने याकूब और एसौको आनेवाली बातोंके विषयमें आशीस दिई। (२१) बिश्वाससे याकूबने जब वह मरनेपर था यूसफके दोनों पुत्रोंमेंसे एक एकको आशीस दिई और अपनी लाठीके सिरेपर उठंगके प्रणाम किया। (२२) बिश्वाससे यूसफने जब वह मरनेपर था इस्रायेलके सन्तानोंकी यात्राका चर्चा किया और अपनी हड्डियोंके विषय में आज्ञा किई।

(२३) बिश्वाससे मूसा जब उत्पन्न हुआ तब उसके माता पिताने उसे तीन मास छिपा रखा क्योंकि उन्होंने देखा कि बालक सुन्दर है और वे राजाकी आज्ञासे न डरे। (२४) बिश्वास से मूसा जब सयाना हुआ तब फिरऊनकी बेटीका पुत्र कह-लानेसे मुकर गया। (२५) क्योंकि उसने पापका अनित्य सुखभोग भोगना नहीं परन्तु ईश्वरके लोगोंके संग दुःखित होना चुन लिया। (२६) और उसने खीष्टके कारण निन्दित होना मिसर मेंकी सम्पत्तिसे बड़ा धन समझा क्योंकि उसकी दृष्टि प्रतिफल की ओर लगी रही। (२७) बिश्वाससे वह मिसरको छोड़ गया और राजाके क्रोधसे नहीं डरा क्योंकि वह जैसा अदृश्यपर दृष्टि करता हुआ दृढ़ रहा। (२८) बिश्वाससे उसने निस्तार पर्ब्बको और लोहू छिड़कनेकी विधिको माना ऐसा न हो कि पहिलौठोंका नाश करनेहारा इस्रायेली लोगोंको छूवे। (२९) बिश्वाससे वे लाल समुद्रके पार जैसे सूखी भूमिपर होके उतरे जिसके पार उतरनेका यत्न करनेमें मिसरी लोग डूब गये। (३०) बिश्वाससे यिरीहोकी भीतें जब सात दिन घेरी गई थीं तब गिर पड़ीं। (३१) बिश्वाससे राहब बेश्या अबिश्वासियोंके संग नष्ट न हुई इसलिये कि भेदियोंको कुशल से ग्रहण किया।

(३२) और मैं आगे क्या कहूं . क्योंकि गिदियोनका और बाराक औ शमशोनका और यिप्ताहका और दाऊद औ शमुएल का और भविष्यद्वक्ताओंका बर्णन करनेको मुझे समय न मिलेगा । (३३) इन्होंने बिश्वासके द्वारा राज्योंको जीत लिया धर्म्मका कार्य्य किया प्रतिज्ञाओंको प्राप्त किया सिंहोंके मुंह बन्द किये . (३४) अग्निकी शक्ति निबृत्त किई खड्गकी धारसे बच निकले दुर्ब्बलतासे बलवन्त किये गये युद्धमें प्रबल हो गये और परायोंकी सेनाओंको हटाया । (३५) स्त्रियोंने पुनरुत्थान के द्वारासे अपने मृतकोंको फिर पाया पर और लोग मार खाते खाते मर गये और उद्धार ग्रहण न किया इसलिये कि और उत्तम पुनरुत्थानको पहुंचें । (३६) दूसरोंको ठट्टों और कोड़ोंकी हां और भी बन्धनोंकी और बन्दीगृहकी परीक्षा हुई । (३७) वे पत्थरवाह किये गये वे आरेसे चीरे गये उनकी परीक्षा किई गई वे खड्गसे मारे गये वे कंगाल औ क्लेशित औ दुःखी हो भेड़ोंकी और बकरियोंकी खालें ओढ़े हुए इधर उधर फिरते रहे . (३८) और जंगलों औ पर्ब्बतों औ गुफाओंमें औ पृथिवीके दरारोंमें भरमते फिरे . संसार उनके योग्य न था । (३९) और इन सभोंने बिश्वासके द्वारा सुख्यात होके प्रतिज्ञाका फल नहीं पाया । (४०) क्योंकि ईश्वरने हमारे लिये किसी उत्तम बातकी तैयारी किई इसलिये कि वे हमारे बिना सिद्ध न होवें ।

[दृढ़ता और पवित्रताका उपदेश । नये नियमकी श्रेष्ठताका बर्णन । ईश्वरके बचनसे अचेत होनेके बिषयमें चितावनी ।]

१२ इस कारण हम लोग भी जब कि साक्षियोंके ऐसे बड़े मेघसे घेरे हुए हैं हर एक बोझको और पापको जो हमें सहजही उलझाता है दूर करके वह दौड़ जो हमारे आगे धरी है धीरजसे दौड़ें . (२) और बिश्वासके कर्त्ता और

सिद्ध करनेहारेको अर्थात योशुको ओर ताकें जिसने उस आनन्दके लिये जो उसके आगे धरा था क्रूशको सह लिया और लज्जाको तुच्छ जाना और ईश्वरके सिंहासनके दहिने हाथ जा बैठा है। (३) उसको सोचो जिसने अपने बिरुद्ध पापियोंका इतना बिबाद सह लिया जिस्तें तुम थक न जावो और अपने अपने मनका साहस न छोड़ो।

(४) अबलों तुम्होंने पापसे लड़ते हुए लोहू बहाने तक साम्हना नहीं किया है। (५) और तुम उस उपदेशको भूल गये हो जो तुमसे जैसे पुत्रोंसे बातें करता है कि हे मेरे पुत्र परमेश्वरको ताड़नाको हलकी बात मत जान और जब वह तुझे डांटे तब साहस मत छोड़। (६) क्योंकि परमेश्वर जिसे प्यार करता है उसको ताड़ना करता है और हर एक पुत्रको जिसे ग्रहण करता है कोड़े मारता है। (७) जो तुम ताड़ना सह लेओ तो ईश्वर तुमसे जैसे पुत्रोंसे व्यवहार करता है क्योंकि कौनसा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता है। (८) परन्तु यदि ताड़ना जिसके भागी सब कोई हुए हैं तुमपर नहीं होती तो तुम पुत्र नहीं परन्त ब्यभिचारके सन्तान हो। (९) फिर हमारे देहके पिता भी हमारा ताड़ना किया करते थे और हम उनका आदर करते थे क्या हम बहुत अधिक करके आत्माओंके पिताके अधीन न होंगे और जीयेंगे। (१०) क्योंकि वे तो थोड़े दिनके लिये जैसे अच्छा जानते थे तैसे ताड़ना करते थे परन्तु यह तो हमारे लाभके निमित्त करता है इसलिये कि हम उसकी पवित्रताके भागी होवें। (११) कोई ताड़ना वर्त्तमान समयमें आनन्दकी बात नहीं देख पड़ती है परन्तु शोककी बात तौभी पीछे वह उन्हें जो उसके द्वारा साधे गये हैं धर्म्मका शांतिदाई फल देती है।

(१२) इसलिये अबल हाथोंको और निर्ब्बल घुटनोंको दृढ़

करो । (१३) और अपने पांवोंके लिये सीधे मार्ग बनाओ कि जो लंगड़ा है सो बहकाया न जाय परन्तु और भी चंगा किया जाय। (१४) सभोंके संग मिलापकी चेष्टा करो और पवित्रताकी जिस बिना कोई प्रभुको न देखेगा । (१५) और देख लेओ ऐसा न हो कि कोई ईश्वरके अनुग्रहसे रहित होय अथवा कोई कड़-वाहटकी जड़ उगे और क्लेश देवे और उसके द्वारासे बहुत लोग अशुद्ध होवें । (१६) ऐसा न हो कि कोई जन व्यभिचारी वा एसौकी नाईं अपवित्र होय जिसने एक बेरके भोजनपर अपने पहिलौठेपनको बेच डाला । (१७) क्योंकि तुम जानते हो कि जब वह पीछे आशीस पानेकी इच्छा करता भी था तब अयोग्य गिना गया क्योंकि यद्यपि उसने रो रोके उसे ढूंढ़ा तौभी पश्चात्तापकी जगह न पाई ।

(१८) तुम तो उस पर्व्वतके पास नहीं आये हो जो छूआ जाता और आगसे जल उठा और न घोर मेघ और अंधकार और आंधीके पास . (१९) और न तुरहीके ध्वनि और बातोंके शब्दके पास जिसके सुननेहारोंने बिन्ती किई कि और कुछ भी बात हमसे न किई जाय । (२०) क्योंकि वे उस आज्ञाको नहीं सह सकते थे कि यदि पशु भी पर्व्वतको छूवे तो पत्थरवाह किया जायगा अथवा बर्छीसे बेधा जायगा । (२१) और वह दर्शन ऐसा भयंकर था कि मूसा बोला मैं बहुत भयमान औ कंपित हूं । (२२) परन्तु तुम सियोन पर्व्वतके पास और जीवते ईश्वरके नगर स्वर्गीय यिरूशलीमके पास आये हो . (२३) और स्वर्गदूतोंकी सभाके पास जो सहस्रों हैं और पहिलौठोंकी मंडली के पास जिनके नाम स्वर्गमें लिखे हुए हैं और ईश्वरके पास जो सभोंका बिचारकर्त्ता है और सिद्ध कियेहुए धर्म्मियोंके आत्माओं के पास . (२४) और नये नियमके मध्यस्थ यीशुके पास और छिड़कावके लोहूके पास जो हाबिलसे अच्छी बातें बोलता है।

(२५) देखो बोलनेहारेसे मुंह मत फेरो क्योंकि यदि वे लोग जब पृथिवीपर आज्ञा देनेहारेसे मुंह फेरा तब नहीं बचे तो बहुत अधिक करके हम लोग जो स्वर्गसे बोलनेहारेसे फिर जावें तो नहीं बचेंगे। (२६) उसके शब्दने तब पृथिवीको डुलाया परन्तु अब उसने प्रतिज्ञा किई है कि फिर एक बेर मैं केवल पृथिवीको नहीं परन्तु आकाशको भी डुलाऊंगा। (२७) यह बात कि फिर एक बेर यही प्रगट करती है कि जो वस्तु डुलाई जाती हैं सो सृजी हुई बस्तुओंकी नाईं बदली जायेंगी इसलिये कि जो वस्तु डुलाई नहीं जातीं सो बनी रहें। (२८) इस कारण हम लोग जो न डोलनेवाला राज्य पाते हैं अनुग्रह धारण करें जिसके द्वारा हम सन्मान और भक्ति सहित ईश्वरकी सेवा उसकी प्रसन्नताके योग्य करें। (२९) क्योंकि हमारा ईश्वर भस्म करनेहारी अग्नि है।

[अनेक बातोंका उपदेश और प्रभु यीशुके दृष्टान्तसे उसको दृढ़ करना।]

१३ भ्रातीय प्रेम बना रहे। (२) अतिथिसेवाको मत भूल जाओ क्योंकि इसके द्वारा कितनोंने बिन जाने स्वर्गदूतोंकी पहुनई किई है। (३) बन्धुओंको जैसे कि उनके संग बंधे हुए होते और दुःखित लोगोंको जैसे कि आप भी शरीरमें रहते हो स्मरण करो। (४) बिवाह सभोंमें आदरयोग्य और बिछौना शुचि रहे परन्तु ईश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का बिचार करेगा। (५) तुम्हारी रीति व्यवहार लोभ रहित होवे और जो तुम्हारे पास है उससे सन्तुष्ट रहो क्योंकि उसीने कहा है मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा. (६) यहांलों कि हम ढाढ़स बांधके कहते हैं कि परमेश्वर मेरा सहायक है और मैं नहीं डरूंगा. मनुष्य मेरा क्या करेगा। (७) अपने प्रधानोंको जिन्होंने ईश्वरका बचन तुमसे कहा है स्मरण करो और ध्यानसे उनकी चाल चलनका अन्त देखके

उनके बिश्वासके अनुगामी होओ। (८) यीशु ख्रीष्ट कल और आज और सर्ब्बदा एकसां है। (९) नाना प्रकारकी और ऊपरी शिक्षाओंसे मत भरमाये जाओ क्योंकि अच्छा है कि मन अनुग्रहसे दृढ़ किया जाय खानेकी बस्तुओंसे नहीं जिनसे उन लोगोंको जो उनकी विधिपर चले कुछ लाभ नहीं हुआ। (१०) हमारी एक बेदी है जिससे खानेका अधिकार उन लोगों को नहीं है जो तंबूमेंकी सेवा करते हैं। (११) क्योंकि जिन पशुओंका लोहू महायाजक पापके निमित्त पवित्र स्थानमें ले जाता है उनके देह छावनीके बाहर जलाये जाते हैं। (१२) इस कारण यीशुने भी इसलिये कि लोगोंको अपनेही लोहूके द्वारा पवित्र करे फाटकके बाहर दुःख भोगा। (१३) सो हम लोग उसकी निन्दा सहते हुए छावनीके बाहर उस पास निकल जावें। (१४) क्योंकि यहां हमारा कोई ठहरनेहारा नगर नहीं है परन्तु हम उस होनेहार नगरको ढूंढ़ते हैं। (१५) इसलिये यीशुके द्वारा हम सदा ईश्वरके आगे स्तुतिका बलिदान अर्थात उसके नामका धन्य माननेहारे होंठोंका फल चढ़ाया करें। (१६) परन्तु भलाई और सहायता करनेको मत भूल जाओ क्योंकि ईश्वर ऐसे बलिदानोंसे प्रसन्न होता है। (१७) अपने प्रधानोंको मानो और उनके अधीन होओ क्योंकि वे जैसे कि लेखा देंगे तैसे तुम्हारे प्राणोंके लिये चौकी देते हैं इसलिये कि वे इसको आनन्दसे करें और कहर कहरके नहीं क्योंकि यह तुम्हारे लिये निष्फल है। (१८) हमारे लिये प्रार्थना करो क्योंकि हम भरोसा रखते हैं कि हमारा अच्छा बिबेक है और हम लोग सभोंमें अच्छी चाल चला चाहते हैं। (१९) और मैं बहुत अधिक बिन्ती करता हूं कि यही करो इसलिये कि मैं और भी शीघ्र तुम्हें फेर दिया जाऊं।

[प्रार्थना और नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति ।]

(२०) शांतिका ईश्वर जिसने हमारे प्रभु योशुको जो सनातन नियमका लोहू लिये हुए भेड़ोंका बड़ा गड़ेरिया है मृतकोंमें से उठाया . (२१) तुम्हें हर एक अच्छे कर्म्ममें सिद्ध करे कि उसकी इच्छापर चलो और जो उसको भावता है उसे तुम्हों में योशु ख्रीष्टके द्वारा उत्पन्न करे जिसका गुणानुबाद सदा सर्व्वदा होवे . आमीन । (२२) और हे भाइयो मैं तुमसे बिन्ती करता हूं उपदेशका बचन सह लेओ क्योंकि मैंने संक्षेपसे तुम्हारे पास लिखा है । (२३) यह जानो कि भाई तिमोथिय छूट गया है . जो वह शीघ्र आवे तो उसके संग मैं तुम्हें देखूंगा । (२४) अपने सब प्रधानोंको और सब पवित्र लोगोंको नमस्कार करो . इतलियाके जो लोग हैं उनका तुमसे नमस्कार । (२५) अनुग्रह तुम सभोंके संग होवे । आमीन ॥

याकूब प्रेरितकी पत्री।

[पत्रीका आभाष।]

१ याकूब जो ईश्वरका और प्रभु यीशु ख्रीष्टका दास है बारहों कुलोंको जो तितर बितर रहते हैं. आनन्द रहो।

[परीक्षाके मूल और फलका निर्णय।]

(२) हे मेरे भाइयो जब तुम नाना प्रकारकी परीक्षाओंमें पड़ो उसे सर्ब्ब आनन्द समझो. (३) क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे बिश्वासके परखे जानेसे धीरज उत्पन्न होता है। (४) परन्तु धीरजका काम सिद्ध होवे जिस्तें तुम सिद्ध और पूरे होओ और किसी बातमें तुम्हारी घटी न होय। (५) परन्तु यदि तुममेंसे किसीको बुद्धिकी घटी होय तो ईश्वरसे मांगे जो सभोंको उदारतासे देता है और उलहना नहीं देता और उसको दिई जायगी। (६) परन्तु विश्वाससे मांगे और कुछ संदेह न रखे क्योंकि जो संदेह रखता है सो समुद्रकी लहर के समान है जो बयारसे चलाई जाती और डुलाई जाती है। (७) वह मनुष्य न समझे कि मैं प्रभुसे कुछ पाऊंगा। (८) दुचित्ता मनुष्य अपने सब मार्गोंमें चंचल है। (९) दीन भाई अपने ऊंचे पदपर बड़ाई करे। (१०) परन्तु धनवान अपने नीचे पदपर बड़ाई करता है क्योंकि वह घासके फूलकी नाईं जाता रहेगा। (११) क्योंकि सूर्य्य ज्योंही घाम सहित उदय होता त्यों घासको सुखाता है और उसका फूल झड़ जाता है और उसके रूपकी शोभा नष्ट होती है. वैसेही धनवान भी अपने पथहीमें मुर्झायगा। (१२) जो मनुष्य परीक्षामें स्थिर रहता है सो धन्य है क्योंकि वह खरा निकलके जीवनका मुकुट

पावेगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभुने उन्हें जो उसको प्यार करते हैं दिई है । (१३) कोई जन परीक्षित होनेपर यह न कहे कि ईश्वरसे मेरी परीक्षा किई जाती है क्योंकि ईश्वर बुरी बातों से परीक्षित होता नहीं और वह किसीकी वैसी परीक्षा नहीं करता है । (१४) परन्तु हर कोई जब अपनीही अभिलाषासे खींचा और फुसलाया जाता है तब परीक्षामें पड़ता है । (१५) फिर अभिलाषाको जब गर्भ रहता है तब वह कुक्रिया जनती है और कुक्रिया जब समाप्त होती तब मृत्युको उत्पन्न करती है ।

(१६) हे मेरे प्यारे भाइयो धोखा मत खाओ । (१७) हर एक अच्छा दानकर्म्म और हर एक सिद्ध दान ऊपरसे उतरता है अर्थात ज्योतियोंके पितासे जिसमें न अदल बदल न फेर फारकी छाया है । (१८) अपनीही इच्छासे उसने हमें सत्यता के बचनके द्वारा उत्पन्न किया इसलिये कि हम उसकी सृजी हुई वस्तुओंके पहिले फलके ऐसे होवें ।

[ईश्वरके बचनपर चलनेका उपदेश ।]

(१९) सो हे मेरे प्यारे भाइयो हर एक मनुष्य सुननेके लिये शीघ्रता करे पर बोलनेमें बिलंब करे औ क्रोधमें बिलंब करे । (२०) क्योंकि मनुष्यका क्रोध ईश्वरके धर्म्मको नहीं निबाहता है । (२१) इस कारण सब अशुद्धताको और बैरभाव की अधिकाईको दूर करके नम्रतासे उस रोपे हुए बचनको ग्रहण करो जो तुम्हारे प्राणोंको बचा सकता है । (२२) परन्तु बचनपर चलनेहारे होओ और केवल सुननेहारे नहीं जो अपनेको धोखा देओ । (२३) क्योंकि यदि कोई बचनका सुनने-हारा है और उसपर चलनेहारा नहीं तो वह एक मनुष्यके समान है जो अपना स्वाभाविक मुंह दर्पणमें देखता है । (२४) क्योंकि वह अपनेको ज्योंही देखता त्यों चला जाता और तुरन्त

भूल जाता है कि मैं कैसा था। (२५) परन्तु जो जन सिद्ध व्यवस्थाको जो निर्बन्धताकी है झुक झुकके देखता है और ठहर जाता है वह जो ऐसा सुननेहारा नहीं कि भूल जाय परन्तु कार्य्य करनेहारा है तो वही अपनी करणीमें धन्य होगा। (२६) यदि तुम्होंमें कोई जो अपनी जीभपर बाग नहीं लगाता है परन्तु अपने मनको धोखा देता है अपनेको धर्म्माचारि समझता है तो इसका धर्म्माचार व्यर्थ है। (२७) ईश्वर पिताके यहां शुद्ध और निर्मल धर्म्माचार यह है अर्थात माता पिताहीन लड़कोंके और बिधवाओंके क्लेशमें उनकी सुध लेना और अपने तईं संसारसे निष्कलंक रखना।

[पक्षपातका निषेध।]

२ हे मेरे भाइयो हमारे तेजोमय प्रभु यीशु ख्रीष्टके बिश्वासमें पक्षपात मत किया करो। (२) क्योंकि यदि एक पुरुष सोनेके छल्ले और भड़कीला बस्त्र पहिने हुए तुम्हारी सभामें आवे और एक कंगाल मनुष्य भी मैला बस्त्र पहिने हुए आवे. (३) और तुम उस भड़कीला बस्त्र पहिने हुए पर दृष्टि करके उससे कहो आप यहां अच्छी रीतिसे बैठिये और उस कंगालसे कहो तू वहां खड़ा रह अथवा यहां मेरे पांवोंकी पीढ़ीके नीचे बैठ. (४) तो क्या तुमने अपने मनमें भेद न माना और कुबिचारसे न्याय करनेहारे न हुए। (५) हे मेरे प्यारे भाइयो सुनो क्या ईश्वरने इस जगतके कंगालोंको नहीं चुना है कि बिश्वासमें धनी और उस राज्यके अधिकारी होवें जिसकी प्रतिज्ञा उसने उन्हें जो उसको प्यार करते हैं दिई है। (६) परन्तु तुमने उस कंगालका अपमान किया. क्या धनी लोग तुम्हें नहीं पेरते हैं और क्या वेही तुम्हें बिचार आसनोंके आगे नहीं खींचते हैं। (७) जिस नामसे तुम पुकारे जाते हो क्या वे उस उत्तम नामकी निन्दा नहीं करते हैं। (८) जो तुम धर्म्मपुस्तक

के इस वचनके अनुसार कि तू अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर सचमुच राजव्यवस्था पूरी करते हो तो अच्छा करते हो। (९) परन्तु जो तुम पक्षपात करते हो तो पापकर्म्म करते हो और व्यवस्थासे अपराधी ठहराये जाते हो। (१०) क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्थाको पालन करे पर एक बातमें चूके वह सब बातोंके दंडके योग्य हो चुका। (११) क्योंकि जिसने कहा परस्त्रीगमन मत कर उसने यह भी कहा कि नरहिंसा मत कर . सो जो तू परस्त्रीगमन न करे परन्तु नरहिंसा करे तो व्यवस्थाका अपराधी हो चुका। (१२) तुम ऐसे बोलो और ऐसा काम करो जैसा तुमको चाहिये जिनका बिचार निर्बन्धताकी व्यवस्थाके द्वारा किया जायगा। (१३) क्योंकि जिसने दया न किई उसका विचार विना दयाके किया जायगा और दया न्यायपर जयजयकार करती है।

[कर्म्म सहित और कर्म्म रहित विश्वासका वर्णन।]

(१४) हे मेरे भाइयो यदि कोई कहे मुझे बिश्वास है पर कर्म्म उससे नहीं होवें तो क्या लाभ है . क्या उस बिश्वाससे उसका त्राण हो सकता है। (१५) यदि कोई भाई बहिन नंगे हों और उन्हें प्रतिदिनके भोजनकी घटी होय . (१६) और तुममेंसे कोई उनसे कहे कुशलसे जाओ तुम्हें जाड़ा न लगे तुम तृप्त रहो परन्तु तुम जो वस्तु देहके लिये अवश्य हैं सो उनको न देओ तो क्या लाभ है। (१७) वैसेही बिश्वास भी जो कर्म्म सहित न होवे तो आपही मृतक है। (१८) बरन कोई कहेगा तुझे विश्वास है और मुझसे कर्म्म होते हैं तू अपने कर्म्म बिना अपना विश्वास मुझे दिखा और मैं अपना विश्वास अपने कर्म्मोंसे तुझे दिखाऊंगा। (१९) तू बिश्वास करता है कि एक ईश्वर है . तू अच्छा करता है . भूत भी विश्वास करते और थरथराते हैं। (२०) पर हे निर्बुद्धि मनुष्य

क्या तू जानने चाहता है कि कर्म्म बिना बिश्वास मृतक है । (२१) क्या हमारा पिता इब्राहीम जब उसने अपने पुत्र इसहाक को बेदीपर चढ़ाया कर्म्मोंसे धर्म्मी न ठहरा । (२२) तू देखता है कि बिश्वास उसके कर्म्मोंके साथ कार्य्य करता था और कर्म्मोंसे बिश्वास सिद्ध किया गया । (२३) और धर्म्मपुस्तकका यह बचन कि इब्राहीमने ईश्वरका विश्वास किया और यह उसके लिये धर्म्म गिना गया पूरा हुआ और वह ईश्वरका मित्र कहलाया । (२४) सो तुम देखते हो कि मनुष्य केवल बिश्वाससे नहीं परन्तु कर्म्मोंसे भी धर्म्मी ठहराया जाता है । (२५) वैसेही राहब बेश्या भी जब उसने दूतोंकी पहुनई किई और उन्हें दूसरे मार्गसे बिदा किया क्या कर्म्मोंसे धर्म्मी न ठहरी । (२६) क्योंकि जैसा देह आत्मा बिना मृतक है वैसा बिश्वास भी कर्म्म बिना मृतक है ।

[जीभके दोष और स्वतन्त्रताका वर्णन ।]

३ हे मेरे भाइयो बहुतेरे उपदेशक मत बनो क्योंकि जानते हो कि हम अधिक दंड पावेंगे । (२) क्योंकि हम सब बहुत बार चूकते हैं . यदि कोई बचनमें नहीं चूकता है तो वही सिद्ध मनुष्य है जो सारे देहपर भी बाग लगानेका सामर्थ्य रखता है । (३) देखो घोड़ोंके मुंहमें हम लगाम देते हैं इसलिये कि वे हमें मानें और हम उनका सारा देह फेरते हैं । (४) देखो जहाज भी जो इतने बड़े हैं और प्रचंड बयारोंसे उड़ाये जाते हैं बहुत छोटी पतवारसे जिधर कहीं मांझीका मन चाहता हो उधर फेरे जाते हैं । (५) वैसेही जीभ भी छोटा अंग है और बड़ी गलफटाकी करती है . देखो थोड़ी आग कितने बड़े बनको फूंकती है । (६) और यह अधर्म्मका लोक अर्थात जीभ एक आग है . हमारे अंगोंमें जीभ है जो सारे देहको कलंकी करनेहारी और भवचक्रमें आग लगानेहारी

ठहरती है और उसमें आग लगानेहारा नरक है । (७) क्योंकि बन पशुओं औ पंछियों और रेंगनेहारे जन्तुओं औ जलचरोंकी भी हर एक जाति मनुष्य जातिके बशमें किई जाती है और किई गई है । (८) परन्तु जीभको मनुष्योंमेंसे कोई बशमें नहीं कर सकता है . वह निरंकुश दुष्ट है वह मारू बिषसे भरी है । (९) उससे हम ईश्वर पिताका धन्यबाद करते हैं और उसीसे मनुष्योंको जो ईश्वरके समान बने हैं स्राप देते हैं । (१०) एकही मुखसे धन्यबाद औ स्राप दोनों निकलते हैं . हे मेरे भाइयो इन बातोंका ऐसा होना उचित नहीं है । (११) क्या सोतेके एकही मुंहसे मीठा और तीता दोनों बहते हैं । (१२) क्या गूलरके वृक्षमें मेरे भाइयो जलपाईके फल अथवा दाखकी लतामें गूलरके फल लग सकते हैं . वैसेही किसी सोतेसे खारा और मीठा दोनों प्रकारका जल नहीं निकल सकता है ।

[सच्चे ज्ञानका बखान ।]

(१३) तुम्होंमें ज्ञानवान और बूझनेहार कौन है . सो अपनी अच्छी चाल चलनसे ज्ञानकी नम्रता सहित अपने कार्य्य दिखावे । (१४) परन्तु जो तुम अपने अपने मनमें कड़वी डाह और बैर रखते हो तो सच्चाईके बिरुद्ध घमंड मत करो और झूठ मत बोलो । (१५) यह ज्ञान ऊपरसे उतरता नहीं परन्तु सांसारिक और शारीरिक और शैतानी है । (१६) क्योंकि जहां डाह और बैर है तहां बखेड़ा और हर एक बुरा कर्म्म होता है । (१७) परन्तु जो ज्ञान ऊपरसे है सो पहिले तो पवित्र है फिर मिलनसार मृदुभाव और कोमल और दयासे और अच्छे फलोंसे परिपूर्ण पक्षपात रहित और निष्कपट है । (१८) और धर्म्मका फल मेल करवैयोंसे मिलाप में बोया जाता है ।

[बैर बिरोध और लोभ और घमंडपर उलहना।]

४ तुम्होंमें लड़ाई झगड़े कहांसे होते . क्या यहांसे नहीं अर्थात तुम्हारे सुखाभिलाषोंसे जो तुम्हारे अंगोंमें लड़ते हैं। (२) तुम लालसा रखते हो और तुम्हें मिलता नहीं तुम नरहिंसा और डाह करते हो और प्राप्त नहीं कर सक्ते तुम झगड़ा और लड़ाई करते हो परन्तु तुम्हें मिलता नहीं इसलिये कि तुम नहीं मांगते हो। (३) तुम मांगते हो और पाते नहीं इसलिये कि बुरी रीति से मांगते हो जिस्तें अपने सुख बिलास में उड़ा देओ। (४) हे व्यभिचारियो और व्यभिचारिणियो क्या तुम नहीं जानते हो कि संसारकी मित्रता ईश्वरकी शत्रुता है . सो जो कोई संसारका मित्र हुआ चाहता है वह ईश्वरका शत्रु ठहरता है। (५) अथवा क्या तुम समझते हो कि धर्म्म-पुस्तक बृथा कहता है . क्या वह आत्मा जो हमोंमें बसा है यहांलों स्नेह करता है कि डाह भी करे। (६) बरन वह अधिक अनुग्रह देता है इस कारण कहता है ईश्वर अभिमानियोंसे बिरोध करता है परन्तु दीनोंपर अनुग्रह करता है। (७) इस लिये ईश्वरके अधीन होओ . शैतानका साम्हना करो तो वह तुमसे भागेगा। (८) ईश्वरके निकट आओ तो वह तुम्हारे निकट आवेगा . हे पापियो अपने हाथ शुद्ध करो और हे दुचित्ते लोगो अपने मन पवित्र करो। (९) दुःखी होओ और शोक करो और रोओ . तुम्हारी हंसी शोक हो जाय और तुम्हारा आनन्द उदासी बने। (१०) प्रभुके सन्मुख दीन बनो तो वह तुम्हें ऊंचे करेगा।

(११) हे भाइयो एक दूसरेपर अपबाद मत लगाओ . जो भाईपर अपबाद लगाता और अपने भाईका बिचार करता है सो व्यवस्थापर अपबाद लगाता और व्यवस्थाका बिचार करता है . परन्तु जो तू व्यवस्थाका बिचार करता है तो तू व्यवस्थापर

चलनेहारा नहीं परन्तु बिचारकर्त्ता है। (१२) एक व्यवस्थाकारक और बिचारकर्त्ता है अर्थात वही जिसे बचाने और नाश करनेका सामर्थ्य है . तू कौन है जो दूसरेका बिचार करता है ।

[अनित्य जीवनके भरोसेका निषेध ।]

(१३) अब आओ तुम जो कहते हो कि आज वा कल हम उस नगरमें जायेंगे और वहां एक बरस बितावेंगे और लेन देन कर कमावेंगे । (१४) पर तुम तो कलकी बात नहीं जानते हो क्योंकि तुम्हारा जीवन कैसा है . वह भाफ है जो थोड़ी बेर दिखाई देती है फिर लोप हो जाती है । (१५) इसके बदले तुम्हें यह कहना था कि प्रभु चाहे तो हम जीयेंगे और यह अथवा वह करेंगे । (१६) पर अब तुम अपनी गलफटाकियोंपर बड़ाई करते हो . ऐसी ऐसी बड़ाई सब बुरी है । (१७) सो जो भला करने जानता है और करता नहीं उसको पाप होता है ।

[धनवानोंके उपद्रवपर उलहना ।]

५ अब आओ हे धनवान लोगो अपनेपर आनेवाले क्लेशोंके लिये चिल्ला चिल्ला रोओ । (२) तुम्हारा धन सड़ गया है और तुम्हारे बस्त्रोंको कीड़े खा गये हैं । (३) तुम्हारे सोने और रूपेमें काई लग गई है और उनकी काई तुम्हींपर साक्षी होगी और आगकी नाईं तुम्हारा मांस खायगी . तुमने पिछले दिनोंमें धन बटोरा है । (४) देखो जिन बनिहारोंने तुम्हारे खेतोंकी लवनी किई उनकी बनि जो तुमने ठग लिई है पुकारती है और लवनेहारोंकी दोहाई सेनाओंके परमेश्वरके कानोंमें पहुंची है । (५) तुम पृथिवीपर सुखमें और बिलासमें रहे तुमने जैसे बधके दिनहीमें अपने मनको सन्तुष्ट किया है । (६) तुमने धर्म्मीको दोषी ठहराके मार डाला है . वह तुम्हारा साम्हना नहीं करता है ।

[धीरज धरनेका उपदेश ।]

(७) सो हे भाइयो प्रभुके आनेलों धीरज धरो . देखो गृहस्थ पृथिवीके बहुमूल्य फलकी बाट जोहता है और जबलों वह पहिली और पिछली बर्षा न पावे तबलों उसके लिये धीरज धरता है। (८) तुम भी धीरज धरो अपने मनको स्थिर करो क्योंकि प्रभुका आना निकट है । (९) हे भाइयो एक दूसरेके बिरुद्ध मत कुड़कुड़ाओ इसलिये कि दोषी न ठहरो . देखो बिचारकर्त्ता द्वारके आगे खड़ा है । (१०) हे मेरे भाइयो भविष्यद्वक्ताओंको जिन्होंने प्रभुके नामसे बातें किईं दुःखभोग और धीरजका नमूना समझ लेओ । (११) देखो जो स्थिर रहते हैं उन्हें हम धन्य कहते हैं . तुमने ऐयूबकी स्थिरताकी सुनी है और प्रभुका अन्त देखा है कि प्रभु बहुत करुणामय और दयावन्त है। (१२) परन्तु सबसे पहिले हे मेरे भाइयो किरिया मत खाओ न स्वर्गकी न धरतीकी न और कोई किरिया परन्तु तुम्हारा हां हां होवे और नहीं नहीं होवे जिस्तें तुम दंडके योग्य न ठहरो ।

[बिश्वासकी प्रार्थनाका बखान ।]

(१३) क्या तुम्होंमें कोई दुःख पाता है . तो प्रार्थना करे . क्या कोई हर्षित है . तो भजन गावे। (१४) क्या तुम्होंमें कोई रोगी है . तो मंडलीके प्राचीनोंको अपने पास बुलावे और वे प्रभुके नामसे उसपर तेल मलके उसके लिये प्रार्थना करें । (१५) और बिश्वासकी प्रार्थना रोगीको बचावेगी और प्रभु उसको उठावेगा और जो उसने पाप भी किये हों तो उसको क्षमा किई जायगी । (१६) एक दूसरेके आगे अपने अपने अपराधोंके मान लेओ और एक दूसरेके लिये प्रार्थना करो जिस्तें चंगे हो जावो . धर्म्मी जनकी प्रार्थना कार्य्यकारी होके बहुत सफल होती है । (१७) एलियाह हमारे समान दुःख

सुख भोगी मनुष्य था और प्रार्थनामें उसने प्रार्थना किई कि मेंह न बरसे और भूमिपर साढ़े तीन बरस मेंह न बरसा । (१८) और उसने फिर प्रार्थना किई तो आकाशने बर्षा दिई और भूमिने अपना फल उपजाया ।

[भाईको भ्रमसे फिरानेका फल ।]

(१९) हे भाइयो जो तुम्हांमें कोई सच्चाईसे भरमाया जाय और कोई उसको फेर लेवे . (२०) तो जान जाय कि जो जन पापीको उसके मार्गके भ्रमणसे फेर लेवे सो एक प्राणको मृत्युसे बचावेगा और बहुत पापोंको ढांपेगा ॥

पितर प्रेरितकी पहिली पत्री।

[पत्रीका आभाष।]

१ पितर जो यीशु ख्रीष्टका प्रेरित है पन्त और गलातिया और कपदोकिया और आशिया और बिथुनिया देशोंमें छितरे हुए परदेशियोंको. (२) जो ईश्वर पिताके भविष्यत ज्ञानके अनुसार आत्माकी पवित्रताके द्वारा आज्ञापालन और यीशु ख्रीष्टके लोहूके छिड़कावके लिये चुने हुए हैं. तुम्हें बहुत बहुत अनुग्रह और शांति मिले।

[नये जन्म और परित्राणके लिये ईश्वरका धन्यवाद। बिश्वासियोंका उससे क्लेश में भी आनन्दित होना।]

(३) हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके पिता ईश्वरका धन्यवाद होय जिसने अपनी बड़ी दयाके अनुसार हमोंको नया जन्म दिया कि हमें यीशु ख्रीष्टके मृतकोंमेंसे जी उठनेके द्वारा जीवती आशा मिले. (४) और वह अधिकार मिले जो अबिनाशी और निर्मल और अजर है और स्वर्गमें तुम्हारे लिये रखा हुआ है. (५) जिनकी रक्षा ईश्वरकी शक्तिसे बिश्वासके द्वारा किई जाती है जिस्तें तुम वह त्राण जो पिछले समयमें प्रगट किये जानेको तैयार है प्राप्त करो।

(६) इससे तुम आह्लादित होते हो पर अब थोड़ी बेरलों यदि आवश्यक है तो नाना प्रकारकी परीक्षाओंसे उदास हुए हो. (७) इसलिये कि तुम्हारे बिश्वासकी परीक्षा सोनेसे जो नाशमान है पर आगसे परखा जाता है अति बहुमूल्य होके यीशु ख्रीष्टके प्रगट होनेपर प्रशंसा और आदर और महिमाका हेतु पाई जाय। (८) उस यीशुको तुम बिन देखे प्यार करते

हो और उसपर यद्यपि उसे अब नहीं देखते हो तौभी विश्वास करके अकथ्य और महिमा संयुक्त आनन्दसे आह्लादित होते हो . (९) और अपने विश्वासका अन्त अर्थात अपने अपने आत्माका त्राण पाते हो ।

(१०) उस त्राणके विषयमें भविष्यद्वक्ताओंने जिन्होंने इस अनुग्रहके विषयमें जो तुमपर किया जाता है भविष्यद्वाणी कही वहुत ढूंढ़ा और खोज बिचार किया । (११) वे ढूंढ़ते थे कि ख्रीष्टका आत्मा जो हममें रहता है जब वह ख्रीष्टके दुःखोंपर और उनके पीछेकी महिमापर आगेसे साक्षी देता है तव कौन और कैसा समय वताता है । (१२) और उनपर प्रगट किया गया कि वे अपने लिये नहीं परन्तु हमारे लिये उन वातोंकी सेवकाई करते थे जिन्हें जिन लोगोंने स्वर्गसे भेजे हुए पवित्र आत्माके द्वारा तुम्हें सुसमाचार सुनाया उन्हों ने अभी तुमसे कह दिया है और इन बातोंको स्वर्गदूत झुक झुकके देखनेकी इच्छा रखते हैं ।

[पवित्र आचरणका और प्रेमका उपदेश ।]

(१३) इस कारण अपने अपने मनकी मानो कमर बांधके सचेत रहो और जो अनुग्रह यीशु ख्रीष्टके प्रगट होनेपर तुम्हें मिलनेवाला है उसकी पूरी आशा रखो । (१४) आज्ञाकारी लोगोंकी नाईं अपनी अज्ञानतामेंकी अगली अभिलाषाओंकी रीतिपर मत चला करो . (१५) परन्तु उस परमपवित्रके समान जिसने तुमको वुलाया तुम भी आप सारी चाल चलनमें पवित्र वनो । (१६) क्योंकि लिखा है पवित्र होओ क्योंकि मैं पवित्र हूं । (१७) और जो तुम उसे जो बिना पक्षपात हर एकके कर्म्मके अनुसार बिचार करनेहारा है पिता करके पुकारते हो तो अपने परदेशी होनेका समय भयसे बिताओ । (१८) क्योंकि जानते हो कि तुमने पितरोंकी ठहराई हुई

अपनी व्यर्थ चाल चलनसे जो उद्धार पाया सो नाशमान बस्तुओंके अर्थात रूपे अथवा सोनेके द्वारा नहीं. (१९) परन्तु निष्कलंक और निष्खोट मेम्ने सरीखे खीष्टके बहुमूल्य लोहूके द्वारासे पाया. (२०) जो जगतकी उत्पत्तिके आगेसे ठहराया गया था परन्तु पिछले समयपर तुम्हारे कारण प्रगट किया गया. (२१) जो उसके द्वारासे ईश्वरपर बिश्वास करते हो जिसने उसे मृतकोंमेंसे उठाया और उसको महिमा दिई यहांलों कि तुम्हारा बिश्वास और भरोसा ईश्वरपर है।

(२२) तुमने निष्कपट भ्रातीय प्रेमके निमित्त जो अपने अपने हृदयको सत्यके आज्ञाकारी होनेमें आत्माके द्वारा पवित्र किया है तो शुद्ध मनसे एक दूसरेसे अतिशय प्रेम करो। (२३) क्योंकि तुमने नाशमान नहीं परन्तु अबिनाशी बीजसे ईश्वरके जीवते और सदालों ठहरनेहारे बचनके द्वारा नया जन्म पाया है। (२४) क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं और मनुष्यका सारा बिभव घासके फूलकी नाईं है। (२५) घास सूख जाती है और उसका फूल झड़ जाता है परन्तु प्रभुका बचन सदालों ठहरता है और यही बचन है जो सुसमाचारमें तुम्हें सुनाया गया।

२ इसलिये सब बैरभाव और सब छल और समस्त प्रकारका कपट और डाह और दुर्बचन दूर करके (२) नये जन्मे बालकोंकी नाईं बचनके निराले दूधकी लालसा करो कि उसके द्वारा तुम बढ़ जावो. (३) कि तुमने तो चीख लिया है कि प्रभु कृपाल है।

(४) उसके पास अर्थात उस जीवते पत्थरके पास जो मनुष्योंसे तो निकम्मा जाना गया है परन्तु ईश्वरके आगे चुना हुआ और बहुमूल्य है आके. (५) तुम भी आप जीवते पत्थरोंकी नाईं आत्मिक घर और याजकोंका पवित्र समाज

वनते जाते हो जिस्तें आत्मिक बलिदानोंको जो यीशु ख्रीष्ट के द्वारा ईश्वरको भावते हैं चढ़ावो। (६) इस कारण धर्म्म-पुस्तकमें भी मिलता है कि देखो मैं सियोनमें कोनेके सिरेका चुना हुआ और वहुमूल्य पत्थर रखता हूं और जो उसपर विश्वास करे सो किसी रीतिसे लज्जित न होगा। (७) सो यह वहुमूल्यता तुम्हारेही लेखे है जो विश्वास करते हो परन्तु जो नहीं मानते हैं उन्हें वही पत्थर जिसे थवइयोंने निकम्मा जाना कोनेका सिरा और ठेसका पत्थर और ठोकर की चटान हुआ है . (८) कि वे तो वचनको न मानके ठोकर खाते हैं और इसके लिये वे ठहराये भी गये। (९) परन्तु तुम लोग चुना हुआ वंश और राजपदधारी याजकोंका समाज और पवित्र लोग और निज प्रजा हो इसलिये कि जिसने तुम्हें अंधकारमेंसे अपनी अद्भुत ज्योतिमें बुलाया उसके गुण तुम प्रचार करो . (१०) जो आगे प्रजा न थे परन्तु अभी ईश्वरकी प्रजा हो जिनपर दया नहीं किई गई थी परन्तु अभी दया किई गई है।

[अन्यदेशियोंमें सुकर्म्म करने और अध्यक्षोंके अधीन होनेका उपदेश ।]

(११) हे प्यारो मैं विन्ती करता हूं बिदेशियों और ऊपरियोंकी नाईं शारीरिक अभिलाषोंसे जो आत्माके बिरुद्ध लड़ते हैं परे रहो। (१२) अन्यदेशियोंमें तुम्हारी चाल चलन भली होवे इसलिये कि जिस बातमें वे तुमपर जैसे कुकर्म्मियोंपर अपवाद लगाते हैं उसीमें वे तुम्हारे भले कर्म्मोंको देखके जिस दिन ईश्वर दृष्टि करे उस दिन उन कर्म्मोंके कारण उसका गुणानुवाद करें। (१३) प्रभुके कारण मनुष्योंके ठहराये हुए हर एक पदके अधीन होओ। (१४) चाहे राजा हो तो उसे प्रधान जानके चाहे अध्यक्ष लोग हों तो यह जानके कि वे उसके द्वारा कुकर्म्मियोंके दडके लिये परन्तु सुकर्म्मियोंकी

प्रशंसाके लिये भेजे जाते हैं दोनोंके अधीन होओ। (१५) क्योंकि ईश्वरकी इच्छा यूंही है कि तुम सुकर्म्म करनेसे निर्बुद्धि मनुष्योंकी अज्ञानताको निरुत्तर करो। (१६) निर्बन्धोंकी नाईं चलो पर जैसे अपनी निर्बन्धतासे बुराईकी आड़ करते हुए वैसे नहीं परन्तु ईश्वरके दासोंकी नाईं चलो। (१७) सभोंका आदर करो भाइयोंको प्यार करो ईश्वरसे डरो राजाका आदर करो।

[सेवकोंके लिये उपदेश और खीष्टकी दीनताका नमूना।]

(१८) हे सेवको समस्त भय सहित स्वामियोंके अधीन रहो केवल भलों और मृदुभावोंके नहीं परन्तु कुटिलोंके भी। (१९) क्योंकि यदि कोई अन्यायसे दुःख उठाता हुआ ईश्वरकी इच्छाके विवेकके कारण शोक सह लेता है तो यह प्रशंसाके योग्य है। (२०) क्योंकि यदि अपराध करनेसे तुम घूसे खावो और धीरज धरो तो कौनसा यश है परन्तु यदि सुकर्म्म करनेसे तुम दुःख उठावो और धीरज धरो तो यह ईश्वरके आगे प्रशंसाके योग्य है। (२१) तुम इसीके लिये बुलाये भी गये क्योंकि खीष्टने भी हमारे लिये दुःख भोगा और हमारे लिये नमूना छोड़ गया कि तुम उसकी लीकपर हो लेओ। (२२) उसने पाप नहीं किया और न उसके मुंहमें छल पाया गया। (२३) वह निन्दित होके उसके बदले निन्दा न करता था और दुःख उठाके धमकी न देता था परन्तु जो धर्म्मसे बिचार करनेहारा है उसीके हाथ अपनेको सौंपता था। (२४) उसने आप हमारे पापोंको अपने देहमें काठपर उठा लिया जिस्तें हम लोग पापोंके लिये मर करके धर्म्मके लिये जीवें और उसीके मार खानेसे तुम चंगे किये गये। (२५) क्योंकि तुम भटकी हुई भेड़ोंकी नाईं थे पर अब अपने प्राणोंके गड़ेरिये औ रखवालेके पास फिर आये हो।

[स्त्रियों और पुरुषोंके लिये उपदेश ।]

३ वैसेही हे स्त्रियो अपने अपने स्वामीके अधीन रहो इसलिये कि यदि कोई कोई वचनको न मानें तौभी वचन विना अपनी अपनी स्त्रीकी चाल चलनके द्वारा . (२) तुम्हारी भय सहित पवित्र चाल चलन देखके प्राप्त किये जावें। (३) तुम्हारा सिंगार वाल गून्थनेका और सोना पहरनेका अथवा वस्त्र पहिननेका वाहरी सिंगार न होवे। (४) परन्तु हृदय का गुप्त मनुष्यत्व उस नम्र और शान्त आत्माके अविनाशी आभूषण सहित जो ईश्वरके आगे वहुमूल्य है तुम्हारा सिंगार होवे। (५) क्योंकि ऐसेही पवित्र स्त्रियां भी जो ईश्वरपर भरोसा रखती थीं आगे अपना सिंगार करती थीं कि वे अपने अपने स्वामीके अधीन रहती थीं। (६) जैसे साराःने इब्राहीमकी आज्ञा मानी और उसे प्रभु कहती थी जिसकी तुम लोग जो सुकर्म्म करो और किसी प्रकारकी घवराहटसे न डरो तो वेटियां हुई हो। (७) वैसेही हे पुरुषो ज्ञानकी रीतिसे स्त्रीके संग जैसे अपनेसे निर्वल पात्रके संग वास करो और जव कि वे भी जीवनके अनुग्रहकी संगी अधिका-रिणियां हैं तो उनका आदर करो जिस्तें तुम्हारी प्रार्थनाओं की रोक न होय।

[आपसमें प्रेम करनेका और उपद्रवमें साहसी होनेका उपदेश। प्रभुका नमूना।]

(८) अन्तमें यह कि तुम सब एक मन और परदुःखके बूझनेहारे और भाइयोंके प्रेमी और करुणामय और हितकारी होओ। (९) और वुराईके वदले वुराई अथवा निन्दाके वदले निन्दा मत करो परन्तु इसके बिपरीत आशीस देओ क्योंकि जानते हो कि तुम इसीके लिये वुलाये गये जिस्तें आशीसके अधिकारी होओ। (१०) क्योंकि जो जीवनकी प्रीति रखने और

अच्छे दिन देखने चाहे सा अपनी जीभको बुराईसे और अपने होंठोंको छलकी बातें करनेसे रोके । (११) वह बुराईसे फिर जावे और भलाई करे वह मिलापको चाहे और उसकी चेष्टा करे । (१२) क्योंकि परमेश्वरके नेत्र धर्म्मियोंकी ओर और उस के कान उनकी प्रार्थनाकी ओर लगे हैं परन्तु परमेश्वर कुकर्म्म करनेहारोंसे बिमुख है ।

(१३) और जो तुम भलेके अनुगामी होओ तो तुम्हारी बुराई करनेहारा कौन होगा । (१४) परन्तु जो तुम धर्म्मके कारण दुःख उठावो भी तो धन्य हो पर उनके भयसे भयमान मत हो और न घबराओ । (१५) परन्तु परमेश्वर ईश्वरको अपने अपने मनमें पवित्र मानो . और जो कोई तुमसे उस आशाके विषयमें जो तुममें है कुछ बात पूछे उस को नम्रता और भय सहित उत्तर देनेको सदा तैयार रहो । (१६) और शुद्ध मन रखो इसलिये कि जो लोग तुम्हारी ख्रीष्टानुसारी अच्छी चाल चलनकी निन्दा करें सो जिस बातमें तुमपर जैसे कुकर्म्मियोंपर अपवाद लगावें उसीमें लज्जित होवें । (१७) क्योंकि यदि ईश्वरकी इच्छा यूं होय तो सुकर्म्म करते हुए दुःख उठाना कुकर्म्म करते हुए दुःख उठानेसे अच्छा है ।

(१८) क्योंकि ख्रीष्टने भी अर्थात अधर्म्मियोंके लिये धर्म्मीने एक बेर पापोंके कारण दुःख उठाया जिस्तें हमें ईश्वरके पास पहुंचावे कि वह शरीरमें तो घात किया गया परन्तु आत्मा में जिलाया गया । (१९) उसीमें उसने बन्दीगृहमेंके आत्माओं को भी जाके उपदेश दिया . (२०) जिन्होंने अगले समयमें न माना जिस समय ईश्वरका धीरज नूहके दिनोंमें जबलों जहाज बनता था जिसमें थोड़े अर्थात आठ प्राणी जलके द्वारा बच गये तबलों बाट जोहता रहा । (२१) इस दृष्टान्तका

आशय वपतिसमा जो शरीरके मैलका दूर करना नहीं परन्तु ईश्वरके पास शुद्ध मनका अंगीकार है अभी हमोंको भी योशु ख्रीष्टके जी उठनेके द्वारा बचाता है. (२२) जो स्वर्गपर जाके ईश्वरके दहिने हाथ रहता है और दूतगण और अधिकारी और पराक्रमी उसके अधीन किये गये हैं।

४ सो जब कि ख्रीष्टने हमारे लिये शरीरमें दुःख उठाया और जब कि जिसने शरीरमें दुःख उठाया है वह पापसे रोका गया है तुम भी उसी मनसाका हथियार बांधो. (२) जिस्तें शरीरमेंका जो समय रह गया है उसे तुम अब मनुष्योंके अभिलाषोंके नहीं परन्तु ईश्वरकी इच्छाके अनुसार बितावो। (३) क्योंकि हमारे जीवनका जो समय बीत गया है सो नाना भांतिके लुचपन औ कामाभिलाष औ मतवालपन औ लीला क्रीड़ा औ मद्यपान औ धर्म्मबिरुद्ध मूर्त्तिपूजामें चलते चलते देवपूजकोंकी इच्छा पूरी करनेको बहुत हुआ है। (४) इससे वे लोग जब तुम उनके संग लुचपनके उसी अत्याचारमें नहीं दौड़ते हो तब अचंभा मानते और निन्दा करते हैं। (५) पर वे उसको जो जीवतों औ मृतकोंका बिचार करनेको तैयार है लेखा देंगे। (६) क्योंकि इसीके लिये मृतकोंको भी सुसमाचार सुनाया गया कि शरीरमें तो मनुष्योंके अनुसार उनका बिचार किया जाय परन्तु आत्मामें वे ईश्वरके अनुसार जीवें।

(७) परन्तु सब बातोंका अन्त निकट आया है इसलिये सुबुद्धि होके प्रार्थनाके लिये सचेत रहो। (८) और सबसे अधिक करके एक दूसरेसे अतिशय प्रेम रखो क्योंकि प्रेम बहुत पापोंको ढांपेगा। (९) बिना कुड़कुड़ाये एक दूसरेकी अतिथिसेवा किया करो। (१०) जैसे जैसे हर एकने बरदान पाया है वैसे ईश्वरके नाना प्रकारके अनुग्रहके भले भंडारियोंकी

नाईं एक दूसरेके लिये उसी बरदानकी सेवकाई करो। (११) यदि कोई बात करे तो ईश्वरकी बाणियोंकी नाईं बात करे यदि कोई सेवकाई करे तो जैसे उस शक्तिसे जो ईश्वर देता है करे जिस्तें सब बातोंमें ईश्वरकी महिमा यीशु ख्रीष्टके द्वारा प्रगट किई जावे जिसकी महिमा और पराक्रम सदा सर्ब्बदा रहता है . आमीन ।

(१२) हे प्यारो जो ज्वलन तुम्हारे बीचमें तुम्हारी परीक्षा के लिये होता है उससे अचंभा मत करो जैसे कि कोई अचंभे की बात तुमपर बीतती हो। (१३) परन्तु जितने तुम ख्रीष्टके दुःखोंके संभागी होते हो उतने आनन्द करो जिस्तें उसकी महिमाके प्रगट होनेपर भी तुम आनन्दित और आह्लादित होओ। (१४) जो तुम ख्रीष्टके नामके लिये निन्दित होतें हो तो धन्य हो क्योंकि महिमाका और ईश्वरका आत्मा तुमपर ठहरता है . उनकी ओरसे तो उसकी निन्दा होती है परन्तु तुम्हारी ओरसे उसकी महिमा प्रगट होती है। (१५) तुममेंसे कोई जन हत्यारा अथवा चोर अथवा कुकर्म्मी होनेसे अथवा पराये काममें हाथ डालनेसे दुःख न पावे। (१६) परन्तु यदि ख्रीष्टियान होनेसे कोई दुःख पावे तो लज्जित न होवे परन्तु इस बातमें ईश्वरका गुणानुवाद करे। (१७) क्योंकि यही समय है कि दंड ईश्वरके घरसे आरंभ होवे पर यदि पहिले हमोंसे आरंभ होता है तो जो लोग ईश्वरके सुसमाचार को नहीं मानते हैं उनका अन्त क्या होगा। (१८) और यदि धर्म्मी कठिनतासे त्राण पाता है तो भक्तिहीन और पापी कहां दिखाई देगा। (१९) इस कारण जो लोग ईश्वरकी इच्छाके अनुसार दुःख उठाते हैं सो सुकर्म्म करते हुए अपने अपने प्राणको उसके हाथ जैसे बिश्वासयोग्य सृजनहारके हाथ सोंप देवें।

[प्राचीनों और जवानोंके लिये उपदेश । दीनता और दृढ़ताका उपदेश ।]

५ मैं जो संगी प्राचीन और ख्रीष्टके दुःखोंका साक्षी और जो महिमा प्रगट होनेपर है उसका संभागी भी हूं प्राचीनों से जो तुम्हारे बीचमें हैं बिन्ती करता हूं . (२) ईश्वरके झुंडकी जो तुममें है चरवाही करो और दबावसे नहीं पर अपनी सम्मतिसे और न नीच कमाईके लिये पर मनकी इच्छासे . (३) और न जैसे अपने अपने अधिकारपर प्रभुता करते हुए परन्तु झुंडके लिये दृष्टान्त होते हुए रखवाली करो । (४) और प्रधान रखवालेके प्रगट होनेपर तुम महिमाका अक्षय मुकुट पाओगे । (५) वैसेही हे जवानो प्राचीनोंके अधीन होओ . हां तुम सब एक दूसरेके अधीन होके दीनताको पहिन लेओ क्योंकि ईश्वर अभिमानियोंसे विरोध करता है परन्तु दीनोंपर अनुग्रह करता है ।

(६) इसलिये ईश्वरके पराक्रमी हाथके नीचे दीन होओ जिस्तें वह समयपर तुम्हें ऊंचा करे । (७) अपनी सारी चिन्ता उसपर डालो क्योंकि वह तुम्हारे लिये सोच करता है । (८) सचेत रहो जागते रहो क्योंकि तुम्हारा बैरी शैतान गर्जते हुए सिंहकी नाईं ढूंढ़ता फिरता है कि किसको निगल जाय । (९) विश्वासमें दृढ़ होके उसका साम्हना करो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे भाई लोगोंपर जो संसारमें हैं दुःखोंकी वैसीही दशा पूरी होती जाती है ।

[प्रार्थना और नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति ।]

(१०) सारे अनुग्रहका ईश्वर जिसने हमें ख्रीष्ट यीशुमें बुलाया कि हम थोड़ासा दुःख उठाके उसकी अनन्त महिमा में प्रवेश करें आपही तुम्हें सुधारे औ स्थिर करे औ बल देवे औ नेवपर दृढ़ करे । (११) उसीको महिमा औ पराक्रम सदा सर्व्वदा रहे . आमीन ।

(१२) सीलाके हाथ जिसे मैं समझता हूं कि तुम्हारा बिश्वास-योग्य भाई है मैंने थोड़ी बातोंमें लिखा है और उपदेश और साक्षी देता हूं कि ईश्वरका सच्चा अनुग्रह जिसमें तुम स्थिर हो यही है। (१३) तुम्हारे संगकी चुनी हुई जो बाबुल में है और मेरा पुत्र मार्क इन दोनोंका तुमसे नमस्कार। (१४) प्रेमका चूमा लेके एक दूसरेको नमस्कार करो. तुम सभोंको जो ख्रीष्ट यीशुमें हो शांति होवे। आमीन॥

पितर प्रेरितकी दूसरी पत्री।

[पत्रीका आभाष।]

१ शिमोन पितर जो योशु खीष्टका दास और प्रेरित है उन लोगोंको जिन्होंने हमारे ईश्वर औ त्राणकर्त्ता योशु खीष्टके धर्म्ममें हमारे तुल्य बहुमूल्य बिश्वास प्राप्त किया है. (२) तुम्हें ईश्वरके और हमारे प्रभु योशुके ज्ञानके द्वारा बहुत बहुत अनुग्रह और शांति मिले।

[धर्म्ममें बढ़ते जानेका उपदेश। विश्वासियोंको चितानेमें पितरका यत्न।]

(३) जैसे कि उसके ईश्वरीय सामर्थ्यने सब कुछ जो जीवन और भक्तिसे संबंध रखता है हमें उसीके ज्ञानके द्वारा दिया है जिसने हमें अपने ऐश्वर्य्य और शुभगुणके अनुसार बुलाया. (४) जिनके अनुसार उसने हमें अत्यन्त बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं दिई हैं इसलिये कि इनके द्वारा तुम लोग जो नष्टता कामाभिलाषके द्वारा जगतमें है उससे बचके ईश्वरीय स्वभावके भागी हो जावो। (५) और इसी कारण भी तुम सब प्रकारका यत्न करके अपने बिश्वासमें शुभगुण और शुभगुणमें ज्ञान. (६) और ज्ञानमें संयम और संयममें धीरज और धीरजमें भक्ति. (७) और भक्तिमें भ्रातीय प्रेम और भ्रातीय प्रेममें प्यार संयुक्त करो। (८) क्योंकि यह बातें जब तुममें होतीं और बढ़ती जातीं तब तुम्हें ऐसे बनाती हैं कि हमारे प्रभु योशु खीष्टके ज्ञानके लिये तुम न निकम्मे न निष्फल हो.। (९) क्योंकि जिस पास यह बातें नहीं हैं वह अंधा है और धुंधला देखता है और अपने अगले पापोंसे अपना शुद्ध किया जाना भूल गया है। (१०) इस कारण हे भाइयो और

भी अपने बुलाये जाने और चुन लिये जानेको दृढ़ करनेका यत्न करो क्योंकि जो तुम ये कर्म्म करो तो कभी किसी रीति से ठोकर न खाओगे । (११) क्योंकि इस प्रकारसे तुम्हें हमारे प्रभु औ त्राणकर्त्ता यीशु ख्रीष्टके अनन्त राज्यमें प्रवेश करने का अधिकार अधिकाईसे दिया जायगा ।

(१२) इसलिये यद्यपि तुम यह बातें जानते हो और जो सत्य बचन तुम्हारे पास है उसमें स्थिर किये गये हो तौभी मैं इन बातोंके विषयमें तुम्हें नित्य चेत दिलानेमें निश्चिन्त न रहूंगा । (१३) पर मैं समझता हूं कि जबलों मैं इस डेरेमें हूं तबलों स्मरण करवानेसे तुम्हें सचेत करना मुझे उचित है । (१४) क्योंकि जानता हूं कि जैसा हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टने मुझे बताया तैसा मेरे डेरेके गिराये जानेका समय निकट है । (१५) पर मैं यत्न करूंगा कि मेरी मृत्युके पीछे भी तुम्हें इन बातोंका स्मरण करनेका उपाय नित्य रहे ।

(१६) क्योंकि हमने तुम्हें हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके सामर्थ्य का और आनेका समाचार बिद्यासे रची हुई कहानियोंके अनुसार जो सुनाया सो नहीं परन्तु हम उसकी महिमाके प्रत्यक्ष साक्षी हुए थे । (१७) क्योंकि उसने ईश्वर पितासे आदर और महिमा पाई कि प्रतापमय तेजसे उसको ऐसा शब्द सुनाया गया कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं । (१८) और यह शब्द स्वर्गसे सुनाया हुआ हमने पवित्र पर्ब्बतमें उसके संग होते हुए सुन लिया । (१९) और भविष्यद्वाणीका बचन हमारे निकट और भी दृढ़ है . तुम जो उसपर जैसे दीपकपर जो अंधियारे स्थानमें चमकता है जबलों पह न फटे और भोरका तारा तुम्हारे हृदयमें न उगे तबलों मन लगाते हो तो अच्छा करते हो । (२०) पर यही पहिले जानो कि धर्म्मपुस्तककी कोई भविष्यद्वाणी किसीके अपनेही

व्याख्यानसे नहीं होती है। (२१) क्योंकि भविष्यद्वाणी मनुष्यकी इच्छासे कभी नहीं आई परन्तु ईश्वरके पवित्र जन पवित्र आत्माके बुलवाये हुए बोले।

[झूठे उपदेशकोंके प्रगट होनेका और उनके दंडका संदेश।]

२ परन्तु झूठे भविष्यद्वक्ता भी लोगोंमें हुए जैसे कि तुममें भी झूठे उपदेशक होंगे जो बिनाशके कुपन्थोंको छिपके चलावेंगे और प्रभुसे जिसने उन्हें मोल लिया मुकरेंगे और अपने ऊपर शीघ्र बिनाश लावेंगे। (२) और बहुतेरे उनके लुचपनका पीछा करेंगे जिनके कारण सत्यके मार्गकी निन्दा किई जायगी। (३) और लोभसे वे तुम्हें बनाई हुई बातोंसे बेच खायेंगे पर पूर्व्वकालसे उनका दंड आलस नहीं करता और उनका बिनाश ऊंघता नहीं।

(४) क्योंकि यदि ईश्वरने दूतोंको जिन्होंने पाप किया न छोड़ा परन्तु पातालमें डालके अंधकारकी जंजीरोंमें सौंप दिया जहां वे बिचारके लिये रखे जाते हैं. (५) और प्राचीन जगतको न छोड़ा बरन भक्तिहीनोंके जगतपर जलप्रलय लाया परन्तु धर्म्मके प्रचारक नूहको लगाके आठ जनोंकी रक्षा किई. (६) और सदोम और अमोराके नगरोंको भस्म करके बिध्वंसका दंड दिया और उन्हें पीछे आनेवाले भक्तिहीनोंके लिये दृष्टान्त ठहराया है. (७) और धर्म्मी लूतको जो अधर्म्मियोंके लुचपनके चलनसे अति दुःखी होता था बचाया. (८) क्योंकि वह धर्म्मी जन उनके बीचमें बास करता हुआ देखने और सुननेसे प्रतिदिन अपने धर्म्मी प्राणको उनके दुष्ट कर्म्मोंसे पीड़ित करता था. (९) तो परमेश्वर भक्तोंको परीक्षामेंसे बचाने और अधर्म्मियोंको दंडकी दशामें बिचारके दिनलों रखने जानता है. (१०) निज करके उन लोगोंको जो शरीरके अनुसार अशुद्धताके अभिलाषसे चलते हैं और प्रभुताको तुच्छ

जानते हैं. वे ढीठ श्री हठी हैं श्रीर महत पदोंकी निन्दा करनेसे नहीं डरते हैं। (११) तौभी दूतगण जो शक्ति श्री पराक्रममें बड़े हैं उनके बिरुद्ध परमेश्वरके आगे निन्दासंयुक्त बिचार नहीं सुनाते हैं। (१२) परन्तु ये लोग स्वभावबश अचैतन्य पशुओंकी नाईं जो पकड़े जाने श्रीर नाश होनेको उत्पन्न हुए हैं जिन बातोंमें अज्ञान हैं उन्हींमें निन्दा करते हैं श्रीर अपनी भ्रष्टतामें सत्यानाश होंगे श्रीर अधर्म्मका फल पावेंगे। (१३) वे दिन भरके विषयभोगको सुख समझते हैं वे कलंक श्रीर खोट रूपी हैं वे तुम्हारे संग भोजमें जेंवते हुए अपने छलोंसे सुख भोग करते हैं। (१४) उनके नेत्र ब्यभिचारिणीसे भरे रहते हैं श्रीर पापसे रोके नहीं जा सकते हैं वे अस्थिर प्राणोंको फुसलाते हैं उनका मन लोभ लालचमें साधा हुआ है वे स्नापके सन्तान हैं। (१५) वे सीधे मार्गको छोड़के भटक गये हैं श्रीर बियोरके पुत्र बलामके मार्गपर हो लिये हैं जिसने अधर्म्मकी मजूरीको प्रिय जाना। (१६) परन्तु उसके अपराधके लिये उसे उलहना दिया गया. अबोल गदहेने मनुष्यकी बोलीसे बोलके भविष्यद्वक्ताकी मूर्खताको रोका।

(१७) ये लोग निर्जल कूए श्रीर आंधीके उड़ाये हुए मेघ हैं. उनके लिये सदाका घोर अन्धकार रखा गया है। (१८) क्योंकि वे ब्यर्थ गलफटाकीकी बातें करते हुए शरीरके अभिलाषोंसे लुचपनोंके द्वारा उन लोगोंको फुसलाते हैं जो भ्रांतिकी चाल चलनेहारोंसे सचमुच बच निकले थे। (१९) वे उन्हें निर्बन्ध होनेकी प्रतिज्ञा देते हैं पर आपही नष्टताके दास हैं क्योंकि जिससे कोई हार गया है उसका वह दास भी बन गया है।

(२०) यदि वे प्रभु श्री त्राणकर्त्ता यीशु ख्रीष्टके ज्ञानके द्वारा संसारकी नाना प्रकारकी अशुद्धतासे बच निकले परन्तु फिर उसमें फंसके हार गये हैं तो उनकी पिछली दशा

पहिलोसे बुरी हुई है । (२१) क्योंकि धर्म्मके मार्गको जानके भी उस पवित्र आज्ञासे जो उन्हें सौंपी गई फिर जानेसे उस मार्गको न जाननाही उनके लिये भला होता । (२२) पर उस सच्चे दृष्टान्तकी बात उनमें पूरी हुई है कि कुत्ता अपनीही छांटको और धोई हुई सूअरी कीचड़में लोटनेको फिर गई ।

[पत्रीका प्रयोजन और कितने निन्दक लोगोंका वर्णन ।]

३ यह दूसरी पत्री हे प्यारो मैं अब तुम्हारे पास लिखता हूं और दोनोंमें मैं स्मरण करवानेसे तुम्हारे निष्कपट मनको सचेत करता हूं . (२) जिस्तें तुम उन बातोंको जो पवित्र भविष्यद्वक्ताओंने आगेसे कही थीं और हम प्रेरितोंकी आज्ञाको जो प्रभु औ त्राणकर्त्ताकी आज्ञा है स्मरण करो । (३) पर यही पहिले जानो कि पिछले दिनोंमें निन्दक लोग आवेंगे जो अपनेही अभिलाषोंके अनुसार चलेंगे . (४) और कहेंगे उसके आनेकी प्रतिज्ञा कहां है क्योंकि जबसे पितर लोग सो गये सब कुछ सृष्टिके आरंभसे यूंही बना रहता है । (५) क्योंकि यह बात उनसे उनकी इच्छाहीसे छिपी रहती है कि ईश्वरके बचनसे आकाश पूर्व्वकालसे था और पृथिवी भी जो जलमेंसे और जलके द्वारासे बनी . (६) जिनके द्वारा जगत जो तब था जलमें डूबके नष्ट हुआ । (७) परन्तु आकाश औ पृथिवी जो अब हैं उसी बचनसे धरे हुए हैं और भक्तिहीन मनुष्योंके बिचार और बिनाशके दिनलों आगके लिये रखे जाते हैं ।

[प्रभुके दिनके आनेका संदेश ।]

(८) परन्तु हे प्यारो यह एक बात तुमसे छिपी न रहे कि प्रभुके यहां एक दिन सहस्र बरसके तुल्य और सहस्र बरस एक दिनके तुल्य हैं । (९) प्रभु प्रतिज्ञाके विषयमें बिलंब नहीं करता है जैसा कितने लोग बिलंब समझते हैं परन्तु हमारे

कारण धीरज धरता है और नहीं चाहता है कि कोई नष्ट होवें परन्तु सब लोग पश्चात्तापको पहुंचें। (१०) पर जैसा रातको चोर आता है तैसा प्रभुका दिन आवेगा जिसमें आकाश हड़हड़ाहटसे जाता रहेगा और तत्त्व अति तप्त हो गल जायेंगे और पृथिवी और उसमेंके कार्य्य जल जायेंगे। (११) सो जब कि यह सब वस्तु गल जानेवाली हैं तुम्हें पवित्र चालचलन और भक्तिमें कैसे मनुष्य होना और किस रीति से ईश्वरके दिनकी बाट जोहना और उसके शीघ्र आनेकी चेष्टा करना उचित है. (१२) जिस दिनके कारण आकाश ज्वलित हो गल जायगा और तत्त्व अति तप्त हो पिघल जायेंगे। (१३) परन्तु उसकी प्रतिज्ञाके अनुसार हम नये आकाश और नई पृथिवी की आस देखते हैं जिनमें धर्म्म बास करेगा।

[उपदेश सहित पत्रीकी समाप्ति।]

(१४) इसलिये हे प्यारो तुम जो इन बातोंकी आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम कुशलसे उसके आगे निष्कलंक औ निर्दोष ठहरो। (१५) और हमारे प्रभुके धीरजको त्राण समझो जैसे हमारे प्रिय भाई पावलने भी उस ज्ञानके अनुसार जो उसे दिया गया तुम्हारे पास लिखा। (१६) वैसेही उसने सब पत्रियोंमें भी लिखा है और उनमें इन बातोंके विषयमें कहा है जिनमेंसे कितनी बातें गूढ़ हैं जिनका अनसिख और अस्थिर लोग जैसे धर्म्मपुस्तककी और और बातोंका भी विपरीत अर्थ लगाके उन्हें अपनेही बिनाशका कारण बनाते हैं। (१७) सो हे प्यारो तुम लोग इसको आगेसे जानके अपने तईं बचाये रहो ऐसा न हो कि अधर्म्मियोंके भ्रमसे बहकाये जाके अपनी स्थिरतासे पतित होओ। (१८) परन्तु हमारे प्रभु औ त्राणकर्त्ता यीशु ख्रीष्टके अनुग्रह और ज्ञानमें बढ़ते जाओ. उसका गुणानुबाद अभी और सदाकाललों भी होवे। आमीन॥

योहन प्रेरितकी पहिली पत्री।

[पत्रीका अभिप्राय सनातन जीवनका समाचार।]

१ जो आदिसे था जो हमने जीवनके बचनके विषयमें सुना है जो अपने नेत्रोंसे देखा है जिसपर हमने दृष्टि किई और हमारे हाथोंने छूआ . (२) कि वह जीवन प्रगट हुआ और हमने देखा है और साक्षी देते हैं और तुम्हें उस सनातन जीवन का समाचार सुनाते हैं जो पिताके संग था और हमोंपर प्रगट हुआ . (३) जो हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें सुनाते हैं इसलिये कि हमारे साथ तुम्हारी संगति होय और हमारी यह संगति पिताके साथ और उसके पुत्र यीशु ख्रीष्टके साथ है। (४) और यह बातें हम तुम्हारे पास इसलिये लिखते हैं कि तुम्हारा आनन्द पूरा होय।

[ईश्वर ज्योति है उससे मेल रखनेके लिये ज्योतिमें चलने और अपने अपने पाप मान लेनेकी आवश्यकता।]

(५) जो समाचार हमने उससे सुना है और तुम्हें सुनाते हैं सो यह है कि ईश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं है। (६) जो हम कहें कि उसके साथ हमारी संगति है और हम अंधियारेमें चलें तो झूठ बोलते हैं और सच्चाईपर नहीं चलते हैं। (७) परन्तु जैसा वह ज्योतिमें है वैसेही जो हम ज्योतिमें चलें तो एक दूसरेसे संगति रखते हैं और उसके पुत्र यीशु ख्रीष्टका लोहू हमें सब पापसे शुद्ध करता है। (८) जो हम कहें कि हममें कुछ पाप नहीं है तो अपनेको धोखा देते हैं और सच्चाई हममें नहीं है। (९) जो हम अपने

पापोंको मान लेवें तो वह हमारे पापोंको क्षमा करनेको और हमें सब अधर्म्मसे शुद्ध करनेको विश्वासयोग्य और धर्म्मी है। (१०) जो हम कहें कि हमने पाप नहीं किया है तो उस को झूठा बनाते हैं और उसका बचन हममें नहीं है।

[पापकी क्षमाका योशुसे होना। पापियोंका सहायक जो पापोंके लिये प्रायश्चित्त है।]

२ हे मेरे बालको मैं यह बातें तुम्हारे पास लिखता हूं जिस्तें तुम पाप न करो और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात धार्म्मिक योशु ख्रीष्ट। (२) और वही हमारे पापोंके लिये प्रायश्चित्त है और केवल हमारे नहीं परन्तु सारे जगतके पापोंके लिये भी।

[आज्ञाओंपर चलने और भाइयोंसे प्रेम रखनेकी आवश्यकता।]

(३) और हम लोग जो उसकी आज्ञाओंको पालन करें तो इसीसे जानते कि उसको पहचानते हैं। (४) जो कहता है मैं उसे पहचानता हूं और उसकी आज्ञाओंको नहीं पालन करता है सो झूठा है और उसमें सच्चाई नहीं है। (५) परन्तु जो कोई उसके बचनको पालन करे उसमें सचमुच ईश्वरका प्रेम सिद्ध किया गया है. इससे हम जानते हैं कि हम उस में हैं। (६) जो कहता है मैं उसमें रहता हूं उसे उचित है कि आप भी वैसाही चले जैसा वह चला।

(७) हे भाइयो मैं तुम्हारे पास नई आज्ञा नहीं लिखता हूं परन्तु पुरानी आज्ञा जो आरंभसे तुम्हारे पास थी. पुरानी आज्ञा वह बचन है जिसे तुमने आरंभसे सुना। (८) फिर मैं तुम्हारे पास नई आज्ञा लिखता हूं और यह तो उसमें और तुममें सत्य है क्योंकि अंधकार बीता जाता है और सच्चा उजियाला अभी चमकता है। (९) जो कहता है मैं उजियालेमें हूं और अपने भाईसे बैर रखता है सो अबलों

अंधकारमें है । (१०) जो अपने भाईको प्यार करता है सो उजियालेमें रहता है और ठोकर खानेका कारण उसमें नहीं है । (११) पर जो अपने भाईसे बैर रखता है सो अंधकारमें है और अंधकारमें चलता है और नहीं जानता मैं कहां जाता हूं क्योंकि अंधकारने उसकी आंखें अंधी किई हैं ।

[जगतसे प्रीति रखनेका निषेध ।]

(१२) हे बालको मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इसलिये कि तुम्हारे पाप उसके नामके कारण क्षमा किये गये हैं । (१३) हे पितरो मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इसलिये कि तुम उसे जो आदिसे है जानते हो. हे जवानो मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इस लिये कि तुमने उस दुष्टपर जय किया है . हे लड़को मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इसलिये कि तुम पिताको जानते हो । (१४) हे पितरो मैंने तुम्हारे पास लिखा है इसलिये कि तुम उसे जो आदिसे है जानते हो . हे जवानो मैंने तुम्हारे पास लिखा है इसलिये कि तुम बलवन्त हो और ईश्वरका बचन तुममें रहता है और तुमने उस दुष्टपर जय किया है ।

(१५) न तो संसारसे न संसारमेंकी वस्तुओंसे प्रीति रखो . यदि कोई संसारसे प्रीति रखता है तो पिताका प्रेम उसमें नहीं है । (१६) क्योंकि जो कुछ संसारमें है अर्थात शरीरका अभिलाष और नेत्रोंका अभिलाष और जीविकाका घमंड सो पिताकी ओरसे नहीं है परन्तु संसारकी ओरसे है । (१७) और संसार और उसका अभिलाष बीता जाता है परन्तु जो ईश्वर की इच्छापर चलता है सो सदालों ठहरता है ।

[ख्रीष्टबिरोधियोंसे योहनकी चितावनी ।]

(१८) हे लड़को यह पिछला समय है और जैसा तुमने सुना कि ख्रीष्टबिरोधी आता है तैसे अब भी बहुतसे ख्रीष्टबिरोधी हुए हैं जिससे हम जानते हैं कि पिछला समय है । (१९) वे

हममेंसे निकल गये परन्तु हममेंके नहीं थे क्योंकि जो वे हममेंके होते तो हमारे संग रहते परन्तु वे निकल गये जिस्तें प्रगट होवें कि सब हममेंके नहीं हैं । (२०) पर तुम्हारा तो उस परमपवित्रसे अभिषेक हुआ है और तुम सब कुछ जानते हो । (२१) मैंने तुम्हारे पास इसलिये नहीं लिखा है कि तुम सत्यको नहीं जानते हो परन्तु इसलिये कि उसे जानते हो और कि कोई झूठ सत्यमेंसे नहीं है । (२२) झूठा कौन है केवल वह जो मुकरके कहता है कि यीशु जो है सो ख्रीष्ट नहीं है. यही ख्रीष्टबिरोधी है जो पितासे और पुत्रसे मुकरता है । (२३) जो कोई पुत्रसे मुकरता है पिता भी उसका नहीं है. जो पुत्रको मान लेता है पिता भी उसका है ।

(२४) सो जो कुछ तुमने आरंभसे सुना वह तुममें रहे. जो तुमने आरंभसे सुना सो यदि तुममें रहे तो तुम भी पुत्रमें और पितामें रहोगे । (२५) और प्रतिज्ञा जो उसने हमसे किई है यह है अर्थात अनन्त जीवन । (२६) यह बातें मैंने तुम्हारे पास तुम्हारे भरमानेहारोंके विषयमें लिखी हैं । (२७) और तुमने जो अभिषेक उससे पाया है सो तुममें रहता है और तुम्हें प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखावे परन्तु जैसा वही अभिषेक तुम्हें सब बातोंके विषयमें शिक्षा देता है और सत्य है और झूठ नहीं है और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है तैसे तुम उसमें रहो । (२८) और अब हे बालको उसमें रहो कि जब वह प्रगट होय तब हमें साहस हो और हम उसके आनेपर उसके आगेसे लज्जित होके न जावें । (२९) जो तुम जानो कि वह धर्म्मी है तो जानते हो कि जो कोई धर्म्मका कार्य्य करता है सो उससे उत्पन्न हुआ है ।

[विश्वासियोंका अपनी पदवी और आशाके कारण पापसे बचे रहना ।]

३ देखो पिताने हमोंपर कैसा प्रेम किया है कि हम ईश्वर के सन्तान कहावें. इस कारण संसार हमें नहीं पहचानता

है क्योंकि उसको नहीं पहचाना । (२) हे प्यारो अभी हम ईश्वरके सन्तान हैं और अबलों यह नहीं प्रगट हुआ कि हम क्या होंगे परन्तु जानते हैं कि जो प्रगट होय तो हम उसके समान होंगे क्योंकि उसको जैसा वह है तैसा देखेंगे। (३) और जो कोई उसपर यह आशा रखता है सो जैसा वह पवित्र है तैसाही अपनेको पवित्र करता है । (४) जो कोई पाप करता है सो व्यवस्थालंघन भी करता है और पाप तो व्यवस्थालंघन है। (५) और तुम जानते हो कि वह तो इसलिये प्रगट हुआ कि हमारे पापोंको उठा लेवे और उसमें पाप नहीं है। (६) जो कोई उसमें रहता है सो पाप नहीं करता है. जो कोई पाप करता है उसने न उसको देखा है न उसको जाना है ।

(७) हे बालको कोई तुम्हें न भरमावे . जैसा वह धर्म्मी है तैसा वह जो धर्म्मका कार्य्य करता है धर्म्मी है । (८) जो पाप करता है सो शैतानसे है क्योंकि शैतान आरंभसे पाप करता है . ईश्वरका पुत्र इसीलिये प्रगट हुआ कि शैतान के कामोंको लोप करे । (९) जो कोई ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है सो पाप नहीं करता है क्योंकि उसका बीज उसमें रहता है और वह पाप नहीं कर सकता है क्योंकि ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है। (१०) इसीमें ईश्वरके सन्तान और शैतानके सन्तान प्रगट होते हैं . जो कोई धर्म्मका कार्य्य नहीं करता है सो ईश्वरसे नहीं है और न वह जो अपने भाईको प्यार नहीं करता है। (११) क्योंकि यही समाचार है जो तुमने आरंभसे सुना कि हम एक दूसरेको प्यार करें । (१२) ऐसा नहीं जैसा काइन उस दुष्टसे था और अपने भाईको बध किया . और उसको किस कारण बध किया : इस कारण कि उसके अपने कार्य्य बुरे थे परन्तु उसके भाईके कार्य्य धर्म्मके थे ।

(१३) हे मेरे भाइयो यदि संसार तुमसे बैर करता है तो अचंभा मत करो।

(१४) हम लोग जानते हैं कि हम मृत्युसे पार होके जीवन में पहुंचे हैं क्योंकि भाइयोंको प्यार करते हैं. जो भाईको प्यार नहीं करता है सो मृत्युमें रहता है। (१५) जो कोई अपने भाईसे बैर रखता है सो मनुष्यघाती है और तुम जानते हो कि किसी मनुष्यघातीमें अनन्त जीवन नहीं रहता है। (१६) हम इसीमें प्रेमको समझते हैं कि उसने हमारे लिये अपना प्राण दिया और हमें उचित है कि भाइयोंके लिये प्राण देवें। (१७) परन्तु जिस किसीके पास संसारकी जीविका हो जो वह अपने भाईको देखे कि उसे प्रयोजन है और उससे अपना अन्तःकरण कठोर करे तो उसमें क्योंकर ईश्वरका प्रेम रहता है। (१८) हे मेरे बालको हम बातसे अथवा जीभसे नहीं परन्तु करणीसे और सच्चाईसे प्रेम करें। (१९) और इसीमें हम जानते हैं कि हम सच्चाईके हैं और उसके आगे अपने अपने मनको समझावेंगे। (२०) क्योंकि जो हमारा मन हमें दोष देवे तो जानते हैं कि ईश्वर हमारे मनसे बड़ा है और सब कुछ जानता है। (२१) हे प्यारो जो हमारा मन हमें दोष न देवे तो हमें ईश्वरके सन्मुख साहस है। (२२) और हम जो कुछ मांगते हैं उससे पाते हैं क्योंकि उसकी आज्ञाओंको पालन करते हैं और वेही काम करते हैं जिनसे वह प्रसन्न होता है। (२३) और उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु ख्रीष्टके नामपर बिश्वास करें और जैसा उसने हमें आज्ञा दिई वैसा एक दूसरेको प्यार करें। (२४) और जो उसकी आज्ञाओंको पालन करता है सो उसमें रहता है और वह उसमें और इसीसे हम जानते हैं कि वह हमोंमें रहता है अर्थात उस आत्मासे जो उसने हमें दिया है।

[आपसमें प्रेम करनेका उपदेश । प्रेमसे ईश्वरमें रहनेका प्रमाण मिलता है इसका वर्णन । झूठे भविष्यद्वक्ताओंकी परीक्षा ।]

४ हे प्यारो हर एक आत्माका बिश्वास मत करो परन्तु आत्माओंको परखो कि वे ईश्वरकी ओरसे हैं कि नहीं क्योंकि बहुत झूठे भविष्यद्वक्ता जगतमें निकल आये हैं । (२) इसीसे तुम ईश्वरका आत्मा पहचानते हो . हर एक आत्मा जो मान लेता है कि यीशु ख्रीष्ट शरीरमें आया है ईश्वरकी ओरसे है । (३) और जो आत्मा नहीं मान लेता है कि यीशु ख्रीष्ट शरीरमें आया है ईश्वरकी ओरसे नहीं है और यही तो ख्रीष्टबिरोधीका आत्मा है जिसे तुमने सुना है कि आता है और अब भी वह जगतमें है । (४) हे बालको तुम तो ईश्वरके हो और तुमने उनपर जय किया है क्योंकि जो तुममें है सो उससे जो संसारमें है बड़ा है । (५) वे तो संसारके हैं इस कारण वे संसारकी बातें बोलते हैं और संसार उनकी सुनता है । (६) हम तो ईश्वरके हैं . जो ईश्वरको जानता है सो हमारी सुनता है . जो ईश्वरका नहीं है सो हमारी नहीं सुनता . इससे हम सच्चाईका आत्मा और भ्रांतिका आत्मा पहचानते हैं ।

[ईश्वरका प्रेम और भाइयोंमें एक दूसरेको प्यार करनेका निर्णय ।]

(७) हे प्यारो हम एक दूसरेको प्यार करें क्योंकि प्रेम ईश्वरसे है और जो कोई प्रेम करता है सो ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है और ईश्वरको जानता है । (८) जो प्रेम नहीं करता है उसने ईश्वरको नहीं जाना क्योंकि ईश्वर प्रेम है । (९) इसी में ईश्वरका प्रेम हमारी ओर प्रगट हुआ कि ईश्वरने अपने एकलौते पुत्रको जगतमें भेजा है जिस्तें हम लोग उसके द्वारासे जीवें । (१०) इसीमें प्रेम है यह नहीं कि हमने ईश्वरको प्यार किया परन्तु यह कि उसने हमें प्यार किया

और अपने पुत्रको हमारे पापोंके लिये प्रायश्चित्त होने को भेज दिया। (११) हे प्यारो यदि ईश्वरने इस रीतिसे हमें प्यार किया तो उचित है कि हम भी एक दूसरेको प्यार करें।

(१२) किसीने ईश्वरको कभी नहीं देखा है. जो हम एक दूसरेको प्यार करें तो ईश्वर हममें रहता है और उसका प्रेम हममें सिद्ध किया हुआ है। (१३) इसीसे हम जानते हैं कि हम उसमें रहते हैं और वह हममें कि उसने अपने आत्मामेंसे हमें दिया है। (१४) और हमने देखा है और साक्षी देते हैं कि पिताने पुत्रको भेजा है कि जगतका त्राणकर्त्ता होवे। (१५) जो कोई मान लेता है कि यीशु ईश्वरका पुत्र हैं ईश्वर उसमें रहता है और वह ईश्वरमें। (१६) और हमारी ओर जो ईश्वरका प्रेम है उसको हमने जान लिया है और उसकी प्रतीति किई है. ईश्वर प्रेम है और जो प्रेममें रहता है सो ईश्वरमें रहता है और ईश्वर उसमें। (१७) इसीमें प्रेम हमोंमें सिद्ध किया गया है जिस्तें हमें बिचारके दिनमें साहस होवे कि जैसा वह है हम भी इस संसारमें वैसेही हैं। (१८) प्रेममें भय नहीं है परन्तु पूरा प्रेम भयको बाहर निकालता है क्योंकि जहां भय तहां दंड है. जो भय करता है सो प्रेममें सिद्ध नहीं हुआ है। (१९) हम उसको प्यार करते हैं क्योंकि पहिले उसने हमें प्यार किया। (२०) यदि कोई कहे मैं ईश्वरको प्यार करता हूं और अपने भाईसे बैर रखे तो झूठा है क्योंकि जो अपने भाईको जिसे देखा है प्यार नहीं करता है सो ईश्वरको जिसे नहीं देखा है क्योंकर प्यार कर सकता है। (२१) और उससे यह आज्ञा हमें मिली है कि जो ईश्वरको प्यार करता है सो अपने भाईको भी प्यार करे।

[ईश्वरकी आज्ञा माननेसे प्रेमका प्रगट होना । विश्वासीके हृदयमें पवित्रात्माकी साक्षी ।]

५ जो कोई बिश्वास करता है कि यीशु जो है सो ख्रीष्ट है वह ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेहारेको प्यार करता है सो उसे भी प्यार करता है जो उससे उत्पन्न हुआ है। (२) इससे हम जानते हैं कि जब हम ईश्वर को प्यार करते हैं और उसकी आज्ञाओंको पालन करते हैं तब ईश्वरके सन्तानोंको प्यार करते हैं। (३) क्योंकि ईश्वरका प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओंको पालन करें और उसकी आज्ञाएं भारी नहीं हैं। (४) क्योंकि जो कुछ ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है सो संसारपर जय करता है और वह जय जिसने संसारपर जय पाया है यह है अर्थात हमारा बिश्वास। (५) संसारपर जय करनेहारा कौन है केवल वह जो बिश्वास करता है कि यीशु ईश्वरका पुत्र है।

(६) जो जल और लोहूके द्वारासे आया सो यह है अर्थात यीशु ख्रीष्ट. वह केवल जलसे नहीं परन्तु जलसे और लोहूसे आया. और आत्मा है जो साक्षी देता है क्योंकि आत्मा सत्य है। (७) क्योंकि तीन हैं जो [स्वर्गमें साक्षी देते हैं पिता और वचन और पवित्र आत्मा और ये तीनों एक हैं। (८) और तीन हैं जो पृथिवीपर] साक्षी देते हैं आत्मा और जल और लोहू और तीनों एकमें मिलते हैं। (९) जो हम मनुष्योंकी साक्षीको ग्रहण करते हैं तो ईश्वरकी साक्षी उससे बड़ा है क्योंकि यह ईश्वरकी साक्षी है जो उसने अपने पुत्रके विषय में दिई है। (१०) जो ईश्वरके पुत्रपर बिश्वास करता है सो अपनेहीमें साक्षी रखता है. जो ईश्वरका बिश्वास नहीं करता है उसको झूठा बनाया है क्योंकि उस साक्षीपर बिश्वास नहीं किया है जो ईश्वरने अपने पुत्रके विषयमें दिई है। (११) और

साक्षी यह है कि ईश्वरने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन उसके पुत्रमें है। (१२) पुत्र जिसका है उसको जीवन है. ईश्वरका पुत्र जिसका नहीं है उसको जीवन नहीं है। (१३) यह बातें मैंने तुम्हारे पास जो ईश्वरके पुत्रके नामपर विश्वास करते हो इसलिये लिखी हैं कि तुम जानो कि तुमको अनन्त जीवन है और जिस्तें तुम ईश्वरके पुत्रके नामपर बिश्वास रखो।

[प्रार्थनाके विषयमें ईश्वर और संसारके लोगोंकी पहचान।]

(१४) और जो साहस हमको उसके यहां होता है सो यह है कि जो हम लोग उसकी इच्छाके अनुसार कुछ मांगें तो वह हमारी सुनता है। (१५) और जो हम जानते हैं कि जो कुछ हम मांगें वह हमारी सुनता है तो जानते हैं कि मांगी हुई बस्तु जो हमने उससे मांगी हैं हमें मिली हैं। (१६) यदि कोई अपने भाईको ऐसा पाप करते देखे जो मृत्युजनक पाप नहीं है तो वह बिन्ती करेगा और जो पाप मृत्युजनक नहीं है ऐसा पाप करनेहारोंके लिये वह उसे जीवन देगा. मृत्युजनक पाप भी होता है उसके विषयमें मैं नहीं कहता हूं कि वह मांगे। (१७) सब अधर्म्म पाप है और ऐसा पाप भी है जो मृत्युजनक नहीं है।

(१८) हम जानते हैं कि जो कोई ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है सो पाप नहीं करता है परन्तु जो ईश्वरसे उत्पन्न हुआ सो अपने तईं बचा रखता है और वह दुष्ट उसे नहीं छूता है। (१९) हम जानते हैं कि हम ईश्वरसे हैं और सारा संसार उस दुष्टके बशमें पड़ा है। (२०) और हम जानते हैं कि ईश्वरका पुत्र आया है और हमें बुद्धि दिई है कि हम सच्चे को पहचानें और हम उस सच्चेमें उसके पुत्र यीशु खीष्टमें रहते हैं. यह तो सच्चा ईश्वर और अनन्त जीवन है। (२१) हे बालको अपने तईं मूरतोंसे बचाओ। आमीन॥

योहन प्रेरितकी दूसरी पत्री ।

[पत्रीका आभाष ।]

१ प्राचीन पुरुष चुनी हुई कुरियाको और उसके लड़कोंको जिन्हें मैं सच्चाईमें प्यार करता हूं . (२) और केवल मैं नहीं परन्तु सब लोग भी जो सच्चाईको जानते हैं उस सच्चाईके कारण प्यार करते हैं जो हमोंमें रहती है और हमारे साथ सदालों रहेगी। (३) अनुग्रह औ दया औ शांति ईश्वर पिताकी ओरसे और पिताके पुत्र प्रभु यीशु ख्रीष्टकी ओरसे सच्चाई और प्रेमके द्वारा आप लोगोंके संग होय ।

[प्रेमकी आवश्यकता और भरमानेहारे उपदेशकोंकी सहायता करनेका निषेध ।]

(४) मैंने बहुत आनन्द किया कि आपके लड़कोंमेंसे मैंने कितनोंको जैसे हमने पितासे आज्ञा पाई तैसेही सच्चाईपर चलते हुए पाया है । (५) और अब हे कुरिया मैं जैसा नई आज्ञा लिखता हुआ तैसा नहीं परन्तु जो आज्ञा हमें आरंभसे मिली उसीको आपके पास लिखता हुआ आपसे बिन्ती करता हूं कि हम एक दूसरेको प्यार करें । (६) और प्यार यही है कि हम उसकी आज्ञाओंके अनुसार चलें . यही आज्ञा है जैसी तुमने आरंभसे सुनी जिस्तें तुम उसपर चलो । (७) क्योंकि बहुत भरमानेहारे जगतमें आये हैं जो नहीं मान लेते हैं कि यीशु ख्रीष्ट शरीरमें आया . यह भरमानेहारा और ख्रीष्टबिरोधी है । (८) अपने विषयमें चौकस रहिये कि जो कर्म्म हमने किये उन्हें न खोवें परन्तु पूरा फल पावें । (९) जो कोई अपराधी होता है और ख्रीष्टको शिक्षामें नहीं

रहता है ईश्वर उसका नहीं है . जो ख्रीष्टकी शिक्षामें रहता है पिता और पुत्र दोनों उसीके हैं । (१०) यदि कोई आप लोगोंके पास आके यह शिक्षा नहीं लाता है तो उसे घरमें ग्रहण न कीजिये और उससे कल्याण होय न कहिये । (११) क्योंकि जो उससे कल्याण होय कहता है सो उसके बुरे कर्म्मोंमें भागी होता है ।

[पत्रीकी समाप्ति ।]

(१२) मुझे बहुत कुछ आप लोगोंके पास लिखना है पर मुझे कागज औ सियाहीके द्वारा लिखनेकी इच्छा न थी परन्तु आशा है कि मैं आप लोगोंके पास आऊं और सन्मुख होके बात करूं जिस्तें हमारा आनन्द पूरा होय । (१३) आपकी चुनी हुई बहिनके लड़कोंका आपसे नमस्कार । आमीन ॥

———

योहन प्रेरितकी तीसरी पत्री

[पत्रीका आभाष । गायसकी भक्ति और अतिथिसेवाकी प्रशंसा ।]

१ प्राचीन पुरुष प्यारे गायसको जिसे मैं सच्चाईमें प्यार करता हूं ।

(२) हे प्यारे मेरी प्रार्थना है कि जैसे आपका प्राण कुशल क्षेमसे रहता है तैसे सब बातोंमें आप कुशल क्षेमसे रहें औ भले चंगे हों । (३) क्योंकि भाई लोग जो आये और आपकी सच्चाईकी जैसे आप सच्चाईपर चलते हैं साक्षी दिई तो मैंने बहुत आनन्द किया । (४) मुझे इससे बड़ा कोई आनन्द नहीं है कि मैं सुनूं कि मेरे लड़के सच्चाई पर चलते हैं । (५) हे प्यारे आप भाइयोंके लिये और अतिथियों के लिये जो कुछ करते हैं सो बिश्वासीकी रीतिसे करते हैं । (६) इन्होंने मंडलीके आगे आपके प्रेमकी साक्षी दिई . जो आप ईश्वरके योग्य व्यवहार करके उन्हें आगे पहुंचावें तो भला करेंगे । (७) क्योंकि वे उसके नामपर निकले हैं और देवपूजकोंसे कुछ नहीं लेते हैं । (८) इसलिये हमें उचित है कि ऐसोंको ग्रहण करें जिस्तें हम सच्चाईके लिये सहकर्म्मी हो जावें ।

[दियोत्रिफी और दोमीत्रियकी कुछ चर्चा । पत्रीकी समाप्ति ।]

(९) मैंने मंडलीके पास लिखा परन्तु दियोत्रिफी जो उन में प्रधान होनेकी इच्छा रखता है हमें ग्रहण नहीं करता है । (१०) इस कारण मैं जो आऊं तो उसके कर्म्मोंको जो वह करता है स्मरण कराऊंगा कि बुरा बातोंसे हमारे बिरुद्ध बकता है और इनपर सन्तोष न करके वह आपही भाइयों

को ग्रहण नहीं करता है और उन्हें जो ग्रहण किया चाहते हैं बर्जता है और मंडलीमेंसे निकालता है । (११) हे प्यारे बुराईके नहीं परन्तु भलाईके अनुगामी हूजिये . जो भला करता है सो ईश्वरसे है परन्तु जो बुरा करता है उसने ईश्वर को नहीं देखा है । (१२) दीमीत्रियके लिये सब लोगोंने और सच्चाईने आपही साक्षी दिई है बरन हम भी साक्षी देते हैं और आप लोग जानते हैं कि हमारी साक्षी सत्य है ।

(१३) मुझे बहुत कुछ लिखना था पर मैं आपके पास सियाही और कलमके द्वारा लिखने नहीं चाहता हूं । (१४) परन्तु मुझे आशा है कि शीघ्र आपको देखूं तब हम सन्मुख होके बात करेंगे । (१५) आपका कल्याण होय . मित्र लोगोंका आपसे नमस्कार . नाम ले ले मित्रोंसे नमस्कार कहिये ।

यिहूदाकी पत्री

[पत्रीका आभाष ।]

१ यिहूदा जो यीशु खीष्टका दास और याकूबका भाई है बुलाये हुए लोगोंको जो ईश्वर पितामें पवित्र किये हुए और यीशु खीष्टके लिये रक्षा किये हुए हैं . (२) तुम्हें बहुत बहुत दया औ शांति औ प्रेम पहुंचे ।

[झूठे उपदेशकों और उनके बुरे कर्म्मोंका संदेश ।]

(३) हे प्यारो मैं साधारण त्राणके विषयमें तुम्हारे पास लिखनेका सब प्रकारका यत्न जो करने लगा तो मुझे अवश्य हुआ कि तुम्हारे पास लिखके उस बिश्वासके लिये जो पवित्र लोगोंको एकही बेर सौंपा गया साहस करनेका उपदेश करूं । (४) क्योंकि कितने मनुष्य जो पूर्व्वकालसे इस दंडके योग्य लिखे गये थे छिपके घुस आये हैं जो भक्तिहीन हैं और हमारे ईश्वरके अनुग्रहको लुचपनकी ओर फेर देते हैं और अद्वैत स्वामी ईश्वर और हमारे प्रभु यीशु खीष्टसे मुकर जाते हैं।

(५) पर यद्यपि तुमने इसको एक बेर जाना था तौभी मैं तुम्हें स्मरण करवाने चाहता हूं कि प्रभुने लोगोंको मिसर देशसे बचाके फिर जिन्होंने बिश्वास न किया उन्हें नाश किया । (६) उन दूतोंको भी जिन्होंने अपने प्रथम पदको न रखा परन्तु अपने निज निवासको छोड़ दिया उसने उस बड़े दिनके विचारके लिये अंधकारमें सदाके बन्धनोंमें रखा है । (७) जैसे सदोम और अमोरा और उनके आसपासके नगर इन्होंकीसा रीतिपर ब्यभिचार करके और पराये शरीरके पीछे जाके दृष्टान्त ठहराये गये हैं कि अनन्त आगका दंड भोगते हैं।

(८) तौभी उसी रीतिसे ये लोग भी स्वप्नदर्शी हो शरीरको अशुद्ध करते हैं और प्रभुताको तुच्छ जानते हैं और महत पदोंकी निन्दा करते हैं। (९) परन्तु प्रधान दूत मीखायेल जब शैतानसे मूसाके देहके विषयमें बाद बिबाद करता था तब उसपर निन्दासंयुक्त बिचार करनेका साहस न किया परन्तु कहा परमेश्वर तुझे डांटे। (१०) पर ये लोग जिन जिन बातोंको नहीं जानते हैं उनकी निन्दा करते हैं परन्तु जिन जिन बातोंको अचैतन्य पशुओंकी नाईं स्वभावहीसे बूझते हैं उनमें भ्रष्ट होते हैं। (११) उनपर सन्ताप कि वे काइनके मार्गपर चले हैं और मजूरीके लिये बलामकी भूलमें ढल गये हैं और कोरहके बिबादमें नाश हुए हैं। (१२) तुम्हारे प्रेमके भोजोंमें ये लोग समुद्रमें छिपे हुए पर्ब्बत सरीखे हैं कि वे तुम्हारे संग निर्भय जेवते हुए अपने तईं पालते हैं वे निर्जल मेघ हैं जो बयारोंसे इधर उधर उड़ाये जाते हैं पतझड़के निष्फल पेड़ जो दो दो बेर मरे हैं और उखाड़े गये हैं. (१३) समुद्रकी प्रचंड लहरें जो अपनी लज्जाका फेन निकालती हैं भरमते हुए तारे जिनके लिये सदाका घोर अन्धकार रखा गया है। (१४) और हनोकने भी जो आदमसे सातवां था इन्होंका भविष्यद्वाक्य कहा कि देखो परमेश्वर अपने सहस्रों पवित्रोंके बीचमें आया. (१५) कि सभोंका बिचार करे और उनमेंके सब भक्तिहीन लोगोंको उनके सब अभक्तिके कर्म्मोंके विषयमें जो उन्होंने भक्तिहीन होके किये हैं और उन सब कठोर बातोंके विषयमें जो भक्तिहीन पापियोंने उसके बिरुद्ध कही हैं दोषी ठहरावे। (१६) ये तो कुड़कुड़ानेहारे अपने भाग्यके दूसनेहारे और अपने अभिलाषोंके अनुसार चलनेहारे हैं और उनका मुंह गलफटाकीकी बातें बोलता है और वे लाभके निमित्त मुंह देखी बड़ाई किया करते हैं।

(१७) पर हे प्यारो तुम उन बातोंको स्मरण करो जो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके प्रेरितोंने आगेसे कही हैं. (१८) कि वे तुमसे बोले कि पिछले समयमें निन्दक लोग होंगे जो अपने अभक्तिके अभिलाषोंके अनुसार चलेंगे । (१९) ये तो वे हैं जो अपने तईं अलग करते हैं शारीरिक लोग जिन्हें आत्मा नहीं है ।

[उपदेश और धन्यवाद ।]

(२०) परन्तु हे प्यारो तुम लोग अपने अति पवित्र बिश्वास के द्वारा अपने तईं सुधारते हुए पवित्र आत्माकी सहायतासे प्रार्थना करते हुए . (२१) अपनेको ईश्वरके प्रेममें रखो और अनन्त जीवनके लिये हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टकी दयाकी आस देखो । (२२) और भेद करते हुए कितनोंपर तो दया करो । (२३) पर कितनोंको आगमेंसे छीनके उस बस्त्रसे भी जो शरीरसे कलंकी किया गया है घिन्न करके डरते हुए बचाओ ।

(२४) जो तुम्हें ठोकरसे बचाये हुए रख सकता है और अपनी महिमाके सन्मुख आह्लाद सहित निर्दोष खड़ा कर सकता है. (२५) उसको अर्थात अद्वैत बुद्धिमान ईश्वर हमारे त्राणकर्त्ताको ऐश्वर्य्य और महिमा औ पराक्रम और अधिकार अभी और सर्व्वदालों भी होवे । आमीन ॥

योहनका प्रकाशित वाक्य।

[पुस्तकका आभाय।]

१ यीशु ख्रीष्टका प्रकाशित वाक्य जो ईश्वरने उसे दिया कि वह अपने दासोंको वह बातें जिनका शीघ्र पूरा होना अवश्य है दिखावे और उसने अपने दूतके हाथ भेजके उसे अपने दास योहनको बताया. (२) जिसने ईश्वरके वचन और यीशु ख्रीष्टकी साक्षीपर अर्थात जो कुछ उसने देखा उस पर साक्षी दिई। (३) जो इस भविष्यद्वाक्यकी बातें पढ़ता है और जो सुनते और इसमेंकी लिखी हुई बातोंको पालन करते हैं सो धन्य क्योंकि समय निकट है।

[आशियाकी सात मंडलियोंके पास योहनकी सात पत्रियोंका आभाय।]

(४) योहन आशियामेंकी सात मंडलियोंको. अनुग्रह और शांति उससे जो है और जो था और जो आनेवाला है और सात आत्माओंसे जो उसके सिंहासनके आगे हैं. (५) और यीशु ख्रीष्टसे तुम्हें मिले. बिश्वासयोग्य साक्षी और मृतकोंमेंसे पहिलौठा और पृथिवीके राजाओंका अध्यक्ष वही है। (६) जिसने हमें प्यार कर अपने लोहूमें हमारे पापोंको धो डाला और हमें अपने पिता ईश्वरके यहां राजा और याजक बनाया उसीकी महिमा औ पराक्रम सदा सर्ब्बदा रहे. आमीन। (७) देखो वह मेघोंपर आता है और हर एक आंख उसे देखेगी हां जिन्होंने उसे बेधा वे भी उसे देखेंगे और पृथिवीके सब कुल उसके लिये छाती पीटेंगे. ऐसा होय आमीन। (८) परमेश्वर ईश्वर वह जो है और जो था और जो आने-

वाला है जो सर्ब्बशक्तिमान है कहता है मैंही अलफा और ओमिगा आदि और अन्त हूं ।

[प्रभु यीशुका योहनको पत्मस टापूमें दर्शन देना ।]

(९) मैं योहन जो तुम्हारा भाई और यीशु ख्रीष्टके क्लेश और राज्य और धीरजमें सम्भागी हूं ईश्वरके बचनके कारण और यीशु ख्रीष्टकी साक्षीके कारण पत्मो नाम टापूमें था । (१०) मैं प्रभुके दिन आत्मामें था और अपने पीछे तुरहीकासा बड़ा शब्द यह कहते सुना . (११) कि मैंही अलफा और ओमिगा पहिला और पिछला हूं और जो तू देखता है उसे पत्रमें लिख और आशियामेंको सात मंडलियोंके पास भेज अर्थात इफिसको और स्मुर्णाको और पर्गामको और थुआतीराको और सार्दीको और फिलादिलफियाको और लाओदिकेयाको ।

(१२) और जिस शब्दने मेरे संग बातें किईं उसे देखनेको मैं पीछे फिरा और पीछे फिरके मैंने सात सोनेको दीवट देखीं । (१३) और उन सात दीवटोंके बीचमें मनुष्यके पुत्रके समान एक पुरुषको देखा जो पांवोंतकका बस्त्र पहिने और छातीपर सुनहला पटुका बांधे हुए था । (१४) उसके सिर और बाल श्वेत ऊनके ऐसे और पालेके ऐसे उजले हैं और उसके नेत्र अग्निकी ज्वालाकी नाईं हैं । (१५) और उसके पांव उत्तम पीतलके समान भट्ठीमें दहकाये हुएसे हैं और उसका शब्द बहुत जलके शब्दकी नाईं है । (१६) और वह अपने दहिने हाथमें सात तारे लिये हुए है और उसके मुखसे चोखा दोधारा खड्ग निकलता है और उसका मुंह ऐसा है जैसा सूर्य्य अपने पराक्रममें चमकता है । (१७) और जब मैंने उसे देखा तब मृतककी नाईं उसके पांवों पास गिर पड़ा और उसने अपना दहिना हाथ मुझपर रखके मुझसे कहा मत

हर मैंही पहिला और पिछला और जीवता हूं । (१८) और मैं मूआ था और देख मैं सदा सर्ब्बदा जीवता हूं आमीन. और मृत्यु और परलोककी कुंजियां मेरे पास हैं। (१९) इसलिये जो कुछ तूने देखा है और जो कुछ होता है और जो कुछ इसके पीछे होनेवाला है सो लिख . (२०) अर्थात सात तारोंका भेद जो तूने मेरे दहिने हाथमें देखे और वे सात सोनेकी दीवटें . सात तारे सातों मंडलियोंके दूत हैं और सात दीवट जो तूने देखीं सातों मंडली हैं ।

[पहिली पत्री इफिसमेंकी मंडलीके पास ।]

२ इफिसमेंकी मंडलीके दूतके पास लिख . जो सातों तारे अपने दहिने हाथमें धरे रहता है जो सातों सोनेकी दीवटोंके बीचमें फिरता है सो यही कहता है । (२) मैं तेरे कार्य्योंको और तेरे परिश्रमको और तेरे धीरजको जानता हूं और यह कि तू बुरे लोगोंको नहीं सह सकता है और जो लोग अपने तईं प्रेरित कहते हैं पर नहीं हैं उन्हें तूने परखा और उन्हें झूठे पाया । (३) और तूने सह लिया और धीरज रखता है और मेरे नामके कारण परिश्रम किया है और नहीं थक गया है । (४) परन्तु मेरे मनमें तेरी ओर यह है कि तूने अपना पहिला प्रेम छोड़ दिया है । (५) सो चेत कर कि तू कहांसे गिरा है और पश्चात्ताप कर और पहिले कार्य्योंको कर नहीं तो मैं शीघ्र तेरे पास आता हूं और जो तू पश्चात्ताप न करे तो मैं तेरी दीवटको उसके स्थानसे हटा देऊंगा । (६) पर तुझे इतना तो है कि तू निकोलावियों के कर्मोंसे घिन्न करता है जिनसे मैं भी घिन्न करता हूं । (७) जिसका कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियोंसे क्या कहता है . जो जय करे उसको मैं जीवनके वृक्षमेंसे जो ईश्वरके स्वर्गलोकमें है खानेको देऊंगा ।

[दूसरी पत्री स्मुर्णामेंकी मंडलीके पास ।]

(८) और स्मुर्णामेंकी मंडलीके दूतके पास लिख. जो पहिला और पिछला है जो मूआ था और जो गया सो यही कहता है। (९) मैं तेरे कार्य्योंको और क्लेशको और दरिद्रताको जानता हूं तौभी तू धनी है और जो लोग अपने तईं यिहूदी कहते हैं और नहीं हैं परन्तु शैतानकी सभा हैं उनकी निन्दाको जानता हूं। (१०) जो दुःख तू भोगेगा उससे कुछ मत डर देख शैतान तुममेंसे कितनोंको बन्दीगृहमें डालेगा कि तुम्हारी परीक्षा किई जाय और तुम्हें दस दिनका क्लेश होगा. तू मृत्युलों विश्वासयोग्य रह और मैं तुझे जीवनका मुकुट देऊंगा। (११) जिसका कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियोंसे क्या कहता है. जो जय करे दूसरी मृत्युसे उसको कुछ हानि नहीं होगी।

[तीसरी पत्री पर्गाममेंकी मंडलीके पास ।]

(१२) और पर्गाममेंकी मंडलीके दूतके पास लिख. जिस पास खड्ग है जो दोधारा और चोखा है सो यही कहता है। (१३) मैं तेरे कार्य्योंको जानता हूं और तू कहां बास करता है अर्थात जहां शैतानका सिंहासन है और तू मेरे नामको धरे रहता है और मेरे विश्वाससे उन दिनोंमें भी नहीं मुकर गया जिनमें अन्तिपा मेरा विश्वासयोग्य साक्षी था जो तुम्हों में जहां शैतान बास करता है तहां घात किया गया। (१४) परन्तु मेरे मनमें तेरी ओर कुछ थोड़ीसी बातें हैं कि वहां तेरे पास कितने हैं जो बलामकी शिक्षाको धारण करते हैं जिसने बालाकको शिक्षा दिई कि इस्रायेलके सन्तानोंके आगे ठोकरका कारण डाले जिस्तें वे मूर्त्तिके आगेके बलिदान खायें और व्यभिचार करें। (१५) वैसेही तेरे पास भी कितने हैं जो निकोलावियोंकी शिक्षाको धारण करते हैं जिस बातसे

मैं घिन्न करता हूं। (१६) पश्चात्ताप कर नहीं तो मैं शीघ्र तेरे पास आता हूं और अपने मुखके खड्गसे उनके साथ लडूंगा। (१७) जिसका कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है. जो जय करे उसको मैं गुप्त मन्नामेंसे खानेको देऊंगा और उसको एक श्वेत पत्थर देऊंगा और उस पत्थरपर एक नया नाम लिखा हुआ है जिसे कोई नहीं जानता है केवल वह जो उसे पाता है।

[चौथी पत्री थुआतीरामेंकी मंडलीके पास।]

(१८) और थुआतीरामेंकी मंडलीके दूतके पास लिख. ईश्वरका पुत्र जिसके नेत्र अग्निकी ज्वालाको नाईं और उसके पांव उत्तम पीतलके समान हैं यही कहता है। (१९) मैं तेरे कार्य्योंको और प्रेमको और सेवकाईको और विश्वासको और तेरे धीरजको जानता हूं और यह कि तेरे पिछले कार्य्य पहिलोंसे अधिक हैं। (२०) परन्तु मेरे मनमें तेरी ओर यह है कि तू उस स्त्री ईजिबलको जो अपने तईं भविष्यद्वक्त्री कहती है मेरे दासोंको सिखाने और भरमाने देता है जिस्तें वे व्यभिचार करें और मूर्त्तिके आगेके बलिदान खायें। (२१) और मैंने उसको समय दिया कि वह पश्चात्ताप करे पर वह अपने व्यभिचारसे पश्चात्ताप करने नहीं चाहती है। (२२) देख मैं उसे खाट पर डालता हूं और जो उसके संग व्यभिचार करते हैं जो वे अपने कर्म्मोंसे पश्चात्ताप न करें तो बड़े क्लेशमें डालूंगा। (२३) और मैं उसके लड़कोंको मार डालूंगा और सब मंडलियां जानेंगी कि मैंही हूं जो लंकको और हृदयोंको जांचता हूं और मैं तुममेंसे हर एकको तुम्हारे कर्म्मोंके अनुसार देऊंगा। (२४) पर मैं तुम्होंसे अर्थात थुआतीरामेंके और और लोगोंसे जितने इस शिक्षाको नहीं रखते हैं और जिन्होंने शैतानकी गंभीर बातोंको जैसा वे कहते हैं

नहीं जाना है कहता हूं कि मैं तुमपर और कुछ भार न डालूंगा । (२५) परन्तु जो तुम्हारे पास है उसे जबलों मैं न आऊं तबलों धरे रहो । (२६) और जो जय करे और मेरे कार्य्योंको अन्तलों पालन करे उसको मैं अन्यदेशियोंपर अधिकार देऊंगा । (२७) और जैसा मैंने अपने पितासे पाया है तैसा वह भी लोहेका दंड लेके उनकी चरवाही करेगा जैसे मिट्टीके बर्त्तन चूर किये जाते हैं । (२८) और मैं उसे भोरका तारा देऊंगा । (२९) जिसका कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियोंसे क्या कहता है ।

[पांचवीं पत्री सार्दीमेंकी मंडलीके पास ।]

३ और सार्दीमेंकी मंडलीके दूतके पास लिख . जिस पास ईश्वरके सातों आत्मा हैं और सातों तारे सो यही कहता है . मैं तेरे कार्य्योंको जानता हूं कि तू जीनेका नाम रखता है और मृतक है । (२) जाग उठ और जो रह गया है और मरा चाहता है उसे स्थिर कर क्योंकि मैंने तेरे कार्य्योंको ईश्वरके आगे पूर्ण नहीं पाया है । (३) सो चेत कर कि तूने कैसा ग्रहण किया और सुना है और उसे पालन करके पश्चात्ताप कर . सो जो तू न जागे तो मैं चोरकी नाईं तुझ पर आ पड़ूंगा और तू कुछ नहीं जानेगा कि मैं कौनसी घड़ी तुझपर आ पड़ूंगा । (४) परन्तु तेरे पास सार्दीमें भी थोड़ेसे नाम हैं जिन्होंने अपना अपना बस्त्र अशुद्ध नहीं किया और वे उजला पहिने हुए मेरे संग फिरेंगे क्योंकि वे योग्य हैं । (५) जो जय करे उसे उजला बस्त्र पहिनाया जायगा और मैं उसका नाम जीवनके पुस्तकमेंसे किसी रीतिसे न मिटाऊंगा पर उसका नाम अपने पिताके आगे और उसके दूतोंके आगे मान लेऊंगा । (६) जिसका कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियोंसे क्या कहता है ।

[छठो पत्री फिलादिलफियामेंकी मंडलीके पास।]

(७) और फिलादिलफियामेंकी मंडलीके दूतके पास लिख. जो पवित्र है जो सत्य है जिस पास दाऊदकी कुंजी है जो खोलता है और कोई बन्द नहीं करता और बन्द करता है और कोई नहीं खोलता सो यही कहता है। (८) मैं तेरे कार्य्योंको जानता हूं. देख मैंने तेरे आगे खुला हुआ द्वार रख दिया है जिसे कोई नहीं बन्द कर सकता है क्योंकि तेरा सामर्थ्य थोड़ासा है और तूने मेरे वचनको पालन किया है और मेरे नामसे नहीं मुकर गया है। (९) देख मैं शैतानकी सभामेंसे अर्थात जो लोग अपने तईं यिहूदी कहते हैं और नहीं हैं परन्तु झूठ बोलते हैं उनमेंसे कितनोंको सोंप देता हूं देख मैं उनसे ऐसा करूंगा कि वे आके तेरे पांवोंके आगे प्रणाम करेंगे और जान लेंगे कि मैंने तुझे प्यार किया है। (१०) तूने मेरे धीरजके वचनको पालन किया इसलिये मैं भी तुझे उस परीक्षाके समयसे बचा रखूंगा जो सारे संसारपर आनेवाला है कि पृथिवीके निवासियोंको परीक्षा करे। (११) देख मैं शीघ्र आता हूं. जो तेरे पास है उसे धरे रह कि कोई तेरा मुकुट न ले ले। (१२) जो जय करे उसे मैं अपने ईश्वर के मन्दिरमें खंभा बनाऊंगा और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा और मैं अपने ईश्वरका नाम और अपने ईश्वरके नगरका नाम अर्थात नई यिरूशलीमका जो स्वर्गमेंसे मेरे ईश्वरके पाससे उतरती है और अपना नया नाम उसपर लिखूंगा। (१३) जिसका कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है।

[सातवीं पत्री लाओदिकेयामेंकी मंडलीके पास।]

(१४) और लाओदिकेयामेंकी मंडलीके दूतके पास लिख. जो आमीन है जो बिश्वासयोग्य और सच्चा साक्षी है जो

ईश्वरकी सृष्टिका आदि है सो यही कहता है । (१५) मैं तेरे कार्य्योंको जानता हूं कि तू न ठंढा है न तप्त है . मैं चाहता हूं कि तू ठंढा अथवा तप्त होता । (१६) सो इसलिये कि तू गुनगुना है और न ठंढा न तप्त है मैं तुझे अपने मुंहमेंसे उगल डालूंगा । (१७) तू जो कहता है कि मैं धनी हूं और धनवान हुआ हूं और मुझे किसी वस्तुका प्रयोजन नहीं है और नहीं जानता है कि तूही दीनहीन और अभागा है और कंगाल और अन्धा और नंगा है . (१८) इसीलिये मैं तुझे परामर्श देता हूं कि आगसे ताया हुआ सोना मुझसे मोल ले जिस्तें तू धनवान होय और उजला वस्त्र जिस्तें तू पहिन लेवे और तेरी नंगाईकी लज्जा न प्रगट किई जाय और अपनी आंखोंपर लगानेके लिये अंजन ले जिस्तें तू देखे । (१९) मैं जिन जिन लोगोंको प्यार करता हूं उनका उलहना और ताड़ना करता हूं इसलिये उद्योगी हो और पश्चात्ताप कर । (२०) देख मैं द्वारपर खड़ा हुआ खटखटाता हूं . यदि कोई मेरा शब्द सुनके द्वार खोले तो मैं उस पास भीतर आऊंगा और उसके संग बियारी खाऊंगा और वह मेरे संग खायगा । (२१) जो जय करे उसे मैं अपने संग अपने सिंहासनपर बैठने देऊंगा जैसा मैंने भी जय किया और अपने पिताके संग उसके सिंहासनपर बैठा । (२२) जिसका कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियोंसे क्या कहता है ।

[ईश्वरके सिंहासनका और स्तुति करनेहारे प्राचीनों और प्राणियोंका दर्शन ।]

४ इसके पीछे मैंने दृष्टि किई और देखो स्वर्गमें एक द्वार खुला हुआ है और वह पहिला शब्द जो मैंने सुना अर्थात मेरे संग बात करनेहारी तुरहीकासा शब्द यह कहता है कि इधर ऊपर आ और मैं वह बातें जिनका इस पीछे पूरा होना अवश्य है तुझे दिखाऊंगा । (२) और तुरन्त मै आत्मामें हुआ

और देखो एक सिंहासन स्वर्गमें धरा था और सिंहासनपर एक बैठा है । (३) और जो बैठा है सो देखनेमें सूर्य्यकान्त मणि और माणिक्यकी नाईं है और सिंहासनकी चहुंओर मेघधनुष है जो देखनेमें मरकतकी नाईं है। (४) और उस सिंहासनकी चहुंओर चौबीस सिंहासन हैं और इन सिंहासनों पर मैंने चौबीस प्राचीनोंको बैठे देखा जो उजला बस्त्र पहिने हुए और अपने अपने सिरपर सोनेके मुकुट दिये हुए थे। (५) और सिंहासनमेंसे बिजलियां और गर्जन और शब्द निकलते हैं और सात अग्निदीपक सिंहासनके आगे जलते हैं जो ईश्वरके सातों आत्मा हैं । (६) और सिंहासनके आगे कांचका समुद्र है जो स्फटिककी नाईं है और सिंहासनके बीचमें और सिंहासनके आसपास चार प्राणी हैं जो आगे और पीछे नेत्रोंसे भरे हैं । (७) और पहिला प्राणी सिंहके समान और दूसरा प्राणी बछड़ेके समान है और तीसरे प्राणीको मनुष्यकासा मुंह है और चौथा प्राणी उड़ते हुए गिद्धके समान है । (८) और चारों प्राणियोंमेंसे एक एकको छः छः पंख हैं और चहुंओर और भीतर वे नेत्रोंसे भरे हैं और वे रात दिन बिश्राम न लेके कहते हैं पवित्र पवित्र पवित्र परमेश्वर ईश्वर सर्व्वशक्तिमान जो था और जो है और जो आनेवाला है। (९) और जब जब वे प्राणी उसकी जो सिंहासनपर बैठा है जो सदा सर्व्वदा जीवता है महिमा औ आदर औ धन्यवाद करते हैं . (१०) तब तब चौबीसों प्राचीन सिंहासनपर बैठनेहारेके आगे गिर पड़ते हैं और उसको जो सदा सर्व्वदा जीवता है प्रणाम करते हैं और अपने अपने मुकुट सिंहासनके आगे डालके कहते हैं : (११) हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तू महिमा औ आदर औ सामर्थ्य लेनेके योग्य है क्योंकि तूने सब बस्तु सृजीं और तेरी इच्छाके कारण वे हुईं और सृजी गईं।

[सात छाप दिये हुए एक पुस्तकका दर्शन और उसके खोलनेका बिचार। मेम्नेका दर्शन और उसका वह पुस्तक लेना और सारी सृष्टिका उसकी स्तुति करना।]

५ और मैंने सिंहासनपर बैठनेहारेके दहिने हाथमें एक पुस्तक देखा जो भीतर और पीठपर लिखा हुआ था और सात छापोंसे उसपर छाप दिई हुई थी। (२) और मैंने एक पराक्रमी दूतको देखा कि बड़े शब्दसे प्रचार करता है यह पुस्तक खोलने और उसकी छापें तोड़नेके योग्य कौन है। (३) और न स्वर्गमें न पृथिवीपर न पृथिवीके नीचे कोई वह पुस्तक खोलने अथवा उसे देखने सकता था। (४) और मैं बहुत रोने लगा इसलिये कि पुस्तक खोलने और पढ़ने अथवा उसे देखनेके योग्य कोई नहीं मिला। (५) और प्राचीनोंमेंसे एकने मुझसे कहा मत रो देख वह सिंह जो यिहूदाके कुलमेंसे है जो दाऊदका मूल है पुस्तक खोलने और उसकी सात छापें तोड़नेके लिये जयवन्त हुआ है।

(६) और मैंने दृष्टि किई और देखो सिंहासनके और चारों प्राणियोंके बीचमें और प्राचीनोंके बीचमें एक मेम्ना जैसा बध किया हुआ खड़ा है जिसके सात सींग और सात नेत्र हैं जो सारी पृथिवीमें भेजे हुए ईश्वरके सातों आत्मा हैं। (७) और उसने आके वह पुस्तक सिंहासनपर बैठनेहारेके दहिने हाथसे ले लिया। (८) और जब उसने पुस्तक लिया तब चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन मेम्नेके आगे गिर पड़े और हर एकके पास बीणा थी और धूपसे भरे हुए सोनेके पियाले जो पवित्र लोगोंकी प्रार्थनाएं हैं। (९) और वे नया गीत गाते हैं कि तू पुस्तक लेने और उसकी छापें खोलनेके योग्य है क्योंकि तू बध किया गया और तूने अपने लोहूसे हमें हर एक कुल और भाषा और लोग और देशमेंसे ईश्वरके लिये मोल लिया। (१०) और हमें हमारे ईश्वरके यहां राजा और याजक बनाया

और हम पृथिवीपर राज्य करेंगे। (११) और मैंने दृष्टि किई और सिंहासनकी और प्राणियोंकी और प्राचीनोंकी चहुंओर बहुत दूतोंका शब्द सुना और वे गिन्तीमें लाखों लाख और सहस्रों सहस्र थे। (१२) और वे बड़े शब्दसे कहते थे मेम्ना जो बध किया गया सामर्थ्य औ धन औ बुद्धि औ शक्ति औ आदर औ महिमा औ धन्यबाद लेनेके योग्य है। (१३) और हर एक सृजी हुई बस्तुको जो स्वर्गमें और पृथिवीपर और पृथिवीके नीचे और समुद्रपर है और सब कुछ जो उनमें है मैंने कहते सुना कि उसका जो सिंहासनपर बैठा है और मेम्नेका धन्यबाद औ आदर औ महिमा औ पराक्रम सदा सर्व्वदा रहे। (१४) और चारों प्राणी आमीन बोले और चौबीसों प्राचीनोंने गिरके उसको जो सदा सर्व्वदा जीवता है प्रणाम किया।

[छः छाप खोलनेका वृत्तान्त।]

६ और जब मेम्नेने छापोंमेंसे एकको खोला तब मैंने दृष्टि किई और चारों प्राणियोंमेंसे एकको जैसे मेघ गर्जनेके शब्दको यह कहते सुना कि आ और देख। (२) और मैंने दृष्टि किई और देखो एक श्वेत घोड़ा है और जो उसपर बैठा है उस पास धनुष है और उसे मुकुट दिया गया और वह जय करता हुआ और जय करनेको निकला।

(३) और जब उसने दूसरी छाप खोली तब मैंने दूसरे प्राणीको यह कहते सुना कि आ और देख। (४) और दूसरा घोड़ा जो लाल था निकला और जो उसपर बैठा था उसको यह दिया गया कि पृथिवीपरसे मेल उठा देवे और कि लोग एक दूसरेको बध करें और एक बड़ा खड्ग उसको दिया गया।

(५) और जब उसने तीसरी छाप खोली तब मैंने तीसरे प्राणीको यह कहते सुना कि आ और देख. और मैंने दृष्टि

किई और देखो एक काला घोड़ा है और जो उसपर बैठा है सो अपने हाथमें तुला लिये हुए है। (६) और मैंने चारों प्राणियोंके बीचमेंसे एक शब्द यह कहते सुना कि सूकीका सेर भर गेहूं और सूकीका तीन सेर जव और तेल औ दाख रसको हानि न करना।

(७) और जब उसने चौथी छाप खोली तब मैंने चौथे प्राणीका शब्द यह कहते सुना कि आ और देख। (८) और मैंने दृष्टि किई और देखो एक पीलासा घोड़ा है और जो उसपर बैठा है उसका नाम मृत्यु है और परलोक उसके संग हो लेता है और उन्हें पृथिवीकी एक चौथाईपर अधिकार दिया गया कि खड्गसे और अकालसे और मरीसे और पृथिवीके वन पशुओंके द्वारासे मार डालें।

(९) और जब उसने पांचवीं छाप खोली तब जो लोग ईश्वरके बचनके कारण और उस साक्षीके कारण जो उनके पास थी बध किये गये थे उनके प्राणोंको मैंने बेदीके नीचे देखा। (१०) और वे बड़े शब्दसे पुकारते थे कि हे स्वामी पवित्र और सत्य कबलों तू न्याय नहीं करता है और पृथिवीके निवासियोंसे हमारे लोहूका पलटा नहीं लेता है। (११) और हर एकको उजला वस्त्र दिया गया और उनसे कहा गया कि जबलों तुम्हारे संगी दास भी और तुम्हारे भाई जो तुम्हारी नाईं बध किये जानेपर हैं पूरे न हों तबलों और थोड़ी बेर बिश्राम करो।

(१२) और जब उसने छठवीं छाप खोली तब मैंने दृष्टि किई और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ और सूर्य्य कम्मलकी नाईं काला हुआ और चांद लोहूकी नाईं हुआ। (१३) और जैसे बड़ी बयारसे हिलाये जानेपर गूलरके वृक्षसे उसके कच्चे गूलर झड़ते हैं तैसे आकाशके तारे पृथिवीपर गिर पड़े। (१४) और

आकाश पत्रकी नाईं जो लपेटा जाता है अलग हो गया और सब पर्ब्बत और टापू अपने अपने स्थानसे हट गये। (१५) और पृथिवीके राजाओं औ प्रधानों औ धनवानों औ सहस्रपतियों औ सामर्थी लोगोंने और हर एक दासने औ हर एक निर्बन्ध ने अपने अपनेको खोहोंमें और पर्ब्बतोंके पत्थरोंके बीचमें छिपाया. (१६) और पर्ब्बतों और पत्थरोंसे बोले हमपर गिरो और हमें सिंहासनपर बैठनेहारेके सन्मुखसे और मेम्नेके क्रोध से छिपाओ। (१७) क्योंकि उसके क्रोधका बड़ा दिन आ पहुंचा है और कौन ठहर सकता है।

[इस्रायेली बिश्वासियोंपर छाप दिये जानेका बर्णन जिस्तें उनपर हानि न होवे।]

७ और इसके पीछे मैंने चार दूतोंको देखा कि पृथिवीके चारों कोनोंपर खड़े हो पृथिवीकी चारों बयारोंको थांभे हैं जिस्तें बयार पृथिवीपर अथवा समुद्रपर अथवा किसी पेड़पर न बहे। (२) और मैंने दूसरे दूतको सूर्य्योदयके स्थानसे चढ़ते देखा जिस पास जीवते ईश्वरकी छाप थी और उसने बड़े शब्दसे उन चार दूतोंसे जिन्हें पृथिवी और समुद्रको हानि करनेका अधिकार दिया गया पुकारके कहा. (३) जबलों हम अपने ईश्वरके दासोंके माथेपर छाप न देवें तबलों पृथिवीको अथवा समुद्रको अथवा पेड़ोंको हानि मत करो। (४) और जिनपर छाप दिई गई मैंने उनकी संख्या सुनी. इस्रायेलके सन्तानोंके समस्त कुलमेंसे एक लाख चवालीस सहस्रपर छाप दिई गई। (५) यिहूदाके कुलमेंसे बारह सहस्रपर छाप दिई गई. रूबेनके कुलमेंसे बारह सहस्रपर. गादके कुलमेंसे बारह सहस्रपर। (६) आशेरके कुलमेंसे बारह सहस्रपर. नप्तालीके कुलमेंसे बारह सहस्रपर. मनस्सीके कुलमेंसे बारह सहस्रपर। (७) शिमियोनके कुलमेंसे बारह सहस्रपर. लेवीके कुलमेंसे बारह सहस्रपर. इस्साखरके

कुलमेंसे बारह सहस्रपर। (८) जिबुलूनके कुलमेंसे बारह सहस्र पर. यूसफके कुलमेंसे बारह सहस्रपर. बिन्यामीनके कुलमेंसे बारह सहस्रपर छाप दिई गई।

[त्राण पाये हुओंकी मंडलीका दर्शन जो बड़े क्लेशमेंसे आये और उनकी परमगतिका बर्णन ।]

(९) इसके पीछे मैंने दृष्टि किई और देखो सब देशों और कुलों और लोगों और भाषाओंमेंसे बहुत लोग जिन्हें कोई नहीं गिन सकता था सिंहासनके आगे और मेम्नेके आगे खड़े हैं जो उजले बस्त्र पहिने हुए और अपने अपने हाथमें खजूर के पत्ते लिये हुए हैं। (१०) और वे बड़े शब्दसे पुकारके कहते हैं त्राणके लिये हमारे ईश्वरकी जो सिंहासनपर बैठा है और मेम्नेकी जय जय होय। (११) और सब दूतगण सिंहासनकी और प्राचीनोंकी और चारों प्राणियोंकी चहुंओर खड़े हुए और सिंहासनके आगे अपने अपने मुंहके बल गिरे और ईश्वरको प्रणाम किया. (१२) और बोले आमीन. हमारे ईश्वरका धन्यबाद औ महिमा औ बुद्धि औ प्रशंसा औ आदर औ सामर्थ्य औ पराक्रम सदा सर्ब्बदा रहे. आमीन।

(१३) इसपर प्राचीनोंमेंसे एकने मुझसे कहा ये जो उजले बस्त्र पहिने हुए हैं कौन हैं और कहांसे आये। (१४) मैंने उससे कहा हे प्रभु आपही जानते हैं. वह मुझसे बोला ये वे हैं जो बड़े क्लेशमेंसे आते हैं और अपने अपने बस्त्रको मेम्नेके लोहूमें धोके उजला किया। (१५) इस कारण वे ईश्वरके सिंहासनके आगे हैं और उसके मन्दिरमें रात और दिन उसकी सेवा करते हैं. और सिंहासनपर बैठनेहारा उनके ऊपर डेरा देगा। (१६) वे फिर भूखे न होंगे और न फिर प्यासे होंगे और न उनपर धूप न कोई तपन पड़ेगी। (१७) क्योंकि मेम्ना जो सिंहासनके बीचमें है उनकी चरवाही करेगा और उन्हें

जलके जीवते सोतोंपर लिवा ले जायगा और ईश्वर उनकी आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा।

[सातवीं छापका खोला जाना और सात दूतोंको सात तुरहीका दिया जाना और एक दूतका ईश्वरके आगे धूप देना। चार दूतोंकी तुरहीके शब्दका वर्णन।]

८ और जब उसने सातवीं छाप खोली तब स्वर्गमें आध घड़ीके अटकल निःशब्दता हो गई। (२) और मैंने उन सात दूतोंको जो ईश्वरके आगे खड़े रहते हैं देखा और उन्हें सात तुरही दिई गईं। (३) और दूसरा दूत आके बेदीके निकट खड़ा हुआ जिस पास सोनेकी धूपदानी थी और उसको बहुत धूप दिया गया जिस्तें वह उसको सोनेकी बेदीपर जो सिंहासनके आगे है सब पवित्र लोगोंकी प्रार्थनाओंके संग मिलावे। (४) और धूपका धूआं पवित्र लोगोंकी प्रार्थनाओंके संग दूतके हाथमेंसे ईश्वरके आगे चढ़ गया। (५) और दूतने वह धूपदानी लेके उसमें बेदीकी आग भरके उसे पृथिवीपर डाला और शब्द और गर्जन और बिजलियां और भुईंडोल हुए। (६) और उन सात दूतोंने जिन पास सातों तुरहियां थीं फूंकनेको अपने तईं तैयार किया॥

(७) पहिले दूतने तुरही फूंकी और लोहूसे मिले हुए ओले और आग हुए और वे पृथिवीपर डाले गये और पृथिवीकी एक तिहाई जल गई और पेड़ोंकी एक तिहाई जल गई और सब हरी घास जल गई।

(८) और दूसरे दूतने तुरही फूंकी और आगसे जलता हुआ एक बड़ा पहाड़सा कुछ समुद्रमें डाला गया और समुद्रकी एक तिहाई लोहू हो गई। (९) और समुद्रमेंकी सृजी हुई वस्तुओंकी एक तिहाई जिन्हें जीव था मर गई और जहाजोंकी एक तिहाई नाश हुई।

(१०) और तीसरे दूतने तुरही फूंकी और एक बड़ा तारा

जो मशालकी नाईं जलता था स्वर्गसे गिरा और नदियोंकी एक तिहाईपर और जलके सोतोंपर पड़ा । (११) और उस तारेका नाम नगदौना कहावता है और एक तिहाई जल नगदौनासा हो गया और बहुतेरे मनुष्य उस जलके कारण मर गये क्योंकि वह कड़वा किया गया ।

(१२) और चौथे दूतने तुरही फूंकी और सूर्य्यकी एक तिहाई और चांदकी एक तिहाई और तारोंकी एक तिहाई मारी गई कि उनकी एक तिहाई अंधियारी हो जाय और दिनकी एक तिहाईलों दिन प्रकाश न होय और वैसेही रात ।

(१३) और मैंने दृष्टि किई और एक दूतको सुनी जो आकाशके बीचमेंसे उड़ता हुआ बड़े शब्दसे कहता था कि जो तीन दूत फूंकनेपर हैं उनकी तुरहीके शब्दोंके कारण जो रह गये हैं पृथिवीके निवासियोंपर सन्ताप सन्ताप सन्ताप होगा ।

[पांचवें दूतकी तुरहीके शब्द और पहिले संतापका वर्णन ।]

९ और पांचवें दूतने तुरही फूंकी और मैंने एक तारेको देखा जो स्वर्गमेंसे पृथिवीपर गिरा हुआ था और अथाह कुंडके कूपकी कुंजी उसको दिई गई । (२) और उसने अथाह कुंडका कूप खोला और कूपमेंसे बड़ी भट्ठीके धूंएकी नाईं धूआं उठा और सूर्य्य और आकाश कूपके धूंएसे अंधियारे हुए । (३) और उस धूंएमेंसे टिड्डियां पृथिवीपर निकल गईं और जैसा पृथिवीके बिच्छूओंको अधिकार होता है तैसा उन्हें अधिकार दिया गया । (४) और उनसे कहा गया कि न पृथिवीकी घासको न किसी हरियालीको न किसी पेड़को हानि करो परन्तु केवल उन मनुष्योंकी जिनके माथेपर ईश्वर की छाप नहीं है । (५) और उन्हें यह दिया गया कि वे उन्हें मार न डालें परन्तु पांच मास उन्हें पीड़ा दिई जाय और

बिच्छू जब मनुष्यको मारता है तब उसको पीड़ा जैसी होती है तैसीही उनको पीड़ा थी। (६) और उन दिनोंमें वे मनुष्य मृत्युको ढूंढ़ेंगे और उसे न पावेंगे और मरनेकी अभिलाषा करेंगे और मृत्यु उनसे भागेगी। (७) और उन टिड्डियोंके आकार युद्धके लिये तैयार किये हुए घोड़ोंके समान थे और उनके सिरोंपर जैसे मुकुट थे जो सोनेकी नाईं थे और उनके मुंह मनुष्योंके मुंहके ऐसे थे। (८) और उन्हें स्त्रियोंके बाल की नाईं बाल था और उनके दांत सिंहोंकेसे थे। (९) और उन्हें लोहेकी झिलमकी नाईं झिलम थी और उनके पंखोंका शब्द बहुत घोड़ोंके रथोंके शब्दके ऐसा था जो युद्धको दौड़ते हों। (१०) और उन्हें पूंछें थीं जो बिच्छूओंके समान थीं और उनकी पूंछोंमें डंक थे और पांच मास मनुष्योंको दुःख देनेका उन्हें अधिकार था। (११) और उनपर एक राजा है अर्थात अथाह कुंडका दूत जिसका नाम इब्रीय भाषामें अबद्दोन है और यूनानीयमें उसका नाम अपलुओन है। (१२) पहिला सन्ताप बीत गया है देखो इस पीछे दो सन्ताप और आते हैं।

[छठवें दूतकी तुरहीके शब्द और दूसरे संतापका वर्णन।]

(१३) और छठवें दूतने तुरही फूंकी और जो सोनेकी बेदी ईश्वरके आगे है उसके चारों सींगोंमेंसे मैंने एक शब्द सुना. (१४) जो छठवें दूतसे जिस पास तुरही थी बोला उन चार दूतोंको जो बड़ी नदी फुरातपर बंधे हैं खोल दे। (१५) और वे चार दूत खोल दिये गये जो उस घड़ी और दिन और मास और बरसके लिये तैयार किये गये थे कि वे मनुष्योंकी एक तिहाईको मार डालें। (१६) और घुड़चढ़ोंकी सेनाओंकी संख्या बीस करोड़ थी और मैंने उनकी संख्या सुनी। (१७) और मैंने दर्शनमें उन घोड़ोंको यूं देखा और उन्हें जो उनपर चढ़े हुए थे कि उन्हें आगकोसी और धूम्रकान्तकोसी और गन्धककी

से झिलम है और घोड़ोंके सिर सिंहोंके सिरोंकी नाईं हैं और उनके मुंहमेंसे आग और धूंआ और गन्धक निकलते हैं। (१८) इन तीनोंसे अर्थात आगसे और धूंएसे और गन्धकसे जो उनके मुंहसे निकलते हैं मनुष्योंकी एक तिहाई मार डाली गई। (१९) क्योंकि घोड़ोंका सामर्थ्य उनके मुंहमें और उनकी पूंछोंमें है क्योंकि उनकी पूंछें सांपोंके समान हैं कि उनके सिर होते हैं और इनसे वे दुःख देते हैं। (२0) और जो मनुष्य रह गये जो इन बिपतोंमें नहीं मार डाले गये उन्होंने अपने हाथोंके कार्य्योंसे पश्चात्ताप भी नहीं किया जिस्तें भूतोंकी और सोने औ चान्दी औ पीतल औ पत्थर औ काठकी मूरतोंकी पूजा न करें जो न देखने न सुनने न फिरने सकती हैं। (२१) और न उन्होंने अपनी नरहिंसाओंसे न अपने टोनोंसे न अपने व्यभिचारसे न अपनी चोरियोंसे पश्चात्ताप किया।

[एक पराक्रमी दूत और छोटी पोथी और सात मेघगर्जनका वर्णन। योहन का उस पोथीको लेके खा जाना।]

१0 और मैंने दूसरे पराक्रमी दूतको स्वर्गसे उतरते देखा जो मेघको ओढ़े था और उसके सिरपर मेघधनुष था और उसका मुंह सूर्य्यकी नाईं और उसके पांव आगके खंभों के ऐसे थे। (२) और वह एक छोटी पोथी खुली हुई अपने हाथमें लिये था और उसने अपना दहिना पांव समुद्रपर और बायां पृथिवीपर रखा. (३) और जैसा सिंह गर्जता है तैसा बड़े शब्दसे पुकारा और जब उसने पुकारा तब सात मेघगर्जनोंने अपने अपने शब्द उच्चारण किये। (४) और जब उन सात गर्जनोंने अपने अपने शब्द उच्चारण किये तब मैं लिखने पर था और मैंने स्वर्गसे एक शब्द सुना जो मुझसे बोला जो बातें उन सात गर्जनोंने कहीं उनपर छाप दे और उन्हें मत लिख। (५) और उस दूतने जिसे मैंने समुद्रपर और पृथिवी

पर खड़े देखा अपना हाथ स्वर्गकी ओर उठाया. (६) और जो सदा सर्ब्बदा जीवता है जिसने स्वर्ग औ जो कुछ उसमें है और पृथिवी औ जो कुछ उसमें है और समुद्र औ जो कुछ उसमें है सृजा उसीकी किरिया खाई कि अब तो बिलंब न होगा. (७) परन्तु सातवें दूतके शब्दके दिनोंमें जब वह तुरही फूंकनेपर होय तब ईश्वरका भेद पूरा हो जायगा जैसा उसने अपने दासोंको अर्थात भविष्यद्वक्ताओंको इसका सुसमाचार सुनाया।

(८) और जो शब्द मैंने स्वर्गसे सुना था वह फिर मेरे संग बात करने लगा और बोला जा जो दूत समुद्रपर और पृथिवीपर खड़ा है उसके हाथमेंकी खुली हुई छोटी पोथी ले ले। (९) और मैंने दूतके पास जाके उससे कहा वह छोटी पोथी मुझे दीजिये. और उसने मुझसे कहा उसे लेके खा जा और वह तेरे पेटको कड़वा करेगी परन्तु तेरे मुंहमें मधुसी मीठी लगेगी। (१०) और मैंने छोटी पोथी दूतके हाथसे ले लिई और उसे खा गया और वह मेरे मुंहमें मधुसी मीठी लगी और जब मैंने उसे खाया था तब मेरा पेट कड़वा हुआ। (११) और वह मुझसे बोला तुझे फिर लोगों और देशों और भाषाओं और बहुत राजाओंके विषयमें भविष्यद्वाक्य कहना होगा।

[दो साक्षियोंका प्रगट होने और मारे जाने और जी उठने और स्वर्गपर चढ़ जानेका वर्णन।]

११ और लग्गीके समान एक नरकट मुझे दिया गया और कहा गया कि उठ ईश्वरके मन्दिरको और बेदीको और उसमेंके भजन करनेहारोंको नाप। (२) और मन्दिरके बाहरके आंगनको बाहर रख और उसे मत नाप क्योंकि वह अन्य-देशियोंको दिया गया है और वे बयालीस मासलों पवित्र

नगरको रौंदेंगे । (३) और मैं अपने दो साक्षियोंको यह देऊंगा कि टाट पहिने हुए एक सहस्र दो सौ साठ दिन भविष्यद्वाक्य कहा करें । (४) येही वे दो जलपाईके वृक्ष और दो दीवट हैं जो पृथिवीके प्रभुके सन्मुख खड़े रहते हैं । (५) और यदि कोई उनको दुःख दिया चाहे तो आग उनके मुंहसे निकलती है और उनके शत्रुओंको भस्म करती है और यदि कोई उनको दुःख दिया चाहे तो अवश्य है कि वह इस रीतिसे मार डाला जाय । (६) इन्हें अधिकार है कि आकाशको बन्द करें जिस्तें उनकी भविष्यद्वाणीके दिनोंमें मेंह न बरसे और उन्हें सब जलपर अधिकार है कि उसे लोहू बनावें और जब जब चाहें तब तब पृथिवीको हर प्रकारकी बिपत्तिसे मारें । (७) और जब वे अपनी साक्षी दे चुकेंगे तब वह पशु जो अथाह कुंडमेंसे उठता है उनसे युद्ध करेगा और उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा । (८) और उनकी लोथें उस बड़े नगरकी सड़कपर पड़ी रहेंगीं जो आत्मिक रीतिसे सदोम और मिसर कहावता है जहां उनका प्रभु भी क्रूशपर चढ़ाया गया । (९) और सब लोगों और कुलों और भाषाओं और देशोंमेंसे लोग उनकी लोथें साढ़े तीन दिनलों देखेंगे और उनकी लोथें कबरोंमें रखी जाने न देंगे । (१०) और पृथिवी के निवासी उनपर आनन्द करेंगे और मगन होंगे और एक दूसरेके पास भेंट भेजेंगे क्योंकि इन दो भविष्यद्वक्ताओंने पृथिवीके निवासियोंको पीड़ा दिई थी । (११) और साढ़े तीन दिनके पीछे ईश्वरकी ओरसे जीवनके आत्माने उनमें प्रवेश किया और वे अपने पांवोंपर खड़े हुए और उनके देखनेहारोंको बड़ा डर लगा । (१२) और उन्होंने स्वर्गसे बड़ा शब्द सुना जो उनसे बोला इधर ऊपर आओ और वे मेघमें स्वर्गपर चढ़ गये और उनके शत्रुओंनें उन्हें देखा । (१३) और उसी घड़ी

बड़ा भुईंडोल हुआ और नगरका दसवां अंश गिर पड़ा और उस भुईंडोलमें सात सहस्र मनुष्य मारे गये और जो रह गये सो भयमान हुए और स्वर्गके ईश्वरका गुणानुबाद किया। (१४) दूसरा सन्ताप बीत गया है देखो तीसरा सन्ताप शीघ्र आता है।

[सातवें दूतकी तुरहीके शब्दका वर्णन।]

(१५) और सातवें दूतने तुरही फूंकी और स्वर्गमें बड़े बड़े शब्द हुए कि जगतका राज्य हमारे प्रभुका और उसके अभिषिक्त जनका हुआ है और वह सदा सर्व्वदा राज्य करेगा। (१६) और चाैबीसों प्राचीन जो ईश्वरके सन्मुख अपने अपने सिंहासनपर बैठते हैं अपने अपने मुंहके बल गिरे और ईश्वरको प्रणाम करके बोले . (१७) हे परमेश्वर ईश्वर सर्व्वशक्तिमान जो है और जो था और जो आनेवाला है हम तेरा धन्य मानते हैं कि तूने अपना बड़ा सामर्थ्य लेके राज्य किया है। (१८) और अन्यदेशी लोग क्रुद्ध हुए और तेरा क्रोध आ पड़ा और मृतकोंका समय पहुंचा कि उनका बिचार किया जाय और कि तू अपने दासों अर्थात भविष्यद्वक्ताओंका और पवित्र लोगोंको और छोटों और बड़ोंको जो तेरे नामसे डरते हैं प्रतिफल देवे और पृथिवीके नाश करनेहारोंका नाश करे। (१९) और स्वर्गमें ईश्वरका मन्दिर खाेला गया और उसके नियमका संदूक उसके मन्दिरमें दिखाई दिया और बिजलियां और शब्द और गर्जन और भुईंडोल हुए और बड़े अाेले पड़े।

[एक स्त्री और उसके बेटे और एक बड़े अजगरका दर्शन। अजगरका स्वर्ग से निकाला जाना और स्त्रीको सताना।]

१२ और एक बड़ा आश्चर्य्य स्वर्गमें दिखाई दिया अर्थात एक स्त्री जो सूर्य्य पहिने है और चांद उसके पांवों तले है और उसके सिरपर बारह तारोंका मुकुट है। (२) और

वह गर्भवती होके चिल्लाती है क्योंकि प्रसवकी पीड़ उसे लगी है और वह जननेको पीड़ित है। (२) और दूसरा आश्चर्य्य स्वर्गमें दिखाई दिया और देखो एक बड़ा लाल अजगर है जिसके सात सिर और दस सींग हैं और उसके सिरोंपर सात राजमुकुट हैं। (४) और उसकी पूंछने आकाशके तारोंकी एक तिहाईको खींचके उन्हें पृथिवीपर डाला और वह अजगर उस स्त्रीके साम्हने जो जना चाहती थी खड़ा हुआ इसलिये कि जब वह जने तब उसके बालकको खा जाय। (५) और वह एक बेटा जनी जो लोहेका दंड लेके सब देशोंके लोगों का चरवाही करनेपर है और उसका बालक ईश्वरके पास और उसके सिंहासनके पास उठा लिया गया। (६) और वह स्त्री जंगलको भाग गई जहां उसका एक स्थान है जो ईश्वर से तैयार किया गया है जिस्तें वे उसे वहां एक सहस्र दो सौ साठ दिनलों पालें।

(७) और स्वर्गमें युद्ध हुआ मीखायेल और उसके दूत अजगर से लड़े और अजगर और उसके दूत लड़े. (८) और प्रबल न हुए और स्वर्गमें उन्हें जगह और न मिली। (९) और वह बड़ा अजगर गिराया गया हां वह प्राचीन सांप जो दियावल और शैतान कहावता है जो सारे संसारका भरमानेहारा है पृथिवीपर गिराया गया और उसके दूत उसके संग गिराये गये। (१०) और मैंने एक बड़ा शब्द सुना जो स्वर्गमें बोला अभी हमारे ईश्वरका चाण औ पराक्रम औ राज्य और उसके अभिषिक्त जनका अधिकार हुआ है क्योंकि हमारे भाइयों का दोषदायक जो रात दिन हमारे ईश्वरके आगे उनपर दोष लगाता था गिराया गया है। (११) और उन्होंने मेम्नेके लोहूके कारण और अपनी साक्षीके बचनके कारण उसपर जय किया और उन्होंने मृत्युलों अपने प्राणोंको प्रिय न जाना।

(१२) इस कारणसे हे स्वर्ग और उसमें बास करनेहारो आनन्द करो . हाय पृथिवी और समुद्रके निवासियो क्योंकि शैतान तुम पास उतरा है और यह जानके कि मेरा समय थोड़ा है बड़ा क्रोध किये है ।

(१३) और जब अजगरने देखा कि मैं पृथिवीपर गिराया गया हूं तब उसने उस स्त्रीको जो वह पुरुष जनी थी सताया । (१४) और बड़े गिद्धके दो पंख स्त्रीको दिये गये इसलिये कि वह जंगलको अपने स्थानको उड़ जाय जहां वह एक समय और दो समय और आधे समयलों सांपकी दृष्टिसे छिपी हुई पाली जाती है । (१५) और सांपने अपने मुंहमेंसे स्त्रीके पीछे नदीकी नाईं जल बहाया कि उसे नदीमें बहा देवे । (१६) और पृथिवीने स्त्रीका उपकार किया और पृथिवीने अपना मुंह खोलके उस नदीको जो अजगरने अपने मुंहमेंसे बहाई थी पी लिया । (१७) और अजगर स्त्रीसे क्रुद्ध हुआ और उसके बंशके जो लोग रह गये जो ईश्वरकी आज्ञाओंको पालन करते और यीशु ख्रीष्टकी साक्षी रखते हैं उनसे युद्ध करनेको चला गया ।

[दस सींगवाले पशुका दर्शन जो समुद्रमेंसे उठा ।]

१३ और मैं समुद्रके बालूपर खड़ा हुआ और एक पशुको समुद्रमेंसे उठते देखा जिसके सात सिर और दस सींग थे और उसके सींगोंपर दस राजमुकुट और उसके सिरोंपर ईश्वरकी निन्दाका नाम । (२) और जो पशु मैंने देखा सो चीतेकी नाईं था और उसके पांव भालूकेसे थे और उसका मुंह सिंहके मुंहके ऐसा था और अजगरने अपना सामर्थ्य और अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार उसको दिया । (३) और मैंने उसके सिरोंमेंसे एकको देखा मानो ऐसा घायल किया गया है कि मरनेपर है फिर उसका प्राणहारक घाव चंगा किया गया और सारी पृथिवीके लोग उस पशुके पीछे

अचंभा करते गये । (४) और उन्होंने अजगरको पूजा किई जिसने पशुको अधिकार दिया और पशुकी पूजा किई और कहा इस पशुके समान कौन है . कौन उससे लड़ सकता है । (५) और उसको बड़ी बड़ी बातें और निन्दाकी बातें बोलनेहारा मुंह दिया गया और बयालीस मासलों युद्ध करनेका अधिकार उसे दिया गया । (६) और उसने ईश्वरके बिरुद्ध निन्दा करनेको अपना मुंह खोला कि उसके नामकी और उसके तंबूकी और स्वर्गमें बास करनेहारोंकी निन्दा करे । (७) और उसको यह दिया गया कि पवित्र लोगोंसे युद्ध करे और उनपर जय करे और हर एक कुल और भाषा और देशपर उसको अधिकार दिया गया । (८) और पृथिवीके सब निवासी लोग जिनके नाम जगतकी उत्पत्तिसे बध किये हुए मेम्नेके जीवनके पुस्तकमें नहीं लिखे गये हैं उसकी पूजा करेंगे । (९) यदि किसीका कान होय तो सुने । (१०) यदि कोई बंधुओंको घेर लेता है तो वही बंधुआईमें जाता है यदि कोई खड्गसे मार डाले तो अवश्य है कि वही खड्गसे मार डाला जाय . यहीं पवित्र लोगोंका धीरज और बिश्वास है ।

[एक दूसरे दो सींगवाले पशुका दर्शन जो पृथिवीमेंसे उठा ।]

(११) और मैंने दूसरे पशुको पृथिवीमेंसे उठते देखा और उसे मेम्नेकी नाईं दो सींग थे और वह अजगरकी नाईं बोलता था । (१२) और वह उस पहिले पशुके सन्मुख उसका सारा अधिकार रखता है और पृथिवीसे और उसके निवासियोंसे उस पहिले पशुकी जिसका प्राणहारक घाव चंगा किया गया पूजा करवाता है । (१३) और वह बड़े बड़े आश्चर्य्य कर्म्म करता है यहांलों कि मनुष्योंके साम्हने स्वर्गमेंसे पृथिवीपर आग भी उतारता है । (१४) और उन आश्चर्य्य कर्म्मोंके कारण जिन्हें पशुके सन्मुख करनेका अधिकार उसे दिया गया वह

पृथिवीके निवासियोंको भरमाता है और पृथिवीके निवासियों से कहता है कि जिस पशुको खड्गका घाव लगा और वह जी गया उसके लिये मूर्त्ति बनाओ। (१५) और उसको यह दिया गया कि पशुकी मूर्त्तिको प्राण देवे जिस्तें पशुकी मूर्त्ति बात भी करे और जितने लोग पशुकी मूर्त्तिकी पूजा न करें उन्हें मार डलवावे। (१६) और छोटे ओ बड़े और धनी ओ कंगाल और निर्बन्ध ओ दास सब लोगोंसे वह ऐसा करता है कि उनके दहिने हाथपर अथवा उनके माथेपर एक छापा दिया जाय. (१७) और कि कोई मोल लेने अथवा बेचने न सके केवल वह जो यह छापा अथवा पशुका नाम अथवा उसके नामकी संख्या रखता हो। (१८) यहां ज्ञान है. जिसे बुद्धि होय सो पशुकी संख्याको जोड़ती करे क्योंकि वह मनुष्यकीसी संख्या है और उसकी संख्या छः सौ छियासठ है।

[सियोन पर्व्वतपर मेम्नेका और पवित्र लोगोंका दर्शन।]

१४ और मैंने दृष्टि किई और देखो मेम्ना सियोन पर्व्वत पर खड़ा है और उसके संग एक लाख चवालीस सहस्र जन जिनके माथेपर उसका नाम और उसके पिताका नाम लिखा है। (२) और मैंने स्वर्गसे एक शब्द सुना जो बहुत जलके शब्दके ऐसा और बड़े गर्जनके शब्दके ऐसा था और वह शब्द जो मैंने सुना वीणा बजानेहारोंकासा था जो अपनी अपनी बीण बजाते हैं। (३) और वे सिंहासनके आगे और चारों प्राणियोंके ओ प्राचीनोंके आगे जैसा एक नया गीत गाते हैं और वह गीत कोई नहीं सीख सकता था केवल वे एक लाख चवालीस सहस्र जन जो पृथिवीसे मोल लिये गये थे। (४) ये वे हैं जो स्त्रियोंके संग अशुद्ध न हुए क्योंकि वे कुमार हैं. ये वे हैं कि जहां कहीं मेम्ना जाता है वे उसके पीछे हो लेते हैं. ये तो ईश्वरके और मेम्नेके लिये एक पहिला फल

मनुष्योंमेंसे मोल लिये गये । (५) और उनके मुंहमें झूठ नहीं पाया गया क्योंकि वे ईश्वरके सिंहासनके आगे निर्दोष हैं ।

[तीन दूतोंका वर्णन जो ईश्वरका विचार प्रचार करते थे ।]

(६) और मैंने दूसरे दूतको आकाशके बीचमेंसे उड़ते देखा जिस पास सनातन सुसमाचार था कि वह पृथिवीके निवासियोंको और हर एक देश और कुल और भाषा और लोगको सुसमाचार सुनावे । (७) और वह बड़े शब्दसे बोलता था कि ईश्वरसे डरो और उसका गुणानुबाद करो क्योंकि उसके विचार करनेका समय पहुंचा है और जिसने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और जलके सोते बनाये उसको प्रणाम करो ।

(८) और दूसरा दूत यह कहता हुआ पीछे हो लिया कि गिर गई बाबुल वह बड़ी नगरी गिर गई है क्योंकि उसने सब देशोंके लोगोंको अपने व्यभिचारके कारण जो कोप होता है तिसकी मदिरा पिलाई है ।

(९) और तीसरा दूत बड़े शब्दसे यह कहता हुआ उनके पीछे हो लिया कि यदि कोई उस पशुकी और उसकी मूर्त्ति की पूजा करे और अपने माथेपर अथवा अपने हाथपर छापा लेवे . (१०) तो वह भी ईश्वरके कोपकी मदिरा जो उसके क्रोधके कटोरेमें निराली ढाली गई है पीयेगा और पवित्र दूतोंके साम्हने और मेम्नेके साम्हने आग और गंधकमें पीड़ित किया जायगा । (११) और उनकी पीड़ाका धूआं सदा सर्व्वदा उठता है और न दिन न रात बिश्राम उनको है जो पशु की और उसकी मूर्त्तिकी पूजा करते हैं और जो कोई उसके नामका छापा लेता है । (१२) यहीं पवित्र लोगोंका धीरज है जो ईश्वरकी आज्ञाओंको और यीशुके बिश्वासको पालन करते हैं ।

(१३) और मैंने स्वर्गसे एक शब्द सुना जो मुझसे बोला यह लिख कि अबसे जो प्रभुमें मरते हैं सो मृतक धन्य हैं .

आत्मा कहता है हां कि वे अपने परिश्रमसे बिश्राम करेंगे परन्तु उनके कार्य्य उनके संग हो लेते हैं ।

[पृथिवीके अनाजको काटनी और दाख लताके फलका प्रयोजन ।]

(१४) और मैंने दृष्टि किई और देखो एक उजला मेघ है और उस मेघपर मनुष्यके पुत्रके समान एक बैठा है जो अपने सिरपर सोनेका मुकुट और अपने हाथमें चोखा हंसुआ लिये हुए है। (१५) और दूसरा दूत मंदिरमेंसे निकला और बड़े शब्दसे पुकारके उससे जो मेघपर बैठा था बोला अपना हंसुआ लगाके लवनी कर क्योंकि तेरे लिये लवनेका समय पहुंचा है इसलिये कि पृथिवीकी खेती पक चुकी है । (१६) और जो मेघपर बैठा था उसने पृथिवीपर अपना हंसुआ लगाया और पृथिवीकी लवनी किई गई ।

(१७) और दूसरा दूत स्वर्गमेंके मंदिरमेंसे निकला और उस पास भी चोखा हंसुआ था । (१८) और दूसरा दूत जिसे आगपर अधिकार था बेदीमेंसे निकला और जिस पास चोखा हंसुआ था उससे बहुत पुकारकर बोला अपना चोखा हंसुआ लगा और पृथिवीकी दाख लताके गुच्छे काट ले क्योंकि उसके दाख पक गये हैं । (१९) और दूतने पृथिवीपर अपना हंसुआ लगाया और पृथिवीकी दाख लताका फल काट लिया और उसे ईश्वरके कोपके बड़े रसके कुंडमें डाला । (२०) और रसके कुंडका रौंदन नगरके बाहर किया गया और रसके कुंडमेंसे घोड़ोंकी लगामतक लोहू एक सौ कोशतक बह निकला ।

[सातों पिछली विपत्तें लिये हुए सात दूतोंका दर्शन और जयवन्त पवित्र लोगोंका गीत ।]

१५ और मैंने स्वर्गमें दूसरा एक चिन्ह बड़ा और अद्भुत देखा अर्थात सात दूत जिनके पास सात बिपत्ति थीं जो पिछली थीं क्योंकि उनमें ईश्वरका कोप पूरा किया गया ।

(२) और मैंने जैसा एक आगसे मिले हुए कांचके समुद्रको और पशुपर और उसकी मूर्त्तिपर और उसके छापेपर और उसके नामकी संख्यापर जय करनेहारोंको उस कांचके समुद्रके निकट ईश्वरकी बीणें लिये हुए खड़े देखा। (३) और वे ईश्वरके दास मूसाका गीत और मेम्नेका गीत गाते हैं कि हे सर्व्वशक्ति-मान ईश्वर परमेश्वर तेरे कार्य्य बड़े और अद्भुत हैं. हे पवित्र लोगोंके राजा तेरे मार्ग यथार्थ और सच्चे हैं। (४) हे परमेश्वर कौन तुझसे नहीं डरेगा और तेरे नामकी स्तुति नहीं करेगा. क्योंकि केवल तूही पवित्र है और सब देशोंके लोग आके तेरे आगे प्रणाम करेंगे क्योंकि तेरे बिचार प्रगट किये गये हैं।

(५) और इसके पीछे मैंने दृष्टि किई और देखो स्वर्गमें साक्षीके तंबूका मन्दिर खोला गया। (६) और सातों दूत जिन पास सातों बिपतें थीं शुद्ध और चमकता हुआ बस्त्र पहिने हुए और छातीपर सुनहले पटुके बांधे हुए मन्दिरमेंसे निकले। (७) और चारों प्राणियोंमेंसे एकने उन सात दूतोंको ईश्वरके जो सदा सर्व्वदा जीवता है कोपसे भरे हुए सात सोनेके पियाले दिये। (८) और ईश्वरकी महिमासे और उस के सामर्थ्यसे मंदिर धूंएसे भर गया और जबलों उन सात दूतोंकी सातों बिपतें समाप्त न हुईं तबलों कोई मंदिरमें प्रवेश न कर सका।

[ईश्वरके कोपके सातों पियालोंका उंडेला जाना।]

१६ और मैंने मंदिरमेंसे एक बड़ा शब्द सुना जो उन सात दूतोंसे बोला जाओ और ईश्वरके कोपके सात पियाले पृथिवीपर उंडेलो।

(२) और पहिलेने जाके अपना पियाला पृथिवीपर उंडेला और उन मनुष्योंको जिनपर पशुका छापा था और जो उसकी मूर्त्तिकी पूजा करते थे बुरा और दुःखदाई घाव हुआ।

(३) और दूसरे दूतने अपना पियाला समुद्रपर उंडेला और वह मृतककासा लोहू हो गया और समुद्रमें हर एक जीवता प्राणी मर गया।

(४) और तीसरे दूतने अपना पियाला नदियोंपर और जलके सोतोंपर उंडेला और वे लोहू हो गये। (५) और मैंने जलके दूतको यह कहते सुना कि हे परमेश्वर जो है और जो था और जो पवित्र है तू धर्म्मी है कि तूने यह न्याय किया है। (६) क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों और भविष्यद्वक्ताओंका लोहू बहाया और तूने उन्हें लोहू पीनेको दिया है क्योंकि वे इस योग्य हैं। (७) और मैंने वेदीमेंसे यह शब्द सुना कि हां हे सर्व्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर तेरे विचार सच्चे और यथार्थ हैं।

(८) और चौथे दूतने अपना पियाला सूर्य्यपर उंडेला और मनुष्योंको आगसे झुलसानेका अधिकार उसे दिया गया। (९) और मनुष्य बड़ी तपनसे झुलसाये गये और ईश्वरके नामकी निन्दा किई जिसे इन विपतोंपर अधिकार है और उसका गुणानुबाद करनेके लिये पश्चात्ताप न किया।

(१०) और पांचवें दूतने अपना पियाला पशुके सिंहासनपर उंडेला और उसका राज्य अंधियारा हो गया और लोगोंने क्लेशके मारे अपनी अपनी जीभ चबाई। (११) और उन्होंने अपने क्लेशोंके कारण और अपने घावोंके कारण स्वर्गके ईश्वरकी निन्दा किई और अपने अपने कर्म्मोंसे पश्चात्ताप न किया।

(१२) और छठवें दूतने अपना पियाला बड़ी नदी फुरात पर उंडेला और उसका जल सूख गया जिस्तें सूर्य्योदयकी दिशाके राजाओंका मार्ग तैयार किया जाय। (१३) और मैंने अजगरके मुंहमेंसे और पशुके मुंहमेंसे और झूठे भविष्यद्वक्ताके मुंहमेंसे निकले हुए तीन अशुद्ध आत्माओंको देखा जो मेंडकोंकी नाईं थे। (१४) क्योंकि वे भूतोंके आत्मा हैं जो

आश्चर्य्य कर्म्म करते हैं और जो सारे संसारके राजाओंके पास जाते हैं कि उन्हें सर्व्वशक्तिमान ईश्वरके उस बड़े दिनके युद्धके लिये एकट्ठे करें। (१५) देखो मैं चोरकी नाईं आता हूं. धन्य वह जो जागता रहे और अपने वस्त्रको रक्षा करे जिस्तें वह नंगा न फिरे और लोग उसकी लज्जा न देखें। (१६) और उन्होंने उन्हें उस स्थानपर एकट्ठे किया जो इब्रीय भाषामें हर्मगिद्दो कहावता है।

(१७) और सातवें दूतने अपना पियाला आकाशमें उंडेला और स्वर्गके मन्दिरमेंसे अर्थात सिंहासनसे एक बड़ा शब्द निकला कि हो चुका। (१८) और शब्द और गर्जन और बिजलियां हुईं और बड़ा भुईंडोल हुआ ऐसा कि जबसे मनुष्य पृथिवी पर हुए तबसे वैसा और इतना बड़ा भुईंडोल न हुआ। (१९) और वह बड़ा नगर तीन खंड हो गया और देश देशके नगर गिर पड़े और ईश्वरने बड़ी बाबुलको स्मरण किया कि अपने क्रोधकी जलजलाहटकी मदिराका कटोरा उसे देवे। (२०) और हर एक टापू भाग गया और कोई पर्व्वत न मिले। (२१) और बड़े ओले जैसे मन मन भरके स्वर्गसे मनुष्योंपर पड़े और ओलोंकी विपत्तिके कारण मनुष्योंने ईश्वरकी निन्दा किई क्योंकि उससे निपट बड़ी बिपत्ति हुई।

[बाबुलके नाश होनेका वर्णन। बड़ी वेश्याका दर्शन और उस पशुका जो उसका वाहन था।]

१७ और जिन सात दूतोंके पास वे सात पियाले थे उनमेंसे एकने आके मेरे संग बात कर मुझसे कहा आ मैं तुझे उस बड़ी वेश्याका दंड दिखाऊंगा जो बहुत जलपर बैठी है. (२) जिसके संग पृथिवीके राजाओंने व्यभिचार किया है और पृथिवीके निवासी लोग उसके व्यभिचारकी मदिरासे मतवाले हुए हैं। (३) और वह आत्मामें मुझे जंगलमें ले

गया और मैंने एक स्त्रीको देखा कि लाल पशुपर बैठी थी जो ईश्वरकी निन्दाके नामोंसे भरा था और जिसके सात सिर और दस सींग थे। (४) और वह स्त्री बैजनी और लाल बस्त्र पहिने थी और सोने और बहुमूल्य पत्थर और मोतियों से बिभूषित थी और उसके हाथमें एक सोनेका कटोरा था जो घिनित बस्तुओंसे और उसके व्यभिचारकी अशुद्ध बस्तुओं से भरा था। (५) और उसके माथेपर एक नाम लिखा था अर्थात भेद . बड़ी बाबुल . पृथिवीकी वेश्याओं और घिनित बस्तुओंकी माता। (६) और मैंने उस स्त्रीको पवित्र लोगोंके लोहूसे और यीशुके साक्षियोंके लोहूसे मतवाली देखी और उसे देखके मैंने बड़ा आश्चर्य्य करके अचंभा किया।

(७) और दूतने मुझसे कहा तूने क्यों अचंभा किया . मैं स्त्रीका और उस पशुका भेद जो उसका वाहन है जिसके सात सिर और दस सींग हैं तुझसे कहूंगा। (८) जो पशु तूने देखा सो था और नहीं है और अथाह कुंडमेंसे उठने और बिनाशको पहुंचनेपर है और पृथिवीके निवासी लोग जिनके नाम जगतकी उत्पत्तिसे जीवनके पुस्तकमें नहीं लिखे गये हैं पशुको देखके कि वह था और नहीं है और आवेगा अचंभा करेंगे। (९) यहीं वह मन है जिसे बुद्धि है . वे सात सिर सात पर्ब्बत हैं जिनपर स्त्री बैठी है। (१०) और सात राजा हैं पांच गिर गये हैं और एक है और दूसरा अबलों नहीं आया है और जब आवेगा तब उसे थोड़ी बेर रहने होगा। (११) और वह पशु जो था और नहीं है आप भी आठवां है और सातोंमेंसे है और बिनाशको पहुंचता है। (१२) और जो दस सींग तूने देखे सो दस राजा हैं जिन्होंने अबलों राज्य नहीं पाया है परन्तु पशुके संग एक घड़ी राजाओंकी नाईं अधिकार पाते हैं। (१३) इन्होंका एकही परामर्श है और वे

अपना अपना सामर्थ्य और अधिकार पशुको देंगे। (१४) ये तो मेम्ने से युद्ध करेंगे और मेम्ना उनपर जय करेगा क्योंकि वह प्रभुओंका प्रभु और राजाओंका राजा है और जो उसके संग हैं सो बुलाये हुए और चुने हुए और बिश्वासयोग्य हैं। (१५) फिर मुझसे बोला जो जल तूने देखा जहां बेश्या बैठी है सो बहुत बहुत लोग और देश और भाषा हैं। (१६) और वे दस सींग जो तूने देखे और पशु येही बेश्यासे बैर करेंगे और उसे उजाड़ेंगे और नंगी करेंगे और उसका मांस खायेंगे और उसे आगमें जलायेंगे। (१७) क्योंकि ईश्वरने उनके मनमें यह दिया है कि वे उसका परामर्श पूरा करें और एक परामर्श रखें और जबलों ईश्वरके वचन पूरे न होवें तबलों अपना अपना राज्य पशुको देवें। (१८) और जो स्त्री तूने देखी सो वह बड़ी नगरी है जो पृथिवीके राजाओंपर राज्य करती है।

[बाबुलके नाश होनेका वर्णन। पृथिवीके राजाओं और ब्योपारियोंका बिलपना।]

१८ और इसके पीछे मैंने एक दूतको स्वर्गसे उतरते देखा जिसका बड़ा अधिकार था और पृथिवी उसके तेजसे प्रकाशमान हुई। (२) और उसने पराक्रमसे बड़े शब्द से पुकारा कि गिर गई बड़ी बाबुल गिर गई है और भूतों का निवास और हर एक अशुद्ध आत्माका बन्दीगृह और हर एक अशुद्ध और घिनित पंछीका पिंजरा हुई है। (३) क्योंकि सब देशोंके लोगोंने उसके ब्यभिचारके कारण जो कोप होता है तिसकी मदिरा पिई है और पृथिवीके राजाओंने उसके संग ब्यभिचार किया है और पृथिवीके ब्योपारी लोग उसके सुख बिलासकी बहुताईसे धनवान हुए हैं।

(४) और मैंने स्वर्गसे दूसरा शब्द सुना कि हे मेरे लोगो उसमेंसे निकल आओ कि तुम उसके पापोंमें भागी न होओ

और कि उसकी बिपतोंमेंसे कुछ तुमपर न पड़े। (५) क्योंकि उसके पाप स्वर्गलों पहुंचे हैं और ईश्वरने उसके कुकर्म्मोंको स्मरण किया है। (६) जैसा उसने तुम्हें दिया है तैसा उसको भर देओ और उसके कर्म्मोंके अनुसार दूना उसे दे देओ. जिस कटोरेमें उसने भर दिया उसीमें उसके लिये दूना भर देओ। (७) जितनी उसने अपनी बड़ाई किई और सुख बिलास किया उतनी उसको पीड़ा और शोक देओ क्योंकि वह अपने मनमें कहती है मैं राणी हो बैठी हूं और बिधवा नहीं हूं और शोक किसी रीतिसे न देखूंगी। (८) इस कारण एकही दिनमें उसकी बिपतें आ पड़ेंगीं अर्थात मृत्यु और शोक और अकाल और वह आगमें जलाई जायगी क्योंकि परमेश्वर ईश्वर जो उसका बिचारकर्त्ता है शक्तिमान है। (९) और पृथिवी के राजा लोग जिन्होंने उसके संग व्यभिचार और सुख बिलास किया जब उसके जलनेका धूआं देखेंगे तब उसके लिये रोयेंगे और छाती पीटेंगे. (१०) और उसकी पीड़ाके डरके मारे दूर खड़े हो कहेंगे हाय हाय हे बड़ी नगरी बाबुल हे दृढ़ नगरी कि एकही घड़ीमें तेरा बिचार आ पड़ा है। (११) और पृथिवी के व्योपारी लोग उसपर रोयेंगे औ कलपेंगे क्योंकि अब तो कोई उनके जहाजोंकी बोझाई नहीं मोल लेगा. (१२) अर्थात सोने औ रूपे औ बहुमूल्य पत्थर औ मोती औ मलमल औ बैजनी बस्त्र औ पाटम्बर औ लाल बस्त्रकी बोझाई और हर प्रकारका सुगंध काठ और हर प्रकारका हाथीदांतका पात्र और बहुमूल्य काठके औ पीतल औ लोहे औ मरमरके सब भांतिके पात्र. (१३) और दारचीनी औ इलायची औ धूप औ सुगंध तेल औ लोबान औ मदिरा औ तेल औ चोखा पिसान औ गेहूं औ ढोर औ भेड़ें और घोड़ों औ रथों औ दासोंकी बोझाई और मनुष्योंके प्राण। (१४) और तेरे प्राणके बांछित

फल तेरे पाससे जाते रहे और सब चिकनी और भड़कीली वस्तु तेरे पाससे नष्ट हुई हैं और तू उन्हें फिर कभी न पावेगा । (१५) इन वस्तुओंके ब्योपारी लोग जो उससे धनवान हो गये उसकी पीड़ाके डरके मारे दूर खड़े होंगे और रोते औ कलपते हुए कहेंगे . (१६) हाय हाय यह बड़ी नगरी जो मलमल और बैजनी औ लाल बस्त्र पहिने थी और सोने और बहुमूल्य पत्थर और मोतियोंसे बिभूषित थी कि एकही घड़ीमें इतना बड़ा धन बिला गया है । (१७) और हर एक मांझी और जहाजोंपरके सब लोग और मल्लाह लोग और जितने लोग समुद्रपर कमाते हैं सब दूर खड़े हुए . (१८) और उसके जलने का धूआं देखते हुए पुकारके बोले कौन नगर इस बड़ी नगरी के समान है । (१९) और उन्होंने अपने अपने सिरपर धूल डाली और रोते औ कलपते हुए पुकारके बोले हाय हाय यह बड़ी नगरी जिसके द्वारा सब लोग जिनके समुद्रमें जहाज थे उसके बहुमूल्य द्रब्यसे धनवान हो गये कि एकही घड़ीमें वह उजड़ गई है । (२०) हे स्वर्ग और हे पवित्र प्रेरितो और भविष्यद्वक्ता लोगो उसपर आनन्द करो क्योंकि ईश्वरने तुम्हारे लिये उससे पलटा लिया है ।

(२१) और एक पराक्रमी दूतने बड़े चक्कीके पाटकी नाईं एक पत्थरको लेके समुद्रमें डाला और कहा यूं बरियाईसे बड़ी नगरी बाबुल गिराई जायगी और फिर कभी न मिलेगी । (२२) और वीणा बजानेहारों और बजनियों और बंशी बजानेहारों और तुरही फूंकनेहारोंका शब्द फिर कभी तुझमें सुना न जायगा और किसी उद्यमका कोई कारीगर फिर कभी तुझमें न मिलेगा और चक्कीके चलनेका शब्द फिर कभी तुझमें सुना न जायगा । (२३) और दीपककी ज्योति फिर कभी तुझमें न चमकेगी और दूल्हे औ दुल्हिनका शब्द फिर कभी तुझमें सुना

न जायगा क्योंकि तेरे ब्योपारी लोग पृथिवीके प्रधान थे इस लिये कि तेरे टोनेसे सब देशोंके लोग भरमाये गये। (२४) और भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगोंका लोहू और जो जो लोग पृथिवीपर बध किये गये थे सभोंका लोहू उसीमें पाया गया।

[बाबुलके नाश होनेका बर्णन। पवित्र लोगोंका स्वर्गमें धन्यवाद करना।]

१९ और इसके पीछे मैंने स्वर्गमें बहुत लोगोंका बड़ा शब्द सुना कि हलिलूयाह परमेश्वर हमारे ईश्वरको त्राणके लिये जय जय औ महिमा औ आदर औ सामर्थ्य होय। (२) इस लिये कि उसके बिचार सच्चे और यथार्थ हैं क्योंकि उसने बड़ी बेश्याका जो अपने ब्यभिचारसे पृथिवीको भ्रष्ट करती थी बिचार किया है और अपने दासोंके लोहूका पलटा उस से लिया है। (३) और वे दूसरी बार हलिलूयाह बोले और उसका धूआ सदा सर्ब्बदालों उठता है। (४) और चौबीसों प्राचीन और चारो प्राणी गिर पड़े और ईश्वरको जो सिंहासनपर बैठा है प्रणाम करके बोले आमीन हलिलूयाह। (५) और एक शब्द सिंहासनसे निकला कि हे हमारे ईश्वरके सब दासो और उससे डरनेहारो क्या छोटे क्या बड़े सब उस की स्तुति करो। (६) और मैंने जैसे बहुत लोगोंका शब्द और जैसे बहुत जलका शब्द और जैसे प्रचंड गर्जनोंका शब्द वैसा शब्द सुना कि हलिलूयाह परमेश्वर ईश्वर सर्ब्बशक्तिमानने राज्य लिया है। (७) आओ हम आनन्दित और आह्लादित होवें और उसका गुणानुबाद करें क्योंकि मेम्नेका बिवाह आ पहुंचा है और उसकी स्त्रीने अपनेको तैयार किया है। (८) और उसको यह दिया गया कि शुद्ध और उजली मलमल पहिने क्योंकि वह मलमल पवित्र लोगोंका धर्म्म है। (९) और वह मुझसे बोला यह लिख कि धन्य वे जो मेम्नेके बिवाहके भोजमें बुलाये गये हैं। फिर मुझसे बोला ये बचन ईश्वरके

सत्य बचन हैं। (१०) और मैं उसको प्रणाम करनेके लिये उस के चरणोंके आगे गिर पड़ा और उसने मुझसे कहा देख ऐसा मत कर मैं तेरा और तेरे भाइयोंका जिन पास यीशुकी साक्षी है संगी दास हूं . ईश्वरको प्रणाम कर क्योंकि यीशुकी साक्षी भविष्यद्वाणीका आत्मा है ।

[प्रभु यीशु खीष्टका पशुको और झूठे भविष्यद्वक्ताको जीतना और आगको झीलमें डालना ।]

(११) और मैंने स्वर्गको खुले देखा और देखो एक श्वेत घोड़ा है और जो उसपर बैठा है सो बिश्वासयोग्य और सच्चा कहावता है और वह धर्म्मसे बिचार और युद्ध करता है । (१२) उसके नेच आगकी ज्वालाकी नाईं हैं और उसके सिरपर बहुतसे राजमुकुट हैं और उसका एक नाम लिखा है जिसे और कोई नहीं केवल वही आप जानता है। (१३) और वह लोहूमें डुबोया हुआ बस्त्र पहिने है और उसका नाम यूं कहावता है कि ईश्वरका बचन । (१४) और स्वर्गमेंकी सेना श्वेत घोड़ोंपर चढ़े हुए उजली और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे हो लेती थी। (१५) और उसके मुंहसे चोखा खड्ग निकलता है कि उससे वह देशोंके लोगोंको मारे और वही लोहेका दंड लेके उनकी चरवाही करेगा और वही सर्व्वशक्तिमान ईश्वरके क्रोधकी जलजलाहटकी मदिराके कुंडमें रौंदन करता है। (१६) और उसके बस्त्रपर और जांघपर उसका यह नाम लिखा है कि राजाओंका राजा और प्रभुओंका प्रभु ।

(१७) और मैंने एक दूतको सूर्य्यमें खड़े हुए देखा और उसने बड़े शब्दसे पुकारके सब पंछियोंसे जो आकाशके बीच मेंसे उड़ते हैं कहा आओ ईश्वरकी बड़ी बियारीके लिये एकट्ठे होओ . (१८) जिस्तें तुम राजाओंका मांस और सहस्रपतियों का मांस और पराक्रमी पुरुषोंका मांस और घोड़ोंका और

उनपर चढ़नेहारोंका मांस और क्या निर्बन्ध क्या दास क्या छोटे क्या बड़े सब लोगोंका मांस खाओ। (१९) और मैंने पशु को और पृथिवीके राजाओंको और उनकी सेनाओंको घोड़ेपर चढ़नेहारेसे और उसकी सेनासे युद्ध करनेको एकट्ठे किये हुए देखा। (२०) और पशु पकड़ा गया और उसके संग वह झूठा भविष्यद्वक्ता जिसने उसके सन्मुख आश्चर्य्य कर्म्म किये जिनके द्वारा उसने उन लोगोंको भरमाया जिन्होंने पशुका छापा लिया और जो उसकी मूर्त्तिकी पूजा करते थे. ये दोनों जीते जो उस आगकी झीलमें जो गंधकसे जलती है डाले गये। (२१) और जो लोग रह गये सो घोड़ेपर चढ़नेहारेके खड्गसे जो उसके मुंहसे निकलता है मार डाले गये और सब पंछी उनके मांससे तृप्त हुए।

[सहस्र बरसलों शैतानका बंधा रहना और प्रभु यीशु खीष्टके पवित्र साक्षिओंका उसके संग राज्य करना।]

२० और मैंने एक दूतको स्वर्गसे उतरते देखा जिस पास अथाह कुंडकी कुंजी थी और उसके हाथमें बड़ी जंजीर थी। (२) और उसने अजगरको अर्थात प्राचीन सांपको जो दियाबल और शैतान है पकड़के उसे सहस्र बरसलों बांध रखा. (३) और उसको अथाह कुंडमें डाला और बन्द करके उसके ऊपर छाप दिई जिस्तें वह जबलों सहस्र बरस पूरे न हों तबलों फिर देशोंके लोगोंको न भरमावे और इस पीछे उस को थोड़ी बेरलों छूट जाने होगा।

(४) और मैंने सिंहासनको देखा और उनपर लोग बैठे थे और उन लोगोंको बिचार करनेका अधिकार दिया गया और जिन लोगोंके सिर यीशुकी साक्षीके कारण और ईश्वर के बचनके कारण काटे गये थे और जिन्होंने न पशुकी न उसकी मूर्त्तिकी पूजा किई और अपने अपने माथेपर और अपने

अपने हाथपर छापा न लिया मैंने उनके प्राणोंको देखा और वे जी गये और ख्रीष्टके संग सहस्र बरस राज्य किया (५) परन्तु और सब मृतक लोग जबलों सहस्र बरस पूरे न हुए तबलों नहीं जी गये. यह तो पहिला पुनरुत्थान है। (६) जो पहिले पुनरुत्थानका भागी है सो धन्य और पवित्र है. इन्होंपर दूसरी मृत्युका कुछ अधिकार नहीं है परन्तु वे ईश्वर के और ख्रीष्टके याजक होंगे और सहस्र बरस उसके संग राज्य करेंगे।

[शैतानका फिर लोगोंको भरमाना और प्रभुसे लड़ना और सनातनलों दंड पाना ।]

(७) और जब सहस्र बरस पूरे होंगे तब शैतान अपने बन्दीगृहसे छूट जायगा. (८) और चहुं खूंट पृथिवीके देशोंके लोगोंको अर्थात जूज और माजूजको जिनकी संख्या समुद्रके बालूकी नाईं होगी भरमानेको निकलेगा कि उन्हें युद्धके लिये एकट्ठे करे। (९) और वे पृथिवीकी चौड़ाईपर चढ़ आये और पवित्र लोगोंकी छावनी और प्रिय नगरको घेर लिया और ईश्वरकी ओरसे आग स्वर्गसे उतरी और उन्हें भस्म किया। (१०) और उनका भरमानेहारा शैतान आग और गंधकको झीलमें जिसमें पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता हैं डाला गया और वे रात दिन सदा सर्व्वदा पीड़ित किये जायेंगे।

[महाविचारका वर्णन ।]

(११) और मैंने एक बड़े श्वेत सिंहासनको और उसपर बैठनेहारेको देखा जिसके सन्मुखसे पृथिवी और आकाश भाग गये और उनके लिये जगह न मिली। (१२) और मैंने क्या छोटे क्या बड़े सब मृतकोंको ईश्वरके आगे खड़े देखा और पुस्तक खोले गये और दूसरा पुस्तक अर्थात जीवनका पुस्तक खोला गया और पुस्तकोंमें लिखी हुई बातोंसे मृतकोंका बिचार उनके कर्म्मोंके अनुसार किया गया। (१३) और समुद्रने उन

मृतकोंको जो उसमें थे दे दिया और मृत्यु और परलोकने उन मृतकोंको जो उनमें थे दे दिया और उनमेंसे हर एकका विचार उसके कर्म्मोंके अनुसार किया गया। (१४) और मृत्यु और परलोक आगकी झीलमें डाले गये. यह तो दूसरी मृत्यु है। (१५) और जिस किसीका नाम जीवनके पुस्तकमें लिखा हुआ न मिला वह आगकी झीलमें डाला गया।

[नये स्वर्ग और नई पृथिवीका दर्शन।]

२१ और मैंने नये आकाश और नई पृथिवीको देखा क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथिवी जाते रहे और समुद्र और न था। (२) और मुझ योहनने पवित्र नगर नई यिरूशलीमको जैसी दूल्हिन जो अपने स्वामीके लिये सिंगार किई हुई है वैसी तैयार किई हुई स्वर्गसे ईश्वरके पाससे उतरते देखा। (३) और मैंने स्वर्गसे एक बड़ा शब्द सुना कि देखो ईश्वरका डेरा मनुष्योंके साथ है और वह उन के संग बास करेगा और वे उसके लोग होंगे और ईश्वर आप उनके साथ उनका ईश्वर होगा। (४) और ईश्वर उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा और मृत्यु और न होगी और न शोक न बिलाप न क्लेश और होगा क्योंकि अगली बातें जाती रही हैं। (५) और सिंहासनपर बैठनेहारेने कहा देखो मैं सब कुछ नया करता हूं. फिर मुझसे बोला लिख ले क्योंकि ये बचन सत्य और बिश्वासयोग्य हैं। (६) और उसने मुझसे कहा हो चुका. मैं अलफा और ओमिगा आदि और अन्त हूं. जो प्यासा है उसको मैं जीवनके जलके सोते मेंसे सेंतमेंत देऊंगा। (७) जो जय करे सो सब बस्तुओंका अधिकारी होगा और मैं उसका ईश्वर होगा और वह मेरा पुत्र होगा। (८) परन्तु भयमानों और अबिश्वासियों और घिनौनों और हत्यारों और ब्यभिचारियों और टोन्हों और

मूर्त्तिपूजकों और सब झूठे लोगोंका भाग उन्हें उस झीलमें मिलेगा जो आग और गंधकसे जलती है. यही दूसरी मृत्यु है।

[नई यिरूशलीमका दर्शन ।]

(९) और जिन सात दूतोंके पास सात पिछली बिपतोंसे भरे हुए सातों पियाले थे उनमेंसे एक मेरे पास आया और मेरे संग बात करके बोला कि आ मैं दुल्हिनको अर्थात मेम्ने की स्त्रीको तुझे दिखाऊंगा। (१०) और वह मुझे आत्मामें एक बड़े और ऊंचे पर्व्वतपर ले गया और बड़े नगर पवित्र यिरूशलीमको मुझे दिखाया कि स्वर्गसे ईश्वरके पाससे उतरता है। (११) और ईश्वरका तेज उसमें है और उसकी ज्योति अत्यन्त मोलके पत्थरकी नाईं अर्थात स्फटिक सरीखे सूर्य्य-कान्त मणिकी नाईं है। (१२) और उसकी बड़ी और ऊंची भीत है और उसके बारह फाटक हैं और उन फाटकोंपर बारह दूत हैं और नाम उनपर लिखे हैं अर्थात इस्रायेलके सन्तानोंके बारह कुलोंके नाम। (१३) पूर्व्वकी ओर तीन फाटक उत्तरकी ओर तीन फाटक दक्षिणकी ओर तीन फाटक और पश्चिमकी ओर तीन फाटक हैं। (१४) और नगरकी भीतकी बारह नेव हैं और उनपर मेम्नेके बारह प्रेरितोंके नाम। (१५) और जो मेरे संग बात करता था उस पास एक सोनेका नल था जिस्तें वह नगरको और उसके फाटकोंको और उस की भीतको नापे। (१६) और नगर चौखुंटा बसा है और जितनी उसकी चौड़ाई उतनी उसकी लंबाई भी है और उस ने उस नलसे नगरको नापा कि साढ़े सात सौ कोशका है. उसकी लंबाई और चौड़ाई और ऊंचाई एक समान हैं। (१७) और उसने उसकी भीतको मनुष्यके अर्थात दूतके नाप से नापा कि एक सौ चवालीस हाथकी है। (१८) और उस की भीतकी जोडाई सूर्य्यकान्तकी थी और नगर निर्मल सोने

का था जो निर्मल कांचके समान था। (१९) और नगरकी भीतकी नेवें हर एक बहुमूल्य पत्थरसे संवारी हुई थीं पहिली नेव सूर्य्यकान्तकी थी दूसरी नीलमणिकी तीसरी लालड़ीकी चौथी मरकतकी। (२०) पांचवीं गोमेदककी छठवीं माणिक्यकी सातवीं पीतमणिकी आठवीं पेरोजकी नवीं पुखराजकी दसवीं लहसनियेकी एग्यारहवीं धूम्रकान्तकी बारहवीं मर्टीषकी। (२१) और बारह फाटक बारह मोती थे एक एक मोती से एक एक फाटक बना था और नगरकी सड़क स्वच्छ कांचके ऐसे निर्म्मल सोनेकी थी। (२२) और मैंने उसमें मंदिर न देखा क्योंकि परमेश्वर ईश्वर सर्व्वशक्तिमान और मेम्ना उसका मंदिर हैं। (२३) और नगरको सूर्य्य अथवा चन्द्रमाका प्रयोजन नहीं कि वे उसमें चमकें क्योंकि ईश्वरके तेजने उसे ज्योति दिई और मेम्ना उसका दीपक है। (२४) और देशोंके लोग जो त्राण पानेहारे हैं उसकी ज्योतिमें फिरेंगे और पृथिवीके राजा लोग अपना अपना बिभव और मर्य्यादा उसमें लावेंगे। (२५) और उसके फाटक दिनको कभी बन्द न किये जायेंगे क्योंकि वहां रात न होगी। (२६) और वे देशोंके लोगोंका बिभव और मर्य्यादा उसमें लावेंगे। (२७) और कोई अपवित्र बस्तु अथवा घिनित कर्म्म करनेहारा अथवा झूठपर चलनेहारा उसमें किसी रीतिसे प्रवेश न करेगा परन्तु केवल वे लोग जिनके नाम मेम्नेके जीवनके पुस्तकमें लिखे हुए हैं।

२२ और उसने मुझे जीवनके जलकी निर्मल नदी स्फटिककी नाईं स्वच्छ दिखाई कि ईश्वरके और मेम्नेके सिंहासनसे निकलती है। (२) नगरकी सड़क और उस नदीके बीचमें इस पार और उस पार जीवनका बृक्ष है जो एक एक मासके अनुसार अपना फल देके बारह फल फलता है और बृक्ष के पत्ते देशोंके लोगोंको चंगा करनेके लिये हैं।

(३) और अब कोई स्राप न होगा और ईश्वरका और मेम्नेका सिंहासन उसमें होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे. (४) और उसका मुंह देखेंगे और उसका नाम उनके माथेपर होगा। (५) और वहां रात न होगी और उन्हें दीपकका अथवा सूर्य्यकी ज्योतिका प्रयोजन नहीं क्योंकि परमेश्वर ईश्वर उन्हें ज्योति देगा और वे सदा सर्व्वदा राज्य करेंगे।

[उपदेश और भविष्यद्वाणी सहित पुस्तककी समाप्ति।]

(६) और उसने मुझसे कहा ये बचन विश्वासयोग्य और सत्य हैं और पवित्र भविष्यद्वक्ताओंके ईश्वर परमेश्वरने अपने दूतको भेजा है जिस्तें यह बातें जिनका शीघ्र पूरा होना अवश्य है अपने दासोंको दिखावे। (७) देख मैं शीघ्र आता हूं. धन्य वह जो इस पुस्तकके भविष्यद्वाक्यकी बातें पालन करता है।

(८) और मैं योहन जो हूं सोई यह बातें देखता और सुनता था और जब मैंने सुना और देखा तब जो दूत मुझे यह बातें दिखाता था मैं उसके चरणोंके आगे प्रणाम करनेको गिर पड़ा। (९) और उसने मुझसे कहा देख ऐसा मत कर क्योंकि मैं तेरा और भविष्यद्वक्ताओंका जो तेरे भाई हैं और इस पुस्तककी बातें पालन करनेहारोंका संगी दास हूं. ईश्वरको प्रणाम कर।

(१०) और उसने मुझसे कहा इस पुस्तकके भविष्यद्वाक्यकी बातोंपर छाप मत दे क्योंकि समय निकट है। (११) जो अन्याय करता है सो अब भी अन्याय करता रहे और जो अशुद्ध है सो अब भी अशुद्ध रहे और धर्म्मी जन अब भी धर्म्मी रहे और पवित्र जन अब भी पवित्र रहे। (१२) देख मैं शीघ्र आता हूं और मेरा प्रतिफल मेरे साथ है जिस्तें हर एकको जैसा उसका कार्य्य ठहरेगा वैसा फल देऊं। (१३) मैं अलफा और ओमिगा आदि और अन्त पहिला और पिछला हूं।

(१४) धन्य वे जो उसकी आज्ञाओंपर चलते हैं कि उन्हें जीवनके वृक्षका अधिकार मिले और वे फाटकोंसे होके नगरमें प्रवेश करें। (१५) परन्तु बाहर कुत्ते और टोन्हे और ब्यभिचारी और हत्यारे और मूर्त्तिपूजक हैं और हर एक जन जो झूठको प्रिय जानता और उसपर चलता है। (१६) मुझ यीशुने अपने दूतको भेजा है कि तुम्हें मंडलियोंमें इन बातोंकी साक्षी देवे. मैं दाऊद का मूल और बंश और भोरका उज्जल तारा हूं। (१७) और आत्मा और दूल्हिन कहते हैं आ और जो सुने सो कहे आ और जो प्यासा हो सो आवे और जो चाहे सो जीवनका जल सेंतमेंत लेवे।

(१८) मैं हर एकको जो इस पुस्तकके भविष्यद्वाक्यकी बातें सुनता है साक्षी देता हूं कि यदि कोई इन बातोंपर कुछ बढ़ावे तो ईश्वर उन बिपतोंको जो इस पुस्तकमें लिखी हैं उसपर बढ़ावेगा। (१९) और यदि कोई इस भविष्यद्वाक्यके पुस्तककी बातोंमेंसे कुछ उठा लेवे तो ईश्वर जीवनके पुस्तक मेंसे और पवित्र नगरमेंसे और उन बातोंमेंसे जो इस पुस्तक में लिखी हैं उसका भाग उठा लेगा।

(२०) जो इन बातोंकी साक्षी देता है सो कहता है हां मैं शीघ्र आता हूं. आमीन हे प्रभु यीशु आ। (२१) हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह तुम सभोंके संग होवे। आमीन॥

Printed by Apurva Krishna Bose, at the Indian Press, Allahabad.

1919.